हिंदी शब्दसागर

हिंदी शब्दसागर

ग्यारहवाँ भाग

['स्कक' से 'ह्वेल' तक, शब्दसंख्या–१०,०००]

मूल संपादक

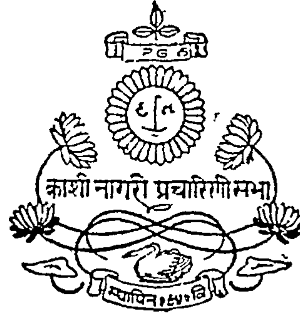
श्यामसुंदरदास, बी० ए०

मूल सहायक संपादक

बालकृष्ण भट्ट — रामचंद्र शुक्ल

अमीरसिंह — जगन्मोहन वर्मा

भगवानदीन — रामचंद्र वर्मा



संपादकमंडल

धीरेंद्र वर्मा — हरवंशलाल शर्मा

नगेंद्र — शिवनंदनलाल दर

रामधन शर्मा — सुधाकर पांडेय

करुणापति त्रिपाठी (संयोजक संपादक)

सहायक संपादक

विश्वनाथ त्रिपाठी

काशी नागरी प्रचारिणी सभा

हिंदी शब्दसागर के सशोधन सपादन का सपूर्ण तथा प्रथम एवं द्वितीय भाग के प्रकाशन का साठ प्रतिशत व्ययभार भारत सरकार के शिक्षामत्रालय ने वहन किया।

परिवर्धित, सशोधित, नवीन संस्करण

शकाब्द १८९७ सं० २०३२ वि० १९७५ ई०

मूल्य २५), सपूर्ण एकादश भागों का २७५)

शभुनाथ वाजपेयी

द्वारा

नागरी मुद्रण, वाराणसी

मे मुद्रित

प्रकाशिका

'हिंदी शब्दसागर' अपने प्रकाशनकाल से ही कोश के क्षेत्र मे भारतीय भाषाओ के दिशानिर्देशक के रूप मे प्रतिष्ठित है। तीन दशक तक हिंदी की मूर्धन्य प्रतिभाओ ने अपनी सतत तपस्या से इसे सन् १९२८ ई० मे मूर्त रूप दिया था। तब से निरतर यह ग्रथ इस क्षेत्र मे गभीर कार्य करनेवाले विद्वत्समाज मे प्रकाशस्तभ के रूप मे मर्यादित हो हिंदी की गौरवगरिमा का आख्यान करता रहा है। अपने प्रकाशन के कुछ समय बाद ही इसके खड एक एक कर अनुपलब्ध होते गए और अप्राप्य ग्रथ के रूप मे इसका मूल्य लोगो को सहस्र मुद्राओ से भी अधिक देना पडा। ऐसी परिस्थिति मे अभाव की स्थिति का लाभ उठाने की दृष्टि से अनेक कोशो का प्रकाशन हिंदी जगत् मे हुआ, पर वे सारे प्रयत्न इसकी छाया के ही बल जीवित थे। इसलिये निरतर इसकी पुन अवतारणा का गभीर अनुभव हिंदी जगत् और इसकी जननी नागरीप्रचारिणी सभा करती रही, किंतु साधन के अभाव मे अपने इस कर्तव्य के प्रति सजग रहती हुई भी वह अपने इस उत्तरदायित्व का निर्वाह न कर सकने के कारण मर्मातक पीडा का अनुभव कर रही थी। दिनोत्तर उसपर उत्तर-दायित्व का ऋण चक्रवृद्धि सूद की दर से इसलिये और भी बढता गया कि इस कोश के निर्माण के बाद हिंदी की श्री का विकास बडे व्यापक पैमाने पर हुआ। साथ ही, हिंदी के राष्ट्रभाषा पद पर प्रतिष्ठित होने से उसकी शब्दसपदा का कोश भी दिनोत्तर गतिपूर्वक बढते जाने के कारण सभा का यह दायित्व निरतर गहन होता गया।

सभा की हीरक जयती के अवसर पर, २२ फाल्गुन, २०१० वि० को, उसके स्वागताध्यक्ष के रूप मे डा० सपूर्णानद जी ने राष्ट्रपति राजेंद्रप्रसाद जी एव हिंदीजगत् का ध्यान निम्नाकित शब्दो मे इस ओर आकृष्ट किया—'हिंदी के राष्ट्रभाषा घोषित हो जाने से सभा का दायित्व बहुत बढ गया है। हिंदी मे एक अच्छे कोश और व्याकरण की कमी खटकती है। सभा ने आज से कई वर्ष पहले जो हिंदी शब्दसागर प्रकाशित किया था उसका बृहत् सस्करण निकालने की आवश्यकता है।' आवश्यकता केवल इस बात की है कि इस काम के लिये पर्याप्त धन व्यय किया जाय और केंद्रीय तथा प्रादेशिक सरकारो का सहारा मिलता रहे।'

इसी अवसर पर सभा के विभिन्न कार्यों की प्रशसा करते हुए राष्ट्रपति ने कहा—'वैज्ञानिक तथा पारिभाषिक शब्दकोश सभा का महत्वपूर्ण प्रकाशन है। दूसरा प्रकाशन हिंदी शब्दसागर है जिसके निर्माण मे भाग ने लगभग एक लाख रुपया व्यय किया है। आपने शब्दसागर का नया सस्करण निकालने का निश्चय किया है। जब से पहला सस्करण छपा, हिंदी मे बहुत बातो मे और हिंदी के अलावा ससार मे बहुत बातो मे बडी प्रगति हुई है। हिंदी भाषा भी इस प्रगति से अपने को वचित नही रख सकती। इसलिये शब्दसागर का रूप भी ऐसा होना चाहिए जो यह प्रगति प्रतिबिंबित कर सके और वैज्ञानिक युग के विद्यार्थियो के लिये भी साधारणत. पर्याप्त हो। मै आपके निश्चयो का स्वागत करता हूँ। भारत सरकार की ओर से शब्दसागर का नया सस्करण तैयार करने के सहायतार्थ एक लाख रुपए, जो पाँच वर्षो मे बीस बीस हजार करके दिए जाएँगे, देने का निश्चय हुआ है। मैं आशा करता हूँ कि इस निश्चय से आपका काम कुछ सुगम हो जाएगा और आप इस काम मे अग्रसर होगे।'

राष्ट्रपति डा० राजेद्रप्रसाद जी की इस घोषणा ने शब्दसागर के पुन सपादन के लिये नवीन उत्साह तथा प्रेरणा दी। सभा द्वारा प्रेषित योजना पर केंद्रीय सरकार के शिक्षामत्रालय ने अपने पत्र स० एफ/४–३।५४ एच०, दिनाक ११।५।५४ द्वारा एक लाख रुपया पाँच वर्षो में, प्रति वर्ष बीस हजार रुपए करके, देने की स्वीकृति दी।

इस कार्य की गरिमा को देखते हुए एक परामर्शमडल का गठन किया गया, इस सबध मे देश के विभिन्न क्षेत्रो के अधिकारी विद्वानो की भी राय ली गई, किंतु परामर्शमडल के अनेक सदस्यो का योगदान सभा को प्राप्त न हो सका और जिस विस्तृत पैमाने पर सभा विद्वानो की राय के अनुसार इस कार्य का सयोजन करना चाहती थी, वह भी नही उपलब्ध हुआ। फिर भी, देश के अनेक निष्णात अनुभवसिद्ध विद्वानो तथा परामर्शमडल के सदस्यो ने गभीरता-पूर्वक सभा के अनुरोध पर अपने बहुमूल्य सुझाव प्रस्तुत किए। सभा ने उन सबको मनोयोगपूर्वक मथकर शब्दसागर के सपादन हेतु सिद्धात स्थिर किए जिनसे भारत सरकार का शिक्षामत्रालय भी सहमत हुआ।

उपर्युक्त एक लाख रुपए का अनुदान बीस बीस हजार रुपए प्रति वर्ष की दर से निरतर पाँच वर्षो तक केंद्रीय शिक्षा मत्रालय देता रहा और कोश के सशोधन, सवर्धन और पुन सपादन का कार्य लगातार होता रहा, परतु इस अवधि मे सारा कार्य निपटाया नही जा सका। मत्रालय के प्रतिनिधि श्री डा० रामधन जी शर्मा ने बडे मनोयोगपूर्वक यहाँ हुए कार्यो का निरीक्षण परीक्षण करके इसे पूरा करने के लिय आगे और ६५,०००) अनुदान प्रदान करने की सस्तुति की जिसे सरकार ने कृपापूर्वक स्वीकार करके पुन उक्त ६५,०००) का अनुदान दिया। इस प्रकार सपूर्ण कोश का सशोधन सपादन दिसबर, १९६५ मे पूरा हो गया।

इस ग्रथ के सपादन का सपूर्ण व्यय ही नही, इसके प्रकाशन के व्ययभार का ६० प्रतिशत बोझ भी दो खडो तक भारत सरकार ने वहन किया है, इसीलिये यह ग्रथ इतना सस्ता निकालना सभव हो सका है। उसके लिये शिक्षामत्रालय के अधिकारियो का प्रशसनीय सहयोग हमे प्राप्त है और तदर्थ हम उनके अतिशय आभारी है।

सपूर्ण शब्दसागर के प्रकाशन पर कुल ३,३७,७२३ ८६ व्यय हुए है जिसमे केंद्रीय सरकार की समय समय पर मिली सहायता की समस्त राशि २१,१७०-०० है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक खड की ५,००० रु० मूल्य की प्रतियाँ क्रय करके भी सरकार हमे निरतर उत्सा-हित करती रही। वस्तुत इस ग्रथ को इतने शीघ्र और परिपूर्ण रूप मे हिंदी जगत् को भेट करने का अधिकाश श्रेय सरकार की उपर्युक्त

सामयिक सहायता की ही है और तदर्थ हम उसके प्रति आतरिक रूप से आभारी है।

जिस रूप मे यह ग्रथ हिंदीजगत् के समुख उपस्थित किया जा रहा है, उसमे अद्यतन विकसित कोशशिल्प का यथासामर्थ्य उपयोग और प्रयोग किया गया है, किंतु हिंदी की और हमारी सीमा है। यद्यपि हम अर्थ और व्युत्पत्ति का ऐतिहासिक क्रमविकास भी प्रस्तुत करना चाहते थे, तथापि साधन की कमी तथा हिंदी ग्रथो के कालक्रम व प्रामाणिक निर्धारण के अभाव मे वैसा कर सकना सभव नही हुआ। फिर भी यह कहने मे हमे सकोच नहो कि अद्यतन प्रकाशित कोशो मे शब्दसागर की गरिमा आधुनिक भारतीय भाषाओ के कोशो मे अतुलनीय है और इस क्षेत्र मे काम करनेवाले प्राय सभी क्षेत्रीय भाषाओ के विद्वान् इससे आधार ग्रहण करते रहेगे। इस अवसर पर हम हिंदीजगत् को यह भी नम्रतापूर्वक सूचित करना चाहते है कि सभा ने शब्दसागर के लिये एक स्थायी विभाग का सकल्प किया है जो बरावर इसके प्रवर्धन और सशोधन के लिये कोशशिल्प सवधी अद्यतन विधि से यत्नशील रहेगा।

शब्दसागर के इस सशोधित प्रवर्धित रूप मे शब्दो की सख्या मूल शब्दसागर की अपेक्षा दुगुनी से भी अधिक हो गई है। नए शब्द हिंदी साहित्य के आदिकाल, सत एव सूफी साहित्य (पूव मध्यकाल), आधुनिक काल, काव्य, नाटक, आलोचना, उपन्यास आदि के ग्रथ, इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, वाणिज्य आदि और अभिनदन एव पुरस्कृत ग्रथ, विज्ञान के सामान्य प्रचलित शब्द और राजस्थानी तथा डिंगल, दक्खिनी हिंदी और प्रचलित उर्दू शैली आदि से सकलित किए गए हैं।

हिंदी शब्दसागर का यह सशोधित परिवर्धित सस्करण कुल एकादश खडो मे पूरा हो रहा है। इसका पहला खड पौष, सवत् २०२२ वि० मे छपकर तैयार हो गया था। इसके उद्घाटन का समारोह भारत गणतत्र के प्रधान मत्री स्वर्गीय माननीय श्री लालबहादुर जी शास्त्री द्वारा प्रयाग मे ३ पौष, स० २०२२ वि० (१८ दिसबर, १९६५) को भव्य रूप से सजे हुए पडाल मे काशी, प्रयाग एव अन्यान्य स्थानो के वरिष्ठ और सुप्रसिद्ध साहित्यसेवियो, पत्रकारो तथा गण्यमान्य नागरिको की उपस्थिति मे सपन्न हुआ। समारोह मे उपस्थित महानुभावो मे विशेष उल्लेख्य माननीय श्री प० कमलापति जी त्रिपाठी, हिंदी विश्वकोश के प्रधान सपादक श्री डा० रामप्रसाद जी त्रिपाठी, पद्मभूषण कविवर श्री प० सुमित्रानदन जी पत, श्रीमती महादेवी जी वर्मा आदि हैं। इस सशोधित सवर्धित सस्करण की सफल पूर्ति के उपलक्ष्य मे इसके समस्त सपादको को एक एक फाउटेन पेन, ताम्रपत्र और ग्रथ की एक एक प्रति माननीय श्री शास्त्री जी के करकमलो द्वारा भेंट की गई। उन्होने अपने सक्षिप्त सारगर्भित भाषण मे इस सभा की विभिन्न प्रवृत्तियो की चर्चा की और कहा 'सार्वजनिक क्षेत्र मे कार्य करनेवाली यह सभा अपने ढग की अकेली सस्था है। हिंदी भाषा और साहित्य की जैसी सेवा नागरीप्रचारिणी सभा ने की है वैसी सेवा अन्य किसी सस्था ने नही की। भिन्न भिन्न विषयो पर जो पुस्तके इस सस्था ने प्रकाशित की है वे अपने ढग के अनूठे ग्रथ है और उनसे हमारी भाषा और साहित्य का मान अत्यधिक बढा है। सभा ने समय की गति को देखकर तात्कालिक उपादेयता के ये सब कार्य हाथ मे लिए है जिनकी इस समय नितात आवश्यकता है। इस प्रकार यह निस्सकोच कहा जा सकता है कि भाषा और साहित्य के क्षेत्र मे यह सभा अप्रतिम है'।

प्रस्तुत ग्यारहवे खड मे 'स्रक' से लेकर 'ह्वेल' तक के शब्दो का सचयन है। नए नए शब्द, उदाहरण, यौगिक शब्द, मुहावरे, पर्यायवाची शब्द और महत्वपूर्ण ज्ञातव्य सामग्री 'विशेष' से सबधित इस भाग की शब्दसख्या लगभग १०,००० है। अपने मूल रूप मे यह अश कुल १५८ पृष्ठो मे था जो अपने विस्तार के साथ इस परिवर्धित सशोधित सस्करण मे लगभग २५० पृष्ठो मे आ पाया है।

सपादकमडल के प्रत्येक सदस्य ने यथासामर्थ्य निष्ठापूर्वक इसके निर्माण मे योग दिया है। स्व० श्री कृष्णदेवप्रसाद गौड नियमित रूप से नित्य सभा मे पधारकर इसकी प्रगति को विशेष गभीरतापूर्वक गति देते थे और प० करुणापति त्रिपाठी ने इसके सपादन और सयोजन मे प्रगाढ निष्ठा के साथ अस्वस्थ होते हुए भी घर पर, यहाँ तक कि यात्रा पर रहने पर भी, पूरा योग दिया है। यदि ऐसा न होता तो यह कार्य सपन्न होना सभव न था। हम अपनी सीमा जानते है। सभव है, हम सबके प्रयत्न मे त्रुटियाँ हो, पर सदा हमारा परिनिष्ठित यत्न यह रहेगा कि हम इसको और अधिक पूर्ण करते रहें क्योंकि ऐसे ग्रथ का कार्य अस्थायी नही, सनातन है।

अत मे शब्दसागर के मूल सपादक तथा सभा के सस्थापक स्व० डा० श्यामसुदरदास जी को अपना प्रणाम निवेदित करते हुए, यह सकल्प हम पुन दुहराते हैं कि जब तक हिंदी रहेगी तब तक सभा रहेगी और उसका यह शब्दसागर अपने गौरव से कभी न गिरेगा। इस क्षेत्र मे यह नित नूतन प्रेरणादायक रहकर हिंदी का मानवर्धन करता रहेगा और उसका प्रत्येक नया सस्करण और भी अधिक प्रभोज्वल होता रहेगा।

इस महायज्ञ मे हमे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अनेक सरकारो सस्थाओ, विद्वानो और अन्यान्य क्षेत्र के सुधी सज्जनो से निरतर सहयोग सहायता मिलती रही है। इसके वास्तविक श्रेयभागी ये ही हैं, मैं तो निमित्त मात्र हूँ। इन सभी का एतदर्थ मैं हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

ना० प्र० सभा, काशी
चैत्र शु० १, २०३२ वि०

सुधाकर पाडेय
प्रधान मत्री

संकेतिका

[उद्धरणो मे प्रयुक्त सदर्भग्रंथो के इस विवरण मे क्रमश ग्रथ का सकेताक्षर, ग्रथनाम, लेखक या सपादक का नाम और प्रकाशन के विवरण दिए गए हैं]

अँधेरे०	अँधेरे की भूख, डा० रागेय राघव, किताब महल, इलाहाबाद, प्रथम सम्करण
अम्बिकादत्त (शब्द०)	अबिकादत्त व्यास
अकबरी०	अकबरी दरबार के हिंदी कवि, डा० सरजूप्रसाद अग्रवाल, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, प्र० स० २००७
अखबार	'आज' दैनिक, वाराणसी
अखिलेश (शब्द)	अखिलेश कवि
अग्नि०	अग्निशस्य, नरेंद्र शर्मा, भारती भडार, इलाहाबाद, प्र० सं०
अजात०	अजातशत्रु, जयशकर प्रसाद, १६वाँ स०
अणिमा	अणिमा, प० सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला', युग मदिर, उन्नाव
अतिमा	अतिमा, सुमित्रानदन पत, भारती भडार, इलाहाबाद, प्र० स०
अधखिला (शब्द०)	अधखिला फूल (उपन्यास), अयोध्यासिह उपाध्याय
अनामिका	अनामिका, प० सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला', प्र० स०
अनुराग०	अनुरागसागर, सपा० स्वामी युगलानद बिहारी, वेंकटेश्वर प्रेस, बबई, प्र० स०
अनुराग बाग (शब्द०)	अनुराग बाग
अनेक (शब्द०)	अनेकार्थ नाममाला, नददास कृत
अनेकार्थ०	अनेकार्थमजरी और नाममाला, सपा० बलभद्रप्रसाद मिश्र, युनिवर्सिटी आव इलाहाबाद स्टडीज, प्र० स०
अपनी०	अपनी खबर, पाडेय बेचन शर्मा 'उग्र', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र० स०, १९६० ई०
अपरा	अपरा, प० सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला', भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग
अपलक	अपलक, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', राजकमल प्रकाशन, प्र० स०, १९५३ ई०
अभिशप्त	अभिशप्त, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४४ ई०
अमिट०	अमिट स्मृति, महावीरप्रसाद द्विवेदी, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, १९३० ई०
अमृतसागर (शब्द०)	अमृतसागर
अयोध्या (शब्द०)	अयोध्यासिह उपाध्याय 'हरिऔध'
अरस्तू०	अरस्तू का काव्यशास्त्र, डा० नगेंद्र, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०, २०१४ वि०
अर्चना	अर्चना, प० सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला', कला-मदिर, इलाहाबाद
अर्थ०	अर्थशास्त्र, कौटिल्य (५ खड), सपा० आर० शाम शास्त्री, गवर्नमेंट ब्राच प्रेस, मैसूर, प्र० स०, १९१९ ई०
अर्ध०	अर्धकथानक, सपा० नाथूराम प्रेमी, हिंदी ग्रथ रत्नाकर कार्यालय, बबई, प्र० स०
अली आदिल०,	अली आदिल का काव्यसग्रह, प्रधा० सपा० डा० विश्वनाथप्रसाद, क० मु० हिंदी तथा भाषा विज्ञानपीठ, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा, प्र० स०, १९५८ ई०
अष्टाग (शब्द०)	अष्टागयोग सहिता
अष्टाग०	अष्टागयोग सहिता
आँधी	आँधी, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, इलाहाबाद, पचम स०
आ० अ० रा०	आज की अतर्राष्ट्रीय राजनीति, रामनारायण यादवेंदु, आर्यावर्त प्रकाशन मदिर, पटना, १९५१ ई०
आकाश०	आकाशदीप, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, इलाहाबाद, पचम स०
आचार्य०	आचार्य रामचद्र शुक्ल, चद्रशेखर शुक्ल, वाणी वितान, वाराणसी, प्र० स०
आत्रेय अनुक्रमणिका (शब्द०)	आत्रेय अनुक्रमणिका
आदि०	आदिभारत, अर्जुन चौबे काश्यप, वाणी विहार, बनारस, प्र० स०, १९५३ ई०
आधा गाँव	राही मासूम रजा, राजकमल प्रकाशन (प्रा०) लिमिटेड, फैजबाजार, दिल्ली—६, द्वि० स०
आधुनिक०	आधुनिक कविता की भाषा
आनदघन (शब्द०)	कवि आनदघन
आ० रा० शुक्ल	आलोचक रामचद्र शुक्ल
आराधना	आराधना, सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला', साहित्यकार ससद, इलाहाबाद, प्र० स०
आर्द्रा	आर्द्रा, सियारामशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० स०, १९८४ वि०

आर्य भा०, आ० भा०	आर्यकालीन भारत
आर्यो०	आर्यों का आदिदेश, सपूर्णानद, भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, १९९७ वि०, प्र० स०
इद्र०	इद्रजाल, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०
इद्रा०	इद्रावती, सपा० श्यामसुदरदास, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०
इशा०	इशा०, उनका काव्य तथा रानी केतकी की कहानी, सपा०, व्रजरत्नदास, कमलमणि ग्रथमाला, बुलानाला, काशी, प्र० स०
इशाअल्ला (शब्द०)	इशा अल्ला खाँ (रानी केतकी की कहानी)
इति०	इतिहास और आलोचना, नामवरसिंह, प्र० स०
इतिहास	हिंदी साहित्य का इतिहास, प० रामचद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, वाराणसी, नवाँ स०
इत्यलम्	इत्यलम , 'अज्ञेय', प्रतीक प्रकाशन केंद्र, दिल्ली
इनशा (शब्द०)	इनशा अल्ला खाँ
इरा०	इरावती, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, इलाहाबाद, चतुर्थ स०
उत्तर०	उत्तररामचरित नाटक, अनु० प० सत्यनारायण कविरत्न, रत्नाश्रम, आगरा, पचम स०
एकात०	एकातवासी योगी, अनु० श्रीधर पाठक, इडियन प्रेस, प्रयाग, प्र० स०, १९८६ वि०
ककाल	ककाल, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, सप्तम स०
कठहार	कठहार, ऋषभचरण जैन, हिंदी साहित्य मडल, बाजार सीताराम, दिल्ली, द्वि० स०
कठ० उप० (शब्द०)	कठवल्ली उपनिषद
कढी०	कढी मे कोयला, पाडेय बेचन शर्मा 'उग्र', गऊघाट, मिर्जापुर, प्र० स०
कबीर ग्र०	कबीर ग्रथावली, सपा० श्यामसुदरदास, ना० प्र० सभा, काशी
कबीर० बानी	कबीर साहब की बानी
कबीर बीजक	कबीर बीजक, कबीर ग्रथ प्रकाशन समिति, बाराबकी, २००७ वि०
कबीर बी० (शिशु०)	कबीर बीजक, सपा० हसदास, कबीर ग्रथ प्रकाशन समिति, बाराबकी, २००७ वि०
कबीर म०	कबीर मसूर (२ भाग), वेंकटेश्वर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, बबई, सन् १९०३ ई०
कबीर० रे०	कबीर साहब की ज्ञानगुदडी व रेख्ते बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, इलाहाबाद
कबीर० श०	कबीर साहब की शब्दावली (४ भाग), बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, इलाहाबाद, सन् १९०८
कबीर (शब्द०)	कबीरदास
कबीर सा०	कबीर सागर (४ भा०), सपा० स्वा० श्री युगलानद बिहारी, वेंकटेश्वर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, बबई
कबीर सा० स०	कबीर साखी सग्रह, बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, इलाहाबाद १९११ ई०
कमलापति (शब्द०)	कवि कमलापति
करुणा०	करुणालय, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, तृ० स०
कर्ण०	सेनापति कर्ण, लक्ष्मीनारायण मिश्र, किताब महल, इलाहाबाद, प्र० स०
कर्पूरमजरी (शब्द०)	कर्पूरमजरी नाटक, भारतेंदु लिखित
कविंद (शब्द०)	'कविंद' उपनाम के कवि
कविता कौ०	कविता कौमुदी (१–४ भा०) , सपा० रामनरेश त्रिपाठी, हिंदी मदिर, प्रयाग, तृ० स०
कवित्त०	कवित्तरत्नाकर, सपा० उमाशकर शुक्ल, हिंदी परिषद्, विश्वविद्यालय, प्रयाग
कादबरी (शब्द०)	कादबरी ग्रथ का अनुवाद
कानन०	काननकुसुम, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, पचम स०
कामायनी	कामायनी, जयशकर प्रसाद, नवम स०
काया०	कायाकल्प, प्रेमचद, सरस्वती प्रेस, बनारस, नवम स०
काले०	काले कारनामे, 'निराला', कल्याण साहित्य मदिर, प्रयाग, २००७ वि०
काव्य कलाधर (शब्द०)	काव्य कलाधर
काव्यकलाप (शब्द०)	काव्यकलाप
काव्य०	काव्यशास्त्र
काव्य० निबध	काव्य और कला तथा अन्य निबध, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद चतुर्थ स०
काव्य० प्र०	काव्य प्रभाकर, 'भानु' विरचित
काव्य० य० प्र०	काव्य यथार्थ और प्रगति, डा० रागेय राघव, विनोद पुस्तक मदिर, आगरा, प्र० स० २०१२ वि०
काशीराम (शब्द०)	काशीराम कवि
काश्मीर०	काश्मीर सुषमा, श्रीधर पाठक, इडियन प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०
काष्ठजिह्वा (शब्द०)	काष्ठजिह्वा स्वामी
कासीराम (शब्द०)	कासीराम कवि
किन्नर०	किन्नर देश मे, राहुल साकृत्यायन, इडिया पब्लिशर्स, प्रयाग, प्र० स०
किशोर (शब्द०)	किशोर कवि

कीर्ति०	कीर्तिलता, स० बाबूराम सक्सेना, ना० प्र० सभा, वाराणसी, तृ० सं०
कुकुर०	कुकुरमुत्ता, 'निराला', युगमन्दिर, उन्नाव
कुणाल	कुणाल, सोहनलाल द्विवेदी
कृषि०	कृषिशास्त्र
केशव (शब्द०)	केशवदास
केशव ग्र०	केशव ग्रथावली, सपा० प० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० स०
केशव० अमी०	केशवदास की अमीघूंट
केशवराम (शब्द०)	केशवराम कवि
कोई कवि (शब्द०)	अज्ञातनाम कवि
कुलार्णव तत्र (शब्द०)	कुलार्णव तत्र
कौटिल्य ग्र०	कौटिल्य का अर्थशास्त्र
क्वासि	क्वासि, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', राजकमल प्रकाशन, बबई, १९५३ ई०
खानखाना (शब्द०)	अब्दुर्रहीम खानखाना
खालिक०	खालिकबारी, सपा० श्रीराम शर्मा, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०, २०२१ वि०
खिलौना	खिलौना (मासिक)
खुदाराम	खुदाराम और चद हसीनो के खतूत, पाडेय बेचन शर्मा 'उग्र', गऊघाट, मिर्जापुर, आठवाँ स०
खुसरो (शब्द०)	अमीर खुसरो
खेती की पहली पुस्तक (शब्द०)	खेती की पहली पुस्तक
खेती विद्या (शब्द०)	खेती विद्या
गग क०	गग कवित्त (ग्रथावली), सपा० बटेकृष्ण, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०
गदाधर०	श्री गदाधर भट्ट जी की बानी
गदाधर सिंह (शब्द०)	गदाधर सिंह
गबन	गबन, प्रेमचद, हस प्रकाशन, इलाहाबाद, २६वाँ स०
गर्ग सहिता (शब्द०)	गर्ग सहिता
गालिब०	गालिब की कविता, स० कृष्णदेवप्रसाद गौड, वाराणसी प्र० स०
गि० दा०, गि० दास, गिरिधरदास (शब्द०)	गिरिधरदास (बा० गोपालचद्र)
गिरिधर (शब्द०)	गिरिधर राय (कुडलियावाले)
गीतिका	गीतिका, सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला', भारती भडार, इलाहाबाद, प्र० स०
गुजन	गुजन, सुमित्रानदन पत, भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०
गुधर (शब्द०)	गुधर कवि
गुमान (शब्द०)	गुमान मिश्र
गुरुदास (शब्द०)	गुरुदास कवि
गुलाब (शब्द०)	कवि गुलाब
गुलाल०	गुलाल बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९१० ई०
गुलेरी ग्र०	गुलेरी ग्रथ, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
गुलेरी जी०	गुलेरी जी की अमर कहानियाँ, सपा० शक्तिधर गुलेरी, हिंदुस्तानी पब्लिशिंग हाउस, (सरस्वती प्रेस), पो० बॉक्स–२७, बनारस, प्र०स० १९४५ई०
गोकुल (शब्द०)	कवि गोकुल
गोदान	गोदान, प्रेमचद सरस्वती प्रेस, बनारस, प्र० स०
गोपाल उपासनी (शब्द०)	गोपाल उपासनी
गोपाल० (शब्द०)	गिरिधरदास (गोपालचद्र)
गोपालभट्ट (शब्द०)	गोपालभट्ट, वाल्मीकि रामायण के अनुवादक
गोरख०	गोरखबानी, सपा० डा० पीताबरदत्त बडथ्वाल हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग, द्वि० स०
गोल० (शब्द०)	गोलविनोद (ग्रथ)
ग्राम०	ग्राम साहित्य, सपा० रामनरेश त्रिपाठी, हिंदी मदिर, प्रयाग, प्र० स०
ग्राम्या	ग्राम्या, सुमित्रानदन पत, भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०
घट०	घट रामायण (२ भाग), सतगुरु तुलसी साहिब, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, तृ० स०
घनानद	घनानद, सपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, प्रसाद परिषद्, वाणीवितान, ब्रह्मनाल, वाराणसी
घाघ०	घाघ और भड्डरी, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
घासीराम (शब्द०)	घासीराम कवि
चद०	चद हसीनो के खतूत 'उग्र', हिंदी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता, प्र० स०
चद्र०	चद्रगुप्त, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग, नवाँ स०
चद्रधर (शब्द०)	चद्रधर शर्मा गुलेरी
चक्र०	चक्रवाल, रामधारी सिंह 'दिनकर', उदयाचल, पटना, प्र० स०
चरण (शब्द०)	चरणदास
चरणचद्रिका (शब्द०)	चरणचद्रिका
चरण० बानी	चरणदास की बानी बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०
चाँदनी०	चाँदनी रात और अजगर, उपेद्रनाथ अश्क, नीलाभ प्रकाशन गृह, प्रयाग, प्र० स०
चाणक्य नीति (शब्द०)	चाणक्य नीति
चाणक्य (शब्द०)	चाणक्य नीति दर्पण
चिता	चिता, अज्ञेय, सरस्वती प्रेस, प्र० स०, सन् १९४० ई०
चितामणि	चितामणि (२ भाग), रामचद्र शुक्ल, इडियन प्रेस, लि०, प्रयाग
चितामणि (शब्द०)	कवि चिंतामणि त्रिपाठी

चित्रा० चित्रावली, सपा० जगन्मोहन वर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सपा०
चुभने० चुभते चौपदे, अयोध्यासिह उपाध्याय 'हरिऔध', खड्गविलास प्रेस, पटना, प्र० स०
चोखे० चोखे चौपदे, ,, ,, ,,
चोटी० चोटी की पकड, 'निराला', किताब महल इलाहाबाद, प्र० सं०
छद० छदप्रभाकर, भानु कवि, भारतजीवन प्रेस, काशी, प्र० स०
छद प्रभाकर (शब्द०) दे० 'छद०' और जगन्नाथ (शब्द)
छत्र० छत्रप्रकास, सपा० विलियम प्राइस, एजुकेशन प्रेस, कलकत्ता, १८२६ ई०
छिताई० छिताई वार्ता, सपा० माताप्रसाद गुप्त, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०
छीत० छीत स्वामी, सपा० व्रजभूषण शर्मा, विद्या विभाग, अष्टछाप स्मारक समिति, काँकरोली, प्र० स०, सवत् २०१२
जतुप्रवध (शब्द०) जतुप्रवध ग्रथ
जग० वानी जगजीवन साहब की वानी, वेलवेडियर प्रेस, इलाहावाद, १६०६, प्र० स०
जग० श० जगजीवन साहब की शब्दावली
जगन्नाथ (शब्द०) जगन्नाथप्रसाद 'भानु', काव्यप्रभाकर और छद-प्रभाकर के रचयिता
जगन्नाथ शर्मा (शब्द०) जगन्नाथ शर्मा (लेखक)
जनमेजय० जनमेजय का नागयज्ञ, जयशकर प्रसाद, भारतीय भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, पचम स०
जनानी० जनानी डचोढी, अनु० यशपाल, अशोक प्रकाशन, लखनऊ
जमाना (शब्द०) जमाना अखवार
जय० प्र० जयशकर प्रसाद, नददुलारे वाजपेयी, भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स० १६६५ वि०
जयसिंह (शब्द०) जयसिंह कवि
जरासधवध (शब्द०) जरासधवध नाम का काव्य
जायसी ग्र० जायसी ग्रथावली, सपा० रामचद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, द्वि० स०
जायसी ग्र० (गुप्त) जायसी ग्रथावली, सपा० माताप्रसाद गुप्त, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहावाद, प्र० स०, १६५१ ई०
जायसी (शब्द०) मलिक मुहम्मद जायसी, पद्मावत के रचयिता
जिप्सी जिप्सी, इलाचद्र जोशी, सेंट्रल वुक डिपो, इलाहावाद, प्र० स०, १६५२ ई०
जुगलेश (शब्द०) जुगलेश कवि
ज्ञानदान ज्ञानदान, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १६४२ ई०
ज्ञानरत्न ज्ञानरत्न, दरिया साहब, वेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद
झरना झरना, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, सातवाँ स०
झाँसी० झाँसी की रानी, वृदावनलाल वर्मा, मयूर प्रकाशन, झाँसी, द्वि० स०
टैगोर० टैगोर का साहित्यदर्शन, अनु० राधेश्याम पुरोहित, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, प्र० स०
ठडा० ठडा लोहा, धर्मवीर भारती, साहित्य भवन लि०, प्रयाग, प्र० स, १६५२ ई०
ठाकुर प्र० ठाकुरप्रसाद
ठाकुर० ठाकुर शतक, सपा० काशीप्रसाद, भारत जीवन प्रेस, काशी, प्र० स०, सवत् १६६१
ठेठ० ठेठ हिंदी का ठाठ, अयोध्यासिंह उपाध्याय, खड्गविलास प्रेस, पटना, प्र० स०
ढोला० ढोला मारू रा दूहा, सपा० रामसिंह, ना० प्र० सभा, काशी, द्वि० स०
तारिका तारिका,
तितली तितली, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग, सातवाँ, स०
तिथितत्व (शब्द०) तिथितत्व निर्णय
तुलसी तुलसीदास 'निराला', भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, चतुर्थ स०
तुलसी ग्र० तुलसी ग्रथावली, सपा० रामचद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, काशी, तृतीय स०
तुलसी सुधाकर (शब्द०) तुलसी सुधाकर
तुरसी श०, तुलसी श० तुलसी साहब (हाथरसवाले) की शब्दावली, वेलवेडियर प्रेस, इलाहावाद, १६०६, १६११
तेग अली (शब्द०) तेग अली, वदमाश दर्पण के रचयिता
तेग०, तेगवहादुर (शब्द०) गुरु तेगवहादुर
तेज० तेजविंदूपनिषद्
तोष (शब्द०) कवि तोष
त्याग० त्यागपत्र, जैनेंद्रकुमार, हिंदी ग्रथ रत्नाकर कार्यालय, ववई, प्र० सं०
द० सागर दरिया सागर, वेलवेडियर प्रेस, इलाहावाद, १६१० ई०
दक्खिनी० दक्खिनी का गद्य और पद्य, सपा० श्रीराम शर्मा, हिंदी प्रचार सभा, हैदरावाद, प्र० स०
दयानद (शब्द०) स्वामी दयानद जी
दयानिधि (शब्द०) दयानिधि कवि
दरिया० वानी दरिया साहब की वानी, वेलवेडियर प्रेस, इलाहावाद, द्वि स०
दश० दशरूपक, सपा० डा० भोलाशकर व्यास, चौखभा विद्याभवन, वाराणसी, प्र० स०

दशम० (शब्द०)	भाषा दशम स्कध, भागवत
दहकते०	दहकते अगारे, नरोत्तमप्रसाद नागर, अभ्युदय कार्यालय, इलाहाबाद
दादू०	(श्री) दादूदयाल की बानी, सपा० महामहोपाध्याय प० सुधाकर द्विवेदी, ना० प्र० सभा, वाराणसी
दादूदयाल ग्र०	दादूदयाल ग्रथावली
दादू० (शब्द०)	दादूदयाल
दिनेश (शब्द०)	कवि दिनेश
दास (शब्द०)	कवि भिखारीदास
दिल्ली	दिल्ली, रामधारी सिंह 'दिनकर', उदयाचल, पटना, प्र० स०
दिव्या	दिव्या, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४५ ई०
दीन० ग्र०	दीनदयाल गिरि ग्रथावली, सपा० श्यामसुदरदास, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०
दीनदयाल (शब्द०)	कवि दीनदयाल गिरि
दीप०	दीपशिखा, महादेवी वर्मा, किताबिस्तान, इलाहाबाद, प्र० स०, १९४२ ई०
दी० ज०, दीप ज०	दीप जलेगा, उपेंद्रनाथ 'अश्क', नीलाभ प्रकाशन गृह, प्रयाग
दुर्गा प्रसाद मिश्र (शब्द०)	दुर्गाप्रसाद मिश्र
दुर्गाप्रसाद (शब्द०)	दुर्गाप्रसाद कवि
दुर्गेशनदिनी (शब्द०)	दुर्गेशनदिनी, उपन्यास, मूल लेखक बकिमचद्र चटर्जी (अनुवाद)
दूलह (शब्द०)	कवि दूलह
देवकीनदन (शब्द०)	देवकीनदन खत्री
देव० ग्र०	देवग्रथावली, ना०प्र० सभा, काशी,
देव (शब्द०)	देव कवि
देव (शब्द०)	देव कवि (मैनपुरीवाले)
देवदत्त (शब्द०)	देवदत्त कवि
देवीप्रसाद (शब्द०)	मुशी देवीप्रसाद
देशी०	देशी नाममाला
दैनिकी	दैनिकी, सियारामशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० स०, १९९९ वि०
दो सौ बावन०	दो सौ बावन वैष्णवो की वार्ता (दो भाग), शुद्धाद्वैत एकेडमी, काँकरोली, प्रथम स०
द्वद्व०	द्वद्वगीत, रामधारी सिंह 'दिनकर', पुस्तक भडार, लहेरियासराय, पटना, प्र० स०
द्वि० अभि० ग्र०	द्विवेदी अभिनदन ग्रथ, ना० प्र० सभा, वाराणसी
द्विज (शब्द०)	द्विज कवि
द्विजदेव (शब्द०)	अयोध्यानरेश महाराजा मानसिंह 'द्विजदेव'
द्विवेदी (शब्द०)	आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
धरनी० बानी	धरनी साहब की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद १९११ ई०
धरम० शब्दा०, धरम०	धरमदास की शब्दावली
धीर (शब्द०)	'धीर' कवि
धूप०	धूप और धूआँ, रामधारीसिंह 'दिनकर', अजता प्रेस, लि०, पटना ४
ध्रुव०	ध्रुवस्वामिनी, प्रसाद, भारती भडार, प्रयाग
नद० ग्र०, नददास ग्र०	नददास ग्रथावाली, सपा० ब्रजरत्नदास, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
नई०	नई पौध, नागार्जुन, किताब महल, इलाहाबाद प्र० स०, १९५३
नकछेदी (शब्द०)	कवि नकछेदी तिवारी, भडौआसग्रह या मदनमजरी के सपादक
नट०	नटनागर विनोद, सपा० कृष्णविहारी मिश्र, इडियन प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०
नदी०	नदी के द्वीप, 'अज्ञेय,' प्रगति प्रकाशन, दिल्ली, प्र० स०, १९५१ ई०
नया०	नया साहित्य नए प्रश्न, नददुलारे वाजपेयी, विद्यामदिर, वाराणसी, २०११ वि०
नरेश (शब्द०)	'नरेश' कवि
नागयज्ञ	जनमेजय का नागयज्ञ, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग, सप्तम स०
नागरी (शब्द०)	नागरीदास कवि
नागरी० उर्दू०	नागरी और उर्दू का स्वाँग अर्थात् नागरी और उर्दू का एक नाटक, प० गौरीदत्त देवनागरी प्रचारिणी सभा, विद्यादर्पण यत्रालय, मेरठ, प्र० स०
नाथ (शब्द०)	नाथ कवि
नाथसिद्ध०	नाथसिद्धो की बानियाँ, ना० प्र० सभा, वाराणसी प्र० स०
नानक (शब्द०)	सत नानक गुरु
नाभादास (शब्द०)	नाभादास सत
नारायणदास (शब्द०)	नारायणदास
निबधमालादर्श (शब्द०)	निबधमालादर्श (म० प्र० द्विवेदी), निबधसग्रह
निश्चलदास (शब्द०)	सत निश्चलदास जी
नील०	नीलकुसुम, रामधारीसिंह 'दिनकर', उदयाचल पटना, प्र० स०
निहाल (शब्द०)	निहाल कवि
नूतनामृतसागर (शब्द०)	नूतनामृतसागर नाम का ग्रथ
नूर (शब्द०)	'नूर' उपनाम के कवि
नृपशभु (शब्द०)	शिवाजी के पुत्र महाराज शंभाजी
नेपाल०	नेपाल का इतिहास, प० बलदेवप्रसाद, वेंकटेश्वर प्रेस, बबई, १९६१ वि०

पंचवटी	पंचवटी, मैथलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव झाँसी, प्र० स०
पजनेस०	पजनेस प्रकाश, सपा० रामकृष्ण वर्मा, भारत जीवन यत्नालय, काशी, प्र० स०
पदमावत	पदमावत, सम्पा० वासुदेवशरण अग्रवाल, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० स०
पदु०, पदुमा०	पदुमावती, सपा० सूर्यकात शास्त्री, पजाब विश्वविद्यालय, लाहौर, १९३४ ई०
पद्माकर ग्र०	पद्माकर ग्रथावली, सपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०
पद्माकर (शब्द०)	पद्माकर भट्ट
पन्नालाल (शब्द०)	पन्नालाल कवि
प० रा०, प० रासो	परमाल रासो, सपा० श्यामसुदरदास, ना० प्र० सभा, काशी प्र० स०
परमानद०	परमानदसागर
परमेश (शब्द०)	परमेश कवि
परिमल	परिमल', 'निराला', गगा ग्रथागार, लखनऊ, प्र०स०
पर्दे०	पर्दे की रानी, इलाचद्र जाशी, भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स० १९९९ वि०
पलटू०	पलटू साहब की बानी (१-३ भाग), बेलवेडियर प्रेस, इलहाबाद, १९०७ ई०
पल्लव	पल्लव, सुमित्रानदन पत, इडियन प्रेस लि०, प्रयाग, प्र० स०
पाणिनि०	पाणिनिकालीन भारतवर्ष, वासुदेवशरण अग्रवाल, मोतीलाल बनारसीदास, प्र० स०
पारिजात०	पारिजातहरण, बगाल और बिहार रिसर्च सोसायटी, प्र० स०
पार्वती	पार्वती, रामानद तिवारी शास्त्री, भारतीनदन, मगलभवन, नयापुरा कोटा (राजस्थान), प्र० स०, १९५५ ई०
पा० सा० सि०	पाश्चात्य साहित्यालोचन के सिद्धात, लीलाधर गुप्त, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० स०, १९५२ ई०
पिंजरे०	पिंजरे की उडान, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४६ ई०
पीतल०	पीतल की मूर्ति (जार्ज विलियम रेनाल्ड के ब्राज स्टैच्यू का अनुवाद), पाँच भाग, वर्मन प्रेस कलकत्ता, प्र० स०, स० १९७४
पूर्ण (शब्द०)	पूर्ण कवि
पू० म० भा०	पूर्वमध्यकालीन भारत, वासुदेव उपाध्याय, भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०, सवत् २००९
पृ० रा०	पृथ्वीराज रासो (५ खड), सपा० मोहनलाल विष्णुलाल पडचा, श्यामसुदरदास, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
पृ० रा० (उ०)	पृथ्वीराज रासो (४ खंड), सपा कविराज मोहनसिंह, साहित्य सस्थान, राजस्थान विश्वविद्यापीठ, उदयपुर, प्र० स०
पोद्दार अभि० ग्र०	पोद्दार अभिनदन ग्रथ, सपा० वासुदेवशरण अग्रवाल, अखिल भारतीय ब्रज साहित्यमडल मथुरा, सवत् २०१०
प्र० सा०	प्रगतिशील (वादी) साहित्य
प्रताप ग्र०	प्रतापनारायण मिश्र ग्रथावली, सपा० विजयशकर मल्ल, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०
प्रताप (शब्द०)	व्यग्यार्थ कौमुदी के रचयिता प्रताप कवि
प्रताप सिंह (शब्द०)	प्रताप सिंह
प्रबध०	प्रबधपद्म, 'निराला', गगा पुस्तकमाला, लखनऊ, प्र० सं०
प्रभावती	प्रभावती, 'निराला', सरस्वती भडार, लखनऊ, प्र० स०
प्राण०	प्राणसगली, सपा० सत सपूरणसिंह, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०
प्रा० भा० प०	प्राचीन भारतीय परपरा और इतिहास, डा० रागेय राघव, आत्माराम ऐंड सस, दिल्ली, प्र० स० १९५३ ई०
प्रिय०	प्रियप्रवास, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' हिंदी साहित्य कुटीर, बनारस, षष्ठ स०
प्रिया० (शब्द०)	प्रियादास
प्रेम०	प्रेमपथिक, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, तृ० स०
प्रेम० और गोर्की	प्रेमचद और गोर्की, सपा० शचीरानी गुर्टू, राजकमल प्रकाशन लि०, बबई, १९५५ ई०
प्रेमघन०	प्रेमघन सर्वस्व, हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग, प्र० सं०, १९९६ वि०
प्रे० सा० (शब्द०)	प्रेमसागर, लल्लूलाल कृत
प्रेमाजलि	प्रेमाजलि, ठा० गोपालशरण सिंह, इडियन प्रेस, लि० प्रयाग, १९५३ ई०
फिसाना०	फिसाना ए आजाद (चार भाग), प० रतननाथ 'सरशार', नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, चतुर्थ स०
फूलो०	फूलो का कुर्ता, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, प्र० स०
बगाल०	बगाल का काल, हरिवशराय 'बच्चन', भारती भडार, इलाहाबाद, प्र० स०, १९४६ ई०
बदन०	बदनवार, देवेंद्र सत्यार्थी, प्रगति प्रकाशन, दिल्ली, १९४९ ई०
बद०	बदमाश दर्पण, तेगअली, भारतजीवन प्रेस, बनारस, प्र० स०

वलवीर (शब्द०)	वलवीर कवि
वलभद्र (शब्द०)	वलभद्र कवि
वाँकी० ग्र०, वाँकीदास ग०	वाँकीदास ग्रथावली (तीन भाग), सपा० रामनारायण दूगड, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
वाँगेदरा	वाँगेदरा
वापू	वापू, कवितासग्रह, सियारामशरण गुप्त, प्र० स०
वालकृष्ण (शब्द०)	वालकृष्ण
वालमुकुद (शब्द०)	वालमुकुद गुप्त
विरहा (शब्द०)	प्रचलित विरहा गीत
विल्ले०	विल्लेसुर वकरिहा, निराला, युगमदिर, उन्नाव, प्र० स०
विसराम (शब्द०)	विसराम कवि
विहारी र०	विहारी रत्नाकर, सपा० जगन्नाथदास 'रत्नाकर', गगा ग्रथगार, लखनऊ, प्र० स०
विहारी (शब्द०)	कवि विहारी
वी० रासो	वीसलदेव रासो, सत्यजीवन वर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
वीसल० रास	वीसलदेव रास, सपा०, माताप्रसाद गुप्त, प्र० स०
वी०श०महा०	वीसवी शताब्दी के महाकाव्य, डा० प्रतिपाल सिंह, ओरिएटल वुकडिपो, देहली प्र० स०
वुद्ध च०	वुद्ध चरित, रामचद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०
वृहत्०	वृहत्सहिता
वृहत्सहिता (शब्द०)	वृहत्सहिता
वेनी (शब्द०)	कवि वेनी प्रवीन
वेला	वेला, 'निराला,' हिंदुस्तानीप ब्लिकेशस, प्र० स० इलाहावाद
वेलि०	वेलि क्रिसन रुक्मणी री, सपा० ठाकुर रामसिह, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहावाद, प्र० स० १६३१ ई०
वैताल (शब्द०)	वैताल कवि
वोधा (शब्द०)	कवि वोधा
व्रज०	व्रजविलास, सपा० श्रीकृष्णदास, लक्ष्मी वेकटेश्वर प्रेस, ववई तृ० स०
व्रज० ग्र०	व्रजनिधि ग्रथावली, सपा० पुरोहित हरिनारायण शर्मा, ना० प्र० सभा काशी, प्र० स०
व्रज चरित्र०	व्रज चरित्र वर्णन
व्रज माधुरी०	व्रजमाधुरी सार, सपा० वियोगीहरि, हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग तृ० स०
व्रह्म (शब्द०) व्रह्म	कवि (वीरवल)
भक्तमाल (प्रि०)	भक्तमाल, टीका० प्रियादास, वेंकटेश्वर प्रेस ववई, १६५३ वि०
भक्तमाल (श्री०)	भक्तमाल, श्री भक्तिसुधाविंदु स्वाद, टीका० सीतारामशरण, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, द्वि० स०, १६८३ वि०
भक्ति०	भक्तिसागरादि, स्वामी चरणदास, वेकटेश्वर प्रेस, ववई, सवत् १६६० वि०
भक्ति प०	भक्ति पदार्थ वर्णन, स्वामी चरणदास, वेकटेश्वर प्रेस, ववई, सवत् १६६०
भगवतरसिक (शब्द०)	भगवत रसिक
भजन (शब्द०)	भजन
भट्ट (शब्द०)	वालकृष्ण भट्ट
भस्मावृत०	भस्मावृत चिनगारी, यशपाल, विप्लव कार्यालय लखनऊ १६४६ ई०
भा० इ० रू०	भारतीय इतिहास की रूपरेखा, जयचद्र विद्यालकार हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहावाद, प्र० स०, सवत् १६३३ वि०
भा० प्रा० लि०	भारतीय प्राचीन लिपिमाला, गौरीशकर हीराचद ओझा, इतिहास कार्यालय, राजमेवाड, प्र० स०, सवत् १६५१ वि०
भारत०	भारतभारती, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्यसदन चिरगाँव, झाँसी, नवम स०
भा०भू०, भारत०नि०	भारत भूमि और उसके निवासी, जयचद्र विद्यालकार, रत्नाश्रम, आगरा, द्वि० स०, सवत् १६८७ वि०
भारतीय०	भारतीय राज्य और शासनविधान
भारतेदु ग्र०	भारतेदु ग्रथावली (४ भाग), सपा० व्रजरत्न दास, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
भा० सैन्य०	भारत का सैन्य इतिहास, सर जदुनाथ सरकार, अनु० सुशील त्रिवेदी, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रथ अकादमी, भोपाल, प्र० स०
भा० शिक्षा	भारतीय शिक्षा, राजेद्र प्रसाद, आत्माराम ऐंड सस, दिल्ली, १६५३ ई०
भाषा शि०	भाषाशिक्षण, प० सीताराम चतुर्वेदी
भिखारी ग्र०	भिखारीदास ग्रथावली (दो भाग), सपा० प० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, ना० प्र० सभा, काशी
भीखा० श०	भीखा शब्दावली, प्र० स०
भुवनेश (शब्द०)	भुवनेश कवि
भूधर (शब्द०)	भूधर कवि
भूपति (शब्द०)	भूपति कवि
भूमि०	भूमि की अनुभूति (कवितासग्रह)
भूषण ग्र०	भूषण ग्रथावली, सपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, साहित्य सेवक कार्यालय, काशी, प्र० स०
भूषण (शब्द०)	कवि भूषण त्रिपाठी
भोज० भा० सा०	भोजपुरी भाषा और साहित्य, डॉ० उदय नारायण तिवारी, विहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, प्र० स०
मतपरीक्षा (शब्द०)	मतपरीक्षा (पुस्तक)
मति० ग्र०	मतिराम ग्रथावली, सपा० कृष्णविहारी मिश्र गगा पुस्तकमाला, लखनऊ, द्वि० स०

मतिराम (शब्द०)	कवि मतिराम त्रिपाठी
मधु०	मधुकलश, हरिवंश राय 'बच्चन', सुषमा निकुंज, इलाहाबाद, द्वि० सं० १९३९ ई०
मधुज्वाल	मधुज्वाल, सुमित्रानंदन पंत, भारती भंडार, इलाहाबाद, द्वि सं०, १९३९ ई०
मधुमा०	मधुमालती वार्ता, संपा० माताप्रसाद गुप्त, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं०
मधुशाला	मधुशाला, हरिवंश राय 'बच्चन', सुषमा निकुंज, इलाहाबाद, प्र० सं०
मधुसूदन (शब्द०)	मधुसूदनदास कवि
मनविरक्त०	मनविरक्तकरन गुटका सार (चरणदास)
मनु०	मनुस्मृति
मन्नालाल (शब्द०)	कवि मन्नालाल
मलूक० बानी	मलूकदास की बानी, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग
मलूक० (शब्द०)	मलूकदास
महा०	महाराणा का महत्व, जयशंकर प्रसाद भारती भंडार, इलाहाबाद, चतुर्थ सं०
महावीरप्रसाद (शब्द०)	पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी
महाभारत (शब्द०)	महाभारत
महाराणा प्रताप (शब्द०)	महाराणा प्रताप, पुस्तक
माधव०	माधवनिधान, लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई, चतुर्थ सं०
माधवानल०	माधवानल कामकंदला, बोधा कवि नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, प्र० सं०, १८९१ ई०
मान०	मानसरोवर, प्रेमचंद, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद
मानव	मानव, कविता संकलन, भगवतीचरण वर्मा
मानव०	मानवसमाज, राहुल सांकृत्यायन, किताब महल, इलाहाबाद, द्वि० सं०
मानस	रामचरितमानस, संपा० शंभुनारायण चौबे, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
मा० स०, मा०स०रू०	मानवसमाज या मानव समाज की रूपरेखा
मिट्टी०	मिट्टी और फूल, नरेंद्र शर्मा, भारती भंडार इलाहाबाद, प्र० सं०, १९९९ वि०
मिलन०	मिलनयामिनी, हरिवंश राय 'बच्चन', भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, प्र० सं०, १९५० ई०
मिश्रबंधु (शब्द०)	'मिश्रबंधु' नाम से ख्यात
मीर हसन (शब्द०)	मीर हसन
मीरा (शब्द०)	भक्त मीराबाई
मुंशी अभि० ग्र०	मुंशी अभिनंदन ग्रंथ, संपा० डा० विश्वनाथ प्रसाद, हिंदी तथा भाषाविज्ञान, विद्यापीठ आगरा विश्वविद्यालय, आगरा
मुकुंदलाल (शब्द०)	मुकुंदलाल कवि
मुद्राराक्षस	मुद्राराक्षस, संस्कृत नाटक, विशाखदत्त
मुबारक (शब्द०)	कवि मुबारक अली
मुरारिदान (शब्द०)	कवि मुरारिदान
मृग०	मृगनयनी, वृंदावनलाल वर्मा, मयूर प्रकाशन, झाँसी
मैला०	मैला आँचल, फणीश्वरनाथ 'रेणु', समता प्रकाशन, पटना-४, प्र० सं०
मोहन०	मोहनविनोद, सं० कृष्णबिहारी मिश्र, इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, प्र० सं०
यमुना (शब्द०)	यमुनाशंकर
यशो०	यशोधरा, मैथिलीशरण गुप्त साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० सं०
यामा	यामा, महादेवी वर्मा, किताबिस्तान, प्रयाग, प्र० सं०
युग०	युगवाणी, सुमित्रानंदन पंत, भारतीय भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं०
युगपथ	युगपथ " " " " "
युगलेश (शब्द०)	कवि युगलेश
युगांत	युगांत, सुमित्रानंदन पंत, इंद्र प्रिंटिंग प्रेस, अलमोड़ा, प्र० सं०
योग०	योगवाशिष्ठ (वैराग्य मुमुक्षु प्रकरण), गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, लक्ष्मी वेंकटेश्वर छापाखाना, कल्याण, बंबई सं० १९६७ वि०
रंगभूमि	रंगभूमि, प्रेमचंद, गंगा ग्रंथागार, लखनऊ, प्र० सं०, १९८१ वि०
रघु०रू०	रघुनाथ रूपक गीताँरो, संपा० महताबचंद्र खारेड, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
रघु०दा०, रघुनाथदास (शब्द०)	रघुनाथदास
रघुनाथ (शब्द०)	रघुनाथ
रघुनाथ बंदीजन (शब्द०)	रघुनाथ बंदीजन
रघुराज, रघुराज सिंह (शब्द०)	रीवाँनरेश महाराज रघुराजसिंह, सं० १८८०-१९३६ वि०
रजत०	रजतशिखर, सुमित्रानंदन पंत, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, २००८ वि०
रजिया०	रजिया की बेटी, (अनु०) नरोत्तम नागर, साहित्य प्रकाशन, मालीवाड़ा, दिल्ली, प्र० सं०
रज्जब०	रज्जब जी की बानी, ज्ञानसागर प्रेस, बंबई, १९७५ वि०
रतन०	रतनहजारा, संपा० श्री जगन्नाथप्रसाद श्रीवास्तव, भारतजीवन प्रेस, काशी, प्र० सं०, १९८२ ई०
रति०	रतिनाथ की चाची, नागार्जुन, किताब महल, इलाहाबाद, द्वि० सं०, १९५३ ई०
रत्न० (शब्द०)	रत्नसार

रत्नपरीक्षा (शब्द०)	रत्नपरीक्षा
रत्नाकर	रत्नाकर [दो भाग], ना० प्र० सभा, काशी, चतुर्थ, द्वि० और प्रथम स० १९८०
रत्नावली (शब्द०)	रत्नावली नाटिका
रश्मि०	रश्मिबध, सुमित्रानदन पत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
रस०	रसमीमासा, सपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, ना प्र० सभा, काशी, द्वि० स०
रस क०	रसकलश, अयोध्यासिह उपाध्याय 'हरिऔध', हिंदी साहित्य कुटीर, बनारस, तृतीय स०
रसखान०	रसखान और घनानद, सपा० अमीरसिह, ना० प्र० सभा, द्वि० स०
रसखान (शब्द०)	सैयद इब्राहीम रसखान
रस र०, रसरतन,	रसरतन, पुहकर कवि कृत, सपा० शिवप्रसाद सिह, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०
रसनिधि (शब्द०)	राजा पृथ्वीसिह 'रसनिधि'
रसिया (शब्द०)	रसिया रसिया गीत ?
रहिमन (शब्द०)	रहीम कवि
रहीम (शब्द०)	अब्दुर्रहीम खानखाना
रहीम०	रहीम रत्नावली
रा० कृ० वर्मा (शब्द०)	रामकृष्ण वर्मा
राज० इति०	राजपूताने का इतिहास, गौरीशकर हीराचद ओझा, अजमेर १९९७ वि०, प्र० स०
राज०	राजतरगिणी कल्हण, (अनुवाद)
रा० रू०	राजरूपक, सपा० प० रामकर्ण, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
रा० वि०	राजविलास, सपा० मोतीलाल मेनारिया, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०
राजनीतिक०	राजनीतिक विचारधाराएँ
राज्यश्री	राज्यश्री, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, सातवाँ स०
राम०	रामचरितमानस, सपा० विजयानद त्रिपाठी, भारती भडार, इलाहाबाद, प्र० स०, सवत् १९७३ वि०
राम, रामकवि (शब्द०)	राम कवि
रामकृष्ण (शब्द०)	रामकृष्ण
राम० च०	सक्षिप्त रामचद्रिका, सपा० लाला भगवानदीन, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०
राम० धर्म०	रामस्नेह धर्मप्रकाश, सपा० मालचद्र जी शर्मा चौकसराम जी (सिंहथल), बडा रामद्वारा, बीकानेर ।
राम० धर्म० स०	रामस्नेह धर्मसंग्रह, सपा० मालचद्र जी शर्मा, चौकस राम जी (सिंहथल), बडा रामद्वारा, बीकानेर ।
रामरसिकावली	रामरसिकावली (भक्तमाल)
रामसहाय (शब्द०)	रामसहाय कवि कृत राम सतसई
रामानद०	रामानद की हिंदी रचनाएँ, सपा० पीताबरदत्त बडथ्वाल, ना० प्र० सभा, प्र० स०
रामाश्व०	रामाश्वमेध, मन्नालाल द्विज, त्रिपुरा भैरवी, वाराणसी १९३९ वि०
रिखिनाथ (शब्द०)	कवि रिखिनाथ
रेणुका	रेणुका, रामधारी सिंह 'दिनकर,' पुस्तकभडार, लहेरियासराय, पटना, प्र० स०
रै० बानी	रैदास बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद
लक्ष्मणसिंह (शब्द०)	राजा लक्ष्मणसिह
लल्लू, लल्लूलाल (शब्द०)	लल्लूलाल
लवकुश चरित्र (शब्द०)	लवकुश चरित्र
लहर	लहर, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, इलाहाबाद, पचम स०
लाल (शब्द०)	लाल कवि (छत्रप्रकाशवाले)
वर्ण०, वर्णरत्नाकर	वर्णरत्नाकर
वल्लभ पु० (शब्द०)	वल्लभपुष्टिमार्ग, ग्रथ
वाल्मीकीय० (शब्द०)	वाल्मीकीय रामायण
विद्यापति	विद्यापति, सपा० खगेद्रनाथ मित्र, यूनाइटेड प्रेस लि०, पटना
विनय०	विनयपत्रिका, टीका० प० रामेश्वर भट्ट, इडियन प्रेस लि०, प्रयाग, तृ० स०
विशाख	विशाख (नाटक), जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग, तृ० स०
विश्राम (शब्द०)	विश्रामसागर
विश्वनाथसिह (शब्द०)	रीवाँनरेश महाराज विश्वनाथसिंह जी (सवत् १८४६-१९११ वि०)
विश्वप्रिया	विश्वप्रिया, स० ही० वात्स्यायन 'अज्ञेय'
विश्वास (शब्द०)	विश्वास ?
वीणा	वीणा, सुमित्रानदन पत, इडियन प्रेस लि०, प्रयाग, द्वि० स०
वेणी (शब्द०)	वेणी (या बेनी) कवि
वेनिस (शब्द०)	वेनिस का बाँका
वैशाली०, वै० न०	वैशाली की नगरवधू, चतुरसेन शास्त्री, गौतम बुकडिपो, दिल्ली, प्र० स०
वो दुनिया	वो दुनिया, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४१ ई०
व्यग्यार्थ०	व्यग्यार्थ कौमुदी प्रताप कवि कृत, बाबू रामकृष्ण वर्मा, भारत जीवन प्रेस, काशी, प्र० स०, सवत् १९५७ वि०
व्यग्यार्थ (शब्द०)	व्यग्यार्थ कौमुदी
व्यास (शब्द०)	अबिकादत्त व्यास
व्रज (शब्द०)	व्रज विलास

श० दि० (शब्द०)	शकरदिग्विजय
शकर (शब्द०)	शकर कवि
शकर०	शकरसर्वस्व, सपा० हरिशकर शर्मा, गयाप्रसाद ऐड सस, आगरा, प्र० स०
शभु (शब्द०)	शभु कवि
शाकु०	शकुतला, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी
शकुतला	शकुतला नाटक, अनु० राजा लक्ष्मणसिंह, हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग, चतु० स०
शतरज०	शतरज के मोहरे (उप०) अमृतलाल नागर, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, द्वि० स०
शब्दचद्रिका (शब्द०)	शब्दचद्रिका (सस्कृत)
शब्दरत्नावली (शब्द०)	शब्दरत्नावली
शब्दावली (शब्द०)	शब्दावली ग्रथ
शाहजहाँनामा (शब्द०)	शाहजहाँनामा
शार्ङ्गधर स०	शार्ङ्गधर सहिता, टी० सीताराम शास्त्री, मुबई वैभव मुद्रणालय, सवत् १९७१
शिखर०	शिखर वशोत्पत्ति सपा० पुरोहित हरिनारायण शर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०, १९८५
शिरमौर (शब्द०)	कवि शिरमौर
शिव० (शब्द०)	'शिव' उपनाम कवि
शिवप्रसाद (शब्द०)	राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद
शिवराम (शब्द०)	शिवराम कवि
शिवशभु (शब्द०)	शिवशभु का चिट्ठा
शुक्ल० अभि० ग्र०	शुक्ल अभिनदन ग्रथ, मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य समेलन
शृ० सत० (शब्द०)	शृगार सतसई
शृ० सुधाकर (शब्द०)	शृगार सुधाकर
शेखर (शब्द०)	शेखर कवि
शेर०	शेर ओ सुखन, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, प्र० स०
शैली	शैली, प० करुणापति त्रिपाठी, प्र० स०
श्यामविहारी (शब्द०)	श्यामविहारी मिश्र ('मिश्रबधु')
श्यामा०	श्यामास्वप्न, सपा० डा० कृष्णलाल, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
श्रद्धानद (शब्द०)	स्वामी श्रद्धानद
श्रद्धाराम (शब्द०)	श्रद्धाराम फुल्लौरी
श्रीकृष्णसदेश (शब्द०)	श्रीकृष्ण सदेश
श्रीधर (शब्द०)	श्रीधर कवि
श्रीधर पाठक (शब्द०)	श्रीधर पाठक
श्रीनिवास ग्र०	श्रीनिवास ग्रथावली, सपा० डा० कृष्णलाल, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
श्रीपति (शब्द०)	श्रीपति कवि
सतति०	चद्रकाता सतति, देवकीनदन खत्री, वाराणसी
सचिता	सचिता (कवितासग्रह)
सत तुरसी०	सत तुरसीदास की शब्दावली, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद।
स० दरिया सत० दरिया	सत कवि दरिया, स० धर्मेंद्र ब्रह्मचारी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, प्र० स०
स० दा० (शब्द०)	सगीत दामोदर
स० शा० (शब्द०)	सगीत शाकुतल
सत रविदास	सत रविदास और उनका काव्य, स्वामी रामानद शास्त्री, भारतीय रविदास सेवासघ, हरिद्वार, प्र० स०
सतबाणी०, सत० सार०	सतबाणी सार सग्रह (२ भाग) बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद
सन्यासी	सन्यासी, इलाचद्र जोशी, भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०
सपूर्णानद अभि० ग्र०	सपूर्णानद अभिनदन ग्रथ, सपा० आचार्य नरेंद्रदेव, ना० प्र० सभा, वाराणसी
स० दर्शन	समीक्षादर्शन, रामलाल सिंह, इडियन प्रेस, प्रयाग, प्र० स०
सत्य०	कविरत्न सत्यनारायण जी की जीवनी, श्री बनारसीदास चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग, द्वि० स०
सत्यार्थप्रकाश (शब्द०)	सत्यार्थप्रकाश, स्वामी दयानद
सबल (शब्द०)	सबलसिंह चौहान (महाभारत)
सभा० वि० (शब्द०)	सभाविलास
सरस्वती (शब्द०)	सरस्वती मासिक पत्रिका
सर्पाघातचिकित्सा (शब्द०)	सर्पाघात चिकित्सा
स० शास्त्र	समीक्षाशास्त्र, प० सीताराम चतुर्वेदी, अखिल भारतीय विक्रम परिषद, काशी, प्र० स०
स० सप्तक	सतसई सप्तक, सपा० श्यामसुदरदास, हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयाग, प्र० स०
सरलाबाई (शब्द०)	सरलाबाई
सहजो०	सहजो बाई की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९०८ वि०
साकेत	साकेत, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्यसदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० स०
सागरिका	सागरिका, ठा० गोपालशरण सिंह, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०
सात सतक	हस्तलेख, छत्रपति सभा जी, उपनाम शभु, नृपशभु कवि
साम०	सामधेनी, रामधारी सिंह 'दिनकर', उदयाचल, पटना, द्वि० स०
सा० दर्पण	साहित्यदर्पण, सपा० शालिग्राम शास्त्री, श्रीमृत्युजय औषधालय, लखनऊ प्र० स०
सा० द०	साहित्य दर्पण
सा० लहरी	साहित्यलहरी, सपा० रामलोचनशरण बिहारी, पुस्तक भडार, लहेरियासराय, पटना

० समीक्षा	साहित्य समीक्षा, कालिदास कपूर, इडियन प्रेस, प्रयाग
हित्य०	साहित्यालोचन, श्री श्यामसुदर दास, इडियन प्रेस, इलाहावाद
द्धातसग्रह (शब्द०)	सिद्धातसग्रह
तल (शब्द०)	कवि सीतल
ताराम (शब्द०)	सीताराम कवि
ंदर० ग्र०	सुदरदास ग्रथावली (दो भाग), सपा० हरिनारायण शर्मा, राजस्थान रिसर्च सोसायटी, कलकत्ता
ुंदरी सिंदूर (शब्द०)	सुदरी सिंदूर, कवितासग्रह
ुकवि (शब्द०)	'सुकवि' उपनाम के कवि
ुखदा	सुखदा, जैनेंद्रकुमार, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, प्र० स०
सुखदेव (शब्द०)	कवि सुखदेव
सुधाकर (शब्द०)	महामहोपाध्याय प० सुधाकर द्विवेदी
सुजान०	सुजानचरित (सूदनकृत), सपा० राधाकृष्ण, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी, प्र० स०
सुधानिधि	कवि तोष और सुधानिधि, सपा० सुरेंद्र माथुर, ना० प्र० स० काशी, प्र० स०
सुनीता	सुनीता, जैनेंद्रकुमार, साहित्यमडल, वाजार सीताराम, दिल्ली, प्र० स०
सुदर (शब्द०)	सुदर कवि, सुदरदास जी
सूत०	सूत की माला, पत और बच्चन, भारती भडार, इलाहावाद, प्र० स०
सूदन (शब्द०)	सूदन कवि (सुजानचरित के रचयिता, भरतपुरवाले)
सूर०	सूरसागर (दो भाग), ना० प्र० सभा, द्वितीय स०,
सूर० (शब्द०)	सूरदास
सूर० (राधा०)	सूरसागर, सपा० राधाकृष्णदास, वेंकटेश्वर प्रेस, प्र० स०
सेवक (शब्द०)	'सेवक' कवि
सेवक श्याम (शब्द०)	'सेवक श्याम' कवि
सेवासदन	सेवासदन, प्रेमचद, हिंदी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता, द्वि० स०
सैर कु०	सैर कुहसार, प० रतननाथ 'सरशार' नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, च० स० १९३४ ई०
सौ अजान० (शब्द०)	सौ अजान और एक सुजान, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
स्कद०	स्कदगुप्त, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०
स्वर्ण०	स्वर्णकिरण, सुमित्रानदन पत, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०
स्वाधीनता (शब्द०)	स्वाधीनता
स्वामी रा०, स्वामी राम कृष्ण (शब्द०)	स्वामी रामकृष्ण
स्वामी हरिदास (शब्द०)	स्वामी हरिदास
हस०	हसमाला, नरेंद्र शर्मा, भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०
हसराज (शब्द०)	हसराज
हकायके०	हकायके हिंदी, ले० मीर अब्दुल वाहिद, प्र० सपा० 'रुद्र' काशिकेय, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
हनुमन्नाटक (शब्द०)	हनुमन्नाटक
हनुमान (शब्द०), हनुमान कवि (शब्द०)	हनुमान कवि
हम्मीर०	हम्मीरहठ, सपा० जगन्नाथदास 'रत्नाकर', इडियन प्रेस लि०, प्रयाग
ह० रासो०	हम्मीर रासो, सपा० डा० श्यामसुदरदास, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
हरिजन (शब्द०)	कवि हरिजन
हरिदास (शब्द०)	स्वामी हरिदास
हरिश्चद्र (शब्द०)	भारतेंदु हरिश्चद्र
हरिसेवक (शब्द०)	हरिसेवक कवि
हरी घास०	हरी घास पर क्षण भर, अज्ञेय, प्रगति प्रकाशन, नई दिल्ली, १९४९ ई०
हर्ष०	हर्षचरित एक सास्कृतिक अध्ययन, वासुदेवशरण अग्रवाल, विहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, प्र० स०, १९५३ ई०
हालाहल	हालाहल, हरिवशराय बच्चन, भारती भडार, प्रयाग, १९४६ ई०
हिंदी आ०	हिंदी आलोचना
हिं० क० का०	हिंदी कवि और काव्य, गणेशप्रसाद द्विवेदी हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहावाद, प्र० स०
हिंदी का०	हिंदी काव्य की अतश्चेतना
हिं० का० प्र०	हिंदी काव्य पर आंग्ल प्रभाव, रवींद्रसहाय वर्मा, पद्मजा प्रकाशन, कानपुर, प्र० स०
हिंदी काव्य०	हिंदी काव्य मे प्रकृतिचित्रण
हिं० ना०	हिंदी के नाटक
हिंदीप्रदीप (शब्द०)	हिंदी प्रदीप
हिंदी प्रेमगाथा०	हिंदी प्रेमगाथा काव्यसग्रह, गणेशप्रसाद द्विवेदी, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहावाद, १९३९ ई०
हिंदी प्रेमा०	हिंदी प्रेमाख्यानक काव्य, डा० कमल कुलश्रेष्ठ, चौधरी मानसिंह प्रकाशन, कचहरी रोड, इलाहावाद
हिं० प्र० चि०	हिंदी काव्य मे प्रकृतिचित्रण, किरणकुमारी गुप्त, हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग

हिं० सा० भू०	हिंदी साहित्य की भूमिका, हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बबई, तृ० स०, १६४८
हिंदु० सभ्यता	हिंदुस्तान की पुरानी सभ्यता, बेनी प्रसाद, हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयाग, प्र० स०
हित हरिवश (शब्द०)	वैष्णव मत हित हरिवशदास जी
हिम कि०	हिमकिरीटिनी, माखनलाल चतुर्वेदी, सरस्वती प्रकाशन मदिर, इलाहाबाद, तृ० स०
हिम त०	हिमतरंगिणी, माखनलाल चतुर्वेदी, भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०
हिम्मत०	हिम्मतबहादुर विरुदावली, लाला भगवानदीन ना० प्र० सभा, काशी, द्वि० स०
हिल्लोल	हिल्लोल, शिवमगल सिंह 'सुमन', सरस्वती प्रेस, बनारस, द्वि० म०
हुमायूँ०	हुमायूँनामा, अनु० ब्रजरत्नदास, ना० प्र० सभा, वाराणसी, द्वि० स०
हृदय०	हृदयतरग, सत्यनारायण कविरत्न
हृदयराम (शब्द०)	कवि हृदयराम

[व्याकरण, व्युत्पत्ति आदि के सकेताक्षरो का विवरण]

अ०	अंग्रेजी
अ०	अरबी
अक० रूप	अकर्मक रूप
अनु०	अनुकरण शब्द
अनुध्व०	अनुध्वन्यात्मक
अनु० मू०	अनुकरणार्थमूलक
अनुर०	अनुरणात्मक रूप
अप०	अपभ्रंश
अर्ध मा०	अर्धमागधी
अल्पा०	अल्पार्थक
अव०	अवधी
अव्य०	अव्यय
इता०	इतालवी
इब०	इबरानी
उ०	उदाहरण
उच्चा०	उच्चारण सुविधार्थ
उडि०	उडिया
उप०	उपसर्ग
उभय०	उभयलिंग
एकव०	एकवचन
कनाडी	कन्नड भाषा
कहावत	कहावत
काव्यशास्त्र	काव्यशास्त्र
(को०), [को०]	अन्य कोश
*	सभाव्य व्युत्पत्ति
?	अनिश्चित व्युत्पत्ति
कोक०	कोकणी
क्रि०	क्रिया
क्रि० अ०	क्रिया अकर्मक
क्रि० प्र०	क्रिया प्रयोग
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण
क्रि० स०	क्रिया सकर्मक
क्व०	क्वचित्
गीत	लोकगीत
गुज०	गुजराती
ची०	चीनी भाषा
छ०	छद
जर०	जरमन
जापा०	जापानी
जावा०	जावा द्वीप की भाषा
जी०, जीवन०	जीवनचरित
ज्या०	ज्यामिति
ज्यो०	ज्योतिष
डि०	डिंगल
त०	तमिल
तर्क०	तर्कशास्त्र
ति०	तिब्बती भाषा
तु०	तुर्की
तुल०	तुलनीय
दू०	दूहा या दूहला
दे०	देखिए
देश०	देशज

देशी०	देशी शब्द	मि०	मिलाइए
धर्म०	धर्मशास्त्र	मुसल०	मुसलमानो द्वारा प्रयुक्त
नाम०	नामधातु	मुहा०	मुहावरा
ना० धा०	नामधातुज क्रिया	यू०	यूनानी
नामिक धातु	नामिक धातु	यौ०	यौगिक
ने०	नेपाली	राज०	राजस्थानी
न्याय०	न्याय या तर्कशास्त्र	लश०	लशकरी
प०	पजाबी	ला०	लाक्षणिक
परि०	परिशिष्ट	लै०	लैटिन
पा०	पाली	व० कृ०	वर्तमान कृदत
पु०	पुलिग	वर्ण वि०	वर्ण विपर्यय
पुर्त०	पुर्तगाली	वि०	विशेषण
पु०हिं०	पुरानी हिंदी	वि० द्वि० मू०	विषमद्विरुक्तिमूलक
पू०हिं०	पूर्वी हिंदी	वै०	वैदिक
पृ०	पृष्ठ	व्या०	व्याकरण
प्र०	प्रकाशकीय या प्रस्तावना	व्यग्य०	व्यग्यार्थ मे प्रयुक्त
प्रत्य०	प्रत्यय	(शब्द०)	हिंदी शब्दसागर प्रथम सस्करण
प्रा०	प्राकृत	स०	सस्कृत
प्रे०	प्रेरणार्थक रूप	सयो०	सयोजक अव्यय
फ०	फरांसीसी भाषा	सयो० क्रि०	सयोजक क्रिया
फकीर०	फकीरों की बोली	स०	सकर्मक
फा०	फारसी	सक० रूप	सकर्मक रूप
बँग०	बँगला भाषा	सधु०	सधुक्कडी भाषा
बरमी०	बरमी भाषा	सर्व०	सर्वनाम
बहुव०	बहुवचन	सिहली	सिहली भाषा
बु० ख०	बुदेलखड की बोली	स्पे०	स्पेनी भाषा
बुदेल०	बुदेलखड की बोली	स्त्रि०	स्त्रियो द्वारा प्रयुक्त
बोल०	बोलचाल	स्त्री०	स्त्रीलिंग
भाव०	भाववाचक सज्ञा	हिं०	हिंदी
भू०	भूमिका	(पु)	काव्यप्रयोग, पुरानी हिंदी
भू० कृ०	भूत कृदत	>	व्युत्पन्न
मरा०	मराठी	†	प्रातीय प्रयोग
मल०	मलयाली या मलयालम भाषा	‡	ग्राम्य प्रयोग
मला०	मलाया की भाषा	√	धातुचिह्न

हिंदी शब्दसागर

स्कदजित—सज्ञा पु० [स० स्कन्दजित्] स्कद को जीननेवाले—विष्णु का एक नाम।

स्कदता—सज्ञा स्त्री० [स० स्कन्दता] स्कद का भाव या धर्म।

स्कदत्व—सज्ञा पुं० [स० स्कन्दत्व] दे० 'स्कदता'।

स्कदन—सज्ञा पुं० [स० स्कन्दन] [वि० स्कदित, स्कदनीय] १ कोठा साफ होना। रेचन। २ सोखना। शोषण। ३ जाना। ४ निकलना। वहना। गिरना। ५ स्खलन। पतन। ६ खून का जमना।

स्कदपुत्र—सज्ञा पुं० [सं० स्कन्दपुत्र] स्कद का पुत्र—तस्कर। चोर। 'क्षेमेंद्र' के मलदेवचरित, 'विशाखदत्त' के मुद्राराक्षस आदि कृतियो मे तस्करो के उपास्य स्कद कहे गए हैं, अत चोरो को स्कदपुत्र कहा गया है।

स्कदपुर—सज्ञा पुं० [स० स्कन्दरपुर] राजतरगिणी मे उल्लिखित एक प्राचीन नगर का नाम।

स्कदपुराण—सज्ञा पुं० [सं० स्कन्दपुराण] अठारह पुराणो मे से एक प्रसिद्ध पुराण।

विशेप—इस पुराण के अतर्गत सनत्कुमार सहिता, सूत सहिता, शकर सहिता, वैष्णव सहिता, ब्राह्म सहिता और सौर सहिता नामक छह सहिताएँ तथा माहेश्वर खड, वैष्णव खड, ब्रह्म खड, काशी खड, रेवा खड, तापी खड और प्रभास खड नामक सात खड तथा कितने ही माहात्म्य आदि माने जाते हैं। इनमे से काशी खड ही सबसे अधिक प्रचलित और प्रसिद्ध है।

स्कदफला—सज्ञा स्त्री० [स० स्कन्दफला] खजूर। खजूर वृक्ष।

स्कदमाता—सज्ञा स्त्री० [स० स्कदमातृ] स्कद की माता, दुर्गा।

स्कदरेश्वर तीर्थ—सज्ञा पु० [स० स्कन्दरेश्वर तीथ] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

स्कदविशाख—सज्ञा पुं० [स० स्कन्दविशाख] शिव का एक नाम।

स्कदपष्ठी—सज्ञा स्त्री० [स० स्कन्दपष्ठी] १ चैत सुदी छठ जो कार्तिकेय के देवसेनापति पद पर अभिपिक्त होने की तिथि मानी जाती है।

विशेप—वाराह पुराण मे लिखा है कि इस दिन जो लोग व्रत रहकर स्कद की पूजा करते है, उनकी मनस्कामना सिद्ध होती है।

२ कातिक या अगहन सुदी छठ। गुहपष्ठी। ३ तत्र के अनुसार एक देवी का नाम जो स्कद की भार्या कही गई है।

स्कदाशक—सज्ञा पु० [स० स्कन्दाशक] पारा। पारद।

विशेप—कहते हैं, शिव जी के वीर्य से पारे की उत्पत्ति हुई है, इसी से इसे स्कदाशक या शिवाशक कहते हैं।

स्कदापस्मार—सज्ञा पु० [स० स्कन्दापस्मार] एक वालग्रह या रोग।

विशेप—इस रोग से वालक अचेत हो जाता है और उसके मुँह से फेन निकला करता है। चैतन्य होने पर वह पैर पटकता और वार वार जँभाई लेता है। उसके शरीर से खून और पीव की सी दुर्गंध आती है।

स्कदापस्मारी—वि० [सं० स्कन्दापस्मारिन्] स्कदापस्मार ग्रह या रोग मे आक्रात। जिसपर स्कदपस्मार ग्रह का आक्रमण हुआ हो।

स्कदित—वि० [स० स्कन्दित] निकला हुआ। गिरा हुआ। भड़ा हुआ। स्खलित। पतित। उ०—स्कदित भव हर वीरज या तै। स्कद नाम देवन दिय तातैं।—पद्माकर (शब्द०)।

स्कदी—वि० [स० स्कन्दिन्] १ वहनेवाला। २ गिरनेवाला। पतनशील। ३ जम जानेवाला (को०)। ४ फूटनेवाला। स्फुटित होने या चिटकनेवाला (को०)। ५ उछलनेवाला। कूदनेवाला।

स्कदेश्वर तीर्थ—सज्ञा पु० [स० स्कन्देश्वर तीर्थ] एक तीर्थ का नाम [को०]।

स्कदोपनिषद्—सज्ञा स्त्री० [स० स्कन्दोपनिपत्] एक उपनिषद् का नाम।

स्कदोल[1]—वि० [स० स्कन्दोल] ठढा। शीतल। सर्द।

स्कदोल[2]—सज्ञा पुं० ठढक। शीतलता।

स्कध—सज्ञा पु० [स० स्कन्ध] १ कधा। मोढा। उ०—घट वहन मे स्कन्ध नत थे और करतल लाल। —शकु०, पृ० ७। २ वृक्ष की पेडी या तने का वह भाग जहाँ से ऊपर चलकर डालियाँ निकलती है। काड। प्रकाड। दड। ३ डाल। शाखा। ४ समूह। गरोह। झुड। ५ सेना का अग। व्यूह। ६ ग्रथ का विभाग जिसमे कोई पूरा प्रसग हो। खड। जैसे,—भागवत का दशम स्कध। ७ मार्ग। पथ। ८ शरीर। देह। ९ राजा। १० वह वस्तु जिसका राज्याभिपेक मे उपयोग हो। जैसे,—जल, छत्र आदि। ११ मुनि। आचार्य। १२ युद्ध। सग्राम। १३ सधि। राजीनामा। १४ कक पक्षी। सफेद चील। १५ महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम। १६ आर्या छद का एक भेद। १७ बौद्धो के अनुसार रूप, वेदना, विज्ञान, सज्ञा और सस्कार ये पाँचो पदार्थ। बौद्ध लोग इन पाँचो स्कधो के अतिरिक्त पृथक् आत्मा स्वीकार नही करते। १८ दर्शनशास्त्र के अनुसार शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गध ये पाँच विषय। १९ किसी वडी डाल से निकली हुई शाखा (को०)। २० अश। विभाग। खड (को०)। २१ जैनो के अनुसार पिंड (को०)। २२ मानवीय ज्ञान की कोई शाखा या विभाग (को०)। बोझा ढोनेवाले वैलो के ककुद की ऊँचाई की समता (को०)।

स्कधक—सज्ञा पु० [स० स्कन्धक] आर्या गीत या खधा नामक छद का एक नाम।

स्कधचाप—सज्ञा पु० [स० स्कन्धचाप] वहँगी जिसपर कहार वोझा ढोते है। विहगिका।

स्कधज[1]—सज्ञा पुं० [स० स्कन्धज] १ सलई। शल्लकी वृक्ष। २ वड। वट वृक्ष।

स्कधज[2]—वि० स्कध से निकलने या पैदा होनेवाला।

स्कधतरु—सज्ञा पुं० [स० स्कन्धतरु] नारियल का पेड। नारिकेल वृक्ष।

स्कधदेश—सज्ञा पुं० [स० स्कन्धदेश] १ कधा। मोढा। २ पेड का तना या धड। ३ हाथी की गर्दन जिसपर महावत वैठता है। आसन।

स्कधपथ—सज्ञा पु० [स० स्कन्धपथ] एक मनुष्य के चलने लायक तग रास्ता। पगडडी।

स्कधपरिनिर्वाण—सज्ञा पु० [स० स्कन्धपरिनिर्वाण] बोद्धो के अनुसार शरीर के पाँचो स्कधो का नाश। मृत्यु।

स्कधपाद—सज्ञा पु० [स० स्कन्धपाद] मार्कंडेय पुराण के अनुसार एक पर्वत का नाम।

स्कधपीठ—सज्ञा पु० [स० स्कन्धपीठ] कधे की हड्डी। मोढा।

स्कधप्रदेश—सज्ञा पु० [स० स्कन्धप्रदेश] दे० 'स्कधदेश'।

स्कधफल—सज्ञा पु० [स० स्कन्धफल] १ नारियल का पेड। नारिकेल वृक्ष। २ गूलर। उदुवर वृक्ष। ३ विल्व वृक्ष (को०)।

स्कधवधना—सज्ञा पु० [स० स्कन्धबन्धना] सौफ। मधुरिका।

स्कधबीज—सज्ञा पु० [स० स्कन्धबीज] वह वनस्पति या वृक्ष जिसके स्कध से ही शाखाएँ निकलकर जमीन तक पहुँचती और वृक्ष का रूप धारण करती हों। जैसे,—वड, पाकर आदि।

स्कधमणि—सज्ञा पुं० [स० स्कन्धमणि] एक प्रकार का जतर या तावीज।

स्कधमल्लक—सज्ञा पु० [स० स्कन्धमल्लक] कक पक्षी। सफेद चील।

स्कधमार—सज्ञा पुं० [स० स्कन्धमार] बौद्धो के चार मारो मे से एक।

स्कधरुह—सज्ञा पु० [स० स्कन्धरुह] वड का पेड। वट वृक्ष।

स्कधवह—सज्ञा पुं० [स० स्कन्धवह] दे० 'स्कधवाह'।

स्कधवाह—सज्ञा पु० [स० स्कन्धवाह] वह पशु जो कधो के बल बोझ खीचता हो। जसे,—बैल, घोडा आदि।

स्कधवाहक¹—वि० [स० स्कन्धवाहक] कधे पर बोझ उठानेवाला। जो कधे पर बोझ उठाता हो।

स्कधवाहक²—सज्ञा पु० दे० 'स्कधवाह'।

स्कधवाह्य—वि० [स० स्कन्धवाह्य] कधे पर ढोने योग्य (को०)।

स्कधशाखा—सज्ञा स्त्री० [स० स्कन्धशाखा] किसी वृक्ष की मुख्य शाखा। पेड की प्रमुख डाल।

स्कधशिर—सज्ञा पु० [स० स्कन्धशिरस्] कधे की हड्डी। मोढा।

स्कधशृग—सज्ञा पुं० [स० स्कन्धशृङ्ग] भैसा। महिप।

स्कधा—सज्ञा स्त्री० [स० स्कन्धा] १ डाल। शाखा। २ लता। वेल।

स्कधाक्ष—सज्ञा पुं० [स० स्कन्धाक्ष] कार्तिकेय के अनुचर देवताओ का एक गण।

स्कधाग्नि—सज्ञा स्त्री० [स० स्कन्धाग्नि] मोटे लक्कडो या वृक्ष के तने की आग।

स्कधानल—सज्ञा पु० [स० स्कन्धानल] दे० 'स्कधाग्नि'।

स्कधावार—सज्ञा पु० [स० स्कन्धावार] १ राजा का डेरा या शिविर। कपू। २ छावनी। सेनानिवास। उ०—पिता से स्कधावार मे जाने की आज्ञा माँगी।—गदाधर सिंह (शब्द०)। ३ राजा का निवासस्थान। राजधानी। (हेम)। ४ सेना। फौज। ५ वह स्थान जहाँ बहुत से व्यापारी या यात्री आदि डेरा डालकर ठहरे हो।

स्कधिक—सज्ञा पु० [स० स्कन्धिक] कधे पर बोझ ढोनेवाला बैल। वृष।

स्कधी¹—वि० [स० स्कन्धिन्] [वि० स्त्री० स्कधिनी] १ काड से युक्त। तने से युक्त। २ कधेवाला (को०)।

स्कधी²—सज्ञा पु० वृक्ष। पेड।

स्कधेमुख¹—वि० [स० स्कन्धेमुख] जिसका मुख कधे पर हो।

स्कधेमुख²—सज्ञा पु० स्कद के एक अनुचर का नाम।

स्कधोग्रीवी—सज्ञा स्त्री० [स० स्कन्धोग्रीवी] बृहती नामक वर्णवृत्त का एक भेद।

स्कधोपनेय¹—सज्ञा पु० [स० स्कन्धोपनेय] राजाओ मे होनेवाली एक प्रकार की सधि।

स्कधोपनेय²—वि० कधे द्वारा ढोने या वहन करने योग्य।

स्कधोपनेयसधि—सज्ञा स्त्री० [स० स्कन्धोपनेयसन्धि] कामदक नीति के अनुसार वह सधि जिसके अनुसार नियत या निश्चित फल थोडा थोडा करके प्राप्त किया जाय।

स्कध्य—वि० [स० स्कन्ध्य] १ स्कन्ध या कधे का। स्कध सबधी। २ स्कध के समान।

स्कभ—वि० [स० स्कम्भ] १ खभा। स्तभ। २ विश्व को धारण करनेवाला, परमेश्वर। ३ टेक। सहारा। आलवन (को०)। ४ एक वैदिक देवता (को०)।

स्कभन—सज्ञा पु० [स० स्कम्भन] १ खभा। स्तभ। २ सहारा देना। सहारा देने की क्रिया (को०)।

स्कभसर्जन—सज्ञा पुं० [स० स्कम्भसर्जन] दे० 'स्कभसर्जनी'।

स्कभसर्जनी—सज्ञा स्त्री० [स० स्कम्भसर्जनी] बैलगाडी के जुए की कील या खूँटी जिससे बैल इधर उधर नही हो सकते।

स्कन्न—वि० [स०] १ गिरा हुआ। पतित। च्युत। स्खलित। (जैसे, वीर्य)। २ गया हुआ। गत। ३ सूखा। शुष्क। ४ बूँद बूँद करके टपका हुआ। रिसा हुआ (को०)। ५ छिडका हुआ। फैलाया हुआ (को०)।

यौ०—स्कन्नभाग = जिसका अश नष्ट हो गया हो।

स्कब्ध—वि० [स०] १ टेक दिया हुआ। सहारा दिया हुआ। २ रोका हुआ (को०)।

स्कभन—सज्ञा पु० [स०] शब्द। आवाज।

स्कांद¹—वि० [स० स्कान्द] [वि० स्त्री० स्कादी] १ स्कद सबधी। स्कद का। २ शिव सबधी (को०)।

स्कांद²—पुं० स्कद पुराण।

स्कादायन—सज्ञा पु० [स० स्कान्दायन] दे० 'स्कादायन्य'।

स्कादायन्य—सज्ञा पु० [स० स्कान्दायन्य] स्कद के गोत्र मे उत्पन्न व्यक्ति।

स्कादी—सज्ञा पु० [स० स्कान्दिन्] स्कद के शिष्य या उनकी शाखा के अनुयायी।

स्काउट—सज्ञा पु० [अ०] १ समाजसेवा के उद्देश्य से विद्यार्थियो का एक प्रकार का सैनिक ढग का सघटन। बालचर। दे० 'वाय-

स्काउट'। २ चर। भेदिया। प्रणिधि। ३ निरीक्षण करनेवालो का एक दल।

स्कालर—सज्ञा पु० [अ०] १ वह जो स्कूल मे पढता हो। छात्र। विद्यार्थी। २ वह जिसने बहुत विद्याध्ययन किया हो। उच्च कोटि का विद्वान् व्यक्ति। पडित। आलिम। ३ स्नातक।

स्कालरशिप—सज्ञा पु० [अ०] १ वह वृत्ति या निर्धारित धन जो विद्यार्थी को किसी स्कूल या कालेज मे शिक्षा प्राप्त करने के लिये नियमित रूप से सहायतार्थ दिया जाय। छात्रवृत्ति। वजीफा। २ विद्वत्ता। पडित्य।

स्कीम—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ किसी बडे काम को करने का विचार या आयोजन। भावी कार्यो के सबध मे व्यवस्थित विचार। योजना। २ मत्रणा। सकल्प (को०)। ३ कल्पना। विचार। ख्याल (को०)। ४ गूढ अभिसधि (को०)।

स्कूल—सज्ञा पुं० [अ०] १ वह विद्यालय जहाँ किसी भाषा, विषय या कला आदि की शिक्षा दी जाती हो। २ वह विद्यालय जहाँ एट्रेस या मैट्रिकुलेशन (हाई स्कूल) तक की पढाई होती हो। ३ विद्यालय। मदरसा।

मुहा०—स्कूल से निकलना = स्कूल की पढाई समाप्त करके स्कूल छोडना। जैसे,—वह हाल मे ही स्कूल से निकलकर कालेज मे भर्ती हुआ है।

स्कूलटीचर, स्कूलमास्टर—सज्ञा पु० [अ०] स्कूल या अँगरेजी विद्यालय मे पढानेवाला। शिक्षक।

स्कूली—वि० [अ० स्कूल + हिं० ई (प्रत्य०)] १ स्कूल का। स्कूल सबधी। जैसे,—स्कूली पढाई, स्कूली किताबें। २ स्कूल मे पढनेवाला। जैसे,—स्कूली लडका।

स्कोटिका—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का पक्षी, खजन।

स्क्रू—सज्ञा पुं० [अ०] वह कील या काँटा जिसके नुकीले आधे भाग पर चक्करदार गडारियाँ या चूडियाँ बनी होती ह और जो ठोककर नही, बल्कि घुमाकर जडा या कसा जाता है। पेच।

क्रि० प्र०—कसना।—खोलना।—जडना।—निकालना।

स्क्वाड्रन—सज्ञा पुं० [अ०] १ रिसाले का मुख्य भाग जिसमे १०० से २०० तक जवान होते है। २ लडाकू जहाजो के बेडे का एक भाग। लडाकू जहाजो का एक दल।

स्क्वायर—सज्ञा पु० [अ०] १ वर्ग। वर्गाकार। चतुष्कोण। २ दे० 'स्क्वेयर'।

स्क्वेयर—सज्ञा पु० [अ०] १ दे० 'स्क्वायर'। २ चतुष्कोण या चौकोर स्थान जिसके चारो ओर मकान हो। जैसे,—कालेज स्क्वेयर।

स्खदन—सज्ञा पु० [स०] १ फाडना। चीरना। टुकडे टुकडे करना। विदारण। २ हिंसा। हत्या। वध। ३ सताना। उत्पीडन। ४ स्थिरता। स्थैर्य।

स्खल—सज्ञा पु० [स०] लुठन। पतन। लुढकना। गिरना।

स्खलद्वाक्य—वि० [स०] बोलने मे भूल करने या लटपटानेवाला। हकलानेवाला।

स्खलन—सज्ञा पु० [स०] १ गिरना। निकलना। २ फिसलना। सरकना। ३ लडखडाना। ४ गलती। चूकना। भूल। ५ सन्मार्ग से विचलन (को०)। ६ विफलता (को०)। ७ बोलने मे लटपटाना। हकलाना (को०)। ८ चूना। टपकना (को०)। ९ टकराना। उलझना (को०)। १० घर्षण, रगड (को०)।

स्खलन्मति—वि० [स०] अस्थिरबुद्धि। चपलमति। मदबुद्धि [को०]।

स्खलित¹—वि० [स०] १ गिरा हुआ। निकला हुआ। पतित। च्युत। २ फिसला हुआ। सरका हुआ। ३ लटपटाया हुआ। विचलित। अस्थिर। ४ चूका हुआ। उ०—वे अपने को जितना भ्रातिशील, स्खलितबुद्धि या सचूक समझते हैं।—महावीरप्रसाद (शब्द०)। ५ नशे मे चूर। मदमत्त (को०)। ६ हकलानेवाला (को०)। ७ घबडाया हुआ। व्याकुल। विक्षुब्ध (को०)। ८ टपकनेवाला। चूनेवाला (को०)। ९ रोका या हस्तक्षेप किया हुआ। वारित (को०)। १० बीता हुआ। व्यतीत (को०)। ११ अपूर्ण। अधूरा (को०)।

यौ०—स्खलितगति = जो चलने मे लडखडाता या डगमगाता हो। स्खलितबुद्धि = (१) अवसर पर जिसकी बुद्धि काम न करे। (२) मदबुद्धि। स्खलितवीर्य = (१) जिसका पराक्रम या शक्ति विफल हो गई हो। (२) जिसका वीर्य स्खलित या क्षरित हो गया हो।

स्खलित²—सज्ञा पु० १ भूल। चूक। भ्राति। २ धर्मयुद्ध के नियमो को छोडकर, युद्ध मे छल कपट या घात करना। ३ लडखडाना। डगमगाना (को०)। ४ सन्मार्ग से विचलन (को०)। ५ दोष। पाप (को०)। ६ झाँसा। कूट चाल (को०)। ७ क्षरण। स्राव (को०)। ८ विफलता (को०)। ९ हानि। क्षति (को०)।

स्टाप—सज्ञा पु० [अ०] १ एक प्रकार का सरकारी कागज जिसपर अर्जीदावा लिखकर अदालत मे दाखिल किया जाता है या जिसपर किसी प्रकार की पक्की लिखापढी की जाती ह। यह भिन्न भिन्न मूल्यो का होता है, और विशिष्ट कार्यो के लिये विशिष्ट मूल्य का व्यवहृत होता ह। ऐसे कागज पर की हुई लिखापढी पक्की समझी जाती हैं। २ डाक का टिकट। ३ मोहर। छाप।

स्टाइल—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ ढग। तरीका। २ शैली। पद्धति। ३ लेखन शैली।

स्टाक—सज्ञा पु० [अ०] १ बिक्री या बेचने का माल। (दूकानदार)। जैसे,—उसकी दूकान मे स्टाक कम ह। २ वह धन या पूजी जो व्यापारी लोग या उनका कोई समूह किसी काम मे लगाता हो। किसी साझे के काम मे लगाई पूंजी। ३ सरकारी कागज मे व्याज पर लगाया हुआ धन। सरकारी कर्ज की हुडी। ४ रसद। सामान। ५ वह स्थान जहाँ बिक्री का सामान जमा हो। भडार। गुदाम। गोदाम।

स्टाक एक्सचेज—सज्ञा पु० [अ०] १ वह मकान, स्थान या बाडा जहाँ स्टाक या शेयर खरीदे और बेचे जाते हो। २ स्टाक का काम करनेवालो या दलालो की सघटित सभा।

स्टाक ब्रोकर--संज्ञा पु० [अ०] वह दलाल जो दूसरो के लिये स्टाक या शेयरो की खरीद, बिक्री का काम करता हो।

स्टाफ--संज्ञा पुं० [अ० स्टाफ] १ किसी सघटन या सस्थान का कार्यकर्ता वर्ग। उ०--किसी कार्यालय के कार्यकर्ता वर्ग को 'स्टाफ' कहते हैं।--नारिका, पृ० ३५। २ फोजी अफसरो का दल। सैनिक अधिकारियो का समूह।

स्टाफ अफसर--संज्ञा पुं० [अ० स्टाफ आफिसर] वह अफसर जिमके अधीन सेना या सैन्यदल का स्टाफ अर्थात् अफसरो का समूह हो।

स्टाल--संज्ञा पुं० [अ०] १ प्रदर्शिनी, मेले, आदि मे वह छोटी दुकान या टेबल जिसपर बेचने के लिये चीजे सजाई रहती हे। २ वह स्थान जहाँ घोडे रखे जाते ह। अस्तबल। ३ थिएटर मे पिट के आगे की बैठक या आसन।

स्टिच--संज्ञा पु० [अ०] १ सीवन। २ टाँका। वखिया। ३ टाँका लगाने, वखिया करने या सोने का ढग। ४ तीव्र पार्श्वशूल या पसली की पीडा [को०]।

स्टिचिग मशीन--संज्ञा स्त्री० [अ०] किताब या कापी सीने की एक प्रकार की कल जिसमे लोहे के तारो से सिलाई होती है।

स्टीम--संज्ञा पु० [अ०] भाप। जलवाष्प।

मुहा०--स्टीम भरना = जोश दिलाना। उत्साहित करना। उत्तेजन देना।

स्टीम इजिन--संज्ञा पु० [अ०] वह इजिन जो खौलते हुए पानी मे से निकलनेवाली भाप के जोर से चलता हो। जैसे,--रेल का इजिन, जहाज का इजिन।

स्टीमर--संज्ञा पु० [अ०] स्टीम या भाप के जोर से चलनेवाला जहाज। धूम्रपोत।

स्टील--संज्ञा पु० [अ०] इस्पात। पक्का लोहा।

यौ०--स्टील ट्रक = लोहे की पेटी। स्टील वर्क्स = इस्पात का कारखाना।

स्टुडेट--संज्ञा पु० [अ०] विद्यार्थी। छात्र। शिक्षार्थी।

स्टूल--संज्ञा [अ०] तीन या चार पायो की विना ढासने की छोटी ऊँची चौकी जिसपर एक ही आदमी बैठ सकता है। तिपाई। टूल।

स्टेज--संज्ञा पु० [अ०] १ नाट्यमदिर या थिएटर के अदर जमीन से कोई तीन हाथ ऊँचा वना हुआ मच जिसपर नाटक खेला जाता है। रगमच। रगभूमि। रगपीठ। २ मच।

स्टेज मैनेजर--संज्ञा पु० [अ०] रगमच का प्रवधक या व्यवस्थापक।

स्टेट[१]--संज्ञा पुं० [अ०] १ किसी देश की वह समस्त प्रजा या समाज जो अपना शासन आप ही करता हो। सभ्य या स्वतत्र समाज या राष्ट्र। २ वह शक्ति जिसके द्वारा कोई सरकार किसी देश का शासन करती हो। ३ ऐसे राष्ट्रो मे से कोई एक जिनका कोई समिलित सघ हो और जो व्यक्तिश स्वतत्र होने पर भी किसी एक केद्रस्थ शक्ति या सरकार से सवद्ध हो। जैसे,--अमेरिका के यूनाइटेड स्टेट्स। ४ ब्रिटिश शासन मे भारत का कोई स्वतंत्र देशी राज्य। जैसे,--जयपुर एक बहुत वडा स्टेट है।

स्टेट[२]--संज्ञा पु० [अ० एस्टेट] १ वडी जमीदारी। २ स्थावर और जगम सपत्ति। मनकूला और गैर मनकूला जायदाद। जैसे,--वे पाँच लाख रुपयो का स्टेट छोडकर मरे थे।

स्टेनलेस--वि० [अ०] १ दोषरहित। वेदाग। २ जिसपर दाग या जग न लग सके।

यौ०--स्टेनलेस स्टील = वह लौह धातु जिससे वने वर्तनो पर मोरचा आदि नही लगता और उनमे रखे या वनाए गए खाद्य पदार्थ विकृत नही होते।

स्टेशन--संज्ञा पु० [अ०] १ वह स्थान जहाँ निर्दिष्ट समय पर नियमित रूप से रेलगाडियाँ ठहरा करती है। रेलगाडियो के ठहरने और मुसाफिरो के उनपर उतरने चढने के लिये वनी हुई जगह। २ वह स्थान जहाँ कुछ लोगो की, रहने के लिये नियुक्ति हो। वह जगह जहाँ किसी विशिष्ट कार्य के लिये कुछ लोगो की नियुक्ति और निवास हो। जैसे,--पुलिस स्टेशन। ३ वस, मोटर आदि सवारियो के ठहरने का स्थान।

यौ०--स्टेशन मास्टर = रेल के स्टेशन का प्रधान अधिकारी।

स्टेशनरी--संज्ञा स्त्री० [अ०] लेखन सामग्री। कार्यालयो के काम आनेवाला लिखने पढने का सामान।

स्टैंड--संज्ञा पुं० [प्र०] भाडे की सवारियो के रुकने और रवाना होने की जगह। जैसे,--वस स्टैंड, रिक्शा स्टैंड, टैक्सी स्टैंड आदि।

स्टैंडर्ड--संज्ञा पुं० [अ०] १ शुद्धता या श्रेष्ठता के विचार से निश्चित गुण की उच्च मात्रा या स्वरूप जो प्राय आदर्श माना जाता है और जिससे उस वर्ग के अन्यान्य पदार्थो की तुलना की जाती है। आदर्श। मानक। जैसे--(क) उनके पदत्याग करते ही पत्र का स्टैंडर्ड गिर गया। (ख) हिंदी मे आजकल कितने ही ऐसे पत्र निकलते है जिनके लेख ऊँचे स्टैंडर्ड के होते हैं। २ दर्जा। श्रेणी।

यौ०--स्टैंडर्ड सोना = स्वतत्र होने के अनतर भारत सरकार द्वारा घोषित स्वर्णनियत्रण अधिनियम के अनुसार १५ कैरेट का सोना।

स्टैंडिग कमिटी--संज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'स्थायी समिति'।

स्टैंडिग कोन्सल--संज्ञा पु० [अ०] वह बैरिस्टर या ऐडवोकेट जो सरकार की ओर से मामला चलाने मे ऐडवोकेट जनरल की सहायता करता है।

स्टैंडिग मैटर--संज्ञा पु० [अ०] किसी प्रेस मे कपोज की हुई वह सामग्री जो एक वार छपने के वाद कभी पुन छापने के लिये रोक रखी जाय।

स्टैच्यू--संज्ञा पु० [अ०] किसी प्रसिद्ध या विशिष्ट व्यक्ति की पत्थर, काँसे आदि की पूरे कद की प्रतिमा, मूर्ति या पुतला जो प्राय स्मारक स्वरूप किसी सार्वजनिक स्थान पर स्थापित किया जाता है।

स्टोइक--संज्ञा पु० [अ०] जीनो नामक एक यूनानी विद्वान् का चलाया हुआ सप्रदाय।

विशेष—स्टाइक सम्प्रदायवालो का सिद्धात है कि मनुष्य को विषयसुखो का त्याग करके बहुत सयमपूर्वक रहना चाहिए।

२ उक्त सप्रदाय को माननेवाला व्यक्ति। विषयसुखो का त्याग करनेवाला व्यक्ति। विषयविमुख व्यक्ति।

स्ट्राइक—सज्ञा स्त्री० [अ०] हडताल। जैसे,—रेलवे स्ट्राइक।

स्ट्रीट—सज्ञा स्त्री० [अ०] नगर के भीतरी भाग की पतली छोटी सडक।

स्ट्रेट—सज्ञा पु० [अ०] १ जलडमरूमध्य। २ वह जो टेढामेढा न हो, सीधा हो।

स्तकु—सज्ञा पु० [स० स्तड्कु] प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जिसपर चमडा मढा होता था।

स्तव—सज्ञा पु० [स० स्तम्ब] १ ऐसा पौधा जिसकी एक जड से कई पौधे निकले और जिसम कडी लकडी या डठल न हो। गुल्म। २ भाडी। भुरमुट (को०)। ३ घास की ऑटी। ४ अन्न के पौधो की ऑटी या पूली (को०)। ५ भुड। पुज। गुच्छा (को०)। ६ खभा। स्तभ (को०)। ७ असवेद्यता। जडता। स्तभ (को०)। ८ वह स्तभ या खूटा जिसमे हाथी बाँधे जाते है (को०)। ९ रोहिडा। रोहतक वृक्ष। १० एक पर्वत का नाम।

स्तवक—सज्ञा पु० [स० स्तम्बक] १ गुच्छ। गुच्छा २ नकछिकनी। क्षवक वृक्ष। छिक्कनी।

स्तवकरि¹—सज्ञा पुं० [स० स्तम्बकरि] धान।

स्तवकरि²—वि० अनाज के पौधो की पूली बनानेवाला [को०]।

स्तवकरिता—सज्ञा स्त्री० [स० स्तम्बकरिता] धान्यादि के पौधो की ऑटी या पूली बनाना।—मुद्राराक्षस।

स्तवकार—वि० [स० स्तम्बकार] गुच्छे बनानेवाला।

स्तवघन—सज्ञा पुं० [स० स्तम्बघन] १ दाँती जिससे घास आदि काटते है। हँसिया। २ खुरपा (को०)। ३ तिन्नी या धान एकत्र करने की टोकरी (को०)।

स्तवघात—सज्ञा पु० [स० स्तम्बघात] दे० 'स्तवघन'।

स्तवघ्न—सज्ञा पुं० [स० स्तम्बघ्न] दे० 'स्तवघन'।

स्तवज—वि० [स० स्तम्बज] गुच्छेदार। स्तवकित [को०]।

स्तवपुर—सज्ञा पुं० [स० स्तम्बपुर] ताम्रलिप्तपुर का एक नाम।

स्तवमित्र—सज्ञा पुं० [स० स्तम्बमित्र] महाभारत के अनुसार जरिता के एक पुत्र का नाम।

स्तवयजु—सज्ञा पुं० [स० स्तम्बयजुप्] घास और गुल्म अथवा गुच्छ को खनने और तोडने का एक धार्मिक कृत्य [को०]।

स्तवहनन—सज्ञा पु० [स० स्तम्बहनन] [स्त्री० स्तवहननी] घास आदि खोदन की खुरपी।

स्तवी¹—सज्ञा पुं० [स० स्तम्बिन्] घास खोदने की खुरपी।

स्तवी²—वि० भाडी या गुच्छेदार [को०]।

स्तवेरम—सज्ञा पुं० [स० स्तम्बेरम] हाथी। हस्ति।

स्तवेरमासुर—सज्ञा पुं० [स० स्तम्बेरमासुर] एक असुर का नाम। गजासुर।

स्तभ—सज्ञा पु० [स० स्तम्भ] १ खभा। थभा। थूनी। २ पेड का तना। तरुस्कध। ३ साहित्यदर्पण के अनुसार एक प्रकार का सात्विक भाव। किसी कारणविशेष से सपूर्ण अगो की गति का अवरोध। जडता। अचलता। उ०—देखा देखी भई, छूट तब तै सँकुच गई, मिटी कुलकानि, कैसो घूघुट को करिबो। लागी टकटकी, उर उठी धकधकी, गति थकी, मति छकी, ऐसो नेह को उघरिबो। चित्र कैसे लिखे दोऊ ठाढे रहे 'कासीराम' नाही परवाह लाख लाख करो लरिबो। वसी को बजैबो नटनागर बिसरि गयो, नागरि बिसरि गई गागरि को भरिबो।—रसकुसुमाकर (शब्द०)। ४ प्रतिबध। रुकावट। ५ एक प्रकार का तात्रिक प्रयोग जिससे किसी की चेष्टा या शक्ति को रोकते है। ६ काव्य क सात्विक भावो मे से एक। ७ विष्णुपुराण के अनुसार एक ऋषि का नाम। ८ अभिमान। गर्व। घमड। दभ। ९ रोग आदि के कारण होनेवाली बेहोशी। १० स्थिरता। कडापन (को०)। ११ नियत्रित करना। दमन (को०)। १२ भरना (को०)। १३ सहारा। आश्रय। टेक (को०)।

स्तभक¹—वि० [स० स्तम्भक] १ रोकनेवाला। रोधक। २ कब्ज करनेवाला। ३ वीर्य रोकनेवाला।

स्तभक²—सज्ञा पु० १ खभा। थभा। २ शिव के एक गण का नाम।

स्तभकर¹—वि० [स० स्तम्भकर] १ रोकनेवाला। रोधक। २ जडता उत्पन्न करनेवाला।

स्तभकर²—सज्ञा पु० घेरा। वेष्टन। टट्टी।

स्तभकारण—सज्ञा पुं० [स० स्तम्भकारण] रोक या बाधा का कारण।

स्तभकी¹—सज्ञा पु० [स० स्तम्भकिन्] प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जिसपर चमडा मढा होता था।

स्तभकी²—सज्ञा स्त्री० [स० स्तम्भकी] एक देवी का नाम।

स्तभता—सज्ञा स्त्री० [स० स्तम्भता] १ स्तभ का भाव। २ जडता।

स्तभतीर्थ—सज्ञा पु० [स० स्तम्भतीर्थ] एक प्राचीन स्थान का नाम।

विशेष—आजकल यह स्थान खभात के नाम से प्रसिद्ध है। किसी समय यह एक प्रसिद्ध तीर्थ और व्यापार का बहुत बडा केंद्र था।

स्तभन—सज्ञा पु० [स० स्तम्भन] १ रुकावट। अवरोध। निवारण। २ विशेषत वीर्य आदि के स्खलन मे बाधा या विलब। ३ वह औषध जिससे वीर्य का स्खलन विलब से हो। वीर्यपात रोकनेवाली दवा।

विशेष—इस अर्थ मे लोग भ्रम से इस शब्द का स्तभक के स्थान पर प्रयोग करते है।

३ सहारा। टेकान। टेक। ४ जड या निश्चेष्ट करना। जडीकरण। ५ रक्त के प्रवाह या गति का रोकना। ६ एक प्रकार का तात्रिक प्रयोग जिससे किसी चेष्टा या शक्ति को रोकते हैं। ७ वह औषध जो रूखी, ठढी और कसैली हो, जिसमे पाचन शक्ति कम हो और जो वायु करनेवाला हो। ८ कब्ज। मलावरोध। ९ कामदेव के पाँच बाणो मे से एक। (शेष चार बाण ये है—उन्मादन, शोषण, तापन और समोहन)। १०. स्राव

होना। स्वस्थचित्त होना (को०)। ११ दृढ या कडा करना (को०)। १२ दवाना। नियंत्रित करना (को०)। १३ स्तभवत् करने की क्रिया। स्तभ करना (को०)।

स्तभनी—सज्ञा स्त्री० [स० स्तम्भनी] एक प्रकार का इद्रजाल या जादू।

स्तभनीय—वि० [स० स्तम्भनीय] स्तभन के योग्य।

स्तभपूजा—सज्ञा पु० [स० स्तम्भपूजा] विवाह, यज्ञ ग्रादि के समय मडप मे गडे खभे की पूजा।

स्तभमित्र—सज्ञा पु० [स० स्तम्भमित्र] एक महर्षि का नाम।

स्तभवृत्ति—सज्ञा स्त्री० [स० स्तम्भवृत्ति] प्राण को जहाँ का तहाँ रोक देना, जो प्राणायाम का एक ग्रग है।

स्तभि—सज्ञा पु० [स० स्तम्भि] समुद्र। सागर।

स्तभिका—सज्ञा स्त्री० [स० स्तम्भिका] १ चौकी या ग्रासन का पाया। २ छोटा खभा। खँभिया।

स्तभित—वि० [स० स्तम्भित] १ जो जड या ग्रचल हो गया हो। जडीभूत। निश्चल। निस्तब्ध। सुन्न। २ ठहरा या ठहराया हुग्रा। स्थित। ३ रुका या रोका हुग्रा। ग्रवरुद्ध। निवारित। ४ एकत्रीकृत या भरा हुग्रा (को०)।

यौ०—स्तभितवाष्प = जिसका वाष्प या ग्रश्रु रुक गया हो। स्तभितवाष्पवृत्ति = उमडते ग्राँसुग्रो को रोक लेनेवाला। स्तभितवाष्पवृत्तिकलुप = उमडते ग्राँसुग्रो को रोक लेने से जिसकी दृष्टि धूमिल या ग्रस्पष्ट हो गई हो।

स्तभिताश्रु—वि० [स० स्तम्भिताश्रु] जिसके ग्रश्रु ग्राँखो मे ही रुक गए हो। रुके हुए ग्राँसुग्रोवाला।

स्तभिनी—सज्ञा स्त्री० [स० स्तम्भिनी] १ योग के ग्रनुसार पाँच धारणाग्रो मे से एक। २ पच तत्त्वो मे से एक। क्षिति। पृथ्वी (को०)।

स्तभी[१]—वि० [स० स्तम्भिन्] १ स्तभ या खभो से युक्त। २ ग्रवरुद्ध करने या रोकनेवाला। ३ दाभिक। ४ सहारा देनेवाला। स्थिर करनेवाला (को०)।

स्तभी[२]—सज्ञा पु० समुद्र।

स्तभोत्कीर्ण—वि० [स०] जो स्तभ पर उत्कीर्ण हो। खभो पर उकेरा हुग्रा (प्रतिमा, चित्र ग्रादि)।

स्तत्क—सज्ञा पु० [स०] कतरा। बूँद। ठोप। विंदु (को०)।

स्तनध—वि० [स० स्तनन्ध] दे० 'स्तनधय'।

स्तनधय[१]—सज्ञा पु० [स० स्तनन्धय] [स्त्री० स्तनधया, स्तनधयी] १ दूधपीता बच्चा। स्तनपायी शिशु। २ वछडा। वत्स।

स्तनधय[२]—वि० दूधपीता। स्तनपान करनेवाला।

स्तन—सज्ञा पुं० [स०] १ स्त्रियो के वक्ष पर उभरनेवाला विशेष ग्रग। कुच। २ मादा पशुग्रो का थन या छाती जिसमे दूध रहता है। जैसे,—गौ का स्तन। ३ कुच का ग्रग्रभाग। चूचुक। स्तन की घुडी (को०)।

मुहा०—स्तन पिलाना = स्तन मुँह मे लगाकर उसका दूध पिलाना। स्तन पीना = स्तन मुँह मे लगाकर उसका दूध पीना।

स्तनकलश—सज्ञा पुं० [स०] कलश के जैसे स्तन (को०)।

स्तनकील—सज्ञा पु० [स०] वैद्यक के ग्रनुसार स्त्रियो की छाती मे होनेवाला एक प्रकार का फोडा।

स्तनकुड—सज्ञा पुं० [स० स्तनकुण्ड] महाभारत मे वर्णित एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

स्तनकुभ—सज्ञा पु० [स० स्तनकुम्भ] दे० 'स्तनकलश'।

स्तनकुड्मल—सज्ञा पुं० [स०] नारी का कुच। स्तन (को०)।

स्तनकोटि—सज्ञा पुं० [स०] स्तन का ग्रग्रभाग। चूचुक (को०)।

स्तनकोरक—सज्ञा पु० [स०] स्तन जो कोरक या कली सदृश हो।

स्तनग्रहं—सज्ञा पु० [स० स्तनपान] स्तन्यपान (को०)।

स्तनचूचुक—सज्ञा पु० [स०] स्तन का ग्रग्रभाग। कुच के ऊपर की घुडी। चूँची। ढेपनी।

स्तनतट—सज्ञा पुं० [स०] स्तनो का तट भाग। स्तनो का ढालवाँपन या उभार (को०)।

स्तनत्याग—सज्ञा पुं० [स०] बच्चे का दूध पीना छोड देना (को०)।

स्तनथ—सज्ञा पुं० [स०] १ घोर या भीषण नाद। गडगडाहट। २ (शेर की) दहाड। गरज। गर्जन।

स्तनथु—सज्ञा पु० [स०] (शेर की) दहाड। गरज।

स्तनदात्री—सज्ञा स्त्री० [स०] छाती का दूध पिलानेवाली।

स्तनद्वेषी—वि० [स० स्तनद्वेषिन्] जो स्तन को ग्रहण न करे (शिशु)।

स्तनन—सज्ञा पुं० [सं०] १ ध्वनि। नाद। शब्द। ग्रावाज। २ बादलो की गडगडाहट। मेघगर्जन। ३ गुर्राना (को०)। ४ कराह। ग्राह। ग्रार्तध्वनि। ५ जोर से साँस लेना। कठिनाई से साँस लेना (को०)। ६ कफ ग्रादि के कारण साँस लेने मे होनेवाली खरखराहट (को०)।

स्तनप[१]—सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० स्तनपा, स्तनपायिका] स्तनपायी शिशु। दूधपीता बच्चा। शिशु।

स्तनप[२]—वि० स्तन पीनेवाला।

स्तनपतन—सज्ञा पु० [सं०] स्तनो का तनाव ढीला होना या लटक जाना (को०)।

स्तनपाता—सज्ञा पु०, वि० [स०] दे० 'स्तनप'।

स्तनपान—सज्ञा पु० [स०] स्तन मे का दूध पीना।

स्तनपायक—सज्ञा पु० वि० [स्त्री० स्तनपायिका] दे० 'स्तनप' (को०)।

स्तनपायिक—सज्ञा पु० [स०] स्तनपोपिक नाम का एक जनपद।

स्तनपायिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दूधपीती बच्ची। बहुत छोटी लडकी। दुग्धपोष्या।

स्तनपायी—वि० [पु० स्तनपायिन्] जो माता के स्तन से दूध पीता हो। स्तनप।

स्तनपोषिक—सज्ञा पु० [सं०] महाभारत के ग्रनुसार एक प्राचीन जनपद जिसे स्तनपायिक, स्तनपोपिक ग्रौर स्तनयोधिक भी कहते थे।

स्तनवाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णुपुराण मे वर्णित एक प्राचीन जनपद। २ इस देश का निवासी।

स्तनभर—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्थूल या सुपुष्ट स्तन। बडी और पुष्ट छाती। २ वह पुरुष जिसका स्तन या छाती स्त्री के समान हो।

स्तनभव¹—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का रतिबंध या संभोग का आसन।

स्तनभव²—वि० स्तन से उत्पन्न।

स्तनमध्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ दोनो स्तनो के बीच का या मध्यवर्ती स्थान। २ कुचाग्र। चूचुक (को०)।

स्तनमुख—संज्ञा पुं० [सं०] स्तन या कुच का अगला भाग। स्तन की घुडी। चूचुक। चूची।

स्तनमूल—संज्ञा पुं० [सं०] स्तन का मूल भाग या स्तन का तट।

स्तनयित्नु—संज्ञा पुं० [सं०] १ मेघगर्जन। बादलो की गडगडाहट। २ मेघ। बादल। ३ विद्युत्। बिजली। ४ मोथा। मुस्तक। ५ मृत्यु। मौत। ६ रोग। बीमारी।

यौ० —स्तनयित्नु घोष = मेघनिर्घोष के समान गडगडाहट।

स्तनरोग—संज्ञा पुं० [सं०] गर्भवती और प्रसूता स्त्रियो के स्तनो मे होनेवाला एक प्रकार का रोग।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यह रोग वायु, पित्त और कफ के कुपित होने से होता है। इसमे स्तन का मास और रक्त दूषित हो जाता है। इसके पाँच भेद हैं—वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज और आगतुज।

स्तनरोहित—संज्ञा पुं० [सं०] स्तन या कुच के अग्र भाग के ऊपर दोनो ओर का अग जो सुश्रुत के अनुसार परिमाण मे दो अगुल होता है।

स्तनविद्रधि—संज्ञा पुं० [सं०] स्तन पर होनेवाला फोडा। थनैली।

स्तनवृंत—संज्ञा पुं० [सं० स्तनवृन्त] स्तन या कुच का अग्रभाग। चूचुक। चूची।

स्तनवेपथु—संज्ञा पुं० [सं०] छाती की धडकन। स्तनो का कपन या थरथराना (को०)।

स्तनशिखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्तन का अग्रभाग। चूचुक। ढेंपनी। कुचाग्र। चूची।

स्तनशोष—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का रोग जिसमे स्तन सूख जाते हैं।

स्तनागराग—संज्ञा पुं० [सं० स्तनाङ्गराग] स्तनो पर लगाने के लिये सुगधित द्रव्यो का मिश्रित लेप या चूर्ण (को०)।

स्तनातर—संज्ञा पुं० [सं० स्तनान्तर] १ हृदय। दिल। २ स्तनो का मध्यवर्ती भाग। ३ स्तन या छाती पर का चिह्न जो वैधव्य-सूचक समझा जाता है।

स्तनांशुक—संज्ञा पुं० [सं०] स्तनो पर बाँधने का वस्त्र। कुचपट्टिका।

स्तनाग्र—संज्ञा पुं० [सं०] स्तनो का अग्रवर्ती अश। चूचुक। ढेपनी। स्तनशिखा (को०)।

स्तनाभुज—संज्ञा पुं० [सं०] वह प्राणी जो अपने बच्चो को स्तन से दूध पिलाता हो।

स्तनाभोग—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्तन की पूर्णता या पुष्टता। २ स्तन का आभोग या घेरा (को०)। ३ वह व्यक्ति जिसके स्तन औरतो की तरह हो (को०)।

स्तनावरण—संज्ञा पुं० [सं०] स्तन ढकने का कपडा। स्तनांशुक।

स्तनित¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ मेघगर्जन। बादलो की गरज। २ ध्वनि। शब्द। आवाज। ३ धनुष आदि की प्रत्यचा की आवाज। धनुप की टकोर (को०)। ४ करतल ध्वनि। ताली बजाने का शब्द।

स्तनित²—वि० १ ध्वनित। निनादित। शब्दित। २ गर्जन किया हुआ। गर्जित।

स्तनितकुमार—संज्ञा पुं० [सं०] जैनो के देवताओ का वर्ग। इन्हें भुवनाधीश भी कहते हैं।

स्तनितफल—संज्ञा पुं० [सं०] कँटाय का पेड। विककत वृक्ष।

स्तनितसमय—संज्ञा पुं० [सं०] बादलो के गर्जन का काल।

स्तनितसुभग—क्रि० वि० [सं०] आनंददायक गर्जन के साथ। आनंदप्रद गर्जन करते हुए (को०)।

स्तनी—वि० [सं० स्तनिन्] १ जिसके स्तन हो। स्तनयुक्त। स्तनवाला। जैसे, सुस्तनी, अर्थात् सुदर स्तनोवाली। २ एक प्रकार के विकृत रूपवाले अश्व के लिये प्रयुक्त।

स्तनोत्तरीय—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्तनांशुक'।

स्तन्य¹—संज्ञा पुं० [सं०] दूध। दुग्ध।

स्तन्य²—वि० जो स्तन में हो।

स्तन्यजनन—वि० [सं०] दूध उत्पन्न करने या बढानेवाला।

स्तन्यत्याग—संज्ञा पुं० [सं०] शिशु द्वारा माता का दूध पीना छोड देना (को०)।

स्तन्यद—वि० [सं०] स्तन्य देनेवाला। अच्छा दुग्ध उत्पन्न करनेवाला (को०)।

स्तन्यदा—वि० स्त्री० [सं०] जिसके स्तनो मे से दूध निकलता हो। दूध देनेवाली।

स्तन्यदान—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्तन से दूध पिलाना। स्तन्य का दान कराना। २ स्तन का दूध देना (को०)।

स्तन्यप¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० स्तन्यपा] स्तन या दूध पीनेवाला।

स्तन्यप²—संज्ञा पुं० दूधपीता बच्चा। शिशु।

स्तन्यपान—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्तन का दूध पीना। २ स्तन्य पीने का काल। शिशु अवस्था।

स्तन्यपायी—वि० [सं० स्तन्यपायिन्] जो स्तन से दूध पीता हो। स्तन पीनेवाला। दूधपीता।

स्तन्यभुक्, स्तन्यभुज्—वि० [सं०] दुधमुहाँ। दूधपीता (को०)।

स्तन्यरोग—संज्ञा पुं० [सं०] अस्वस्थ या रोगिणी माता का दूध पीने से होनेवाला रोग।

स्तन्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] कलमी शाक। कलबी साग।

स्तवक—संज्ञा पुं० [सं०] १ गुच्छ। गुच्छा। २ गुलदस्ता। ३ मोर की पूँछ। मयूरपिच्छ। ४ रेशम का लच्छा। ५ समूह। ६ किसी पुस्तक का एक भाग या अध्याय (को०)।

स्तवकखड—संज्ञा पुं० [सं० स्तवकखण्ड] एक कंद [को०]।

स्तवकफल—संज्ञा पुं० [सं०] एक फल [को०]।

स्तवकसनिभ—वि० [सं० स्तवकसन्निभ] गुच्छे के तुल्य। गुच्छे के समान। गुच्छे सा [को०]।

स्तवकाचित—वि० [सं०] स्तवक या पुष्पो से ढका हुआ [को०]।

स्तवकित—वि० [सं०] स्तवकों से युक्त। पुष्पो की राशि या ढेर से भरा हुआ। [को०]।

स्तब्ध¹—वि० [सं०] १ जो जड या अचल हो गया हो। जडीभूत। स्तभित। स्पदनहीन। निश्चेष्ट। सुन्न। २ मजबूती से ठहराया या सहारा दिया हुआ। ३ दृढ। स्थिर। ४ मद। धीमा। सुस्त। ५ दुराग्रही। हठी। ६ अभिमानी। घमडी। ७ निठुर। निष्ठुर (को०)। ८ रुद्ध। रोका हुआ (को०)। ९ मोटा। स्थूल। १० बेडौल। भद्दा (को०)। ११ गतिहीन (को०)। १२ कठोर। कडा।

स्तब्ध²—संज्ञा पु० वशी के छह दोषो मे से एक जिसमे उसका स्वर कुछ धीमा होता है।

स्तब्धकर्ण—वि० [सं०] जिसके कान खडे हो [को०]।

स्तब्धगात्र—वि० [सं०] जिसके अग स्तब्ध हो या जिसने अपने अगो को कठोर कर लिया हो [को०]।

स्तब्धता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्तब्ध भाव। जडता। २ निश्चेष्टता। स्पदनहीनता। ३ स्थिरता। दृढता। ४ गरबीलापन। घमड। गर्व। ५ बहरापन। बधिरता।

स्तब्धतोय—वि० [सं०] जलाशय आदि जिसका पानी स्थिर या जम गया हो [को०]।

स्तब्धत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्तब्धता'।

स्तब्धदृष्टि—वि० [सं०] जिसकी टकटकी बँध गई हो। जिसकी पलके न गिर रही हो [को०]।

स्तब्धनयन—वि० [सं०] दे० 'स्तब्धदृष्टि'

स्तब्धपाद—वि० [सं०] १ जिसके पैर रोग आदि से जकड गए हो। २ खज। लँगडा। पगु।

स्तब्धपादता—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्तब्धपाद होने का भाव। खजता। पगुता। लँगडापन।

स्तब्धबाहु—वि० [सं०] जिसकी भुजाएँ सुन्न या निष्क्रिय हो गई हों [को०]।

स्तब्धमति—वि० [सं०] मदबुद्धि। कुदजेहन।

स्तब्धमेढ्र—वि० [सं०] जिसकी पुरुषेंद्रिय मे जडता आ गई हो। क्लीव। नपुसक।

स्तब्ध रोमकूप—वि० [सं०] जिसके रोमछिद्र गवरुद्ध हो।

स्तब्धरोमा¹—संज्ञा पुं० [सं० स्तब्धरोमन्] सूअर। सूकर।

स्तब्धरोमा²—वि० जिसके रोम या रोगटे खडे हो गए हो। स्तभित।

स्तब्धलोचन—वि० [सं०] जिनकी पलकें नही गिरती (देवताओ के लिये मुख्यत प्रयुक्त)। अनिमिषनेत्र। अपलकलोचन [को०]।

स्तब्धवपु—वि० [सं० स्तब्धवपुस्] जिसके शरीर की चेष्टाएँ रुक गई हो [को०]।

स्तब्धसभार—संज्ञा पु० [सं० स्तब्धसम्भार] एक राक्षस का नाम।

स्तब्धसक्थि—वि० [सं०] जिसकी जाँघे बेकार हो गई हो। लँगडा।

स्तब्धहनु—वि० [सं०] जिसके जबडे गतिशून्य हों [को०]।

स्तब्धाक्ष—वि० [सं०] दे० 'स्तब्धदृष्टि [को०]।

स्तब्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्थिरता। कडापन। २ दृढता। अचलता। ३ जडता। असवेद्यता। ४ ढिठाई। धृष्टता [को०]।

स्तब्धोद—वि० [सं०] दे० 'स्तब्धतोय'।

स्तभ—संज्ञा पु० [सं०] बकरा।

स्तभि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ असवेद्यता। जडता। २ कठोरता। दृढता [को०]।

स्तर¹—संज्ञा पु० [सं०] १ तह। परत। तबक। थर। २ सेज। शय्या। तल्प। ३ कोई वस्तु जो फैली हुई हो (को०)। ४. सतह। तल (को०)। ५ मानदड। श्रेणी। कोटि। मान (अ० स्टैंडर्ड)। ६ भूगर्भ शास्त्र के अनुसार भूमि आदि का एक प्रकार का विभाग जो उसकी भिन्न भिन्न कालो मे बनी हुई तहो के आधार पर होता है।

स्तर²—वि० [सं०] फैलनेवाला। विस्तृत होनेवाला [को०]।

स्तरण—संज्ञा पु० [सं०] १ फैलाने या बिखेरने की क्रिया। २ अस्तरकारी। पलस्तर। ३ बिछौना। बिस्तर।

स्तरणीय—वि० [सं०] १ फैलाने या बिखेरने योग्य। २ बिछाने योग्य।

स्तरिमा—संज्ञा पुं० [सं० स्तरिमन्] सेज। शय्या। तल्प।

स्तरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ धूआँ। धूम्र। २ भाप। वाष्प (को०)। ३ बध्या गौ (को०)। ४ वत्सतरी। बछिया (को०)।

स्तरीमा—संज्ञा पुं० [सं० स्तरीमन्] सेज। शय्या।

स्तरु—संज्ञा पुं० [सं०] शत्रु। वैरी।

स्तर्य—वि० [सं०] १ फैलाने या बिखेरने योग्य। २ बिछाने योग्य। स्तरणीय।

स्तव—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी देवता का छदोबद्ध स्वरूपकथन या गुणगान। स्तुति। स्तोत्र। जैसे,—शिवस्तव, दुर्गास्तव। २ ईशप्रार्थना। ३ प्रशस्ति। प्रशसा (को०)। ४ एक पदार्थ (को०)।

स्तवक¹—संज्ञा पु० [सं०] १ फूलों का गुच्छा। गुच्छक। गुलदस्ता। २ समूह। ढेर। ३ पुस्तक का कोई अध्याय या परिच्छेद। जैसे,—प्रथम स्तवक, द्वितीय स्तवक। ४ मोर की पूँछ का पख। ५ स्तव। स्तोत्र। ६ वह जो किसी की स्तुति या स्तव करता हो। गुणकीर्तन करनेवाला व्यक्ति। वदी। स्तुतिपाठक।

स्तवक[2]—वि० स्तुति करनेवाला [को०]।

स्तवकर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] लाक्षानिर्मित कुडल। लाह से बने हुए कर्णाभूषण [को०]।

स्तवकित—वि० [सं०] पुष्पो या पुष्पगुच्छो से भरा हुआ [को०]।

स्तवथ—संज्ञा पुं० [सं०] स्तुति। स्तव। स्तोत्र।

स्तवन—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्तुति करने की क्रिया। गुणकीर्तन। २ स्तव। स्तुति। स्तोत्र।

स्तवनीय - वि० [सं०] जो स्तव या स्तुति करने के योग्य हो। प्रशंसा के योग्य। प्रशसनीय।

स्तवन्य—वि० [सं०] दे० 'स्तवनीय'।

स्तवरक—संज्ञा पुं० [सं०] आवरक। घेरा। बाड। वेष्ठन।

स्तवि—संज्ञा पुं० [सं०] सामगान करनेवाला। सामगायक।

स्तवितव्य—वि० [सं०] स्तव के योग्य। प्रशसा के योग्य।

स्तविता—संज्ञा पुं० [सं० स्तवितृ] स्तवन या स्तुति करनेवाला। गुणगान करनेवाला। स्तुतिपाठक।

स्तवेय्य—संज्ञा पुं० [सं०] इद्र का एक नाम।

स्तव्य—वि० [सं०] स्तव या स्तुति के योग्य। स्तवनीय।

स्तावेरम—वि०[सं० स्ताम्वेरम] हस्ति सवधी। हाथी से सवधित [को०]।

स्ताघ—वि० [सं०] जो थहाया जा सके। छिछला। उथला [को०]।

स्तायु—संज्ञा पुं० [सं०] चोर।

स्तारा—संज्ञा पुं० [देशज] एक प्रकार का पौधा।

स्ताव—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्तव। स्तुति। गुणगान। २ स्तव करनेवाला। गुणगान करनेवाला।

स्तावक—वि० [सं०] १ स्तव या स्तुती करनेवाला। गुणकीर्तन करनेवाला। प्रशसक। २ वदी। वदीजन।

स्तावर—संज्ञा स्त्री० [देशज ?] एक प्रकार की बेल।

स्तावा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वाजसनेयी सहिता के अनुसार एक अप्सरा का नाम।

स्ताव्य—वि० [सं०] स्तव के योग्य। प्रशसा के योग्य।

स्तिगीमूरा—संज्ञा पुं० [अ० स्टिगी + मूर] जहाज का पाल और उसकी रस्सी। (लश०)।

स्तिभि—संज्ञा पुं० [सं० स्तिम्भि] दे० 'स्तिभि' [को०]।

स्तिपा—संज्ञा पुं० [सं०] आश्रितो की रक्षा करनेवाला। गृहपालक।

स्तिभि—संज्ञा पुं० [सं०] १ फूलो का गुच्छा। गुच्छक। स्तवक। २ समुद्र। ३ अवरोध। प्रतिबध।

स्तिभिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गुच्छा। स्तवक।

स्तिमित[1]—वि० [सं०] १ भीगा हुआ। तर। नम। आर्द्र। २ स्थिर। निश्चल। उ०—सब सभा रही निस्तव्ध, राम के स्तिमित नयन। —अपरा, पृ० ४५। ३ शात। ४ प्रसन्न। सतुष्ट। ५ कोमल (को०)। ६ वद। मुकुलित (को०)। ७ भकबा हुआ। निश्चेष्ट (को०)।

यौ०—स्तिमितगति, स्तिमितजव = धीरे धीरे बढनेवाला। स्तिमितनयन = एकटक देखनेवाला। जिसे टकटकी बँधी हो। स्तिमितप्रवाह = धीरे धीरे वहनेवाला। स्तिमितवायु = शात वायु। शात हवा। स्तिमितस्थिति = जो निश्चल खडा हो।

स्तिमित[2]—संज्ञा पुं० १ नमी। आर्द्रता। २ स्थिरता। निश्चलता।

स्तिमितत्व—संज्ञा पुं० [सं०] स्थिरता। गतिहीनता। निश्चलता [को०]।

स्तिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्थिर जल। प्रवाहहीन जल। शात जल।

स्तीम—वि० [सं०] सुस्त। अलस। धीमा।

स्तीमित—वि० [सं०] दे० 'स्तिमित'।

स्तीर्ण[1]—वि० [सं०] फैलाया हुआ। बिखेरा हुआ। छितराया हुआ। विस्तृत। विकीर्ण।

स्तीर्ण[2]—संज्ञा पुं० शिव के एक अनुचर का नाम। (शिवपुराण)।

स्तीर्वि—संज्ञा पुं० [सं०] १ अध्वर्यु। २ आकाश। ३ जल। ४ रुधिर। ५ शरीर। ६ भय। ७ तृण। घासपात। ८ इद्र।

स्तुक—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपत्य। सतान। २ केशगुच्छ। केशसमूह। केशग्रथि या वेणी (को०)।

स्तुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ केशपाश। केशगुच्छ। २ बैल के सीग के बीच की भँवरी। ३ नितब। ४ जघन। जाँघ [को०]।

स्तुटि—संज्ञा पुं० [सं०] भरदूल नामक पक्षी। भरद्वाज पक्षी।

स्तुत[1]—वि० [सं०] १ जिसकी स्तुति या प्रार्थना की गई हो। कीर्तित। प्रशसित। २ चूआ हुआ। वहा हुआ।

स्तुत[2]—संज्ञा पुं० १ शिव का एक नाम। २ स्तव। स्तुति। प्रशसा। स्तवन।

स्तुतस्तोम—वि० [सं०] जिसका गुणगान या प्रार्थना की गई हो। कीर्तित। प्रशसित।

स्तुति[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गुणकीर्तन। स्तव। प्रशसा। तारीफ। बडाई।

क्रि० प्र०—करना।

२ देवीपुराण के अनुसार दुर्गा का एक नाम। ३ भागवत के अनुसार प्रतिहर्ता की पत्नी का नाम। ४ चाटुकारिता (को०)। ५ स्तोत्र (को०)।

स्तुति[2]—संज्ञा पुं० विष्णु का एक नाम।

स्तुतिगीत—संज्ञा पुं० [सं०] स्तवन। स्तोत्र [को०]।

स्तुतिगीतक—संज्ञा पुं० [सं०] प्रशसा का गीत।

स्तुतिपद—संज्ञा पुं० [सं०] स्तुति या प्रशसा का विषय [को०]।

स्तुतिपरक—वि० [सं०] जो प्रशस्ति या स्तवन का वोधक हो।

स्तुतिपाठक—संज्ञा पुं० [सं०] वदी जिसका काम प्राचीन काल मे राजाओ की स्तुति या यशोगान करना था। स्तुतिपाठ करनेवाला। चारण। भाट। मागध। सूत।

स्तुतिप्रिय—वि० [सं०] जिसे प्रशसा प्रिय हो। जो अपनी प्रशस्ति का आकाक्षी हो। खुशामद पसद।

स्तुतिमन्त्र—संज्ञा पुं० [सं० स्तुतिमन्त्र] स्तवनबोधक मंत्र या ऋचाएँ। वह मंत्र जिसमें किसी की स्तुति की गई हो।

स्तुतिवाचन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्तुतिवाद'।

स्तुतिवाद—संज्ञा पुं० [सं०] प्रशंसात्मक कथन। यशोगान। गुणगान।

स्तुतिवादक—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्तुति या प्रशंसा करनेवाला। प्रशंसक। २ खुशामदी। चाटुकार। उ०—धनेश्वर भी स्तुतिवादक को यथार्थवादक जानकर उसी से वार्तालाप करता है।—गदाधर सिंह (शब्द०)।

स्तुतिव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो स्तुति करे। स्तुतिपाठक।

स्तुतिशब्द—संज्ञा पुं० [सं०] प्रशंसात्मक वचन। स्तुतिपरक वचन। स्तुतिवाद। (को०)।

स्तुतिशील—वि० [सं०] जो स्तुति या कीर्तिगान के कार्य में पटु एव कुशल हो (को०)।

स्तुत्य—वि० [सं०] स्तुति या प्रशंसा के योग्य। प्रशंसनीय।

स्तुत्यव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] १ हिरण्यरेता के एक पुत्र का नाम। २ भागवत के अनुसार एक वर्ष का नाम जिसके अधिष्ठाता देवता स्तुत्यव्रत माने जाते हैं।

स्तुत्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नलिका नामक गंधद्रव्य। नली। पवारी। २ गोपीचंदन। सौराष्ट्री।

स्तुनक—संज्ञा पुं० [सं०] छाग। बकरा।

स्तुभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार की अग्नि। २ छाग। बकरा।

स्तुभ्वन—वि० [सं०] स्तुति करनेवाला।

स्तुव—संज्ञा पुं० [सं०] घोड़े के सिर का एक अंग।

स्तुवत्[1]—वि० [सं०] स्तुति करनेवाला या स्तुति करता हुआ।

स्तुवत्[2]—संज्ञा पुं० १ स्तावक। स्तुति करनेवाला व्यक्ति। २ उपासक। पूजक।

स्तुवि—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्तुति करनेवाला। स्तावक। २ उपासक। पूजक। ३ यज्ञ।

स्तुवेय्य—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

स्तुषेण्य—वि० [सं०] दे० 'स्तुवेय्य' (को०)।

स्तुषेय्य—वि० [सं०] १ स्तुति करने योग्य। स्तुत्य। २ श्रेष्ठ। उत्तम। अच्छा।

स्तूप—संज्ञा पुं० [सं०] १ मिट्टी आदि का ढेर। अटाला। राशि। २ ऊँचा ढूह या टीला। ३ मिट्टी, ईंट, पत्थर आदि का बना ऊँचा ढूह या टीला जिसके नीचे भगवान् बुद्ध या किसी बौद्ध महात्मा की अस्थि, दाँत, केश या इसी प्रकार के अन्य स्मृतिचिह्न संरक्षित हों। ४ केशगुच्छ। लट। ५ मकान में का सबसे बड़ा शहतीर। जोता। ६ शवदाह के लिये क्रम से एकत्रित लकड़ियों का ढेर। चिता (को०)। ७ शक्ति। क्षमता (को०)।

स्तूपपरिधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्तूप की परिधि या घेरा।

स्तूपपृष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] कच्छप। कछुआ।

स्तूपबिंब—संज्ञा पुं० [सं० स्तूपबिम्ब] दे० 'स्तूपमंडल'।

स्तूपमंडल—संज्ञा पुं० [सं० स्तूपमण्डल] स्तूप की परिधि। स्तूप का घेरा (को०)।

स्तूपभेद—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्तूप को ध्वस्त करना। २ स्तूपों का प्रकार, उनकी भिन्नता या भेद।

स्तूपभेदक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो स्तूप को ढहाता या नष्ट भ्रष्ट करता हो।

स्तृ—संज्ञा पुं० [सं०] तारा (को०)।

स्तृत—वि० [सं०] १ ढका हुआ। आवृत। आच्छादित। २ फैला हुआ। विस्तृत।

स्तृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ढाँकने की क्रिया। आच्छादन। २ विस्तार। फैलाव। विस्तृति (को०)। ३ फैलाने की क्रिया। फैलाना (को०)। ४ आच्छादन का वस्त्र (को०)।

स्तेन—संज्ञा पुं० [सं०] १ चोर। चौर। तस्कर। २ एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य। चोर नामक गंधद्रव्य। ३ चोरी करना। चुराना।

यौ०—स्तेननिग्रह = (१) चोरों का निग्रह, शासन या दंड। (२) चोरी को बंद करना। चौरकार्य का दमन करना। स्तेनहृदय = पक्का चोर। शातिर चोर।

स्तेम—संज्ञा पुं० [सं०] नमी। गीलापन। आर्द्रता।

स्तेय[1]—स्त्री० पुं० [सं०] १ चोरी। चौर्य। रहजनी। २ गोप्य या सबसे चुरा छिपाकर रखने लायक वस्तु। ३ चोरी की जाने के लायक या चोरी गई वस्तु (को०)।

स्तेय[2]—वि० जो चोरी गया हो या चुराया जा सके।

स्तेयकृत्—वि० [सं०] चोरी करनेवाला। चोर।

स्तेयफल—संज्ञा पुं० [सं०] तेजबल का पेड़।

स्तेयी—संज्ञा पुं० पुं० [सं० स्तेयिन्] १ चोर। चौर। २ मूसा। वनमूषिक। चूहा। ३ सुनार। स्वर्णकार।

स्तैन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्तैन्य'।

स्तैन्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ चोर का काम। चोरी। २ चोर। तस्कर।

स्तैमित्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्थिरता। कठोरता। अटलता। २ जड़ता। सुन्नपना (को०)।

स्तोक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ बूँद। बिंदु। २ पपीहा। चातक। ३ जैनों के कालविभाग में उतना समय जितने में मनुष्य सात बार श्वास लेता है। ४ स्फुलिंग। चिनगारी (को०)।

स्तोक[2]—वि० १ अल्प। थोड़ा। २ लघु। छोटा। ३ किंचित्। कुछ। ४ अधम। निम्न। नीच (को०)।

स्तोकक[1]—वि० [सं०] १ स्वल्प। थोड़ा। २ किंचित् (को०)।

स्तोकक[2]—संज्ञा पुं० [सं०] १ चातक पक्षी। २ एक प्रकार का विष। दे० 'स्तोतक' (को०)।

स्तोककाय—वि० [सं०] लघु शरीरवाला। बौना। छोटा (को०)।

स्तोकतमस्—वि० [स०] कुछ कुछ काला । श्यामल [को०] ।

स्तोकनम्र—वि० [स०] [वि० स्त्री० स्तोकनम्रा] थोडा झुका हुआ [को०] ।

स्तोकपाडुर वि० [स० स्तोकपाण्डुर] कुछ कुछ पीला । पीताभ [को०] ।

स्तोतक—सज्ञा पु० [स०] १ पपीहा । चातक । २ वछनाग विप । वत्सनाग विप ।

स्तोतव्य—वि० [स०] स्तव या स्तुति के योग्य । स्तुत्य ।

स्तोता¹—वि० [स० स्तोतृ] स्तुति करनेवाला । उपासना करनेवाला । प्रार्थना करनेवाला ।

स्तोता²—सज्ञा पु० विष्णु का एक नाम ।

स्तोत्र—सज्ञा पु० [स०] १ किसी देवता का छदोबद्ध स्वरूपकथन या गुणकीर्तन । स्तव । स्तुति । जैसे,—महिम्नस्तोत्र । २ स्तुतिपरक रचना, छद या श्लोक । ३ प्रशसा । प्रशस्ति (को०) ।

स्तोत्रार्ह—वि० [सं०] स्तवन या स्तुति का पात्र । स्तुत्य । स्तवनीय ।

स्तोत्रिय¹—वि० [स०] स्तोत्र सवधी । स्तोत्र का ।

स्तोत्रिय²—सज्ञा पुं० एक प्रकार का पद्य । स्तोत्र का पद्य [को०] ।

स्तोत्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'स्तोत्रिय²' ।

स्तोत्रीय—वि० [सं०] दे० 'स्तोत्रिय¹' ।

स्तोत्र—सज्ञा पु० [स०] १ सामवेद का एक अग । २ जड या निश्चेष्ट करना । स्तभन । ३, तिरस्कार करना । उपेक्षा करना । अवज्ञा करना । ४ रोकना । बाधा खडी करना (को०) । ५ विराम । यति (को०) । ६ सूक्त । प्रशस्ति (को०) । ६ सनिविष्ट वस्तु (को०) । ७ अगो की निश्चेष्टता । जडता ।

स्तोभित—वि० [स०] १ जिसकी स्तुति की गई हो । स्तुति किया हुआ । २ जिसका जयजयकार किया गया हो ।

स्तोम¹—सज्ञा पु० [स०] १ स्तुति । प्राथना । २ यज्ञ । ३ एक प्रकार का यज्ञ । ४ यज्ञकारी । यज्ञ करनेवाला । ५ समूह । राशि । ६ दस धन्वतर अर्थात् चालीस हाथ की एक माप । ७ मस्तक । सिर । ८ धन । दौलत । ९ अनाज । शस्य । १० एक प्रकार की ईंट । ११ लोहे की नोकवाला डडा या सोटा । १२ बडी मात्रा । विशाल राशि (को०) । १३ दूसरे को किराए पर मकान देना (को०) । १४ सोम का दिन । सोम दिवस (को० ।

स्तोम²—वि० टेढा । वक्र ।

स्तोमक्षार—सज्ञा पुं० [स०] साबुन [को०] ।

स्तोमचिति—सज्ञा स्त्री० [स०] यज्ञविशेष मे प्रयुक्त स्तोम नाम की ईंटो की जोडाई या चुना जाना [को०] ।

स्तोमायन—सज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ मे बलि दिया जानेवाला पशु ।

स्तोमीय—वि० [स०] स्तोम सवधी । स्तोम का ।

स्तोम्य—वि० [स०] स्तुति के योग्य । प्रार्थना के योग्य । स्तुत्य ।

स्तौविक—सज्ञा पु० [स०] १ अस्थि, नख, केश आदि स्मृतिचिह्न जो स्तूप के नीचे सरक्षित हो । बुद्धद्रव्य । २ वह मार्जनी जो जैन यति अपने पास रखते हैं ।

स्तौभ—वि० [स०] १ स्तोभ सवधी । स्तोभ का । २ जो प्रसन्नता से चिल्लाता या नारे लगाता हो (को०) ।

स्तौभिक¹—वि० [स०] स्तौभयुक्त । जिसमे स्तौभ हो ।

स्तौभिक²—सज्ञा पु० सामवेद की सहिता का द्वितीय अश [को०] ।

स्त्यान¹—वि० [स०] १ घना । २ कडा । कठोर । ३ चिकना । स्निग्ध । ४ शब्द या ध्वनि करनेवाला । ५ पुजीभूत । राशीभूत । जमा हुआ (को०) । ६ मृदु । कोमल (को०) ।

स्त्यान²—सज्ञा पु० १ घनापन । घनत्व । २ प्रतिध्वनि । आवाज । ३ आलस्य । अकर्मण्यता । ४ सत्कर्म मे चित्त का न लगना । ५ अमृत । ६ मार्दव । कोमलता । स्निग्धता(को०) ।

स्त्यानर्द्धि स० स्त्री० [स०] वह निद्रा जिसमे वासुदेव का आधा बल होता है । जिसे यह निद्रा होती है, वह उठकर कुछ काम करके फिर लेट जाता है और इस प्रकार वास्तव मे सोता हुआ भी काम करता है, पर काम की उसे सुध नही रहती । (जैन) ।

स्त्यायन—स० पुं० [स०] जनसमूह । भीड । मजमा ।

स्त्येन—सज्ञा पु० [स०] १ चोर । डाकू । २ अमृत । सुधा ।

स्त्यैन¹—सज्ञा पु० [स०] चोर । डाकू ।

स्त्यैन²—वि० थोडा । कम । अल्प ।

स्त्रियम्मन्य—वि० [स०] जो अपने को स्त्री माने या समझे ।

स्त्रीद्रिय—सज्ञा स्त्री० [स० स्त्रीन्द्रिय] योनि । भग [को०] ।

स्त्री¹—सज्ञा स्त्री० [स०] १ नारी । औरत । जैसे,—लज्जाशीलता स्त्री जाति का आभूषण है । २ पत्नी । जोरू । जैसे,—वह अपनी स्त्री और बाल बच्चो के साथ आया है । ३ मादा । जैसे,—स्त्री पशु । ४ सफेद च्यूटी । ५ प्रियगु लता । ६. एक वृत्त का नाम जिसमे दो गुरु होते हैं । उसका दूसरा नाम 'कामा' है । उ०—गगा धावो कामा पावो । ७ व्याकरण मे स्त्रीलिंग या स्त्रीलिंगबोधक कोई शब्द (को०) ।

स्त्री²—सज्ञा स्त्री० [स० स्तरी] दे० 'इस्तिरी' ।

स्त्रीकरण—सज्ञा पु० [स०] सभोग । मैथुन ।

स्त्रीकाम—वि० [स०] १ स्त्री की कामना या इच्छा करनेवाला । जिसे औरत की ख्वाहिश हो । २ स्त्रीसभोग का इच्छुक (को०) ।

स्त्रीकार्य—सज्ञा पु० [स०] १ स्त्रियो का व्यवसाय । २ स्त्रियो की सेवा । अत पुर की सेवा [को०] ।

स्त्रीकितव—सज्ञा पु० [स०] स्त्रियो को फुसलाने, वहकाने या धोखा देनेवाला पुरुष [को०] ।

स्त्रीकुसुम—सज्ञा पु० [स०] स्त्रियो का मासिक धर्म । रजोधर्म [को०] ।

स्त्रीकृत—सज्ञा पु० [स०] वह कार्य आदि जो स्त्री द्वारा किया गया हो । २ सभोग । मैथुन । यौनसवध [को०] ।

स्त्रीकोश—सज्ञा पु० [स०] १ खड्ग । कटार । २ छुरा (को०) ।

स्त्रीक्षीर—सज्ञा पु० [स०] स्त्री के स्तन का दूध ।

स्त्रीक्षेत्र—सज्ञा पु० [स०] सम या युग्म सख्यक राशियाँ । जैसे दूसरी, चौथी, छठी आदि [को०] ।

स्त्रीग —वि० [म०] स्त्रियो मे सभोग करनेवाला । परस्त्रीगामी ।

स्त्रीगमन—सज्ञा पु० [स०] स्त्रीससर्ग । सभोग । मैथुन ।

स्त्रीगवी—सज्ञा स्त्री० [स०] दूध देनेवाली गाय । दुधार गौ [को०] ।

स्त्रीगुरु—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जो दीक्षा या मत्र देती हो । दीक्षा देनेवाला स्त्री ।

विशेष—तत्रो मे सदाचारिणी और शास्त्रपारगत स्त्रियो से दीक्षा या मत्र लेने का विधान है ।

स्त्रीगृह—सज्ञा पुं० [स०] अत पुर । दे० 'स्त्र्यगार' [को०] ।

स्त्रीग्रह—सज्ञा पुं० [स०] ज्योतिष के अनुसार वुध, चद्र और शुक्र ग्रह ।

विशेष—ज्योतिष मे पुरुष, स्त्री और क्लीव (नपुसक) तीन प्रकार के ग्रह माने गए हैं जिनमे वुध, चद्र और शुक्र स्त्रीग्रह है । जातक के पचम स्थान पर इन ग्रहो की स्थिति या दृष्टि रहने से स्त्री सतान होती है और लग्न आदि मे रहने से सतान स्त्रीस्वभाववाली होती है ।

स्त्रीग्राही—वि० [स० स्त्रीग्राहिन्] किसी महिला या स्त्री का विधिसमत अभिभावक वननेवाला [को०] ।

स्त्रीघातक—वि० [स०] दे० 'स्त्रीघ्न' [को०] ।

स्त्रीघोप—सज्ञा पु० [स०] प्रत्यूप । प्रभात । प्रात काल । तडका ।

स्त्रीघ्न—वि० [स०] स्त्री या पत्नी की हत्या करनेवाला । स्त्रीघातक ।

स्त्रीचचल—वि० [स० स्त्रीचञ्चल] कामी । लपट ।

स्त्रीचरित, स्त्रीचरित्र—सज्ञा पु० [स०] स्त्रियो द्वारा किया गया कार्य । स्त्रियो का चरित्र [को०] ।

स्त्रीचित्तहारी[1]—सज्ञा पुं० [स० स्त्रीचित्तहारिन्] सहिजन । शोभाजन ।

स्त्रीचित्तहारी[2]—वि० औरतो या स्त्री का चित्त हरण करनेवाला ।

स्त्रीचिह्न—सज्ञा पु० [स०] १ योनि । भग, स्तन आदि जो स्त्री होने के चिह्न है । २ स्त्री सवधी चिह्न (को०) ।

स्त्रीचौर—सज्ञा पु० [स०] कामी । लपट । व्यभिचारी ।

स्त्रीजन—सज्ञा पु० [स०] दे० 'स्त्रीजाति' [को०] ।

स्त्रीजननी—सज्ञा स्त्री० [स०] मनु के अनुसार वह स्त्री जो केवल कन्या उत्पन्न करे । (मनुस्मृति) ।

स्त्रीजाति—सज्ञा स्त्री० [स०] नारी वर्ग । नारी समुदाय [को०] ।

स्त्रीजित्—वि० [स०] स्त्री या पत्नी के वश मे रहनेवाला । जोरू का गुलाम ।

स्त्रीतमा, स्त्रीतरा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ अभिजात या कुलीन स्त्री । श्रेष्ठा स्त्री । २ वह औरत जिसके स्त्रीत्ववोधक चिह्न पूर्ण हो । पूर्ण स्त्री । पूरी औरत [को०] ।

स्त्रीता—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'स्त्रीत्व' ।

स्त्रीत्व—सज्ञा पु० [स०] १ स्त्री का भाव या धर्म । स्त्रीपन । जनानापन । २ व्याकरण मे वह प्रत्यय जो स्त्रीलिंग का सूचक होता है । ऐसा प्रत्यय जिस शब्द मे लगता हे, वह स्त्रीलिंग हो जाता है । ३ परिणीता या विवाहिता होने का भाव । पत्नीत्व (को०) । ४ नारीसुलभ कोमलता, दुर्वलता आदि (को०) ।

स्त्रीदेहार्ध—सज्ञा पु० [स०] शिव जिनके आधे अग मे पार्वती का होना माना जाता है ।

स्त्रीद्विट्—वि० [स० स्त्रीद्विप्] दे० 'स्त्रीद्वेपी' ।

स्त्रीद्वेषी—वि० [स० स्त्रीद्वेपिन्] स्त्रियो का द्वेपी या उनके प्रति द्वेषभावना रखनेवाला ।

स्त्रीधन—सज्ञा पुं० [स०] वह धन जिसपर स्त्रियो का विशेष रूप से पूरा अधिकार हो ।

विशेष—मनु के अनुसार यह छह प्रकार का हे - (१) विवाह मे होम के समय जो धन मिले वह अध्यग्निक, (२) पिता के यहाँ से जाते समय जो मिले वह अध्यावाहनिक, (३) पति प्रसन्न होकर जो दे वह प्रीतिदत्त, और (४) माता से प्राप्त मातृदत्त, (५) पिता से प्राप्त पितृदत्त तथा (६) भ्राता से जो धन मिले वह भ्रातृदत्त कहलाता हे । इस धन पर पानेवाली स्त्री का ही अधिकार होता है, और किसी आदमी का कुछ अधिकार नही होता ।

स्त्रीधर्म—सज्ञा पु० [स०] १ स्त्री का रजस्वला होना । रजोदर्शन । २ मैथुन । ३ स्त्री का धर्म या कर्तव्य । ४ स्त्री सवधी विधान ।

स्त्रीधर्मिणी—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जो ऋतु से हो । रजस्वला स्त्री

स्त्रीधव—सज्ञा पु० [स०] स्त्री का पति या भर्ता । पुरुष ।

स्त्रीधूर्त—सज्ञा पुं० [स०] स्त्री को छलनेवाला पुरुष ।

स्त्रीध्वज[1]—सज्ञा पु० [स०] १ गज । हाथी । हस्ती । २ किसी पशु की मादा (को०) ।

स्त्रीध्वज[2]—वि० जिसमे स्त्रियो के चिह्न हो । स्त्री के चिह्नो से युक्त ।

स्त्रीनाथ—वि० [स०] जिसकी स्वामिनी औरत हो । स्त्री के द्वारा रक्षित [को०] ।

स्त्रीनामा—वि० [स० स्त्रीनामन्] जिसका स्त्रीवाचक नाम हो । स्त्री के सदृश नामवाला ।

स्त्रीनिवधन—सज्ञा पुं० [सं० स्त्रीनिवन्धन] घर का काम धधा जो स्त्रियाँ करती है ।

स्त्रीनिर्जित—वि० [स०] दे० 'स्त्रीजित्' ।

स्त्रीपण्योपजीवी—सज्ञा पु० [स० स्त्रीपण्योपजीविन्] वह जो स्त्री या वेश्या की आय से अपनी जीविका चलावे । औरत की कमाई खानेवाला ।

स्त्रीपर—सज्ञा पुं० [स०] कामुक । विषयी ।

स्त्रीपिशाची—सज्ञा पुं० [स०] चुडैल जैसी स्त्री या पत्नी [को०] ।

स्त्रीपुधर्म—सज्ञा पु० [स०] पति तथा पत्नी के कर्तव्य से सबधित विधि विधान [को०] ।

स्त्रीपुयोग—सज्ञा पुं० [स०] १ स्त्री और पुरुष का एक स्थान पर होना या सयोग । २ ज्योतिष के अनुसार गहो का एक योग ।

स्त्रीपुस—सज्ञा पुं० [स०] वह स्त्री जो पुरुष हो गई हो [को०] ।

स्त्रीपुसलक्षणा—सज्ञा स्त्री० [सं०] पुरुषोचित व्यवहार करनेवाली नारी । मरदानी औरत ।

स्त्रीपुंसलिंगी—वि० [सं० स्त्रीपुंसलिङ्गिन्] स्त्री और पुरुष के चिह्नों से युक्त (को०) ।

स्त्रीपुर—संज्ञा पुं० [सं०] अंतःपुर । जनानखाना ।

स्त्रीपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] रज । आर्तव ।

स्त्रीपूर्व—वि० [सं०] दे० 'स्त्रीजित्' ।

स्त्रीप्रज्ञ—वि० [सं०] औरतों के समान बुद्धिवाला (को०) ।

स्त्रीप्रत्यय—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रीलिंग शब्द बनाने के लिये शब्द के अंत में जुड़नेवाला प्रत्यय (को०) ।

स्त्रीप्रसंग—संज्ञा पुं० [सं० स्त्रीप्रसङ्ग] मैथुन । संभोग ।

स्त्रीप्रसू—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'स्त्रीजननी' ।

स्त्रीप्रिय¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ आम । आम्रवृक्ष । २ अशोक ।

स्त्रीप्रिय²—वि० जिसे स्त्रियाँ प्यार करें । जो स्त्रियों को प्रिय हो ।

स्त्रीप्रेक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्रियों को दिखाने योग्य खेल (को०) ।

स्त्रीबंध—संज्ञा पुं० [सं० स्त्रीबन्ध] संभोग । मैथुन ।

स्त्रीबाध्य—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रियों के द्वारा तंग किया जानेवाला व्यक्ति (को०) ।

स्त्रीबुद्धि—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्त्रियों जैसी समझ । २ स्त्रियों की राय । जनानी राय (को०) ।

स्त्रीभव—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्त्रीत्व' ।

स्त्रीभूषण—संज्ञा पुं० [सं०] केवड़ा । केतकी ।

स्त्रीभोग—संज्ञा पुं० [सं०] मैथुन । प्रसंग ।

स्त्रीमंडल(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० स्त्रीमण्डल] एक प्रकार का वाद्य यंत्र । उ०—स्त्रीमंडल सुर औ जलतरंग ।—ह० रासो, पृ० ११० ।

स्त्रीमंत्र—संज्ञा पुं० [सं० स्त्रीमन्त्र] १ वह मंत्र जिसके अंत में 'स्वाहा' हो । २ स्त्रियों की तिकड़म या तरकीब (को०) । ३ स्त्री का परामर्श । औरतों की राय (को०) ।

स्त्रीमय—वि० [सं०] स्त्रीरूप । जनाना । जनखा ।

स्त्रीमानी¹—संज्ञा पुं० [सं० स्त्रीमानिन्] मार्कंडेयपुराण के अनुसार भौत्य मनु के पुत्र का नाम ।

स्त्रीमानी²—वि० अपने को स्त्री समझनेवाला । दे० 'स्त्रियम्मन्य' (को०) ।

स्त्रीमाया—संज्ञा स्त्री० [सं०] नारी का कौशल । नारी का छलबल (को०) ।

स्त्रीमुखप—संज्ञा पुं० [सं०] १ मौलसिरी । वकुल । २ अधरपान (को०) । ३ अशोक (को०) ।

स्त्रीम्मन्य—वि० [सं०] दे० 'स्त्रियम्मन्य' ।

स्त्रीयंत्र—संज्ञा स्त्री० [सं० स्त्रीयन्त्र] मशीन के समान स्त्री । वह स्त्री जो व्यवहार में मशीन जैसी हो । यंत्रवत् व्यवहार करनेवाली औरत (को०) ।

स्त्रीरंजन—संज्ञा पुं० [सं० स्त्रीरञ्जन] पान । तांबूल ।

स्त्रीरज—संज्ञा पुं० [सं० स्त्रीरजस्] मासिक स्राव । मासिक धर्म ।

स्त्रीरत्न—संज्ञा पुं० [सं०] १ लक्ष्मी । श्री । २ स्त्रीरूपी रत्न । श्रेष्ठ स्त्री (को०) ।

स्त्रीराज्य—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार प्राचीन काल का एक प्रदेश जहाँ स्त्रियों की ही रानी थी ।

स्त्रीलंपट—वि० [सं० स्त्रीलम्पट] स्त्री की सदा कामना करनेवाला । कामी । विषयी ।

स्त्रीराशि—संज्ञा स्त्री० [सं०] सम संख्या की राशियाँ । दे० 'स्त्रीक्षेत्र' ।

स्त्रीलक्षण¹—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्री संबंधी कोई चिह्न (को०) ।

स्त्रीलक्षण²—वि० स्त्रियों के समान चिह्नों या लक्षणोंवाला (को०) ।

स्त्रीलिंग—संज्ञा पुं० [सं० स्त्रीलिङ्ग] १ भग । योनि । २ हिंदी व्याकरण के अनुसार दो प्रकार के लिंगों में से एक जो स्त्रीवाचक होता है । जैसे घोड़ा शब्द पुंलिंग और घोड़ी स्त्रीलिंग है ।

स्त्रीलोल—वि० [सं०] दे० 'स्त्रीलंपट' ।

स्त्रीलौल्य—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्री की आकांक्षा । औरतों की चाह (को०) ।

स्त्रीवश—वि० [सं०] स्त्री के अनुसार चलनेवाला । औरत का गुलाम ।

स्त्रीवश्य—वि० [सं०] दे० 'स्त्रीवश' ।

स्त्रीवार—संज्ञा पुं० [सं०] सोम, बुध और शुक्रवार ।

विशेष—ज्योतिष में चंद्र, बुध और शुक्र ये तीनों स्त्रीग्रह माने गए हैं, अतः इनके दिन भी स्त्रीवार कहे जाते हैं ।

स्त्रीवाम—संज्ञा पुं० [सं० स्त्रीवामन्] वह यन्त्र जो रतिबंध या संभोग के समय के लिये उपयुक्त हो । २ वल्मीक । दिमौट (को०) ।

स्त्रीवाह्य—संज्ञा पुं० [सं०] मार्कंडेय पुराण में वर्णित एक प्राचीन जनपद ।

स्त्रीविजित—वि० [सं०] दे० 'स्त्रीजित्' ।

स्त्रीवित्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्त्री का धन । दे० 'स्त्रीधन' । २ औरत द्वारा प्राप्त धन ।

स्त्रीविधेय—वि० [सं०] जो पत्नी या स्त्री के द्वारा शासित हो (को०) ।

स्त्रीविवाह—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्री के साथ विवाह पक्का करना ।

स्त्रीवियोग—संज्ञा पुं० [सं०] पत्नी से पृथक् होना (को०) ।

स्त्रीविषय—संज्ञा पुं० [सं०] संभोग । स्त्रीसंसर्ग । मैथुन ।

स्त्रीवृत—वि० [सं०] स्त्रियों से घिरा हुआ या सेवित ।

स्त्रीव्यंजन—संज्ञा पुं० [सं० स्त्रीव्यञ्जन] स्तन आदि चिह्न जिनसे स्त्री होने का बोध होता है ।

यौ०—स्त्रीव्यंजनरूप=कन्या जिसमें स्त्रीत्व के व्यंजक चिह्न व्यक्त हों ।

स्त्रीव्रण—संज्ञा पुं० [सं०] योनि । भग ।

स्त्रीव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] अपनी स्त्री के अतिरिक्त दूसरी स्त्री की कामना न करना । एकस्त्रीपरायणता । एकपत्नीव्रत । उ०—पातिव्रत और स्त्रीव्रत धर्म नष्ट होना ।—सत्यार्थ प्र० (शब्द०) ।

स्त्रीशेष—वि० [सं०] जहाँ केवल औरतें ही रह गई हों (को०) ।

स्त्रीशौंड—वि० [स० स्त्रीशौण्ड] स्त्री मे आसक्त। स्त्री के पीछे उन्मत्त। औरत के लिये पागल रहनेवाला। कामुक।

स्त्रीसग—सञ्ज्ञा पुं० [स० स्त्रीसङ्ग] १ सभोग। मैथुन। प्रसग। २ स्त्रियो के साथ सबध या सपर्क (को०)।

स्त्रीसग्रहण—सञ्ज्ञा पु० [स० स्त्रीसङग्रहण] किसी स्त्री से बलात् आलिंगन या सभोग आदि करना। व्यभिचार।

स्त्रीसज्ञ—वि० [स०] जिसकी सज्ञा या नाम औरतो जैसा हो।

स्त्रीसबध—सञ्ज्ञा पु० [स० स्त्रीसम्बन्ध] १ स्त्री के साथ विवाह तय होना। २ वैवाहिक सबध निश्चित होना। ३ स्त्रियो से नाता, सपर्क या सबध (को०)।

स्त्रीसभोग—सञ्ज्ञा पु० [सं० स्त्रीसम्भोग] मैथुन। प्रसग।

स्त्रीससर्ग—सञ्ज्ञा पु० [स०] सभोग। मैथुन। प्रसग।

स्त्रीसस्थान—वि० [स०] जनाने रूप का। औरत की तरह या जनानी शक्ल सूरतवाला (को०)।

स्त्रीसभ—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] स्त्रियो की सभा (को०)।

स्त्रीसख—वि० [सं०] सस्त्रीक। स्त्रीयुक्त।

स्त्रीसमागम—सञ्ज्ञा पु० [स०] मैथुन। प्रसग।

स्त्रीसुख—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ मैथुन। २ सहिजन। शोभाजन।

स्त्रीसेवन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] सभोग। मैथुन।

स्त्रीसेवा—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्रियो के प्रति मोह या राग (को०)।

स्त्रीस्वभाव—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ खोजा। अत पुर का रक्षक। २ औरतो का स्वभाव। स्त्रियो की प्रकृति (को०)।

स्त्रीहता—वि० [स० स्त्रीहन्तृ] स्त्री की हत्या करनेवाला।

स्त्रीहरण—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ बलपूर्वक किसी स्त्री को भगाना या हरण करना। २ बलात्कार।

स्त्रीहारी—सञ्ज्ञा पु० [सं० स्त्रीहारिन्] स्त्रियो को फुसलाने या बहकानेवाला व्यक्ति (को०)।

स्त्रैण[1]—वि० [स०] १ स्त्री सबधी। स्त्रियो का। २ स्त्री के योग्य या अनुरूप। ३ स्त्रियो के कहने के अनुसार चलनेवाला। स्त्रियो का वशीभूत। स्त्रीरत। उ०—रहते घर नाथ, तो निरा, कहती स्त्रैण उन्हे यही गिरा।—साकेत, पृ० ३६२। ४ स्त्रियो के प्रति भक्ति या अनुरागयुक्त (को०)।

स्त्रैण[2]—सञ्ज्ञा पु० १ नारीत्व। स्त्रीत्व। २ स्त्रियो की प्रकृति या स्वभाव। स्त्रीस्वभाव। ३ स्त्रियो का समूह। नारीवर्ग। ४ विषयजन्य आनद। विषयानद (को०)।

स्त्रैणता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ जनानापन। जनखापन। २ स्त्रियो की अत्यत इच्छा या लालसा (को०)।

स्त्रैराजक—सञ्ज्ञा पु० [स०] स्त्रीराज्य का निवासी।

स्त्र्यगार—सञ्ज्ञा पुं० [स०] स्त्रियो का आगार। अत पुर। जनानखाना।

स्त्र्यध्यक्ष—सञ्ज्ञा पुं० [स०] रानियो की देखभाल करनेवाला। अत पुर का प्रधान अधिकारी।

स्त्र्यनुज—वि० [स०] जो बहन के बाद उत्पन्न हुआ हो।

स्त्र्यभिगमन—सञ्ज्ञा पु० [स०] १ बलात्कार। २ सभोग। स्त्रीसभोग। स्त्रीप्रसग (को०)।

स्त्र्यर्थ—सञ्ज्ञा पुं० [स०] स्त्रीत्व। स्त्रीशक्ति। स्त्रीबल। उ०—यद्यपि एकबार जी मे आया कि पत्नी पर अपने बल तथा पुरुषार्थ का प्रयोग करके उसे अपनी आज्ञाकारिणी बनाए रखे परतु जब उन्होने अपने शरीर को और उसके मुकाबिले पत्नी के शरीर को देखा तो उनका यह विचार भी बदल गया। उनकी पत्नी का स्त्र्यर्थ उनके पुरुषार्थ से अधिक बलवान् निकला।—माँ, पृ० १८६।

स्त्र्याख्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] प्रियगु लता।

स्त्र्याजीव—सञ्ज्ञा पुं० [स०] वह जो अपनी या दूसरी स्त्रियो की वेश्यावृत्ति से अपनी जीविका चलाता हो। औरतो की कमाई खानेवाला।

स्थडिल—सञ्ज्ञा पुं० [स० स्थण्डिल] १ भूमि। जमीन। २ यज्ञ के लिये साफ की हुई भूमि। चत्वर। ३ सीमा। हद। सिवान। ४ मिट्टी का ढेर। ५ एक प्राचीन ऋषि का नाम। ६ खुली हुई साफ भूमि। जैसे, गृह के सामने की भूमि (को०)। ७ सीमा-बोधक चिह्न (को०)। ८ ऊसर भूमि। बजर भूमि (को०)।

स्थडिलश—वि० [स० स्थण्डिलश] साफ जमीन पर सोनेवाला। बिना बिस्तर के भूमि पर शयन करनेवाला।

स्थडिलशय्या—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० स्थण्डिलशय्या] (व्रत के कारण) भूमि या जमीन पर सोना। भूमिशयन।

स्थडिलशायिका—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० स्थण्डिलशायिका] दे० 'स्थडिलशय्या' (को०)।

स्थडिलशायी—सञ्ज्ञा पु० [स० स्थण्डिलशायिन्] वह जो व्रत के कारण भूमि या यज्ञस्थल पर सोता हो।

स्थडिलसवेशन—सञ्ज्ञा पु० [स० स्थण्डिलसवेशन] दे० 'स्थडिलशय्या'।

स्थडिलसितक—सञ्ज्ञा पु० [स० स्थण्डिलसितक] यज्ञ की वेदी।

स्थडिलेय—सञ्ज्ञा पु० [स० स्थण्डिलेय] महाभारत के अनुसार रौद्राश्व के एक पुत्र का नाम।

स्थडिलेशय—सञ्ज्ञा पु० [स० स्थण्डिलेशय] १ दे० 'स्थडिलशायी'। २ एक प्राचीन ऋषि का नाम।

स्थ[1]—प्रत्य० [स०] 'स्था' धातु का एक प्रकार का कृदत रूप जो शब्दो के अत मे लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—(१) स्थित। कायम। जैसे,—गगातटस्थ भवन। (२) उपस्थित। वर्तमान। विद्यमान। मौजूद। जैसे,—उन्हे बहुत से श्लोक कठस्थ है। (३) रहनेवाला। निवासी। जैसे,—काशीस्थ पडितो ने यह व्यवस्था दी। (४) लगा हुआ। लीन। रत। जैसे,—वे ध्यानस्थ है।

स्थ[2]—सञ्ज्ञा पु० स्थान। जगह (को०)।

स्थकर—सञ्ज्ञा पु० [स०] दे० 'स्थगर'।

स्थकित—वि० [हिं० थकित] थका हुआ। शिथिल। ढीला। उ०—जिसने वेनिस की पुलिस के गुप्तचरो और अनुसधानियो को स्थकित कर दिया हो।—अयोध्या० (शब्द०)।

स्थग¹—वि० [सं०] १ धूर्त। ठग। धोखेबाज। वंचक। २ निर्लज्ज।

स्थग²—संज्ञा पुं० दुष्ट व्यक्ति [को०]।

स्थगणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

स्थगन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० स्थगयितव्य] १ ढाकना। आच्छादन। २ छिपाना। लुकाना। गोपन। ३ दूर करना। हटा देना। अपवारण। ४ किसी कार्य या सभा आदि को कुछ समय के लिये रोकना।

स्थगर—संज्ञा पुं० [सं०] १ तगर नामक गंधद्रव्य। विशेष दे० 'तगर'। २ पुत्रजीव नामक एक वृक्ष। विशेष दे० 'पुत्रजीव'।

स्थगल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्थगर'।

स्थगिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पान, सुपारी, चूना, कत्था आदि रखने का डिब्बा। पनडब्बा। पानदान। ताम्बूलकरक। २ अगूठे, उँगलियों और लिंगेंद्रिय के अग्रभाग पर के घाव पर बाँधी जानेवाली (पनडब्बे के आकार की) एक प्रकार की पट्टी। (वैद्यक)। ३ वेश्या (को०)। ४ पानविक्रेता की दुकान (को०)। ५ पान लगाकर देने का काम (को०)।

स्थगित—वि० [सं०] १ ढका हुआ। आवृत। आच्छादित। २ छिपा हुआ। तिरोहित। अंतर्हित। गुप्त। ३ बंद। रुद्ध। ४ रोका हुआ। अवरुद्ध। ५ जो कुछ समय के लिये रोक दिया गया हो। मुलतवी। जैसे,—यात्रा स्थगित हो गई।

स्थगी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पान, सुपारी आदि रखने का डिब्बा। पनडब्बा। पानदान। तांबूलकरक।

स्थगु—संज्ञा पुं० [सं०] पीठ पर का कूबड़। कुब्ज। गड्डु।

स्थड्डु—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्थगु'।

स्थपति¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ राजा। अधिपति। नरेश। २ शासक। उच्च राजकर्मचारी। ३ रामचंद्र का सखा, गुह। ४ वह जिसने बृहस्पति सवन नामक यज्ञ किया हो। ५ अंत पुर-रक्षक। कंचुकी। ६ वास्तुविद्या विशारद। भवननिर्माण कला में निपुण। वास्तुशिल्पी। ७ रथ या गाड़ी बनानेवाला। बढ़ई। सूत्रकार। ८ कुबेर का एक नाम। ९ बृहस्पति का एक नाम। १० अमात्य। सचिव। मंत्री (को०)। ११ रथ हाँकनेवाला। सारथि।

स्थपति²—वि० १ मुख्य। प्रधान। २ उत्तम। श्रेष्ठ।

स्थपत्य—संज्ञा पुं० [सं०] गृहाध्यक्ष। राजभवन का महाप्रतीहार।

स्थपनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दोनों भौंहों के बीच का स्थान, जो वैद्यक के अनुसार मर्म स्थान माना जाता है।

स्थपुट¹—वि० [सं०] १ कुबड़ा। कुब्ज। २ विषम। ऊबड़ खाबड़। ३ जिसपर संकट पड़ा हो। विपन्न। ४ पीड़ा के कारण झुका हुआ। पीडानत।

स्थपुट²—संज्ञा पुं० १ पीठ पर का विषम उन्नत स्थान। कूबड़। २ ऊबड़ खाबड़ या असम भूमि (को०)। ३ आत्मा (को०)।

यौ०—स्थपुटगत = (१) दुर्गम या कठिन स्थान में स्थित। (२) स्थपुट संबंधी।

स्थल—संज्ञा पुं० [सं०] १ भूमि। भूभाग। जमीन। २ जलशून्य भूभाग। खुश्की। जैसे,—स्थल मार्ग से जाने में बहुत दिन लगेंगे। ३ स्थान। जगह। ४ अवसर। मौका। ५ टीला। दूह। ६ तंबू। पटवास। ७ पुस्तक का एक अंश। परिच्छेद। ८ भागवत में वर्णित धृत के एक पुत्र का नाम। ९ निर्जल और मरु भूमि जिसमें जल बहुत कम हो।

विशेष—बिहार और पंजाब प्रदेश में ऐसे स्थानों को 'थल' कहते हैं।

१० तट। किनारा। बेला (को०)। ११ ठहरने की जगह। पड़ाव (को०)। १२ प्रस्ताव। प्रसंग। विषय (को०)। १३ पाठ (को०)। १४ प्रासाद की छत (को०)।

स्थलकंद—संज्ञा पुं० [सं० स्थलकन्द] जंगली सूरन। बनैला जमीकंद।

स्थलकमल—संज्ञा पुं० [सं०] कमल की आकृति का एक प्रकार का पुष्प जो स्थल में उत्पन्न होता है।

विशेष—इसका क्षुप ६ से १२ इंच तक ऊँचा और इसके पत्ते कुछ लंबाई और साथ ही ३ इंच तक लंबे तथा तिहाई इंच तक चौड़े होते हैं। जड़ के पास के पत्ते नालों के पत्तों से कुछ चौड़े होते हैं। फूल गुलाबी रंग के और पाँच दलवाले होते हैं। यह बंगाल में होता है। वैद्यक में यह शीतल, कड़वा, कसैला, चरपरा, हलका, स्तनों को दृढ़ करनेवाला तथा कफ, पित्त, मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी, वात, शूल, वमन, दाह, मोह, प्रमेह, रक्तविकार, श्वास, अपस्मार, विष और ज्वर का नाश करनेवाला माना गया है।

पर्या०—पद्मचारिणी। अतिचरा। पद्माह्वा। चारटी। अव्यथा। पद्मा। शारदा। सुगंधमूला। अवृष्टा। लक्ष्मी। श्रेष्ठा। सुपु- परा। रम्या। पद्मावती। स्थलरुहा। पुष्करिणी। पुष्कर- पर्णिका। पुष्पनाड़ी।

स्थलकमलिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्थलकमल का पौधा।

स्थलकाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा की एक सहचरी का नाम।

स्थलकुमुद—संज्ञा पुं० [सं०] कनेर। करवीर।

स्थलग—वि० [सं०] स्थल या भूमि पर रहने या विचरण करनेवाला। स्थलचर। थलचर।

स्थलगत—वि० [सं०] जो स्थल या भूमि पर गया हो [को०]।

स्थलगामी—वि० [सं० स्थलगामिन्] स्थल पर रहने या विचरण करने- वाला। स्थलग। स्थलचर।

स्थलचर—वि० [सं०] स्थल पर रहने या विचरण करनेवाला।

स्थलचारी—वि० [सं० स्थलचारिन्] स्थल पर रहने या विचरण करने- वाला। स्थलचर।

स्थलच्युत—वि० [सं०] जो किसी स्थान या पद से गिराया या हटाया गया हो। स्थानच्युत। पदच्युत [को०]।

स्थलज—वि० [सं०] १ स्थल या भूमि में उत्पन्न। स्थल में उत्पन्न होनेवाला। २ स्थलमार्ग से जानेवाले माल पर लगनेवाला (कर, चुंगी या महसूल)।

स्थलजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मुलेठी। मधुयष्ठी।

स्थलदुर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] मैदान का किला।

स्थलदेवता—संज्ञा पुं० [सं०] १ लोक के देवता। ग्रामदेवता या स्थान-देवता। २ भूमि के देवता। भूसुर।

स्थलनलिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'स्थलकमलिनी'।

स्थलनीरज—संज्ञा पुं० [सं०] स्थलकमल।

स्थलपत्तन—संज्ञा पुं० [सं०] सूखी जमीन पर बसा हुआ नगर [को०]।

स्थलपथ—संज्ञा पुं० [सं०] भूमार्ग। भूमिपथ। स्थलमार्ग।

यौ०—स्थलपथभोग = वह भूभाग जो उत्तम पथ या मार्ग से युक्त हो।

स्थलपथभोग—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार वह उपनिवेश या राष्ट्र जिसमें अच्छी अच्छी सडकें मौजूद हों।

स्थलपद्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्थलकमल। २ मानकच्चू। मानक। विशेष दे० 'मानकद'। ३ दे० 'छत्रपत्र'। ४ सेवती गुलाब आदि। शतपत्र।

स्थलपद्मिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'स्थलकमलिनी'।

स्थलपिंडा—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थलपिण्डा] पिंड खजूर। पिंडी। खर्जूरिका।

स्थलपुष्पा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गुल मखमल नाम का पौधा। झडूक नामक क्षुप। गुल मखमली।

स्थलभंडा—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थलभण्डा] वनभटा। वृहती।

स्थलमंजरी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थलमञ्जरी] लटजीरा। अपामार्ग।

स्थलमर्कट—संज्ञा पुं० [सं०] करौंदा। करमर्दक।

स्थलमार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] जमीन पर होकर जानेवाला पथ। खुश्की का रास्ता या सडक [को०]।

स्थलयुद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] वह युद्ध या संग्राम जो स्थल या भूभाग पर होता है। खुश्की की लडाई। मैदानी लडाई।

स्थलयोधी—संज्ञा पुं० [सं० स्थलयोधिन्] जमीन पर लडाई करने-वाला योद्धा।

स्थलरुहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्थलकमल।

स्थलवर्त्म—संज्ञा पुं० [सं० स्थलवर्त्मन्] दे० 'स्थलमार्ग'।

स्थलविग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] वह लडाई या युद्ध जो स्थल या भूभाग पर होता है। खुश्की की लडाई।

स्थलविहग—संज्ञा पुं० [सं० स्थलविहङ्ग] स्थल पर विचरण करनेवाले मोर आदि पक्षी।

स्थलविहंगम—संज्ञा पुं० [सं० स्थलविहङ्गम] दे० 'स्थलविहग'।

स्थलविहंग—संज्ञा पुं० [सं०] स्थलचारी पक्षी। स्थलविहगम।

स्थलशुद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] जमीन की सफाई या परिष्कार [को०]।

स्थलवेतस—संज्ञा पुं० [सं०] भूमि पर पैदा होनेवाला बेंत [को०]।

स्थलशृंगाट—संज्ञा पुं० [सं० स्थलशृङ्गाट] गोखरू। गोक्षुर।

स्थलशृंगाटक—संज्ञा पुं० [सं० स्थलशृङ्गाटक] दे० 'स्थलशृंगाट'।

स्थलसीमा—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थलसीमन्] देश की सीमा। सरहद।

स्थलस्थ—वि० [सं०] सूखी धरती पर खडा होनेवाला। भूस्थित [को०]।

स्थलांतर—संज्ञा पुं० [सं० स्थलान्तर] अन्य स्थान। दूसरी जगह [को०]।

स्थला—संज्ञा स्त्री० [सं०] जलशून्य भूभाग। खुश्क जमीन।

स्थलारविंद—संज्ञा पुं० [सं० स्थलारविन्द] दे० 'स्थलकमल'।

स्थलारूढ—वि० [सं०] जो घोडे, रथ आदि सवारी से भूमि पर उतरकर खडा हो [को०]।

स्थली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जलशून्य भूभाग। खुश्क जमीन। भूमि। २ ऊँची सम भूमि। ३ स्थान। जगह। जैसे,—वहाँ एक सुदर वनस्थली है। ४ दे० 'स्थलीदेवता' (को०)। ५ उपत्यका (को०)। ६ शरीर का निकला हुआ कोई भाग या अंश (को०)।

स्थलीदेवता—संज्ञा पुं० [सं०] ग्राम्य देवता।

स्थलीभूता—वि० [सं०] ऊँचे या उच्च स्तर पर स्थित। जैसे कोई भूभाग या देश [को०]।

स्थलीय—वि० [सं०] १ स्थल या भूमि संबंधी। स्थल का भूमि का। जमीन का। जैसे,—जिसे कभी स्थलीय अथवा जलीय संग्राम से भय उत्पादन नहीं हुआ।—अयोध्यासिंह (शब्द०)। २ किसी स्थान का। स्थानीय। ३ विशेष स्थिति या विषय से संबद्ध।

स्थलीशायी—वि० [सं० स्थलीशायिन्] बिछावन आदि से रहित धरती पर ही सोनेवाला [को०]।

स्थलेजात[1]—वि० [सं०] स्थल पर पैदा होनेवाला। जो पृथिवी पर उत्पन्न हो।

स्थलेजात[2]—संज्ञा पुं० मधुयष्टिका। मुलेठी। स्थलजा [को०]।

स्थलेयु—संज्ञा पुं० [सं०] हरिवंश के अनुसार रौद्राश्व के एक पुत्र का नाम।

स्थलेरुहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ घीकुआर। घृतकुमारी। २ कुरुही। दग्धा वृक्ष।

स्थलेशय[1]—संज्ञा पुं० [सं०] स्थल अर्थात् भूमि पर सोनेवाले कुरंग, कस्तूरीमृग आदि।

स्थलेशय[2]—वि० भूमि पर शयन करनेवाला [को०]।

स्थलौक—संज्ञा पुं० [सं० स्थलौकस्] स्थल पर रहनेवाला पशु। स्थलचर जीव।

स्थव—संज्ञा पुं० [सं०] छाग। बकरा [को०]।

स्थवि—संज्ञा पुं० [सं०] १ थैला। थैली। २ स्वर्ग। ३ जुलाहा। तंतुवाय। ४ अग्नि। आग। ५ कोढी या उसका शरीर। ६ फल। ७ जंगम।

स्थविका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की मक्खी।

स्थविर[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ वृद्ध। बुड्ढा। जैसे,—उनका प्रभाव स्थविर और युवा सब पर समान हुआ।—अयोध्यासिंह (शब्द०)। २ ब्रह्मा। ३ वृद्ध और पूज्य बौद्ध भिक्षु। ४ छरीला। शैलेय। ५ विधारा। वृद्धदारक। ६ कदंब। कदम। ७ बौद्धों का एक संप्रदाय।

स्थविर[2]—वि० १ वृद्ध और पूज्य। २ स्थिर। दृढ। अचल (को०)। ३ पुरातन। प्राचीन (को०)।

स्थविरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्थविर या वृद्ध होने का भाव। बुढापा। वृद्धावस्था [को०]।

स्थविरदारु—संज्ञा पुं० [सं०] विधारा। वृद्धदारक।

स्थविरद्युति—वि० [सं०] वृद्धोचित समान या मर्यादावाला [को०]।

स्थविरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गोरखमुडी। महाश्रावणिका। २ वृद्धा स्त्री। बूढी औरत।

स्थविरायु—वि० [सं० स्थविरायुस्] वहुत वृद्ध। अत्यंत बूढा [को०]।

स्थविष्ठ—वि० [सं०] १ अत्यंत स्थूल। बहुत मोटा। २ अत्यंत शक्तिशाली। महान् बली (को०)।

स्थवीयस—वि० [सं०] जो अत्यंत महान् एवं विशालतम हो [को०]।

स्थांडिल¹—संज्ञा पुं० [सं० स्थाण्डिल] वह जो व्रत के कारण भूमि या यज्ञस्थल पर सोता है। स्थंडिलशायी।

स्थांडिल²—वि० व्रती होने के कारण यज्ञस्थली या अनावृत भूमि पर शयन करनेवाला। व्रत के कारण भूमि पर सोनेवाला।

स्थाई—वि० [सं० स्थायी] दे० 'स्थायी'।

स्थाग—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राणहीन देह। शव। लाश। २ शिव के एक अनुचर का नाम।

स्थागर—वि० [सं०] स्थगर संबंधी। तगर से निर्मित [को०]।

स्थाणव—वि० [सं०] १ स्थाणु या वृक्ष के तने से निर्मित अथवा उत्पन्न। २ स्थाणु से संबंधित [को०]।

स्थाणवीय—वि० [सं०] स्थाणु या शिव संबंधी। शिव का।

स्थाणु¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ खंभ। थून। स्तंभ। २ पेड का वह धड जिसके ऊपर की डालियाँ और पत्ते आदि न रह गए हों। ठूंठ। ३ शिव का एक नाम। ४ एक प्रकार का भाला या बरछी। ५ हल का एक भाग। ६ जीवक नामक अष्टवर्गीय ओषधि। ७ धूपघडी का काटा। ८ दीमकों की बाँबी। ९ वह वस्तु जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर न जा सके। स्थिर वस्तु। स्थावर पदार्थ। १० ग्यारह रुद्रों में से एक का नाम। ११ एक प्रजापति का नाम। १२ एक नाग का नाम। १३ एक राक्षस का नाम। १४ खूंटी। कील (को०)। १५ बैठने का एक ढंग (को०)।

स्थाणु²—वि० स्थिर। अचल।

स्थाणुकर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बडी इंद्रायन। महेंद्रवारुणी लता।

स्थाणुच्छेद—संज्ञा पुं० [सं०] वृक्ष का तना काटनेवाला व्यक्ति [को०]।

स्थाणुतीर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] कुरुक्षेत्र के थानेश्वर नामक स्थान का प्राचीन नाम जो किसी समय बहुत प्रसिद्ध तीर्थ माना जाता था।

स्थाणुदिश—संज्ञा स्त्री० [सं०] बृहत्संहिता के अनुसार शिव की दिशा। उत्तरपूर्व दिशा।

स्थाणुभूत—वि० [सं०] वृक्ष के ठूँठ के समान जड या गतिहीन [को०]।

स्थाणुभ्रम—संज्ञा पुं० [सं०] भ्रम के कारण स्थाणु या ठूँठ को कुछ और समझना। स्थाणु संबंधी भ्रम [को०]।

स्थाणुमती—संज्ञा स्त्री० [सं०] वाल्मीकि रामायण वर्णित एक प्राचीन नदी का नाम।

स्थाणुरोग—संज्ञा पुं० [सं०] घोडे को होनेवाला एक प्रकार का रोग जिसमें उसकी जाँघ में व्रण या फोडा निकलता है।

विशेष—यह रोग दूषित रक्त के कारण होता है। यह प्राय बरसात में ही होता है।

स्थाणुवट—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत वर्णित एक तीर्थ का नाम।

स्थाण्वीश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १ वामन पुराण के अनुसार स्थाणुतीर्थ में स्थित एक प्रसिद्ध शिवलिंग। २ थानेश्वर नामक एक ऐतिहासिक नगर।

स्थातव्य—वि० [सं०] रहने या ठहरने योग्य [को०]।

स्थाता¹—वि० [सं० स्थातृ] १ जो स्थित हो। स्थिर रहनेवाला। २ दृढ। मजबूत [को०]।

स्थाता²—संज्ञा पुं० प्रेरक। नियंता। यंता।

स्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १ ठहराव। टिकाव। स्थिति। २ भूमिभाग। भूमि। जमीन। मैदान। जैसे,—सभा के सामनेवाला स्थान बडा रम्य है। ३ वह अवकाश जिसमें कोई चीज रह सके। जगह। ठाम। स्थल। जैसे,—सब सभासद अपने अपने स्थान पर बैठ गए। ४ डेरा। घर। मकान। जैसे,—मैं आपके स्थान पर गया था, आप मिले नहीं। ५ काम करने की जगह। पद। ओहदा। जैसे,—उनके दफ्तर में कोई स्थान खाली है। ६ पद। दर्जा। जैसे,—काशीस्थ पंडितों में उनका स्थान बहुत ऊँचा है। ७ व्याकरण के अनुसार मुहँ के अंदर का वह अंग या स्थल जहाँ से किसी वर्ण या शब्द का उच्चारण हो। जैसे,—कंठ, तालु, मूर्धा, दंत, ओष्ठ। ८ राज्य। देश। ९ मंदिर। देवालय। १० किसी राज्य का मुख्य आधार या बल जो चार माने गए हैं। यथा,—सेना, कोश, नगर और देश। (मनु०)। ११ गढ। दुर्ग। १२ सेना का अपने बचाव के लिये डटे रहना। (मनु०)। १३ आखेट में शरीर की एक प्रकार की मुद्रा। १४ (माल का) जखीरा। गोदाम। १५ अवसर। मौका। १६ अवस्था। दशा। हालत। १७ कारण। उद्देश्य। १८ ग्रंथसंधि। परिच्छेद। १९ नीतिविदों के त्रिवर्ग के अंतर्गत एक वर्ग। २० किसी अभिनेता का अभिनय या अभिनयगत चरित्र। २१ वेदी। २२ रामायण में वर्णित एक गंधर्व राजा का नाम। २३ आसन (युद्धयात्रा न कर चुपचाप बैठे रहना) का एक भेद। किसी एक उद्देश्य से उदासीन होकर बैठ जाना। २४ मृत्यु के बाद कर्मानुसार प्राप्त होनेवाला लोक (को०)। २५ संबंध। हैसियत (को०)। २६ पदार्थ। वस्तु (को०)। २७ उचित या उपयुक्त स्थान (को०)। २८ उचित या योग्य पदार्थ (को०)। २९ नगरस्थित प्रांगण (को०)। ३० पडाव। विश्रामस्थान (को०)। ३१ स्थित होने या ठहरने की क्रिया (को०)। ३२ आकार। आकृति। रूप (को०)। ३३ जीवन की मान्य चार (ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यस्त) अवस्थाओं या स्थितियों में कोई एक। आश्रम (को०)। ३४ संगीत में गीत, सुर या स्वरों के स्पंदन की स्थिति या मात्रा (को०)। ३५ सादृश्य। समानता। तुल्यता (को०)। ३६ निश्चेष्ट स्थिति या अवस्था। औदासीन्य। उदासीनता (को०)। ३७ ज्ञानेंद्रिय (को०)।

स्थानक—संज्ञा पुं० [सं०] १ जगह। ठाँव। स्थान। २ नगर। शहर। ३ पद। स्थिति। दर्जा। ४ नृत्य में एक प्रकार की मुद्रा। ५ वृक्ष का थाला। आलवाल। ६ मद्य आदि में उत्पन्न फेन। ७ सस्वर पाठ करने की एक रीति (को०)। ८ नाटकीय व्यापार का एक विशेष स्थल। जैसे, पताका स्थानक (को०)। ९ यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा का अनुवाक् या प्रभाग (को०)। १० बाण चलाते समय शरीर की एक मुद्रा (को०)। ११ वह मंदिर जिसमें मूर्ति खडी या तनी हुई अवस्था में स्थित हो (को०)।

स्थानकुटिकासन—संज्ञा पुं० [सं०] गृह या आवास का परित्याग करना। स्थावर-गृहत्याग (को०)।

स्थानचंचला—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थानचञ्चला] वनतुलसी। बर्बरी।

स्थानचिंतक—संज्ञा पुं० [सं० स्थानचिन्तक] सेना का वह अधिकारी जो सेना के लिये छावनी आदि की व्यवस्था करता हो।

स्थानच्युत—वि० [सं०] १ जो अपने निर्धारित स्थान से च्युत या गिर गया हो। अपनी जगह से गिरा हुआ। स्थानभ्रष्ट। जैसे,—स्थानच्युत कमल। २ जो अपने ओहदे या पद से हटा दिया गया हो। अपने ओहदे से हटाया हुआ। जैसे,—स्थानच्युत कर्मचारी।

स्थानटिप्पटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] शुक्रनीति के अनुसार दैनिक आय और व्यय का लेखा या हिसाब की वही। रोकड वही (को०)।

स्थानतव्य—वि० [सं०] ठहरने के योग्य। स्थिति के योग्य। रहने के योग्य।

स्थानत्याग—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपना ओहदा या पद छोड देना। पदत्याग। २ निवासस्थान का परित्याग।

स्थानदाता—वि० [सं० स्थानदातृ] १ स्थान देनेवाला। जगह देनेवाला। २ किसी के लिये किसी विशिष्ट स्थान का निदेश करनेवाला।

स्थानदीप्त—वि० [सं०] जो स्थानविशेष पर स्थित होने के कारण अशुभ या उग्र हो। स्थान को पा जाने के कारण दीप्त या अशुभ (को०)।

स्थानपति—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी मठ, मंदिर या विहार आदि का प्रधान व्यक्ति। २ दे० 'स्थानाधिपति'।

स्थानपात—संज्ञा पुं० [सं०] किसी को उसके स्थान से च्युत करना। किसी को उसके स्थान से हटाकर अधिकार करना।

स्थानपाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्थान या देश का रक्षक। २ प्रधान निरीक्षक। ३ चौकीदार। पहरेदार।

स्थानप्रच्युत—वि० [सं०] दे० 'स्थानच्युत'।

स्थानप्राप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी पद या स्थान का प्राप्त होना।

स्थानभंग—संज्ञा पुं० [सं० स्थानभङ्ग] किसी स्थान का भंग या बरबाद होना। स्थानभ्रंश (को०)।

स्थानभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] रहने की जगह। मकान।

स्थानभ्रंश—संज्ञा पुं० [सं०] १ दे० 'स्थानभंग'। २ अर्थ की हानि। ओहदे या पद की हानि (को०)।

स्थानभ्रष्ट—वि० [सं०] दे० 'स्थानच्युत'।

स्थानमाहात्म्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्थानविशेष की महत्ता या विशेषता। २ किसी स्थानविशेष का पुण्य प्रभाव, पवित्रता या तीर्थत्व (को०)।

स्थानमृग—संज्ञा पुं० [सं०] १ केकडा। कर्कट। २ मछली। मत्स्य। ३ कछुआ। कच्छप। ४ मगर। मकर।

स्थानयोग—संज्ञा पुं० [सं०] उचित स्थानों का नियोजन। उपयुक्त स्थान का विनियोग (को०)।

स्थानरक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्थानपाल' (को०)।

स्थानविद्—वि० [सं०] स्थानीय विषयों का अच्छा ज्ञाता या जानकार।

स्थानविभाग—संज्ञा पुं० [सं०] बीजगणित में अंकों की स्थिति के अनुसार किसी संख्या का उपविभाजन। २ स्थान का बँटवारा, वितरण या विभाजन करना।

स्थानवीरासन—संज्ञा पुं० [सं०] ध्यान करने की एक प्रकार की मुद्रा या आसन।

स्थानस्थ—वि० [सं०] १ अपने स्थान पर स्थित या उपस्थित। २ जो अपनी जगह पर अटल हो (को०)।

स्थानांग—संज्ञा पुं० [सं० स्थानाङ्ग] जैन धर्मशास्त्र का तीसरा अंग।

स्थानांतर—संज्ञा पुं० [सं० स्थानान्तर] दूसरा स्थान। प्रकृत या प्रस्तुत से भिन्न स्थान।

यौ०—स्थानांतरगत = दूसरे स्थान पर गया हुआ।

स्थानांतरित—वि० [सं० स्थानान्तरित] जो एक स्थान से हट या उठकर दूसरे स्थान पर गया हो। जो एक जगह से दूसरी जगह पर भेजा या पहुँचाया गया हो। जैसे,—(क) भानु कार्यालय चौक से दशाश्वमेध स्थानांतरित हो गया। (ख) मि० सिंह काशी से आजमगढ स्थानांतरित कर दिए गए है।

स्थानाधिकार—संज्ञा पुं० [सं०] देवस्थान आदि की देखभाल (को०)।

स्थानाधिपति—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्थान का स्वामी। २ दे० 'स्थानपति'।

स्थानाध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसपर किसी स्थान की रक्षा का भार हो। स्थानरक्षक।

स्थानापत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी व्यक्ति या वस्तु का स्थान लेना। २ दूसरे व्यक्ति के स्थान पर कुछ दिनों के लिये काम करना (को०)।

स्थानापन्न—वि० [सं०] दूसरे के स्थान पर अस्थायी रूप से काम करनेवाला। कायम मुकाम। एवजी। जैसे,—स्थानापन्न मैजिस्ट्रेट।

स्थानाश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] खडे होने की भूमि या स्थान। आश्रय। आधार (को०)।

स्थानासेध—संज्ञा पुं० [सं०] एक ही स्थान पर नजरबंदी। गिरफ्तारी। कैद (को०)।

स्थानिक¹—वि० [सं०] उस स्थान का जिसके विषय में कोई उल्लेख हो। उल्लिखित, वक्ता या लेखक के स्थान का। जैसे,—स्थानिक घटना, स्थानिक समाचार।

स्थानिक[2]—संज्ञा पुं० १ वह जिसपर किसी स्थान की रक्षा का भार हो। स्थानरक्षक। २ मंदिर का प्रबंधक। ३ राजकर वसूल करनेवाला एक कर्मचारी।

विशेष—जनपद के चौथे भाग की मालगुजारी इनके जिम्मे रहती थी। ये 'समाहर्ता' के अधीन होते थे और इनके अधीन 'गोप' होते थे।

स्थानी—वि० [सं० स्थानिन्] १ स्थानयुक्त। पदयुक्त। २ ठहरनेवाला। स्थायी। ३ उचित। उपयुक्त। ठीक। ४ जिसका कोई स्थानापन्न हो (को०)।

स्थानीय[1] वि० [सं०] १ उस स्थान या नगर का जिसके संबंध में कोई उल्लेख हो। उल्लिखित वक्ता या लेखक के स्थान का। मुकामी। स्थानिक। जैसे,—स्थानीय पुलिस कर्मचारी। स्थानीय समाचार। २ जो किसी स्थान पर स्थित हो।

स्थानीय[2]—संज्ञा पुं० १ नगर। शहर। कस्बा। २ कौटिल्य के अनुसार एक प्रकार का गढ जो ८०० गाँवों के मध्य में हो। आठ सौ गाँवों के बीच बना हुआ किला।

स्थानीयता—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्थानीयपन। आंचलिकता। उ०—भाषा की यह स्थानीयता जायसी की सीमित लोकप्रियता का एक कारण है।—आचार्य०, पृ० ६८।

स्थानेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुरुक्षेत्र का थानेश्वर नामक स्थान जो किसी समय एक प्रसिद्ध तीर्थ था। २ दे० 'स्थानाध्यक्ष'।

स्थापक[1]—वि० [सं०] १ रखने या खड़ा करनेवाला। २ कायम करनेवाला। स्थापनकर्ता।

स्थापक[2]—संज्ञा पुं० १ देवप्रतिमा या मूर्ति बनानेवाला। २ मूर्ति स्थापित करनेवाला। ३ सूत्रधार का सहकारी। सहकारी रंगमंचाध्यक्ष। (नाटक)। ४ कोई संस्था खोलने या खड़ी करनेवाला। संस्थापक। प्रतिष्ठाता। ५ जो किसी के पास कोई चीज जमा करे। अमानत रखनेवाला।

स्थापत्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्थपति का कार्य। भवननिर्माण। राजगीरी। मेमारी। २ वह विद्या जिसमें भवननिर्माण संबंधी सिद्धांतों आदि का विवेचन हो। ३ अंतःपुर का रक्षक। रनिवास की रखवाली करनेवाला। ४ स्थानरक्षक का पद।

यौ०—स्थापत्य कला = भवन आदि निर्माण करने की कला। स्थापत्यविद्या = वास्तुशिल्प। दे० 'स्थापत्य—२'। स्थापत्यवेद।

स्थापत्यवेद—संज्ञा पुं० [सं०] चार उपवेदों में से एक जिसमें वास्तुशिल्प या भवननिर्माण कला का विषय वर्णित है। कहते हैं, इसे विश्वकर्मा ने अथर्ववेद से निकाला था।

स्थापन—संज्ञा पुं० [सं०] १ खड़ा करना। उठाना। २ रखना। बैठाना। जमाना। ३ नया काम खोलना। नया काम जारी करना। ४ जकड़ना। पकड़ना। ५ (प्रमाणपूर्वक किसी विषय को) सिद्ध करना। साबित करना। प्रतिपादन। ६ (शरीर की) रक्षा या आयुवृद्धि का उपाय। ७ (रक्त का स्राव) रोकने का उपाय। ८ समाधि। ९ पुंसवन। १० मकान। घर। आवास। ११ अन्न की राशि। १२ निरूपण। १३ पारे की एक क्रिया (को०)। १४ गर्भाधान नामक एक संस्कार (को०)। १५ रंग की व्यवस्था करना। व्यवस्थापन। निर्देशन (को०)।

स्थापननिक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] अर्हत् की मूर्ति का पूजन। (जैन)।

स्थापनवृत्त—वि० [सं०] जो शक्ति के पुनःसंचय से अतीत हो गया हो [को०]।

स्थापना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रतिष्ठित या स्थित करना। बैठाना। थापना। दृढतापूर्वक रखना। २ रखना। जमा कर रखना। ३ (प्रमाणपूर्वक किसी विषय को) सिद्ध करना। साबित करना। प्रतिपादन। ४ (नाटक में) व्यवस्थापन। निर्देश।

स्थापनासत्य—संज्ञा पुं० [सं०] किसी प्रतिमा या चित्र आदि में स्वयं उस वस्तु या व्यक्ति का आरोप करना जिसकी वह प्रतिमा या चित्र हो। जैसे,—पार्श्वनाथ की प्रतिमा को 'पार्श्वनाथ की प्रतिमा' न कहकर 'पार्श्वनाथ' कहना। (जैन)।

स्थापनिक—वि० [सं०] भांडार में जमा किया हुआ।

स्थापनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पाढ़। पाठा।

स्थापनीय—वि० [सं०] १ स्थापित करने के योग्य। जो स्थापना करने के योग्य हो। २ जो रखने अथवा पोषण पालन करने योग्य हो (को०)। ३ शक्तिवर्धक औषधों द्वारा चिकित्सा करने योग्य (को०)।

स्थापयितव्य—वि० [सं०] १ स्थापित करने के योग्य। २ रखने के योग्य। ३ जिसपर नियंत्रण रखा जा सके। नियंत्रित करने के योग्य [को०]।

स्थापयिता—वि० [सं० स्थापयितृ] प्रतिष्ठा या स्थापन करनेवाला। संस्थापक। स्थापक।

स्थापित—वि० [सं०] १ जिसकी स्थापना की गई हो। २. कायम किया हुआ। प्रतिष्ठित। ३ जो जमा किया गया हो। ४ जो जमा कर रखा गया हो। रक्षित। ५ व्यवस्थित। निर्दिष्ट। ६ निश्चित। ७ ठहरा हुआ। दृढ़। मजबूत। ८. जो किसी कार्य पर नियुक्त हो (को०)। ९ विवाहित।

स्थापी—संज्ञा पुं० [सं० स्थापिन्] १ प्रतिमा निर्माण करनेवाला। मूर्ति बनानेवाला। २ स्थापना करनेवाला। स्थापक।

स्थाप्य[1]—वि० [सं०] १ स्थापित करने के योग्य। जिसकी स्थापना की जा सके अथवा जो स्थापित करने के योग्य हो। २. रखे जाने या जमा किए जाने योग्य (को०)। ३ जिसे किसी पद पर रखा जा सके। नियुक्ति योग्य (को०)। ४ जो नियंत्रित किया जा सके। नियंत्रण योग्य। ५ जो पालन पोषण के लायक हो, जैसे,—पशु (को०)।

स्थाप्य[2]—संज्ञा पुं० १ देवप्रतिमा। २ धरोहर। अमानत।

स्थाप्यापहरण—संज्ञा पुं० [सं०] अमानत में खयानत। धरोहर को डकार जाना [को०]।

स्थाप्याहरण—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्थाप्यापहरण'।

स्थाम—संज्ञा पुं० [सं० स्थामन्] १ सामर्थ्य। शक्ति। २ घोड़े की हिनहिनाहट। अश्वघोष। ३ स्थान। जगह। मुकाम। ४. स्थिरता। स्थायित्व (को०)।

स्थामवत्—वि० [सं०] शक्तियुक्त। दृढ। मजबूत [को०]।

स्थाय—संज्ञा पुं० [सं०] १ आधार। पात्र। २ दे० 'स्थाम'।

स्थाया—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी। धरती।

स्थायिक—वि० [सं०] दे० 'स्थायी' [को०]।

स्थायिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्थित होना। स्थित होने की क्रिया [को०]।

स्थायिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'स्थायित्व'।

स्थायित्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्थायी होने का भाव। टिकाव। ठहराव। २ स्थिरता। दृढता। मजबूती।

स्थायी[1]—वि० [सं० स्थायिन्] १ ठहरनेवाला। टिकनेवाला। जो स्थिर रहे। २ बहुत दिन चलनेवाला। जो बहुत दिन चले। टिकाऊ। जैसे—(क) अब यह मकान पहले की अपेक्षा अधिक स्थायी हो गया है। (ख) अब हमारे यहाँ धीरे धीरे स्थायी साहित्य की भी सृष्टि होने लगी है। ३ बना रहनेवाला। स्थितिशील। स्थिर। ४ (किसी के) तुल्य या समान रूपवाला (को०)। ५ जो किसी स्थान पर हो। रहनेवाला (को०)। ६ विश्वास करने योग्य। विश्वस्त।

स्थायी[2]—संज्ञा पुं० १ नित्य या शाश्वत भावना अथवा कोई भी टिकाऊ वस्तु, दृढ स्थिति या दशा। २. गीत का प्रथम चरण जो बार बार गाया जाता है। टेक [को०]।

स्थायीभाव—संज्ञा पुं० [सं० स्थायिभाव=हिं० स्थायी + भाव] साहित्य मे तीन प्रकार के भावो मे से एक जिसकी रस मे सदा स्थिति रहती है।

विशेष—स्थायीभाव चित्त मे सदा संस्कार रूप से वर्तमान रहते हैं और विभाव आदि मे अभिव्यक्त होकर रसत्व को प्राप्त होते हैं। ये विरुद्ध अथवा अविरुद्ध भावो मे नष्ट नही होते, बल्कि उन्ही को अपने आपमे समा लेते है। ये संख्या मे नौ हैं, यथा—(१) रति। (२) हास्य। (३) शोक। (४) क्रोध। (५) उत्साह। (६) भय। (७) निंदा या जुगुप्सा। (८) विस्मय और (९) निर्वेद।

स्थायी समिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी सभा समेलन के कुछ निर्वाचित सदस्यो की एक समिति जिसका काम उस सभा या समेलन के दो महाधिवेशनो के बीच की अवधि मे उपस्थित होनेवाले कामो की व्यवस्था करना है।

स्थायुक[1]—वि० [सं०] [स्त्री० स्थायुका, स्थायुकी] १ ठहरनेवाला। टिकनेवाला। रहनेवाला। २ स्थितियुक्त। स्थितिशील। ३ दृढ। स्थिर (को०)।

स्थायुक[2]—संज्ञा पुं० गाँव का अध्यक्ष या निरीक्षक।

स्थाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ आधार। पात्र। बरतन। २ थाल। परात। थाली। ३ देग। देगची। पतीला। बटलोही। ४ दाँतो के नीचे का और मसूडो का भीतरी भाग।

स्थालक—संज्ञा पुं० [सं०] पीठ की एक हड्डी।

स्थालपथ—वि० [सं०] स्थल मार्ग से आयात किया हुआ या मँगाया हुआ [को०]।

स्थालपथिक—वि० [सं०] १ स्थल मार्ग से यात्रा करनेवाला। २. स्थल मार्ग से आयात होनेवाला [को०]।

स्थालरूप—संज्ञा पुं० [सं०] भोजन बनाने के बर्तन की शक्लवाला। पात्र की तरह आकृतिवाला [को०]।

स्थालिक—संज्ञा पुं० [सं०] मल की दुर्गंध।

स्थालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की मक्खी।

स्थाली[1]—स्त्री० [सं०] १ हडी। हँडिया। २ मिट्टी की रिकाबी। ३ एक प्रकार का बरतन जो सोम का रस बनाने के काम मे आता था। ४ पाडर का पेड। पाटला वृक्ष।

स्थाली[2]—वि० [सं० स्थालिन्] थाली सहित। पात्रयुक्त [को०]।

स्थालीग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] वह पदार्थ जो पाकपात्र से करछी या चम्मच भर निकाला गया हो [को०]।

स्थालीदरण—संज्ञा पुं० [सं०] पात्र का टूटना। बर्तन टूट जाना [को०]।

स्थालीद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] बेलिया पीपल। नदी वृक्ष।

स्थालीपक्व—वि० [सं०] हडी या पतीली मे पकाया हुआ [को०]।

स्थालीपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शालिपर्णी'।

स्थलीपाक—संज्ञा पुं० [सं०] १ आहुति के लिये दूध मे पकाया हुआ चावल या जौ। एक प्रकार का चरु। २ वैद्यक मे लोहे की एक पाक विधि।

स्थालीपाकीय—वि० [सं०] स्थालीपाक संबधी। स्थालीपाक का।

स्थालीपुरीष—संज्ञा पुं० [सं०] पात्र मे जमी हुई मैल या तरौछ [को०]।

स्थालीपुलाक—संज्ञा पुं० [सं०] स्थाली मे पका हुआ चावल [को०]।

स्थालीपुलाक न्याय—संज्ञा पुं० [सं०] जिस प्रकार हाँडी का एक चावल छूकर या टोकर सब चावलो के पक जाने का अनुमान किया जाता है, उसी प्रकार किसी एक बात को देखकर उस संबध की सब बातो का मालूम होना। जैसे,—मैने उनका एक ही व्याख्यान सुनकर स्थालीपुलाक न्याय से सब विषयो मे उनका मत जान लिया।

स्थालीबिल—संज्ञा पुं० [सं०] पाकपात्र (बटलोही या हाँडी आदि) का भीतरी भाग।

स्थालीविलीय—वि० [सं०] पाकपात्र (देग, बटलोही, हाँडी आदि) मे उबलने या पकने योग्य।

स्थालीविल्य—वि० [सं०] दे० 'स्थालीविलीय' [को०]।

स्थालीवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्थालीद्रुम'।

स्थाल्य—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार सूखी जमीन मे होनेवाले अनाज, ओषधि आदि।

स्थावर[1]—वि० [सं०] १ जो चले नही। सदा अपने स्थान पर रहने वाला। अचल। स्थिर। २ जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाया न जा सके। जंगम का उलटा। अचल। गैर मनकूला। जैसे,—स्थावर संपत्ति (मकान, बाग, गाँव आदि)। ३ स्थायी। स्थितिशील। ४ स्थावर संपत्ति संबधी। ५ निश्चेष्ट। निष्क्रिय (को०)। ६ वनस्पति संबधी। वानस्पतिक [को०]।

स्थावर[2]—संज्ञा पुं० १ पहाड। पर्वत। २ अचल संपत्ति। गैर मनकूला जायदाद। जैसे,—जमीन, घर आदि। ३ वह संपत्ति जो वंशपरंपरा से परिवार मे रक्षित हो और जो बेची न जा सके। जैसे,—रत्न आदि। ५ धनुष की डोरी। प्रत्यंचा। चिल्ला।

६ कोई भी स्थावर वस्तु या पदार्थ। जैसे, वृक्ष, प्रस्तर आदि (को०)। ७ विशाल एवं स्थूल शरीर (को०)। ८ स्थायी होने का भाव। स्थायित्व । ९ जैन दर्शन के अनुसार एकेंद्रिय पदार्थ आदि जिनके पाँच भेद कहे गए हैं—(१) पृथ्वीकाय, (२) अपकाय, (३) तेजस्काय, (४) वायुकाय और (५) वनस्पतिकाय।

स्थावरकल्प[1]—संज्ञा पु० [सं०] बौद्ध मत के अनुसार सृष्टि संबंधी कल्प (को०)।

स्थावरकल्प[2]—वि० जो स्थावर न होते हुए भी स्थावर के तुल्य हो।

स्थावरक्रयाणक—संज्ञा पु० [सं०] काठ की बनी वस्तुएँ (को०)।

स्थावरगरल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्थावरविष'।

स्थावरजंगम—संज्ञा पुं० [सं० स्थावरजङ्गम] सृष्टिगत स्थावर और जंगम या चल और अचल सभी पदार्थ।

स्थावरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्थावर होने का भाव। स्थिरता। अचलता। २ वानस्पतिक या खनिज होने की स्थिति या अवस्था।

स्थावरतीर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन तीर्थ का नाम। २ वह तीर्थ जिसका जल स्थिर हो। स्थिर जलवाला तीर्थ (को०)।

स्थावरत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्थावरता'।

स्थावरनाम—संज्ञा पुं० [सं०] जैन मतानुसार वह पाप कर्म जिसके उदय से जीव स्थावर काय में जन्म ग्रहण करते हैं।

स्थावरराज—संज्ञा पु० [सं०] पर्वतों का राजा, हिमालय।

यौ०—स्थावरराजकन्या = पार्वती।

स्थावरविष—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का विष। स्थावर पदार्थों में होनेवाला जहर।

विशेष—यह विष सुश्रुत के अनुसार वृक्षमूल, पत्तों, फल, फूल, छाल, दूध, सार, गोंद, धातु और कंद में होता है। वैद्यक में यह ज्वर, हिचकी, दंतहर्ष, गलवेदना, वमन, अरुचि, श्वास, मूर्छा और झाग उत्पन्न करनेवाला बताया गया है।

स्थावराकृति—वि० [सं०] स्थावर अर्थात् वृक्ष की आकृति या स्वरूपवाला (को०)।

स्थावरादि—संज्ञा पुं० [सं०] वत्सनाभ विष। बच्छनाग विष।

स्थावरास्थावर—संज्ञा पुं० [सं०] स्थावर और अस्थावर पदार्थ। दे० 'स्थावरजंगम'।

स्थाविर[1]—संज्ञा पुं० [सं०] वृद्धावस्था। वार्धक्य। बुढौती।

विशेष—यह अवस्था औरतों के लिये ५० से तथा पुरुषों के लिये ७० से ९० वर्ष तक मानी गई है। स्थाविरावस्था (९० वर्ष) के उपरांत मनुष्य 'वर्षीयस्' कहलाता है।

स्थाविर[2]—वि० १ वृद्ध। वार्धक्ययुक्त। २ बुढौती संबंधी। ३ मोटा। दृढ़ (को०)।

स्थासक—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर को चंदन आदि से चर्चित या सुगंधित करना। २ पानी का बुलबुला। जलबुद्बुद्। ३ घोड़े के साज पर बुलबुले के आकार का एक गहना। ४ अभ्यंजन, विलेपन, चंदनादि द्वारा निर्मित आकृति या चिह्न (को०)।

स्थासु—संज्ञा पुं० [सं०] शारीरिक बल। दे० 'स्थाम' (को०)।

स्थास्नु[1]—संज्ञा पुं० [सं०] पौधा। वृक्ष (को०)।

स्थास्नु[2]—वि० [सं०] १ स्थायी। २ बहुत दिन टिकनेवाला। टिकाऊ। ३ सहनशील। ४ स्थित। स्थिर। अचल (को०)।

स्थिक—संज्ञा पुं० [सं०] नितंब। चूतड़।

स्थास्नुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्थास्नु होने का भाव या स्थिति। दृढ़ता। स्थिरता (को०)।

स्थित[1]—वि० [सं०] १ अपने स्थान पर ठहरा हुआ। टिका हुआ। जैसे,—उस भवन की छत खंभों पर स्थित है। २ लटका हुआ। अवलंबित। ३ बैठा हुआ। आसीन। जैसे,—वे अपने आसन पर स्थित हो गए। ४ अपनी प्रतिज्ञा पर डटा हुआ। दृढ़प्रतिज्ञ। जैसे,—वह अपनी बात पर स्थित है। ५ विद्यमान। वर्तमान। मौजूद। जैसे,—परमात्मा सर्वत्र स्थित है। ६ रहनेवाला। निवासी। जैसे,—स्वर्गस्थित देवता, दुर्गस्थित सेना। ७ बसा हुआ। अवस्थित। जैसे,—यह नगर गंगा के बाएँ किनारे पर स्थित है। ८ खड़ा हुआ। ऊर्ध्व। ९ अचल। स्थिर। १० लगा हुआ। संलग्न। मशगूल। ११. जटा हुआ। खचित (को०)। १२ घटित। बीता हुआ। १३ सहमत (को०)। १४ निर्धारित। निश्चित। स्वीकृत (को०)। १५ रोका हुआ। वरित (को०)। १६ निकटस्थ। पार्श्वस्थ (को०)। १७ प्रस्तुत। उपस्थित (को०)। १८ धैर्यशाली। धीर (को०)। १९ कर्तव्यपरायण (को०)। २० पुण्यात्मा (को०)।

स्थित[2]—संज्ञा पुं० १. अवस्थान। निवास। २ कुलमर्यादा। ३ खड़ा रहना। रुका रहना। ठहरना (को०)। ४ खड़ा होने की अवस्था या ढंग (को०)। ५ सत्कर्म में तल्लीनता (को०)।

स्थितता—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्थित होने का भाव। ठहराव। अवस्थान। स्थिति।

स्थितधी—वि० [सं०] १ जिसका मन किसी बात से डावाँडोल न होता हो। जिसकी बुद्धि सदा स्थिर रहती हो। स्थिरबुद्धि। २ जिसका चित्त दुःख में विचलित न हो, सुख की जिसे चाह न हो और जिसमें राग, आसक्ति, भय या क्रोध न रह गया हो। ब्रह्मबुद्धि संपन्न।

स्थितपाठ्य—संज्ञा पुं० [सं०] नाट्यशास्त्र के अनुसार लास्य के दस अंगों में से एक। काम से संतप्त नायिका का बैठकर स्वाभाविक पाठ करना।

विशेष—कुछ लोगों के मत से क्रुद्ध या भ्रांत स्त्री पुरुषों का प्राकृत पाठ भी यही है।

स्थितप्रज्ञ—वि० [सं०] १ जिसकी विवेकबुद्धि स्थिर हो। २ जो समस्त मनोविकारों से रहित हो। आत्मा द्वारा आत्मा में ही संतुष्ट रहनेवाला। आत्मसंतोषी।

स्थितप्रेमा—संज्ञा पुं० [सं० स्थितप्रेमन्] विश्वस्त मित्र (को०)।

स्थितबुद्धिदत्त—संज्ञा पुं० [सं०] बुद्ध का एक नाम।

स्थितसंकेत—वि० [सं० स्थितसङ्केत] दे० 'स्थितसंविद्'।

स्थितसंविद्—वि० [सं०] जो अपने वचन का पालन करता है। दृढ़प्रतिज्ञ (को०)।

स्थिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रहना। ठहरना। टिकाव। ठहराव। जैसे,—इस छत की स्थिति इन्ही खभो पर है। २ निवास। अवस्थान। जैसे,—यहाँ कब तक आपकी स्थिति रहेगी ? ३ अवस्था। दशा। हालत। जैसे,—उनकी स्थिति बहुत शोचनीय है। ४ पद। दर्जा। जैसे,—वे उन्नति करते हुए इस स्थिति को पहुँच गए। ५ एक स्थान या अवस्था मे रहना। अवस्थान। ६ निरतर बना रहना। अस्तित्व। ७ पालन। ८ नियम। ९ निष्पत्ति। निर्णय। १० मर्यादा। ११ सीमा। हद्द। १२ निवृत्ति। १३ स्थिरता। १४ ठहरने का स्थान। १५ ढग। तरीका। १६ आकार। आकृति। रूप। सूरत। १७ सयोग। मौका। १८ यति। विराम (को०)। १९ जडता। गतिहीनता (को०)। २० ग्रहण की अवधि (को०)। २१ कुशल क्षेम। कल्याण (को०)। २२. सगति (को०)। २३ स्वभाव। प्रकृति (को०)। २४ निर्वाह (को०)। २५ आयु (को०)। २६ जीव की तीन अवस्थाओ मे से एक (को०)। २७ पृथ्वी (को०)। २८ दृढ विश्वास (को०)। २९ प्रथा। रस्म (को०)।

यौ०—स्थितिकर्ता = स्थिति करनेवाला। स्थायी बनानेवाला। स्थितिज्ञ = (१) परिस्थिति या अवसर का जानकार। (२) मर्यादा का ध्यान रखनेवाला। स्थितिदेश = निवासस्थान। स्थितिपालन = स्थिति को कायम रखना। स्थितिप्रद = दृढ या स्थायी बनानेवाला। स्थितिभिद् = मर्यादा को भग करनेवाला। स्थितिमार्ग = मस्तिष्क या मन की स्थिरतादायक प्रक्रिया। स्थितियुक्त = स्थिरता या स्थायित्वयुक्त।

स्थितिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्थिति का भाव या धर्म। २ स्थिरता।

स्थितिपद्—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम (को०)।

स्थितिपद—संज्ञा पु० [सं०] उचित एव उपयुक्त प्रवाह मार्ग। ठीक राह। उचित पथ (को०)।

स्थितिमान्—सं० [सं० स्थितिमत्] १ दृढ। धीर। २ स्थायी। टिकाऊ। ३ अपनी सीमा या मर्यादा के अदर रहनेवाला। ४ धार्मिक। सदाचारी (को०)।

स्थितिस्थापक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] वह गुण जिसके रहने से कोई वस्तु साधारण स्थिति मे आने पर फिर अपनी पूर्व अवस्था को प्राप्त हो जाय। किसी वस्तु को अनुकूल परिस्थिति मे फिर उसकी पूर्व अवस्था पर पहुँचानेवाला गुण। जैसे,—बेत लचकाने से लचक जाता है और छोड देने से फिर (इसी गुण के कारण) ज्यो का त्यो हो जाता है।

स्थितिस्थापक[२]—वि० १ किसी वस्तु को उसकी पूर्व अवस्था को प्राप्त करानेवाला। २ जो सहज मे लचक या झुक जाय और छोड देने पर फिर ज्यो का त्यो हो जाय। लचीला। लचकदार। लचलचा। जैसे,—बेत।

स्थितिस्थापकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्थितिस्थापक होने की अवस्था या गुण। अनुकुल परिस्थिति मे फिर अपनी पूर्व अवस्था को पहुँच जाने का गुण या शक्ति। लचीलापन। लचक।

स्थितिस्थापकत्व—संज्ञा पु० [सं०] पूर्वावस्था को प्राप्त होने की शक्ति या गुण। स्थितिस्थापकता।

स्थिर[१] वि० [सं०] १ जो चलता या हिलता डोलता न हो। निश्चल। ठहरा हुआ। जैसे,—(क) हम लोग देखते है कि पृथ्वी स्थिर है, पर वह एक घटे मे ५८ हजार मील चलती है। (ख) और लोग उठकर चले गए पर वह अपने स्थान पर स्थिर रहा। २ निश्चित। जैसे,—(क) उन्होने कलकत्ते जाना स्थिर किया है। (ख) आप स्थिर जानिए कि वह कभी सफल न होगा। ३ शात। जैसे,—आप बहुत उत्तेजित हो गए है, जरा स्थिर होइए। ४ दृढ। अटल। जैसे,—वे अपनी प्रतिज्ञा पर स्थिर है। ५ स्थायी। सदा बना रहनेवाला। जैसे,—इस ससार मे कीर्ति ही स्थिर रहती है। ६ नियत। मुकर्रर। जैसे,—वहाँ चलने का समय स्थिर हो गया। ७ विश्वस्त। ८ धैर्ययुक्त। धीर (को०)। ९ जटित। नक्श। खचित। जडा हुआ (को०)। १० आचारयुक्त। आचारव्रती (को०)। ११ कठिन। ठोस (को०)। १२ बली। उग्र। कठोरहृदय (को०)। १३ मद। धीमा। जैसे, स्थिरगति।

स्थिर[२]—संज्ञा पु० १ शिव का एक नाम। २ स्कद के एक अनुचर का नाम। ३ ज्योतिष मे एक योग का नाम। ४ ज्योतिष मे वृष सिंह, वृश्चिक और कुभ ये चार राशियाँ, जो स्थिर मानी गई है।

विशेष—कहते है, इन राशियो मे कोई काम करने से वह स्थिर या स्थायी होता है। जो बालक इनमे से किसी राशि मे जन्म लेता है, वह स्थिर और गभीर स्वभाववाला, क्षमाशील तथा दीर्घसूत्री होता है।

५. देवता। ६ साँड। वृष। ७. मोक्ष। मुक्ति। ८. वृक्ष। पेड। ९ धौ। धव वृक्ष। १०. पहाड। पर्वत। ११ कार्तिकेय का एक नाम (को०)। १२ दृढता। स्थिरता (को०)। १३ शनि ग्रह। १४ एक प्रकार का छद। १५ एक प्रकार का मत्र जिससे शस्त्र अभिमत्रित किए जाते थे। १६ जैन धर्मानुसार वह कर्म जिससे जीव को स्थिर अवयव प्राप्त होते है।

स्थिरक—संज्ञा पु० [सं०] सागौन। शाक वृक्ष।

स्थिरकर्मा—वि० [सं० स्थिरकर्मन्] स्थिरता या दृढता से काम करनेवाला।

स्थिरकुसुम—संज्ञा पुं० [सं०] मौलसिरी। बकुल वृक्ष।

स्थिरगध[१]—संज्ञा पुं० [सं० स्थिरगन्ध] चपा। चपक वृक्ष।

स्थिरगध[२]—वि० जिसकी सुगध स्थिर रहती हो। स्थिर या स्थायी गधयुक्त।

स्थिरगधा—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थिरगन्धा] १ केवडा। केतकी। २ पाढर। पाटला।

स्थिरगति—संज्ञा पुं० [सं०] शनैश्चर (को०)।

स्थिरचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] मजुघोष या मजुश्री नामक प्रसिद्ध बोधिसत्व का एक नाम। विशेष दे० 'मजुघोष'—२।

स्थिरचित्त—वि० [सं०] जिसका मन स्थिर या दृढ हो। जो जल्दी जल्दी अपने विचार न बदलता हो, अथवा घबराता न हो। दृढचित्त।

स्थिरचेता—वि० [सं० स्थिरचेतस्] दे० 'स्थिरचित्त'।

स्थिरच्छद—संज्ञा पुं० [सं०] भोजपत्र। भूर्जपत्र।

स्थिरच्छाय—संज्ञा पुं० [सं०] १ छाया देनेवाले पेड। छायातरु। २ पेड। वृक्ष (को०)।

स्थिरजिह्व—संज्ञा पुं० [सं०] मछली। मत्स्य।

स्थिरजीवित—वि० [सं०] दीर्घायु। दे० 'स्थिरायु' [को०]।

स्थिरजीविता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेमल का पेड। शाल्मलि वृक्ष।

स्थिरजीवी—संज्ञा पुं० [सं० स्थिरजीविन्] कौआ, जिसका जीवन बहुत दीर्घ होता है।

स्थिरतर¹—वि० [सं०] अत्यंत दृढ। विशेष दृढ [को०]।

स्थिरतर²—संज्ञा पुं० [सं०] परमेश्वर। ईश्वर [को०]।

स्थिरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्थिर होने का भाव। ठहराव। निश्चलता। २ दृढ़ता। मजबूती। ३ स्थायित्व। ४. धीरता। धैर्य। ५ कठोरता। निर्भयता। निर्भीकता (को०)।

स्थिरत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्थिरता'।

स्थिरदंष्ट्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ साँप। सर्प। भुजग। २. वाराहरूपी विष्णु का नाम। ३ ध्वनि।

स्थिरधामा—वि० [सं० स्थिरधामन्] जिसकी जाति, वर्ग या वंशपरंपरा समर्थ एवं स्थिर हो [को०]।

स्थिरधी—वि० [सं०] जिसकी बुद्धि या चित्त स्थिर हो। दृढचित्त।

स्थिरपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ ताड से मिलता जुलता एक प्रकार का पेड। श्रीताल। २ एक प्रकार का खजूर का पेड। हिंताल।

स्थिरपद—वि० [सं०] दृढ। बद्धमूल [को०]।

स्थिरपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंपे का पेड। चंपक वृक्ष। २ मौलसिरी का पेड। बकुल वृक्ष। ३ तिलपुष्पी। तिलकपुष्प वृक्ष।

स्थिरपुष्पी—संज्ञा पुं० [सं० स्थिरपुष्पिन्] १ तिलपुष्पी। तिलकपुष्प का वृक्ष। २ चंपक वृक्ष। चंपा का वृक्ष (को०)। ३ बकुल। मौलसिरी (को०)।

स्थिरप्रतिज्ञ—वि० [सं०] वचन का पक्का। दृढ़प्रतिज्ञ। प्रतिज्ञा पर डटा रहनेवाला [को०]।

स्थिरप्रतिबंध—वि० [सं० स्थिरप्रतिबन्ध] जो डटकर मुकाबला करनेवाला हो [को०]।

स्थिरप्रतिष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] निश्चित निवासस्थान या रहने का आवास [को०]।

स्थिरप्रेमा—वि० [सं० स्थिरप्रेमन्] जिसका प्रेम अटल हो [को०]।

स्थिरफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुम्हड़े या पेठे की लता। कुष्मांड लता।

स्थिरबुद्धि—वि० [सं०] जिसकी बुद्धि स्थिर हो। ठहरी हुई बुद्धिवाला। दृढचित्त।

स्थिरमति¹—वि० [सं०] दे० 'स्थिरबुद्धि'।

स्थिरमति²—संज्ञा स्त्री० सुस्थिर बुद्धि।

स्थिरमद¹—संज्ञा पुं० [सं०] मोर। मयूर।

स्थिरमद²—वि० १ जिसका नशा काफी समय तक बना रहे। २. जो गहरे नशे में हो या जिसका नशा शीघ्र न उतरे [को०]।

स्थिरमना—वि० [सं० स्थिरमनस्] दे० 'स्थिरचित्त'।

स्थिरमुद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लाल कुलथी। रक्त कुलत्थ।

स्थिरयोनि—संज्ञा पुं० [सं०] वह वृक्ष जो सदा छाया देता हो। छायावृक्ष।

स्थिरयौवन¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ विद्याधर। २. अनवरत युवावस्था।

स्थिरयौवन²—वि० जो सदा जवान रहे।

स्थिररंगा—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थिररङ्गा] नील का पौधा।

स्थिररागा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दारुहलदी। दारुहरिद्रा।

स्थिरलिंग—वि० [सं० स्थिरलिङ्ग] जिसका लिंग कठिन एवं स्थिर या अनम्य हो [को०]।

स्थिरलोचन—वि० [सं०] जिसकी टकटकी बँधी हो। जिसकी पलक न गिरती हो [को०]।

स्थिरवाक्—वि० [सं० स्थिरवाच्] जो अपनी बात पर दृढ रहे। विश्वसनीय [को०]।

स्थिरविक्रम—वि० [सं०] ठोस कदम रखनेवाला [को०]।

स्थिरश्री—वि० [सं०] जिसका वैभव चिरस्थायी हो [को०]।

स्थिरसंगर—वि० [सं० स्थिरसङ्गर] १. वादे का पक्का। विश्वसनीय। २ जो संग्राम में स्थिर रहे। युद्ध में अडिग।

स्थिरसंस्कार—वि० [सं०] जिसके संस्कार स्थिर हों। सुसंस्कृत [को०]।

स्थिरसाधनक—संज्ञा पुं० [सं०] सँभालू। सिंदुवार वृक्ष।

स्थिरसार—संज्ञा पुं० [सं०] सागौन। शाक वृक्ष।

स्थिरसौहृद—संज्ञा वि० [सं०] जिसकी मित्रता सुदृढ हो [को०]।

स्थिरस्थायी—वि० [सं०] १ बहुत दिनों तक टिकनेवाला। २ ध्यान आदि में देर तक स्थिर रहनेवाला।

स्थिराङ्घ्रिप—संज्ञा पुं० [सं० स्थिराङ्घ्रिप] हिंताल वृक्ष।

स्थिराह्निप—संज्ञा पुं० [सं०] हिंताल वृक्ष।

स्थिरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दृढ चित्तवाली स्त्री। २ पृथ्वी। धरित्री। ३ सरिवन। शालपर्णी। ४ काकोली। ५ सेमल। शाल्मलि वृक्ष। ६ वनमूंग। वनमुद्ग। ७ मषवन। माषपर्णी। ८ मूसाकानी। मूषकर्णी।

स्थिराघात—वि० [सं०] १ आघात सहने में अविचल। २ जो खोदी न जा सके। कठोर (जैसे, भूमि) [को०]।

स्थिरात्मा—वि० [सं० स्थिरात्मन्] जिसका चित्त अस्थिर न हो। सुदृढ चित्तवाला [को०]।

स्थिरानुराग—वि० [सं०] प्रगाढ प्रेमी। जिसका प्रेम अखूट या अटूट हो [को०]।

स्थिरानुराग—संज्ञा पुं० स्थिर प्रेम। सच्चा अनुराग।

स्थिरापाय—वि० [सं०] जिसका अपाय अर्थात् नाश निश्चित हो। क्षणभंगुर। क्षयशील [को०]।

स्थिरायु¹—संज्ञा पुं० [सं० स्थिरायुस्] सेमल का पेड। शाल्मलि वृक्ष।

स्थिरायु²—वि० १ जिसकी आयु बहुत अधिक हो। चिरजीवी। २ जो कभी मरे नहीं। अमर।

स्थिरीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्थिर करने की क्रिया। २ दृढ करना। मजबूत करना। ३ पुष्टि। समर्थन।

स्थिरीकार—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्थिरीकरण' [को०]।

स्थिरीभाव—संज्ञा पुं० [सं०] अचलता [को०]।

स्थुरी—संज्ञा पुं० [सं० स्थुरिन्] दे० 'स्थूरिन्' [को०]।

स्थुल—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का लंबा तंबू। पट्टवास।

स्थूण—संज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत के अनुसार विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम। २ एक यक्ष का नाम (को०)। ३ खंभा। स्तंभ। स्थाणु (को०)।

स्थूणकर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि।

स्थूणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ घर का खंभा। थूनी। २ पेड का तना या ठूंठ। ३ लोहे का पुतला। ४ निहाई। थूर्मि। ५ एक प्रकार का रोग।

स्थूणाकर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का व्यूह। २ महाभारत मे वर्णित एक यक्ष का नाम। ३ हरिवंश पुराण के अनुसार एक रोगग्रह का नाम। ४ एक प्रकार का वाण। ५ रुद्र का एक रूप (को०)।

स्थूणाखनन न्याय—संज्ञा पुं० [सं०] एक दृष्टांतवाक्य या न्याय। जैसे खंभा गाडने मे उसे दृढ करने के लिये युक्ति की जाती है, अपने पक्षसमर्थन मे वैसा करना। विशेष दे० 'न्याय'–४(१०६)।

स्थूणानिखनन न्याय—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्थूणाखनन न्याय'।

स्थूणागर्त—संज्ञा पुं० [सं०] खंभा गाडने के लिये खोदा हुआ गर्त या गड्ढा [को०]।

स्थूणापक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का एक प्रकार का व्यूह। मानकंद।

स्थूणाभार—संज्ञा पुं० [सं०] खंभा या धरन आदि का वजन [को०]।

स्थूणाराज—संज्ञा पुं० [सं०] प्रधान खंभा। मुख्य स्तंभ [को०]।

स्थूणाविरोहण—संज्ञा पुं० [सं०] खंभे से अंकुर फूटना [को०]।

स्थूणीय—वि० [सं०] थूर्मि संबंधी। स्तंभ संबंधी [को०]।

स्थूम—संज्ञा पुं० [सं०] १ दीप्ति। प्रकाश। २ चंद्रमा।

स्थूर—संज्ञा पुं० [सं०] १ मनुष्य। आदमी। २ साँड। वृक्ष।

स्थूरिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाँझ गाय का नथना। घूरिका। खुरिका।

स्थूरी—संज्ञा पुं० [सं० स्थूरिन्] बोझ लादनेवाला पशु। लद्दू घोडा या बैल।

स्थूरीपृष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] वह अश्व जिसपर सवारी न की गई हो [को०]।

स्थूल¹—वि० [सं०] १ जिसके अंग फूले हुए या भारी हों। मोटा। पीन। जैसे,—स्थूल देह। उ०—देख्यो भरत तरुण अति सुंदर। स्थूल शरीर रहित सब द्वंदर।—सूर (शब्द०)। २ जो यथेष्ट स्पष्ट हो। जिसकी विशेष व्याख्या करने की आवश्यकता न हो। सहज मे दिखाई देने या समझ मे आने योग्य। सूक्ष्म का उलटा। जैसे,—स्थूल सिद्धात, स्थूल खंडन। ३ मूर्ख। अज्ञ। जड। ४ जिसका तल सम न हो। ५ विस्तृत। बडा (को०)। ६ पुष्ट। मजबूत। शक्तिशाली (को०)। ७ बेडौल। भद्दा (को०) ८. सामान्य। साधारण (को०)। ९ आलसी। काहिल। सुस्त (को०)। १० अवास्तविक। भौतिक। जैसे,—स्थूल जगत्।

स्थूल²—संज्ञा पुं० १ वह पदार्थ जिसका साधारणतया इंद्रियों द्वारा ग्रहण हो सके। वह जो स्पर्श, घ्राण, दृष्टि आदि की सहायता से जाना जा सके। गोचर पिंड। उ०—जो स्थूल होने के प्रथम देखने मे आकर फिर न देख पडे, उसको हम विनाश कहते हैं।—दयानंद (शब्द०)। २ विष्णु। ३ समूह। राशि। ढेर। ४ कटहल। ५ प्रियंगु। कँगनी। ६ एक प्रकार का कदंब। ७ शिव के एक गण का नाम। ८ अन्नमय कोश। ९ वैद्यक के अनुसार शरीर की सातवीं त्वचा। १० तूद या तूत का वृक्ष। ११ ईख। ऊख। १२ पहाड की चोटी। कूट। शृंग (को०)। १३ दधि या मट्ठा (को०)। १४ तंबू। शिविर (को०)।

स्थूलकंगु—संज्ञा पुं० [सं० स्थूलकङ्गु] वरक धान्य। चेना।

स्थूलकंटक—संज्ञा पुं० [सं० स्थूलकण्टक] बबूल की जाति का एक प्रकार का पेड जिसे 'जाल बर्बुरक' या 'आरी' भी कहते हैं।

स्थूलकंटकिका—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थूलकण्टकिका] सेमल का वृक्ष। शाल्मलि।

स्थूलकंटफल—संज्ञा पुं० [सं० स्थूलकण्टफल] पनस। कटहल।

स्थूलकंटा—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थूलकण्टा] बडी कटाई। बनभंटा। वृहती।

स्थूलकंद¹—संज्ञा पुं० [सं० स्थूलकन्द] १ लाल लहसुन। २ जमीकंद। सूरन। ओल। ३ जंगली सूरन। बनओल। ४ हाथीकंद। ५ मानकंद। ६ मडपारोह। मुखालु।

स्थूलकंद²—वि० जिसके कंद बडे बडे हों। बडे कंदवाला [को०]।

स्थूलकंदक—संज्ञा पुं० [सं० स्थूलकन्दक] मानकंद। कच्चू [को०]।

स्थूलक¹—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का तृण। उलप। उलूक।

स्थूलक²—वि० स्थूल। मोटा [को०]।

स्थूलकणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मँगरैला।

स्थूलकर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत मे वर्णित एक प्राचीन ऋषि का नाम।

स्थूलका—संज्ञा स्त्री० [सं०] आँबा हलदी।

स्थूलकाय—वि० [सं०] मोटे शरीरवाला।

स्थूलकाष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि मे प्रज्वलित वृक्ष का तना या विशाल कुंदा [को०]।

स्थूलकुमुद—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद कनेर।

स्थूलकेश—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारतोक्त एक प्राचीन ऋषि का नाम।

स्थूलक्षेड, स्थूलक्ष्वेड—संज्ञा पुं० [सं०] वाण। तीर।

स्थूलग्रंथि—संज्ञा पुं० [सं० स्थूलग्रन्थि] कुलंजन। महामदा।

स्थूलग्रीव—वि० [सं०] जिसकी ग्रीवा स्थूल या मोटी हो [को०]।

स्थूलचंचु—संज्ञा पुं० [सं० स्थूलचञ्चु] महाचंचु नामक साग। बडा चेंच।

स्थूलचंपक—संज्ञा पुं० [सं० स्थूलचम्पक] सफेद चंपा।

स्थूलचाप—संज्ञा पुं० [सं०] रूई धुनने की धुनकी।

स्थूलचूड[1]—संज्ञा पुं० [सं०] किरात ।

स्थूलचूड[2]—वि० जिसकी चूडा या सिर के बाल बडे बडे हो [को०] ।

स्थूलजंघा—संज्ञा स्त्री० [पुं० स्थूलजङ्घा] गृह्यसूत्र के अनुसार नौ समिधाओं में से एक ।

स्थूलजिह्व[1]—वि० [सं०] जिसकी जीभ बहुत बडी या मोटी हो ।

स्थूलजिह्व[2]—संज्ञा पुं० एक प्रकार के भूत ।

स्थूलजीरक—संज्ञा पुं० [सं०] मँगरैला ।

स्थूलतंडुल—संज्ञा पुं० [सं० स्थूलतण्डुल] एक प्रकार का मोटा धान ।

स्थूलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्थूल होने का भाव । स्थूलत्व । २ मोटापन । मोटाई । ३ भारीपन ।

स्थूलताल—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीताल । हिंताल ।

स्थूलतिंदुक—संज्ञा पुं० [सं० स्थूलतिन्दुक] गावनूस । मकरतेंदुआ ।

स्थूलतिक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दारु हलदी ।

स्थूलतोमरी—संज्ञा पुं० [सं० स्थूलतोमरिन्] वह जिसका भाला लंबा या स्थूल हो । मोटा या लंबा भाला रखनेवाला योद्धा [को०] ।

स्थूलत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्थूलता' ।

स्थूलत्वचा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गभारी । काश्मरी वृक्ष ।

स्थूलदंड—संज्ञा पुं० [सं० स्थूलदण्ड] महानल । बडा नरकट ।

स्थूलदर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] मूंज नामक तृण ।

स्थूलदर्भा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मूंज नामक तृण । स्थूलदर्भ ।

स्थूलदर्शक—संज्ञा पुं० [सं०] वह यंत्र जिसकी सहायता से सूक्ष्म वस्तु स्पष्ट और बडी दिखाई दे । सूक्ष्मदर्शक यंत्र ।

स्थूलदला—संज्ञा स्त्री० [सं०] घीकुआर । ग्वारपाठा ।

स्थूलदेही—वि० [सं० स्थूलदेहिन्] मोटे शरीरवाला [को०] ।

स्थूलधी—वि० [सं०] अज्ञ । मंदबुद्धि [को० ।

स्थूलनाल—संज्ञा पुं० [सं०] देवनल । बडा नरकट ।

स्थूलनास[1]—संज्ञा पुं० [सं०] सूअर । शूकर ।

स्थूलनास[2]—वि० जिसकी नाक बडी या लंबी हो ।

स्थूलनासिक—संज्ञा पुं०, वि० [सं०] दे० 'स्थूलनास' ।

स्थूलनिंबू—संज्ञा पुं० [सं० स्थूलनिम्ब] महानिंबू । बडा नीबू ।

स्थूलनील—संज्ञा पुं० [सं०] बाज नामक पक्षी । श्येन ।

स्थूलपट—संज्ञा पुं० [सं०] मोटा कपडा [को०] ।

स्थूलपट्ट—संज्ञा पुं० [सं०] १ कपास । २ मोटा कपडा (को०) ।

स्थूलपट्टाक—संज्ञा पुं० [सं०] मोटा स्थूल वस्त्र [को०] ।

स्थूलपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ दमनक । दौना नामक क्षुप । २ सप्तपर्ण । छितिवन । सतिवन ।

स्थूलपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सप्तपर्ण । छतिवन ।

स्थूलपाद[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथी । २. वह जिसे फीलपावँ रोग हो । श्लीपद रोग से युक्त व्यक्ति ।

स्थूलपाद[2]—वि० मोटे पैरोंवाला । जिसके पैर सूजे हुए हो [को०] ।

स्थूलपिंडा—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थूलपिण्डा] पिंड खजूर ।

स्थूलपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ बक या अगस्त नामक वृक्ष । २ गुलमखमली । भंटक ।

स्थूलपुष्पा—संज्ञा स्त्री० [सं०] आस्फोता । हापरमाली ।

स्थूलपुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शखिनी । यवतिक्ता ।

स्थूलप्रपंच—संज्ञा पुं० [सं० स्थूलप्रपञ्च] सृष्टि । संसार ।

स्थूलप्रियंगु—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थूलप्रियङ्गु] चरक धान्य । चेना ।

स्थूलफल—संज्ञा पुं० [सं०] १ सेमल । शाल्मली । २ बडा नीबू । ३ मोटे तौर पर निकाला गया निष्कर्ष या फल (को०) ।

स्थूलफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शणपुष्पी । बनसनई । २ सेमल का वृक्ष । शाल्मली ।

स्थूलवल्कला—संज्ञा स्त्री० [सं०] बबूल का पेड ।

स्थूलवालुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदी का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है ।

स्थूलबुद्धि—वि० [सं०] मूर्ख । मंदबुद्धि [को०] ।

स्थूलभटा—संज्ञा पुं० [सं० स्थूल + हिं० भटा] दे० 'बनभटा' ।

स्थूलभद्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार के जैन जो 'श्रुतकेवलिक' भी कहलाते हैं ।

स्थूलभाव—संज्ञा पुं० [सं०] सूक्ष्म से स्थूलत्व की प्राप्ति । उत्पत्ति । संभव । जन्म [को०] ।

स्थूलभुज—संज्ञा पुं० [सं०] एक विद्याधर ।

स्थूलभूत—संज्ञा पुं० [सं०] सांख्य दर्शन के अनुसार क्षिति, जल आदि पंच तत्व [को०] ।

स्थूलमंजरी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थूलमञ्जरी] अपामार्ग । चिचडा ।

स्थूलमध्य—वि० [सं०] जिसका मध्य भाग स्थूल या मोटा हो [को०] ।

स्थूलमरिच—संज्ञा पुं० [सं०] शीतलचीनी । कबाबचीनी । कक्कोल ।

स्थूलमान—संज्ञा पुं० [सं०] मोटा या लगभग हिसाब [को०] ।

स्थूलमूल—संज्ञा पुं० [सं०] बडी मूली ।

स्थूलमूलक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्थूलमूल' ।

स्थूलरुहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्थलपद्म ।

स्थूलरोग—संज्ञा पुं० [सं०] मोटे होने या मोटापा होने का रोग । मोटाई की व्याधि ।

स्थूललक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो बहुत दान करता हो । बहुत बडा दानी । २ बडा पंडित । विद्वान् । ३ कृतज्ञ । ४ वह जो लाभ और हानि दोनों का ध्यान रखता हो । ५ वह जो लक्ष्यसधान के प्रति लापरवाह हो ।

स्थूललक्षिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दानशीलता । २ पांडित्य । विद्वत्ता । ३ कृतज्ञता ।

स्थूललक्ष्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो बहुत अधिक दान करता हो । बहुत बडा दाता । २ किसी विषय की ऊपरी या मोटी मोटी बातें बताना । ३. दे० 'स्थूललक्ष' ।

स्थूलवर्त्मकृत्—संज्ञा पुं० [सं०] भारगी। बभनेटी।

स्थूलवल्कल—संज्ञा पुं० [सं०] १ लोध। लोध्र। २ पठानी लोध। पट्टिका लोध्र।

स्थूलवालुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी का नाम (को०)।

स्थूलविषय—संज्ञा पुं० [सं०] दृश्य जगत्। भौतिक पदार्थ (को०)।

स्थूलवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] मौलसिरी का पेड। वकुल।

स्थूलवृक्षफल—संज्ञा पुं० [सं०] मैनफल। मदनफल।

स्थूलवैदेही—संज्ञा स्त्री० [सं०] जलपीपल। गजपीपल।

स्थूलशखा—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थूलशङ्खा] वह स्त्री जिसकी योनि विस्तृत हो। बडी योनिवाली औरत (को०)।

स्थूलशर—संज्ञा पुं० [सं०] रामशर। भद्रमुज।

स्थूलशरीर—संज्ञा पुं० [सं०] पच महाभूत से बना हुआ शरीर। भौतिक शरीर (को०)।

स्थूलशल्क—वि० [सं०] जिसका शल्क अर्थात् छिलका या आवरण स्थूल हो। मोटी चोईवाला (को०)।

स्थूलशाकिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का शाक (को०)।

स्थूलशाट, स्थूलशाटक—संज्ञा पुं० [सं०] मोटा या घनी बुनाई-वाला कपडा (को०)।

स्थूलशाटिका, स्थूलशाटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'स्थूलशाट' (को०)।

स्थूलशालि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का मोटा धान या चावल। स्थूलतडुल।

स्थूलशिवी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थूलशिम्बी] श्वेत निष्पावी। सफेद सेम। बरसेमा।

स्थूलशिरा[१]—संज्ञा पुं० [सं० स्थूल शिरस्] १ महाभारत मे वर्णित एक प्राचीन ऋषि का नाम। २ एक यक्ष का नाम (को०)। ३ एक दानव (को०)।

स्थूलशिरा[२]—वि० जिसका शिर अन्य अगो की अपेक्षा बडा हो।

स्थूलशीर्षिका—संज्ञा पुं० [सं०] दीमक, चीटियाँ आदि जिनका सिर शरीर की तुलना मे बडा होता है। छोटी च्यूँटी।

स्थूलशूरण—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का सूरन या जमीकद।

स्थूलशोफ—वि० [सं०] बहुत फूला हुआ। अत्यधिक सूजा हुआ (को०)।

स्थूलषट्पद—संज्ञा पुं० [सं०] १ बडी मक्खी या भौरा। बर्रे २ खटमल (को०)।

स्थूलसायक—संज्ञा पुं० [सं०] रामशर। भद्रमुज।

स्थूलसक्त—संज्ञा पुं० [सं०] एक तीर्थ का नाम (को०)।

स्थूलस्कध—संज्ञा पुं० [सं० स्थूलस्कन्ध] बडहर। लकुच।

स्थूलहस्त[१]—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी का सूँड।

स्थूलहस्त[२]—वि० दीर्घ या मोटी भुजाओवाला (को०)।

स्थूलाग[१]—संज्ञा पुं० [सं० स्थूलाङ्ग] एक प्रकार का चावल।

स्थूलाग[२]—वि० मोटे और बडे शरीरवाला (को०)।

स्थूलात्र—संज्ञा पुं० [सं० स्थूलान्त्र] बडी अँतडी।

स्थूलाशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गधपत्र।

स्थूला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बडी इलायची। २ गजपीपल। ३. सोआ नामक साग। शतपुष्पा। ४ सौंफ। मिश्रेया। ५. कपिल द्राक्षा। मुनक्का। ६ कपास। ७ ककडी।

स्थूलाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ रामायण के अनुसार एक राक्षस का नाम जो खर का साथी था। २ एक ऋषि का नाम (को०)।

स्थूलाक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाँस की यष्टिका। बाँस की छडी। बाँस की लाठी (को०)।

स्थूलाजाजी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मँगरैल।

स्थूलाद्य—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत मे वर्णित एक प्राचीन ऋषि का नाम। २ रामायण के अनुसार एक राक्षस का नाम।

स्थूलाम्र—संज्ञा पुं० [सं०] कलमी आम।

स्थूलास्य—संज्ञा पुं० [सं०] साप। सप।

स्थूली—संज्ञा पुं० [सं० स्थूलिन्] ऊँट।

स्थूलेच्छ—वि० [सं०] अत्यधिक कामनाओ से युक्त। बढी हुई इच्छाओवाला (को०)।

स्थूलैरड—संज्ञा पुं० [सं०] बडा एरड।

स्थूलैला—संज्ञा स्त्री० [सं०] बडी इलायची।

स्थूलोच्चय—संज्ञा पुं० [सं०] १ गडोपल। २ हाथी की मध्यम चाल, जो न बहुत तेज हो न बहुत सुस्त। ३ छोटी फुसी। मुहाँसा (को०) ४ अपूर्णता। कमी। त्रुटि (को०)। ५. हाथी के दाँत का मध्यवर्ती रध्र (को०)।

स्थूलोदर—वि० [सं०] तुदिल। तोदवाला (को०)।

स्थेमा—संज्ञा पुं० [सं० स्थेमन्] दृढता। स्थिरता (को०)।

स्थेय—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो किसी विवाद का निर्णय करता हो। निर्णायक। २ पुरोहित।

स्थेय[१]—वि० [सं०] १ जो स्थापित करने योग्य हो। २ निर्णय किए जाने योग्य (को०)।

स्थेयस—वि० [सं०] [वि० स्त्री० स्थेयसी] अत्यत स्थिर अथवा दृढ। चिरस्थायी (को०)।

स्थेष्ठ—वि० [सं०] अत्यत दृढ (को०)।

स्थैर्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्थिर होने का भाव। स्थिरता। २ दृढता। मजबूती। ३ अनवच्छिन्नता। निरतरता। स्थायित्व। ४ आत्म-विनिश्चय। मन की दृढता। सकल्प (को०)। ५ धैर्यशीलता। सहनशीलता (को०)। ६ निर्लिप्त होने का भाव। जितेंद्रियता (को०)। ७ ठोसपन। घनत्व (को०)।

स्थैर्यज—वि० [सं०] दे० 'स्थावर' (को०)।

स्थोरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जहाज पर लादा हुआ माल (को०)।

स्थोरी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थोरिन्] बोझ ढोनेवाला घोडा। लद्दू घोडा।

स्थौणेय, स्थौणेयक—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का गधद्रव्य। ग्रथिपर्णी। थुनेर। २ गाजर (को०)।

स्थौर—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह भार जो पीठ पर लादा जाय। २ मजबूती। दृढता (को०)। ३ बल। शक्ति (को०)।

स्थौरी—संज्ञा पुं० [सं० स्थौरिन्] १ घोडे, बैल, खच्चर, आदि जिनकी पीठ पर भार लादा जाता हो। २ अच्छा घोडा। मजबूत घोडा (को०)।

स्थौलक्ष्य—संज्ञा पुं० [सं०] औदार्य। उदारता (को०)।

स्थौलपिंडि—संज्ञा पुं० [सं० स्थौलपिण्डि] वह जो स्थूलपिंड के वंश या गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो।

स्थौललक्ष्य—संज्ञा पुं० [सं०] औदार्य। उदारता (को०)।

स्थौल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्थूल का भाव। स्थूलता। २ भारीपन। ३ शरीर की मेदवृद्धि जो वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग है। मोटापन। ४ बुद्धि का मोटापन। बुद्धि की मदता (को०)।

स्नपन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० स्नपित] १ नहाने की क्रिया। स्नान। २ धोना। प्रक्षालन। साफ करना (को०)।

स्नपन[2]—वि० १ नहलानेवाला। २ नहाने के काम मे आनेवाला। स्नानीय (को०)।

स्नपित वि० [सं०] जिसने स्नान किया हो। नहाया हुआ।

स्नय—संज्ञा पुं० [सं०] १ नहाने की क्रिया। स्नान। २ शुद्धि। शोधन। पवित्रीकरण (को०)।

स्नव—संज्ञा पुं० [सं०] रिसना। चूना। क्षरण (को०)।

स्नसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्नायु। २ पेशी। पुट्ठा। मासपिंड (को०)।

स्ना[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह चमडा जो गाय या बैल आदि के गले के नीचे लटकता है। लौ।

स्ना[2]—वि० नहाया हुआ। स्नान किया हुआ। (समस्त पदो मे प्रयुक्त) जैसे घृतस्ना।

स्नात[1]—वि० [सं०] १ जिसने स्नान किया हो। नहाया हुआ। २ जिसका वेदाध्ययन पूरा हो गया हो (को०)।

स्नात[2]—संज्ञा पुं० १ वह जिसका अध्ययनकाल समाप्त हो गया हो। स्नातक। २ दीक्षित या अभिमंत्रित गृहस्थ (को०)।

स्नातक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसने ब्रह्मचर्य व्रत की समाप्ति पर स्नान करके गृहस्थ आश्रम मे प्रवेश किया हो।

विशेष—प्राचीन काल मे बालक गुरुकुलो मे वेदो तथा अन्यान्य विद्याओं का अध्ययन समाप्त करके २५ वर्ष की अवस्था मे जब घर को लौटते थे, तब वे स्नातक कहलाते थे। ये स्नातक तीन प्रकार के होते थे। जो स्नातक २५ वर्ष की अवस्था तक ब्रह्मचर्य का पालन करके बिना वेदो का पूरा अध्ययन किए ही घर लौटते थे, वे व्रतस्नातक कहलाते थे। जो लोग २५ वर्ष की अवस्था हो जाने पर भी गुरु के यहाँ ही रहकर वेदो का अध्ययन करते थे और गृहस्थ आश्रम मे नही आते थे, वे विद्यास्नातक कहलाते थे। और जो लोग ब्रह्मचर्य का पूरा पूरा पालन करके गृहस्थ आश्रम मे आते थे, वे उभयस्नातक या विद्याव्रतस्नातक कहलाते थे। इधर हाल मे भारत मे थोडे से गुरुकुल और ऋषिकुल आदि स्थापित हुए है। उनकी अवधि और परीक्षाएँ समाप्त करके जो युवक निकलते हैं, वे भी स्नातक ही कहलाते है।

२ किसी धार्मिक उद्देश्य से भिक्षु बना हुआ ब्राह्मण। ३ ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य जाति का वह व्यक्ति जो गृहस्थाश्रमी हो (को०)। ४ किसी विद्यालय की शिक्षा समाप्त कर उपाधि पानेवाला छात्र। ग्रैजुएट।

स्नातकोत्तर—वि० [सं० स्नातक + उत्तर] स्नातक होने के पश्चात् का। स्नातक के बाद का। जैसे, स्नातकोत्तर शिक्षा, स्नातकोत्तर विद्यालय आदि।

विशेष—यह शब्द अंग्रेजी 'पोस्ट ग्रैजुएट' शब्द का अनुवाद है।

स्नान—संज्ञा पुं० [सं०] स्नान। नहाना (को०)।

स्नान—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरीर को स्वच्छ करने या उसकी शिथिलता दूर करने के लिये उसे जल से धोना, अथवा जल की बहती हुई धारा मे प्रवेश करना। अवगाहन। नहाना। विशेष दे० 'नहाना'[1]। २ शरीर के अगो को धूप या वायु के सामने इस प्रकार करना जिसमे उनके ऊपर उसका पूरा पूरा प्रभाव पडे। जैसे,—आतपस्नान, वायुस्नान। ३ पानी मे धोकर साफ करना। जल से धोकर शुद्ध करना (को०)। ४ देवमूर्ति या विग्रह को नहलाना (को०)। ५ स्नानीय जल आदि वस्तुएँ। नहाने के काम मे प्रयुक्त जल आदि पदार्थ (को०)।

स्नानकलश—संज्ञा पुं० [सं०] वह घडा जिसमे स्नान करने का पानी रहता है।

स्नानकुंभ—संज्ञा पुं० [सं० स्नानकुम्भ] दे० 'स्नानकलश'।

स्नानगृह—संज्ञा पुं० [सं०] वह कमरा, कोठरी या इसी प्रकार का और घिरा हुआ स्थान जिसमे स्नान किया जाता है। अ० बाथरूम।

स्नानघर—संज्ञा पुं० [सं० स्नान + हिं० घर] दे० 'स्नानगृह'।

स्नानतीर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] वह पवित्र स्थान जहाँ धार्मिक दृष्टि से स्नान किया जाय (को०)।

स्नानतृण—संज्ञा पुं० [सं०] कुश जिसे हाथ मे लेकर नहाने का शास्त्रो मे विधान है।

स्नानद्रोणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्नान करने का चौडा छिछला पात्र (को०)।

स्नानयात्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को होनेवाला एक उत्सव जिसमे विष्णु की मूर्ति को महास्नान कराया जाता है। इस दिन जगन्नाथ जी के दर्शन का बहुत माहात्म्य कहा गया है। जलयात्रा। २ नहाने के लिये तीर्थ आदि की यात्रा करना।

स्नानवस्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह वस्त्र जिसे पहनकर स्नान किया जाता है।

स्नानविधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्नान करना। नहाना। २ स्नान करने की प्रक्रिया या विधि (को०)।

स्नानशाटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नहाने का अधोवस्त्र (को०)।

स्नानशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] नहाने का कमरा या कोठरी। स्नानगृह। गुसलखाना।

स्नानशील--वि० [सं०] स्नान करने के स्वभाववाला। तीर्थादि मे स्नान करने का प्रेमी।

स्नानाबु--संज्ञा पुं० [सं० स्नानाम्बु] नहाने का पानी। स्नान करने का जल।

स्नानागार--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्नानशाला'।

स्नानी--वि० [सं० स्नानिन्] नहानेवाला। स्नान करनेवाला।

स्नानीय¹--वि० [सं०] १ जो नहाने के योग्य हो। २ जिससे नहाया जा सके। ३ स्नान मे प्रयुक्त। नहाने मे प्रयुक्त।

स्नानीय²--संज्ञा पुं० स्नान के कार्य मे प्रयुक्त पदार्थ। जैसे, जल, वस्त्र, अगराग, सुगध आदि [को०]।

स्नानोदक--संज्ञा पुं० [सं०] नहाने का जल।

स्नापक--संज्ञा पुं० [सं०] नहलानेवाला नौकर।

स्नापन--संज्ञा पुं० [सं०] नहलाना।

स्नापित--वि० [सं०] १ नहाने या स्नान करनेवाला। २ नहलाया हुआ। स्नात [को०]।

स्नायन--संज्ञा पुं० [सं०] स्नान। नहाना।

स्नायविक--वि० [सं०] स्नायु सबधी। स्नायु का।

स्नायवीय--संज्ञा पुं० [सं०] कर्मेंद्रिय। जैसे,--हाथ, पैर, आँख आदि।

स्नायी--संज्ञा पुं० [सं० स्नायिन्] वह जो स्नान करता हो। नहानेवाला।

स्नायु¹--संज्ञा स्त्री० [सं०] शरीर के अदर की वे वायुवाहिनी नाड़ियाँ या नसें जिनसे स्पर्श का ज्ञान होता अथवा वेदना का ज्ञान एक स्थान से दूसरे स्थान या मस्तिष्क आदि तक पहुँचता है।

विशेष--ये नाडियाँ सफेद, चिकनी, कडी और सन के गुच्छो के समान होती हैं और शरीर की मासपेशियो मे फैली रहती है। हमारे यहाँ वैद्यक मे कहा गया है कि शरीर मे से पसीना निकलने और लेप आदि को रोमछिद्र मे से भीतर खीचने का व्यापार इन्ही से होता हे और इनकी सख्या ९०० बतलाई गई हे। इन्हे वातरज्जु, नाडी या कडरा भी कहते है।

२ धनुप की डोरी। प्रत्यचा (को०)। ३ मासपेशी। पेशी (को०)।

स्नायु²--संज्ञा पुं० अगो के अग्र भाग (जैसे, उँगलियाँ आदि) पर होनेवाली एक प्रकार की पिटिका या स्फोट। स्नायुक। नहरुआ [को०]।

स्नायुक--संज्ञा पुं० [सं०] १ नहरुआ नामक रोग। २ एक प्रकार का परजीवी कीट (को०)।

स्नायुपाश--संज्ञा पुं० [सं०] प्रत्यचा। धनुप की डोरी।

स्नायुबध--संज्ञा पुं० [सं० स्नायुबन्ध] प्रत्यचा।

स्नायुमर्म--संज्ञा पुं० [सं० स्नायुमर्मन्] स्नायुओ का मर्मस्थान। नाडियो का सधिस्थान [को०]।

स्नायुरज्जु--संज्ञा पुं० [सं०] शरीर।

स्नायुरोग--संज्ञा पुं० [सं०] नहरुआ या बाला नामक रोग।

स्नायुशूल--संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग।

विशेष--इस रोग मे स्नायु मे शूल के समान तीव्र वेदना होती है। यह वेदना चमडे के नीचे के भाग मे होती हे और शरीर के किसी स्थान मे हो सकती है। इसके, अर्धभेद, ऊर्ध्वभेद और अधोभेद, ये तीन भेद कहे गए हे।

स्नायुस्पद--संज्ञा पुं० [सं० स्नायुस्पन्द] नाडी का चलना। नाडियो का स्पदन करना।

स्नाय्वर्म--संज्ञा पुं० [सं० स्नाय्वर्मन] आँख का एक प्रकार का रोग जिसमे उसकी कौडी या सफेद भाग पर एक छोटी गाँठ सी निकल आती है।

स्नाव, स्नावन--संज्ञा पुं० [सं०] १ पेशी। स्नायु। २ नस। नाडी। रग [को०]।

स्नाविर--वि० [सं०] स्नायु से युक्त। पेशियो से युक्त। पुष्ट [को०]।

स्निग्ध¹--वि० [सं०] १ जिसमे स्नेह या तेल लगा हो अथवा वर्तमान हो। २ स्नेही। अनुरक्त (को०)। ३ चिपचिपा। लसीला। लसदार (को०)। ४ शीतल। ठढक पहुँचानेवाला (को०)। ५ प्रकाशयुक्त। दीप्त। चमकीला (को०)। ६ आर्द्र। गीला। तर (को०)। ७ शात (को०)। ८ कृपालु। ९ मृदु। सौम्य (को०)। १० रुचिकर। मोहक (को०)। ११. अविरल। सघन। सटा हुआ (को०)। १२ स्थिर (को०)।

स्निग्ध²--संज्ञा पुं० लाल रेड। २ धूप सरल या सरल नामक वृक्ष। ३ मोम। ४ गधाविरोजा। ५ दूध पर की मलाई। ६ सखा। मित्र (को०)। ७ प्रकाश। चमक। आभा (को०)। ८ सघनता। अविरलता। निविडता (को०)। ९ तैल। स्नेह (को०) १० गधमार्जार (को०)।

स्निग्धकदा--संज्ञा स्त्री० [सं० स्निग्धकन्दा] कदली नामक पौधा जो नदियो के तट पर होता है [को०]।

स्निग्धकरज--संज्ञा पुं० [सं० स्निग्धकरञ्ज] गुच्छकरज।

स्निग्धच्छद--संज्ञा पुं० [सं०] वड का पेड। वट वृक्ष।

स्निग्धच्छदा--संज्ञा स्त्री० [सं०] वेर का पेड।

स्निग्धजन--संज्ञा पुं० [सं०] प्रिय व्यक्ति। मित्र। सखा [को०]।

स्निग्धजीरक--संज्ञा पुं० [सं०] यशबगोल। ईसपगोल।

स्निग्धतडुल--संज्ञा पुं० [सं० स्निग्धतण्डुल] साठी धान।

स्निग्धता--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्निग्ध या चिकना होने का भाव। चिकनापन। चिकनाहट। २ प्रिय होने का भाव। प्रियता। ३ सौम्यता (को०)। ४ मृदुता। सुकुमारता (को०)।

स्निग्धत्याग--संज्ञा पुं० [सं०] प्रिय व्यक्ति का विछोह। स्निग्ध व्यक्ति का त्याग [को०]।

स्निग्धत्व--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्निग्धता'।

स्निग्धदल--संज्ञा पुं० [सं०] गुच्छ करज। स्निग्ध करज।

स्निग्धदारु--संज्ञा पुं० [सं०] १ देवदारु का पेड। २ धूप सरल। ३. अश्वकर्ण या शाल नामक वृक्ष।

स्निग्धदृष्टि--वि० [सं०] १ स्थिर निगाहों से देखनेवाला। २ मृदु या तरल दृष्टिवाला। ३ जिसकी दृष्टि स्नेहयुक्त हो।

स्निग्धनिर्मल--संज्ञा पुं० [सं०] काँसा नामक धातु।

स्निग्धपत्र--संज्ञा पुं० [सं०] १ घृतकरज। घीरज। २ गुच्छकरज। ३ भगवतवल्ली। आवर्तकी लता। ४ मज्जर या माजुर नाम की घास।

स्निग्धपल्लक--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्निग्धपत्र' (को०)।

स्निग्धपत्रा--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बेर। बदरी। २ पालक का साग। ३ लोनी का साग। ४ गभारी। काश्मरी। खुमेर।

स्निग्धपत्री--संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'स्निग्धपत्रा'।

स्निग्धपर्णी--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पृश्निपर्णी। पिठवन। २ मूर्वा। मरोडफली।

स्निग्धपिंडीतक--संज्ञा पुं० [सं० स्निग्धपिण्डीतक] एक प्रकार का मैनफल का वृक्ष।

स्निग्धफल--संज्ञा पुं० [सं०] गुच्छकरज।

स्निग्धफला--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ फूट नामक फल। फूट। २ नकुलकद। नाकुली।

स्निग्धबीज--संज्ञा पुं० [सं०] यशबगोल। ईसपगोल।

स्निग्धमज्जक--संज्ञा पुं० [सं०] बादाम।

स्निग्ध मुद्ग--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की मूँग।

स्निग्धराजि--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का साँप जिसकी उत्पत्ति, सुश्रुत के अनुसार, काले साँप और राजमती जाति की साँपिन से होती है।

स्निग्धवर्ण--वि० [सं०] जिसका वर्ण या काति स्निग्ध हो (को०)।

स्निग्धा[1]--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मेदा नामक अष्टवर्गीय ओषधि। २ मज्जा। अस्थिसार। ३ विककत। वइची।

स्निग्धा[2]--वि० स्त्री० जिसमे स्नेह हो। स्नेहयुक्त। स्नेहिल।

स्नीहा--संज्ञा स्त्री० [सं०] नाक का मल। पोटा (को०)।

स्नु[1]--संज्ञा पुं० [सं०] १ पहाड का ऊपरी समतल भूखड। २ कूट। शृग। चोटी (को०)।

स्नु[2]--संज्ञा स्त्री० स्नायु। पेशी (को०)।

स्नुक--संज्ञा पुं० [सं०] स्नुही। थूहड।

स्नुकच्छद--संज्ञा पुं० [सं०] क्षीरकचुकी, क्षीरी या क्षीरसागर नामक वृक्ष।

स्नुकच्छदोपम--संज्ञा पुं० [सं०] वाराही कद। गेठी।

स्नुग्दल--संज्ञा पुं० [सं०] स्नुही। थूहड।

स्नुघ्निका--संज्ञा स्त्री० [सं०] खनिज क्षार। सजिका क्षार (को०)।

स्नुत--वि० [सं०] क्षरित। रिसता हुआ (को०)।

स्नुषा--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पुत्रवधू। लडके की स्त्री। २ स्नुही। थूहड।

यौ०--स्नुषाग = जिसका पुत्रवधू से अवैध सबध हो।

स्नुहा--संज्ञा स्त्री० [सं०] स्नुही। थूहड।

स्नुहि, स्नुही--संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'स्नुहा'।

स्नुहीक्षीर--संज्ञा पुं० [सं०] थूहड का दूध।

स्नुहीबीज--संज्ञा पुं० [सं०] थूहड का बीज।

स्नुह्य--संज्ञा पुं० [सं०] उत्पल। कमल।

स्नेय--वि० [सं०] १ स्नान करने के योग्य। नहाने लायक। २ जो नहाने को हो।

स्नेह--संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रेम। प्रणय। प्यार। मुहब्बत। २ चिकना पदार्थ। चिकनाहटवाली चीज। जैसे, घी, तेल, चरबी आदि, विशेषत तेल। ३ कोमलता। ४ एक प्रकार का राग जो हनुमत के मत मे हिंडोल राग का पुत्र है। ५ सरसो। ६ सिर के अदर का गूदा। भेजा। ७ दूध पर की गाढी। मलाई। ८ आर्द्रता। नमी (को०)। ९ शरीर के भीतर का कोई प्रवाही द्रव्य। जैसे, वीर्य (को०)।

स्नेहक--वि० [सं०] १ स्नेह या प्रेम करनेवाला। स्नेही। २ कृपायुक्त। कृपालु (को०)।

स्नेहकर--संज्ञा पुं० [सं०] अश्वकर्ण या शाल नामक वृक्ष।

स्नेहकर्ता--वि० [सं० स्नेहकर्तृ] प्यार करनेवाला।

स्नेहकुभ--संज्ञा पुं० [सं० स्नेहकुम्भ] तेल का घडा।

स्नेहकेसरी--संज्ञा पुं० [सं० स्नेहकेसरिन्] रेडी। एरड।

स्नेहगर्भ--संज्ञा पुं० [सं०] तिल।

स्नेहगुणित--वि० [सं०] स्नेहयुक्त। प्रेमाविष्ट (को०)।

स्नेहगुरु--वि० [सं०] प्रेम या स्नेह के कारण जो गुरुता को प्राप्त हो। प्रेम से भरा हुआ।

स्नेहघट--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्नेहकुभ'।

स्नेहघ्नी--संज्ञा स्त्री० [सं०] एक पौधा (को०)।

स्नेहच्छेद--संज्ञा पुं० [सं०] परस्पर स्नेह न रहना।

स्नेहद्विट्--वि० [सं० स्नेहद्विष्] जिसे स्नेह नापसद हो (को०)।

स्नेहन्--संज्ञा पुं० [सं०] १ मित्र। दोस्त। सखा। २ चद्रमा। सुधाशु। ३ एक प्रकार का रोग (को०)।

स्नेहन[1]--संज्ञा पुं० [सं०] १ चिकनाहट उत्पन्न करना। चिकनाई लाना। २ शरीर मे तेल लगाना। ३ कफ। श्लेष्मा। बलगम। ४ मक्खन। नवनीत। ५ उद्वर्तन द्रव्य। उबटन (को०)। प्रेम ६ प्रेम या स्नेहयुक्त होना। प्रेमाविष्ट होना (को०)। ७ शिव (को०)।

स्नेहन[2]--वि० १ शरीर मे तेल लगानेवाला। २ चिकनाई या स्निग्धता लानेवाला। ३ विनाशक। विध्वसक (को०)।

स्नेहनीय--वि० [सं०] स्नेह करने या नेह लगाने योग्य (को०)।

स्नेहपक्व--वि० [सं०] तेल मे पकाया हुआ (को०)।

स्नेहपात्र--संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसके साथ प्रेम किया जाय। प्रेमपात्र। प्यारा। प्रिय। २ तैलपात्र।

स्नेहपान—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार की क्रिया जिसमे कुछ विशिष्ट रोगो मे तेल, घी, चरबी आदि पीते है। इससे अग्नि दीप्त होती हे, कोठा साफ होता है और शरीर कोमल तथा हलका होता है।

विशेष—हमारे यहाँ स्नेह चार प्रकार के माने गए है—तेल, घी, वसा और मज्जा। खाली तेल पीने को साधारण पान कहते है। यदि तेल और घी मिलाकर पीया जाय तो उसे यमक, इन दोनो के साथ यदि वसा भी मिला दी जाय तो उसे त्रिवृत, और यदि चारो साथ मिलाकर पीए जायँ तो उसे महास्नेह कहते हैं।

स्नेहपिंडीतक—संज्ञा पुं० [सं० स्नेहपिण्डीतक] मैनफल।

स्नेहपूर—संज्ञा पुं० [सं०] तिल।

स्नेहप्रवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रेम या प्रेम की अभिवृद्धि [को०]।

स्नेहप्रसर—संज्ञा पुं० [सं०] प्रेम का प्रवाह [को०]।

स्नेहप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसे तेल प्रिय हो, दीपक [को०]।

स्नेहफल—संज्ञा पुं० [सं०] तिल।

स्नेहबंध—संज्ञा पुं० [सं० स्नेहबन्ध] स्नेह का बंधन [को०]।

स्नेहबद्ध—वि० [सं०] प्रेम मे बँधा हुआ [को०]।

स्नेहबीज—संज्ञा पुं० [सं०] चिरौजी।

स्नेहभंग—संज्ञा पुं० [सं० स्नेहभङ्ग] नेह टूटना। स्नेहच्छेद।

स्नेहभू—संज्ञा पुं० [सं०] कफ। श्लेष्मा। बलगम।

स्नेहभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह जिससे स्नेह प्राप्त हो। तेल, घी आदि देनेवाली वस्तु। २ वह वस्तु या व्यक्ति जिससे प्रेम किया जाय। प्रेम की वस्तु [को०]।

स्नेहमुख्य—संज्ञा पुं० [सं०] तेल। रोगन।

स्नेहरंग—संज्ञा पुं० [सं०स्नेहरङ्ग] तिल।

स्नेहरसन—संज्ञा पुं० [सं०] मुख [को०]।

स्नेहरेकभू—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा [को०]।

स्नेहल—वि० [सं०] १ प्रेमपूर्ण। २ मृदु। कोमल [को०]।

स्नेहवर—संज्ञा पुं० [सं०] वसा। चर्बी। [को०]।

स्नेहवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] मेदा नामक अष्टवर्गीय ओषधि।

स्नेहवर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] घोडो को होनेवाला एक रोग। घोडो की एक प्रकार की व्याधि। २ स्नेहयुक्त वर्तिका। तैलपूरित बत्ती [को०]।

स्नेहवर्धन—संज्ञा पुं० [सं० स्नेह + वर्द्धन] प्रेम की वृद्धि। उ०—अपने अपने आग्रह को शिथिल करके परस्पर स्नेहवर्धन मे यत्नवान् होना चाहिए।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २५०।

स्नेहवस्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैद्यक के अनुसार दो प्रकार की वस्ति या पिचकारी देने की क्रियाओ मे से एक।

विशेष—इस क्रिया मे पिचकारी मे तेल भरकर गुदा के द्वारा रोगी के शरीर मे प्रविष्ट किया जाता है। प्राय अजीर्ण, उन्माद, शोक, मूर्छा, अरुचि, श्वास, कफ और क्षय आदि के लिये यह वस्ति उपयुक्त कही गई है। इसका व्यवहार प्राय वायु का प्रकोप शात करने और कोष्ठशुद्धि के लिये किया जाता है।

स्नेहविद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] देवदारु वृक्ष।

स्नेहविमर्दित—वि० [सं०] जिसकी देह मे तेल मला गया हो [को०]।

स्नेहवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] देवदारु।

स्नेहव्यक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपना प्रेम व्यक्त करना [को०]।

स्नेहसंभाष—संज्ञा पुं० [सं० स्नेहसम्भाष] स्नेहालाप [को०]।

स्नेहसंस्कृत—वि० [सं०] स्नेह द्वारा निर्मित। तेल आदि का बना हुआ [को०]।

स्नेहसार—संज्ञा पुं० [सं०] मज्जा नामक धातु।

स्नेहस्राव—संज्ञा पुं० [सं० स्नेह + स्राव] प्रेम का प्रवाह। प्रेमाधिक्य। उ०—खुल गया हृदय का स्नेह स्राव।—अपरा, पृ० १८१।

स्नेहांकन—संज्ञा पुं० [सं० स्नेहाङ्कन] स्नेह का अंकन। प्रेमचिह्न [को०]।

स्नेहा—संज्ञा पुं० [सं० स्नेहन्] दे० 'स्नेहन्' [को०]।

स्नेहाकुल—वि० [सं०] प्रेमाकुल। प्रेमविह्वल [को०]।

स्नेहाकूट—संज्ञा पुं० [सं०] प्रेम या स्नेह का भाव। स्नेह या प्रेम की अनुभूति [को०]।

स्नेहाक्त—वि० [सं०] १ तैल से सिक्त। चिकना किया हुआ। २ स्नेह या प्रेमयुक्त। प्रेम से भरा हुआ [को०]।

स्नेहालिंगन—संज्ञा पुं० [सं० स्नेह + आलिङ्गन] प्रेमपूर्ण आलिंगन। प्रगाढ आलिंगन। उ०—है बँधे बिछोह मिलन दो, देकर चिर स्नेहालिंगन।—गुंजन, पृ० १०।

स्नेहालु—वि० [सं० स्नेह + आलु (प्रत्य०)] स्नेह से पूरित। प्रेमयुक्त। प्रेमी। उ०—कोमल नीडो का सुख न मिला, स्नेहालु दृगो का रुख न मिला।—एकात संगीत, पृ० ३४।

स्नेहाश—संज्ञा पुं० [सं०] दीपक। चिराग।

स्नेहासव—संज्ञा पुं० [सं० स्नेह + आसव] प्रेम की मदिरा। प्रेमरूपी आसव। प्रेम की मादकता। उ०—अंतर के घर का स्नेहासव, पिला रहा हूँ, इस दीपक को अंधकार मे जूझ रहा जो।—दीप०, पृ० १६५।

स्नेहित१—वि० [सं०] १ जिसमे स्नेह हो या लगाया गया हो। चिकना। २ जिसके साथ स्नेह या प्रेम किया जाय। प्रेमी। बंधु। मित्र। ३ अनुकंपा से युक्त। दयालु (को०)।

स्नेहित२—संज्ञा पुं० प्रेमी मित्र। प्रिय व्यक्ति [को०]।

स्नेहिल—वि० [सं० स्नेह + इल] स्नेहयुक्त। प्रेमयुक्त।

स्नेही१—संज्ञा पुं० [सं० स्नेहिन्] १ वह जिसके साथ स्नेह या प्रेम किया जाय। प्रेमी। मित्र। २ तैल लगाने या मालिश करनेवाला व्यक्ति (को०)। ३ चितेरा। चित्रकार (को०)।

स्नेही[2]—१ जिसमें स्नेह हो। स्नेहयुक्त। चिकना। २ प्रीतियुक्त। प्रेम भाव से युक्त (को०)।

स्नेहु—संज्ञा पुं० [सं०] १ रोग। व्याधि। बीमारी। २ चंद्रमा।

स्नेहोत्तम—संज्ञा पुं० [सं०] तिल का तेल।

स्नेह्य—वि० [सं०] १ जिसके साथ स्नेह किया जा सके। स्नेह या प्रेम करने के योग्य। २ जो तेल लगाने या चिकना करने योग्य हो (को०)।

स्नैग्ध्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ चिकनाहट। तेलियापन। २ स्नेहिलता। स्नेह या प्रेम करने का भाव। अनुरागिता। ३ कोमलता। मृदुता। मार्दव (को०)।

स्नैहिक—वि० [सं०] १ चिकना। तैलयुक्त। २ रोगनी। रोगनदार।

स्पज—संज्ञा पुं० [अं०] झाँवे की तरह का एक प्रकार का बहुत मुलायम और रेशेदार पदार्थ जिसमे बहुत से छोटे छोटे छेद होते हैं।

पर्या०—मुरदा बादल।

विशेष—इन्ही छेदों मे यह पदार्थ बहुत सा पानी सोख लेता है, और जब इसे दबाया जाता है, तब इसमे का सारा पानी बाहर निकल जाता है। इसीलिये प्राय लोग स्नान आदि के समय शरीर मलने के लिये अथवा कुछ विशिष्ट पदार्थों को धोने या भिगोने के लिये अथवा गीले तल पर का पानी सुखाने के लिये इसे काम मे लाते हैं। यह वास्तव मे एक प्रकार के निम्न कोटि के समुद्री जीवों का आवास या ढाँचा है जो भूमध्य सागर और अमेरिका के आसपास के समुद्रों मे पाया जाता है। इसकी कइ जातियाँ और प्रकार होते है।

स्पद—संज्ञा पुं० [सं० स्पन्द] दे० 'स्पदन'।

स्पदन—संज्ञा पु० [सं० स्पन्दन] १ किसी चीज का धीरे धीरे हिलना। कंपन। काँपना। २ (अगो आदि का) प्रस्फुरण। फडकना। ३ गर्भस्थ शिशु का स्फुरण या उद्दीपन। अर्भक मे जीव का प्रस्फुरण (को०)। ५ तीव्र गति या शीघ्र गमन (को०)। ६ एक प्रकार का वृक्ष (को०)।

स्पदित[1]—वि० [सं० स्पन्दित] स्पदनयुक्त। गतिमय। प्रस्फुरित। हिलता डोलता हुआ। उ०—विपमता की पीडा से व्यस्त, हो रहा स्पदित विश्व महान।—कामायनी, पृ० ५४। २ जो गत हो। गया हुआ (को०)।

स्पदित[2]—संज्ञा पुं० १ स्पदन। फडकना। कँपना। २ वुद्धि या मन की क्रियात्मकता (को०)।

स्पदिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्पन्दिनी] १ रजस्वला। रजोधर्मवाली स्त्री। २ वह गौ जो बराबर दूध देती रहे। सदा दूध देनेवाली गौ। कामधेनु।

स्पदी—वि० [सं० स्पन्दिन्] स्पदनयुक्त। जिसमे स्पदन हो। हिलने डुलने, काँपने या फडकनेवाला।

स्पदोलिका—संज्ञा स्त्री० [सं० स्पन्दोलिका] (झूले आदि पर) झूलते हुए पेंग मारने की क्रिया। झूले पर पेंग मारकर आगे पीछे आने जाने की क्रिया (को०)।

स्पर—संज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम।

स्परणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैदिक काल की एक प्रकार की लता का नाम।

स्पराटो—संज्ञा स्त्री० [अ० एस्पराटो] एक कल्पित भाषा। दे० 'एस्पराटो'।

स्परिता—वि० [सं० स्परितृ] दु खदायी। दु ख देनेवाला। जैसे, रोग, शत्रु आदि (को०)।

स्पर्द्ध, स्पर्ध—वि० [सं०] लाग डाट या होड करनेवाला। २ ईर्ष्या करनेवाला। ईर्ष्यालु (को०)।

स्पर्द्धन, स्पर्धन—संज्ञा पुं० [सं०] १ लाग डाट। होड। स्पर्धा। २ ईर्ष्या। द्वेष (को०)।

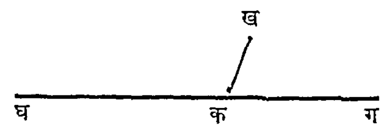
स्पर्द्धनीय, स्पर्धनीय—वि० [सं०] १ सघर्षण के योग्य। २ स्पर्धा के योग्य। जिसके साथ स्पर्धा की जा सके। ३ आकाक्षा या अभिलाषा करने योग्य (को०)।

स्पर्द्धा, स्पर्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सघर्ष। रगड। २ किसी के मुकाबले मे आगे बढने की इच्छा। होड। ३ साहस। हौसला। ४ साम्य। बराबरी। ईर्ष्या। द्वेष।

स्पर्द्धित, स्पर्धित—वि० [सं०] १ जिसके साथ स्पर्धा की गई हो। जिसे चुनौती दी गई हो। २ विरोधी। प्रतिस्पर्धी। ३ कलहशील (को०)।

स्पर्द्धी, स्पर्धी[1]—वि० [सं० स्पर्द्धिन्] [वि० स्त्री० स्पर्द्धिनी] १ जिसमे स्पर्धा हो। स्पर्धा करनेवाला। २ ईर्ष्यायुक्त। ईर्ष्यालु (को०)। ३ गर्वयुक्त। गर्वीला। घमडी (को०)।

स्पर्द्धी, स्पर्धी[2]—संज्ञा पुं० [सं०] ज्यामिति मे किसी कोण मे की उतनी कमी जितनी की वृद्धि से वह कोण १८० अश का अथवा अर्धवृत्त होता है। जैसे,—



मे घ क ख कोण ख क ग का स्पर्धी है २ स्पर्धा करने योग्य व्यक्ति। प्रतिस्पर्धी व्यक्ति (को०)।

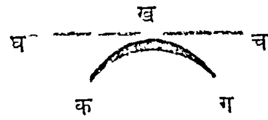
स्पर्द्धर्य, स्पर्धर्य—वि० [सं०] १ कामना, स्पर्धा या स्पृहा करने लायक। २ मूल्यवान् (को०)।

स्पर्श—संज्ञा पु० [सं०] १ दो वस्तुओं का आपस मे इतना पास पहुँचना कि उनके तलो का कुछ कुछ अश आपस मे सट या लग जाय। छूना। २ त्वगिंद्रिय का वह गुण जिसके कारण ऊपर पडनेवाले दवाव या किसी चीज के सटने का ज्ञान होता है। नैयायिकों के अनुसार यह २४ प्रकार के गुणों मे से एक है। ३ त्वगिंद्रिय का विषय। ४,

पीडा। रोग। कष्ट। व्याधि। ५ दान। भेंट। ६ वायु। ७ एक प्रकार का रतिबंध या आसन। ८ व्याकरण मे उच्चारण के आभ्यंतर प्रयत्न के चार भेदो मे मे 'स्पृष्ट' नामक भेद के अनुसार 'क' से लेकर 'म' तक के २५ व्यजन जिनके उच्चारण मे वागिंद्रिय का द्वार बंद रहता है। ९ आकाश। व्योम (को०)। १० गुप्तचर। गूढ गुप्तचर। प्रच्छन्न जासूस। छिपा हुआ भेदिया (को०)। ११ ग्रहण या उपराग मे सूर्य अथवा चद्रमा पर छाया पडने का आरभ।

स्पर्शक—वि० [स०] १ स्पर्श करने या छूनेवाला। २ अनुभूत करनेवाला। अनुभवकर्ता (को०)।

स्पर्शकोण—सज्ञा पुं० [स०] गणित मे वह कोण जो किसी वृत्त पर खीची हुई स्पर्शरेखा के कारण उस वृत्त और स्पर्शरेखा के बीच मे बनता है। जैसे,—



मे क ख ग अर्धवृत्त पर खीची हुई घ च रेखा के कारण घ ख क और च ख ग कोण स्पर्शकोण है।

स्पर्शक्लिष्ट—वि० [स०] जिसे छूने मे पीडा हो। जिसका स्पर्श कष्टप्रद हो।

स्पर्शक्षम—वि० [स०] छूने के लायक। स्पर्श के योग्य (को०)।

स्पर्शगुण—वि० [सं०] जिसका गुण स्पर्श हो। जैसे, वायु (को०)।

स्पर्शज—वि० [सं०] स्पर्श से होनेवाला। स्पर्शजन्य (को०)।

स्पर्शजन्य—वि० [स०] जो स्पर्श के कारण उत्पन्न हो। सक्रामक। छुतहा। जैसे,—कुष्ठ, शीतला, हैजा आदि स्पर्शजन्य रोग है।

स्पर्शतन्मात्र—सज्ञा पु० [स०] स्पर्शभूत का आदि, अमिश्र और सूक्ष्म रूप। विशेष दे० 'तन्मात्र'।

स्पर्शता—सज्ञा स्त्री० [स०] स्पर्श का भाव या धर्म। स्पर्शत्व।

स्पर्शदिशा—सज्ञा स्त्री० [स०] वह दिशा जिधर से सूर्य या चद्रमा को ग्रहण लगा हो। चद्रमा या सूर्य पर ग्रहण की छाया आने की दिशा।

स्पर्शद्वेष—सज्ञा पुं० [स०] स्पर्श के प्रति अति सवेदनशील। वह जिसपर स्पर्श का शीघ्र प्रभाव होता हो (को०)।

स्पर्शन[1]—सज्ञा पुं० [सं०] १ छूने की क्रिया। स्पर्श करना। २ दान। देना। ३ सबध। लगाव। ताल्लुक। ४ वायु। हवा। ५ सवेदन। भावना। (को०) ६ स्पर्शेद्रिय या स्पर्शसाधन (को०)।

स्पर्शन[2]—वि० [वि० स्त्री० स्पर्शनी] १ छूनेवाला। स्पर्श करनेवाला। २ ग्रस्त, प्रभावित या अनुकूल करनेवाला (को०)।

स्पर्शनक—सज्ञा पुं० [स०] सांख्य दर्शन के अनुसार त्वचा जिससे स्पर्श होता है (को०)।

स्पर्शना—सज्ञा स्त्री० [स०] छूने की शक्ति या भाव।

स्पर्शनीय—वि० [स०] स्पर्श करने योग्य। छूने के लायक।

स्पर्शनेंद्रिय—संज्ञा स्त्री० [सं० स्पर्शनेन्द्रिय] वह इद्रिय जिससे स्पर्श किया जाता है। छूने की इद्रिय। त्वगिंद्रिय। त्वचा।

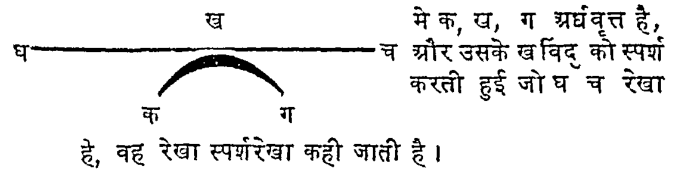
स्पर्शमणि—सज्ञा पु० [स०] पारस पत्थर जिसके स्पर्श से लोहे का सोना होना माना जाता है।

स्पर्शमणिप्रभव—सज्ञा पु० [स०] सोना। स्वर्ण (को०)।

स्पर्शयज्ञ—सज्ञा पु० [स०] महाभारत के अनुसार एक यज्ञ जिसमे प्रत्येक देय वस्तु का स्पर्श किया जाता है (को०)।

स्पर्शरसिक—सज्ञा पुं० [सं०] कामुक। लपट।

स्पर्शरेखा—सज्ञा स्त्री० [पुं०] गणित मे वह सीधी रेखा जो किसी वृत्त की परिधि के किसी एक बिंदु को स्पर्श करती हुई खीची जाय। जैसे,—



मे क, ख, ग अर्धवृत्त है, और उसके ख बिंदु को स्पर्श करती हुई जो घ च रेखा है, वह रेखा स्पर्शरेखा कही जाती है।

स्पर्शलज्जा—सज्ञा स्त्री० [स०] लजालू या लाजवती नाम की लता।

स्पर्शवज्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] बौद्धो की एक देवी का नाम।

स्पर्शवर्ग—सज्ञा पुं० [स०] व्याकरण मे क से म तक के वर्णो का वर्ग (को०)।

स्पर्शवेद्य—वि० [स०] जो स्पर्श द्वारा ज्ञात हो। जिसका ज्ञान स्पर्श के द्वारा हो (को०)।

स्पर्शवान्—वि० [स० स्पर्शवत्] १ जिसका स्पर्श सभव हो। २ जो स्पर्श गुण से युक्त हो, जैसे, वायु। ३ जो छूने मे सुखद हो। मृदु। कोमल (को०)।

स्पर्शशुद्ध—सज्ञा स्त्री० [सं०] शतावर।

स्पर्शसकोच—सज्ञा पुं० [स० स्पर्शसङ्कोच] लजालू या लाजवती नाम की लता।

यौ०—स्पर्शसकोचपर्णिका = लजालू लता जिसकी पत्तियाँ छूने मे सिमट जाती है।

स्पर्शसकोची—सज्ञा पुं० [सं० स्पर्शसङ्कोचिन्] बिडालू।

स्पर्शसचारी[1]—सज्ञा पुं० [सं० स्पर्शसञ्चारिन्] शूक रोग का एक भेद।

स्पर्शसचारी[2]—वि० सक्रामक। छुतहा। स्पर्श या सपर्क के कारण एक से दूसरे मे सक्रमण करनेवाला (को०)।

स्पर्शसुख[1]—वि० [स०] जिसका स्पर्श सुखद हो (को०)।

स्पर्शसुख[2]—सज्ञा पु० स्पर्शजन्य आनदानुभूति।

स्पर्शस्नान—सज्ञा पुं० [स०] सूर्य या चद्रग्रहण के समय का वह स्नान जब सूर्य या चद्र पर छाया का पडना आरभ होता है (को०)।

स्पर्शस्पद—सज्ञा पुं० [स० स्पर्शस्पन्दन] मेटक।

स्पर्शस्यद—सज्ञा पुं० [स० स्पर्शस्यदन] मढूक (को०)।

स्पर्शहानि—सज्ञा स्त्री० [सं०] शूक रोग मे रुधिर के दूषित होने के कारण लिंग के चमडे मे स्पर्शज्ञान न रह जाना।

स्पर्शा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुलटा। पुंश्चली। दुश्चरिता स्त्री। छिनाल।

स्पर्शाक्रामक—वि० [सं०] (रोग या दोष आदि) जो स्पर्श या संसर्ग के कारण उत्पन्न हो। संक्रामक। छुतहा।

स्पर्शाज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसे स्पर्शज्ञान न हो।

स्पर्शानंदा—संज्ञा स्त्री० [सं० स्पर्शानन्दा] अप्सरा। देवांगना [को०]।

स्पर्शानुकूल—वि० [सं०] जो स्पर्श करने में अनुकूल या सुखद हो। छूने में आनंददायक [को०]।

स्पर्शासन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं का एक वर्ग [को०]।

स्पर्शासन[2]—संज्ञा पुं० एक प्रकार की उपासना पद्धति। ध्यान या उपासना में बैठने की एक मुद्रा या आसन विशेष। उ०—गंधप, स्पर्शासन, त्रित्यद्योत इत्यादि कुछ उपासना पद्धतियाँ थीं। —प्रा० भा० प०, पृ० २२४।

स्पर्शासह—वि० [सं०] १ जिसे स्पर्श सहन न हो। २ जिसका स्पर्श सहन न हो [को०]।

स्पर्शासहिष्णु—वि० [सं०] दे० 'स्पर्शासह'।

स्पर्शासह्य—वि० [सं०] दे० 'स्पर्शासह' [को०]।

स्पर्शास्पर्श—संज्ञा पुं० [सं० स्पर्श + अस्पर्श] छूने या न छूने का भाव या विचार। इस बात का विचार कि अमुक पदार्थ छूना चाहिए और अमुक पदार्थ न छूना चाहिए। छूतछात।

स्पर्शिक[1]—वि० [सं०] १ स्पर्श करनेवाला। छूनेवाला। २ जिसका ज्ञान स्पर्श करने से हो सके।

स्पर्शिक[2]—संज्ञा पुं० वायु। हवा।

स्पर्शित—संज्ञा पुं० [सं० स्पर्शितृ] १ स्पर्श किया हुआ। जिसका स्पर्श किया गया हो। २ प्रदत्त। दिया हुआ। दत्त [को०]।

स्पर्शिता[1]—वि० स्त्री० [सं० स्पर्शितृ] स्पर्श की हुई अर्थात् भार्या के रूप में प्रदत्त (कन्या) [को०]।

स्पर्शिता[2]—वि० स्पर्श करनेवाला। छूनेवाला।

स्पर्शी—वि० [सं० स्पर्शिन्] छूनेवाला। स्पर्श करनेवाला। जैसे—गगनस्पर्शी। मर्मस्पर्शी।

स्पर्शेंद्रिय—संज्ञा स्त्री० [सं० स्पर्शेन्द्रिय] वह इंद्रिय जिससे स्पर्श का ज्ञान होता है। त्वगिंद्रिय। त्वचा।

स्पर्शोपल—संज्ञा पुं० [सं०] पारस पत्थर। स्पर्शमणि।

स्पर्ष्टा—संज्ञा पुं० [सं०] १ शारीरिक अव्यवस्था या अस्वस्थता। रोग। व्याधि। २ वह जो स्पर्श करता हो। स्पर्श करने या छूनेवाला [को०]।

स्पश—संज्ञा पुं० [सं०] १ चर। दूत। २ युद्ध। लड़ाई। ३ पुरस्कार के लोभ से जंगली जानवरों से लड़नेवाला या इस प्रकार की लड़ाई [को०]।

स्पष्ट[1]—वि० [सं०] १ जिसके देखने या समझने आदि में कुछ भी कठिनता न हो। साफ दिखाई देने या समझ में आनेवाला। जैसे,—(क) इसके अक्षर दूर से भी स्पष्ट दिखाई देते हैं। २ जिसमें किसी प्रकार की लगावट या दाँवपेंच न हो। सही। साफ। जैसे,—मैं तो स्पष्ट कहता हूँ, चाहे किसी को बुरा लगे और चाहे भला।

मुहा०—स्पष्ट कहना या सुनाना = बिलकुल साफ साफ कहना। बिना कुछ छिपाव अथवा किसी का कुछ ध्यान किए कहना।

३ वास्तविक। सच्चा (को०)। ४ पूर्णत विकसित। पूरा खिला हुआ (को०)। ५ सुस्पष्ट या साफ साफ देखनेवाला (को०)। ६ जो वक्र न हो। अकुटिल। सरल। सीधा (को०)। ७ प्रत्यक्ष। व्यक्त। (को०)।

स्पष्ट[2]—संज्ञा पुं० १ ज्योतिष में ग्रहों का स्फुटसाधन जिसमें यह जाना जाता है कि जन्म के समय अथवा किसी और विशिष्ट काल में कौन सा ग्रह किस राशि के कितने अंश, कितनी कला और कितनी विकला में था। इसकी आवश्यकता ग्रहों का ठीक ठीक फल जानने के लिये होती है। २ व्याकरण में वर्णों के उच्चारण का एक प्रकार का प्रयत्न जिसमें दोनों होंठ एक दूसरे से छू जाते हैं। जैसे,—प या म के उच्चारण में स्पष्ट प्रयत्न होता है।

स्पष्टकथन—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में कथन के दो प्रकारों में से एक जिसमें किसी दूसरे की कही हुई बात ठीक उसी रूप में कही जाती है जिस रूप में वह उसके मुहँ से निकली हुई होती है। जैसे,—कृष्ण ने साफ साफ कह दिया—'मैं उनसे किसी प्रकार का संबंध न रखूगा।' इसमें लेखक ने वक्ता कृष्ण का कथन उसी रूप में रहने दिया है, जिस रूप में वह उसके मुँह से निकला था।

स्पष्टगर्भा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसके गर्भ के लक्षण साफ प्रकट हो [को०]।

स्पष्टत—क्रि० वि० [सं०] दे० 'स्पष्टतया'।

स्पष्टतया—क्रि० वि० [सं०] स्पष्ट रूप से। साफ साफ। उ० (क) इससे यह स्पष्टतया ज्ञात होता है कि समालोचना के सामान्य रूप का अर्थ मूल ग्रंथ का दूषण या उसका खंडन है। —गंगाप्रसाद (शब्द०)। (ख) उषा काल की श्वेतता समुद्र में स्पष्टतया दृष्टि पड़ती थी।

स्पष्टतर—क्रि० वि० [सं०] स्पष्ट से अधिक स्पष्ट। साफ साफ। स्पष्ट और स्पष्टतम के बीच की स्थिति। उ०—पुलक स्पंद भर खिला स्पष्टतर।—अपरा, पृ० ५६।

स्पष्टता—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्पष्ट होने का भाव। सफाई। जैसे,—उसकी बातों की स्पष्टता मन पर विशेष रूप से प्रभाव डालती है।

स्पष्टतारक—संज्ञा पुं० [सं०] आकाश, जिसमें तारे स्पष्ट दिखाई पड़ें।

स्पष्टप्रतिपत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह ज्ञान जो स्पष्ट हो। शुद्ध प्रत्यक्ष ज्ञान [को०]।

स्पष्टप्रयत्न—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्पष्ट'—२।

स्पष्टभाषी—वि० [सं० स्पष्टभाषिन्] दे० 'स्पष्टवक्ता'।

स्पष्टवक्ता—संज्ञा पुं० [सं० स्पष्टवक्तृ] वह जो साफ साफ बातें कहता हो। वह जो कहने में किसी का मुलाहजा या रिआयत न करता हो।

स्पष्टवादी—संज्ञा पुं० [सं० स्पष्टवादिन्] वह जो साफ साफ बातें कहता हो। स्पष्टवक्ता। उ०—ऐसी हालत में स्पष्टवादी, निडर, मर्मदर्शी, कुशाग्रबुद्धि और सच्चे तार्किकों की उत्पत्ति ही बंद हो जाती है।—द्विवेदी (शब्द०)।

स्पष्टस्थिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योतिष में राशियों के अंश, कला, विकला आदि में (बालक के जन्म की) दिखलाई हुई ग्रहों की ठीक ठीक स्थिति।

स्पष्टाक्षर—वि० [सं०] १ जिसके अक्षर स्पष्ट हों। २ जिसका उच्चारण अक्षरशः स्पष्ट हो [को०]।

स्पष्टार्थ[1]—संज्ञा पुं० [सं०] स्पष्ट या बोधगम्य अर्थ [को०]।

स्पष्टार्थ[2]—वि० जिसका अर्थ सरल या सहज बोधगम्य हो [को०]।

स्पष्टीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] स्पष्ट करने की क्रिया। किसी बात को स्पष्ट या साफ करना। उ०—ऐसी बातें बहुत ही थोडी हैं जिनका मतलब बिना विवेचना, टीका या स्पष्टीकरण के समझ में आ सकता है।—द्विवेदी (शब्द०)।

स्पष्टीकृत—वि० [सं०] जिसका स्पष्टीकरण हुआ हो। साफ या खुलासा किया हुआ।

स्पष्टीक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योतिष में वह क्रिया जिससे ग्रहों का किसी विशिष्ट समय में किसी राशि के अंश, कला, विकला आदि में अवस्थान जाना जाता है। उ०—पहले जब अयनांश का ज्ञान नहीं था, तब स्पष्टीक्रिया से जो ग्रह आता था, उसे लोग ग्रह ही के नाम से पुकारते थे।—सुधाकर (शब्द०)।

स्पाई—संज्ञा पुं० [अं०] १ वह जो छिपकर किसी का भेद ले। भेदिया। गुप्तचर। गोयंदा। जैसे,—पुलिस स्पाई। २ वह दूत जो शत्रु की छावनी या राज्य में भेद लेने के लिये भेजा जाय। गुप्त राजदूत। भेदिया। जैसे,—पेशावर के पास कई बोल-शेविक स्पाई पकडे गए हैं।

स्पात—संज्ञा पुं० [सं० अयस्पत्र या पुर्त० स्पेडा, हिं० इसपात, इस्पात] दे० 'इसपात'।

स्पार्शन—वि० [सं०] जिसका बोध स्पर्श करने से हो या जो स्पर्श से ज्ञात हो [को०]।

स्पिरिचुअलिज्म—संज्ञा पुं० [अं०] वह विद्या या क्रिया जिसके द्वारा किसी स्वर्गीय या मृत व्यक्ति की आत्मा बुलाई जाती है और उससे बातचीत की जाती है। भूतविद्या। आत्मविद्या।

स्पिरिट—संज्ञा स्त्री० [अं०] १ शरीर में रहनेवाली आत्मा। रूह। २ वह कल्पित सूक्ष्म शरीर जिसका मृत्यु के समय शरीर से निकलना और आकाश में विचरण करना माना जाता है। सूक्ष्म शरीर। ३ जीवन शक्ति। ४ एक प्रकार का बहुत तेज मादक द्रव पदार्थ जिसका व्यवहार अँगरेजी शराबों, दवाओं और सुगंधियों आदि में मिलाने अथवा लंपों आदि के जलाने में होता है। फूल शराब। ५ किसी पदार्थ का सत्त या मूल तत्व। जैसे,—स्पिरिट एमोनिया अर्थात् अमोनिया का सत। ६ किसी वस्तु का सार। अर्क। ७ मदिरा का सार। सुरासार। ८. उत्साह। जोश। तत्परता। जैसे,—इस नगर के नवयुवकों में स्पिरिट नहीं है। ९ स्वभाव। मिजाज। १० प्रेतात्मा। रूह।

स्पिलेंचा—संज्ञा पुं० [देश०] हिमालय की एक झाडी जिसकी टहनियों से बोझ बाँधते और टोकरे आदि बनाते हैं।

स्पीकर—संज्ञा पुं० [अं०] १ वह जो सभा, समिति या सर्वसाधारण में खडे होकर किसी विषय पर वक्तृत्व में बोलता या भाषण करता है। वक्ता। व्याख्यानदाता। जैसे,—वे बडे अच्छे स्पीकर हैं, लोगों पर उनके व्याख्यान का खूब प्रभाव पडता है। २ ब्रिटिश पार्लमेंट की कामन्स सभा, अमेरिका के संयुक्त राज्यों की प्रतिनिधि सभा तथा व्यवस्थापिका सभाओं के अध्यक्ष। सभापति। ३ ब्रिटिश हाउस आव लार्ड्स या लार्ड सभा के अध्यक्ष जो लार्ड चान्सलर हुआ करते हैं।

विशेष—ब्रिटिश हाउस आव कामन्स सभा का स्पीकर या अध्यक्ष पार्लमेंट के सदस्यों में से ही, बिना किसी राजनीतिक भेदभाव के चुना जाता है। इसका काम सभा में शांति बनाए रखना और नियमानुसार कार्य संचालन करना है। किसी विषय पर सभा के दो समान भागों में विभक्त होने पर (अर्थात् आधे सदस्य एक पक्ष में और आधे दूसरे पक्ष में होने पर) वह अपना 'कास्टिंग वोट' या निर्णायक मत किसी के पक्ष में दे सकता है। अमेरिका की प्रतिनिधि सभा या व्यवस्थापिका सभाओं के स्पीकर या अध्यक्ष साधारणतः उस पक्ष के नेता या मुखिया होते हैं जिसका सभा में बहुमत होता है। ब्रिटिश पार्लमेंट के स्पीकर के समान इन्हें भी सभा के संचालन और नियंत्रण का अधिकार तो है ही इसके सिवा ये महत्व के अवसरों पर दूसरे को अध्यक्ष के आसन पर बैठाकर सदस्य की हैसियत से साधारण सभा में भी बहस कर सकते हैं और वोट दे सकते हैं। भारत में भी विधान सभाओं और संसद् में स्पीकर होते हैं और उनकी सत्ता तथा कार्यपद्धति वही है जो अमेरिका तथा ब्रिटिश देश में है।

स्पीच—संज्ञा स्त्री० [अं०] वह जो कुछ मुहँ से बोला जाय। कथन। २ वाक्शक्ति। बोलने की शक्ति। ३ किसी विषय की जबानी की हुई विस्तृत व्याख्या। वक्तृता। व्याख्यान। लेक्चर। उ०—गर्ज कि इस सफहे की कुल स्पीचें मरचेंट आव वेनिस से ली गई है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ४३४।

स्पीड—संज्ञा स्त्री० [अं०] वेग। गति। चाल। तीव्रता।

स्पीन किशमिशी—संज्ञा पुं० [पिशीन (स्थान का नाम) + किशमिश] एक प्रकार का बढिया अंगूर जो क्वेटा पिशीन प्रांत में होता है।

स्पृक्का—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ असबरग। २ लजालू। लाजवंती। ३ ब्राह्मी बूटी। ४ मालती। ५ सवती। शतपत्री। ६ गंगापत्री। पात्रीलता।

स्पृत्[1]—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल की एक प्रकार की ईंट जिसका व्यवहार यज्ञ की वेदी आदि बनाने में होता था।

स्पृत्[2]—वि० १ अपने को छुडाने, हटाने अथवा मुक्त करनेवाला। २ पानेवाला। प्राप्त करनेवाला [को०]।

स्पृत—वि० [सं०] १ जीता हुआ। विजित। २ रखा हुआ। सुरक्षित। ३ मिला हुआ। प्राप्त [को०]।

स्पृध्¹—संज्ञा पुं० [सं०] शत्रु। वैरी [को०]।

स्पृध्²—संज्ञा स्त्री० युद्ध। लड़ाई। संघर्ष [को०]।

स्पृश्—वि० [सं०] १. स्पर्श करनेवाला। छूनेवाला। जैसे, मर्मस्पृश्। २ पहुँचनेवाला [को०]।

स्पृश¹—संज्ञा पुं० [सं०] स्पर्श। संपर्क [को०]।

स्पृश²—वि० छूनेवाला। स्पर्श करनेवाला।

स्पृशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सर्पिणी। सर्पकंकालिका। २ कटकारी। कँटाई। रेंगनी।

स्पृशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कटकारी। कँटाई।

स्पृश्य—वि० [सं०] [वि० स्त्री० स्पृश्या] १ जो स्पर्श करने के योग्य हो। छूने के लायक। उ०—होगा कोई इंगित अदृश्य, मेरे हित है हित यही स्पृश्य।—अपरा, पृ० १८१। २ अधिकृत करने योग्य (को०)।

यौ०—स्पृश्यास्पृश्य = स्पृश्य और अस्पृश्य। छूने लायक और न छूने के योग्य।

स्पृश्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की समिधा [को०]।

स्पृश्यास्पृश्य विवेक—संज्ञा पुं० [सं०] छूने और न छूने योग्य वस्तुओं या पदार्थों का विचार।

स्पृष्ट¹—वि० [सं०] १ जिसने स्पर्श किया हो। २ छूआ हुआ। हाथ से स्पर्श किया हुआ। ३ संपर्क में आया हुआ (को०)। ४ ग्रस्त। प्रभावित (को०)। ५ दूषित। कलुषित। कलंकित। जैसे, स्पृष्टमैथुना (को०)। ५ पहुँचनेवाला। उपयोग करनेवाला (को०)। ६ जिह्वा के या उच्चारण अवयवों के पूर्ण स्पर्श से बना हुआ (को०)।

स्पृष्ट²—संज्ञा पुं० व्याकरण के अनुसार 'क्' से 'म्' तक के वर्णों के उच्चारण में प्रयुक्त आभ्यंतर प्रयत्न [को०]।

स्पृष्टक—संज्ञा पुं० [सं०] चलते समय किसी पुरुष और स्त्री के अंगों का परस्पर हलका स्पर्श। एक प्रकार का आलिंगन [को०]।

स्पृष्टमैथुन—वि० [सं०] [वि० स्त्री० स्पृष्टमैथुना] मैथुन के कारण जो अपवित्र या दूषित हो गया हो [को०]।

स्पृष्टरोदनिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] लजालू या लाजवंती नाम की लता।

स्पृष्टास्पृष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] छूआछूत। स्पृष्टास्पृष्टि।

स्पृष्टस्पृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] परस्पर एक दूसरे को छूने की क्रिया। छूआछूत।

स्पृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छूने की क्रिया। स्पर्श। २ संयोग। लगाव। संपर्क (को०)।

स्पृष्टिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दे० 'स्पृष्टि'। २ शपथ ग्रहण के समय अंगों का स्पर्श।

स्पृष्टी—वि० [सं० स्पृष्टिन्] स्पर्श करनेवाला [को०]।

स्पृहण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० स्पृहणीय] अभिलाषा। स्पृहा। इच्छा। कामना।

स्पृहणीय—वि० [सं०] १ जिसके लिये अभिलाषा या कामना की जा सके। वांछनीय। उ०—यह कितनी स्पृहणीय बन गई, मधुर जागरण सी छविमान।—कामायनी, पृ० २७। २ गौरवशाली। गौरव या बड़ाई के योग्य। ३ रमणीय। मोहक (को०)। ४ ईर्ष्या करने योग्य (को०)।

यौ०—स्पृहणीयवीर्य = जिसका पराक्रम स्पृहणीय या वांछनीय हो। स्पृहणीयशोभ = जो अपनी शोभा या सौंदर्य के कारण स्पृहा करने योग्य हो।

स्पृहयालु—वि० [सं०] १ जो स्पृहा या कामना करे। स्पृहा करनेवाला। २ लोभी। लालची।

स्पृहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अभिलाषा। इच्छा। कामना। ख्वाहिश। २ न्यायदर्शन के अनुसार किसी ऐसे पदार्थ की प्राप्ति की कामना जो धर्म के अनुकूल हो। ३ ईर्ष्या (को०)।

स्पृहालु—वि० [सं०] दे० 'स्पृहयालु'।

स्पृहित—वि० [सं०] १ जिसकी स्पृहा या कामना की गई हो। २ जो ईर्ष्या का विषय हो [को०]।

स्पृही—वि० [सं० स्पृहिन्] १ कामना या इच्छा करनेवाला उ०—गृह योग्य बने हैं वन स्पृही, वन योग्य हाय! हम बने गृही।—साकेत, पृ० १५६। २ स्पर्धा करनेवाला।

स्पृह्य¹—संज्ञा पुं० [सं०] बिजौरा नीबू।

स्पृह्य²—वि० जिसके लिये कामना या स्पृहा की जा सके। स्पृहणीय। वांछनीय।

स्पेशल¹—वि० [अं०] १ जिसमें औरों की अपेक्षा कोई विशेषता हो। विशिष्ट। खास। २ जो विशेष रूप से किसी एक व्यक्ति या काम के लिये हो। जैसे,—स्पेशल गाड़ी। ३ जो साधारण न हो। असाधारण।

स्पेशल²—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह रेल गाड़ी जो किसी विशिष्ट कार्य, उद्देश्य या व्यक्ति के लिये चले। जैसे,—लाट साहब की स्पेशल, बारात की स्पेशल।

स्पेशलिस्ट—संज्ञा पुं० [अं०] वह जिसे किसी विषय का विशेष ज्ञान हो। वह जो किसी विषय में पारंगत हो। विशेषज्ञ। जैसे,—वे आँख के इलाज के स्पेशलिस्ट हैं।

स्प्रष्टव्य—वि० [सं०] १ छूने लायक। स्पर्श करने योग्य। २ जिसका ज्ञान स्पर्श से किया जाय [को०]।

स्प्रष्टा¹—वि० [सं० स्प्रष्टृ] छूनेवाला या स्पर्श करनेवाला [को०]।

स्प्रष्टा²—संज्ञा पुं० स्पर्शजन्य रोग। व्याधि [को०]।

स्प्रिंग—संज्ञा स्त्री० [अं०] लोहे की तीली, पत्तर, तार या इसी प्रकार की और कोई लचीली वस्तु जो दाब पड़ने पर दब जाय और दाब हटने पर फिर अपने स्थान पर आ जाय। कमानी। विशेष दे० 'कमानी'।

स्प्रिंगदार—वि० [अं० स्प्रिंग + फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें स्प्रिंग या कमानी लगी हो। कमानीदार।

स्प्रिचुअलिज्म—संज्ञा पुं० [अं०] आत्माविद्या। भूतविद्या। दे० स्पिरिचुअलिज्म।'

स्प्लिंट—संज्ञा पुं० [अं०] पाश्चात्य चिकित्सा मे चिपटी लकडी का वह टुकडा जो शरीर की किसी टूट हुई हड्डी आदि को फिर यथास्थान बैठाकर, उस अंग को सीधा या ठीक स्थिति मे रखने के लिये उसपर बाधा जाता है। पट्टी। पटरी।

स्फट—संज्ञा पुं० [सं०] १ फट फट शब्द। २ साप का फन।

स्फटा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ साँप का फन। २ फिटकिरी (कौ०)।

स्फटिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का सफेद बहुमूल्य पत्थर या रत्न। बिल्लौर।

विशेष—स्फटिक काँच के समान पारदर्शी होता है और इसका व्यवहार मालाएँ, मूर्तियाँ तथा दस्ते आदि बनाने मे होता है। इसके कई भेद और रग होते हैं।

२ सूर्यकांत मणि। ३ शीशा। काँच। ४ कपूर। कर्पूर। ५ फिटकरी।

स्फटिककुड्य—संज्ञा पुं० [सं०] बिल्लौर की दीवार।

स्फटिकपात्र—संज्ञा पुं० [सं०] स्फटिक का बरतन [कौ०]।

स्फटिकप्रभ—वि० [सं०] स्फटिक के समान चमकीला या दीप्त [कौ०]।

स्फटिकभित्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'स्फटिककुड्य'।

स्फटिकमणि—संज्ञा पुं० सं० बिल्लौर पत्थर [कौ०]।

स्फटिकविष—संज्ञा पुं० [सं०] दारुमोच नाम का विष।

स्फटिकशिखरी—संज्ञा पुं० [सं० स्फटिकशिखरिन्] कैलाश पर्वत।

स्फटिकशिला—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्फटिक की शिला। बिल्लौर।

स्फटिकस्कभ—संज्ञा पुं० [सं० स्फटिकस्कम्भ] स्फटिक का खभा।

स्फटिकहर्म्य—संज्ञा पुं० [सं०] स्फटिक का बना भवन।

स्फटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ फिटकिरी। २ कपूर (कौ०)।

स्फटिकाख्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] फिटकिरी।

स्फटिकाचल—संज्ञा पुं० [सं०] कैलाश पर्वत जो दूर से देखने मे स्फटिक के समान जान पडता है।

स्फटिकात्मा—संज्ञा पुं० [सं० स्फटिकात्मन्] बिल्लौर। स्फटिकमणि।

स्फटिकाद्रि—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्फटिकाचल' [कौ०]।

यौ०—स्फटिकाद्रिभिद् = कपूर। कर्पूर।

स्फटिकाभ्र—संज्ञा पुं० [सं०] कपूर।

स्फटिकारि, स्फटिकारिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] फिटकिरी [कौ०]।

स्फटिकारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] फिटकिरी।

स्फटिकाश्मा—संज्ञा पुं० [सं० स्फटिकाश्मन्] फिटकिरी [कौ०]।

स्फटिकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] फिटकिरी।

स्फटिकोपम—संज्ञा पुं० [सं०] १ कपूर २ जस्ता नाम की धातु। ३ चद्रकात मणि।

स्फटिकोपल—संज्ञा पुं० [सं०] बिल्लौर। स्फटिक।

स्फटित—वि० [सं०] फटा हुआ। विदीर्ण [कौ०]।

स्फटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] फिटकिरी।

स्फर, स्फरक—संज्ञा पुं० [सं०] चर्म। ढाल [कौ०]।

स्फरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ काँपना। थरथराना। फडकना। २ प्रवेश करना [कौ०]।

स्फाटक—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्फटिक। बिल्लौर। २ पानी की बूँद।

स्फाटकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] फिटकिरी [कौ०]।

स्फाटिक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का श्वेत रत्न। बिल्लौर। विशेष दे० स्फटिक'। २ एक प्रकार का चदन(कौ०)।

स्फाटिक[२]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० स्फाटिकी] स्फटिक या बिल्लौर सबधी। बिल्लौर का।

स्फाटिकोपल—संज्ञा पुं० [सं०] स्फटिक। बिल्लौर।

स्फाटित—वि० [सं०] फटा या फाडा हुआ। विदीर्ण [कौ०]।

स्फाटीक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्फटिक'।

स्फात—वि० [सं०] १ बढा हुआ। २ फूला हुआ [कौ०]।

स्फाति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वृद्धि। बढती। २ सूजन। शोथ [कौ०]।

स्फार[१]—वि० [सं०] १ प्रचुर। विपुल। बहुत। २ विकट। ३ विस्तृत। बडा। बढा हुआ (कौ०)। ४ ऊँचा। तार। उच्च। जैसे, स्वर (कौ०)। ५ अविरल। निविड। घना (कौ०)।

स्फार[२]—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूजन। वृद्धि। २ (सोने मे पडी हुई) फुटकी। ३ उभार। गिल्टी। ४ धकधकी। थरथरी। ५ टकार। ६ प्राचुर्य। अधिकता (कौ०)।

स्फारण—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्फुरण'।

स्फारित—वि० [सं०] विस्तृत किया हुआ। फैलाया हुआ [कौ०]।

स्फाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ दे० 'स्फूर्ति'। २ धडकन। कँपकँपी (कौ०)।

स्फालन—संज्ञा पुं० [सं०] १ हिलाना। डुलाना। २ रगडना। घिसना। ३ घोडे आदि को थपथपाना। सहलाना। ४ स्पदन। धकधकी [कौ०]।

स्फिक्—संज्ञा स्त्री० [सं० स्फिच्] चूतड।

स्फिक्स्राव—संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग [कौ०]।

स्फिग्घातक—संज्ञा पुं० [सं०] कट्फल [कौ०]।

स्फिग्दघ्न—वि० [सं०] कूल्हे या चूतड तक पहुँचनेवाला [कौ०]।

स्फिच्—संज्ञा स्त्री० [सं०] चूतड।

स्फिर—वि० [सं०] १ आयत। विशाल। विस्तृत। २ अधिक। प्रचुर। बहुत। ३ असख्य [कौ०]।

स्फीत—वि० [सं०] १ बढा हुआ। वर्धित। २ फूला हुआ। ३ समृद्धि। ४ मोटा। पीन। स्थूल (कौ०)। ५ बहुत। प्रचुर (कौ०)। ६ पूत। पवित्र। शुद्ध (कौ०)। ७ जो पैतृक रोग से ग्रस्त हो (कौ०)। ८ आनदित। खुश। प्रसन्न (कौ०)।

स्फीतता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्फीत होने का भाव या धर्म। २. वृद्धि। ३ पीनता। मोटाई। ४ समृद्धि।

स्फीतनितवा--संज्ञा स्त्री० [सं० स्फीतनितम्बा] बडे और सुदर कूल्हे-वाली स्त्री [को०]।

स्फीति--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वृद्धि। विस्तार। बढती। २ प्राचुर्य। अधिकता (को०)। ३ समृद्धि (को०)।

स्फुट--वि० [सं०] १ जो सामने दिखाइ देता हो। प्रकाशित। व्यक्त। २ खिला हुआ। विकसित। जैसे,--स्फुटित कमल। ३ जो स्पष्ट हुआ हो। साफ। ४ शुक्ल। सफेद। ५ फुटकर। अलग अलग। ६ टूटा हुआ या फटा हुआ। विदीर्ण। खडित (को०)। ७ सुविदित। प्रसिद्ध (को०)। ८ उच्च ऊँचा (को०)। ६ सत्य। प्रत्यक्ष (को०)। १० दीप्तिमान्। चमकीला (को०)। ११ सुधारा हुआ। सशोधित (को०)। १२ विशिष्ट। असाधारण (को०)।

स्फुट[2]--संज्ञा पु० १ जन्मकुडली मे यह दिखाना कि कौन सा ग्रह किस राशि मे कितने अश, कितनी कला और कितनी विकला मे है। २ साँप का फन (को०)।

स्फुट[3]--अव्य० साफ साफ। स्पष्टत [को०]।

स्फुटक--संज्ञा पु० [सं०] ज्योतिष्मती लता। मालकगनी।

स्फुटचद्रतारक--वि० [सं० स्फुटचन्द्रतारक] जिसमे चद्रमा और तारिकाएँ प्रकाशित हो। सुव्यक्त चद्र और तारो से युक्त।

स्फुटता--संज्ञा स्त्री० [सं०] स्फुट होने का भाव या धर्म।

स्फुटतार, स्फुटतारक--वि० [सं०] जिसमे तारे स्पष्ट दिखाई दें। तारो से प्रकाशित [को०]।

स्फुटत्व--संज्ञा पुं० [सं०] स्फुट का भाव या धर्म। स्फुटता।

स्फुटत्वचा--संज्ञा स्त्री० [सं०] महाज्योतिष्मती। मालकगनी।

स्फुटध्वनि--संज्ञा पु० [सं०] सफद पडुक। एक पक्षी।

स्फुटन--संज्ञा पु० [सं०] १ फटना या फूटना। २ विकसित होना। खिलना। ३ सधि या जोड का चटकना (को०)।

स्फुटपुडरीक--वि० [सं० स्फुटपुण्डरीक] खिला हुआ या विकसित हृदयरूपी कमल [को०]।

स्फुटपौरुष --वि० [सं०] अपनी शक्ति प्रदर्शित करनेवाला [को०]।

स्फुटफल--संज्ञा पुं० [सं०] १ तुवुरु। २ किसी त्रिकोण का यथार्थ क्षेत्रफल (को०)। ३ किसी गणित का मूल फल (को०)।

स्फुटबधनी--संज्ञा स्त्री० [सं० स्फुटबन्धनी] मालकगनी। ज्योतिष्मती।

स्फुटरगिणी--संज्ञा स्त्री० [सं० स्फुट रङ्गिणी] एक प्रकार की लता जिसका व्यवहार औषध मे होता है।

स्फुटवक्ता--वि० [सं० स्फुटवक्तृ] साफ साफ कहनेवाला। स्पष्ट बोलनेवाला [को०]।

स्फुटवल्कली--संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योतिष्मती। मालकगनी।

स्फुटसार--संज्ञा पुं० [सं०] किसी नक्षत्र अथवा ग्रह का वास्तविक आयाम [को०]।

स्फुट सूर्यगति--संज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य की दृश्यमान गति अथवा सूर्य की वास्तविक गति [को०]।

स्फुटा--संज्ञा स्त्री० [सं०] साँप का फन।

स्फुटि--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पादस्फोटक नाम का रोग। पैर की बिवाइ फटना। २ फूट नाम का फल।

स्फुटिका--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ फूट नामक फल। २ फिटकिरी। ३ छोटा खड या टुकडा (को०)।

स्फुटित--वि० [सं०] १ विकसित। खिला हुआ। २ जो स्पष्ट किया गया हो। प्रकट किया हुआ। ३ हसता हुआ। ४ विदीर्ण। फटा हुआ (को०)। ५ नष्ट किया हुआ (को०)।

स्फुटितकाडभग्न--संज्ञा पु० [सं० स्फुटितकाण्डभग्न] वैद्यक के अनुसार हड्डी टूटने का एक भेद। हड्डी का टुकडे टुकडे होकर खिल जाना।

स्फुटितचरण--वि० [सं०] १ चौडे और फैले हुए पैरोवाला। २ जिसके पैर फटे हुए हो [को०]।

स्फुटी--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पादस्फोट नामक रोग। पैर की बिवाई फटना। २ फूट नाम का फल।

स्फुटीकरण--संज्ञा पु० [सं० स्फुट + करण] १ स्पष्ट करना। प्रकट या व्यक्त करना। २ सशोधन। ठीक करना। सुधारना।

स्फुत्--अव्य० [सं०] टूटने या चटचटाने की ध्वनि।

स्फुत्कर--संज्ञा पु० [सं०] वह जिसमे 'स्फुत्' अर्थात् चट् चट् की आवाज हो। अग्नि। आग।

स्फुत्कार--संज्ञा पुं० [सं०] फुफकार। फूत्कार।

स्फुर--संज्ञा पु० [सं०] १ वायु। हवा। २ दे० 'स्फुरण'। ३ वर्धन। वृद्धि (को०)। ४ ढाल (को०)।

स्फुरण--संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी पदार्थ का जरा जरा हिलना या कापना। २ अग का फडकना। ३ दे० 'स्फूर्ति'। ४ प्रत्यक्ष या व्यक्त होना (को०)। ५ चमक। दीप्ति। प्रभा (को०)। ६ मन मे एकाएक कोई विचार आना (को०)।

स्फुरणा--संज्ञा स्त्री० [सं०] अगो का फडकना।

स्फुरत्--वि० [सं०] चमकता हुआ। दीप्त। प्रकाशित [को०]।

यौ०--स्फुरदुल्का = दीप्त एव कपित उल्कापिड। स्फुरदोष्ठ = जिसके होठ फडक रहे हो। स्फुरदोष्ठक = दे 'स्फुरदोष्ठ'। स्फुरद्गध = (१) फैली हुई सुगध। (२) जिससे सुगध फैल रही हो।

स्फुरति(पु)--संज्ञा स्त्री० [सं० स्फूर्ति] दे० 'स्फूर्ति'।

स्फुरना(पु)--क्रि० अ० [सं० स्फुरण] १ कपित होना। हिलना। २ फडकना। ३ व्यक्त या द्योतित होना। ४ विकसित होना। खिलना।

स्फुरित[1]--वि० [सं०] १ जिसमे स्फुरण हो। २ हिलने या फडकने-वाला। ३ जो स्थिर न हो। ३ दीप्त। चमकता हुआ (को०)। ४ फूला हुआ या सूजा हुआ (को०)। ५ व्यक्त। प्रकट (को०)।

स्फुरित[2]--संज्ञा पुं० [सं०] १ दे० 'स्फुरण'। २ मन का सवेग या विक्षोभ। मानसिक उथल पुथल [को०]।

स्फुर्जथु--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्फूर्जथु' [को०]।

स्फुल--संज्ञा पुं० [सं०] १ स्फूर्ति। २ तबू। खेमा।

स्फुलन--संज्ञा पुं० [सं०] कपन। फडकना। स्फुरण [को०]।

फ़ुलमजरी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] हुलहुल नामक पौधा।

फ़ुलिंग—सञ्ज्ञा पुं० [स० स्फुलिङ्ग] अग्नि का छोटा कण। आग की चिनगारी।

फ़ुलिंग—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० स्फुलिङ्गा] अग्निकण। अग्नि की चिनगारी। स्फुलिंग [को०]।

फ़ुलिंगिनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [स० स्फुलिङ्गिनी] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

स्फुलिंगी—वि० [स० स्फुलिङ्गिन्] स्फुलिंगयुक्त। चिनगारियोंवाला। जिसमें से अग्निकण निकल रहे हों [को०]।

स्फूर्छित—वि० [स०] १ फैलाया हुआ। विकीर्ण। २ विस्मृत। भूला हुआ [को०]।

स्फूर्ज—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ मेघगर्जन। बादलों का गरजना। २ इंद्र का अस्त्र। वज्र। ३ एकाएक फूट निकलना। उद्भूत या उदय होना। ४ प्रेमी प्रेमिका का प्रथम मिलन जिसमें आनंद के साथ भय की भी आशका रहती है। ५ एक राक्षस का नाम। ६ स्फूर्जक पौधा [को०]।

स्फूर्जक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ तिंदुक या तेंदू नाम का वृक्ष। २. सोना पाढा।

स्फूर्जथु—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ बिजली की कडक। २ चौलाई का साग।

स्फूर्जन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ तिंदुक या तेंदू नाम का वृक्ष। २ बलिया पीपल। नदीतरु। ३ गरज। गडगडाहट (को०)। ४ स्फोट (को०)।

स्फूर्जा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] विद्युत् गर्जन। गडगडाहट।

स्फूर्ण—वि० [स०] १ गर्जित। २ दे० 'स्फूर्छित' [को०]।

स्फूर्त—वि० [स०] १ हिलता डुलता। कंपित। २ जो एकाएक याद आया हो। जिसकी अचानक स्मृति हुई हो [को०]।

स्फूर्ति—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ धीरे धीरे हिलना। फडकना। स्फुरण। २ (विचार आदि) मन में फुरना या उदय होना (को०)। ३ काव्य की प्रेरणा। कविकर्म की उद्भूति या प्रेरणा (को०)। ४ कोई काम करने के लिये मन में उत्पन्न होनेवाली हलकी उत्तेजना। फुरती। तेजी। जैसे—स्नान करने से शरीर में स्फूर्ति आती है। ६ गर्व। घमड (को०)। ७ खिलना। विकसित होना (को०)। ८ उद्भूत या व्यक्त होना (को०)। ९ छलाँग। चौकडी (को०)।

स्फूर्तिकारक—वि० [स०] स्फूर्ति लानेवाला। फुर्ती या तेजी लानेवाला।

स्फूर्तिदायक—वि० [स०] जिससे स्फूर्ति प्राप्त हो। स्फूर्ति देनेवाला।

स्फूर्तिमान्[१]—वि० [स० स्फूर्तिमत्] १ फुर्तीला। स्फूर्ति से युक्त। उ०—वह जैसे क्षण भर के लिये स्फूर्तिमान् हो गया।—इंद्रजाल, पृ० ३०। २ कंपित। धडकता हुआ। विक्षुब्ध। ३ कोमलहृदय। दयार्द्रचित्त (को०)।

स्फूर्तिमान्[२]—सञ्ज्ञा पुं० शिव का उपासक। पाशुपत [को०]।

स्फेयस—वि० [स०] जो अतिशय स्थिर हो। जो प्रचुरतर एवं विस्तृत हो [को०]।

स्फेष्ठ—वि० [स०] १ प्रचुरतम। २ अत्यंत विस्तार से युक्त [को०]।

स्फोट—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ अंदर भरे हुए किसी पदार्थ का अपने ऊपरी आवरण को तोड या भेदकर बाहर निकलना। फूटना। जैसे,—ज्वालामुखी का स्फोट। २ शरीर में होनेवाला फोडा, फुंसी आदि। ३ मोती। मुक्ता। ४ सर्वदर्शनसंग्रह (पाणिनीय दर्शन) के अनुसार नित्य शब्द जिससे वर्णात्मक शब्दों के अर्थ का ज्ञान होता है। जैसे, कमल शब्द में क, म और ल ये तीन वर्ण हैं, और इन तीनों के अलग अलग उच्चारण से कुछ भी अभिप्राय नहीं निकलता। परंतु तीनों वर्णों का साथ साथ उच्चारण करने पर जो स्फोट होता है, उसी से कमल शब्द का अभिप्राय जाना जाता है। कुछ लोग इसी स्फोट (नित्य शब्द) को संसार का कारण मानते हैं। ५ मीमांसकों द्वारा मान्य नित्य शब्द। आभ्यंतर ध्वनि (को०)। ६ फूट पडना या खुलना। व्यक्त या प्रकट होना (को०)। ७ फैलना। विस्तार। फैलाव (को०)। ८ लघुखंड। छोटा टुकडा। ९ धान्य का फटकना। शूर्पादि द्वारा अन्न का प्रस्फोटन (को०)। १० फटना। विदीर्ण होना (को०)।

स्फोटक[१]—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ पिटिका फोडा। फुंसी। २ भिलावाँ। भल्लातक।

विशेष—भिलावाँ का तेल लगाने से शरीर में फोडा सा हो जाता है।

स्फोटक[२]—वि० [सं०] फट जानेवाला। फूटनेवाला (आग्नेय पदार्थ आदि)।

स्फोटकर—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'स्फोटबीजक' [को०]।

स्फोटन—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ अंदर से फोडना। २ विदारण। फाडना। ३ प्रकट या प्रकाशित करना। ४ शब्द। आवाज। ५ सुश्रुत के अनुसार वायु के प्रकोप से होनेवाली व्रण की पीडा जिसमें व्रण फटता हुआ सा जान पडता है। ६ हाथ की उँगलियाँ चटकाना (को०)। ७ शिव (को०)। ८ एकाएक फट पडना (को०)। ९ अनाज फटकना (को०)। १० हाथ आदि कँपाना या हिलाना (को०)। ११ परस्पर मिले हुए व्यंजनों का अलग अलग उच्चारण (को०)।

स्फोटनी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] बरमा [को०]।

स्फोटबीजक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] भिलावाँ [को०]।

स्फोटलता—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] कनफोडा नाम की लता।

स्फोटवाद—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] वह मत या सिद्धांत जो नित्य शब्द को संसार का कारण मानता हो [को०]।

स्फोटवादी—सञ्ज्ञा पुं० [स० स्फोटवादिन्] वह जो स्फोट या नित्य शब्द को ही संसार का मूल हेतु या कारण मानता हो। वैयाकरण या मीमांसक। उ०—पतंजलि के इस कथन की चाहे स्फोटवादी वैयाकरण जो व्याख्या करें पर इसका सीधा सादा यह अर्थ है।—शैली, पृ० २४।

स्फोटबीजक—सञ्ज्ञा पुं० [स०] भल्लातक। भिलावाँ।

स्फोटहेतु, स्फोटहेतुक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] भल्लातक। भिलावाँ।

स्फोटा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ साँप का फन। २ सफेद अनन्तमूल ३ हाथ का हिलाना (को०)।

स्फोटायन—संज्ञा पुं० [सं०] १ वैदिक ऋषि कक्षीवान् मुनि का एक नाम। २ व्याकरण के एक आचार्य जो पाणिनि के पूर्ववर्ती थे। पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी में इनका उल्लेख किया है।

स्फोटिक—संज्ञा पुं० [सं०] पत्थर या जमीन आदि को तोड़ने फोड़ने का काम।

स्फोटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ छोटा फोड़ा। फुंसी। २ हापुत्रिका नामक पक्षी।

स्फोटित¹—वि० [सं०] १ जिसका स्फोट किया गया हो। जो फोड़ा गया हो। २ जो व्यक्त या प्रकटित हो (को०)।

स्फोटित²—संज्ञा पुं० फटने की क्रिया। फटना (को०)।

स्फोटितनयन—वि० [सं०] जिसकी आँख फोड़ दी गई हो या जिसकी आँख फूटी हो। फूटी हुई आँखों वाला (को०)।

स्फोटितार्गल—वि० [सं०] अर्गला तोड़नेवाला। दरवाजे की कुंडी या ताला चटकानेवाला।

स्फोटिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] ककड़ी।

स्फोता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अनंतमूल। शारिवा। २ सफेद आक। सफेद मदार।

स्फोरण—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्फुरण' (को०)।

स्फ्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ यज्ञ में प्रयुक्त होनेवाला तलवार के आकार का एक काष्ठनिर्मित उपकरण। २ नौकादंड। बल्ली। पतवार। ३ मस्तूल का मजबूत डंडा। बल्ली (को०)।

स्मदिभ—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

स्मय¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ गर्व। अभिमान। शेखी। २ विस्मय। आश्चर्य। अचंभा (को०)। ३ मंद हास। मुसकान (को०)।

यौ०—स्मयदान = (१) गर्वयुक्त या घमंड से भरा हुआ दान। (२) किसी को देखकर या अनुकूल भाव से मुस्कुराना। स्मयनुत्ति = गर्वहीन करना। घमंड चूर करना।

स्मय²—वि० [सं०] अद्भुत। विलक्षण।

स्मयन—संज्ञा पुं० [सं०] मुसकान। मृदुहास (को०)।

स्मयमान—वि० [सं०] मुसकराता हुआ। उ०—नव मुख स्मयमान बिना, लगा खिन्न खिन्न स्मरण।—ग्रवामि, पृ० ६४।

स्मयी—वि० [सं० स्मयिन्] १ स्मययुक्त। अभिमानी। घमंडी। २ मंदहास से युक्त। मुसकराता हुआ (को०)।

स्मर—संज्ञा पुं० [सं०] १ कामदेव। मदन। उ०—(क) मदन मनोभव मन मथन, पंचसर स्मर मार। मीनकेतु कंदर्प हरि व्यापक विरह बिदार।—अनेकार्थ (शब्द०)। (ख) स्मर अग्नि की हित मान। ताको कहत विमान।—गुमान (शब्द०)। २ स्मरण। स्मृति। याद। ३ (संगीत में) षड्ज राग का एक भेद। ४ प्रेम। प्रीति। प्रणय (को०)। ५ ज्योतिष में लग्न से सप्तम स्थान जो पुरुष के लिये स्त्रीस्थान और स्त्री के लिये पतिस्थान का द्योतक है (को०)।

स्मरकथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्रियों के संबंध की या शृंगार रस की ऐसी बातें जिनसे काम उत्तेजित हो। प्रेमालाप।

स्मरकर्म—संज्ञा पुं० [सं० स्मरकर्मन्] कामुक आचार व्यवहार।

स्मरकार—वि० [सं०] जिससे काम का उद्दीपन हो। कामोद्दीपक।

स्मरकूप—संज्ञा पुं० [सं०] भग। योनि।

स्मरकूपक—संज्ञा पुं० [सं०] भग। योनि (को०)।

स्मरकूपिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] भग। योनि।

स्मरगुरु—संज्ञा पुं० [सं०] १ श्रीकृष्ण का एक नाम। २ वह जो कामकला की शिक्षा दे।

स्मरगृह—संज्ञा पुं० [सं०] भग। योनि।

स्मरचंद्र—संज्ञा पुं० [सं० स्मरचन्द्र] एक प्रकार का रतिबंध।

स्मरचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रीसंभोग के लिये एक प्रकार का रतिबंध।

स्मरच्छत्र—संज्ञा पुं० [सं०] भगनासा। भग की शिश्निका (को०)।

स्मरच्छद—संज्ञा पुं० [सं०] भग। योनि।

स्मरज्वर—संज्ञा पुं० [सं०] कामज्वर (को०)।

स्मरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी देखी, सुनी, बीती या अनुभव में आई बात का फिर से मन में आना। याद आना। आध्यान। जैसे,—(क) मुझे स्मरण नहीं आता कि आपने उस दिन क्या कहा था। (ख) वे एक एक बात भली भाँति स्मरण रखते हैं।

मुहा०—स्मरण दिलाना = भूली हुई बात याद कराना। जैसे,—उनके स्मरण दिलाने पर मैं सब बातें समझ गया।

२ नौ प्रकार की भक्तियों में से एक प्रकार की भक्ति जिसमें उपासक अपने उपास्यदेव को बराबर याद किया करता है। उपास्य का अनवरत चिंतन। उ०—श्रवण, कीर्तन स्मरणपादरत, अर्चन वंदन दास। सख्य और आत्मानिवेदन, प्रेम लक्षणा जास।—सूर (शब्द०)। ३ साहित्य में एक प्रकार का अलंकार जिसमें कोई बात या पदार्थ देखकर किसी विशिष्ट पदार्थ या बात का स्मरण हो आने का वर्णन होता है। जैसे,—कमल को देखकर किसी के सुंदर नेत्रों के स्मरण हो आने का वर्णन। उ०—(क) सूल होत नवनीत निहारी। मोहन के मुख जोग बिचारी। (ख) लखि शशि मुख की होत सुधि तन सुधि घन को जोहि। ४ स्मृतिपत्रित। याददाश्त। स्मरणशक्ति (को०)। ५ परंपराप्राप्त विधान। परंपरागत विधि (को०)। ६ किसी देव का मानसिक जाप (को०)। ७ खेद के साथ याद करना (को०)।

स्मरणपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह पत्र जो किसी को कोई बात स्मरण दिलाने के लिये लिखा जाय।

स्मरणपत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह पत्र जो किसी को किसी विषय का स्मरण दिलाने के लिये लिखा या भेजा जाय। २ वह पत्र जिसमें कोई बात याद रखने के लिये लिखी जाय। याददाश्त।

स्मरणपदवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मृत्यु। मौत। मरण (को०)।

स्मरणभू—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो स्मरण से पैदा होता हो। कामदेव (को०)।

स्मरणशक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह मानसिक शक्ति जो अपने सामने होनेवाली घटनाओं और सुनी जानेवाली बातों को ग्रहण करके छोड़ती है, और आवश्यकता पड़ने, प्रसंग आने या मस्तिष्क पर जोर देने से वह घटना या बात फिर हमारे मन में, स्पष्ट कर देती है। याद रखने की शक्ति। याददाश्त। जैसे,—(क) आपकी स्मरणशक्ति बहुत तीव्र है। (ख) अभ्यास से किसी विशिष्ट विषय में स्मरणशक्ति बहुत बढ़ाई जा सकती है।

स्मरणानुग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्मरण करने की कृपा। स्मरण संबंधी अनुकंपा। २ कृपापूर्वक याद करना। अनुग्रहपूर्वक स्मरण करना [को०]।

स्मरणापत्यतर्पक—संज्ञा पुं० [सं०] कछुवा। कच्छप [को०]।

स्मरणासक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] भगवान के स्मरण में होनेवाली आसक्ति जिसके कारण भक्त दिन रात भगवान् या इष्टदेव का स्मरण करता है। उ०—(यह भक्ति) एक रूप ही होकर गुणमाहात्मासक्ति, रूपासक्ति, पूजासक्ति, स्मरणासक्ति, दासासक्ति, सख्यासक्ति, कांतासक्ति, वात्सल्यासक्ति, रूप में एकादश प्रकार की होती है।—हरिश्चंद्र (शब्द०)।

स्मरणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुमिरिनी। जपमाला। जप करने की माला [को०]।

स्मरणीय—वि० [सं०] [वि० स्त्री० स्मरणीया] स्मरण रखने योग्य। याद रखने लायक। जो भूलने योग्य न हो। जैसे,—यह घटना भी स्मरणीय है।

स्मरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्मर या कामदेव का भाव या धर्म। २ स्मरण का भाव या धर्म।

स्मरदशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह दशा जो प्रेमी या प्रेमिका के न मिलने पर उनके विरह में होती है। विरह की अवस्था।

विशेष—यह दस प्रकार की मानी गई है—असौष्ठव, ताप, पांडुता, कृशता, अरुचि, अधृति, अनालंबन, तन्मयता, उन्माद और मरण।

स्मरदहन—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव को भस्म करनेवाले, शिव।

स्मरदायी—वि० [सं० स्मरदायिन्] कामोत्तेजक।

स्मरदीपन—वि० [सं०] जिससे काम का दीपन हो। जिससे काम उत्तेजित हो। कामोत्तेजक।

स्मरदुर्मद - वि० [सं०] कामोन्मत्त [को०]।

स्मरध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुरुष का लिंग। २ स्त्री की योनि। भग। ३ वाद्य। बाजा। ४ कामदेव का चिह्न मत्स्य जो उनकी ध्वजा में है (को०)।

स्मरध्वजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चाँदनी रात। २ कामदेव का चिह्न। काम की पताका।

स्मरना पु—क्रि० स० [सं० स्मर (=स्मरण, याद) + हिं० ना (प्रत्य०)] स्मरण करना। याद करना। उ०—तुम्हैं देखिबे की महा चाह बाढ़ी, निहारैं, बिचारैं, सराहैं, स्मरैं जू। रहे बैठि न्यारी, घटा देखि कारी, बिहारी, बिहारी, बिहारी, ररैं जू। भई काल-बौरी सि दौरी फिरी, आजु बाढ़ी दसा ईस का धौं करैं जू। बिथा मैं ग्रसी सो भुजंगै डसी सी, छरी सी, मरी सी, घरी सी, मरैं जू।—रसकुसुमाकर (शब्द०)।

स्मरनिपुण—वि० [सं०] कामकला में प्रवीण। रतिकुशल [को०]।

स्मरपीडित—वि० [सं० स्मरपीडित] काम द्वारा पीड़ित या सताया हुआ। काम का मारा [को०]।

स्मरप्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] कामदेव की पत्नी—रति।

स्मरबाणपंक्ति—संज्ञा पुं० [सं० स्मरबाण पंक्ति] कामदेव के पाँचो बाण [को०]।

स्मरभासित—वि० [सं०] कामव्यथित। कामतप्त। कामोत्तेजित [को०]।

स्मरभू—वि० [सं०] स्मरजन्य। कामजन्य। काम के कारण उत्पन्न।

स्मरमंदिर—संज्ञा पुं० [सं० स्मरमन्दिर] योनि। भग।

स्मरमय—वि० [सं०] जो स्मर या काम के कारण उत्पन्न हो। कामजन्य। स्मरजन्य [को०]।

स्मरमुट्—संज्ञा पुं० [सं० स्मरमुष्] शिव [को०]।

स्मरमोह—संज्ञा पुं० [सं०] कामजन्य मूर्छा। प्रणयोन्माद [को०]।

स्मररुक्—संज्ञा पुं०, स्त्री० [सं० स्मररुज्] कामजन्य पीडा या व्याधि [को०]।

स्मरलखे—संज्ञा पुं० [सं०] प्रेमपत्र [को०]।

स्मरलेखनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शारिका पक्षी। मैना।

स्मरवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रेमासक्त या कामलुब्धा स्त्री [को०]।

स्मरवधू—संज्ञा स्त्री० [सं०] कामदेव की पत्नी, रति।

स्मरवल्लभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ कामदेव का प्रिय मित्र, वसंत। [को०] २ अनिरुद्ध का एक नाम।

स्मरवीथिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या। रंडी।

स्मरवृद्धि—संज्ञा पुं० [सं०] १ कामभावना का अभिवर्धन या उत्तेजन। २ कामवृद्धि या कामज नामक क्षुप।

स्मरशत्रु—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव का दहन करनेवाले, महादेव।

स्मरशबर—संज्ञा पुं० [सं०] शबर लोगों का प्रेम। बर्बर या क्रूर प्रेम।

स्मरशर—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव के बाण जो संख्या में पाँच कहे गए हैं। इसी से कामदेव का नाम पंचबाण और पंचशर भी है। [को०]।

स्मरशासन—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव का शासन करनेवाले, शिव [को०]।

स्मरशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें कामकला का विवेचन हो। कामशास्त्र।

स्मरसख[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। २ ऋतुपति वसंत। (को०)।

स्मरसख[२]—वि० [सं०] जिससे काम की उत्तेजना हो। कामोद्दीपक।

स्मररस—वि० [सं०] जो काम की उत्तेजना करने में समर्थ हो। जिससे काम का दीपन संभव हो [को०]।

स्मरस्तंभ—संज्ञा पुं० [सं० स्मरस्तम्भ] पुरुष की इंद्रिय। लिंग।

स्मरस्मरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेवती।

स्मरस्मर्य--संज्ञा पुं० [सं०] गधा।

स्मरहर--संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

स्मरांकुश--संज्ञा पुं० [सं० स्मराङ्कुश] १ लिंग। २ नख (को०)। ३ कामपीडित। कामातुर व्यक्ति (को०)।

स्मराध--वि० [सं० स्मरान्ध] कामाध।

स्मराकुल--वि० [सं०] कामपीडित। कामग्रस्त [को०]

स्मराकृष्ट--वि० [सं०] प्रेम द्वारा आकर्षित। प्रेमाभिभूत [को०]।

स्मरागार--संज्ञा पुं० [सं०] भग। योनि।

स्मरातुर--वि० [सं०] कामार्त। कामातुर [को०]।

स्मराधिवास--संज्ञा पुं० [सं०] अशोक वृक्ष।

स्मराम्र--संज्ञा पुं० [सं०] कलमी आम। राजाम्र।

स्मरारि--संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव के शत्रु, महादेव। उ०--स्मरारि सम्मर निज रूपा। यथा दिखावहिं विमल स्वरूपा।--शकर-दिग्विजय (शब्द०)।

स्मरार्त--वि० [सं०] कामपीडित [को०]।

स्मरासव--संज्ञा पुं० [सं०] १ ताड मे से निकलनेवाला ताडी नामक मादक द्रव्य। २ थूक। लार। लाला

स्मरोत्सुक--वि० [सं०] दे० 'स्मरातुर' [को०]।

स्मरोद्दीपन--संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो काम का उद्दीपन करता हो। काम को उद्दीप्त करनेवाला। २ एक प्रकार का तेल। केश तैल [को०]।

स्मरोन्माद--संज्ञा पुं० [सं०] कामजन्य उन्माद [को०]।

स्मरोपकरण--संज्ञा पुं० [सं०] सुगंधित पदार्थ आदि कामवर्धक वस्तुएँ [को०]।

स्मर्ण(पु)--संज्ञा पुं० [सं० स्मरण] दे० 'स्मरण'।

स्मर्तव्य--वि० [सं०] १ स्मरण रखने योग्य। याद रखने लायक। २ जिसकी स्मृति मात्र शेष रह गई हो (को०)।

स्मर्ता[1]-- संज्ञा पुं० [सं० स्मर्तृ] १ वह जो स्मरण रखे। याद रखने-वाला। स्मरण रखनेवाला व्यक्ति। २ आचार्य। गुरु (को०)।

स्मर्ता[2]--वि० स्मरण रखनेवाला।

स्मर्य स्मर्य्य--वि० [सं०] स्मरण रखने योग्य। याद रखने लायक। स्मरणीय।

स्मशान(पु)--संज्ञा पुं० [सं० श्मशान] मरघट दे० 'श्मशान'।

विशेष--'श्मशान' के योग से बनानेवाले शब्दो के लिये देखो 'श्मशान' के शब्द।

स्मार[1]--वि० [सं०] कामदेव सबधी। स्मर सबधी।

स्मार[2]--संज्ञा पुं० स्मृति। याद। स्मरण [को०]।

स्मारक[1]--वि० [सं०] वि० स्त्री० स्मारिका] स्मरण करानेवाला। याद दिलानेवाला। जैसे, कोणोत्सव स्मारक सग्रह।

स्मारक[2]--संज्ञा पुं० [सं०] १ वह कृत्य, पदार्थ या वस्तु आदि जो किसी की स्मृति बनाए रखने के लिये प्रस्तुत किया जाय। यादगार। जैसे,--महाराज शिवा जी का स्मारक। महारानी विक्टोरिया का स्मारक। २ वह चीज जो किसी को अपना स्मरण रखने के लिये दी जाय। यादगार। जैसे,--मेरे पास यही एक पुस्तक तो आपका स्मारक है।

स्मारकनिधि--संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी की स्मृति की रक्षा के लिये एकत्र की गई धनराशि। जैसे,--कस्तूरबा स्मारकनिधि। गाधी स्मारकनिधि।

स्मारण--संज्ञा पुं० [सं०] १ स्मरण कराने की क्रिया। याद दिलाना। २ परिसख्यान करना। फिर से गिनना या जाँच करना (को०)।

स्मारणी--संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्राह्मी या ब्रह्मी नाम की वनस्पति जिसके सेवन से स्मरणशक्ति का बढना माना जाता है।

स्मारिका--संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कार्य या वस्तु (विशेषत पत्रिकाएँ, पुस्तिकाएँ आदि) जो किसी विशिष्ट कार्य की स्मृति बनाए रखने के निमित्त प्रस्तुत की गई हो।

स्मारित[1]--संज्ञा पुं० [सं०] कृतसाक्षी के पाँच भेदो मे से एक। वह साक्षी जिसका नाम पत्र पर न लिखा हो, परतु अर्थी अपने पक्ष के समर्थन के लिये स्मरण करके बुलावे।

स्मारित[2]--वि० जिसकी याद कराई गई हो। स्मरण कराया हुआ [को०]

स्मार्त[1]--संज्ञा पुं० [सं०] १ वे कृत्य आदि जो स्मृतियो मे लिखे हुए हैं। वह जो स्मृतियो मे लिखे अनुसार सब कृत्य करता हो। ३ स्मृतियो के अनुसार चलनेवाला व्यक्ति या सप्रदाय ४ वह जो स्मृतियो आदि का अच्छा ज्ञाता हो। स्मृति शास्त्र का पंडित।

स्मार्त[2]--वि० १ स्मृति सबधी। स्मृति का। २ स्मृतियो मे विहित या कहा हुआ (को०)। ३ विधिविहित। वैध (को०)। ४ स्मृतियो को माननेवाला (को०)। ५ जो स्मरण मे हो। जो स्मृत हो (को०)। ६ गृह सबधी (को०)।

स्मार्तकर्म--संज्ञा पुं० [सं०] स्मृतियो मे विहित कर्म।

स्मार्तकाल--संज्ञा पुं० [सं०] १ वह समय जब तक स्मरण बना रह सके। याददाश्त बने रहने की अवधि। २ १०० वर्ष का समय। शताब्दी [को०]।

स्मार्तिक--वि० [सं०] स्मृति सबधी। स्मृति का।

स्मार्य--वि० [सं०] स्मरणीय। स्मरण करने योग्य [को०]।

स्माल--वि० [अ०] छोटा। लघु।

यौ०--स्माल काटेज इडस्ट्री = छोटे या लघु गृहोद्योग।

स्माल काज कोर्ट--संज्ञा पुं० [अ० स्माल काजेज कोर्ट] वह दीवानी अदालत जहाँ छोटे छोटे मामले होते हैं। छोटी अदालत। अदालत खफीफा।

विशेष--हिंदुस्तान मे कलकत्ता, बबई आदि बडे शहरो मे स्माल काज कोर्ट है।

स्मित[1]--संज्ञा पुं० [सं०] मद हास्य। धीमी हँसी। उ०--श्रम अभिलाप सगर्व स्मित क्रोध हरष भय भाव। उपजत एकहि बार जहँ तहँ किलकिंचित हाव।--केशव (शब्द०)।

स्मृतिविद्—वि० [स०] स्मृति शास्त्र का जानकर या ज्ञाता। धर्मशास्त्र का जानकार।

स्मृतिविनय—सज्ञा पुं० अपने कम के प्रति अनवधान व्यक्ति को उपालंभ या वाग्दंड देना [को०]।

स्मृतिविभ्रम—सज्ञा पुं० [स०] १ दे० 'स्मृतिभ्रंश'। २ ठीक याद न पडना [को०]।

स्मृतिविरुद्ध—वि० [स०] जो स्मृति या विधि के विरुद्ध हो। जो धर्मशास्त्र के विपरीत हो [को०]।

स्मृतिविरोध—सज्ञा पुं० [स०] १ स्मृति या विहित विधि से विपरीत होना। अवैधता। अशास्त्रीयता। २ किसी विषय पर दो स्मृतियों का अलग अलग विचार [को०]।

स्मृतिविषय—सज्ञा पु० [स०] दे० स्मृतिपथ।

स्मृतिवेत्ता—वि० [स० स्मृतिवेत्तृ] दे० 'स्मृतिविद्'।

स्मृतिशास्त्र—सज्ञा पु० [स०] धर्मशास्त्र। विशेष दे० 'स्मृति'।

स्मृतिशेष—वि० [स०] जिसकी केवल स्मृति या याद ही रह गई हो। मृत [को०]।

स्मृतिशैथिल्य—सज्ञा पुं० [स०] स्मृति की शिथिलता। स्मरण शक्ति की कमजोरी [को०]।

स्मृतिसमत—वि० [सं० स्मृतिसम्मत] स्मृतिशास्त्र के अनुकूल। धर्मशास्त्र द्वारा अनुमोदित [को०]।

स्मृतिसस्कार—सज्ञा पुं० [स०] स्मृति का सस्कार। स्मरण शक्ति की छाप [को०]।

स्मृतिसाध्य—वि० [स०] जो स्मृति या धर्मशास्त्र द्वारा साध्य हो। जिसे स्मृतियों द्वारा प्रमाणित किया जा सके [को०]।

स्मृतिसिद्ध—वि० [स०] स्मृतिशास्त्र द्वारा कथित। शास्त्र द्वारा प्रमाणित [को०]।

स्मृतिहिता—सज्ञा स्त्री० [स०] स्मरण शक्ति के लिये हितकारक शखपुष्पी नाम की लता।

स्मृतिहीन—वि० [स०] जो स्मरण शक्ति से कमजोर हो। जो स्मृतिमान् न हो [को०]।

स्मृतिहेतु—सज्ञा पुं० [स०] स्मृति का कारणभूत पदार्थ, वस्तु आदि। स्मृति का अकन, चिह्न या सस्कार [को०]।

स्मृत्यतर—स० पु० [स० स्मृत्यन्तर] अन्य स्मृतिशास्त्र। दूसरा धर्मशास्त्र या विधिशास्त्र [को०]।

स्मृत्यपेत—वि० [स०] १ जो स्मृतियों के विरुद्ध हो। शास्त्रविरुद्ध। २ जो याद न पडे। जिसकी याद न हो। विस्मृत। ३ जो विधिविहित न हो। अवैध। अन्याय्य। असत्य [को०]।

स्मृत्युक्त—वि० [स०] स्मृतियों मे कथित। शास्त्रविहित। शास्त्रोक्त।

स्मेर¹—वि० [स०] १ खिला हुआ। प्रफुल्लित। विकसित। २ मुस्कराता हुआ। मद हास्य से युक्त। ३ घमडी। अभिमानी। ४ स्पष्ट। प्रत्यक्ष। व्यक्त [को०]।

स्मेर²—सज्ञा पुं० १ मद हास। मृदु हास। मुस्कराहट। १ प्रकाशन। आविष्करण। व्यक्ति। सुस्पष्टता [को०]।

स्मेरता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ मुसकुराना। मद हास करने की क्रिया या भाव। २ मृदु हास। मद हँसी [को०]।

स्मेरमुख—वि० [स०] मद हास से युक्त। मुसकुराता हुआ। हँसमुख [को०]।

स्मेरविष्किर—सज्ञा पुं० [सं०] गर्वयुक्त पक्षी—मोर। मयूर [को०]।

स्यंद—सज्ञा पुं० [स० स्यन्द] १ टपकना। चूना। रसना। २ प्रवाहित होना। बहना। ३ गलना। पानी होना। ४ पसीना निकलना। स्वेदोद्गम। ५ रथ। स्यदन (को०)। ६ शीघ्रतापूर्वक जाना। त्वरित गति (को०)। ७ एक प्रकार का चक्षुरोग। ८ चद्रमा।

स्यदक—सज्ञा पुं० [स० स्यन्दक] तेंदू। तिंदुक वृक्ष।

स्यदन¹—सज्ञा पुं० [स० स्यन्दन] १ चूना। टपकना। रसना। क्षरण। स्राव। २ गलना। पानी हो जाना। ३ रथ। गाडी। ४ जाना। चलना। गमन। ५ तेजी से जाना या बहना। ६ युद्ध रथ। विशेषत युद्ध मे काम आनेवाला रथ। उ०—चढि स्यदन चदन नीर दै नदन करि द्विजवर पदहि। नदनंदनपुर तरतो भयो सुभट सुदामा धरि मदहि।—गोपाल (शब्द०)। ७ वायु। हवा। ८ गत उत्सर्पिणी के २३ वें अर्हत् का नाम। (जैन)। ९ तिनिश वृक्ष। तिनसुना। १० जल। ११ चित्र। तस्वीर। १२ घोडा। तुरग। १३ एक प्रकार का मत्र जिसमें अस्त्र अभिमंत्रित किए जाते थे। १४ तेंदू। तिंदुक वृक्ष।

स्यदन²—वि० १ जल्दी से जानेवाला। तीव्रगामी। द्रुतगामी। २ चूनेवाला। ३ प्रवाहित होने या बहनेवाला। गलनेवाला। ४ क्षरणशील। रसनेवाला [को०]।

स्यदन तैल—सज्ञा पुं० [सं० स्यन्दन तैल] वैद्यक मे एक प्रकार की तैलौषध जो भगदर के लिये उपकारी मानी जाती है।

विशेष—इसके बनाने की विधि इस प्रकार है—चीता, आक, निसोत, पाट, कटूमर, सफेद कनेर, थूहर, हरताल, कलिहारी, वच, सज्जी, और मालकँगनी, इन सबका कल्क, जो कुल मिलाकर एक सेर हो, ४ सेर तिल के तेल मे पकाया जाता है। इसके लगाने से भगदर सूख जाता है। इसे निस्यदन तैल भी कहते हैं।

स्यदनद्रुम—सज्ञा पुं० [स० स्यन्दनद्रुम] १ तिनसुना। तिनिश वृक्ष।

विशेष—इस वृक्ष की लकडी रथ के पहिए आदि बनाने के काम मे आती थी, इसी से इसका नाम स्यदनद्रुम पडा।

२ तेदू। तिंदुक।

स्यदनध्वनि—सज्ञा स्त्री० [स० स्यन्दनध्वनि] रथ के चलने की आवाज या ध्वनि [को०]।

स्यदना—वि० स्त्री० [स० स्यन्दना] दे० 'स्यदन²'।

स्यदनारुढ—वि० [स० स्यन्दनारुढ] जो रथ पर सवार हो। रथारुढ [को०]।

स्यदनारोह—सज्ञा पुं० [स० स्यन्दनारोह] वह योद्धा जो रथ पर चढकर युद्ध करता हो। रथी।

स्यदनाह्वय—संज्ञा पुं० [सं० स्यन्दनाह्वय] १ तिनसुना। तिनिश वृक्ष। २ तेंदू। तिंदुक वृक्ष।

स्यदनि—संज्ञा पुं० [सं० स्यन्दनि] तिनसुना। तिनिश वृक्ष।

स्यदनिका—संज्ञा स्त्री० [सं० स्यन्दनिका]। १ छोटी नदी। नहर। २ लार की बूंद।

स्यदनी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्यन्दनी] १ थूक। लार। २ मूत्रनाडी।

स्यदिका—संज्ञा स्त्री० [सं० स्यन्दिका] रामायण के अनुसार एक प्राचीन नदी का नाम।

स्यदिता—वि० [सं० स्यन्दितृ] तीव्र गति से जानेवाला। शीघ्रगामी [को०]।

स्यदिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्यन्दिनी] १ थूक। लार। २ वह गाय जिसने एक साथ दो बछडो को जन्म दिया हो।

स्यदी—वि० [सं० स्यन्दिन्] [वि० स्त्री० स्यदिनी]। १ रिसनेवाला। क्षरणशील। २ वेग से गति करने या बहनेवाला [को०]।

स्यदूर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सिन्दूर] दे० 'सिंदूर'। उ०—कचु कसण ते खोलिया कूँ कूँ चदन सीरह स्यदूर।—बी० रासो, पृ० ६८।

स्यदलिका—संज्ञा स्त्री० [सं० स्यन्दोलिका] १ झूलने की क्रिया। झूलना। २ झूलना। हिंडोला (को०)।

स्यद—संज्ञा पुं० [सं०] १ क्षरण। स्यदन। बहना। २ तेजी से चलना। तीव्र गति। वेग [को०]।

स्यन्न—वि० [सं०] १ रिसनेवाला। बहनेवाला। २ रिसा हुआ टपका हुआ [को०]।

स्यमतक—संज्ञा पुं० [सं० स्यमतक] पुराणोक्त एक प्रसिद्ध मणि।

विशेष—भागवत पुराण मे इस मणि की कथा इस प्रकार है—यह मणि सत्राजित् नामक यादव ने अपनी तपस्या से सूर्यनारायण को प्रसन्न कर प्राप्त की थी। यह सूय के समान प्रभाविशिष्ट थी। यह प्रति दिन आठ भार (१ भार = २० तुला = २००० पल) सोना देती थी। जिस स्थान या नगर मे यह रहती थी, वहाँ रोग, शोक, दुःख, दारिद्रय आदि का नाम न रहता था। यादवो को कहने से श्रीकृष्ण ने राजा उग्रसेन के लिये यह मणि माँगी, पर सत्राजित् ने नही दी। सत्राजित् से उसके भाई प्रसेन ने यह मणि ले ली और कठ मे धारण कर आखेट करने गया। वहाँ एक सिंह ने उसे मार डाला। मणि लेकर सिंह एक गुफा मे घुसा। गुफा मे रीछो का राजा जाववत रहता था। मणि के प्रकाश से गुफा को प्रकाशमान् देखकर जाववत आ पहुँचा और उसने सिंह को मारकर मणि हस्तगत की। इधर श्रीकृष्ण पर यह कलक लगा कि उन्होने प्रसेन को मारकर मणि ले ली है। यह सुनकर खोजते हुए श्री कृष्ण जाववत की गुफा मे पहुँचे और उसे परास्त कर उन्होने मणि का उद्धार किया। जाववत ने श्रीकृष्ण को साक्षात् भगवान् जानकर अपनी कन्या जाववती उनको अर्पण की। श्रीकृष्ण ने लौटकर वही मणि सत्राजित् को दे दी। सत्राजित् इसलिये बहुत लज्जित और दुःखी हुआ कि मैंने श्रीकृष्ण पर झूठा कलक लगाया था। उसने भक्तिभाव से अपनी कन्या सत्यभामा और मणि श्रीकृष्ण को भेंट की। सत्यभामा को तो श्रीकृष्ण ने अगीकार कर लिया, पर मणि लौटा दी। इसके अनतर सत्राजित् को मार शतधन्वा ने उक्त मणि ले ली। अत मे शतधन्वा श्रीकृष्ण के हाथो मारा गया और मणि सत्यभामा को मिल गई। कहते है, श्रीकृष्ण ने भादो की चौथ का चद्रमा देखा था, इसी से उनपर मणि के हरण का झूठा कलक लगा था। इसी से भादो महीने की चौथ का चद्रमा लोग नही देखते।

स्यमतपचक—संज्ञा पुं० [सं० स्यमन्तपञ्चक] एक तीर्थ का नाम जहाँ भागवत के अनुसार, परशुराम ने पितरों का शोणित मे तर्पण किया था।

स्यमिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ चीटियो या दीमको का बनाया हुआ मिट्टी का घर। बाँबी। वल्मीक। २ एक प्रकार का वृक्ष। ३ मेघ। बादल (को०)। ४ काल। समय (को०)।

स्यमिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] नील का पौधा। नीली। स्यमीका [को०]।

स्यमीक—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाँबी। वल्मीक। २ समय। काल। ३ बादल। मेघ। ४ जल। जीवन। पानी। ५ एक प्राचीन राजवश का नाम।

स्यमीका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नील का पौधा। २ एक प्रकार का कीडा।

स्याँप—संज्ञा पुं० [हिं० साँप] दे० 'साँप'। उ०—सो एक दिन वा लरिकिना को स्याँप ने काटी।—दो सौ बावन०, भा० पृ० ६६।

स्यात्—अव्य० [सं०] कदाचित्। शायद।

स्याद्वाद—संज्ञा पुं० [सं०] जैन दर्शन जिसमे एक वस्तु मे नित्यत्व अनित्यत्व, सदृशत्व, विरूपत्व, सत्व, असत्व आदि अनेक विरुद्ध धर्मो का सापेक्ष स्वीकार किया जाता है और कहा जाता है कि स्यात् यह भी है स्यात् वह भी है आदि। अनेकातवाद।

स्याद्वादिक—संज्ञा पुं० [सं०] स्याद्वाद के सिद्धात का अनुयायी। स्याद्वादी। जैन [को०]।

स्याद्वादी—संज्ञा पुं० [सं० स्याद्वादिन्] स्याद्वाद को माननेवाला। स्याद्वादिक [को०]।

स्यान(पु)—वि० [सं० सज्ञान] दे० 'स्याना'। उ०—(क) भे सुत सुता स्यान सुख पागे।—रघुराज (शब्द०)। (ख) विषम शर वेधत न स्यान के।—देव (शब्द०)।

स्यानप(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सयानपन] दे० 'स्यानपन'।

स्यानपत—संज्ञा स्त्री० [हिं० स्याना + पत (प्रत्य०)] १ चतुरता। चतुराई। २ चालाकी। धूर्तता।

स्यानपन—संज्ञा पुं० [हिं० स्याना + पन (प्रत्य०)] १ चतुरता। बुद्धिमानी। होशियारी। २ चालाकी। धूर्तता।

स्याना[1]—वि० [सं० सज्ञान] [वि० स्त्री० स्यानी] १ चतुर। बुद्धिमान्। होशियार। जैसे,—(क) तुम स्याने होकर ऐसी बातें करते

हो। (ख) वे बड़े स्याने हैं, उनके आगे तुम्हारी दाल नहीं गलने की। २ चालाक। काइयाँ। धूर्त। जैसे,—उसे तुम कम मत समझो, वह बड़ा स्याना है। ३ जो अब बालक न हो। बडा। वयस्क। बालिग। जैसे,—(क) जब लडका स्याना हो जाय, तब उसका व्याह करना चाहिए। (ख) ज्यों ज्यों वह स्याना हो रहा है, त्यों त्यों बिगड रहा है।

स्याना²—संज्ञा पुं० १ बडा बूढा। वृद्ध पुरुष। जैसे,—(क) स्यानों का कहना मानना चाहिए। (ख) पहले घर के स्यानों से पूछ लो, फिर यह काम करो। २ वह जो झाड फूक करता हो। झाड फूक करनेवाला। जतर मतर करनेवाला। ओझा। ३ गाँव का मुखिया। नबरदार। ४ चिकित्सक। हकीम।

स्यानाचारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० स्याना + चार (प्रत्य०)] वह रसूम जो गाँव के मुखिया को मिलता है।

स्यानापन—संज्ञा पुं० [हिं० स्याना + पन (प्रत्य०)] १ स्याने होने की अवस्था। लडकपन के बाद की अवस्था। बालिग होने की अवस्था। युवावस्था। जैसे,—उसका व्याह स्यानेपन में हुआ था। २ चतुराई। चातुरी। होशियारी। ३ चालाकी। धूर्तता।

स्यापा—संज्ञा पुं० [फा० स्याहपोश] मरे हुए मनुष्य के शोक में कुछ काल तक घर की तथा नाते रिश्ते की स्त्रियों के प्रति दिन एकत्र होकर रोने और शोक मनाने की रीति।

विशेष—मुसलमानों तथा पंजाब के हिंदुओं में यह चाल है कि घर पर स्त्रियाँ एकत्र होकर रोती पीटती हैं। वे दिन रात में एक ही बार भोजन करती हैं और घर के बाहर नहीं निकलतीं। इसी को स्यापा कहते हैं।

मुहा०—स्यापा छाना, स्यापा पडना। (१) रोना चिल्लाना मचना। (२) बिलकुल उजाड या सुनसान होना। जैसे,—इस बाजार में तो सरेशाम ही स्यापा पड जाता है।

स्याबास(पु)—अव्य० [फा० शाबाश] दे० 'शाबाश'। उ०—बार बार कह मुख स्याबासू। कियो सत्य पितु विष्णु विसासू।—रघुराज (शब्द०)।

स्याम¹(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्याम] दे० श्याम। उ०—विधु अति प्यारी रोहिनी तामैं जनमे स्याम। अति सन्निधि कै चद्र के पूरन मन के काम।—व्यास (शब्द०)।

स्याम²—वि० दे० 'श्याम'। उ०—नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन बारिज नयन। करहु सो मम उर धाम सदा छीर सागर सयन।—तुलसी (शब्द०)।

स्याम³—संज्ञा पुं० भारतवर्ष के पूर्व के एक देश का नाम।

स्यामक(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्यामक] दे० 'श्यामक'। उ०—स्यामक नामक वीर चलेउ वसुदेव अनुज बढि।—गोपाल (शब्द०)।

स्यामकरन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्यामकर्ण] दे० 'श्यामकर्ण'। उ०—स्यामकरन अगनित हय होते। ते तिन्ह रथन्ह सारथिन्ह जोते।—तुलसी (शब्द०)।

स्यामकर्न(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्यामकर्ण]। दे० 'श्यामकर्ण'। उ०—कहूँ अरन तन तुरँग बरथा। कितहूँ स्यामकरन के जूथा।—रामाश्वमेध (शब्द०)।

स्यामता(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० श्यामता] दे० 'श्यामता'। उ०—मारेउ राहु ससिहि कह कोई। उर महँ परी स्यामता सोई।—तुलसी (शब्द०)।

स्यामताई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० श्यामता] दे० 'श्यामता'।

स्यामल(पु)—संज्ञा [सं० श्यामल] दे० 'श्यामल'। उ०—लता ओट तब सखिन लखाये। स्यामल गौर किसोर सुहाये।—तुलसी (शब्द०)।

स्यामलता(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० श्यामलता]। दे० 'श्यामलता' उ०—स्वच्छता सोहि रही इनमैं उन अक मैं श्यामलता सरसावत। —रसकुसुमाकर (शब्द०)

स्यामलिया(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्यामल, हिं० स्यामल + इया (प्रत्य०)] दे० 'साँवला'। उ०—रँगौ गयौ मन पट अरी स्यामलिया के रग। कारी कामरि पै चढै अब क्यों दूजो रग।—रसनिधि (शब्द०)।

स्यामा(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० श्यामा] १ राधिका। वृषभानुजा। उ०—निज निज उर छू छू करी मॉहँ स्यामा स्याम।—भिखारी ग्र०, भा० १, पृ० २२। २ एक पक्षी। दे० 'श्यामा'। उ०—स्यामा बाम सुतरु पर देखी।—मानस, १।३०३। ३ सोलह वर्ष की तरुणी। षोडशी। उ०—दाम पियनेह छिन छिन भाव बदलति स्यामा सविराग दीन मति कै मखाति है।—भिखारी० ग्र०, भा० १, पृ० ४३।

स्यार—संज्ञा पुं० [हिं० सियार] [स्त्री० स्यारनी] सियार। गीदड। शृगाल। उ०—स्यार कटकटै लगे सबन सों डटै लगे, अग खड तटै लगे सोनित को चटै लगे।—गोपाल (शब्द०)।

यो०—स्यारजन = शृगाल की तरह कायर व्यक्ति। स्यारपन। स्यार लाठी।

स्यारकाँट।—संज्ञा पुं० [स्यार + हिं० काँटा] सत्यानासी। स्वर्णक्षीरी।

स्यारपन(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सियार + पन (प्रत्य०)] सियार या गीदड का सा स्वभाव। शृगालप्रकृति। उ०—आयो सुनि कान्ह भूल्यो सकल हुस्यारपन, स्यारपन कस को न कहत सिरातु है।—रस कुसुमाकर (शब्द०)।

स्यारलाठी—संज्ञा स्त्री० [हिं० स्यार + लाठी] अमलतास।

स्यारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सियारी] १ सियार की मादा। सियारी। सियारिन। गीदडी। शृगाली। उ०—बोलहि मारजार अरु स्यारी। हारहुगे मनू कहत पुकारी।—गोपाल (शब्द०)। २ कातिक अगहन में तैयार होनेवाली फसल। खरीफ की फसल। (बुदेल०)।

स्याल¹—संज्ञा पुं० [सं०] पत्नी का भाई। साला। श्याल। श्यालक। उ०—सुनत स्याल के वचन महीपति पठै सुमत तुरता। भ्रातन सहित राम बुलवायो आये अति बिलसता।—रघुराज (शब्द०)।

स्याल²—संज्ञा पुं० [हिं० स्यार] दे० 'सियार' या 'स्यार'। उ०—सरमा से कुत्ते, स्याल आदि उत्पन्न हो गए।—सत्यार्थ प्रकाश (शब्द०)।

स्यालकटा—संज्ञा पुं० [स्याल + सं० कण्टक] दे० 'स्यारकाँटा'।

स्यालक—संज्ञा पुं० [सं०] पत्नी का भाई। साला।

स्याला[1]—संज्ञा पुं० [देश०] बहुतायत। अधिकता। ज्यादती।

स्याला[2]—संज्ञा पुं० [सं० शीतकाल] शीतकाल। जाड़े का मौसिम।

स्यालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी की छोटी बहन। साली।

स्यालिया—संज्ञा पुं० [हिं० सियार] सियार। गीदड़। शृगाल। उ०—श्रीकृष्ण के पुत्र ढढ़ण मुनि को स्यालिया ले गया। —सत्यार्थप्रकाश (शब्द०)।

स्याली—संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी की बहन। साली। श्यालिका।

स्यालू—† संज्ञा पुं० [हिं० सालू] स्त्रियों के ओढ़ने की चादर। ओढ़नी। उपरैनी।

स्यालो—संज्ञा पुं० [सं० स्यालक, हिं० साला] पत्नी का भाई। साला। (डिं०)।

स्यावज(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सावज] दे० 'सावज'।

स्याह[1]—वि० [फा०] काला। कृष्ण वर्ण का।

स्याह[2]—संज्ञा पुं० घोड़े की एक जाति। उ०—सिरंग समंदा स्याह सेलिया सूर सुरंगा। मुसकी पँचकल्यानि कुमैता केहरि रंगा। —सूदन (शब्द०)।

स्याह करवा गुलकट—संज्ञा पुं० [?] लकड़ी का बना हुआ एक प्रकार का ठप्पा जिससे कपड़ों पर बेल बूटे छापे जाते है।

स्याह काँटा—संज्ञा पुं० [फा० स्याह + हिं० काँटा] किंगरई नाम का कँटीला पौधा। आल। विशेष दे० 'किंगरई'।

स्याहगोसर—संज्ञा पुं० [फा० सियाहगोश] दे० 'सियाहगोश'। उ०—चीते सुरोभ साबर दवग। गैंडा गलीनु डोलत अभग। अरु स्याहगोसर विश्रृंग अग। रिच्छादि खैरिहा छुटे अग।—सूदन (शब्द०)।

स्याह जबान—संज्ञा पुं० [फा० स्याह + जबान] वह हाथी या घोड़ा जिसकी जबान स्याह हो।

विशेष—स्याह जबानवाले हाथी घोड़े ऐबी समझे जाते हैं।

स्याह जीरा—संज्ञा पुं० [फा० स्याह + हिं० जीरा] काला जीरा। विशेष दे० 'काला जीरा'।

स्याह तालू—संज्ञा पुं० [फा० स्याह + हिं० तालू] वह हाथी या घोड़ा जिसका तालू बिलकुल स्याह हो। विशेष दे० 'स्याह जबना'।

स्याहदिल—वि० [फा०] जो दिल का काला हो। खोटा। दुष्ट।

स्याह भूरा—वि० [फा० स्याह + हिं० भूरा] काला। (रंग)।

स्याहा—संज्ञा पुं० [फा० सियाह] दे० 'सियाहा'। उ०—प्रभु जू मैं ऐसो अमल कमायो। साबिक जमा हुती जो जोरी मित जानिक तल पायो। वासिलबाकी स्याहा मुजमिल सब अधर्म की बाकी। चित्रगुप्त होत मुस्तौफी सरण गहूँ मैं काकी।—सूर (शब्द०)।

स्याही[1]—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ एक प्रसिद्ध रंगीन तरल पदार्थ जो प्राय काला होता है और जो लिखने, छापने आदि के काम में आता है। लिखने या छापने की रोशनाई। मसि। उ०—हरि जाय चेत चित सूखि स्याही झरि जाइ, बरि जाय कागद कलम टाँक जरि जाय।—काव्यकलाधर (शब्द०)। २ कालापन। कालिमा। उ०—स्याही बारन तें गई मन तैं भई न दूर। समुझ चतुर चित बात यह रहत बिसूर बिसूर।—रसनिधि (शब्द०)।

मुहा०—स्याही जाना=बालों का कालापन जाना। जवानी का बीतना। उ०—स्याही गई सफेदी आई दिल सफेद अजहूँ न हुआ।—कबीर (शब्द०)।

३ बदनामी का टीका। कलंक। कालिख। कालिमा। जैसे,—उसने अपने बाप दादा के नाम पर स्याही पोत दी।

क्रि० प्र०—पोतना।—फेरना।—लगना।—लगाना।—लेपना।

४ कड़वे तेल के दीए में पारा हुआ एक प्रकार का काजल जिससे गोदना गोदते हैं। ५ अंधकार। अँधेरा। ६ दाग। दोष। ऐब।

स्याही[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्यकी, हिं० स्याही] साही। शल्यकी। सेह। विशेष दे० 'साही'।

स्याहीचट—संज्ञा पुं० [फा० स्याही + हिं० चाटना] सोख्ता।

स्याहीचूस—संज्ञा पुं० [फा० स्याही + हिं० चूसना] सोख्ता। स्याही सोख। उ०—परंतु मिसल के बजाय स्याहीचूस पर दस्तखत कर बैठते।—वो दुनिया, पृ० ३४।

स्याहीदान—संज्ञा पुं० [फा०] दावात। मसिपात्र [को०]।

स्याहीसाज—संज्ञा पुं० [फा० स्याहीसाज] स्याही बनानेवाला कारीगर [को०]।

स्याहीसोख—संज्ञा पुं० [फा० स्याहीसोख] सोख्ता।

स्युवक—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णुपुराण में वर्णित एक प्राचीन जनपद।

स्यू—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूत। सूत्र।

स्यूत[1]—वि० [सं०] १ बुना हुआ। २ सीया हुआ। सूत्रित। ३ विद्ध। बींधा या भिदा हुआ (को०)। ४ संश्लिष्ट। संपृक्त (को०)।

स्यूत[2]—संज्ञा पुं० मोटे कपड़े का थैला। थैली।

स्यूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सीना। सीवन। २ बुनना। वयन। ३ थैला। ४ संतति। संतान। औलाद। ५ वंशावली। परिवार (को०)।

स्यून्न—संज्ञा पुं० [सं०] आनंद। हर्ष [को०]।

स्यून—संज्ञा पुं० [सं०] १ किरण। रश्मि। २ सूर्य। ३ थैला।

स्यूना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किरण। मरीचि। रश्मि। २ कांची। मेखला। करधनी [को०]।

स्यूम—संज्ञा पुं० [सं०] १ किरण। रश्मि। २ जल। सलिल। ३ आनंद। सुख। हर्ष (को०)।

स्यूमक—संज्ञा पुं० [सं०] सुख। प्रसन्नता। हर्ष [को०]।

स्यूमरश्मि—संज्ञा पुं० [सं०] एक वैदिक ऋषि का नाम।

स्यो—अव्य० [सं० सह] दे० 'स्यों'।

स्यो(पु)¹—अव्य० [स० सह] १ सह। सहित। उ०—(क) मुनि शिष कत दन तृन धरिकै स्यो परिवार सिधारो।—सूर (शब्द०)। (ख) राम कह्यो उठि बावरराई। राजसिरी सखि स्यो तिय पाई।—केशव (शब्द०)। विशेष दे० 'सौ'। २ पास। समीप। उ०—विनती करै आइ हौं दिल्ली। चितवर कै मोहि स्यो है किल्ली।—जायसी (शब्द०)।

स्यो(पु)²—सज्ञा पुं० [स० शिव] शिव। उ०—स्यो सकती दोउ मुख जीवत।—रामानद०।

स्योत—सज्ञा पु० [स०] मोटे कपडे का थैला। थैली।

स्योती—सज्ञा स्त्री० [स० शतपत्री, सेमन्ती, सेवती] दे० 'सेवती'।

स्योन¹—सज्ञा पुं० [स०] १ किरण। रश्मि। २ सूर्य। ३ थैला ४ सुख। आनद। ५ सुखप्रद आसन (को०)।

स्योन²—वि० १ सुदर। उत्फुल्ल। सुखद। ३ शुभद। मगलदायक [को०]।

स्योनाक—सज्ञा पु० [स०] सोनापाढा। श्योनाक वृक्ष।

स्योनाग—सज्ञा पु० [स० स्योनाक] सोनापाठा। श्योनाक वृक्ष।

स्योहार—सज्ञा पुं० [देश०] वैश्यों की एक जाति।

स्यौ(पु)—सज्ञा पु० [स० शिव] दे० 'शिव'। उ०—न तहाँ ब्रह्मा स्यौ विसन।—रामानद०, पृ० ८।

स्रग(पु)—सज्ञा पु० [स० शृङ्ग] दे० 'शृग'। उ०—अँगिया भुनकारी खरी मित जारी की सेद कनी कुच दूपर लौं। मनो सिंधु मथे सुधा फेन बढ्यो सो चढयो गिरि सगनि ऊपर लौं।—सुदरी सर्वस्व (शब्द०)।

स्रस—सज्ञा पु० [स०] १ पात। भ्रश। पतन। २ सोना। शयन [को०]।

स्रसन¹—वि० [स०] १ मलभेदक। दस्त लानेवाला। दस्तावर। विरेचक। २ शिथिल, स्रस्त या ढीला करनेवाला।

स्रसन²—सज्ञा पु० १ वह औषध जो कोठे के वात आदि दोष तथा मल को नियत समय के पहले ही बलात् गुदा मार्ग से निकाल दे। मलभेदक औषध। दस्त लानेवाली दवा। विरेचन। २ अध -पतन। भ्रश। ३ कच्चे गर्भ का गिरना। गर्भपात। गर्भस्राव। ४ शिथिल या ढीला करना (को०)।

स्रसित—वि० [स०] १ गिराया हुआ। २ स्रस्त या ढीला किया हुआ।

स्रसिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] भावप्रकाश के अनुसार एक प्रकार का योनिरोग जिसमें प्रसग के समय रगड लगने पर योनि बाहर निकल आती है और गर्भ नहीं ठहरता। प्रस्रसिनी।

स्रंसिनीफल—सज्ञा पु० [स०] सिरस। शिरीष वृक्ष।

स्रसी¹—सज्ञा पुं० [स० स्रसिन्] १ पीलू वृक्ष। २ सुपारी का पेड। पूग वृक्ष।

स्रसी²—वि० १ गिरनेवाला। पतनशील। २ असमय मे गिरनेवाला (गर्भ)। ३ इधर उधर हिलने या लटकनेवाला (को०)। ४ शिथिल या ढीला पडनेवाला (को०)।

स्रक्—सज्ञा स्त्री०, पु० [स० स्रज्] १ फूलों की माला। पुष्पहार। २ सिर पर लपेटी या धारण की जानेवाली माला (को०)। ३ एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे चार नगण और एक सगण होता है तथा ६ और ९ पर यति होती है। उ०—नचहु सुखद जगमति सुत महिमा। लहहु जनम इह सखि सुख अमिता।—छदप्रभाकर (शब्द०)। ४ एक प्रकार का वृक्ष। ५ ज्योतिष मे एक प्रकार का योग।

स्रक(पु)—सज्ञा स्त्री०, पु० [सं० स्रक्] फूलों की माला। दे० 'स्रक्'–१। उ०—(क) स्रक चदन बनितादिक भोगा। देखि हरष विसमय बस लोगा।—तुलसी (शब्द०)। (ख) स्रक चदन बनिता विनोद सुख यह जर जरत बितायो।—सूर (शब्द०)।

स्रक्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] कोण। कोटि [को०]।

स्रग(पु)—सज्ञा स्त्री०, पुं० [सं० स्रज>स्रग] दे० 'स्रक्'—१। उ०—अँचइ पान सब काहू पाये। स्रग चदन भूषित छबि छाये।—तुलसी (शब्द०)।

स्रगाल(पु)—सज्ञा पुं० [स० शृगाल] सियार। गीदड। (डिं०)।

स्रगजीह्व—सज्ञा पु० [स०] अग्नि।

स्रगण—सज्ञा पु० [स०] स्रक् के रूप मे चित्रित मत्र। मालाकार लिखा हुआ मत्र [को०]।

स्रग्दाम—सज्ञा पुं० [स० स्रग्दामन्] माला का सूत [को०]।

स्रग्धर—वि० [स०] हार धारण करनेवाला। मालाधारी [को०]।

स्रग्धरा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे (म र भ न य य य) SSS SIS SII III ISS ISS ISS होता है और ७, ७, ७, पर यति होती है। उ०—मोरे भोले यशू यों कहहु सुत कहाँ ते लिये आवते हो। भा का आनद आजी तुम फिरि फिरि कै साथ जो नावते हो। बोले माता ! बिलोक्यो फिरत सह चमू बाग मे स्याघरे ज्यों। काटी माला रु मारे विपुल रिपुल्लो अग्वलो जीति केस्यो। —छदप्रभाकर (शब्द०)। २ एक बौद्ध देवी का नाम।

स्रग्वान्—वि० [सं० स्रग्वत] माला से युक्त। मालाधारी।

स्रग्विणी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे चार रगण होते है। उ०—रार री राधिका स्याम सो क्यो करै। सीख मो मान ले मान काहे धरै। चित्त मे सुदरी क्रोध मत आनिये। स्रग्विणी मूर्ति को कृष्ण की धारिये।—छद प्रभाकर (शब्द०)। २ एक देवी का नाम।

स्रग्वी—वि० [स० स्रग्विन्] [स्त्री० स्रग्विणी] माला से युक्त। मालाधारी।

स्रज्—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'स्रक्'।

स्रज¹—सज्ञा पु० [स०] एक विश्वदेवा का नाम।

स्रज²—सज्ञा स्त्री० [स० स्रज्] माला। उ०—व्यरथ सुमन स्रज पहिरी जैसे। समरथ राज रहित नृप तैसे।—पद्माकर (शब्द०)।

स्रजन(पु)—सज्ञा पु० [स० सृजन] दे० 'सृजन'।

स्रजना(पु)—क्रि० स० [स० सृजन] दे० 'सृजना'। उ०—(क) विस्व स्रजहु पालहु पुनि हरहू। त्रिकालज्ञ सतत सुख करहू।— रामा-

श्वमेध (शब्द०)। (ख) धरि सत रज तम रूप स्रजति पालति सघारति।—सूदन (शब्द०)।

स्रजा(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० स्रज्] फूलो की माला। उ०—पहनाती वह ज्येष्ठ माँ स्रजा।—साकेत, पृ० ३४०।

स्रज्वा¹—सज्ञा पुं० [स० स्रज्वन्] १ माला वनानेवाला। माली। मालाकार। २ रस्सा। रज्जु। ३ प्रजापति। ४ एक प्रकार का वस्त्र। (कौ०)।

स्रज्वा²—सज्ञा स्त्री० [स०] रस्सी। रज्जु।

स्रणिका—वि० [स० शोणित] लाल। (डिं०)।

स्रद्धा(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० श्रद्धा] दे० 'श्रद्धा'। उ०—स्रद्धा विना धरम नहिं होई। विनु महि गध कि पावइ कोई।—तुलसी (शब्द०)।

स्रद्धू—सज्ञा स्त्री० [स०] अपना वायु का त्याग [कौ०]।

स्रपाटी†—सज्ञा स्त्री० [देश० ?] पक्षी की चोच। (डिं०)।

स्रम(पु)—सज्ञा पु० [सं० श्रम] दे० 'श्रम'। उ०—(क) स्वारथ सुकृत न स्रम वृथा देखि विहग विचार। वाज पराये पानि परि तू पछी हि न मार।—विहारी (शब्द०)। (ख) रामचरित सर विन अन्हवाये। सो स्रम जाइ न कोटि उपाये।—तुलसी (शब्द०)।

स्रमकन(पु)—सज्ञा पुं० [स० श्रमकण] पसीने की वूँद। उ०—अति मुचत स्रमकन मुखनि।—गीता० ७।१८।

स्रमविंदु—सज्ञा पुं० [स० श्रमविन्दु] दे० 'स्रमकन'। उ०—स्रमविंदु मुख राजीव लोचन अरुन तन सोनित कनी।—मानस, ६।७०।

स्रमित(पु)—वि० [स० श्रमित] दे० 'श्रमित'। उ०—ब्रह्म धाम सिवपुर सव लोका। फिरे स्रमित व्याकुल भय सोका।—तुलसी (शब्द०)।

स्रवती—सज्ञा स्त्री० [स० स्रवन्ती] १ नदी। दरिया। २ प्रवाह। धारा ३ एक प्रकार की वनस्पति। ४ प्लीहा का क्षेत्र। यकृत् प्रदेश (कौ०)।

स्रव¹—सज्ञा पुं० [स०] १ वहना। वहाव। प्रवाह। २ झरना। निर्झर। प्रस्रवण। ३ मूत्र। प्रस्राव। पेशाव। ४ क्षरण। स्राव (कौ०)।

स्रव²—सज्ञा पुं० [स० श्रवण] दे० 'श्रवण'।

स्रवण¹—सज्ञा पुं० [स०] १. वहना। वहाव। प्रवाह। २ कच्चे गर्भ का गिरना। गर्भपात। गर्भस्राव। ३. मूत। मूत्र। पेशाव। ४. पसीना। प्रस्वेद। घर्मविंदु।

स्रवण(पु)²—सज्ञा पुं० [स० श्रवण] दे० 'स्रवन'।

स्रवत्—सज्ञा स्त्री० [सं०] वहता हुआ। चूता हुआ [कौ०]।

स्रवत्तोया—सज्ञा स्त्री० [सं०] रुदती। रुद्रवती।

स्रवत्पाणिपादा—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जिसके हाथ पैर (पसीने से) गीले रहते हो [कौ०]।

स्रवद्गर्भा—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री या गाय आदि पशु जिसका गर्भ गिर गया हो।

स्रवद्मध्य—सज्ञा पु० [स०] १ वह रत्न जिसमे से अपने आप जल का स्राव हो। २ चद्रकात मणि [कौ०]।

स्रवद्रग—सज्ञा पु० [स० स्रवद्रङ्ग] १ मेला। प्रदर्शनी। नुमाइश। २ वाजार। हाट।

स्रवन(पु)—सज्ञा पु० [स० श्रवण] स० 'श्रवण'। उ०—(क) रामचरित-मानस एहि नामा। सुनत स्रवन पाइय विस्रामा।—तुलसी (शब्द०)। (ख) स्रवन नाहि, पै सव किछु सुना। हिया नाहिं पै सव किछु गुना।—जायसी (शब्द०)।

स्रवना(पु)¹—क्रि० अ० [स० स्रवण] १ वहना। चूना। टपकना। उ०—(क) कुछ काल के पीछे हम उस ढेर को टीला वना देखते है और वहाँ से जल स्रवने लगता है।—श्रद्धाराम (शब्द०)। (ख) प्रेम विवस जनु रामहिं पायौ। स्रवत भयहु पय उर जन छायो।—पद्माकर (शब्द०) (ग) लज्जावश नहि रहेउ सँभारा। स्रवत नयन मग ते जलधारा।—सवल० (शब्द०)। २ गिरना। छूट जाना। उ०—अति गर्व गनइ न सगुन असगुन स्रवहिं आयुध हाथ ते।—तुलसी (शब्द०)।

स्रवना²—क्रि० स १ वहाना। टपकाना उ०—(क) अमृत हू तें अमल अति गुन स्रवति निधि आनद। सूर तीनो लोक परस्यो सुर असुर जस छद।—सूर (शब्द०)। (ख) गोद राखि पुनि हृदय लगाये। स्रवत प्रेमरस पयद सुहाये।—तुलसी (शब्द०)। २ गिराना। उ०—चलत दसानन डोलति अवनी। गर्जत गर्भ स्रवहिं सुररवनी।—तुलसी (शब्द०)।

स्रवा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मरोडफली। मुरहरी। मूर्वा। २ डोडी। जीवती।

स्रष्टव्य—वि० [स०] सृष्टि करने के योग्य। सृष्टि करने या रचने के लिये उपयुक्त। जिसकी सृष्टि की जा सके।

स्रष्टा¹—सज्ञा पुं० [स० स्रष्टृ] १ सृष्टि या विश्व की रचना करनेवाले, ब्रह्मा। २ विष्णु। ३ शिव।

स्रष्टा²—वि० १ सृष्टि करनेवाला। निर्माता। रचयिता। टपकने या चूनेवाला २ स्राव करनेवाला (कौ०)।

स्रष्टार—सज्ञा पुं० [स०] सृष्टिकर्ता। दे० 'स्रष्टा' [कौ०]।

स्रष्टृता—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० स्रष्टृत्व'।

स्रष्टृत्व—सज्ञा पु० [स०] स्रष्टा का कार्य। सृष्टि करने या रचने का काम।

स्रसतर†—सज्ञा पुं० [सं० स्रस्तर] घास पात का विछावन। (डिं०)।

स्रस्त—वि० [स०] १ गिरा हुआ। पतित। च्युत। २ शिथिल। ढीलाढाला। ३ हिलता हुआ। ४ धँसा हुआ, जैसे—स्रस्त नेत्र। ५ अलग किया हुआ।

स्रस्तकर—वि० [स०] १ जिसकी सूँड हिल रही हो २ जिसका हाथ हिल रहा हो [कौ०]।

स्रस्तगात्र—वि० [स०] १ जिसके शिथिल अग हो। ढीले अगोवाला २ मूर्छित। वेहोश [कौ०]।

स्रस्तनेत्र—वि० [सं०] धँसी हुई आँखोंवाला।

स्रस्तमुष्क—वि० [सं०] जिसका अंडकोश लटका हुआ हिल रहा हो [को०]।

स्रस्तस्कंध—वि० [सं० स्रस्तस्कन्ध] १ जिसके कंधे नम्र या झुक गए हों। नम्रीभूत। २ शर्मिंदा। लज्जित।

स्रस्तर—संज्ञा पुं० [सं०] बैठने का आसन।

स्रस्तहस्त—वि० [सं०] जिसके हाथों की पकड ढीली पड गई हो [को०]।

स्रस्तांग—वि० [सं० स्रस्ताङ्ग] दे० 'स्रस्तगात्र' [को०]।

स्रस्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गिरना। पतन। २ लटकना या हिलना। ३ स्रस्त होना या ढीला पडना [को०]।

स्राक्—अव्य० [सं०] तुरंत। शीघ्रता से [को०]।

स्राकिशमिशी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] हलके बैंगनी रंग का एक प्रकार का छोटा अंगूर जो क्वेटा जिले में होता है और जिसको सुखाकर किशमिश बनाते हैं।

स्राद्ध(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्रद्धा] दे० 'श्राद्ध'। उ०—किय स्राद्ध नदि मुख वेदि वृद्धि। सब जात जर्म किन्नीसु सुद्धि।—पृ० रासो, पृ० ३२।

स्राप(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शाप] दे० 'शाप'। उ०—विप्र स्राप से दूनउँ भाई। तामस असुर देह तिन्ह पाई।—तुलसी (शब्द०)।

स्रापित(पु)—वि० [सं० शापित] दे० 'शापित'। उ०—(क) नृप त्रिशंकु गुरु स्रापित ये है। कहहु जाइ किमि स्वर्ग सदेहै।—पद्माकर (शब्द०)। (ख) तू सारे ढोर और वन के पशु से भी अधिक स्रापित होगा।—सत्यार्थ० (शब्द०)।

स्राम—वि० [सं०] जिसकी नाक या आँखों से बराबर पानी गिरता हो। बीमार। रुग्ण [को०]।

स्राम्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ बीमारी। रुग्णता। दौर्बल्य। २ खंजता। गति या चलने में विकलता। लँगडापन [को०]।

स्राव—संज्ञा पुं० [सं०] १ (खून, मवाद आदि का) बहना। भरना। क्षरण। २ कच्चे गर्भ का गिरना। गर्भपात। गर्भस्राव। ३ वह जो बहकर, रसकर या चूकर निकला हो। ४ निर्यास। रस।

स्रावक[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० स्राविका] बहाने, चुआने या टपकानेवाला। स्राव करानेवाला।

स्रावक[2]—संज्ञा पुं० काली मिर्च। गोल मिर्च।

स्रावक(पु)[3]—संज्ञा पुं० [सं० श्रावक] दे० 'श्रावक'। उ०—राम ह्वै दसास्यवस कान्ह ह्वै सँहारचो कंस बौध ह्वै कै कीनो निज स्रावक प्रकास है।—भिखारी० ग्रं० भा० १, पृ० ८६।

स्रावकत्व—संज्ञा पुं० [सं०] पदार्थों का वह धर्म जिसके कारण कोई अन्य पदार्थ उनमें से होकर निकल या रस जाता है। जैसे,—बलुए पत्थर में से पानी जो रस रसकर निकल जाता है, वह उसके स्रावकत्व गुण के कारण ही।

स्रावण—वि० [सं०] दे० 'स्रावक'।

स्रावणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ऋद्धि नामक अष्टवर्गीय औषध।

स्रावणी[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रावणी] दे० 'श्रावणी'।

स्रावनी—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रावणी] दे० 'श्रावणी'।

स्रावित—वि० [सं०] बहा, रसा या चुआकर निकाला हुआ। जिसका स्राव कराया गया हो।

स्रावी—वि० [सं० स्राविन्] बहानेवाला। चुआनेवाला। रसानेवाला। स्राव करानेवाला। क्षरण करानेवाला।

स्राव्य—वि० [सं०] बहाने योग्य। क्षरण के योग्य।

स्रिंग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्ग] दे० 'शृंग'। उ०—सन मत मारे दस भाला। गिरि स्रिंगन्ह जनु प्रबिसहिं ब्याला।—तुलसी (शब्द०)।

स्रिजन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सृजन] दे० 'सृजन'। उ०—विश्व स्रिजन आदिक तुम करहू। माहिं जन जानि दुसह दुख हरहू।—रामाश्वमेध (शब्द०)।

स्रिय(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० श्री] दे० 'श्रिय'। उ०—सुख मकरंद भरे स्रिय मूला। निरखि राम मन भँवर न भूला।—तुलसी (शब्द०)।

स्रीखंड(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्रीखण्ड] दे० 'श्रीखंड'। उ०—स्रीखंड मंद केसर उसीर। निहि परसि ताप मिट्टत सरीर।—पृ० रासो, पृ० १९।

स्रुक्—संज्ञा स्त्री० [सं०] खदिर या पलाश की लकडी की छोटी करछी जिससे हवनादि में घी की आहुति देते हैं। स्रुवा।

स्रुक्प्रणालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्रुवा की नाली जिसमें घृताहुति दी जाती है। [को०]।

स्रुग्जिह्व—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि [को०]।

स्रुग्दारु—सं० पुं० [सं०] कटाई। विकंकत वृक्ष।

स्रुघ्न—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन नगर का नाम जो बृहत्संहिता के अनुसार हस्तिनापुर के उत्तर में स्थित था।

स्रुघ्निका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सज्जी [को०]।

स्रुघ्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सज्जी मिट्टी। सर्जिका क्षार।

स्रुच्—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'स्रुक्'।

स्रुत[1]—वि० [सं०] १ बहा हुआ। चुआ हुआ। क्षरित। २ गत।

स्रुत(पु)[2]—वि० [सं० श्रुत] दे० 'श्रुत'। उ०—तदपि जथा स्रुत कहउ बखानी। सुमिरि गिरापति प्रभु धनुपानी।—तुलसी (शब्द०)।

स्रुतजल—वि० [सं०] जिसमें से जल रसकर बह गया हो।

स्रुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] हिंगपत्री। हिंगुपत्री।

स्रुति[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बहाव। क्षरण। २ निर्यास [को०]। ३ स्रोत। प्रवाह (को०)। ४ वेदी के चारों ओर खींची जानेवाली रेखा (को०)। ५ पथ। राह। मार्ग। सडक (को०)।

स्रुति[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रुति] दे० 'श्रुति'। उ०—एहि महँ रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान स्रुति सारा।—तुलसी (शब्द०)।

स्रुतिकीरति, स्रुतिकीर्ति(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रुतिकीर्ति] दे० 'श्रुति-

कीर्ति'। उ०—माडवी स्रुतिकीर्त्ति उर्मिला कुग्रँरि लई हँकारि कै।—तुलसी (शब्द०)।

स्रुतिमाथ(पु)—सज्ञा पु० [स० श्रुति+मस्तक] विष्णु। उ०—छीर-सिंधु गवने मुनिनाथा। जहँ वस श्रीनिवास स्रुतिमाथा।—तुलसी (शब्द०)।

स्रुव—सज्ञा पु० [स०] दे० 'स्रुवा'।

स्रुवतरु—सज्ञा पु० [स०] विककत वृक्ष।

स्रुवदड—सज्ञा पुं० [स० स्रुवदण्ड] स्रुवा का दड या हत्था।

स्रुवद्रुम—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'स्रुवतरु'।

स्रुवप्रग्रहण—वि० [स०] जो सब कुछ अपने लिये रख ले। सब कुछ स्वय ले लेनेवाला [को०]।

स्रुवहस्त—सज्ञा पुं० [स०] शिव [को०]।

स्रुवहोम—सज्ञा पुं० [स०] स्रुवा द्वारा किया हुआ हवन या आहुति।

स्रुवा—सज्ञा—स्त्री० [स०] लकडी की बनी हुई एक प्रकार की छोटी करछी जिससे हवनादि मे घी की आहुति देते है। सुरवा। उ०—चाप स्रुवा सर आहुति जानू। कोप मोर अति घोर कृसानू।—तुलसी (शब्द०)।

विशेष—इस अर्थ मे हिंदी मे यह शब्द प्राय पुल्लिग बोला जाता है।

२ झरना। निर्झर (को०)। ३ सलई। शल्लकी वृक्ष। ४ मरोड-फली। मूर्वा।

स्रुवा वृक्ष—सज्ञा पु० [स०] विककत वृक्ष [को०]।

स्रू—सज्ञा स्त्री० [स०] १ लकडी की बनी हुई एक प्रकार की छोटी करछी जिससे हवनादि मे घी की आहुति देते है। स्रुव। स्रुवा। सुरवा। २ झरना। निर्झर।

स्रेनी(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० श्रेणी] दे० 'श्रेणी'। उ०—देव दनुज किन्नर नर स्रेनी। सादर मज्जहिं सकल त्रिवेनी।—तुलसी (शब्द०)।

स्रेय(पु)—सज्ञा पुं० [स० श्रेय] दे० 'श्रेय'। उ०—जदपि देह वल्लभ सर्बहि, चहत जासु जग स्रेय। तदपि धरम धुर धरन कौ, लहि कछु अहै अदेय।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ४६१।

स्रैनी—सज्ञा स्त्री० [स० श्रेणी] दे० 'श्रेणी'। उ०—बन्यो हे जलज स्रैनी खेला छुटी हे रग की धार।—नद० ग्र०, पृ० ३६५।

स्रोत¹—सज्ञा पुं० [स०] झरना। सोता। जलप्रवाह। दे० 'स्रोत'²।

स्रोत²—सज्ञा पुं० [स०स्रोतस्] १ पानी का वहाव या झरना। जलप्रवाह। धारा। २ नदी। ३ वैद्यक के अनुसार शरीरस्थ छिद्र या मार्ग जो पुरुषो मे प्रधानत ६ और स्त्रियो मे ११ माने गए है। इनके द्वारा प्राण, अन्न, जल, रस, रक्त, मास, मेद, मल, मूत्र शुक्र और आर्तव का शरीर मे सचार होना माना जाता है। ४ वशपरपरा। कुलधारा। ५ ऊर्मि। तरग। लहर (को०)। ६ जल (को०)। ७ ज्ञानेद्रिय (को०)। ८ हाथी की सूँड (को०)। ९ तीव्र गति या वेग (को०)। १० पशुओ के शरीर का छेद (को०)। ११ गति। गमन (को०)।

स्रोतआपत्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] बौद्ध शास्त्र के अनुसार निर्वाण साधना की प्रथम अवस्था जिसमे सासारिक वधन शिथिल होने लगते है।

स्रोतआपन्न— वि० [स०] जो निर्वाण साधना की प्रथम अवस्था पर पहुँचा हो।

स्रोतईश—सज्ञा पुं० [स०] नदियो का स्वामी, समुद्र। सागर।

स्रोतनदीभव—सज्ञा पु० [स०] यमुना मे उत्पन्न अजन। सुरमा [को०]।

स्रोतपत—सज्ञा पु० [स० स्रोत+पति] समुद्र। (डिं०)।

स्रोतस्य—सज्ञा पु० [स०] १ शिव का एक नाम। २ चोर। चौर।

स्रोतस्वती—सज्ञा स्त्री० [स०] नदी।

स्रोतस्विनी—सज्ञा स्त्री० [स०] नदी।

स्रोतजान—सज्ञा पुं० [स० स्रोताञ्जन] दे० 'स्रोतोऽजन'।

स्रोता(पु)—सज्ञा पु० [स० श्रोता] दे० 'श्रोता'। उ०—ते स्रोता वकता समसीला। समदरसी जानहिं हरिलीला।—तुलसी (शब्द०)।

स्रोतापत्ति—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'स्रोतआपत्ति'।

स्रोतोऽजन—सज्ञा पु० [स० स्रोतोऽञ्जन] आँखो मे लगाने का एक प्रकार का सुरमा।

स्रोतोनुगत—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की समाधि। (बौद्ध)।

स्रोतोज—सज्ञा पुं० [स०] आँखो मे लगाने का सुरमा।

स्रोतोजव—सज्ञा पुं० [स०] स्रोत का वेग। धारा का वहाव।

स्रोतोद्भव—सज्ञा पुं० [स०] सुरमा।

स्रोतोनदीभव—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'स्रोतनदीभव'।

स्रोतोवह—सज्ञा स्त्री० [स०] नदी।

स्रोतोवहा—सज्ञा स्त्री० [स०] नदी।

स्रोन(पु)¹—सज्ञा पु० [स० श्रवण]। दे० 'श्रवण'। उ०—जीह कहै बतियाँई कियो करी स्रोन कहै, उनही की सुनीजै।—रसकुसुमाकर (शब्द०)।

स्रोन(पु)²—सज्ञा पु० [?] रक्त। शोणित।

स्रोनित(पु)—सज्ञा पु० [सं० शोणित] रक्त। दे० 'शोणित'। उ०—मारि तरवारि प्रान पर के निकारि लेत, भल्ल डारि भरै भूमि स्रोनित के ठोप सो।—गोपाल (शब्द०)।

स्रौग्मत—सज्ञा पु० [स०] एक साम का नाम।

स्रौघ्निका—सज्ञा स्त्री० [स०] सज्जी। सजिका क्षार।

स्रौत—सज्ञा पुं० [स०] एक साम का नाम।

स्रौतिक—सज्ञा पुं० [स०] सीप। शुक्ति।

स्रौतोवह—वि० [स०] धारा या नदी सवधी [को०]।

स्रौन¹—सज्ञा पु० [स० श्रवण] श्रवण। कान। उ०—पूरन न होत स्रौन वाकी सुन बात ते।—नट०, पृ० ६२।

स्रौन²—सज्ञा पु० [स०] शोणित। रक्त।

स्रौव—वि० [स०] १ यज्ञ सवधी। २. स्रुवा का। स्रुवा सवधी।

स्लिप—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ परचा। चिट। २. कागज का लवा टुकड़ा

जिसपर कपोज करने के लिये कुछ लिखा जाय। जैसे,—उनकी तीन स्लिपो मे एक पेज मैटर निकलता है। (कपोजीटर)।

स्लीपर¹—संज्ञा पु० [अ० स्लिपर] एक प्रकार की जूती जो एडी की ओर से खुली होती है। चट्टी।

यौ०—फुल स्लीपर = स्लीपर के आकार का एक प्रकार का जूता जो पीछे एडी की ओर भी साधारण जूतों की भाँति वद रहता है।

स्लीपर²—संज्ञा पु० [अ०] १ लकडी का वह चौपहल लवा टुकडा या धरन जो प्राय रेल की पटरियो के नीचे विछी रहती है। २ रेल का वह डव्वा जिसमे अतिरिक्त शुल्क देने पर यात्रियो के शयन करने की व्यवस्था रहती है। रेलवे विभाग द्वारा उसका शायिका या शयनयान नामकरण किया गया है (आधुनिक)।

स्लेज—संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार की विना पहिए की गाडी जो वर्फ पर घसिटती हुई चलती है।

स्लेट—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ एक प्रकार के चिकने पत्थर की चाकोर चौरस पतली पटरी जिसपर प्रारभिक श्रेणियो के विद्यार्थी अक्षर और अक लिखकर अभ्यास करते हैं। जो हाथ या कपडे से पोछने अथवा पानी से धोने से मिट जाता है।

विशेष—आजकल टीन पर भी समेट पत्थर के चूर्ण को जमा करके वच्चो के लिखने की पूर्वोक्त पटरी वनाई जाती है।

२ एक विशेष प्रकार का पत्थर जिससे उक्त पटरी वनाई जाती है।

स्लेसम अग—संज्ञा पुं० [सं० श्लेष्मा + अङ्ग] लसूडे का वृक्ष। (डि०)।

स्लो¹—वि० [अ०] १ धीमी चाल से चलनेवाला। मदगति। जैसे,—स्लो पैसेंजर। २ सुस्त। काहिल।

स्लो²—संज्ञा पुं० घडी की चाल का मद या धीमा होना।

स्लोथ—संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का वहुत सुस्त जानवर।

विशेष—यह दक्षिण अमेरिका के जगलो मे पाया जाता है। इसके दाँत वहुत कम होते हैं और प्राय कटीले नही होते। किसी किसी के तो विल्कुल दाँत ही नही होते। यह पेडो की पत्तियाँ खाकर गुजारा करता है। जव तक पेड की सव पत्तियाँ नही खा लेता, तव तक उस पेड से नही उतरता। यह हिंसक जतु नही है। पर यदि कोई इसपर आक्रमण करे तो यह अपने नाखूनो से अपनी रक्षा कर सकता है।

स्वग¹—संज्ञा पुं० [सं० स्वङ्ग] १ आलिगन। २ वह जिसका शरीर सुदर हो। अच्छे अगोवाला (को०)।

स्वजन—संज्ञा पुं० [सं० स्वञ्जन] आलिगन। भेटना (को०)।

स्वत—वि० [सं० स्व] १ जिसका अत या परिणाम शुभद हो। २ शुभ। मागलिक (को०)।

स्व —संज्ञा पु० [सं०] स्वर्ग।

स्व पति—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग का स्वामी—इद्र (को०)।

स्व पथ—संज्ञा पुं० [सं०] (स्वर्ग का मार्ग) मृत्यु।

स्व पाल—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग का रक्षण करनेवाला।

स्व पृष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] कई सामो के काम।

स्व साद—संज्ञा पु० [सं०] देवता, जिनका स्वर्लोक निवास है।

स्व सरिता—संज्ञा स्त्री० [सं० स्व सरिता] गगा।

स्व सिधु—संज्ञा स्त्री० [सं० स्व सिन्धु] स्वर्नदी। गगा (को०)।

स्व सुदरी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्व सुन्दरी] अप्सरा।

स्व स्यदन—संज्ञा पुं० [सं० स्वस्यन्दन] इद्ररथ (को०)।

स्व स्रवती—संज्ञा स्त्री० [सं० स्व स्रवन्ती] गगा (को०)।

स्व¹—संज्ञा पुं० [सं० स्व] १ अपना आप। निज। आत्म। २ विष्णु का एक नाम। ३ भाई वधु। गोती। सवधी। ज्ञाति। ४ धन। दौलत। जैसे,—नि स्व = निर्धन। ५ आत्मा। ६ गणित मे धन राशि (को०)। ७ अह (को०)। ८ प्रकृति। स्वभाव (को०)।

स्व²—वि० १ अपना। निज का। जैसे,—स्वदेश, स्वराज्य, स्वजाति। उ०—वृद वृद गोपिका, चली स्वसाज साजिकर मद मद हाम है, लजावै हस गति को।—नल्लू० (शब्द०)। २ प्राकृतिक। नैसर्गिक (को०)। ३ जो अपने कुटुब या कबीले का हो (को०)।

यौ०—स्वकाय। स्वकाल = ठीक समय। स्वगुप्त।

स्वकपन—संज्ञा पुं० [सं० स्वकम्पन] वायु। हवा।

स्वकवला—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वकम्बला] माकडेयपुराण मे वर्णित एक नदी का नाम।

स्वक¹—वि० [सं०] स्वय का। अपना। व्यक्तिगत। निजी (को०)।

स्वक²—संज्ञा पुं० १ सगी। साथी। दोस्त। मित्र। २ निजी धन-दौलत (को०)।

स्वकरण—संज्ञा पु० [सं०] १ कौटिल्य के अनुसार किसी वस्तु पर अपना स्वत्व जताना। दावा करना। २. किसी स्त्री को अपना बनाना। विवाह करना।

स्वकरण भाव—संज्ञा पुं० [सं०] किसी वस्तु पर विना अपना स्वत्व सिद्ध किए अधिकार करना। विना हक सावित किए कब्जा करना।

स्वकरण विशुद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] वह पदार्थ जिसपर किसी व्यक्ति का स्वत्व न हो।

स्वकर्म—संज्ञा पुं० [सं० स्वकर्मन्] अपना कर्तव्य। अपना काम (को०)।

यौ०—स्वकर्मकृत् = अपना काम करनेवाला। वह जो स्वतत्र रूप से अपना काम करता हो।

स्वकर्मा—वि० [सं० स्वकमन्] अपना कर्तव्य पूर्ण करनेवाला (को०)।

स्वकर्मी—वि० [सं० स्वकर्मिन्] केवल अपने ही काम से मतलव रखनेवाला। स्वार्थी। खुदगरज।

स्वकामी—वि० [सं० स्वकामिन्] १ अपना स्वाथ देखनेवाला। मत-लवी। २ अपने इच्छानुसार आचरण करनेवाला (को०)।

स्वकार्य—संज्ञा पुं० [सं०] अपना या निज का काम। व्यक्तिगत काम। निजी काम।

स्वकाल—संज्ञा पुं० [सं०] ठीक समय। उपयुक्त काल।

स्वकिया(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वकीया] दे० 'स्वकीया'। उ०—हे सखि औरन के जे पिया। वात सुनहि स्वकिया परकिया।—नद० ग्र०, पृ० १५७।

स्वकीय—वि० [स०] १ अपना। निज का। २ अपने कुटुंब या गोत्र का।

स्वकीया—सज्ञा स्त्री० [स०] १ अपनी विवाहिता स्त्री। पत्नी। २ साहित्य मे नायिका के दो प्रधान भेदो मे से एक। वह नायिका या स्त्री जो अपने ही पति मे अनुराग रखनेवाली हो।

विशेष—स्वकीया दो प्रकार की कही गई है—१ ज्येष्ठा और २ कनिष्ठा। अवस्थानुसार इनके तीन और भेद किए गए है—मुग्धा, मध्या और प्रौढा। (विशेष दे० ये शब्द)।

स्वकुल—सज्ञा पुं० [स०] अपना कुल, खानदान या वश।

स्वकुलक्षय—सज्ञा पुं० [स०] मत्स्य। मछली (जो अपने वश का आप ही नाश करती है)।

स्वकुल्य—वि० [स०] अपने खानदान या वश का [कौ०]।

स्वकृतभुक्—वि० [स० स्वकृतम्भुज] अपने किए को, प्रारब्ध को भोगने वाला [कौ०]।

स्वकृत—सज्ञा पुं० [स०] अपना कर्तव्य। अपना काम [कौ०]।

स्वक्त—वि० [स०] अच्छी तरह लिप्त [कौ०]।

स्वक्ष(पु)[१]—वि० [स० स्वच्छ] दे० 'स्वच्छ'। उ०—अति स्वक्ष सुदर हेम फटिक की शिला गसि कै गली।—गुमान (शब्द०)।

स्वक्ष[२]—वि० [स०] १ सुदर आँखोवाला। २ जिसका अक्ष या धुरा सुदर हो। ३ जिमके अवयव पुष्ट एव पूर्ण हो [कौ०]।

स्वक्ष[३]—सज्ञा पु० १ एक प्राचीन जाति। २ वह रथ जिसका धुरा अच्छा हो [कौ०]।

स्वक्षत्र—वि० [स०] १ जिसमे सहजात या प्राकृतिक शक्ति हो। २ जो स्वाधीन हो। [कौ०]।

स्वगत[१]—सज्ञा पु० [स०] दे० 'स्वगतकथन'।

स्वगत[२]—वि० १ अपने आपमे या अपने प्रति कहा हुआ। २ निजी। व्यक्तिगत। ३ आत्मीय। अपना।

स्वगत[३]—क्रि० वि० आप ही आप (कहना या बोलना)। इस प्रकार (कहना या बोलना) जिसमे और कोई न सुन सके। अपने आपसे।

स्वगतकथन—सज्ञा पु० [स०] नाटक मे पात्र का आप ही आप बोलना।

विशेष—जिस समय रगमच पर कई पात्र होते हैं, उस समय यदि उनमे से कोई पात्र अन्य पात्रो से छिपाकर इस प्रकार कोई बात कहता है, मानो वह किसी को सुनाना नही चाहता और न कोई उसकी बात सुनता ही है, तो ऐसे कथन को स्वगत, स्वगतभाषण, अश्राव्य या आत्मगत कहते है।

स्वगति—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का छद [कौ०]।

स्वगुप्त—वि० [स०] आत्मरक्षित [कौ०]।

स्वगुप्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कौछ। केवाँछ। २ लजालू। लज्जालू।

स्वगृह—सज्ञा पुं० [सं०] १ कलिकार नामक पक्षी। २ अपना गृह। अपना घर (कौ०)।

स्वगोचर—वि० [स०] अपना विषय [कौ०]।

स्वगोप—वि० [स०] आत्मरक्षित [कौ०]।

स्वग्रह—सज्ञा पु० [स०] बालको को होनेवाला एक प्रकार का रोग।

स्वचर—वि० [स०] अपने आप चलनेवाला [कौ०]।

स्वचित्तकारु—सज्ञा पुं० [स०] कौटिल्य के अनुसार वह शिल्पी जो किसी श्रेणी के अतर्गत होते हुए भी स्वतत्र रूप से काम करता हो। स्वतत्र कारीगर। (कौ०)।

स्वच्छद[१]—वि० [स० स्वच्छन्द] १ जो किसी दूसरे के नियत्रण मे न हो और अपनी ही इच्छा के अनुसार सब कार्य करे। स्वाधीन। स्वतत्र। आजाद। उ०—(क) सबहि भाँति अधिकार लहि अभिमानी नृप चद। नहि सहिहै अपमान सब, राजा होइ स्वच्छद।—हरिश्चद्र (शब्द०)। (ख) सुख सो ऐसो मोद रमै रीते मन माही। विघ्न, ईरषा, अवधि रहित स्वच्छद सदाही।—श्रीधर (शब्द०)। (ग) कुतुबुद्दीन ऐबक के समय तक यह स्वच्छद राज्य था।—बालकृष्ण (शब्द०)। २ अपने इच्छानुसार चलनेवाला। मनमाना काम करनेवाला। निरकुश। ३ (जगलो आदि मे) अपने आपसे होनेवाला। जगली (पौधा या वनस्पति)।

स्वच्छद[२]—सज्ञा पुं० १ स्कद का एक नाम। २ अपना मनोरथ। अपनी पसद (कौ०)।

स्वच्छद[३]—क्रि० वि० मनमाना। बेधडक। निर्द्वंद। स्वतत्रतापूर्वक। उ०—(क) बालक रूप ह्वै के दसरथसुत करत केलि स्वच्छद।—सूर (शब्द०)। (ख) इस पर्वत की रम्य जटी मे मैं स्वच्छद विचरता हूँ।—श्रीधर (शब्द)।

स्वच्छदचर—वि० [स० स्वच्छन्दचर] आजाद। स्वतत्र [कौ०]।

स्वच्छदचारिणी—सज्ञा स्त्री० [स० स्वच्छन्दचारिणी] वारस्त्री। गणिका। वेश्या। रडी।

स्वच्छदचारी—वि० [स० स्वच्छन्दचारिन्] [वि० स्त्री० स्वच्छदचारिणी] अपने इच्छानुसार चलनेवाला। स्वेच्छाचारी। मनमौजी।

स्वच्छदता—सज्ञा स्त्री० [स० स्वच्छन्दता] स्वच्छद होने का भाव। स्वतत्रता। आजादी।

स्वच्छदतावाद—सज्ञा पु० [स० स्वच्छन्दता + वाद (अ० रोमाटिसिज्म)] नवीनता, वैयक्तिकता, असाधारणता, भव्यता आदि के चित्रण को काव्य का प्रधान लक्षण मानने का सिद्धात जिसके अनुसार रचना मे परपरा और नियम का विरोध तथा अस्पष्टता को प्रश्रय दिया जाता है। उ०—काव्य की पुरानी बँधी रूढियो को हटाकर केवल मुक्त कल्पना और भावो की अप्रतिबद्ध गति को लेकर योरप मे स्वच्छदतावाद (रोमाटिसिज्म) का प्रचार हुआ।—चिंतामणि, भा० २, पृ० १०८।

स्वच्छदतावादी—वि० [स० स्वच्छन्दता + वादिन्] स्वच्छदतावाद का सिद्धात माननेवाला।

स्वच्छंदनायक—संज्ञा पुं० [सं० स्वच्छंदनायक] सन्निपात ज्वर की एक औषध।

विशेष—इसके बनाने की विधि इस प्रकार है—पारा, गंधक, लोहा और चादी बराबर बराबर लेकर हुड़हुड़, सम्हालू तुलसी, सफेद चीता, लाल चीता, अदरक, भाँग, हर्रे, मकोय और पचपित्त मे भावना दे, मूषा मे बंद कर वालुका यंत्र मे पाक करते हैं। इसकी मात्रा एक माशे की कही गई है।

स्वच्छंदभैरव—संज्ञा पुं० [सं० स्वच्छन्दभैरव] उग्र सन्निपात ज्वर की एक औषध का नाम।

विशेष—इसके बनाने की विधि इस प्रकार है—पारा १ तोला, गंधक १ तोला, दोनों की कज्जली कर उसमे शोधित स्वर्णमाक्षिक १ तोला मिलाते हैं, फिर क्रम से रुद्रजटा, सम्हालू, हर्रे, आँवला और विपकठाली के रस (एक एक तोला) मे घोटते है। इसकी मूग के बराबर गोली बनती है।

स्वच्छ¹—वि० [सं०] १ जिसमे किसी प्रकार की मैल या गदगी आदि न हो। निर्मल। साफ। २ उज्वल। शुभ्र। ३ स्पष्ट। साफ। ४ स्वस्थ। निरोग। ५ शुद्ध। पवित्र। ६ सुदरता से युक्त। सौदर्यपूर्ण। ७ निष्कपट।

स्वच्छ²—संज्ञा पुं० १ बिल्लौर। स्फटिक। २ बेर। बदरी वृक्ष। ३ मोती। मुक्ता। ४ अभ्रक। अबरक। ५ सोनामाखी। स्वर्णमाक्षिक। ६ रूपामाखी। रौप्यमाक्षिक। ७ विमल नामक उपधातु। शुद्ध खटिका या खडिया। ८ सोने और चाँदी का मिश्रण।

स्वच्छक—वि० [सं०] अत्यत निर्मल। अत्यत स्वच्छ या साफ (को०)।

स्वच्छता—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वच्छ होने का भाव। निर्मलता। विशुद्धता। सफाई।

स्वच्छत्व—संज्ञा पुं० [दे०] सं० 'स्वच्छता'।

स्वच्छद्रव्य—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेतवर्ण की शरीरधातु (को०)।

स्वच्छधातुक—संज्ञा पुं० [सं०] सोने तथा चाँदी का मिश्रण (को०)।

स्वच्छना पु—क्रि० स० [सं० स्वच्छ + हिं० ना (प्रत्य०)] निर्मल करना। शुद्ध करना। पवित्र करना। साफ करना। उ०—दडक बन मुनि जान, भोगी मुनि दिय शाप तिन। गिरि बालू दिन सात, जरेउ देश सो स्वच्छिये।—विश्राम (शब्द०)।

स्वच्छपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] अबरक। अभ्रक।

स्वच्छभाव—संज्ञा पुं० [सं०] अत्यत स्वच्छ होना। अत्यत निर्मल वा पारदर्शी होना।

स्वच्छमणि—संज्ञा पुं० [सं०] बिल्लौर। स्फटिक।

स्वच्छवालुक—संज्ञा पुं० [सं०] शुद्ध खटिका या खड़िया। दे० 'स्वच्छवालुका' (को०)।

स्वच्छवालुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] विमल नामक उपधातु।

स्वच्छा—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्वेतदूर्वा। सफेद दूब।

स्वच्छी पु—वि० [सं० स्वच्छ] दे० 'स्वच्छ'। उ०—एक वृक्ष मे सम द्वै पक्षी। फल भोगै इक दूजो स्वच्छी।—विचारसागर (शब्द०)।

स्वज¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुत्र। बेटा। २ खून। रक्त। ३ पसीना। स्वेद। ४ एक प्रकार का विषैला साँप (को०)।

स्वज²—वि० १ अपने मे उत्पन्न। २ प्राकृतिक। स्वाभाविक (को०)।

स्वजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपने परिवार के लोग। आत्मीय जन। २ सगे सबधी। रिश्तेदार।

स्वजनगंधी—वि० [सं० स्वजनगन्धिन्] जिसमे दूर की रिश्तेदारी या सबध हो [को०]

स्वजनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्वजन होने का भाव। आत्मीयता। २ नातेदारी। रिश्तेदारी।

स्वजनी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वजन] सखी। उ०—स्वजनि, क्या कहा—'वे यहाँ कहाँ ?' तदपि दीखते हैं जहाँ तहाँ ?—साकेत, पृ० ३१३।

स्वजन्मा—वि० [सं० स्वजन्मन्] जो अपने आप उत्पन्न हुआ हो। अपने आपसे उत्पन्न (ईश्वर आदि)। उ०—तुम अज्ञात सर्वज्ञ हो, तुम स्वजन्मा सबके कर्ता हो, तुम अनीश सबके ईश हो, एक सर्वरूप हो।—लक्ष्मण (शब्द०)।

स्वजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कन्या। पुत्री। बेटी।

स्वजात¹—वि० [सं०] अपने से उत्पन्न।

स्वजात²—संज्ञा पुं० पुत्र। बेटा।

स्वजाति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपनी जाति। अपनी कौम। जैसे,—उन्होने अपनी कन्या का विवाह स्वजाति मे न करके दूसरी जाति मे किया।

स्वजातिद्विष्—संज्ञा पुं० [सं०] (अपनी जाति से द्वेष करनेवाला) कुत्ता।

स्वजातीय—वि० [सं०] १ अपनी जाति का। अपने वर्ग का। जैसे,—अपने स्वजातियों के साथ खान पान करने मे कोई हानि नहीं है। २ एक ही वर्ग या जाति का। जैसे,—ये दोनो पौधे स्वजातीय हैं।

स्वजात्य—वि० [सं०] अपनी जाति या वर्ग का [को०]।

स्वज्ञाति¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपनी जाति। स्वजाति।

स्वज्ञाति²—संज्ञा पुं० [सं०] रिश्तेदार। सबधी (को०)।

स्वतंत्र—वि० [सं० स्वतन्त्र] [वि० स्त्री० स्वतंत्रा] १ जो किसी के अधीन न हो। स्वाधीन। मुक्त। आजाद। जैसे,—(क) आयरलैंड पहले अँगरेजो के अधीन था, पर अब स्वतंत्र हो गया। (ख) नैपाल राज्य ने सब गुलामों को स्वतंत्र कर दिया। २ अपने इच्छानुसार चलनेवाला। मनमानी करनेवाला। स्वेच्छाचारी। निरकुश। जैसे,—वहाँ के राज्याधिकारी परम स्वतंत्र हैं, खूब मनमानी कर रहे हैं। उ०—परम स्वतंत्र न सिर पर कोई। भावहि मनहिं करहु तुम्ह सोई।—तुलसी।

३ अलग। जुदा। भिन्न। पृथक्। जैसे,—(क) राजनीति का विषय ही स्वतंत्र है। (ख) इसपर एक स्वतंत्र लेख होना चाहिए। ४ किसी प्रकार के बंधन या नियम आदि से रहित अथवा मुक्त। जैसे,—वे स्वतंत्र विचार के मनुष्य हैं। ५ वयस्क। स्याना। बालिग।

स्वतंत्रता—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वतन्त्रता] १ स्वतंत्र होने का भाव। स्वाधीनता। आजादी। उ०—हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती, स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती।—झरना, पृ० १। २ मौलिकता। निजता (को०)। ३ कामाचार। स्वेच्छाचारिता। स्वच्छंदता (को०)।

स्वतंत्रता संग्राम—संज्ञा पुं० [सं० स्वतन्त्रता संग्राम] वह लड़ाई या संघर्ष जो देश से किसी अन्य देश के अधिकार या शासन को हटाने के लिये किया जाय।

स्वतंत्रद्वैधीभाव—संज्ञा पुं० [सं० स्वतन्त्रद्वैधीभाव] वह जो स्वतंत्र रूप से अपना हित समझकर दो शत्रुओं से मेलजोल रखता हो।

स्वतंत्री—वि० [सं० स्वतन्त्रिन्] स्वाधीन। मुक्त। आजाद। दे० 'स्वतंत्र'।

स्वतः—अव्य० [सं० स्वतस्] अपने आप। आप ही। जैसे,—(क) उसने मुझसे कुछ माँगा नहीं, मैंने स्वतः उसे दस रुपए दे दिए। (ख) वेद ईश्वर से उत्पन्न हुए, इससे वे स्वतः नित्य स्वरूप हैं। (ग) वेद ईश्वरकृत होने के कारण स्वतः प्रमाण हैं। (घ) पक्षी का उड़ना स्वतः सिद्ध है।

यौ०—स्वतःप्रमाण = जो अपना प्रमाण या सबूत खुद हो। स्वतःसिद्ध = जो स्वयं सिद्ध हो। जिसे सिद्ध करने के लिये साध्य की जरूरत न हो। स्वतःस्फूर्त = जो स्वयं स्फूर्त या स्फुरणशील हो।

स्वता—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वामित्व। अधिकार। हक (को०)।

स्वतोविरोध—संज्ञा पुं० [सं० स्वतः + विरोध] आप ही अपना विरोध या खंडन करना।

स्वतोविरोधी—संज्ञा पुं० [सं० स्वतः + विरोधिन्] अपना ही विरोध या खंडन करनेवाला। उ०—नास्तिकों के विषय में ऐसा नियम बनाना स्वतोविरोधी है, वह खुद ही अपना खंडन करता है।—द्विवेदी (शब्द०)।

स्वत्र[1]—वि० [सं०] अपना त्राण करनेवाला। आत्मरक्षक (को०)।

स्वत्र[2]—संज्ञा पुं० नेत्रहीन व्यक्ति। अंधा व्यक्ति (को०)।

स्वत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी वस्तु को पाने, पास रखने या व्यवहार में लाने की योग्यता जो न्याय और लोकरीति के अनुसार किसी को प्राप्त हो। किसी वस्तु को अपने अधिकार में रखने, काम में लाने या लेने का अधिकार। अधिकार। हक। जैसे,—(क) इस संपत्ति पर हमारा स्वत्व है। (ख) उन्होंने अपनी पुस्तक का स्वत्व बेच दिया। (ग) भारतवासी अपने स्वत्वों के लिये आंदोलन कर रहे हैं। २ 'स्व' का भाव। अपना होने का भाव। उ०—तृतीय यह कि जो स्वत्व, परत्व, नीच, ऊँच का विचार त्याग कर समस्त जीवों पर समान द्रवीभूत हो।—श्रद्धाराम (शब्द०)। ३ स्वतंत्रता। स्वाधीनता (को०)।

स्वत्वज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] अपनेपन का ज्ञान। मैं का ज्ञान। अहं का बोध।

स्वत्वनिवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वामित्व का न रहना। अधिकार की समाप्ति (को०)।

स्वत्वबोधन—संज्ञा पुं० [सं०] स्वत्व को साबित करनेवाला, प्रमाण। अधिकार या हक को पुष्ट करनेवाला सबूत (को०)।

स्वत्वरक्षा—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वामित्व की रक्षा। अधिकार को कायम रखना। २ अपनी स्वतंत्रता या स्वाधीनता को बनाए रखना (को०)।

स्वत्वहानि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'स्वत्वनिवृत्ति'।

स्वत्वहेतु—संज्ञा पुं० [सं०] स्वामित्व का कारण। स्वत्व या अधिकार का आधार (को०)।

स्वत्वाधिकारी—संज्ञा पुं० [सं० स्वत्वाधिकारिन्] १ वह जिसके हाथ में किसी विषय का पूरा स्वत्व हो। २ स्वामी। मालिक।

स्वदन—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वाद लेना। आस्वादन। खाना। भक्षण। २ लोहा। लौह धातु।

स्वदित—वि० [सं०] आस्वादित। भक्षणीकृत। चखा हुआ (को०)।

स्वदेश—संज्ञा संज्ञा [सं०] वह देश जिसमें किसी का जन्म और पालन-पोषण हुआ हो। अपना और अपने पूर्वजों का देश। मातृभूमि। वतन।

यौ०—स्वदेशज = अपने देश या वतन का। अपनी मातृभूमि का व्यक्ति। स्वदेशप्रेम = दे० 'स्वदेशभक्ति'। स्वदेशबंधु = दे० 'स्वदेशज'। स्वदेशभक्ति = अपनी मातृभूमि के प्रति प्रगाढ़ निष्ठा। स्वदेश-स्मारी = अपने देश का स्मरण करनेवाला। स्वदेशस्मृति = अपने देश या वतन की याद।

स्वदेशाभिष्यंदव—संज्ञा पुं० [सं० स्वदेशाभिष्यन्दव] कौटिल्य के अनुसार स्वराष्ट्र में जहाँ आबादी बहुत अधिक हो गई हो, वहाँ से कुछ जनता को दूसरे प्रदेश में बसाना।

स्वदेशी—वि० [सं० स्वदेशीय] १ अपने देश का। अपने देश संबंधी। जैसे,—स्वदेशी भाई। स्वदेशी उद्योग धंधा। स्वदेशी रीति। २ अपने देश में उत्पन्न या बना हुआ। जैसे,—स्वदेशी वस्त्र। स्वदेशी औषध।

स्वदेशीय—वि० [सं०] दे० 'स्वदेशी'।

स्वधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपना धर्म। अपना कर्तव्य। कर्म। २ अपनी निजता या विशेषता।

यौ०—स्वधर्मच्युत = अपने धर्म, कर्तव्य या विशेषता से रहित। स्वधर्म से गिरा हुआ। स्वधर्मत्याग = अपने कर्म का परित्याग करना। स्वधर्मत्यागी = स्वधर्म का परित्याग कर अन्य धर्म स्वीकार करनेवाला। स्वधर्मवर्ती = अपने कर्तव्य या कर्म में लगा रहनेवाला। स्वधर्मस्खलन = कर्तव्य कर्म की उपेक्षा करना। स्वधर्मस्थ = अपने कर्म में लगा हुआ।

स्वधर्माभिमानी—वि० [सं० स्वधर्म + अभिमानिन्] जिसे अपने धर्म पर अभिमान हो। उ०—तो किसी स्वदेश, स्वजाति व स्वधर्माभिमानी आर्य्य सन्तान की समझ मे।—प्रेमघन० भा०२, पृ० २८६।

स्वधा¹—अव्य० [सं०] एक शब्द या मंत्र जिसका उच्चारण देवताओं या पितरो को हवि देने के समय किया जाता है।

विशेष—मनु के अनुसार श्राद्ध के उपरात स्वधा का उच्चारण श्राद्धकर्ता के लिये बडा आशीर्वाद है।

स्वधा²—संज्ञा स्त्री० १ पितरो को दिया जानेवाला अन्न या भोजन। पितृ अन्न। उ०—मेरे पीछे पिंड का लोप देख मेरे पुरखे स्वधा इकट्ठी करने मे लगे हुए, श्राद्ध मे इच्छापूर्वक भोजन नही करते।—लक्ष्मण (शब्द०)। २ दक्ष की एक कन्या जो पितरो की पत्नी कही गई है। ३ अपनी प्रकृति या स्वभाव। अपनी इच्छा या रुचि (को०)। ४ अन्न या आहुति (को०)। ५ पितरो को दी जानेवाली आहुति या हवि (को०)। ६ अपना अंश या भाग (को०)। ७ श्राद्ध। मृतककर्म (को०)। ८ सासारिक भ्रम। माया (को०)।

स्वधाकर—वि० [सं०] श्राद्ध करनेवाला। श्राद्धकर्ता।

स्वधाकार¹—वि० [सं०] दे० 'स्वधाकर'।

स्वधाकार²—संज्ञा पुं० स्वधा शब्द का उच्चारण।

स्वधानिनयन—संज्ञा पुं० [सं०] पितरो के निमित्त हवि बनाते समय प्रयोग मे आनेवाला सूत्र या सूक्त मंत्र [को०]।

स्वधाधिप—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि।

स्वधाप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्नि। २ काला तिल। ३ पितृगण। पितर जिन्हें स्वधा प्रिय हैं (को०)। ४ पितृलोक (को०)।

स्वधाभुक्—संज्ञा पुं० [सं० स्वधाभुज्] १ पितर। २ देवता।

स्वधाभोजी—संज्ञा पुं० [सं० स्वधाभोजिन्] १ पितर। पितृगण। २ देवता। देवगण (को०)।

स्वधामन्—संज्ञा पुं० [सं०] १ भागवत के अनुसार सूनृता के एक पुत्र का नाम। २ तृतीय मन्वतर का एक देवगण [को०]।

स्वधाशन—संज्ञा पुं० [सं०] पितर। पितृगण।

स्वधित वि० [सं०] दृढ। ठोस [को०]।

स्वधिति—संज्ञा पुं०, स्त्री० [सं०] १ कुल्हाडी। कुठार। २ वज्र। ३ आरा (को०)। ४ कडी लकडियोवाला एक विशाल वृक्ष (को०)।

स्वधितिहेतिक—संज्ञा पुं० [सं०] परशुधारी योद्धा। कुठार धारण करनेवाला सैनिक।

स्वधिती—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'स्वधिति' [को०]।

स्वधिष्ठान—वि० [सं०] जो अच्छी स्थिति मे हो। जो अच्छे स्थान से युक्त हो। जैसे, युद्धरथ।

स्वधिष्ठित—वि० [सं०] १ जो ठहरने या रहने के लिये उत्तम हो। २ अच्छी तरह सधाया वा सिखाया हुआ [को०]।

स्वधीत¹—वि० [सं०] अच्छी तरह पढा हुआ। सम्यक् रूप से अध्ययन किया हुआ।

स्वधीत²—संज्ञा पुं० अच्छी तरह पढा हुआ शास्त्र [को०]।

स्वधीति— संज्ञा पुं० [सं०] १ उत्तम वेदपाठी या ब्रह्मचारी [को०]।

स्वधीन(पु)—वि० [सं० स्वाधीन] दे० 'स्वाधीन'। उ०—भूमि सकि स्वधीन पुन्य तनय देवा रहस्य मन।—पृ० रा०, १।४७८।

स्वधुर्—वि० [सं०] जो पराधीन न हो। स्वाधीन [को०]।

स्वनंदा—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वनन्दा] दुर्गा।

स्वन¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ शब्द। ध्वनि। आवाज। जैसे, शख स्वन। उ०—सुरगन मिलि जय जय स्वन कीन्हा। असुरहि कृष्ण परम पद दीन्हा।—गोपाल (शब्द०)। २ एक प्रकार की अग्नि [को०]।

स्वन²—वि० बुरा शब्द करनेवाला [को०]।

स्वनचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का सभोग आसन या रतिबध।

स्वनाभक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अस्त्र-सचालन-मंत्र [को०]।

स्वनाम—संज्ञा पुं० [सं० स्वनामन्] अपना नाम या अभिधान।

स्वनामधन्य—वि० [सं०] अपने नाम के कारण धन्य होनेवाला। जो अपने नाम के कारण धन्य हो। जैसे,—स्वनामधन्य प० बाल गगाधर तिलक।

स्वनामा—वि० [सं० स्वनामन्] जो अपने नाम के कारण प्रसिद्ध हो। अपने नाम से विख्यात होनेवाला।

स्वनाश—संज्ञा पुं० [सं०] अपना नाश। अपने पक्ष का विनाश [को०]।

स्वनि—संज्ञा पुं० [सं०] १ शब्द। आवाज। २ अग्नि। आग।

स्वनिक—वि० [सं०] ध्वनि या शब्द करनेवाला। जैसे, पाणिस्वनिक = हथेलियो को बजाने वाला [को०]।

स्वनिघ्न—वि० [सं०] अपने तई रहनेवाला। अपने भरोसे रहनेवाला। आत्मनिर्भर [को०]।

स्वनित¹—वि० [सं०] ध्वनित। शब्दित।

स्वनित²—संज्ञा पुं० १ शब्द। ध्वनि। आवाज। २ मेघगर्जन। बादलो की गडगडाहट। ३ गर्जन। गरज।

स्वनिताह्वय—संज्ञा पुं० [सं०] चौलाई का शाक। तडुलीय शाक।

स्वनिर्मित—वि० [सं०] स्वय का बनाया हुआ। जिसे खुद निर्मित किया गया हो। उ०—जब आकर्षक बहुत न थे प्रासाद मनोहर, जब प्रिय थे अत्यत स्वनिर्मित बालू के घर।—सागरिका, पृ० २१।

स्वनोत्साह संज्ञा पुं० [सं०] गैंडा। गडक।

स्वन्न(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सु + अन्न] सुअन्न अच्छा। भोजन। अच्छा आहार [को०]।

स्वपक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपना पक्ष। अपना दल। २ मित्र। दोस्त। ३ किसी विषय पर अपना विचार या पक्ष [को०]।

स्वपक्षीय—वि० [सं०] जो अपने दल या विचार का हो। २ मित्र। सखा। सहाय।

स्वपच(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्वपच] दे० 'श्वपच'। उ०—स्वपच सवर खस जमन जड पावँर कोल किरात। राम कहत पावन परम होत भुवन विख्यात।—तुलसी (शब्द०)।

स्वपण—संज्ञा पुं० [सं०] अपना भंडार या द्रव्य [को०]।

स्वपन—संज्ञा पुं० [सं०] १ नींद। निद्रा। २ सपना। स्वप्न। ख्वाब। ३ त्वचा की संज्ञाहीनता (को०)।

स्वपना(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० स्वपन, स्वप्नन,] दे० 'सपना' या 'स्वप्न'। उ०—स्वपना में ताहि राज मिलो है हाकिम हुकुम दोहाई। जागि परे कहूँ लाव न लसकर पलक खुले सुधि पाई।—कबीर (शब्द०)।

स्वपनीय—वि० [सं०] निद्रा के योग्य। सोने लायक।

स्वपरमंडल—संज्ञा पुं० [सं० स्वपरमण्डल] अपने और शत्रु के सहायक देश या राज्य [को०]।

स्वपिंडा—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वपिण्डा] पिंड खजूर। पिंड खर्जुरी।

स्वप्तव्य—वि० [सं०] निद्रा के योग्य।

स्वप्न—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोने की क्रिया या अवस्था। निद्रा। नींद। २ निद्रावस्था में कुछ मूर्तियों, चित्रों और विचारों आदि की संबद्ध या असंबद्ध शृंखला का मन में आना। निद्रावस्था में कुछ घटना आदि दिखाई देना। जैसे,—इधर कई दिनों से मैं भीषण स्वप्न देखा करता हूँ। ३ वह घटना आदि जो इस प्रकार निद्रित अवस्था में दिखाई दे अथवा मन में आवे। जैसे,—उन्होंने अपना सारा स्वप्न कह सुनाया।

विशेष—प्रायः पूरी नींद न आने की दशा में मन में अनेक प्रकार के विचार उठा करते हैं जिनके कारण कुछ घटनाएँ मन के सामने उपस्थित हो जाती हैं। इसी को स्वप्न कहते हैं। यद्यपि वास्तव में उस समय नेत्र बंद रहते हैं और इन बातों का अनुभव केवल मन को होता है, तथापि बोलचाल में इसके साथ 'देखना' क्रिया का प्रयोग होता है।

४ शिथिलता। अकर्मण्यता। निरुत्साह। आलस्य (को०)। ५ मन में उठनेवाली ऊँची कल्पना या विचार, विशेषतः ऐसी कल्पना या विचार जो सहज में कार्य रूप में परिणत न हो सके। जैसे,—आप तो बहुत दिनों से इसी प्रकार के स्वप्न देखा करते हैं।

मुहा०—स्वप्न टूट जाना = (१) नींद से जाग उठना। (२) कल्पना लोक से यथार्थ में उतर आना।

स्वप्नक्—वि० [सं० स्वप्नज्] सोनेवाला। निद्राशील।

स्वप्नकर—वि० [सं०] नींद लानेवाला। जिससे नींद आए [को०]।

स्वप्नकल्प—वि० [सं०] सपने के समान। सपने जैसा। स्वप्न के सदृश [को०]।

स्वप्नकाम—वि० [सं०] जो सोना चाहता हो। निद्रातुर [को०]।

स्वप्नकृत्—संज्ञा पुं० [सं०] स्वप्न अर्थात् नींद लानेवाला, शिरियारी। सुनिषण्णक शाक।

विशेष—कहते हैं, इस शाक के खाने से नींद आती है, इसी से इसका नाम स्वप्नकृत् (नींद लानेवाला) पड़ा।

स्वप्नगत—वि० [सं०] सोया हुआ। निद्राग्रस्त।

स्वप्नगृह—संज्ञा पुं० [सं०] सोने का कमरा। शयनागार। शयनगृह।

स्वप्नज¹—संज्ञा पुं० [सं०] स्वप्न। सपना [को०]।

स्वप्नज²—वि० नींद में उत्पन्न [को०]।

यौ०—स्वप्नज ज्ञान = दे० 'स्वप्नज्ञान'।

स्वप्नज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] स्वप्न का फल जाननेवाला। शकुनज्ञ। ज्योतिषी।

स्वप्नज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] स्वप्न में होनेवाला ज्ञान या अनुभूति [को०]।

स्वप्नतंद्रिता—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वप्नतन्द्रिता] निद्रा या स्वप्नजन्य आलस्य।

स्वप्नदर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] स्वप्न देखना। ख्वाब देखना [को०]।

स्वप्नदर्शी—वि० [सं० स्वप्नदर्शिन्] १ स्वप्न देखनेवाला। २ बड़ी बड़ी कल्पनाएँ करनेवाला। मनमोदक खानेवाला।

स्वप्नदृक्—वि० [सं० स्वप्नदृश्] १ निद्रा से जिसके नेत्र मुँद गए हों। निद्रित। निद्रायुक्त। २ जो स्वप्न देखता हो। सपना देखनेवाला [को०]।

स्वप्नदोष—संज्ञा पुं० [सं०] निद्रावस्था में वीर्यपात होना जो एक प्रकार का रोग माना जाता है।

विशेष—स्वप्नावस्था में स्त्रीप्रसंग या कोई कामोद्दीपक दृश्य देखकर अथवा यों ही दुर्बलेंद्रिय लोगों का प्रायः वीर्यपात हो जाता है। यह एक भयंकर रोग है जो अधिक स्त्रीप्रसंग या अस्वाभाविक कर्म से धातुक्षीणता होने के कारण होता है। कभी कभी बहुत गरम चीज खाने और कोष्ठबद्धता से भी स्वप्नदोष हो जाता है।

स्वप्नधीगम्य—वि० [सं०] जो स्वप्नज ज्ञान द्वारा बोधगम्य हो। जो स्वप्न या निद्रा जैसी स्थिति में अनुभूत हो [को०]।

स्वप्ननशन—संज्ञा पुं० [सं०] (निद्रा का नाश करनेवाले) सूर्य।

स्वप्ननिकेतन—संज्ञा पुं० [सं०] सोने का कमरा। शयनगृह। शयनागार।

स्वप्ननिदर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] स्वप्न देखना। स्वप्नदर्शन [को०]।

स्वप्नप्रपंच—संज्ञा पुं० [सं० स्वप्नप्रपञ्च] स्वप्न में दृश्यमान् जगत्। स्वप्न में दिखाई पड़नेवाला संसार [को०]।

स्वप्नभाक्—वि० [सं० स्वप्नभाज्] स्वप्न या नींद में पड़ा हुआ। सपना देखता या सोया हुआ।

स्वप्नमाणव—संज्ञा पुं० [सं०] स्वप्न या निद्रापूर्ण करनेवाला मंत्र या विधि [को०]।

स्वप्नमाणवक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्वप्नमाणव'।

स्वप्नलब्ध—वि० [सं०] जो स्वप्न में प्राप्त हो। जो निद्रा में प्राप्त या लब्ध हो [को०]।

स्वप्नविकार—संज्ञा पुं० [सं०] स्वप्नजनित परिवर्तन। निद्राजन्य विकृति [को०]।

स्वप्नविचार—संज्ञा पुं० [सं०] सपने के शुभाशुभ विचार या विवेचन करनेवाले ग्रंथादि।

स्वप्नविचारी—संज्ञा पुं० [सं० स्वप्नविचारिन्] [वि० स्त्री० स्वप्नविचारिणी] वह व्यक्ति जो स्वप्न के शुभाशुभ फल का विचार करता हो। स्वप्नशास्त्री। स्वप्नज्ञ। शकुनज्ञ [को०]।

स्वप्नविनश्वर—वि० [सं०] स्वप्न के समान नष्ट होनेवाला। क्षणभगुर [को०]।

स्वप्नविपर्यय—संज्ञा पुं० [सं०] स्वप्न या निद्रा के समय का बदलना [को०]।

स्वप्नवृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] स्वप्न मे अनुभूत होनेवाली घटना [को०]।

स्वप्नशील—वि० [सं०] निद्रातुर। नीद से जिसकी आँखें भरी हो [को०]

स्वप्नसदर्शन—संज्ञा पुं० [सं० स्वप्नसन्दशन] दे० 'स्वप्नदर्शन'।

स्वप्नसात्—वि० [सं०] सोया हुआ। स्वप्न मे लीन [को०]।

स्वप्नसृष्टि—संज्ञा पुं० [सं०] स्वप्न की सृष्टि या निर्माण [को०]।

स्वप्नस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] सोने का कमरा। शयनगृह। शयनागार।

स्वप्नात—संज्ञा पुं० [सं० स्वप्नान्त] १ सपना टूटना। स्वप्न का समाप्त या खत्म होना। २ स्वप्न या निद्रा की अवस्था। स्वप्नावस्था (को०)।

स्वप्नातर—संज्ञा पुं० [सं० स्वप्नान्तर] दे० 'स्वप्नात' या 'सुपनतर'।

यौ०—स्वप्नातरगत = स्वप्नावस्था मे घटित।

स्वप्नातिक—संज्ञा पुं० [सं० स्वप्नान्तिक] स्वप्न की चेतना या ज्ञान [को०]

स्वप्नादेश—संज्ञा पुं० [सं०] स्वप्नसबधी आज्ञा। स्वप्नावस्था का आदेश [को०]।

स्वप्नाना—क्रि० स० [सं० स्वप्न + हिं० आना (प्रत्य०) (पु)] सपना देना। स्वप्न देना। स्वप्न दिखाना। उ०—हारि गयो हीरा नहि पायो। तव अगद को हरि स्वप्नायो।—रघुराज (शब्द०)।

स्वप्नालु—वि० [सं०] सोनेवाला। निद्राशील। निद्रालु।

स्वप्नावस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वप्न की अवस्था या स्थिति। सपने की अवस्था [को०]।

स्वप्नाविष्ट—वि० [सं० स्वप्न + आविष्ट] १ उनीदा। २ मोहाविष्ट। ३ कल्पनालोक मे विचरण करता हुआ। ४ स्वप्न देखता हुआ। उ०—मेरी यह सोयी अवस्था फिर लौट आई है, पर वैसी जड नही—मैं मानो स्वप्नाविष्ट हूँ।—नदी०, पृ० २१२।

स्वप्निल—वि० [सं० स्वप्न + हिं० इल (प्रत्य०)] १ स्वप्न सबधी। स्वप्न का। सपनोवाला। उ०—सुप्ति की ये स्वप्निल मुस्कान।—पल्लव, पृ०। २ अर्धसुप्त। उनीदा।

स्वप्नोपम—वि० [सं०] १ सपने के समान। स्वप्न सदृश। २ जो असत्य हो। अवास्तविक। तथ्य रहित [को०]।

स्वप्रकाश—वि० [सं०] १ जो आप ही प्रकाशमान् हो। २ जो अपने आप स्पष्ट या व्यक्त हो। २ जो अपने ही तेज से प्रकाशमान् हो। जो स्वय ही के तेज से दीप्त हो।

स्वप्रकृतिक—वि० [सं०] जो विना किसी कारण के स्वय अपनी प्रकृति से ही हो। प्राकृतिक रूप से होनेवाला।

स्वप्रमितिक—वि० [सं०] जो विना किसी की सहायता के अपना काम काम स्वय करता हो। जैसे,—सूर्य जो आप ही प्रकाश देता है।

स्ववरन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्ण] दे० 'सुवर्ण'।

स्ववधु—संज्ञा पुं० [सं० स्ववन्धु] अपना सबधी। सजातीय [को०]।

स्ववीज—संज्ञा पुं० [सं०] आत्मा।

स्वभट—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपनी रक्षा स्वय करनेवाला। २ अपना योद्धा। स्व-अग-रक्षक [को०]।

स्वभद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गभारी। गँभारी वृक्ष।

स्वभाउ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्वभाव] दे० 'स्वभाव'। उ०—सूर को स्वभाउ विना युद्ध न करे बखान कायर ज्यों कहा घर बैठे सोच हरिये।—हनुमन्नाटक (शब्द०)।

स्वभाग्य—संज्ञा पुं० [सं० स्व + भाग्य] अपना भाग्य।

यौ०—स्वभाग्य निर्णय = अपने बारे मे खुद निर्णय करना।

स्वभाजन—संज्ञा पुं० [सं०] प्रसन्नता। आह्लाद। प्रहर्ष [को०]।

स्वभाव—संज्ञा पुं० [सं०] १ सदा बना रहनेवाला मूल या प्रधान गुण। तासीर। जैसे,—जल का स्वभाव शीतल होना है। २ मन की प्रवृत्ति। मिजाज। प्रकृति। जैसे,—(क) उनका स्वभाव वडा कठोर है। (ख) कवि स्वभाव से ही सौदर्यप्रिय होते हैं। (ग) आजकल उनका स्वभाव कुछ बदल गया है। ३ आदत। टेव। बान। जैसे,—उसे लडने का स्वभाव पड गया है।

क्रि० प्र०—डालना।—पडना।

४. अपनी स्थिति या स्थान। अपना राष्ट्र या देश [को०]।

स्वभावकृत्—वि० [सं०] स्वाभाविक। प्राकृतिक [को०]।

स्वभावकृपण—संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्मा का एक नाम। २ वह व्यक्ति जो स्वभावत कजूस हो। कृपण व्यक्ति।

स्वभावज—वि० [सं०] जो स्वभाव या प्रकृति से उत्पन्न हुआ हो। प्राकृतिक। स्वाभाविक। सहज।

स्वभावजनित—वि० [सं०] दे० 'स्वभावज'।

स्वभावत—अव्य० [सं० स्वभावतस्] स्वभाव से। प्राकृतिक रूप से। सहज ही। जैसे,—कोई अन्याय होता हुआ देखकर मनुष्य को स्वभावत क्रोध आ जाता है।

स्वभावद्वेष—संज्ञा पुं० [सं०] स्वाभाविक या प्रकृतिजन्य द्वेषभाव। जैसे, सर्प और नकुल का।

स्वभावप्रभव—वि० [सं०] दे० 'स्वभावज'।

स्वभावसिद्ध—वि० [सं०] स्वभाव से ही होनेवाला। सहज। प्राकृतिक। स्वाभाविक। उ०—भ्रमपूर्ण बातो का सशोधन करने की योग्यता मनुष्य मे स्वभावसिद्ध है।—द्विवेदी (शब्द०)।

स्वभाविक—वि० [सं० स्वाभाविक] दे० 'स्वाभाविक'।

स्वभावोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का अर्थालकार जिसमे किसी का जाति या अवस्था आदि के अनुसार यथावत् और प्राकृतिक स्वरूप का वर्णन किया जाय।

विशेष—किसी की जाति, गुण, क्रिया के अनुसार उसके स्वभाव के वर्णन को स्वभावोक्ति अलकार कहते है। इसके दो भेद कहे गए हैं—सहज और प्रतिज्ञाबद्ध। जहाँ किसी विषय का बिलकुल सहज और स्वाभाविक वर्णन होता है, वहाँ सहज स्वभावोक्ति अलकार होता है और जहाँ अपने सहज स्वभाव के अनुसार प्रतिज्ञा या शपथ आदि के साथ कोई बात कही जाती है, वहाँ प्रतिज्ञाबद्ध स्वाभावोक्ति होती है। उ०—(क) सीस मुकुट कटि काछनी कर मुरली उर माल। यहि बानक मो उर सदा बसौ बिहारीलाल। (सहज)। (ख) तोरौ छत्रक दड जिमि तुव प्रताप बलनाथ। जौ न करौं प्रभु पद सपथ पुनि न धरौं धनु हाथ। (प्रतिज्ञाबद्ध)।

स्वभू¹—सज्ञा पुं० [स०] १ ब्रह्मा का एक नाम। २ विष्णु का एक नाम। ३ शिव का एक नाम।

स्वभू²—सज्ञा स्त्री० अपना देश। स्वदश [को०]।

स्वभू³—वि० जो अपने आपसे उत्पन्न हुआ हो। आपसे आप होनेवाला।

स्वभूति—सज्ञा स्त्री० [स०] अपना ऐश्वय। अपना कल्याण [को०]।

स्वभूमि¹—सज्ञा पुं० [सं०] विष्णुपुराण के अनुसार उग्रसेन के एक पुत्र का नाम।

स्वभूमि²—सज्ञा स्त्री० स्वभू। अपना देश [को०]।

स्वमनीषा—सज्ञा स्त्री० [स०] अपनी बुद्धि, मत या विचार [को०]।

स्वमनीषिका—सज्ञा स्त्री० [स०] उदासीनता। नि सगता। तटस्थता [को०]।

स्वमेक—सज्ञा पुं० [स०] सवत्सर वर्ष।

स्वय—अव्य० [स० स्वयम्] १ खुद। आप। उ०—(क) मैं स्वय तुम्हारे साथ चलकर देखूँगा कि इस पहली परीक्षा मे कैसे उतरते हो।—अयोध्या० (शब्द०)। (ख) आप स्वय अपनी कृपा से सब जीवो मे प्रकाशित हूजिए।—दयानद (शब्द०)। २ आपसे आप। अपने ही से। खुद बखुद। जैसे,—आपके सब काम तो स्वय ही हो जाते है।

स्वयकृत¹—वि० [सं० स्वयम्कृत] १ स्वय या खुद किया हुआ। आत्मकृत। २ प्राकृतिक। स्वाभाविक। ३ गोद लिया हुआ [को०]।

स्वयकृत²—सज्ञा पुं० गोद लिया हुआ लडका [को०]।

स्वयकृती—वि० [स० स्वयम्कृतिन्] स्वभावत काम करनेवाला [को०]।

स्वयकृष्ट—वि० [स० स्वयम्कृष्ट] स्वयकर्षित। खुद जोता हुआ [को०]।

स्वयगुप्ता—सज्ञा स्त्री० [स० स्वयम्गुप्ता] कौछ। केवाँच।

स्वयग्रह, स्वयग्रहण—सज्ञा पुं० [सं०स्वयम्ग्रह, स्वयम्ग्रहण] बलपूर्वक ग्रहण। बलात् ले लेना [को०]।

स्वयग्राह¹—वि० [स० स्वयम्ग्राह] १ बलात् ग्रहण करनेवाला। २ स्वय या इच्छानुसार चुननेवाला [को०]।

स्वयग्राह²—सज्ञा पुं० स्वय चुन लेना। स्वय ग्रहण करना [को०]।

स्वयग्राहदान—सज्ञा पुं० [स० स्वयम्ग्राहदान] कौटिल्य के अनुसार सेना आदि के द्वारा आपसे आप सहायता पहुँचाना।

स्वयचालित—वि० [स० स्वयम्चालित] जो अपने आप सचालित हो। जैसे, स्वयचालित मशीन आदि।

स्वयजात—वि० [स० स्वयम्जात] जो स्वय उदभूत हो। अपने आप उत्पन्न होनेवाला [को०]।

स्वयज्योति¹—सज्ञा पुं० [सं० स्वयम्ज्योतिस्] परमेश्वर। परमात्मा।

स्वयज्योति²—वि० अपने आप प्रकाशित होनेवाला [को०]।

स्वयदत्त¹—सज्ञा पुं० [सं० स्वयम्दत्त] वह पुत्र जो अपने मातापिता के मर जाने अथवा उनके द्वारा परित्यक्त होने पर अपने आपको किसी के हाथ सौप दे और उसका पुत्र बन जाय।

स्वयदत्त²—वि० अपने को स्वय दे देनेवाला [को०]।

स्वयदान—सज्ञा पुं० [सं०स्वयम्दान] स्वेच्छामूलक दान। जैसे—विवाह मे कन्या का दान [को०]।

स्वयदूत—सज्ञा पुं० [स० स्वयम्दूत] वह नायक जो अपना दूतत्व आप ही करे। नायिका पर अपना कामवासना स्वय ही प्रकट करनेवाला नायक। उ०—जपत हूँ ता दिन सो रघुनाथ की दोहाई जा दिन सो सुन्यौ है मैं प्यारी तेर नाम को। सोई भयो सिद्धि आजु औचक मिलो हौ मोहि ऐमी दुपहरी मे चलो हौ काहू काम को। यह वर माँगत हौं मेर पर कृपा करि मेरी कहो कीजै सुख दीजै तन छाम का। यह सुख ठाम को आराम को निहारो नेक मेरे कहे घरिक निवारि लाजै घाम को।—रघुनाथ (शब्द०)।

स्वयदूती—सज्ञा स्त्री० [स० स्वयम्दूती] वह परकीया नायिका जो अपना दूतत्व आप ही करती हो। नायक पर स्वय ही वासना प्रकट करनेवाली नायिका। उ०—ऐसे बने रघुनाथ कहै हरि कामकलानिधि के मद गारे। झाँकि झरोखे सो आवत देखि खरी भई आइकै आपने द्वारे। रीझि सरूप सो भीजी सनेह सो बोली हरें रस आखर भारे। ठाढ़ हो तासो कहौगी कछू अरे ग्वाल बडो बडी आँखिनवारे।—सुदरीसवस्व (शब्द०)।

स्वयदृक्—वि० [सं० स्वयम्दृश्] अपने आप व्यक्त या प्रकट होनेवाला [को०]।

स्वयदेव—सज्ञा पुं० [स० स्वयम्देव] साक्षात् या प्रत्यक्ष देवता [को०]।

स्वयपतित—वि० [स० स्वयम्पतित] जो आपसे आप गिरे। जैसे—वृक्ष मे पककर (आपसे आप) गिरा हुआ फल।

स्वयपाकी—वि० [स० स्वयम्पाकिन्] जो अपना भोजन स्वय बनाता हो। किसी दूसरे का बनाया हुआ भोजन न करनेवाला [को०]।

स्वयपाठ—सज्ञा पुं० [सं० स्वयम्पाठ] मूल पाठ [को०]।

स्वयप्रकाश¹—सज्ञा पुं० [स० स्वयम्प्रकाश] १ वह जो आप ही आप बिना किसी दूसरे की सहायता के प्रकाशित हो। उ०—(क) जो आप स्वयप्रकाश और सूर्यादि तेजस्वी लोको का प्रकाश करनेवाला है, इससे उस ईश्वर का नाम 'तैजस' है।—सत्यार्थ० (शब्द०)। (ख) सो उस परम शक्तिमान सवज्ञ स्वयप्रकाश परमात्मा के समीप जाते ही प्रश्न शक्ति से रहित काष्ठवत् मौन होके खड़ा रहा।—केनोपनिषद् (शब्द०)। २ परमात्मा। परमेश्वर।

स्वयप्रकाश²—वि० जो अपने आप प्रकाशित या ज्योतिर्मय हो।

स्वयप्रकाशमान—सज्ञा पुं०, वि० [सं० स्वयम्प्रकाशमान] दे० 'स्वयप्रकाश'।

स्वयप्रकाशित—वि० [सं० स्वयम्प्रकाशित] जो स्वय द्योतित या दीप्त हो। जो खुद प्रकाशमान हो।

स्वयप्रज्वलित—वि० [सं० स्वयम्प्रज्वलित] जो अपने आप दीप्त या जल रहा हो (को०)।

स्वयप्रभ[१]—सज्ञा पुं० [सं० स्वयम्प्रभ] १ जैनियो के अनुसार भावी २४ अर्हतो मे से चौथे अर्हत् का नाम। २ दे० 'स्वयप्रकाश'।

स्वयप्रभा—सज्ञा स्त्री० [सं० स्वयम्प्रभा] १ इद्र की एक अप्सरा का नाम।

विशेष—इसे मय दानव हर लाया था और इसके गर्भ से उसने मदोदरी नामक कन्या उत्पन्न की थी। जब हनुमान आदि वानर सीता को ढूँढने निकले थे, तब मार्ग मे एक गुफा मे इससे उनकी भेंट हुई थी।

२ मय की एक कन्या (को०)।

स्वयप्रभु[१]—वि० [सं० स्वयम्प्रभु] जो अपना स्वामी स्वय हो। जो स्वय समर्थ या प्रभु हो।

स्वयप्रभु[२]—सज्ञा पुं० विधाता। ब्रह्मा (को०)।

स्वयप्रमाण—वि० [सं० स्वयम्प्रमाण] जो आप ही प्रमाण हो और जिसके लिये किसी दूसरे प्रमाण की आवश्यकता न हो। जैसे,—वेद आदि स्वयप्रमाण है।

स्वयप्रस्तुत—वि० [सं० स्वयम्प्रस्तु] १ जो अपने आपको स्वय प्रस्तुत करे। २ स्वय प्रशसित (को०)।

स्वयफल—वि० [सं० स्वयम्फल] जो आप ही अपना फल हो और किसी दूसरे कारण से उत्पन्न न हुआ हो।

स्वयभु[१]—सज्ञा पुं० [सं० स्वयम्भु] १ ब्रह्मा। २ वेद। ३ महादेव। शिव। ४ अज। ५ जैनियो के नौ वासुदेवो मे से एक। ६ वनमूंग।

स्वयभु[२]—वि० जो आपसे आप उत्पन्न हो। अपने आप पैदा होनेवाला।

स्वयभुव—सज्ञा पुं० [सं० स्वयम्भुव] १ प्रथम मनु। आदि मनु। दे० 'स्वयभुवा'। २ ब्रह्मा। ३ शिव (को०)।

स्वयभुवा—सज्ञा स्त्री० [सं० स्वयम्भुवा] १ तमाकू का पत्ता। शिवलिंगी नाम की लता। ३ मापपर्णी। मखवन।

स्वयभू[१]—सज्ञा पुं० [सं० स्वयम्भू] १ ब्रह्मा। २ काल। ३ कामदेव ४ विष्णु। ५ शिव। ६ मापपर्णी। मखवन। ७ शिवलिंगी नाम की लता। ८ परब्रह्म। ईश्वर (को०)। ६. प्रथम मनु। दे० 'स्वायभुव'। उ०—बहुरि स्वयभू मनु तप कीनो। ताहू को हरिजू वर दीनो।—सूर (शब्द०)। १० व्यास का एक नाम (को०)। ११ बुद्ध का एक नाम (को०)। १२ आदि या प्रथम बुद्ध (को०)। १३ प्रत्येक् या प्रत्येकबुद्ध का एक नाम (को०)। १४ जैनो के अनुसार तृतीय कृष्ण वासुदेव (को०)। १५ अतरिक्ष। व्योम (को०)। १६ स्त्रियो का कुच। स्तन (को०)।

स्वयभू—वि० १ जो आपसे आप उत्पन्न हुआ हो। २ बुद्ध सबधी। बुद्ध का (को०)।

स्वयभूत[१]—वि० [सं० स्वयम्भूत] जो आपसे आप उत्पन्न हुआ हो। अपने आप पैदा होनेवाला।

स्वयभूत[२]—सज्ञा पुं० शिव। शकर (को०)।

स्वयभूरमण—सज्ञा पुं० [सं० स्वयम्भूरमण] जैनो के अनुसार अतिम महाद्वीप और समुद्र का नाम।

स्वयभृत—वि० [सं० स्वयम्भृत] जो स्वय पुष्ट हो। जो स्वय पालित हो।

स्वयभोज—सज्ञा पुं० [सं० स्वयम्भोज] भागवत के अनुसार राजा शिनि के एक पुत्र का नाम।

स्वयभ्रमि—वि० [सं० स्वयम्भ्रमि] स्वय चक्कर खाने या घूमनेवाला (को०)।

स्वयभ्रमी—वि० [सं० स्वयम्भ्रमिन] दे० 'स्वयभ्रमि'।

स्वयमृत—वि० [सं० स्वयम्मृत] १ जो स्वेच्छा से मरा हो। २ प्राकृतिक मृत्यु पानेवाला (को०)। स्वाभाविक मौत पानेवाला (को०)।

स्वयम्लान—वि० [सं० स्वयम्म्लान] जो स्वय या प्रकृतिवशात् म्लान हो गया हो। अपने आप म्लान या मुरझाया हुआ।

स्वययान—सज्ञा पुं० [सं० स्वयम्यान] अन्य देश के ऊपर स्वय आक्रमण या हमला करना (को०)।

स्वयवर—सज्ञा पुं० [सं० स्वयम्वर] १ प्राचीन भारत का एक प्रसिद्ध, विधान जिसमे विवाह योग्य कन्या कुछ उपस्थित व्यक्तियो मे से अपने लिये स्वय वर चुनती थी। उ०—(क) सीय स्वयवर कथा सुहाई। सरित सुहावनि सो छवि छाई।—तुलसी (शब्द०)। (ख) जनक विदेह कियो जु स्वयवर बहु नृप विप्र बोलाए। तोरन धनुष देव त्र्यबक का काहू यतन न पाए।—सूर (शब्द०)। (ग) मारि ताडका यज्ञ करायो विश्वामित्र आनद भयो। सीय स्वयवर जानि सूर प्रभु को ऋषि लै ता ठौर गयो।—सूर (शब्द०)।

विशेष—प्राचीन काल मे भारतीय आर्यो, विशेषत क्षत्रियो या राजाओ मे यह प्रथा थी कि जब कन्या विवाह योग्य हो जाती थी, तब उसकी सूचना उपयुक्त व्यक्तियो के पास भेज दी जाती थी, जो एक निश्चित समय और स्थान पर आकर एकत्र होते थे। उस समय वह कन्या उन उपस्थित व्यक्तियो मे से जिसे अपने लिये उपयुक्त समझती थी, उसके गले मे वरमाल या जयमाल डाल देती थी, और तब उसी के साथ उसका विवाह होता था। कभी कभी कन्या के पिता की ओर से, बलपरीक्षा के लिये, कोई शर्त भी लगा दी जाती थी, और वह शर्त पूरी करनेवाला ही कन्या के लिये उपयुक्त पात्र समझा जाता था। सीता जी और द्रौपदी का विवाह इसी प्रथा के अनुसार हुआ था।

यौ०—स्वयवरपति = स्वयवर प्रथा द्वारा चुना हुआ पति। स्वयवरविवाह = वह विवाह जो स्वयवर प्रथा द्वारा पति चुन लिए जाने पर हो।

२ वह स्थान, सभा या उत्सव जहाँ इस प्रकार लोगो को एकत्र करके कन्या के लिये वर चुना जाय।

स्वयवरण—सज्ञा पुं० [सं० स्वयम्वरण] कन्या का अपने इच्छानुसार अपने लिये पति मनोनीत करना। स्वय वरण करना। विशेष—दे० 'स्वयवर—१'।

स्वयवरयित्री—सज्ञा स्त्री० [सं० स्वयम्वरयित्री] वह कन्या जो अपने पति का चुनाव स्वयमेव करे (को०)।

स्वयवरा—सज्ञा स्त्री० [सं० स्वयम्वरा] वह स्त्री जो अपने लिये स्वय ही उपयुक्त वर को वरण करे। अपने इच्छानुसार अपना पति नियत

करनेवाली स्त्री । पतिंवरा । वर्या । उ०—ये हम लोगों के देश की प्राचीन स्वयवरा थी ।—हिंदीप्रदीप (शब्द०) ।

स्वयवश—वि० [सं० स्वयम्वश] जो स्वाधीन हो । जिसपर किसी अन्य का वश या अधिकार न हो ।

स्वयवह[1]—सज्ञा पुं० [सं० स्वयम्वह] वह बाजा जो चाबी देने से आपसे आप बजे । जैसे,—अरगन आदि ।

स्वयवह[2]—वि० १ स्वय अपने आपको धारण करनेवाला । जो अपने आपको वहन करे । २ स्वय गतिशील । स्वय चलनेवाला । स्वयचालित (को०) ।

स्वयवादि दोष—सज्ञा पुं० [स० स्वयम्वादि दोष] न्यायालय मे झूठ बात को बार बार दुहराने का अपराध ।

स्वयवादी—सज्ञा पुं० [स० स्वयम्वादिन्] मुकदमे मे जिरह के समय किसी झूठ बात को बार बार दुहरानेवाला ।

स्वयविक्रीत—वि० [सं० स्वयम्विक्रीत] (दास आदि) जिसने स्वय ही अपने आपको बेचा हो ।

स्वयविशीर्ण—वि० [स० स्वयम्विशीर्ण] अपने आप गिरा हुआ । जैसे, वृक्ष के पत्ते, फल आदि (को०) ।

स्वयशृत—वि० [स० स्वयम्शृत] अपने आप पक्व (को०) ।

स्वयश्रेष्ठ—सज्ञा पुं० [स० स्वयम्श्रेष्ठ] शिव ।

स्वयसयोग—सज्ञा पुं० [स० स्वयम्सयोग] वह सयोग या सबध जो अपने आप हो । स्वय होनेवाला विवाह आदि सबध (को०) ।

स्वयसिद्ध—वि० [स० स्वयम्सिद्ध] १ (बात) जो आप ही आप सिद्ध हो । जिसकी सिद्धि के लिये और किसी तर्क, प्रमाण या उपकरण आदि की आवश्यकता न हो । जैसे,—आग से हाथ जलना है, यह तो स्वयसिद्ध बात है । २ जिसने आप ही सिद्धि प्राप्त की हो । जो बिना किसी की सहायता के सिद्ध या सफल हुआ हो ।

स्वयसेवक—सज्ञा पुं० [स० स्वयम्सेवक] [स्त्री० स्वयसेविका] वह जो बिना किसी पुरस्कार या वेतन के किसी कार्य मे अपनी इच्छा से योग दे । स्वेच्छासेवक ।

स्वयसेविका—सज्ञा स्त्री० [स० स्वयम्सेविका] महिला स्वेच्छासेवक ।

स्वयहारिका—सज्ञा स्त्री० [स० स्वयम्हारिका] पुराणानुसार दु सह की पत्नी निर्मार्ष्टि के गर्भ से उत्पन्न आठ कन्याओ मे से एक ।

विशेष—कहते है, यह भोजनशाला मे से अधपका अन्न, गौ के स्तन मे से दूध, तिलो मे से तेल, कपास मे से सूत आदि हरण कर ले जाती है, इसी से इसका यह नाम पडा ।

स्वयमधिगत—वि० [स०] जिसे स्वय प्राप्त किया गया हो (को०) ।

स्वयमर्जित[1]—सज्ञा पुं० [स०] स्मृतियो के अनुसार वह धन सपत्ति जो स्वय उपार्जित की गई हो और जिसमे अपने किसी सबधी या दायाद आदि को कोई हिस्सा न देना पडे । खास अपनी कमाई हुई दौलत ।

स्वयमर्जित[2]—वि० जिसका उपार्जन स्वय किया गया हो (को०) ।

स्वयमवदीर्ण—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो अपने आप फट गया हो । २ अपने आप धरती फट जाने के कारण बना हुआ छिद्र या रध्र (को०) ।

स्वयमागत—वि० [स०] १ बिना बुलाए दो व्यक्तियों के बीच दखल देनेवाला । २ जो अपने आप आ गया हो (को०) ।

स्वयमानीत—वि० [स०] स्वय लाया हुआ । जो किसी की सहायता के बिना खुद ब खुद लाया गया हो (को०) ।

स्वयमाहृत—वि० [स०] दे० 'स्वयमानीत' (को०) ।

यौ०—स्वयमाहृत भोजन = स्वय ले आकर भोजन करनेवाला ।

स्वयमिंद्रियमोचन—सज्ञा पुं० [स० स्वयमिन्द्रियमोचन] अपने आप वीर्यपात होना (को०) ।

स्वयमीश्वर—[स०] परमेश्वर, जो अपना ईश्वर स्वय है (को०) ।

स्वयमीहितलब्ध—वि० [सं०] जो अपने प्रयत्न या चेष्टा द्वारा प्राप्त हो । स्मृतियो के अनुसार अपने श्रम से उपर्जित (धन) । स्वयकृत चेष्टा से प्राप्त (को०) ।

स्वयमुक्ति—सज्ञा पुं० [स०] पाँच प्रकार के साक्षियो मे से एक प्रकार का साक्षी । वह साक्षी जो बिना वादी या प्रतिवादी के बुलाए स्वय ही आकर किसी घटना या व्यवहार आदि के सबध मे कुछ कहे । (व्यवहार) ।

स्वयमुज्ज्वल—वि० [स०] स्वयप्रकाश (को०) ।

स्वयमुदित—वि० [स०] जो आपसे आप उदित हुआ हो (को०) ।

स्वयमुद्गीर्ण—वि० [स०] जो म्यान या कोश से अपने आप बाहर आ गया हो । जैसे, असि (को०) ।

स्वयमुद्घाटित—वि० [स०] आप ही आप खुल जानेवाला (को०) ।

स्वयमुपगत—सज्ञा पुं० [सं०] वह जो अपनी इच्छा से किसी का दास हो गया हो ।

स्वयमुपस्थित—वि० [स०] जो स्वय उपस्थित हो । अपनी इच्छा से आया हुआ (को०) ।

स्वयमुपागत[1]—वि० [सं०] स्वेच्छा से आया हुआ (को०) ।

स्वयमुपागत[2]—सज्ञा पुं० वह लडका जो स्वय दत्तक बन जाने के लिये कहे (को०) ।

स्वयमुपेत—वि० [स०] दे० 'स्वयमुपस्थित' ।

स्वयमेव—क्रि० वि० [सं०] आप ही आप । खुद ही । स्वय ही ।

स्वयोनि—वि० [स०] जो अपना कारण अथवा अपनी उत्पत्ति का स्थान आप ही हो ।

स्वर्—सज्ञा पुं० [सं०] १ स्वर्ग । २ परलोक । ३ आकाश । अतरिक्ष । ४ तीन महाव्याहृतियो मे एक । तृतीय महाव्याहृति (को०) । ५ सूर्य के ऊपर और ध्रुव के मध्य का स्थान । सूर्य तथा ध्रुव का मध्यवर्ती क्षेत्र (को०) । ६ दीप्ति । प्रोज्वलता । काति । प्रकाश (को०) । ७ जल । सलिल (को०) ।

स्वर[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ प्राणी के कठ से अथवा किसी पदार्थ पर आघात पडने के कारण उत्पन्न होनेवाला शब्द, जिसमे कुछ कोमलता, तीव्रता, मृदुता, कटुता, उदात्तता, अनुदात्तता आदि गुण हो । जैसे,—(क) मैंने आपके स्वर से ही आपको पहचान लिया था । (ख) दूर से कोयल का स्वर सुनाई पडा । (ग) इस छड को ठोकने पर कैसा अच्छा स्वर निकलता है । उ०—लै लै नाम सप्रेम सरस स्वर कौसल्या कल कीरति गावै ।—तुलसी

स्वरता--संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर का भाव या धर्म। स्वरत्व।

स्वरतिक्रम--संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग का अतिक्रमण कर वैकुंठलोक जाना।

स्वरत्व--स० पुं० [सं०] दे० 'स्वरता'।

स्वरदीप्त--वि० [सं०] जो स्वर के विचार से शुभ न हो [को०]।

स्वरधीत--संज्ञा पुं० [सं०] मेरु पर्वत [को०]।

स्वरनादी--संज्ञा पुं० [सं० स्वरनादिन] वह बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता हो। (संगीत)।

स्वरनाभि--संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जो मुँह मे फूँककर बजाया जाता था।

स्वरपत्तन--संज्ञा पुं० [सं०] सामवेद।

स्वरपरिवर्त--संज्ञा पुं० [सं०] ध्वनि या स्वर का परिवर्तन होना।

स्वरपात--संज्ञा पुं० [सं०] उच्चारण करने मे किसी स्वर पर रुक जाना [को०]।

स्वरपुरजय--संज्ञा पुं० [सं० स्वरपुरञ्जय] शेष का एक पुत्र [को०]।

स्वरप्रक्रिया--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्वरो की प्रक्रिया, उनकी विधि या क्रम। २ वैदिक स्वरो के सबध मे लिखित एक ग्रंथ का नाम।

स्वरप्रधान--संज्ञा पुं० [सं०] राग का एक प्रकार। वह राग जिसमे स्वर का ही आग्रह या प्रधानता हो, ताल की प्रधानता न हो।

स्वरबद्ध--वि० [सं०] ताल और स्वर मे निबद्ध [को०]।

स्वरब्रह्म--संज्ञा पुं० [सं० स्वरब्रह्मन्] वेद आदि ग्रंथ [को०]।

स्वरभग--संज्ञा पुं० [सं० स्वरभङ्ग] आवाज का बैठना। २ वैद्यक के अनुसार गले का एक रोग।

विशेष--वैद्यक मे कहा गया है कि बहुत जोर जोर से बोलने या पढने, विषपान करने, गले पर भारी आघात लगने या शीत आदि के कारण, वायु कुपित होकर स्वरनली मे प्रविष्ट हो जाती है, जिससे ठीक ठीक स्वर नही निकलता। इसी को स्वरभग कहते है।

स्वरभगी--संज्ञा पुं० [सं० स्वरभङ्गिन्] १ वह जिसे स्वरभग रोग हुआ हो। वह जिसका गला बैठ गया हो और मुँह से साफ आवाज न निकलती हो। २ एक प्रकार का पक्षी।

स्वरभक्ति--संज्ञा स्त्री० [सं०] र् और ल् के उच्चारण मे अंतर्निविष्ट स्वर की ध्वनि।

विशेष--जब र् और ल् अक्षरो के पश्चात् कोई ऊष्मवर्ण (श् ष् स् ह्) या कोई व्यजन हो तब स्वरभक्ति होती है। जैसे 'वर्ष' का 'वरिष' उच्चारण मे।

स्वरभानु--संज्ञा पुं० [सं०] सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के दस पुत्रो मे से एक पुत्र का नाम।

स्वरभाव--संज्ञा पुं० [सं०] सगीत में भाव के चार भेदो मे से एक। बिना अगसचालन किए केवल स्वर से ही दुख सुख आदि का भाव प्रकट करना।

स्वरभेद--संज्ञा पुं० [सं०] १ गला या आवाज बैठ जाना। स्वरभग। २ उच्चारण मे स्वरो की अस्पष्टता (को०)। ३. सगीत मे स्वरो का भेद होना। सगीत मे स्वरो का भेद या अतर।

स्वरमचनृत्य--संज्ञा पुं० [सं० स्वरमञ्चनृत्य] सगीतसार सग्रह के अनुसार एक प्रकार का नृत्य।

स्वरमडल--संज्ञा पुं० [सं० स्वरमण्डल] १ एक प्रकार का वाद्य जिसमे बजाने के लिये तार लगे होते हैं।

विशेष--सगीत शास्त्रो के अनुसार ७ स्वर, ३ ग्राम, २१ मूर्छनाएँ और ४९ नाम, इन्हें स्वरमडल कहा गया है।

स्वरमडलिका--संज्ञा स्त्री० [सं० स्वरमण्डलिका] प्राचीन काल की एक प्रकार की वीणा।

स्वरमात्रा--संज्ञा स्त्री० [सं०] उच्चारण की मात्रा [को०]।

स्वरयोग--संज्ञा पुं० [सं०] शब्द। ध्वनि [को०]।

स्वरलहरी--संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वरो की तरग। स्वरों की लहर।

स्वरलासिका--संज्ञा स्त्री० [सं०] वशी या मुरली नाम का बाजा जो मुँह मे फूँककर बजाया जाता है।

स्वरलिपि--संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर + लिपि] सगीत मे प्रयुक्त होनेवाले वे सकेत चिह्न जिनमे किसी राग मे आरोह अवरोह का ज्ञान होता है। २ वह पाठ या गेय रचना जो उक्त चिह्नों के आधार पर पठित हो।

स्वरवान्--वि० [सं० स्वरवत्] १ ध्वनियुक्त। निनादी। २ सुरीला। ३ स्वरविषयक। ४ स्वराघात से युक्त [को०]।

स्वरवाही--संज्ञा पुं० [सं० स्वरवाहिन्] वह बाजा जिसमे से केवल स्वर निकलता हो और जो ताल आदि का सूचक न हो। केवल स्वर उत्पन्न करनेवाला वाद्य।

स्वरविकार--संज्ञा पुं० [सं०] स्वर या आवाज मे विकार आ जाना [को०]।

स्वरविज्ञान--संज्ञा पुं० [सं०] स्वरो की विवेचना करनेवाला शास्त्र। स्वरो का विज्ञान [को०]।

स्वरविभक्ति--संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर का विभेद या पार्थक्य। स्वरो का पार्थक्य या पृथक्भाव।

स्वरवेधी--संज्ञा पुं० [सं० स्वरवेधिन्] दे० 'शब्दवेधी'। उ०--स्वरवेधी सब शस्त्र विज्ञाता वेधक लक्ष विहीना। सन्मुख पेखि न पदहु प्रहारत कर लाघव लवलीना।--रामस्वयवर (शब्द०)।

स्वरशास्त्र--संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमे स्वर सबधी सब बातो का विवेचन हो। स्वरविज्ञान।

स्वरशुद्ध--वि० [सं०] सगीत मे मात्रा आदि के विचार मे शुद्ध। जिसके स्वर अशुद्ध न हो [को०]।

स्वरशून्य--वि० [सं०] सगीत के ताल और स्वरों से रहित। स्वरहीन। बेसुरा [को०]।

स्वरसक्रम--संज्ञा पुं० [सं० स्वरसङ्क्रम] सगीत मे स्वरो का आरोह और अवरोह। स्वरो का उतार और चढाव। सरगम।

स्वरसगति--संज्ञा पुं० [सं० स्वर सङ्गति] स्वरो का उपयुक्त सयोजन या मेल [को०]।

स्वरसदर्भ--संज्ञा पुं० [सं० स्वरसन्दर्भ] दे० 'स्वरसक्रम'।

स्वरसदेहविवाद--संज्ञा पुं० [सं० स्वरसन्देहविवाद] एक प्रकार की वृत्ताकार क्रीडा [कौ०]।

स्वरसंधि--संज्ञा स्त्री० [सं० स्वरसन्धि] दो स्वरों मे होनेवाली सधि या सयोग। स्वर वर्ण मे अथवा स्वरात और स्वारादि पदो मे होनेवाली संधि [कौ०]।

स्वरसपद्--संज्ञा स्त्री० [सं० स्वरसम्पत्] स्वरो का मेल या सयोजन।

स्वरसपन्न--वि० [सं० स्वरसम्पन्न] सुरीला। स्वरयुक्त [कौ०]।

स्वरसयोग--संज्ञा पुं० [सं०] स्वरो का मेल। ध्वनियों का मेल [कौ०]।

स्वरस[1]--संज्ञा पुं० [सं०] १ वैद्यक के अनुसार पत्ती आदि को भिगोकर और अच्छी तरह कूट, पीस और छानकर निकाला हुआ शुद्ध रस। २ सहज रसात्मकता। स्वाभाविक स्वाद (कौ०)। ३ रचना मे सहज आनद या रसमयता (कौ०)। ४ एक विशेष प्रकार का तीक्ष्ण रस या कषाय (कौ०)। ५ किसी तैलीय पदार्थ को सिल पर पीसने मे उसपर पडी हुई चिकनाई (कौ०)। ६ स्वजनो के प्रति उत्पन्न भाव। वह भावना जो अपनों के प्रति हो (कौ०)। ७ एक पर्वत का नाम (कौ०)। ८ अनुरूपता। समानता। तुल्यता (कौ०)। ९ स्व अर्थात आत्मरस या आनद।

स्वरस[2]--वि० जो अपनी रुचि के अनुकूल हो [कौ०]।

स्वरसप्तक--संज्ञा पुं० [सं०] सगीत मे सात स्वरो का समूह। विशेष दे० 'स्वर'। उ०--इसी अशब्द सगीत से स्वरसप्तको की भी सृष्टि हुई।--गीतिका (भू०), पृ० १।

स्वरसमुद्र--संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जिसमे बजाने के लिये तार लगे होते थे।

स्वरसा--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कपित्थ पत्रक नाम की ओषधि। २ लाख। लाह।

स्वरसाद--संज्ञा पुं० [सं०] गला बैठ जाना। स्वरभग।

स्वरसादि--संज्ञा पुं० [सं०] ओषधियो को पानी मे औंटाकर तैयार किया हुआ काढा। कषाय।

स्वरसाधन--संज्ञा पुं० [सं०] सप्तक के स्वरो की साधना जिससे उनका शुद्ध उच्चारण किया जा सके। ठीक ठीक स्वर निकालने का अभ्यास [कौ०]।

स्वरसाम--संज्ञा पुं० [सं० स्वरसामन्] एक साम का नाम।

स्वरहा--संज्ञा पुं० [सं० स्वरहन्] गले का एक रोग। विशेष दे० 'स्वरघ्न' [कौ०]।

स्वराक--संज्ञा पुं० [सं० स्वराङ्क] एक प्रकार की सगीतरचना [कौ०]।

स्वरात--वि० [सं० स्वरान्त] (शब्द) जिसके अत मे कोई स्वर हो। जैसे,--माला, टोपी।

स्वरातर--संज्ञा पुं० [सं० स्वरान्तर] दो स्वरो के उच्चारण का मध्यवर्ती विराम, अवकाश या अतर [कौ०]।

स्वराश--संज्ञा पुं० [सं०] १ सगीत मे स्वर का आधा या चौथाई स्वर। २ सप्तमाश [कौ०]।

स्वरा--संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्रह्मा की बड़ी पत्नी का नाम जो गायत्री की सपत्नी कही गई है।

स्वराघात--संज्ञा पुं० [सं० स्वर + आघात] बोलने मे स्वरविशेष पर वक्ता द्वारा डाला जानेवाला बल। उच्चारण प्रयत्न। उ०--जब इस वर्ग की अन्य भाषाएँ अस्तित्व मे आने लगीं तो स्वर के साथ साथ स्वराघात का प्राबल्य होने लगा।--भाज० भा० सा०, पृ० ११।

यौ०--स्वराघात चिह्न = वे चिह्न या निशान जिनके द्वारा स्वराघात का बोधन कराया जाय।

स्वराज्--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्वराट्'।

स्वराज--संज्ञा पुं० [सं० स्वराट्, स्वराज्] दे० 'स्वराज्य'।

स्वराजी--संज्ञा पुं० [हिं० स्वराज + ई (प्रत्य०)] स्वराज्य शासन प्रणाली के लिये आदोलन करनेवाला व्यक्ति।

स्वराज्य--संज्ञा पुं० [सं०] वह राज्य जिसमे कोई राष्ट्र या किसी देश के निवासी स्वय ही अपना शासन और अपने देश का सब प्रबंध करते हों। अपना राज्य।

यौ०--स्वराज्यभोगी = स्वराज्य शासन प्रणाली का भोग करनेवाला। आत्मशासनप्राप्त।

स्वराट्[1]--संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्रह्मा। २ ईश्वर। ३ एक प्रकार का वैदिक छद। ४ वह वैदिक छद जिसके सब पादो मे मिलकर नियमित वर्णों मे दो वर्ण कम हों। ५ सूर्य की सात किरणों मे से एक का नाम (कौ०)। ६ विष्णु का एक नाम (कौ०)। ७ शुक्रनीति के अनुसार वह राजा जिसका वार्षिक राजस्व ५० लाख से १ करोड वर्ष तक हो (कौ०)। ८ वह राजा जो किसी ऐसे राज्य का स्वामी हो, जिसमे स्वराज्य शासन प्रणाली प्रचलित हो। उ०--जो पिता के सदृश सब प्रकार से हमारा पालन करनेवाला स्वराट्।--दयानद (शब्द०)।

स्वराट्[2]--वि० जो स्वय प्रकाशमान हो और दूसरो को प्रकाशित करता हो। उ०--जो सर्वत्र व्याप्त, अविनाशी (स्वराट्), स्वय-प्रकाशरूप और (कालाग्नि) प्रलय मे सब का काल और काल का भी काल है, इसलिये परमेश्वर का नाम कालाग्नि है।--सत्याथ (शब्द०)।

स्वरापगा--संज्ञा स्त्री० [सं०] आकाशगगा। मदाकिनी।

स्वरामक--संज्ञा पुं० [सं०] अखरोट का वृक्ष।

स्वरारूढ--वि० [सं० स्वरारूढ] स्वर्ग लोक गया हुआ। स्वर्गारूढ [कौ०]।

स्वरालु--संज्ञा पुं० [सं०] वचा या वच नाम की ओषधि।

स्वराष्टक--संज्ञा पुं० [सं०] सगीत मे एक प्रकार का सकर राग जो बगाली, भैरव, गाधार, पचम और गुर्जरी के मेल से बनता है।

स्वराष्ट्र--संज्ञा पुं० [सं०] १ अपना राष्ट्र या राज्य।

यौ०--स्वराष्ट्रप्रेम = अपने राष्ट्र या राज्य के प्रति प्रेम एव उत्सर्ग की भावना।

२ प्राचीन सुराष्ट्र नामक देश का एक नाम। ३ तामस मनु के पिता का नाम जो पुराणानुसार एक सार्वभौम और प्रसिद्ध राजा थे और जिन्होंने बहुत से यज्ञादि किए थे।

स्वराष्ट्रमंत्री—संज्ञा पुं० [सं० स्वराष्ट्रमन्त्रिन्] दे० 'स्वराष्ट्रसचिव'।

स्वराष्ट्रसचिव—संज्ञा पुं० [सं०] किसी देश की सरकार या मंत्रिमंडल का वह सदस्य जिसके अधीन पुलिस, जेलखाने, फौजदारी, शासनप्रबंध आदि हों। गृहमंत्री। होम मेंबर। होम मिनिस्टर। होम सेक्रेटरी।

स्वराष्ट्रसदस्य—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्वराष्ट्रसचिव'।

स्वरिंगण—संज्ञा पुं० [सं० स्वरिङ्गण] आँधी। तेज हवा। तूफान (को०)।

स्वरित[1]—संज्ञा पुं० [सं०] उच्चारण के अनुसार स्वर के तीन भेदों में से एक। वह स्वर जिसमें उदात्त और अनुदात्त दोनों गुण हैं। वह स्वर जिसका उच्चारण न बहुत जोर से हो और न बहुत धीरे से। मध्यम रूप से उच्चरित स्वर।

स्वरित[2]—वि० १ जिसमें स्वर हो। स्वर से युक्त। २ गूँजता हुआ। ध्वनित। ३ जिसका उच्चारण किया गया हो। उच्चरित (को०)। ४ स्वरितबोधक उच्चारणचिह्न से युक्त (को०)।

स्वरितत्व—संज्ञा पुं० [सं०] स्वरित का भाव या धर्म।

स्वरु—संज्ञा पुं० [सं०] १. वज्र। २ यज्ञ। ३ वाण। तीर। ४ सूर्य की किरण। ५ एक प्रकार का बिच्छू। ६ धूप (को०)। ७ यज्ञीय स्तंभ का एक अंश या भाग (को०)। ८ वृक्ष के तने से काटा हुआ काष्ठ का लंबा अंश, विशेषतः यज्ञस्तंभ (को०)।

स्वरुचि[1]—वि० [सं०] जो सब काम अपनी रुचि के अनुसार करे। स्वतंत्र। स्वाधीन। आजाद।

स्वरुचि[2]—संज्ञा स्त्री० अपनी रुचि। अपनी पसंद।

स्वरुमोचन—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञीय स्तंभ का वह भाग जो नीचे से तीसरे हाथ पर तथा ऊपर से पंद्रहवें हाथ पर होता है (को०)।

स्वरूप[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ आकार। आकृति। शक्ल। उ०—अपने अंश आप हरि प्रकटे पुरुषोत्तम निज रूप। नारायण भुव भार हर्यो है अति आनंद स्वरूप।—सूर (शब्द०)। २ किसी व्यक्ति की अपनी प्रतिकृति या मूर्ति। मूर्ति या चित्र आदि। उ०—हिय में स्वरूप सेवा करि अनुराग भरे ढरे ओर जीवनि की जीवन को दीजिए।—नाभा (शब्द०)। ३ देवताओं आदि का धारण किया हुआ रूप। ४ वह जो किसी देवता का रूप धारण किए हो। ५ पंडित। विद्वान्। ६ स्वभाव। ७ आत्मा। ८. विशिष्ट लक्ष्य या उद्देश्य।

स्वरूप[2]—वि० १ सुंदर। खूबसूरत। २ तुल्य। समान। उ०—इतनि रूप भइ कन्या जेहि स्वरूप नहिं कोय। धन सुदेस रुपवंता जहाँ जनम अस होय।—जायसी (शब्द०)। ३ पठित। शिक्षित। विज्ञ (को०)।

स्वरूप[3]—अव्य० रूप में। तौर पर। जैसे,—उन्होंने प्रमाण स्वरूप महाभारत का एक श्लोक कह सुनाया।

विशेष—इस अर्थ में यह यौगिक शब्दों के अंत में ही आता है। जैसे,—आधारस्वरूप।

स्वरूप(पु)[4]—संज्ञा पुं० [सं० सारूप्य] दे० 'सारूप्य'। उ०—हम सालोक्य स्वरूप सरोज्यो रहत समीप सहाई। सो तजि कहत और की औरै तुम अलि बड़े अदाई।—सूर (शब्द०)।

स्वरूपक—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपनी अवस्था, आकृति या प्रतिकृति। २ अपना स्वभाव अथवा विशेषता।

स्वरूपगत—वि० [सं०] १. आकृति या आकारगत। २. अपने समान विशेषता से युक्त। अपने ही सदृश विशेषताओंवाला (को०)।

स्वरूपज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो परमात्मा और आत्मा का स्वरूप पहचानता हो। तत्त्वज्ञ। उ०— 'क्योंकि वह अपने स्वरूपज्ञों पर किस नाते दत्तचित्त होगा ?—हरिश्चंद्र (शब्द०)।

स्वरूपता—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वरूप का भाव या धर्म।

स्वरूपदया—संज्ञा पुं० [सं०] जैनियों के अनुसार वह दया या जीवरक्षा जो इहलोक और परलोक में सुख पाने के लिये लोगों की देखा-देखी की जाय।

विशेष—इस प्रकार की जीवरक्षा या दया यद्यपि ऊपर से देखने में दया ही जान पड़ती है, तथापि स्वभाव में, मन के भाव से नहीं बल्कि स्वार्थ के विचार से, होती है।

स्वरूपप्रतिष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जीव का अपनी स्वाभाविक शक्तियों और गुणों से युक्त होना।

स्वरूपमान(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्वरूपमत्] स्वरूपवान्। सुंदर। खूबसूरत। उ०—और स्वरूपमान लोगों के सहस्रों लघु-लघु समूह उडुगणों की भाँति यत्र तत्र छिटके हुए थे।—अयोध्या० (शब्द०)।

स्वरूपवान्—वि० [सं० स्वरूपवत्] [वि० स्त्री० स्वरूपवती] जिसका स्वरूप अच्छा हो। सुंदर। खूबसूरत। उ०—अर्थात् उस परम अद्भुत विशेष स्वरूपवान् परमात्मा के ''।—केनोपनिषद् (शब्द०)।

स्वरूपसंबंध—संज्ञा पुं० [सं० स्वरूपसम्बन्ध] वह संबंध जो किसी के परस्पर ठीक अनुरूप होने के कारण स्थापित होता है।

स्वरूपात्मक—वि० [सं० स्वरूप + आत्मक] स्वरूपवाला। साकार। उ०—ता दिन तें यह ब्राह्मन श्रीयमुना जी को स्वरूपात्मक करि जानन लाग्यो।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० २८०।

स्वरूपाभास—संज्ञा पुं० [सं०] कोई वास्तविक स्वरूप न होने पर भी उसका आभास दिखाई देना। जैसे,—गंधर्वनगर, जिसका वास्तव में कोई स्वरूप नहीं होता, पर फिर भी स्वरूपाभास होता है।

स्वरूपासिद्ध—वि० [सं०] जो स्वयं अपने स्वरूप से ही असिद्ध जान पड़ता हो। कभी सिद्ध न हो सकनेवाला।

स्वरूपासिद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] असिद्ध के तीन भेदों में से एक का नाम।

स्वरूपी[1]—वि० [सं० स्वरूपिन्] १ स्वरूपवाला। स्वरूपयुक्त।

उ०—नमो नमो गुरुदेव जू, साध स्वरूपी देव। आदि अंत गुण काल के, जाननहारे भेव।—कबीर (शब्द०)। २ जो किसी के स्वरूप के अनुसार हो, अथवा जिसने किसी का स्वरूप धारण किया हो।—उ०—ज्योति स्वरूपी हाकिमा जिन अमल पसारा हो।—कबीर (शब्द०)।

स्वरूपी(पु)²—संज्ञा पुं० [सं० सारूप्य] दे० 'सारूप्य'।

स्वरूपोपनिषद्—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम।

स्वरेणु—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य की पत्नी संज्ञा का एक नाम।

स्वरोचि—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपना प्रकाश या दीप्ति।

स्वरोचिस्—संज्ञा पुं० [सं०] स्वारोचिष् मनु के पिता का नाम।

विशेष—पुराणानुसार ये कलि नामक गंधर्व के पुत्र थे और वरूथिनी नाम की अप्सरा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

स्वरोद—संज्ञा पुं० [सं० स्वरोदय] एक प्रकार का बाजा जिसमे बजाने के लिये तार लगे होते हैं।

स्वरोदय—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसके द्वारा इडा, पिंगला और सुषुम्ना आदि नाडियों के श्वासो के द्वारा सब प्रकार के शुभ और अशुभ फल जाने जाते हैं। दाहिने और बाएँ नथने से निकलते हुए श्वासो को देखकर शुभ और अशुभ फल कहने की विद्या।

स्वरोपघात—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर का उपघात। स्वर बीच मे का भंग होना [को०]।

स्वर्गंगा—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्गङ्गा] स्वर्ग की नदी, मंदाकिनी।

स्वर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १ हिंदुओं के सात लोकों मे से तीसरा लोक जो ऊपर आकाश मे सूर्य लोक से लेकर ध्रुव लोक तक माना जाता है। उ०—(क) असन बसन पसु वस्तु विविध विधि सब मनि महँ रहु जैसे। स्वर्ग नरक चर अचर लोक बहु बसत मध्य मन तैसे।—तुलसी (शब्द०)। (ख) स्वर्ग, भूमि, पाताल के, भोगहि सर्व समाज। शुभ संतति निज तेजबल, करत राज के काज।—निश्चल (शब्द०)। (ग) देवकी के आठवें गर्भ मे लडका होगा, सो न हो लडकी हुई, वह भी हाथ से छूट स्वर्ग को गई।—लल्लू (शब्द०)।

विशेष—किसी किसी पुराण के अनुसार यह सुमेरु पर्वत पर है। देवताओं का निवासस्थान यही स्वर्गलोक माना गया है और कहा गया है कि जो लोग अनेक प्रकार के पुण्य और सत्कर्म करके मरते हैं, उनकी आत्माएँ इसी लोक मे जाकर निवास करती हैं। यज्ञ, दान आदि जितने पुण्य कार्य किये जाते है, वे सब स्वर्ग की प्राप्ति के उद्देश्य से ही किए जाते हैं। कहते है, इस लोक मे केवल सुख ही सुख है, दुख, शोक, रोग, मृत्यु आदि का नाम भी नही है। जो प्राणी जितने ही अधिक सत्कर्म करता है, वह उतने ही अधिक समय तक इस लोक मे निवास करने का अधिकारी होता है। परंतु पुण्यों का क्षय हो जाने अथवा अवधि पूरी हो जाने पर जीव को फिर कर्मानुसार शरीर धारण करना पडता है, और यह क्रम तब तक चलता रहता है, जब तक उसकी मुक्ति नही हो जाती। यहाँ अच्छे अच्छे फलोंवाले वृक्षो, मनोहर वाटिकाओं और अप्सराओं आदि का निवास माना जाता है। स्वर्ग की कल्पना नरक की कल्पना के बिलकुल विरुद्ध है। प्रायः सभी धर्मो, देशो और जातियों मे स्वर्ग और नरक की कल्पना की गई है। ईसाइयों के अनुसार स्वर्ग ईश्वर का निवासस्थान है। और वहाँ फरिश्ते तथा धर्मात्मा लोग अनंत सुख का भोग करते हैं। मुसलमानो का स्वर्ग बिहिश्त कहलाता है। मुसलमान लोग भी बिहिश्त को खुदा और फरिश्तो के रहने की जगह मानते हैं और कहते हैं कि दीनदार लोग मरने पर वहीं जायँगे। उनका बिहिश्त इंद्रियसुख की सब प्रकार की सामग्री से परिपूर्ण कहा गया है। वहाँ दूध और शहद की नदियाँ तथा समुद्र है, अंगूरों के वृक्ष हैं और कभी वृद्ध न होनेवाली अप्सराएँ है। यहूदियों के यहाँ तीन स्वर्गो की कल्पना की गई है।

पर्या०—स्वर्। नाक। त्रिदिव। त्रिदशालय। सुरलोक। द्यौ। मंदर। देवलोक। ऊर्ध्वलोक। शक्रभुवन।

मुहा०—स्वर्ग के पथ पर पैर देना = (१) मरना। (२) जान जोखिम मे डालना। उ०—कही सो तोहि सिंहलगढ है, खंड सात चढाव। फेरि न कोई जीति जय, स्वर्ग पथ दे पाव।—जायसी (शब्द०)। स्वर्ग जाना या सिधारना = मरना। देहांत होना। जैसे,—वे तीस ही वर्ष की अवस्था मे स्वर्ग सिधारे (किसी की मृत्यु पर उसके सम्मानार्थ उसका स्वर्ग जाना या सिधारना कहा जाता है।) उ०—बहुते भँवर बवंडर भये। पहुँच न सके स्वर्ग कहँ गये।—जायसी (शब्द०)।

यौ०—स्वर्गसुख = बहुत अधिक और उच्च कोटि का सुख। वैसा सुख जैसा स्वर्ग मे मिलता है। जैसे,—मुझे तो केवल अच्छी अच्छी पुस्तकें पढने मे ही स्वर्गसुख मिलता है। स्वर्ग की धार = आकाशगंगा। उ०—नासिक खीन स्वर्ग की धारा। खीन लंक जनु केहर हारा।—जायसी (शब्द०)।

२ ईश्वर। उ०—न जनों स्वर्ग बात धौं काहा। कहूँ न आय कही फिर चाहा।—जायसी (शब्द०)। ३ सुख। ४ वह स्थान जहाँ स्वर्ग का सुख मिले। बहुत अधिक आनंद का स्थान। ५ आकाश। उ०—(क) हौं तेहि दीप पतँग होइ परा। जिव जिमि काढ स्वर्ग ले धरा।—जायसी (शब्द०)। (ख) लाक्षागृह पावक तब जारा। लागी जाय स्वर्ग सो धारा।—सबल (शब्द०)। ६ प्रलय (क्व०)। उ०—भा परलै अस सबही जाना। काढा खड्ग स्वर्ग नियराना।—जायसी (शब्द०)।

स्वर्गकाम—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो स्वर्ग की कामना रखता हो। स्वर्गप्राप्ति की इच्छा रखनेवाला।

स्वर्गगंगा—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्गगङ्गा] मंदाकिनी [को०]।

स्वर्गगत—वि० [सं०] मृत। मरा हुआ [को०]।

स्वर्गगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्ग जाना। मरना।

स्वर्गगमन—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग सिधारना। मरना।

स्वर्गगामी—वि० [सं० स्वर्गगामिन्] १ स्वर्ग की ओर गमन करने-

वाला। स्वर्ग जानेवाला। २ जो स्वर्ग की ओर गमन कर चुका हो। मरा हुआ। मृत। स्वर्गीय।

स्वर्गगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग का पर्वत। मेरु पर्वत [को०]।

स्वर्गच्युत—वि० [सं०] स्वर्ग से पतित या गिरा हुआ [को०]।

स्वर्गजित्[1]—वि० [सं०] स्वर्ग को जीतने या आक्रांत करनेवाला [को०]।

स्वर्गजित्[2]—संज्ञा पुं० एक प्रकार का यज्ञ जिसे करने से स्वर्ग प्राप्त होता है।

स्वर्गजीवी—वि० [सं० स्वर्गजीविन्] स्वर्ग में रहनेवाला। स्वर्गस्थ [को०]।

स्वर्गगणिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्ग की गणिका। अप्सरा [को०]।

स्वर्गत—वि० [सं०] जो स्वर्ग चला गया हो। स्वर्गगत। मरा हुआ। स्वर्गीय।

स्वर्गतरंगिणी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्गतरङ्गिणी] स्वर्ग की नदी। मदाकिनी। स्वर्णदी।

स्वर्गतरु—संज्ञा पुं० [सं०] १ कल्पतरु वृक्ष। २. पारिजात। परजाता।

स्वर्गतर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग की तृषा या उत्कट अभिलाषा [को०]।

स्वर्गति—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्ग की ओर जाने की क्रिया। स्वर्गगमन।

स्वर्गद—वि० [सं०] जो स्वर्ग पहुँचाता हो। स्वर्ग देनेवाला। उ०—(क) सतगुण, रजगुण, तमोगुण, त्रयविधि के मुनि वाच। मोक्षद, स्वर्गद, सुखद है, धरिहौं सुखप्रद साँच।—विश्राम (शब्द०)। (ख) स्वर्गद, नर्कद कर्म अनता। साधन सकल कह्यौ मतिवंता।—रघुराज (शब्द०)।

स्वर्गदायक—वि० [सं०] दे० 'स्वर्गद'।

स्वर्गद्वार—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वर्ग का द्वार या दरवाजा। २ अयोध्या मे सरयू तटवर्ती एक तीर्थ का नाम। ३ शिव।

स्वर्गधाम—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्गधामन्] स्वर्ग लोक [को०]।

स्वर्गधेनु—संज्ञा स्त्री० [सं०] कामधेनु।

स्वर्गनदी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्ग+नदी] आकाशगंगा। उ०—पद्म पाद सुनि गुरु आदेशा। स्वर्गनदी महँ कीन्ह प्रवेशा।—शंकर-दिग्वि० (शब्द०)।

स्वर्गपति—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

स्वर्गपथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वर्ग का मार्ग। २ आकाशगंगा [को०]।

स्वर्गपद—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वर्ग। स्वर्गलोक। २ एक तीर्थ [को०]।

स्वर्गपर—वि० [सं०] स्वर्ग की कामनावाला [को०]।

स्वर्गपुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्र की पुरी, अमरावती।

स्वर्गपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] लौंग।

स्वर्गप्रद—वि० [सं०] जिससे स्वर्ग प्राप्त हो। स्वर्गद [को०]।

स्वर्गभर्ता—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्गभर्तृ] स्वर्ग का स्वामी इंद्र [को०]।

स्वर्गभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन जनपद का नाम।

विशेष—यह जनपद वाराणसी के पश्चिम ओर था। कहते है, इसी स्थान पर भगवती ने दुर्ग नामक राक्षस का नाश किया था जिसके कारण उनका नाम दुर्गा पड़ा था।

स्वर्गमंदाकिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्गमन्दाकिनी] स्वर्गगंगा। मंदाकिनी।

स्वर्गमन—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग जाना। स्वर्गगमन। मरना।

स्वर्गमार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग की राह। स्वर्गपथ [को०]।

स्वर्गयाण[1]—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग का मार्ग [को०]।

स्वर्गयाण[2]—वि० स्वर्ग जाने या ले जानेवाला [को०]।

स्वर्गयोनि—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ, दान आदि वे शुभ कर्म जिनके कारण मनुष्य स्वर्ग जाता है।

स्वर्गलाभ—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग की प्राप्ति। स्वर्ग पहुँचना। मरना।

स्वर्गलोक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्वर्ग—१'।

स्वर्गलोकेश, स्वर्गलोकेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वर्गलोक के स्वामी, इंद्र। २ शरीर। तन।

स्वर्गवधू—संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्सरा।

स्वर्गवाणी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्ग+वाणी] आकाशवाणी। उ०—वेद वचन ते कन्या भयऊ। वेदन स्वर्गवाणि तौ कियऊ।—सबल (शब्द०)।

स्वर्गवास—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वर्ग मे निवास करना। स्वर्ग मे रहना। २. स्वर्ग को प्रस्थान करना। मरना। जैसे,—परसों उनके पिता का स्वर्गवास हो गया।

स्वर्गवासी—वि० [सं० स्वर्गवासिन्] [वि० स्त्री० स्वर्गवासिनी] १ स्वर्ग मे रहनेवाला। २. जो मर गया हो। मृत। जैसे,—स्वर्गवासी राजा शिवप्रसाद जी।

स्वर्गश्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्ग का वैभव [को०]।

स्वर्गसंक्रम—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्गसङ्क्रम] स्वर्ग की सीढी [को०]।

स्वर्गसद—संज्ञा पुं० [सं०] देवता [को०]।

स्वर्गसरिद्वरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्गंगा। मंदाकिनी [को०]।

स्वर्गसाधन—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्गप्राप्ति के उपाय [को०]।

स्वर्गसार—संज्ञा पुं० [सं०] संगीत मे चतुर्दश ताल के चौदह भेदो मे से एक।

स्वर्गसुख—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग का सुख। स्वर्गीय आनंद।

स्वर्गस्त्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्सरा।

स्वर्गस्थ—वि० [सं०] १ स्वर्ग मे स्थित। स्वर्ग का। २. जो मर गया हो। मृत। स्वर्गवासी।

स्वर्गस्थित—वि० [सं०] दे० 'स्वर्गस्थ'।

स्वर्गा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मंदाकिनी। स्वर्गंगा।

स्वर्गापगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्गंगा। मंदाकिनी।

स्वर्गाभिकाम—वि० [सं०] स्वर्ग का इच्छुक। स्वर्गकाम [को०]।

स्वर्गामी—वि० [सं० स्वर्गामिन्] जो स्वर्ग चला गया हो। स्वर्गवासी। स्वर्गगामी।

स्वर्गारूढ—वि० [सं० स्वर्गारूढ] स्वर्ग सिधारा हुआ। स्वर्ग पहुँचा-हुआ। मृत। स्वर्गवासी।

स्वर्गारोहण—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वर्ग की ओर जाना या चढना। २. स्वर्ग सिधारना। मरना। ३ महाभारत का एक पर्व या अंश।

स्वर्गार्गल—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग की अर्गला (को०)

स्वर्गावास—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग मे निवास करना। स्वर्गवास।

स्वर्गिक—वि० [सं० स्वर्ग + इक (प्रत्य०)] स्वर्ग मे संबद्ध। स्वर्गतुल्य। स्वर्ग जैसा। उ०—आया वसंत, भर पृथ्वी पर, स्वर्गिक, सुंदरता का प्रवाह।—युगांत, पृ० ७।

स्वर्गिगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] सुमेरु पर्वत, जिसके शृंग पर स्वर्ग की स्थिति मानी जाती है।

स्वर्गिरि—संज्ञा पुं० [सं०] सुमेरु पर्वत (को०)।

स्वर्गिवधू, स्वर्गिस्त्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्सरा।

स्वर्गी[1]—वि० [सं० स्वर्गिन्] १ स्वर्ग का निवासी। स्वर्गवासी। २ स्वर्गगामी। ३ स्वर्ग संबधी। स्वर्गीय।

स्वर्गी[2]—संज्ञा १ देवता। २ मृत व्यक्ति (को०)।

स्वर्गीय—वि० [सं०] [वि० स्त्री० स्वर्गीया] १ स्वर्ग संबधी। स्वर्ग का। जैसे,—मुझे एकातवास मे स्वर्गीय सुख प्राप्त होता है। २ जिसका स्वर्गवास हो गया हो। जो मर गया हो। जैसे,—स्वर्गीय भारतेंदु जी। उ०—श्रीमान् स्मृतिमंदिर बनवाकर स्वर्गीया महारानी विक्टोरिया का ऐसा स्मारक बनवा देंगे।—शिवशंभु (शब्द०)। ३ अलौकिक (को०)।

स्वर्गोपम—वि० [सं०] स्वर्गतुल्य। उ०—स्वर्गोपम हो ये गाम यहाँ।—ग्रामिका, पृ० १२४।

स्वर्गौका—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्गौकस्] देवता। सुर (को०)।

स्वर्ग्य—वि० [सं०] १ जिससे स्वर्ग प्राप्त हो। स्वर्ग दिलानेवाला। २. अलौकिक। स्वर्गीय (को०)।

स्वर्चन—संज्ञा पुं० [सं०] वह अग्नि जिसमे से सुंदर ज्वाला निकलती हो।

स्वर्जक्षार—संज्ञा पुं० [सं०] सर्जिक्षार। सज्जीखार। सज्जी मिट्टी।

स्वर्जारिघृत—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक मे एक प्रकार का घृत।

विशेष—यह घृत गौ के घी मे सज्जी, जवाखार, कमीला, मेहदी, सुहागा और सफेद कत्थे के चूर्ण को खरल करने से बनता है। कहते हैं, इसे घाव पर लगाने से उसमे के कीडे मर जाते हैं, सूजन कम हो जाती है और वह जल्दी भर जाता है।

स्वर्जि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सज्जी मिट्टी। २ शोरा।

स्वर्जिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सज्जी मिट्टी। २ शोरा।

स्वर्जिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'स्वर्जिक' (को०)।

स्वर्जिकाक्षार—संज्ञा पुं० [सं०] सज्जी मिट्टी। सज्जीखार।

स्वर्जिकाद्य तैल—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक मे एक प्रकार का तेल जो कर्णरोग मे उपयोगी है।

विशेष—यह तेल तिल के तेल मे सज्जी, मूली, हींग, पीपल और सोंठ आदि औटाकर बनाया जाता है। यह तेल कान के दर्द और बहरेपन आदि के लिये उपयोगी माना जाता है।

स्वर्जिकापाक्य—संज्ञा पुं० [सं०] सज्जी मिट्टी।

स्वर्जित्—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिससे स्वर्ग पर विजय प्राप्त कर ली हो। स्वर्गजेता। २ एक प्रकार का यज्ञ।

स्वर्जित—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्जित्] एक प्रकार का यज्ञ।

स्वर्जी—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ज्जिन्] सज्जी मिट्टी।

स्वर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुवर्ण या सोना नामक बहुमूल्य धातु। २ पीत वर्ण का (स्वर्ण के रंग का) धतूरा। ३ गौर सुवर्ण नाम का साग। ४ नागकेसर। ५ पुराणानुसार एक नदी का नाम। ६ कामरूप देश की एक नदी का नाम। ७ स्वर्णमुद्रा। सोने का सिक्का (को०)। ८ हरिवंश के अनुसार एक प्रकार की अग्नि (को०)। ९ गेरु। गैरिक (को०)।

स्वर्णकडु—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्णकण्डु] धूना। राल।

स्वर्णक[1]—वि० [सं०] १ स्वर्ण का। २ दे० 'स्वर्णिम'।

स्वर्णक[2]—संज्ञा पुं० एक वृक्ष।

स्वर्णकण—संज्ञा पुं० [सं०] १ कर्णगुग्गुल। कणगुग्गुल। २ सोने का बारीक कण या रवा (को०)।

स्वर्णकणिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोने का कण या दाना (को०)।

स्वर्णकदली—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोनकेला। सुवर्णकदली।

स्वर्णकमल—संज्ञा पुं० [सं०] लाल कमल।

स्वर्णकाय[1]—संज्ञा पुं० [सं०] गरुड।

स्वर्णकाय[2]—वि० जिसका शरीर सोने का अथवा सोने का सा हो।

स्वर्णकार—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की जाति जो सोने चाँदी के आभूषण आदि बनाती है। सुनार।

स्वर्णकूट—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय की एक चोटी का नाम।

स्वर्णकृत्—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्वर्णकार'।

स्वर्णकेतकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पीली केतकी जिससे इत्र और तेल आदि बनाया जाता है।

स्वर्णक्षीरिका, स्वर्णक्षीरिणिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] भरभाँड। हेमपुष्पा। सत्यानाशी।

स्वर्णक्षीरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] हेमपुष्पा। सत्यानाशी। भरभाँड।

स्वर्णक्रोश—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार पूर्व वंश के एक नद का नाम।

स्वर्णखचित—वि० [सं० स्वर्ण + खचित] जिसपर सोने का काम किया गया हो। स्वर्णमंडित। उ०—स्वर्णखचित यह शिरस्त्राण है कह रहा, वर्म बना बहुमूल्य बताता विभव को।—करुणालय, पृ० ११।

स्वर्णगणपति—संज्ञा पुं० [सं०] गणपति का एक विशिष्ट रूप (को०)।

स्वर्णगर्भ—वि० [सं०] जिसके भीतर स्वर्ण हो।

स्वर्णगर्भाचल—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय की एक चोटी का नाम।

स्वर्णगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] सुमेरु पर्वत।

स्वर्णगैरिक—संज्ञा पुं० [सं०] सोना गेरू।

स्वर्णग्रीव—संज्ञा पुं० [सं०] कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

स्वर्णग्रीवा—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] कालिका पुराण के अनुसार एक नदी का नाम जो नाटकशैल के पूर्वी भाग से निकली हुई और गंगा के समान पवित्र कही गई है।

स्वर्णचूड, स्वर्णचूडक—संज्ञा पुं॰ [सं॰ स्वर्णचूड, स्वर्णचूडक] १ नीलकंठ नामक पक्षी। २ कुक्कुट। मुर्गा (को॰)।

स्वर्णचूल—संज्ञा पुं॰ दे॰ 'स्वर्णचूड'।

स्वर्णज[1]—वि॰ [सं॰] १ सोने से उत्पन्न। २ सोने से बना हुआ।

स्वर्णज[2]—संज्ञा पुं॰ १ वंग नाम की धातु। रांगा। २ सोनामक्खी।

स्वर्णजयंती—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ स्वर्ण + जयन्ती] किसी विशिष्ट व्यक्ति, संस्था, शासन या किसी महत्वपूर्ण घटना आदि के जीवन के पचासवें वर्ष मनाया जानेवाला उत्सव।

विशेष—यह शब्द अंग्रेजी के 'गोल्डेन जुबिली' शब्द का अनुवाद है तथा इसका प्रयोग और व्यवहार भी अंग्रेजों के शासनकाल से संबद्ध प्रतीत होता है।

स्वर्णजातिका—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] पीली चमेली।

स्वर्णजाती—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] दे॰ 'स्वर्णजातिका'।

स्वर्णजीवतिका—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ स्वर्णजीवन्तिका] दे॰ 'स्वर्णजीवती'।

स्वर्णजीवती—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ स्वर्णजीवन्ती] पीली जीवती।

स्वर्णजीवा—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] पीली जीवती।

स्वर्णजीवी[1]—संज्ञा पुं॰ [सं॰ स्वर्णजीविन्] वह जो सोने के आभूषण आदि बनाकर जीविका निर्वाह करता हो। सुनार।

स्वर्णजीवी[2]—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] पीली जीवती। सुनहली जीवती (को॰)।

स्वर्णजूही—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ स्वर्णयूथिका, प्रा॰ जूहिआ] पीली जूही।

स्वर्णतीर्थ—संज्ञा पुं॰ [सं॰] पुराणानुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

स्वर्णद[1]—वि॰ [सं॰] १ स्वर्ण या सोना देनेवाला। २. स्वर्ण या सोना दान करनेवाला।

स्वर्णद[2]—संज्ञा पुं॰ वृश्चिकाली। वरहटा।

स्वर्णदा—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] बरहटा। वृश्चिकाली (को॰)।

स्वर्णदामा—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] एक देवी (को॰)।

स्वर्णदी—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ मंदाकिनी। स्वर्गगा। २ वृश्चिकाली। वरहटा। ३ कामाख्या के पास की एक नदी का नाम।

स्वर्णदीधिति—संज्ञा पुं॰ [सं॰] अग्नि।

स्वर्णदुग्धा, स्वर्णदुग्धी—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] स्वर्णक्षीरी। सत्यानाशी। भरभाँड।

स्वर्णद्रु—संज्ञा पुं॰ [सं॰] आरग्वध। अमलतास।

स्वर्णद्वीप—संज्ञा पुं॰ [सं॰] एक द्वीप का नाम जिसे आजकल सुमात्रा कहते हैं।

स्वर्णधातु—संज्ञा पुं॰ [पुं॰] १ सुवर्ण। सोना। २ स्वर्णगैरिक। सोनागेरू।

स्वर्णनाभ—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ एक प्रकार का शालग्राम। २ एक प्रकार का अस्त्रमंत्र (को॰)।

स्वर्णनिभ[1]—संज्ञा पुं॰ [सं॰] सोनागेरू। स्वर्णगैरिक।

स्वर्णनिभ[2]—वि॰ सोने जैसा। सोने के समान।

स्वर्णपक्ष—संज्ञा पुं॰ [सं॰] गरुड़।

स्वर्णपत्र—संज्ञा पुं॰ [सं॰] सोने का पत्तर या तबक।

स्वर्णपत्री—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] स्वर्णमखी। सोनामुखी। सनाय।

स्वर्णपद्मा—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] स्वर्गगा। मंदाकिनी।

स्वर्णपर्णी—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] पीली जीवती।

स्वर्णपर्पटी—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] वैद्यक में एक प्रसिद्ध औषध जो संग्रहणी रोग के लिये सबसे अधिक गुणकारी मानी जाती है।

विशेष—इसके बनाने के लिये एक तोले सोने को पहले आठ तोले पारे में भली भाँति खरल करते हैं और तब उसमें आठ तोले गंधक मिलाकर उसकी कजली तैयार करते हैं। इसके सेवन के समय रोगी को इतना अधिक दूध पिलाया जाता है जितना वह पी सकता है।

स्वर्णपाटक—संज्ञा पुं॰ [सं॰] सोहागा, जिसके मिलाने से सोना गल जाता है।

स्वर्णपारेवत—संज्ञा पुं॰ [सं॰] बड़ा पारेवत।

स्वर्णपुंख—संज्ञा पुं॰ [सं॰ स्वर्णपुङ्ख] वह बाण जिसके पिछले भाग में स्वर्णिम पंख लगा हो।

स्वर्णपुरी—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] सोने की नगरी। लंका (को॰)।

स्वर्णपुष्प—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ आरग्वध। अमलतास। २ चंपा। चंपक। ३ बबूल। कीकर। ४ कपित्थ। कैथ। ५ सफेद कुम्हड़ा। पेठा।

स्वर्णपुष्पा—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ कलिहारी। लांगली। २ सातला नाम का थूहर। ३ मढासिंगी। ४ सोनुली। विशेष दे॰ 'स्वर्णुली'। ५ स्वर्णकेतकी।

स्वर्णपुष्पिका—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] पीली चमेली (को॰)।

स्वर्णपुष्पी—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ स्वर्णकेतकी। पीला केवड़ा। २ सातला नाम का थूहड़। ३ अमलतास। आरग्वध।

स्वर्णप्रतिकृति—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] दे॰ 'स्वर्णप्रतिमा'।

स्वर्णप्रतिमा—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] सोने की प्रतिमा या मूर्ति।

स्वर्णप्रस्थ—संज्ञा पुं॰ [सं॰] पुराणानुसार जंबूद्वीप के एक उपद्वीप का नाम।

स्वर्णफल—संज्ञा पुं॰ [सं॰] धतूरा।

स्वर्णफला—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] स्वर्णकदली। चंपा केला।

स्वर्णबंध—संज्ञा पुं॰ [सं॰ स्वर्णबन्धक] सोना बंधक रखना (को॰)।

स्वर्णबंधक—संज्ञा पुं॰ [सं॰ स्वर्णबन्धक] दे॰ 'स्वर्णबंध'।

स्वर्णवणिक्—संज्ञा पुं॰ [सं॰] एक जाति। स्वर्णकार। सोनार (को॰)।

स्वर्णबीज—संज्ञा पुं॰ [सं॰] धतूरे का बीज।

स्वर्णभाक्, स्वर्णभाज्—संज्ञा पुं॰ [सं॰] सूर्य।

स्वर्णभूमि—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ वह स्थान जहाँ सब प्रकार के सुख हों। बहुत उत्तम भूमि। २ दारचीनी। गुडत्वक्।

स्वर्णभूमिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अदरक। आदी। २ एक प्रकार का तज। विशेष दे० 'दारचीनी' (को०)।

स्वर्णभूषण—संज्ञा पुं० [सं०] १ आरग्वध। अमलतास। २ सोनागेरू। स्वर्णगैरिक।

स्वर्णभृंगार—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्णभृङ्गार] १ पीला भँगरा। पीली भँगरैया। २ सोने की झारी। सोने का पात्र (को०)।

स्वर्णमंडन—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्णमण्डन] सोनागेरू। स्वर्णगैरिक।

स्वर्णमय—वि० [सं०] जो बिलकुल सोने का हो। जैसे,—स्वर्णमय सिंहासन।

स्वर्णमहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वार्तिका पुराणोक्त एक नदी (को०)।

स्वर्णमाक्षिक—संज्ञा पुं० [सं०] सोनामाखी नामक उपधातु। विशेष दे० 'सोनामक्खी'।

स्वर्णमाता—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्णमातृ] १ हिमालय की एक छोटी नदी का नाम। २ जामुन।

स्वर्णमुखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्वर्णपत्री। सनाय। २ एक प्रकार की नाव। ६४ हाथ लंबी, ३२ हाथ ऊँची और ३२ हाथ चौड़ी नाव।

स्वर्णमुद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोने का सिक्का। अशरफी।

स्वर्णमूल—संज्ञा पुं० [सं०] कथासरित्सागर के अनुसार एक पर्वत का नाम (को०)।

स्वर्णमूषिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक पौधा (को०)।

स्वर्णयुग—संज्ञा पुं० [सं०] सुख समृद्धि एवं शांति का काल।

स्वर्णयूथिका, स्वर्णयूथी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पीली जूही।

स्वर्णरंभा—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्णरम्भा] स्वर्णकदली। चंपा केला।

स्वर्णराग, स्वर्णराज—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद कमल (को०)।

स्वर्णरीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] राजपीतल। सोनापीतल।

स्वर्णरेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुवर्णरेखा'।

स्वर्णरेता—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्णरेतस्] हिरण्यरेता। सूर्य (को०)।

स्वर्णरोमा—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्णरोमन्] एक सूर्यवंशी राजा का नाम जो राजा महारोमा का पुत्र और ह्रस्वरोमा का पिता था।

स्वर्णलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मालकगनी। ज्योतिष्मती। २ पीली जीवंती। स्वर्णजीवंती।

स्वर्णलाभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ अस्त्र अभिमंत्रित करने का एक मंत्र। २ सोना मिलना। स्वर्ण की प्राप्ति (को०)।

स्वर्णली—संज्ञा स्त्री० [सं०] सातुली नामक क्षुप। स्वर्णपुष्पी। विशेष दे० 'स्वर्णुली'।

स्वर्णलेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुवर्णरेखा' (को०)।

स्वर्णवंग—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्णवङ्ग] रांगे या सीसे का एक प्रकार का भस्म (को०)।

स्वर्णवज्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का लोहा।

स्वर्णवणिक्—संज्ञा पुं० [सं०] १ सराफ। २ स्वर्णकार (को०)।

स्वर्णवर्ण¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ कणगुग्गुल। २ हरताल। ३ सोनागेरू। स्वर्णगैरिक। ४ दारुहल्दी।

स्वर्णवर्ण²—वि० स्वर्णिम। सुनहला। सोने के रंग का (को०)।

स्वर्णवर्णाक—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्णवर्णाङ्क] कंकुष्ठ। मुरदासंग।

स्वर्णवर्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हलदी। २ दारुहलदी।

स्वर्णवर्णाभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जीवंती।

स्वर्णवल्कल¹—संज्ञा पुं० [सं०] सोनापाठा। श्योनाक। अरलू।

स्वर्णवल्कल²—वि० जिसकी ऊपरी तह या छिलका सुनहला हो (को०)।

स्वर्णवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सोनावल्ली। रक्तफला। २ स्वर्णुली नामक क्षुप। ३ पीली जीवंती।

स्वर्णविंदु—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्णबिन्दु] १ विष्णु। २ महाभारत में वर्णित प्राचीन काल के एक तीर्थ का नाम।

स्वर्णविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्णनिर्माण की विद्या। सोना बनाने की कला। कीमियागरी (को०)।

स्वर्णशिख—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्णचूड या नीलकंठ नामक पक्षी।

स्वर्णशुक्तिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्णद्वीप का सोना (को०)।

स्वर्णशृंग—वि० [सं० स्वर्णशृङ्ग] जिसकी सींग सोने से मढी या स्वर्णिम हो (को०)।

स्वर्णशृंगी—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्णशृङ्गिन्] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम जो सुमेरु पर्वत के उत्तर ओर माना जाता है।

स्वर्णशेफालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आरग्वध। अमलतास। २. सँभालू। पीला सिंधुआर।

स्वर्णशैल—संज्ञा पुं० [सं०] सुमेरु पर्वत जो सोने का कहा गया है। हेमगिरि (को०)।

स्वर्णसिंदूर—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्णसिन्दूर] दे० 'रससिंदूर'।

स्वर्णसू—वि० [सं०] जहाँ से सोना निकलता हो। सोना उत्पन्न करनेवाला (को०)।

स्वर्णस्थ—वि० [सं०] जो स्वर्ण में जड़ा हुआ हो (को०)।

स्वर्णहालि—संज्ञा पुं० [सं०] आरग्वध। अमलतास।

स्वर्णांग—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्णाङ्ग] आरग्वध। अमलतास।

स्वर्णाकर—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ सोना उत्पन्न होता हो। सोने की खान।

स्वर्णाचल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्वर्णाद्रि'।

स्वर्णातप—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ण + आतप] पीली धूप जो सोने जैसी लगती है। उ०—पत्रों पुष्पों से टपक रहा स्वर्णातप, प्रात समीर के मृदु स्पर्शों से कँप कँप।—युगांत, पृ० ११।

स्वर्णाद्रि—संज्ञा पुं० [सं०] १ उड़ीसा प्रदेश का भुवनेश्वर नामक तीर्थ जो स्वर्णाचल भी कहलाता है। २ सुमेरु पर्वत (को०)।

स्वर्णाभ¹—संज्ञा पुं० [सं०] हरताल।

स्वर्णाभ²—वि० सोने जैसी आभावाला। उ०—जो रजनी ने

बिखराई थीं भू पर मजुल मुक्तावलियाँ। लगी लूटने उन्हें प्रात मे दिनमणि की स्वर्णाभ रश्मियाँ।—ग्रामिका, पृ० १६।

स्वर्णाभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पीली जूही।

स्वर्णारि—संज्ञा पुं० [सं०] १ गंधक। २ सीसा नामक धातु।

स्वर्णालु—संज्ञा पुं० [सं०] एक क्षुप। सोनुली। विशेष दे० 'स्वर्णुली'।

स्वर्णाह्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्णक्षीरी। सत्यानाशी। भरभाँड।

स्वर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] धनिया।

स्वर्णिम—वि० [सं०] १ सुनहला। सोने जैसा। उ०—वधु, चाहता काल, तोड दे हमे, छोड ककाल। यही दैव की चाल, जगत स्वप्नों का स्वर्णिम जाल!—मधुज्वाल, पृ० ३६। २ सोने का (को०)।

स्वर्णुली—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का क्षुप जो सोनुली कहलाता है।

विशेष—इसे हेमपुष्पी और स्वर्णपुष्पा भी कहते है। वैद्यक के अनुसार यह कटु, शीतल, कषाय और व्रणनाशक होना है।

स्वर्णोपधातु—संज्ञा पुं० [सं०] सोनामक्खी नामक उपधातु।

स्वर्दंती—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्दन्तिन्] स्वर्गलोक का हाथी। ऐरावत आदि हाथी (को०)।

स्वर्द—वि० [सं०] स्वर्लोक देनेवाला। स्वर्ग देनेवाला (को०)।

स्वर्धुनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्लोक की नदी, गगा।

स्वर्धेनु—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्गलोक की गाय, कामधेनु (को०)।

स्वर्न(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ण] दे० 'स्वर्ण'।

स्वर्नसैल—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्णशैल] सोने का पर्वत। सुमेरु पर्वत। उ०—स्वर्नसैल सकास कोटि रवि तरुन तेज घन। उर विशाल भुजदड चड नख वज्र बज्रतन।—तुलसी ग्र०, पृ० २४६।

स्वर्नगरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्ग की पुरी, अमरावती।

स्वर्नदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्गगा।

स्वर्पति—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग के स्वामी, इद्र।

स्वर्भाण—संज्ञा पुं० [सं०] राहु (को०)।

स्वर्भानव—संज्ञा पुं० [सं०] गोमेद मणि। राहु का रत्न।

स्वर्भानु—संज्ञा पुं० [सं०] १ राहु। २ सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

यौ०—स्वर्भानुसूदन=सूर्य का एक नाम।

स्वर्मणि—संज्ञा पुं० [सं०] आकाश के मणि। सूर्य। सूर्य (को०)।

स्वर्मध्य—संज्ञा पुं० [सं०] आकाश का मध्य भाग। खमध्य (को०)।

स्वर्यात—वि० [सं०] मृत। मरा हुआ। स्वर्गत (को०)।

स्वर्याता—वि० [सं० स्वर्यातृ] मुमूर्षु। मरणासन्न (को०)।

स्वर्यान—संज्ञा पुं० [सं०] मृत्यु। मरण। मौत (को०)।

स्वर्योषित्—संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्सरा (को०)।

स्वर्लीन—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जनपद का नाम।

स्वर्लोक—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वर्ग। २ मेरु पर्वत का एक नाम (को०)। ३ देवता (को०)।

स्वर्वधू—संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्सरा।

स्वर्वापी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गगा।

स्वर्वारवामभ्रू—संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्सरा। स्वर्वधू (को०)।

स्वर्वासी—वि० [सं०] स्वर्ग मे रहनेवाला (देवता)। उ०—हाय प्राण ही नहीं, तुझे यदि होना, मान नहीं भी। ओ स्वर्वासी अमर! मनुज सा निर्धन होना तू भी।—सामधेनी, पृ० २२।

स्वर्वाहिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मदाकिनी (को०)।

स्वर्विद्—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो यज्ञ आदि करके स्वर्ग जाता हो।

स्वर्वेश्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्सरा।

स्वर्वैद्य—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग के वैद्य, अश्विनीकुमार।

स्वर्हण—संज्ञा पुं० [सं०] सम्यक् सम्मान। अत्यधिक आदर (को०)।

स्वर्हत्—वि० [सं०] जो बहुत सम्मान्य हो (को०)।

स्वलक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] विशेष लक्षण या तत्व। विशेषता (को०)।

स्वलिखित—वि० [सं०] स्वय लिखा हुआ (को०)।

स्वलीन—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक दानव का नाम।

स्वल्प[1]—वि० [सं०] १ बहुत थोडा। बहुत कम। जैसे,—स्वल्प मात्रा मे मकरध्वज देने मे भी बहुत लाभ होता है। उ०—(क) अतिथि ऋषीश्वर शापन आए शोक भयो जिय भारी। स्वल्प शाक ते तृप्त किए सब कठिन आपदा टारी।—सूर (शब्द०)। (ख) कल्प वर्ष भट चल्यो किए सकल्प विजय को। समुभि अल्प बल परन स्वल्पहू लेस न भय को।—गिरधरदास (शब्द०)। २ नगण्य। महत्वहीन। तुच्छ (को०)। ३ सक्षिप्त। लघु। अल्प (को०)। ४ बहुत छोटा (को०)।

स्वल्प[2]—संज्ञा पुं० नखी या हट्टविलासिनी नामक गधद्रव्य।

स्वल्पकक—संज्ञा पुं० [सं० स्वल्पकङ्क] छोटी चील पक्षी की एक जाति (को०)।

स्वल्पकद—संज्ञा पुं० [सं० स्वल्पकन्द] कसेरु।

स्वल्पक—वि० [सं०] बहुत थोडा। बहुत कम या अत्यत लघु (को०)।

स्वल्पकाष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] साँख आलू।

स्वल्पकेशर—संज्ञा पुं० [सं०] कचनार।

स्वल्पकेशरी—संज्ञा पुं० [सं० स्वल्पकेशरिन्] कोविदार का वृक्ष। कचनार का पेड (को०)।

स्वल्पकेशी[1]—संज्ञा पुं० [सं० स्वल्पकेशिन्] भूतकेश नामक पौधा।

स्वल्पकेशी[2]—वि० जिसे बहुत कम केश हों (को०)।

स्वल्पघटा—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वल्पघण्टा] शणपुष्पी।

स्वल्पचटक—संज्ञा पुं० [सं०] गौरैया नामक पक्षी।

स्वल्पजबुक—संज्ञा पुं० [सं० स्वल्पजम्बुक] लोमड़ी।

स्वल्पतत्र—वि० [सं० स्वल्पतन्त्र] जिसके अध्याय, तत्र या पद छोटे हों (को०)।

स्वल्पतर—वि० [सं०] बहुत थोडा या बहुत साधारण।

स्वल्पतरु—संज्ञा स० [सं०] केमुक। केमुआँ।

स्वल्पदुःख—संज्ञा वि० [सं०] साधारण कष्ट। हलकी पीडा [को०]।

स्वल्पदृक्—वि० [सं० स्वल्पदृश] जो दूरदर्शी न हो। अदूरदर्शी [को०]।

स्वल्पदेहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] नाटे कद की लडकी जो विवाह के योग्य नही मानी जाती [को०]।

स्वल्पनख—संज्ञा पुं० [सं०] नखी या हट्टविलासिनी नामक गंधद्रव्य।

स्वल्पपत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] गौरशाक। पहाडी महुआ।

स्वल्पपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मेदा नाम की अष्टवर्गीय ओषधि।

स्वल्पफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपराजिता। हपुषा। हाऊबेर।

स्वल्पबल—वि० [सं०] दुर्बल। कमजोर। [को०]।

स्वल्पभाषी—वि० [सं० स्वल्पभाषिन्] जो मितभाषी हो। कम बोलनेवाला [को०]।

स्वल्पयव—संज्ञा पुं० [सं०] जौ नामक अन्न।

स्वल्परूपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शणपुष्पी। वनसनई।

स्वल्पवर्तुल—संज्ञा पुं० [सं०] मटर।

स्वल्पवल्कला—संज्ञा स्त्री० [सं०] तेजवल। तेजोवती।

स्वल्पवयस्—वि० [सं०] छोटी अवस्था का [को०]।

स्वल्पविटप—संज्ञा पुं० [सं०] केमुक। केमुआ।

स्वल्पविराम ज्वर—संज्ञा पुं० [सं०] ठहर ठहरकर थोडी देर के लिये उतरकर फिर आनेवाला ज्वर।

स्वल्पविषय—संज्ञा पुं० [सं०] साधारण बात या मामूली अंश [को०]।

स्वल्पव्यक्ति तंत्र—संज्ञा पुं० [सं० स्वल्पव्यक्ति तन्त्र] वह सरकार जिसमे राजसत्ता इने गिने लोगो के हाथो मे हो। कुछ लोगों का राज्य या शासन। विशेष दे० 'ओलिगार्की'।

स्वल्पव्यय—संज्ञा पुं० [सं०] १ कम खर्च। २ कृपण [को०]।

स्वल्पव्ययी—वि० [सं० स्वल्पव्ययिन्] कम खर्च करनेवाला। अल्प या थोडा खर्च करनेवाला।

स्वल्पव्रीड—वि० [सं०] बेशर्म। निलज्ज [को०]।

स्वल्पशब्दा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वनसनई। शणपुष्पी।

स्वल्पशरीर—वि० [सं०] छोटे कद का। ठिंगना। नाटा [को०]।

स्वल्पशृगाल—वि० संज्ञा पुं० [सं०] रोहित मृग। बनरोहा।

स्वल्पांगुलि—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वल्पाङ्गुलि] कनिष्ठिका। कानी उँगली [को०]।

स्वल्पांतर—वि० [सं० स्वल्पान्तर] जिनमे बहुत कम अंतर या फर्क हो।

स्वल्पायु—वि० [सं० स्वल्पायुस्] अल्पजीवी। अल्पायु [को०]।

स्वल्पाहार[1]—वि० [सं०] कम खानेवाला। अल्पाहारी।

स्वल्पाहार[2]—संज्ञा पुं० अल्पाहार। संयत भोजन [को०]।

स्वल्पस्मृति—वि० [सं०] जिसकी स्मरण शक्ति कम हो [को०]।

स्वल्पिष्ठ—वि० [सं०] १ अत्यंत थोडा या अल्प। २ बहुत छोटा। स्वल्पतर [को०]।

स्वल्पीयस—वि० [सं०] अत्यंत अल्प या छोटा। मामूली [को०]।

स्वल्पेच्छ—वि० [सं०] कम या मामूली इच्छाओवाला। जिसकी कामना अल्प हो। संतोषी [को०]।

स्ववंश—संज्ञा पुं० [सं०] अपना कुल। अपना वंश।

स्ववंशी—वि० [सं० स्ववंशिन्] अपने वंश का। परवर्ती पीढी का।

स्ववंश्य—वि० [सं०] अपने खानदान का। अपने परिवार का [को०]।

स्ववच्छन्न—वि० [सं०] सम्यक् आवृत। अच्छी तरह ढँका हुआ [को०]।

स्ववरन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ण] दे० 'सुवर्ण'।

स्ववर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] अपना वर्ग। अपना समाज। अपना मित्रमंडल या परिवार।

स्ववर्गीय—वि० [सं०] जो अपने वर्ग का हो।

स्ववर्णी रेखा—संज्ञा स्त्री० [सं० सुवर्णरेखा] एक नदी जो छोटा नागपुर से निकलकर बगाल की खाडी मे गिरती है।

स्ववश—वि० [सं०] १ जो अपने वश मे हो। स्वतंत्र। स्वाधीन। २ जिसका अपने आप पर अधिकार हो। जो अपनी इंद्रियो को वश मे रखता हो। जितेंद्रिय।

स्ववशता—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्ववश का भाव या धर्म।

स्ववशिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का वैदिक छंद।

स्ववश्य—वि० [सं०] जो अपने ही वश मे हो। अपने आपपर अधिकार रखनेवाला।

स्ववस(पु)—वि० [सं० स्ववश] १ जो अपने वश मे हो। वशीभूत। उ०—देखा स्ववस करम मन बानी।—मानस, १।१६२। २ दे० 'स्ववश'।

स्ववहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] निसोथ। त्रिवृत।

स्ववहित—वि० [सं०] जो भली भाँति अवहित हो। एकाग्र। २ सावधान। सतर्क।

स्ववार—संज्ञा पुं० [ ] अपना घरबार। अपना घर [को०]।

स्ववार्त—संज्ञा पुं० [सं० स्ववार्त्त] अपनी वार्ता या बात। अपना हित। अपनी अवस्था या स्थिति।

स्ववासिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कन्या अथवा विवाहिता स्त्री जो अपने पिता के घर रहती हो।

स्ववासी—संज्ञा पुं० [सं० स्ववासिन्] एक साम का नाम।

स्वविकत्थन—वि० [सं०] अपनी ही बात कहनेवाला। सीटने या डीग मारनेवाला। सीटू।

स्वविक्षिप्त सैन्य—संज्ञा पुं० [सं०] अपने ही देश मे विद्यमान सेना।

विशेष—कौटिल्य ने लिखा है कि स्वविक्षिप्त और मित्रविक्षिप्त (मित्र के देश मे स्थित) सेना मे स्वविक्षिप्त उत्तम है, क्योंकि समय पडने पर वह तुरत काम दे सकती है।

स्वविग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] अपना रूप या शरीर।

स्वविधेय—वि० [सं०] जो स्वयं करणीय हो। खुद ब खुद करने लायक।

स्वविनाश—संज्ञा पुं० [सं०] अपना विनाश। आत्महानि।

स्वविषय—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपना विषय । अपना क्षेत्र । २ अपना देश । स्वदेश [को०] ।

स्ववीज¹—वि० [सं०] जो अपना बीज या कारण आप ही हो ।

स्ववीज²—संज्ञा पुं० आत्मा ।

स्ववृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] व्यक्ति का अपना निजी कार्य, व्यापार या प्रयोजन [को०] ।

स्ववृत्ति¹—वि० [सं०] अपने प्रयत्न से जीवनयापन करनेवाला । स्वावलंबी । आत्मनिर्भर [को०] ।

स्ववृत्ति²—संज्ञा स्त्री० १ स्वकीय जीवनयापन करने का ढंग या पद्धति । २ आत्मनिर्भर होना । आत्मनिर्भरता ।

स्वव्याज—वि० [सं०] जो छल कपट से रहित हो । निश्छल । ईमानदार । सच्चा [को०] ।

स्वशुर—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'श्वसुर' ।

स्वश्लाघा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपनी बड़ाई । आत्मप्रशंसा ।

स्वसंभव—वि० [सं० स्वसम्भव] जो आत्मा से उत्पन्न हो । आत्मसंभव ।

स्वसंभूत—वि० [सं० स्वसम्भूत] जो आपसे आप उत्पन्न हो । स्वतः समुत्पन्न ।

स्वसंवृत—वि० [सं०] आत्मरक्षण में शक्त । स्वयं रक्षित [को०] ।

स्वसंविद्¹—वि० [सं०] जिसका ज्ञान इंद्रियों से न हो सके । अगोचर ।

स्वसंविद्²—संज्ञा स्त्री० आत्मज्ञान । शुद्ध ज्ञान [को०] ।

स्वसंवेदन—संज्ञा पुं० [सं०] स्वयं प्राप्त या अनुभूत ज्ञान [को०] ।

स्वसंवेद्य—वि० [सं०] (ऐसी बात) जिसका अनुभव वही कर सकता हो जिसपर वह बीती हो । केवल अपने ही अनुभव होने योग्य ।

स्वसंस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अपने निश्चय या विचार पर स्थिर रहना । २ स्वयं स्थिर होने का भाव । आत्मस्थिरता । ३ आत्मलीनता [को०] ।

स्वसन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्वसन] वायु । दे० 'श्वसन' । उ०—स्वसन सदागति मरुत हरि मारुत जगत परान ।—अनेकार्थ०, पृ० ५४ ।

स्वसना(पु)—क्रि० अ० [सं० श्वसन, हिं० स्वसन] साँस लेना । उ०—खात पियत अरु स्वसत स्वान मंडुक अरि भाथी । —भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० ६९७ ।

स्वसमुत्थ—वि० [सं०] १ जो स्वयं उठा हुआ हो । अपने आप उत्थित या उठा हुआ । २ जो स्वयं उद्भूत हो । प्राकृतिक । नैसर्गिक । ३ अपने ही देश में उत्पन्न, स्थित या एकत्र होनेवाला । जैसे,—स्वसमुत्थ कोश । स्वसमुत्थ बल या दंड ।

स्वसर—संज्ञा पुं० [सं०] १ घर । मकान २ दिन । दिवस । ३ नीड । घोंसला (को०) ।

स्वसर्व—संज्ञा पुं० [सं०] अपनी समग्र संपदा । अपना सब कुछ ।

स्वसा—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वसृ] भगिनी । बहिन । उ०—तेहि अवसर रावण स्वसा सूपनखा तहँ आई । रामस्वरूप मोहित हिं० ग्रा० ११-१०

बचन बोली गरब बढाई ।—विश्राम (शब्द०) । २ तेजबल । तेजफल । तेजोवती । ३ अँगुली । उँगली (को०) ।

स्वसृ—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी । धरती [को०] ।

स्वसुर—संज्ञा पुं० [सं० श्वशुर, हिं० ससुर] दे० 'ससुर' ।

स्वसुराल—संज्ञा स्त्री० [हिं० ससुराल] दे० 'ससुराल' ।

स्वस्ता(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वस्थता] सुस्थिरता । स्वस्थता । उ०—स्वस्ता मन में आई जगत की भ्रमना भागी ।—पलटू०, पृ० ७४ ।

स्वस्ति¹—अव्य० [सं०] १ कल्याण हो । मंगल हो । (आशीर्वाद) । २ दान-स्वीकृति-परक वाक्य ।

विशेष—प्रायः दान लेने पर ब्राह्मण लोग 'स्वस्ति' कहते हैं, जिसका अभिप्राय होता है—दाता का कल्याण हो ।

स्वस्ति²—संज्ञा स्त्री० १ कल्याण । मंगल । २ पुराणानुसार ब्रह्मा की तीन स्त्रियों में से एक स्त्री का नाम । उ०—ब्रह्मा कहँ जानत संसारा । जिन सिरज्यो जग कर विस्तारा । तिनके भवन तीनि रहँ इस्त्री । संध्या स्वस्ति और सावित्री ।—विश्राम (शब्द०) । ३ सुख ।

स्वस्तिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ घर जिसमें पश्चिम ओर एक दालान और पूर्व ओर दो दालान हों ।

विशेष—कहते हैं, ऐसे घर में रहने से गृहस्थ की स्वस्ति अर्थात् कल्याण होता है, इसी लिये इसे स्वस्तिक कहते हैं ।

२ शिरियारी । सुसना नाम का साग । ३ लहसुन । ४ रतालू । रक्तालु । ५ मूली । ६ हठयोग में एक प्रकार का आसन । ७ एक प्रकार का मंगल द्रव्य ।

विशेष—विवाह आदि के समय चावल को पीसकर और पानी में मिलाकर यह मंगल द्रव्य तैयार किया जाता है और इसमें देवताओं का निवास माना जाता है ।

८ प्राचीन काल का एक प्रकर का यंत्र ।

विशेष—यह यंत्र शरीर में गड़े हुए शल्य आदि को बाहर निकालने के काम में आता था । यह अठारह अंगुल तक लंबा होता था और सिंह, शृगाल, मृग आदि के आकार के अनुसार १८ प्रकार का होता था ।

९ वैद्यक में फोड़े आदि पर बाँधा जानेवाला बंधन या पट्टी जिसका आकार तिकोना होता था । १० चौराहा । चौमुहानी ११ साँप के फन पर की नीली रेखा । १२ प्राचीन काल का एक प्रकार का मंगल चिह्न जो शुभ अवसरों पर मांगलिक द्रव्यों से अंकित किया जाता था और जो कई आकार तथा प्रकार का होता था । आजकल इसका मुख्य आकार 卐 यह प्रचलित है । प्रायः किसी मंगल कार्य के समय गणेशपूजन करने से पहले यह चिह्न बनाया जाता है । आजकल लोग इसे भ्रम में गणेश ही कहा करते हैं ।

१३ शरीर के विशिष्ट अगो मे होनेवाला उक्त आकार का एक चिह्न । उ०—स्वस्तिक अष्टकोण श्री केरा । हल मुसल पन्नग शर हेरा ।—विश्राम (शब्द०) ।

विशेष—इस प्रकार का चिह्न सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार बहुत शुभ माना जाता है। कहते है, रामचद्र जी के चरण मे इस प्रकार का चिह्न था। जैनी लोग जिन देवता के २४ लक्षणो मे से इसे भी एक मानते हैं।

१४ प्राचीन काल की एक प्रकार की बढिया नाव जो प्राय राजाओ की सवारी के काम मे आती थी। १५ एक प्रकार के चारण जो जयजयकार करते है (को०)। १६ कोई भी शुभ या मगल द्रव्य (को०)। १७ भुजाओ को वक्ष पर इस प्रकार रखना जिससे एक व्यत्यस्त चिह्न × बन जाय (को०)। १८ एक विशेष आकार का प्रासाद (को०)। १९ विपयी। व्यभिचारी (को०)। २० एक विशेष प्रकार का पिष्टक, पूआ या रोट (को०)। २१ चौराहे से बना हुआ त्रिभुजाकार चिह्न (को०)। २२ देवता के लिये उपकल्पित आसन या पीठ (को०)। २३ मुकुटमणि जो त्रिकोणात्मक हो। त्रिकोण मुकुटमणि (को०)। २४ स्कद का एक अनुचर (को०)। २५ एक दानव का नाम (को०)।

स्वस्तिककर्ण—वि० [स०] जिसके कान पर स्वस्तिक का चिह्न निर्मित हो [को०]।

स्वस्तिकदान—सज्ञा पुं० [सं०] स्वस्तिक के आकार मे हाथो को वक्ष पर रखना [को०]।

स्वस्तिकपाणि—वि० [स०] १ स्वस्तिक के रूप मे हाथो की मुद्रा बनानेवाला। २ जिसके हाथो मे मगलद्रव्य हो [को०]।

स्वस्तिकयत्र—सज्ञा पुं० [स० स्वस्तिकयन्त्र] प्राचीन काल का एक प्रकार का यत्र जिसका व्यवहार शरीर मे धँसे हुए शल्य को निकालने के लिये होता था। विशेष दे० 'स्वस्तिक—८'।

स्वस्तिकर—सज्ञा पुं० [स०] प्राचीन काल के एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

स्वस्तिकर्म—सज्ञा पुं० [स० स्वस्तिकर्मन्] वह जिससे कल्याण हो। कल्याणकारक कर्म [को०]।

स्वस्तिका—सज्ञा स्त्री० [स०] चमेली।

स्वस्तिकार—सज्ञा पु० [स०] १. एक प्रकार के चारण। दे० 'स्वस्तिक'—१५। २ शुभ करना। कल्याण करना [को०]।

स्वस्तिकाह्वय—सज्ञा पुं० [स०] चौलाई का साग।

स्वतिकृत्[1]—सज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

स्वस्तिकृत्[2]—वि० मगल करनेवाला। कल्याणकारी।

स्वस्तिद[1]—सज्ञा पु० [स०] शिव। महादेव।

स्वस्तिद[2]—वि० मगल या कल्याण देने अथवा करनेवाला।

स्वस्तिदेवी—सज्ञा स्त्री० [स०] वायु की पत्नी, एक देवी [को०]।

स्वस्तिपाठ—सज्ञा पुं० [सं०] स्वस्तिवाचक मत्रो का पाठ [को०]।

स्वस्तिपुर—सज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

स्वस्तिभाव—सज्ञा पु० [सं०] शिव। शकर [को०]।

स्वस्तिमत्—वि० [स०] [वि० स्त्री० स्वस्तिमती]। कल्याणयुक्त। सौभाग्यसपन्न सुखी [को०]।

स्वस्तिमती—सज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

स्वस्तिमुख—सज्ञा पु० [स०] १ ब्राह्मण। २ वह जो राजाओ की स्तुति करता हो। वदी। स्तुतिपाठक। ३ पत्र। चिट्ठी [को०]।

स्वस्तिवचन—सज्ञा पुं० [स०] स्वस्ति अथवा कल्याणवाचक शब्द कहना [को०]।

स्वस्तिवाचक—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो मगलसूचक बात कहता या मत्रपाठ करता हो। २ वह जो आशीर्वाद देता हो। ३ शुभ-कामना। आशीर्वाद (को०)।

स्वस्तिवाचन—सज्ञा पुं० [स०] १ कर्मकाड के अनुसार मगल कार्यो के आरभ मे किया जानेवाला एक प्रकार का धार्मिक कृत्य जिसमे गणेशपूजन के अनतर। कलश स्थापित किया जाता है और कुछ मगलसूचक मत्रो का पाठ (पुण्याह वाचन आदि) किया जाता है। उ०—एकदिना हरि लई करोटी सुनि हरषी नँदरानी। विप्र बुलाय स्वस्तिवाचन करि रोहिणी नैन सिरानी।—सूर (शब्द०)। २ द्रव्य आदि जो स्वस्तिवाचक को दिया जाय (को०)।

स्वस्तिवचनक, स्वस्तिवाचनिक—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्वस्ति-वाचन' [को०]।

स्वस्तिवाच्य—सज्ञा पुं० [सं०] शुभ कामना। बधाई। कल्याण की कामना [को०]।

स्वस्तिश्री—सज्ञा स्त्री० [सं०] पत्र के आरभ मे लिखा जानेवाला मगल-सूचक शब्द।

स्वस्तेन(पु)—सज्ञा पुं० पुं० [सं० स्वस्त्ययन] दे० 'स्वस्त्ययन'।

स्वस्तीवचन(पु)—सज्ञा पुं० दे० 'स्वस्तिवाचन'। उ०—नद राय घर ढोटा जायो महर महा सुख पायो। विप्र बुलाय वेद ध्वनि कीन्ही स्वस्तीवचन पढायो।—सूर (शब्द०)।

स्वस्त्यक्षर—सज्ञा पु० [स०] किसी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना [को०]।

स्वस्त्ययन[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ एक प्रकार का धार्मिक कृत्य जो किसी विशिष्ट कार्य की अशुभ बातो का नाश करके शुभ की स्थापना के विचार से किया जाता है। उ०—पढन लगे स्वस्त्ययन ब्रह्म-ऋषि गाइ उठी सब नारी। लै नरनाथ अक रघुनाथहि रगनाथ सभारी।—रघुराज (शब्द०)। २ शुभ, कल्याण, समृद्धि आदि की प्राप्ति का साधन (को०)। ३ दान स्वीकार करने के अनतर ब्राह्मण द्वारा स्वस्तिकथन (को०)। ४ मागलिक कृत्य मे आगे आगे ले जाया जानेवाला जलपूर्ण कलश (को०)।

स्वस्त्ययन[2]—वि० कल्याणकारक। मगलप्रद। शुभद [को०]।

स्वस्त्यात्रेय—सज्ञा पु० [स०] एक वैदिक ऋषि का नाम।

स्वस्थ—वि० [स०] १ जिसका स्वास्थ्य अच्छा हो। जिसे किसी प्रकार का रोग न हो। निरोग। तदुरुस्त। भला चगा। जैसे, —इवर

महीनो से वे बीमार थे, पर अब बिलकुल स्वस्थ हो गए हैं। २ जिसका चित्त ठिकाने हो। जो स्वाभाविक स्थिति मे हो। सावधान। जैसे,—आप तो घबरा गए, जरा स्वस्थ होकर पहले सब बातें सुन तो लीजिए। ३ स्व मे स्थित। अपने मे स्थित (को०) ४ स्वाश्रित। स्वावलवी (को०)। ५ स्वतंत्र। स्वाधीन (को०) ६ सतुष्ट। प्रसन्न (को०)।

यौ०—स्वस्थमुख = प्रसन्नवदन।

स्वस्थचित्त—वि० [स०] जिसका चित्त ठिकाने हो। शातचित्त।

स्वस्थता—सज्ञा स्त्री० [स०] स्वस्थ का भाव या धर्म। नीरोगता। तदुरुस्ती। २ सावधानता।

स्वस्थवृत्त—सज्ञा पु० [स०] १ आयुर्वेद शास्त्र की एक अगभूत शाखा। स्वस्थ रहने का उपचार। स्वास्थ्यरक्षा की विधि या नियम (को०)।

स्वस्थान—सज्ञा पुं० [स०] अपना निवासस्थान। अपना घर। अपना आवास अथवा क्षेत्र।

स्वस्थित—वि० [स०] जो स्व मे स्थित हो। आत्मस्थित। स्वाधीन (को०)।

स्वस्रीय—सज्ञा पु० [सं०] (स्वसृ) बहिन का लडका। भानजा।

स्वस्रीया—सज्ञा स्त्री० [स०] बहिन की लडकी। भानजी (को०)।

स्वस्रेय—सज्ञा पुं० [स०] भानजा। भगिना (को०)

स्वस्रेयी—सज्ञा स्त्री० [स०] भानजी (को०)

स्वस्वरूप—सज्ञा पुं० [स०] व्यक्ति का अपना सच्चा रूप (को०)

स्वहता—सज्ञा पु० [स० स्वहन्तृ] १ आत्महत्या। आत्महनन। २ आत्महत्या करनेवाला व्यक्ति (को०)।

स्वहरण—सज्ञा पुं० [स०] सर्वस्वहरण। समग्र सपत्ति का हरण (को०)।

स्वहस्त—सज्ञा पुं० [सं०] व्यक्ति का अपना हाथ या हस्तलिपि। हस्तलेख। हस्ताक्षर (को०)।

यौ०—स्वहस्तगत = अपने हाथ मे आया हुआ। अपने अधिकार मे आया हुआ। स्वहस्तलिखित = अपने हाथ से लिखा हुआ।

स्वहस्तिका—सज्ञा स्त्री० [स०] कुल्हाडी (को०)।

स्वहाना(पु)—क्रि० अ० [हिं० सोहाना] शोभित होना। दे० 'सोहाना'। उ०—सब आचार्यन के मधि माही। रामानुज मुनि सरिस स्वहाही।—रघुराज (शब्द०)।

स्वहित¹—सज्ञा पुं० [स०] अपना कल्याण। अपना हित (को०)।

स्वहित²—वि० जो अपने लिये हितकर हो (को०)।

स्वाकिक—सज्ञा पुं० [स० स्वाङ्किक] ढोल, पटह या मृदग आदि वाद्य बजानेवाला व्यक्ति।

स्वाग¹—सज्ञा पुं० [स० स्वाङ्ग] अपना शरीर। अपना अग।

यौ०—स्वागभग = अपनी देह मे चोट लगना या अपना अगभग होना। स्वागशीत = जिसके अग ठढे हो।

स्वाग²—सज्ञा पुं० [स० सु या स्व + अङ्ग] दे० 'स्वांग'।

स्वाजल्यक—सज्ञा पु० [स० स्वाञ्जल्यक] प्रार्थना के लिये हाथ जोड़ना। सविनय प्रार्थना (को०)।

स्वात¹—सज्ञा पुं० [सं० स्वान्त] १ अतःकरण। मन। २ अपना अत या मृत्यु। ३ अपना राज्य या प्रदेश। ४. गुफा। गुहा।

स्वात²—वि० शब्दित। ध्वनित (को०)।

स्वातक—सज्ञा पुं० [स० स्वान्तज] १ प्रेम। २ मनोज। कामदेव।

स्वातवत्—वि० [स० स्वान्तवत्] [वि० स्त्री० स्वातवती] हृदयवाला। सहृदय (को०)।

स्वातस्थ—वि० [स० स्वान्तस्थ] १ हृदयस्थ। २ सावधान (को०)।

स्वातसुख—सज्ञा पुं० [सं० स्वान्त सुख] आत्मसुख। आत्मसतुष्टि।

स्वाँग—सज्ञा पुं० [स० सु + अङ्ग अथवा स्व + अङ्ग] १ कृत्रिम या बनावटी वेश जो अपना रूप छिपाने अथवा दूसरे का रूप बनाने के लिये धारण किया जाय। भेस। रूप। उ०—(क) अब चलो अपने अपने स्वाँग सजे।—हरिश्चद्र (शब्द०)। (ख) कै इक स्वाँग बनाइ कै नाचै बहु बिधि नाच। रीझत नहिं रिझवार वह बिना हिये के साँच।—रसनिधि (शब्द०)।

क्रि० प्र०—भरना।—बनना।—बनाना।—सजना।

२ मजाक का खेल या तमाशा। नकल। उ०—(क) बहु बासना बिबिध कचुकि भूषण लोभादि भरयो। चर अरु अचर गगन जल थल मे कौन स्वाँग न करयौ।—तुलसी (शब्द०)। (ख) पै बहु बिस्तृत ठाठ बाट निसि नाच स्वाँग सब। धन अधिकाई के अरु लपटता करतब के।—श्रीधर (शब्द०)। ३ धोखा देने को बनाया हुआ कोई रूप। जैसे,—वह बीमार नही है, उसने बीमारी का स्वाँग रचा है। ४ वह जुलूस जो होली पर निकलता है और जिसमे हास्यजनक वेशभूषा धारण की जाती है।

क्रि० प्र०—रचना।

मुहा०—स्वाँग लाना = धोखा देने या कोई कपटपूर्ण व्यवहार करने के लिये कोई रूप धारण करना।

स्वाँगना(पु)—क्रि० स० [हिं० स्वाँग + ई (प्रत्य०)] स्वाँग बनाना। बनावटी वेश या रूप धारण करना। उ०—भीम अर्जुन सहित विप्र को रूप धरि हरि जरासध सो युद्ध माग्यो। दियो उनपै कह्यौ तुम कोऊ क्षत्रिया कपट करि विप्र को स्वाँग स्वाँग्यो। सूर (शब्द०)।

स्वाँगी¹—सज्ञा पुं० [हिं० स्वाँग] १ वह जो स्वाँग सजकर जीविका उपार्जन करता है। नकल करनेवाला। नक्काल। उ०—(क) जैसे कि डोम, भाँड, नट, वेश्या, स्वागी, बहुरूपी या प्रशसक को देना।—श्रद्धाराम (शब्द०)। (ख) जिन प्रथमै करि पाछे छाँडा। तिन्हैं जानिए स्वाँगी भाँडा।—विश्राम (शब्द०)। २ अनेक रूप धारण करनेवाला। बहुरूपिया। उ०—स्वाँगी से ए भए रहत है छिन ही छिन ए और।—सूर (शब्द०)।

स्वाँगी²—वि० रूप धारण करनेवाला। उ०—साची सी यह दात है सुनियौ सज्जन सत। स्वागी तौ वह एक है वा के स्वाँग अनत।—रसनिधि (शब्द०)।

स्वाँति(पु), स्वाँती(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० स्वाति] एक नक्षत्र का नाम। दे० 'स्वाति'। उ०—जैसे चात्रिक रहै स्वाँति को मलिता निकट न भावै।—कबीर श०, भा० ३, पृ० १६।

स्वाँस—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वास, हिं० साँस] दे० 'साँस'। उ०—पकज सो मुख गो मुरझाइ लगी लपटें मिस स्वास हिया की।—रसखान (शब्द०)।

स्वाँमा —संज्ञा पुं० [देश०] वह सोना जिसमे ताँबे का खोट मिला हो। ताँबे का खोट मिला हुआ सोना।

स्वाँसा¹—संज्ञा पुं० [हिं० साँस] दे० 'साँस'। उ०—स्वाँसा सार रच्यौ मेरो साहब।—कबीर (शब्द०)।

स्वाकार¹—संज्ञा पुं० [सं०] प्रकृति। स्वभाव [को०]।

स्वाकार²—वि० अपने रूपवाला। जिसका अपना रूप हो। २ सौम्य आकृतिवाला। जो देखने मे शिष्ट एव प्रिय हो [को०]।

स्वाकृति—वि० [सं०] देखने मे सुदर। प्रियदर्शन [को०]।

स्वाक्त—संज्ञा पुं० [सं०] आँख मे लगाने का उत्कृष्ट अजन [को०]।

स्वाक्षपाद—संज्ञा पुं० [सं०] न्यायदर्शन को माननेवाला व्यक्ति [को०]।

स्वाक्षर—संज्ञा पुं० [सं०] हस्ताक्षर। दस्तखत। जैसे,—(क) उन्होंने उसपर स्वाक्षर कर दिए। (ख) उनके स्वाक्षर से एक सूचना निकली है।

स्वाक्षरयुक्त—वि० [सं०] दे० 'स्वाक्षरित'।

स्वक्षरांकित—वि० [सं० स्वक्षराङ्कित] १ दे० 'स्वाक्षरित'। २ अपने हाथ से लिखा हुआ।

स्वाक्षरित—वि० [सं०] अपने हस्ताक्षर से युक्त। अपना हस्ताक्षर किया हुआ। अपना दस्तखत किया हुआ। जैसे,—उनके स्वाक्षरित सूचनापत्र से सारी बातो का पता लगा है।

स्वाख्यात—वि० [सं०] जो अच्छी तरह व्यक्त, सुस्पष्ट एव प्रकट हो। जैसे—धम [को०]।

स्वागत—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी अतिथि या विशिष्ट पुरुष के पधारने पर उसका सादर अभिनदन करना। समानार्थ आगे बढकर लेना। अगवानी। अभ्यर्थना। पेशवाई। जैसे,—उनका स्वागत लोगो ने बडे उत्साह और उमग से किया। २ एक बुद्ध का नाम।

स्वागत²—वि० १ सम्यक् रूप से स्वय आया हुआ। २ सु अर्थात् सुदर या विधिसमत उपायो से प्राप्त। जैसे,—धन, द्रव्य आदि [को०]।

स्वागतकारिणी सभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्थानीय लोगो की वह सभा जो उस स्थान मे निमत्रित किसी विराट सभा या समेलन आदि का प्रबध करने और आनेवाले प्रतिनिधियो के स्वागत, निवासस्थान, भोजन आदि की व्यवस्था करने के लिये सघटित हो।

स्वागतकारिणी समिति—संज्ञा स्त्री०[सं०] दे० 'स्वागतकारिणी सभा'।

स्वागतकारी—वि० [सं० स्वागतकारिन्] स्वागत या अभ्यर्थना करनेवाला। पेशवाई करनेवाला।

स्वागतपतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] अवस्थानुसार नायिका के दस भेदो मे से एक। वह नायिका जो अपने पति के परदेश से लौटने से प्रसन्न हो। आगतपतिका।

स्वागतप्रश्न—संज्ञा पुं० [सं०] किसी से मिलने पर कुशल प्रश्न पूछना [को०]।

स्वागतप्रिया—संज्ञा पुं० [सं०] वह नायक जो अपनी पत्नी के परदेश से लौटने से उत्साह पूर्ण और प्रसन्न हो।

स्वागतभाषण—संज्ञा पुं० [सं०] किसी विशिष्ट सामाजिक आयोजन के अवसर पर गठित स्वागतकारिणी सभा या समिति के अध्यक्ष का भाषण [को०]।

स्वागतवचन—संज्ञा पुं० [सं०] किसी के आगमन पर स्वागत अर्थात् 'स्वागत है' कहना [को०]।

स्वागतसमिति—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वागतसमिति] दे० 'स्वागतकारिणी सभा'।

स्वागता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे (र, न, भ, ग, ग) ऽ।ऽ + ।।। + ऽ।। + ऽऽ होता है। यथा—रानि ! भोगि गहि नाथ कन्हाई। साथ गोपजन आवत धाई। स्वागताथ सुनि आतुर माता। धाइ देखि मुद सुदर गाता।—छद प्रभाकर (शब्द०)।

स्वागतिक—वि० [सं०] स्वागत करनेवाला। आनेवाले की अभ्यर्थना या सत्कार करनेवाला।

स्वागम—संज्ञा पुं० [सं०] स्वागत। अभिनदन।

स्वाचरण¹—संज्ञा पुं० [सं०] सुदर व्यवहार या आचरण। अच्छी चालचलन [को०]।

स्वाचरण²—वि० जिसका आचार व्यवहार सुदर हो [को०]।

स्वाचात—वि० [सं० स्वाचान्त] सम्यक् रूप से अचमन करनेवाला [को०]।

स्वाच्छद्य—संज्ञा पुं० [सं० स्वाच्छन्द्य] दे० 'स्वच्छदता'।

स्वाजन्य—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्वजनता'।

स्वाजीव, स्वाजीव्य—वि० [सं०] (वह स्थान या देश आदि) जहाँ कृषि, वाणिज्य आदि जीविका का साधन सुलभ हो। जैसे,—स्वाजीव्य देश।

स्वाढ्यकर—वि० [सं० स्वाढ्यङ्कर] जो सरलता से असपन्न व्यक्ति को सपन्न बना दे [को०]।

स्वातत्र—संज्ञा पुं० [सं० स्वातन्त्र्य] दे० 'स्वातत्र्य'।

स्वातत्र्य—संज्ञा पुं० [सं० स्वातन्त्र्य] १ स्वतत्र का भाव या धर्म। स्वतत्रता। स्वाधीनता। आजादी। जैसे,—उस देश मे भाषण और लेखन स्वातत्र्य नही है। २ स्वेच्छा। स्वतत्र इच्छा अथवा सकल्प (दर्शन)।

स्वात(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वाति] दे० 'स्वाति'। उ०—स्वात बूँद चातक मुख परी। सीप समुँद मोती बहु भरी।—जायसी (शब्द०)

स्वाति¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पद्रहवाँ नक्षत्र जो फलित ज्योतिष के अनुसार शुभ माना गया है। उ०—(क) जेहि चाहत नर नारि सब अति आरत एहि भाँति। जिमि चातक चातकि त्रिषित वृष्टि सरद रितु स्वाति।—तुलसी (शब्द०)। (ख) भेद मुकता के जेते, स्वाति ही मे होतु तेते, रतनन हूँ को कहूँ भूलिहू न होत भ्रम।—रसकुसुमाकर (शब्द०)।

विशेष—इस नक्षत्र मे जन्मनेवाला कामदेव के समान रूपवान् स्त्रियों का प्रिय और सुखी होता है। कहते है, चातक इसी नक्षत्र मे बरसनेवाला पानी पीता है और इसी नक्षत्र मे वर्षा होने से सीप मे मोती, बाँस मे वशलोचन और साँप मे विष उत्पन्न होता है।

२ खड्ग। तलवार (को०)। ३ शुभ नक्षत्रों का एक समूह (को०) ४ सूर्य की एक पत्नी का नाम (को०)।

स्वाति[2]—संज्ञा पुं० उरु और आग्नेयी के एक पुत्र का नाम।

स्वाति[3]—वि० स्वाति नक्षत्र मे उत्पन्न।

स्वातिकारी—संज्ञा स्त्री० [स०] पारस्कर गृह्यसूत्र के अनुसार कृषि की देवी।

स्वातिगिरि—संज्ञा स्त्री० [स०] एक नागकन्या का नाम [को०]।

स्वातिपथ—संज्ञा पुं० [स० स्वाति + पन्थ] आकाशगंगा। उ०—बदी विदूषक वदन बहुनिधि सुयश उक्ति समेत। यह भानुकुल कीरति उदय जो स्वातिपथ सपेत।—रघुराज (शब्द०)।

स्वातिबिंदु—संज्ञा पुं० [सं० स्वातिबिन्दु] स्वाति नक्षत्र मे बरसनेवाली जल की बूँद [को०]।

स्वातिमुख[1]—संज्ञा पुं० [स०] १ एक प्रकार की समाधि। २ एक किन्नर नरेश [को०]।

स्वातिमुख—संज्ञा स्त्री० [स०] एक नागकन्या का नाम।

स्वातियोग संज्ञा पुं० [स०] ज्योतिष के अनुसार आषाढ के शुक्ल पक्ष मे स्वाति नक्षत्र का चद्रमा के साथ योग।

स्वातिसुत—संज्ञा पुं० [स० स्वाति + सुत] मोती। मुक्ता। उ०—(क) स्वातिसुत माला विराजत श्याम तन यो भाइ। मनौ गगा गौरि उर हर लिये कठ लगाइ।—सूर (शब्द०)। (ख) श्रवन विराजत स्वातिसुत करत न बनै बखान। मनु कमल पत्र अग्रज रहे ओस उडगन आन।—पृ० रा०, १।७५३। (ग) बेनी छूटि लटै बगरानी मुकुट लटकि लटकानो। फूल खसत सिर ते भए न्यारे सुभग स्वातिसुत मानो।—सूर (शब्द०)।

स्वातिसुवन—संज्ञा पुं० [स० स्वाति + हिं० सुवन] मोती। मुक्ता। उ०—अतसी कुसुम कलेवर बूँदै प्रतिबिंबित निरधार। ज्योति प्रकाश सुघन मे खोजत स्वातिसुवन आकार।—सूर (शब्द०)।

स्वाती—संज्ञा स्त्री० [स० स्वाति] दे० 'स्वाति'। उ०—सीय सुखहिं बरनिय केहि भाँती। जनु चातकी पाइ जल स्वाती।—तुलसी (शब्द०)।

स्वाद—संज्ञा पुं० [स०] १ किसी पदार्थ के खाने या पीने से रसनेंद्रिय को होनेवाला अनुभव। जायका। जैसे,—(क) इसका स्वाद खट्टा है या मीठा, यह तुम क्या जानो। (ख) आज भोजन मे बिलकुल स्वाद नहीं है। २ काव्यगत रसानुभूति या आनद। काव्य मे चमत्कार सौंदर्य। जैसे,—उनकी कविता ऐसी सरस और सरल होती है कि सामान्य जन भी उसका स्वाद ले सकते है। ३ मजा। जैसे,—जान पडता है, आपको लडाई झगडे मे बड़ा स्वाद मिलता है।

क्रि० प्र०—लेना।—मिलना।

मुहा०—स्वाद चखाना = किसी को उसके किए हुए अपराध का दड देना। बदला लेना। जैसे,—मैं तुम्हे इसका स्वाद चखाऊँगा।

४ चाह। इच्छा। कामना। उ०—(क) गवमाद रन स्वाद चल्यो घन सरिस नाद करि। लै द्विज आसिरवाद परम अह्लाद हृदय भरि।—गोपाल (शब्द०)। (ख) द्विज अरपहि आसिरवाद पढि। नमत तिन्है अहलाद मढि। नृप लसेउ सुरथ जय स्वाद चढि। करत सिंह सम नाद बढि।—गोपाल (शब्द०)। ५ मीठा रस। (डिं०)।

स्वादक—संज्ञा पुं० [स० स्वाद] १ वह जो भोज्य पदार्थ प्रस्तुत होने पर चखता है। स्वादुविवेकी। उ०—स्वादक चतुर बतावत जाही। सूपकार बहु विरचत ताँही।—रामाश्वमेध (शब्द०)।

विशेष—राजा महाराजाओं की पाकशालाओं मे प्राय ऐसे कर्मचारी होते है जो भोज्य पदार्थ प्रस्तुत होन पर पहले चख लेते हैं कि पदार्थ उत्तम बना है या नहीं। ऐसे ही लोग 'स्वादक' कहलाते हैं।

स्वादन—संज्ञा पुं० [स०] १ चखना। स्वाद लेना। २ रसग्रहण। आनद लेना। ३ मजा लेना। दे० 'स्वाद'।

स्वादनीय—वि० [स०] १ स्वाद लने के योग्य। २ रस लेने के योग्य। मजा लेने के योग्य। ३ जायकेदार। स्वादिष्ठ।

स्वादव—संज्ञा पुं० [स०] वह जिसका स्वाद रुचिकर हो।

स्वादित—वि० [सं०] १ चखा हुआ। रस लिया हुआ। २ स्वादयुक्त। जायकेदार। ३ प्रीत। प्रसन्न।

स्वादित्व—संज्ञा पुं० [स०] स्वाद का भाव। स्वादु।

स्वादिमा—संज्ञा स्त्री० [स० स्वादिमन्] १ मधुरिमा। माधुर्य। २ सुस्वादु होना। स्वादुता [को०]।

स्वादिष्ट—वि० [स० स्वादिष्ट] जायकेदार। स्वादिष्ठ। जैसे,—स्वादिष्ट भोजन।

स्वादिष्ठ—वि० [स०] जो खाने मे बहुत अच्छा जान पडे। जिसका स्वाद अच्छा हो। जायकेदार। सुस्वादु।

स्वादी—वि० [स० स्वादिन्] १ स्वाद चखनेवाला। उ०—बहु सुत मागध वदी जन नृप बचन गुनि हर्षित चले। पुनि वैद्य पौरानिक सभाचातुर विपुल स्वादी भले।—रामाश्वमेध (शब्द०)। २ मजा लेनेवाला। रसिक।

स्वादीयस्—वि० [स०] बहुत अधिक स्वादिष्ठ [को०]।

स्वादीला—वि० [स० स्वाद + हिं० ईला (प्रत्य०)] स्वादयुक्त। स्वादिष्ठ। उ०—घास के स्वादीले ग्रासों करके ''वह राजेश्वर उसकी (नदिनी गाय की) सेवा मे तत्पर हुआ।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)।

स्वादु[1]—संज्ञा पुं० [स०] १ मधुर रस। मीठा रस। मधुरता। २ गुड। ३ जीवक नामक अष्टवर्गीय ओषधि। ४ अगर। अगुरुसार। ५ महुआ। मधूक वृक्ष। ६ चिरौंजी। पियाल। ७ कमला नीबू। ८ काँस। काशतृण। ९ बेर। बदर। १०.

सेंधा नमक। सैंधव लवण। ११ दूध। दुग्ध। १२ मनोहरता। चारुता। सौंदर्य (को०)।

स्वादु२—संज्ञा स्त्री० दाख। द्राक्षा।

स्वादु३—वि० १ मीठा। मधुर। मिष्ट। २ जायकेदार। मजेदार। स्वादिष्ठ। ३ अभीप्सित। इष्ट। मनोज्ञ। सुंदर।

स्वादुकंट—संज्ञा पुं० [सं० स्वादुकण्टक] दे० 'स्वादुकंटक'।

स्वादुकंटक—संज्ञा पुं० [सं० स्वादुकण्टक] १ विकंकत वृक्ष। २ गोखरू। गोक्षुर। ३ जवासा। विकंटक [को०]।

स्वादुकंद—संज्ञा पुं० [सं० स्वादुकन्द] भूमि कुष्मांड। भुईं कुम्हड़ा। २ सफेद पिंडालू। ३ कोंची। केउँआ। केमुक।

स्वादुकंदक—संज्ञा पुं० [सं० स्वादुकन्दक] कोंची। केउँआ। केमुक।

स्वादुकंदा—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वादुकन्दा] विदारी कंद।

स्वादुकर—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल की एक प्रकार की वर्णसंकर जाति जिसका उल्लेख महाभारत में है।

स्वादुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] नागदंती।

स्वादुकाम—वि० [सं०] मीठी वस्तु जिसे प्रिय हो। मधुरप्रिय [को०]।

स्वादुकार—वि० [सं०] स्वादिष्ट करने या बनानेवाला [को०]।

स्वादुकोपातकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] तोरई।

स्वादुखंड—संज्ञा पुं० [सं० स्वादुखण्ड] १ गुड़। २ किसी स्वादिष्ट पदार्थ का खंड या टुकड़ा (को०)।

स्वादुगंध—संज्ञा पुं० [सं० स्वादुगन्ध] लाल सहिंजन। रक्त शोभांजन।

स्वादुगंधच्छदा—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वादुगन्धच्छदा] काली तुलसी। कृष्ण तुलसी।

स्वादुगंधा—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वादुगन्धा] १ भुईं कुम्हड़ा। भूमि कुष्मांड। २ लाल सहिंजन। रक्त शोभांजन।

स्वादुगंधि—संज्ञा पुं० [सं० स्वादुगन्धि] लाल सहिंजन। रक्त-शोभांजन।

स्वादुता—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वादु का भाव या धर्म। २ मधुरता।

स्वादुतिक्त—संज्ञा पुं० [सं०] नीबू फल।

स्वादुतिक्तफल—संज्ञा पुं० [सं०] नीबू का पेड़।

स्वादुधन्वा—संज्ञा पुं० [सं० स्वादुधन्वन्] कामदेव।

स्वादुपटोलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] परवल की लता।

स्वादुपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] परवल की लता।

स्वादुपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दूधी। दुग्धिका।

स्वादुपाक—वि० [सं०] जिसका पाक स्वादु हो। जो पकने या पचने में अच्छा हो [को०]।

स्वादुपाकफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] मकोय। काकमाची।

स्वादुपाका—संज्ञा स्त्री० [सं०] काकमाची। मकोय [को०]।

स्वादुपाकी—वि० [सं० स्वादुपाकिन्] दे० 'स्वादुपाक' [को०]।

स्वादुपिंडा—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वादुपिण्डा] पिंडखजूर। पिंडी खजूर।

स्वादुपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] काली कटसी।

स्वादुपुष्पिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दूधी। दुग्धिका।

स्वादुपुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कटसी का पेड़।

स्वादुफल—संज्ञा पुं० [सं०] १ बेर। बदरीफल। २ धामिन। धन्व वृक्ष। ३ कोई मधुर फल (को०)।

स्वादुफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बेर। बदरी वृक्ष। २ खजूर का पेड़। खजूर वृक्ष। ३ केले का पेड़। कदली वृक्ष। ४ मुनक्का। कपिल द्राक्षा।

स्वादुबीज—संज्ञा पुं० [सं०] पीपल। अश्वत्थ वृक्ष।

स्वादुमज्जा—संज्ञा पुं० [सं० स्वादुमज्जन्] पहाड़ी पीलू। अखरोट।

स्वादुमन्—संज्ञा पुं० [सं०] मीठापन। मिठास। मधुरिमा। २ मीठा पेय या भोज्य पदार्थ (को०)।

स्वादुमस्तका—संज्ञा स्त्री० [सं०] खजूर का पेड़। खर्जूरी वृक्ष।

स्वादुमांसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] काकोली नामक अष्टवर्गीय ओषधि।

स्वादुमाषी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मषवन। माषपर्णी।

स्वादुमुस्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] जल में होनेवाली एक लता [को०]।

स्वादुमूल—संज्ञा पुं० [सं०] गाजर। गाजर।

स्वादुयुक्त—वि० [सं०] मधुरता से पूर्ण [को०]।

स्वादुयोगी—वि० [सं० स्वादुयोगिन्] मीठा। मधुर [को०]।

स्वादुरस—वि० [सं०] स्वादिष्ठ। स्वादयुक्त [को०]।

स्वादुरसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ काकोली। २ मद्य। मदिरा। शराब। ३ दाख। द्राक्षा। ४ सतावर। शतावरी। ५ अमड़ा। आम्रातक फल। ६ मरोड़फली। मूर्वा।

स्वादुल—संज्ञा पुं० [सं०] क्षीर मूर्वा।

स्वादुलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विदारी कंद।

स्वादुलुंगि—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वादुलुङ्गी] १ संतरा। २ मीठा नीबू। स्वादुमालुंग।

स्वादुवारि—संज्ञा पुं० [सं०] १ मीठे जल का सागर। २ वह जिसका जल मधुर या पीने योग्य हो। जैसे, कूप, बावड़ी आदि [को०]।

स्वादुविवेकी—वि० [सं० स्वादुविवेकिन्] भोज्य पदार्थों में स्वाद का विवेक करनेवाला [को०]।

स्वादुशुंठी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वादुशुण्ठी] सफेद कटसी।

स्वादुशुद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] १ शुद्ध और मीठा नमक। समुद्री नमक। २ सेंधा नमक (को०)।

स्वादूद—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्वादुवारि' [को०]।

स्वादूदक—वि० [सं०] जिसका जल मीठा हो। मीठे जलवाला [को०]।

स्वादेशिक—वि० [सं०] स्वदेश का। स्वदेश संबंधी [को०]।

स्वाद्य१—वि० [सं०] १ स्वाद लेने के योग्य। चखने के योग्य। उ०—पदार्थ वास्तव में रोचक और विस्तृत है, यानी पहले ये स्पृश्य और दृश्य है और पीछे घ्रेय, स्वाद्य और पेय।

—चंद्रधर० (शब्द०) । २ सरस और रुचिकर (को०) । ३ जो कसैला और नमकीन हो (को०) ।

स्वाद्य²—संज्ञा पुं० कसैला एवं नमकीन स्वाद । २ रस (को०) ।

स्वाद्वगुरु—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की अगर की लकडी ।

स्वाद्वन्न—संज्ञा पुं० [सं०] मधुर एवं रुचिकर खाद्य पदार्थ (को०) ।

स्वाद्वम्ल—संज्ञा पुं० [सं०] १ अनार का पेड । दाडिम वृक्ष । २ नारगी का पेड । नागरग वृक्ष । ३ कदव वृक्ष ।

स्वाद्वी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दाख । द्राक्षा । २ मुनक्का । कपिल-द्राक्षा । ३ फूट । चिर्भटिका । ४ खजूर का पेड । खर्जूर वृक्ष ।

स्वाधिनपतिका(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्वाधीनपतिका] दे० 'स्वाधीन-पतिका' । उ०—स्वाधिनपतिका, कहत कवि अभिसारिका सुनाम । कही प्रवच्छतिप्रेयसी, आगतपतिका बाम ।—मति० ग्रं०, पृ० २६४ ।

स्वाधिनवलभा(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वाधीनवल्लभा] दे० 'स्वाधीन-वल्लभा' । उ०—अरग अरग इमि सखि सों कहै । मध्या स्वाधिनवलभा इहै ।—नंद० ग्रं०, पृ० १५७ ।

स्वाधिकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपना अधिकार, पद या प्रभुत्व । २ धर्म, कर्तव्य अथवा कार्य (को०) ।

स्वाधिपत्य—संज्ञा पुं० [सं०] अपना आधिपत्य, अधिकार या प्रभुत्व (को०) ।

स्वाधिष्ठान—संज्ञा पुं० [सं०] १ हठयोग मे माने हुए कुडलिनी के ऊपर पडनेवाले छह चक्रो मे से दूसरा चक्र ।

विशेष—इस चक्र का स्थान शिश्न के मूल मे, रग पीला और देवता ब्रह्मा माने गए हैं । इसके दलो की सख्या छह और अक्षर ब से ल तक है ।

२ अपना अधिष्ठान, वासस्थान अथवा नगर (को०) ।

स्वाधीन¹—वि० [सं०] १ जो अपने सिवा और किसी के अधीन न हो । स्वतत्र । आजाद । खुदमुख्तार । २ किसी का बधन न माननेवाला । अपने इच्छानुसार चलनेवाला । मनमाना काम करनेवाला । निरकुश । अवाध्य । जैसे,—(क) वह लडका आजकल स्वाधीन हो गया है, किसी की बात नही सुनता । (ख) उसका पति क्या मरा, वह बिलकुल स्वाधीन हो गई । ३ जो अपने अधीन या वश मे हो । स्ववश (को०) ।

स्वाधीन²—संज्ञा पुं० समर्पण । हवाला । सपुर्द । जैसे,—अत मे लाचार होकर १९ जून को तीसरे पहर अपने को नवाब के स्वाधीन कर दिया ।—द्विवेदी (शब्द०) ।

स्वाधीनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वाधीन होने का भाव । स्वतन्त्रता । आजादी । खुदमुख्तारी । जैसे,—स्वाधीनता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है ।

स्वाधीनपतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसका पति उसके वश मे हो । पति को वशीभूत करनेवाली नायिका । साहित्य मे इसके चार भेद कहे गए है, यथा—मुग्धा, मध्या, प्रौढा और परकीया ।

स्वाधीनभर्तृका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'स्वाधीनपतिका' ।

स्वाधीनवल्लभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'स्वाधीनपतिका' ।

स्वाधीनी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वाधीन + हिं० ई (प्रत्य०)] स्वाधीनता । स्वतन्त्रता । आजादी । उ०—शिल्पकलाओ से जन्मै है, विविध सौख्य सपत्ति प्रथा । धन, वैभव, व्यौपार, बडप्पन, स्वाधीनी, सतोष तथा ।—श्रीधर (शब्द०) ।

स्वाध्याय—संज्ञा पुं० [सं०] १ वेदो की निरतर और नियमपूर्वक आवृत्ति या अभ्यास करना । वेदाध्ययन । २ धर्मग्रथो का नियमपूर्वक अनुशीलन करना । ३ किसी विषय का अनुशीलन । अध्ययन । ४ वेद । ५ अनध्याय के बाद का वह दिन जब स्वाध्याय प्रारभ होता है ।

स्वाध्यायवान्—वि० [सं० स्वाध्यायवत्] १ वेदाध्यायी । वेदा-ध्ययन करनेवाला । २ जो स्वाध्याय कर रहा हो । वेदपाठ या अध्ययन करता हुआ (को०) ।

स्वाध्यायार्थी—संज्ञा पुं० [सं० स्वाध्यायार्थिन्] अध्ययन करते हुए जीविकार्थ अर्थोपार्जन करनेवाला छात्र । वह विद्यार्थी जो पढता हुआ खुद कमाता भी हो (को०) ।

स्वाध्यायी¹—संज्ञा पुं० [सं० स्वाध्यायिन्] १ विभिन्न शास्त्र ग्रथो का अध्ययन करनेवाला व्यक्ति । अध्ययनशील व्यक्ति । २ वह जो वेदाध्यन करता हो । वेदपाठी । ३ दूकानदार । वणिक् । व्यापारी ।

स्वाध्यायी²—वि० वेदपाठ करनेवाला (को०) ।

स्वानद—संज्ञा पुं० [सं० स्वानन्द] आत्मपरक आनद । अपनी मस्ती । आत्मानद (को०) ।

स्वान¹—संज्ञा पुं० [सं०] शब्द । आवाज । घडघडाहट ।

स्वान²—संज्ञा पुं० [सं० श्वान] दे० 'श्वान' । उ०—खर स्वान सुअर सृगाल मुख गन बेष अगनिन को गने । बहु जिनस प्रेत पिसाच जोगि जमात बरनत नहिं बने ।—मानस, १।९३ ।

स्वाना(पु)†—क्रि० स० [सं० √स्वप्, स्वपन, पुं० हिं० सुवाना, सोवाना, हिं० सुलाना] दे० 'सुलाना' । उ०—(क) सुख दै सखीनि बीच दै कै सोहै दयाइ कै खवाइ कछु स्वाइ बस कीनी बरबसु है ।—केशव ग्रं०, भा० १, पृ० १२ । (ख) इहि निसि धाइ सताइ लै स्वेदखेद ते मोहि । कारिह लालिहूँ के किएँ सग न स्वाऊँ तोहि ।—भिखारी० ग्रं०, भा० २, पृ० १५ । (ग) आजु हौ राखोगी स्वाय उन्हे रघुनाथ कृपा निशि मेरे करोगे । मै उठि जाउँगी छोडि कै पास जगाइ कै सेज पै पायँ धरोगे ।—रघुनाथ (शब्द०) ।

स्वानुभव—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपना अनुभव । निजी अनुभूति । अपनी वैयक्तिक अनुभूति । २ अपना ज्ञान । निज की जानकारी (को०) ।

स्वानुभाव—संज्ञा पुं० [सं०] अपने धर्म, गुण, स्वभाव, स्वत्व आदि के प्रति प्रेम (को०) ।

स्वानुभूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'स्वानुभव ।' उ०—सूरदास आदि अष्टछाप कवियो ने प्रेम की इन स्वानुभूति मानसिक

अवस्थाओं के बहुत ही प्रभावशाली चित्र उपस्थित किए हैं। —पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० १०१।

स्वानुरूप—वि०[सं०] १ अपने अनुरूप। अपने सदृश। अपने योग्य २ नैसर्गिक। प्राकृतिक। स्वाभाविक। सहजात [को०]।

स्वाप—संज्ञा पुं०[सं०] १ नीद। निद्रा। २ स्वप्न। ख्वाब। ३ अज्ञान। ४ निस्पदता।

स्वापक—वि०[सं०] नीद लानेवाला। निद्राकारक।

स्वापतेय—संज्ञा पुं०[सं०] १ कौटिल्य के अनुसार स्वकीय संपत्ति। निज की वस्तु। २ धन संपत्ति [को०]।

स्वापद—संज्ञा पुं०[सं०] दे० 'श्वापद' [को०]

स्वापन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र जिससे शत्रु निद्रित किए जाते थे। उ०—विद्याधर अस्त्र नाम नदन जो ऐसो। मोहन स्वापन समन सौम्यकर्षन पुनि तैसो। पद्माकर (शब्द०)। २ नींद लानेवाली औषध। ३ निद्रित करना। सुलाना (को०)।

स्वापन[2]—वि० जिससे नीद आए। नीद लानेवाला। निद्राकारक।

स्वापराध—संज्ञा पुं० [सं०] निज का अपराध अपने प्रति किया हुआ अपराध। निजापराध [को०]।

स्वापव्यसन—संज्ञा पुं०[सं०] १ निद्रालुता। तद्राग्रस्त होना। २ निश्चेष्टता। निष्क्रियता। जाड्य [को०]।

स्वापी—वि० [सं० स्वापिन्] जिससे नीद आए। नीद लानेवाला [को०]।

स्वाप्त—वि०[सं०] १ जो स्वयं प्राप्त किया जाय। २ जो प्रचुरतर हो। बहुत ज्यादा। अत्यधिक। ३ जो पूर्ण विश्वस्त हो। ४ कुशल। चतुर [को०]।

स्वाप्न—वि०[सं०] १ स्वप्न सबंधी। स्वप्न का। स्वप्निल। २ निद्रा या तंद्रा सबधी [को०]।

स्वाप्निक—वि०[सं०स्वाप्न+इक] दे० 'स्वाप्न'।

स्वाब—संज्ञा पुं०[अ०] कपडे या सन की बुहारी या झाड़ू जिससे जहाज के डेक आदि साफ किए जाते हैं। (लश०)।

स्वाभाव—संज्ञा पुं० [सं०] अपना अभाव। अपने अस्तित्व का न होना [को०]।

स्वाभाविक[1]—वि० [सं०] [स्त्री० स्वाभाविकता] १ जो स्वभाव से उत्पन्न हुआ हो। जो आप ही आप हो। २ स्वभावसिद्ध। प्राकृतिक। नैसर्गिक। सहज। कुदरती। जैसे,—(क) जल मे शीतलता होना स्वाभाविक है। (ख) उसका दुष्ट आचरण देखकर उनका क्रुद्ध होना स्वाभाविक था। (ग) उस कवि ने काश्मीर का क्या ही स्वाभाविक वर्णन किया है। ३ जन्मजात (को०)।

स्वाभाविक[2]—संज्ञा पुं०[सं०] बौद्धों का एक संप्रदाय, जो सभी वस्तुओं को प्रकृति के नियमानुसार बनी मानते है [को०]।

स्वाभाविकी—वि०[सं०] स्वभावसिद्ध। प्राकृतिक। जैसे—हे जल! आपमे शीतलता का होना तो सहज बात है, स्वच्छता भी आपमे स्वाभाविकी है। —द्विवेदी (शब्द०)।

स्वाभाविकेतर—वि०[सं०] जो स्वाभाविक से इतर हो। अनैसर्गिक। अप्राकृतिक। कृत्रिम [को०]।

स्वाभाव्य[1]—वि० [सं०] स्वयं उत्पन्न होनेवाला। आप ही आप होनेवाला।

स्वाभाव्य[2]—संज्ञा पुं० १ स्वभावता। स्वभाव का भाव। २ वैयक्तिक गुण या विशेषता (को०)।

स्वाभास—वि० [सं०] अत्यंत तेजोमय या दीप्तिमान् [को०]।

स्वाभिमान—संज्ञा पुं०[सं०] अपनी इज्जत और प्रतिष्ठा का ध्यान। मान अपमान का ध्यान। आत्माभिमान [को०]।

स्वाभिमानी—वि० [सं० स्वाभिमानिन्] [स्त्री० स्वाभिमानिनी] अपने पर अभिमान करनेवाला। आत्माभिमानी।

स्वाभील—वि० [सं०] अति प्रचड। अत्यत भयानक [को०]।

स्वामि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्वामिन, हिं० स्वामी] दे० 'स्वामी'। उ०—सेवक स्वामि सखा सिय पी के। हित निरुपधि सब विधि तुलसी के।—तुलसी (शब्द०)।

स्वामिकाज(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्वामि + कार्य, प्रा०, अप० कज्ज] दे० 'स्वामिकाय'। उ०—स्वामिकाज करिहउँ रन रारी। जस धवलिहउँ भुवन दस चारी।—मानस, २।१९० ।

स्वामिकार्तिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव के पुत्र कार्तिकेय। देव सेनापति। विशेष दे० 'स्कंद'। उ०—धरे चाप इषु हाथ स्वामिकार्तिक बल मोहन।—गोपाल (शब्द०)। २ छह आघात और दस मात्राओं का ताल जिसका बोल इस प्रकार है—

\+ १ १ १ १ १ १

धा धि धा गे ना ग नि न तिरकिट ति ना तिना निना के ता धिना।

स्वामिकार्य—संज्ञा पुं० [सं०] राजा या स्वामी का काम [को०]।

स्वामिकार्यार्थी—वि० [सं० स्वामिकार्यार्थिन्] स्वामी के कार्य की सफलता चाहनेवाला [को०]।

स्वामिकुमार—संज्ञा पुं० [सं०] शिव के पुत्र कार्तिकेय का एक नाम। स्वामिकार्तिक।

स्वामिगुण—संज्ञा पुं० [सं०] स्वामी के सद्गुण। राजा के विशिष्ट गुण [को०]।

स्वामिजघी—संज्ञा पुं०[सं० स्वामिजङ्घिन्] परशुराम का नाम।

स्वामिजनक—संज्ञा पुं० [सं०] स्वामी अर्थात् पति का जनक। श्वसुर।

स्वामिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'स्वामित्व'।

स्वामित्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वामी या राजा होने का भाव। प्रभुता। प्रभुत्व। २ अधिकारी होने का भाव। मालिकपन।

स्वामिन(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० स्वामिनी] दे० 'स्वामिनी'।

स्वामिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मालिकिन। स्वत्वाधिकारिणी। २ घर की मालिकिन। गृहिणी। ३ अपने स्वामी या प्रभु की पत्नी। ४ श्रीराधिका। (वल्लभ संप्रदाय)। उ०—सहित स्वामिनी अंतरजामी।—गोपाल (शब्द०)।

स्वामिपाल—संज्ञा पुं० [सं०] पशुओं का मालिक और रक्षक [को०]।

स्वामिभक्त—वि० [सं०] स्वामी के प्रति प्रेम और भक्ति रखनेवाला। कर्तव्यपालक।

स्वामिभक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वामी के प्रति अनुराग एवं भक्ति। मालिक के प्रति वफादारी।

स्वामिभट्टारक—संज्ञा पुं० [सं०] श्रेष्ठ स्वामी [को०]।

स्वामिभाव—संज्ञा पुं० [सं०] प्रभुत्व। स्वामिता [को०]।

स्वामिमूल—वि० [सं०] १ स्वामी से उद्भूत या प्राप्त। २ जो स्वामी या पति पर निर्भर हो [को०]।

स्वामिवात्सल्य—संज्ञा पुं० [सं०] स्वामी या पति के प्रति अनुरक्ति [को०]।

स्वामिसद्भाव—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वामी या मालिक की सत्ता या अस्तित्व। २ स्वामी या मालिक का सद्गुण या अच्छाई [को०]।

स्वामिसेवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्वामी की सेवा। मालिक का आदर। २ पति का आदर समान [को०]।

स्वामी¹—संज्ञा पुं० [सं० स्वामिन्] [संज्ञा स्त्री० स्वामिनी] १ वह जिसके आश्रय में जीवन निर्वाह होता हो। वह जो जीविका चलाता हो। मालिक। प्रभु। अन्नदाता। जैसे,—वे मेरे स्वामी हैं। मैं उनका नमक खाता हूँ। उनकी आज्ञा का पालन करना मेरा परम धर्म है। २ घर का कर्ताधर्ता। घर का प्रधान पुरुष। जैसे—वे ही इस घर के स्वामी हैं, उनकी आज्ञा के बिना कोई काम नहीं हो सकता। ३. स्वत्वाधिकारी। मालिक। जैसे,—इस नाट्यशाला के स्वामी एक बंगाली सज्जन हैं। ४ पति। शौहर। ५ ईश्वर। भगवान्। ६ राजा। नरपति। ७ कार्तिकेय। ८ साधु, सन्यासी और धर्माचार्यों की उपाधि। जैसे,—स्वामी शंकराचार्य स्वामी दयानंद, तैलंग स्वामी, श्रीधर स्वामी। ९ सेना का नायक। १० शिव। ११ विष्णु। १२ गरुड। १३ वात्स्यायन मुनि का एक नाम। १४ गत उत्सर्पिणी के ११वें अर्हत् का नाम। १५ गुरु। आचार्य (को०)। १६ देवता का विग्रह। देवमूर्ति (को०)। १७ मंदिर। देवालय (को०)।

स्वामी²—वि० जिसे स्वत्वाधिकार हो। स्वत्वप्राप्त [को०]।

स्वाम्नाय—वि० [सं०] जो परंपरा प्राप्त हो। परंपराप्राप्त। परंपरागत [को०]।

स्वाम्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वामी होने का भाव। स्वामित्व। प्रभुत्व। प्रभुता। मालिकपन। २ चल और अचल संपत्ति पर अधिकार या हक। स्वत्व (को०)। ३ राज्य। शासन (को०)। ४ (आत्मा और शरीर की) सबलता या दृढ़ स्थिति। स्वास्थ्य (को०)।

यौ०—स्वाम्यकारण = स्वाम्य या प्रभुत्व का कारण।

स्वाम्युपकारक—संज्ञा पुं० [सं०] घोड़ा। अश्व।

स्वायंभुव¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुराणानुसार चौदह मनुओं में से पहले मनु जो स्वयंभू ब्रह्मा से उत्पन्न माने जाते हैं।

विशेष—श्रीमद्भागवत में लिखा है कि ब्रह्मा ने इस संसार की सृष्टि करके अपने दाहिने अंग से स्वायंभुव मनु की और बाएँ अंग से शतरूपा नाम की स्त्री उत्पन्न की थी, और दोनों में पति-पत्नी का संबंध स्थापित किया था। इनसे प्रियव्रत और उत्तानपाद नाम के दो पुत्र तथा आकूति, देवहूति और प्रसूति नाम की तीन कन्याएँ उत्पन्न हुई थीं। इन्हीं से आगे और सृष्टि चली थी।

२ अत्रि ऋषि (को०)। ३ नारद मुनि (को०)। ४ मरीचि ऋषि (को०)। ५ एक शैव तंत्र का नाम (को०)।

स्वायंभुव²—वि० १ स्वयंभु संबंधी। ब्रह्मा संबंधी। २ स्वायंभुव मनु से संबद्ध [को०]।

स्वायंभुवी—संज्ञा वि० [सं० स्वायम्भुवी] ब्राह्मी।

स्वायंभू—संज्ञा पुं० [सं० स्वायम्भुव] दे० 'स्वायंभुव'¹। उ०—स्वायंभू मनु अरु सतरूपा। जिन्ह तें भै नर सृष्टि अनूपा।—मानस, १।१४२।

स्वायत्त—वि० [सं०] जो अपने आयत्त या अधीन हो। जिसपर अपना ही अधिकार हो।

स्वायत्त शासन—संज्ञा पुं० [पुं०] १ वह शासन या हुकूमत जो अपने आयत्त या अधिकार में हो। स्थानिक स्वराज्य। जैसे,—म्युनिसिपैलिटी और जिला बोर्ड स्वायत्तशासन या स्थानिक स्वशासन के अंतर्गत है। २ लोक प्रतिनिधियों के माध्यम से अपने देश का शासन परिचालित करने का अधिकार (अं० आटोनामी)।

स्वायत्तशासी—वि० [सं० स्वायत्तशासिन्] जिसे अपना शासन स्वयं करने का अधिकार प्राप्त हो। स्वायत्तशासन का अधिकारप्राप्त। जैसे, राज्य, देश आदि।

स्वार¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ घोड़े के घर्राटे का शब्द। २ बादल की गड़गड़ाहट। मेघध्वनि। ३ ध्वनि। स्वर (को०)। ४ स्वरित स्वर से समाप्त होनेवाला एक साम (को०)।

स्वार²—वि० १ स्वर संबंधी। २ स्वरित ध्वनि संबंधी (को०)।

स्वार(पु)³—संज्ञा पुं० [हिं० सवार] घुड़सवार। असवार। सवार।

स्वारक्ष्य—वि० [सं०] जिसकी सुरक्षा सरलता से की जा सके [को०]।

स्वारथ(पु)¹—संज्ञा पुं० [सं० स्वार्थ] दे० 'स्वार्थ'। उ०—सुर नर मुनि सबके यह रीती। स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती।—मानस, ४।१२।

यौ०—स्वारथजड(पु) = स्वार्थसाधन ही एकमात्र लक्ष्य होने के कारण जो जड अर्थात् बुद्धिहीन हो गया हो। उ०—बोली सुर स्वारथजड जानी।—मानस, २।२९५। स्वारथविवश(पु) = जो अपने मतलब से विवश हो। जो स्वार्थ के लिये बेबस हो। उ०—स्वारथबिबस बिकल तुम्ह होहू।—मानस, २।२१९। स्वारथसाधक(पु) = दे० 'स्वार्थसाधक'। उ०—स्वारथसाधक कुटिल तुम्ह सदा कपट ब्योहारु।—तुलसी (शब्द०)।

स्वारथ¹—वि० [सं० सार्थ] सफल। सिद्ध। फलीभूत। सार्थक। उ०—सेवा सबै भई अब स्वारथ।—सूर (शब्द०)।

स्वारथी@—वि० [हिं० स्वार्थी] दे० 'स्वार्थी'। उ०—आए देव सदा स्वारथी। वचन कहहिं जनु परमारथी।—तुलसी (शब्द०)।

स्वारब्ध—दे० [सं०] स्वय प्रारभ किया हुआ [को०]।

स्वारसिक—वि० [स०] १ अतर्वर्ती रस या माधुर्य से ओतप्रोत। स्वारस्ययुक्त (काव्य आदि) २ यादृच्छिक। अयत्नकृत। स्वाभाविक [को०]।

स्वारस्य—सज्ञा पुं० [सं०] १ सरसता। रसीलापन। लालित्य। उ०—कथाओ का स्वारस्य कम हो गया है।—द्विवेदी (शब्द०)। २ स्वाभाविकता। ३ स्वाभाविक रसमयता या मिठास (को०)।

स्वाराज्—सज्ञा पुं० [सं०] इद्र का एक नाम [को०]।

स्वाराजिस्ट—सज्ञा पु० [हिं० स्वाराजी] दे० 'स्वाराजी'।

स्वाराजी—सज्ञा पुं० [सं० स्वराज्य] वह मनुष्य जो 'स्वराज्य' नामक राजनीतिक पक्ष या दल का हो। स्वराज्यप्राप्ति के लिये आदोलन करनेवाले राजनीतिक दल का मनुष्य।

स्वाराज्य—सज्ञा पुं० [स०] १ वह शासनप्रबध जिसका सचालनसूत्र अपने ही देश के लोगो के हाथो मे हो। वह शासन या राज्य जिसपर किसी बाहरी शक्ति का नियत्रण न हो। स्वाधीन राज्य। २ स्वर्ग का राज्य। स्वर्ग लोक। ३ स्व मे प्रकाशमान ब्रह्म से तादात्म्य भाव। ब्रह्मत्व (को०)। ४ इद्र का एक नाम (को०)।

स्वाराट्—सज्ञा पुं० [सं० स्वाराज्] (स्वर्ग के राजा) इद्र।

स्वाराधित—वि० [सं०] जिसकी अच्छी तरह सेवा की गई हो। जो भली भाँति सेवित हो [को०]।

स्वारी@†—सज्ञा स्त्री० [हिं० सवारी] दे० 'सवारी'।

स्वारूढ—वि० [स०] १ जो सवारी करने या चढने मे प्रवीण हो। २ अच्छी तरह सवारी किया हुआ (अश्व) [को०]।

स्वरोचिष, स्वारोचिस्—सज्ञा पुं० [सं०] (स्वरोचिष के पुत्र) दूसरे मनु का नाम।

विशेष—मार्कंडेयपुराण मे इनका नाम द्युतिमान कहा गया है, श्रीमद्भागवत के अनुसार ये अग्नि के पुत्र हैं। विशेष दे० 'मनु'।

स्वार्जित—वि० [स०] जो स्वय अर्जित किया गया हो। खुद कमाया हुआ। स्वयमार्जित [को०]।

स्वार्थ¹—सज्ञा पुं० [स०] १ अपना उद्देश्य। अपना मतलब। अपना प्रयोजन। जैसे,—वह ऊपर से उनका मित्र बनकर भीतर ही भीतर स्वार्थ साधन कर रहा है। २ अपना लाभ। अपनी भलाई। अपना हित। जैसे,—(क) इसमे उसका स्वार्थ है, इसी से वह इतनी दौडधूप कर रहा है। (ख) वह अपने स्वार्थ के लिये जो चाहे सो कर सकता है। (ग) वे जिस काम मे अपने स्वार्थ की हानि देखते हैं, उसमे कभी नही पडते।

मुहा०—(किसी बात मे) स्वार्थ लेना = दिलचस्पी लेना। अनुराग रखना। जैसे,—राजकीय बातो मे स्वार्थ लेनेवाले जो लोग योरप मे यह समझते हैं कि राजसत्ता की हद्द होनी चाहिए, वे बहुत थोडे हैं।—द्विवेदी (शब्द०)।

विशेष—यह मुहा० अँगरेजी मुहा० का अविकल अनुवाद है, अत प्रशस्त नही है।

३ अपना धन। ४ शब्द का अपना अर्थ। अभिधार्थ। वाच्यार्थ (को०)।

स्वार्थ²—वि० १. अपने ही स्वार्थ मे रुचि रखनेवाला। स्वार्थपरायण। २ अपना अर्थ रखनेवाला। वाच्यार्थ मे युक्त। ३ जिसका कोई निजी मतलब या प्रयोजन हो। ४ वहु अर्थ या शब्दयुक्त [को०]।

स्वार्थ³—वि० [स० सार्थक] १ सार्थक। सफल। जैसे,—आपका दर्शन पाय जन्म स्वार्थ किया।—लल्लू (शब्द०)।

स्वार्थता—सज्ञा स्त्री० [सं०] स्वार्थ का भाव या धर्म। खुदगर्जी। उ०—वह तुम्हारी मूर्खता, स्वार्थता और निर्बुद्धिता का प्रभाव है।—सत्यार्थप्रकाश (शब्द०)।

स्वार्थत्याग—सज्ञा पुं० [स०] (दूसरे के लिये कर्तव्यबुद्धि मे) अपने स्वार्थ या हित को निछावर करना। किसी भले काम के लिये अपने हित या लाभ का विचार छोड़ना। जैसे,—देशबधु दास ने देश के लिये बडा भारी स्वार्थत्याग किया कि २॥ लाख वार्षिक आय की बैरिस्टरी छोड दी।

स्वार्थत्यागी—वि० [स० स्वार्थत्यागिन्] जो (दूसरे के लिये कर्तव्यबुद्धि से) अपने स्वार्थ या हित को निछावर कर दे। दूसरे के भले के लिये अपने हित या लाभ का विचार न रखनेवाला। जैसे,—इस समय देश मे स्वार्थत्यागी नेताओ की आवश्यकता है।

स्वार्थपडित—वि० [सं० स्वार्थपण्डित] १ अपना मतलब साधने मे चतुर। २ बडा भारी स्वार्थी या खुदगरज।

स्वार्थपर—वि० [स०] जो केवल अपना ही स्वार्थ या मतलब देखे। अपना स्वार्थ या मतलब साधनेवाला। स्वार्थी। खुदगरज।

स्वार्थपरता—सज्ञा स्त्री० [स०] स्वार्थपर होने का भाव। खुदगरजी।

स्वार्थपरायण—वि० [सं०] स्वार्थपर। स्वार्थी। खुदगरज।

स्वार्थपरायणता—सज्ञा स्त्री० [सं०] स्वार्थपरायण होने का भाव। स्वार्थपरता। खुदगरजी।

स्वार्थप्रयत्न—सज्ञा पुं० [स०] अपने मतलब की सिद्धि के लिये की जानेवाली चेष्टा। अपने लाभ की योजना [को०]।

स्वार्थभाक्—वि० [सं०] अपना ही कामकाज देखनेवाला। स्वार्थी [को०]।

स्वार्थभ्रश—सज्ञा पुं० [सं०] अपना मतलब सिद्ध न होना।

स्वार्थभ्रशी—वि० [सं० स्वार्थभ्रशिन्] जो अपनी कार्यसिद्धि या हित के लिये घातक हो। जिससे स्वार्थसिद्धि मे बाधा हो [को०]।

स्वार्थलिप्सा—सज्ञा पुं० [सं०] स्वार्थ की कामना। अपने कार्य या प्रयोजन की सिद्धि की तीव्र आकाक्षा।

स्वार्थलिप्सु—वि० [सं०] जो अपने मतलब की सिद्धि के लिये लालायित हो।

स्वार्थविघात—सज्ञा पुं० [सं०] स्वार्थ का सिद्ध न होना। अपना मतलब न निकल पाना। अपने हित की हानि होना [को०]।

स्वार्थसपादन—सज्ञा पुं० [स० स्वार्थसम्पादन] अपना मतलब साधना। अपना स्वार्थसाधन करना।

स्वार्थसाधक—वि० [सं०] अपना मतलब साधनेवाला। अपना काम निकालनेवाला। खुदगरज।

स्वार्थसाधन—संज्ञा पुं० [सं०] अपना मतलब साधना। अपना प्रयोजन सिद्ध करना। अपना काम निकालना।

यौ०—स्वार्थसाधन तत्पर=अपना मतलब साधने मे लगा हुआ।

स्वार्थसिद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपना मतलब निकल जाना। अपने प्रयोजन की पूर्ति होना (को०)।

स्वार्थहानि—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपना मतलब न निकल पाना। अपना स्वार्थ सिद्ध न होना।

स्वार्थांध—वि० [सं० स्वार्थान्ध] जो अपने स्वार्थ के वश अंधा हो जाता हो। अपने हित या लाभ के सामने और किसी बात का विचार न करनेवाला।

स्वार्थाभिप्रयात—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार वह व्यक्ति जिसे अपना अर्थ साधने के लिये कोई दूसरा लाया हो। आवर्दा।

स्वार्थिक—वि० [सं०] १. अभिधेय अर्थ से युक्त। वाच्यार्थ से युक्त। २ स्वार्थ संबंधी। स्वार्थयुक्त। ३ अपने अर्थ या धन द्वारा किया हुआ (को०)। ४ व्याकरण मे एक प्रत्यय।

स्वार्थी—वि० [सं० स्वार्थिन्] अपना ही मतलब देखनेवाला। मतलबी। खुदगरज।

स्वार्थोपपत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वार्थ की उपपत्ति अर्थात् सिद्धि। मतलब सिद्ध होना (को०)।

स्वाल(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सवाल] दे० 'सवाल'। उ०—नाथ कह्यो वकील करि दीजै। ज्वाव स्वाल तेहि मुख नृप कीजै।—रघुराज (शब्द०)।

स्वालक्षण—वि० [सं०] जो सरलता से ज्ञात या विदित हो।

स्वालक्षण्य—संज्ञा पुं० [सं०] स्वाभाविक प्रवृत्ति। वृत्ति विशेषता (को०)।

स्वालक्ष्य—वि० [सं०] दे० 'स्वालक्षण'।

स्वाल्प¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० स्वाल्पी] १ कम। थोडा। कुछ। २ छोटा। लघु। अल्प।

स्वाल्प²—संज्ञा पुं० १ छोटापन। लघुता। अल्पता। २ सख्यागत न्यूनता (को०)।

स्वावना(पु)—क्रि० [सं० √स्वप्, हिं० सुलाना] दे० 'सुलाना'। उ०—हँसि हँसि स्वावत हौ छाँह नही छ्वावत हौ, जागि जागि स्वावत हौ आपै हू तें आन जू।—घनानंद, पृ० ११५।

स्वावमान—संज्ञा पुं० [सं०] अपना अपमान।

स्वावमानन—संज्ञा पुं० [सं०] अपने प्रति ग्लानि। आत्मग्लानि। आत्मभर्त्सना (को०)।

स्वावमानना—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'स्वावमानन'।

स्वावलंब—संज्ञा पुं० [सं० स्वावलम्ब] दे० 'स्वावलंबन'। उ०—स्वावलंब की एक झलक पर न्योछावर कुबेर का कोष।—पंचवटी, पृ० १०।

स्वावलंबन—संज्ञा पुं० [सं० स्वावलम्बन] अपना सहारा लेना। अपना भरोसा करना। अपने आधार पर ही कार्य करना।

स्वावलंबी—वि० [सं० स्वावलम्बिन्] जो अपना ही भरोसा करे। अपना ही सहारा लेनेवाला। आत्मनिर्भर।

स्वावश्य—संज्ञा पुं० [सं०] आत्म अवधारण। आत्मवशता (को०)।

स्वाशित—वि० [सं०] जो भली भाँति संतुष्ट एवं तृप्त किया गया हो। सम्यक् संतुष्ट (को०)।

स्वाशु—वि० [सं०] अत्यंत सत्वर या गतिमान् (को०)।

स्वाश्रय¹—संज्ञा पुं० [सं०] अपना आश्रय। अपना ही आसरा।

स्वाश्रय²—वि० विचारणीय विषय से संबंध रखनेवाला (को०)।

स्वाश्रयी—वि० [सं० स्वाश्रयिन्] अपने भरोसे रहनेवाला।

स्वाश्रित—वि० [सं०] दे० 'स्वावलंबी'।

स्वास(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्वास] साँस। श्वास। उ०—जाकी सहज स्वास श्रुति चारी। सो हरि पढ यह कौतुक भारी।—मानस, १।२०४।

स्वासन—संज्ञा पुं० [सं०] सुंदर आसन। उत्तम पीठ। बैठने का अच्छा आसन (को०)।

स्वासनस्थ—वि० [सं०] १ सुंदर आसन या पीठ पर बैठा हुआ। २ किसी को उत्तम आसन प्रदान करनेवाला। जो बैठने के लिये श्रेष्ठ आसन देता हो (को०)।

स्वासा(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वास] साँस। श्वास। उ०—हुक्का सौं कहु कौन पै जात निबाहौ साथ। जाकी स्वासा रहत है लगी स्वास के साथ।—रसनिधि (शब्द०)।

स्वासीन—वि० [सं०] जो सुखपूर्वक बैठा हो। सम्यग् आसीन। आराम से बैठा हुआ (को०)।

स्वास्तर—संज्ञा पुं० [सं०] शय्या या आस्तरण के लिये अच्छा तृण या पुआल आदि (को०)।

स्वास्थ्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ नीरोग या स्वस्थ होने की अवस्था। नीरोगता। आरोग्य। तंदुरुस्ती। जैसे,—उनका स्वास्थ्य आज कल अच्छा नही है। २ धृतिमत्ता। धैर्यशालिता। निरुद्विग्नता (को०)। ३ सुखद होने का भाव। सुखप्रदायकता। सुखदता (को०)। ४ उत्साह। सुख। उल्लास (को०)।

स्वास्थ्यकर—वि० [सं०] स्वस्थ करनेवाला। तंदुरुस्त करनेवाला। आरोग्यवर्धक। जैसे,—देवघर बडा स्वास्थ्यकर स्थान है।

स्वास्थ्यदायक—वि० [सं०] दे० 'स्वास्थ्यकर'।

स्वास्थ्यनाश—संज्ञा पुं० [सं०] स्वास्थ्य का नष्ट होना। तंदुरुस्ती खराब हो जाना।

स्वास्थ्यप्रद—वि० [सं०] दे० 'स्वास्थ्यकर'।

स्वास्थ्यभंग—संज्ञा पुं० [सं० स्वास्थ्यभङ्ग] दे० 'स्वास्थ्यनाश'।

स्वास्थ्यरक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वस्थता की रक्षा करना। तंदुरुस्ती बनाए रखना।

स्वास्थ्यविज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] स्वस्थ रहने के नियम, विधि आदि का बोधक शास्त्र। स्वास्थ्य संबंधी सिद्धांत (को०)।

स्वास्थ्यविभाग—संज्ञा पुं० [सं०] लोगों की स्वास्थ्यरक्षा की व्यवस्था करनेवाला राज्य या स्वायत्तशासन प्राप्त क्षेत्र का विभाग। (अं० हेल्थ डिपार्टमेंट।)

स्वास्थ्यहानि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'स्वास्थ्यनाश'।

स्वाहा¹—अव्य० [सं०] एक शब्द या मंत्र जिसका प्रयोग देवताओं को हवि देने के समय किया जाता है। जैसे,—इंद्राय स्वाहा।

मुहा०—स्वाहा करना = नष्ट करना। फूँक डालना। जैसे,—उसने बाप दादे की सारी संपत्ति दो ही बरस में स्वाहा कर डाली। स्वाहा होना = नष्ट होना। बरबाद होना। जैसे,—उसका सारा धन मामले मुकदमे में स्वाहा हो गया।

स्वाहा²—संज्ञा स्त्री० १ अग्नि की पत्नी का नाम। २ सभी देवताओं को बिना किसी विचार के दी जानेवाली आहुति (को०)।

स्वाहाकरण—संज्ञा पुं० [सं०] स्वाहा शब्द का उच्चारण करते हुए अग्नि में हवि छोड़ना (को०)।

स्वाहाकार—संज्ञा पुं० [सं०] हवन में स्वाहा शब्द का उच्चारण करना। स्वाहाकरण (को०)।

स्वाहाकृत्—वि० [सं०] यज्ञ करनेवाला। यज्ञकर्ता।

स्वाहाकृत—वि० [सं०] स्वाहा शब्द के साथ उपकल्पित, विनियोजित या प्रदत्त (को०)।

स्वाहाकृति, स्वाहाकृती—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वाहा शब्द के साथ संस्कार या उत्सर्ग। स्वाहाकरण।

स्वाहाप्रसरण—संज्ञा पुं० [सं० स्वाहा + प्रसर] देवता। (डिं०)।

स्वाहापति—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि।

स्वाहाप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि।

स्वाहाभुक्—संज्ञा पुं० [स्वाहाभुज्] देवता।

स्वाहार¹—वि० [सं०] सरलता से आहृत। सुगमता से आनीत (को०)।

स्वाहार²—संज्ञा पुं० सुंदर आहार। अच्छा भोज्य पदार्थ (को०)।

स्वाहार्ह—वि० [सं०] स्वाहा के योग्य। हवि पाने के योग्य।

स्वाहावन—संज्ञा पुं० [सं०] एक वन का नाम (को०)।

स्वाहावल्लभ—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि।

स्वाहाशन—संज्ञा पुं० [सं०] देवता।

स्वाहिली—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ अफ्रीका महाद्वीप में बोली जानेवाली एक भाषा। स्वाहिलियों की भाषा। २ अफ्रीका की एक जाति।—भोज० भा० सा०, पृ० ३।

स्वाहेय—संज्ञा पुं० [सं०] कार्तिकेय का एक नाम।

स्विच—संज्ञा स्त्री० [अं०] बिजली का वह बटन या खटका जिसे दबाकर प्रकाश, मशीन आदि चालू और बंद करते हैं। उ०—शांति ने स्विच दबाकर बत्ती जला दी।—सन्यासी, पृ० ४१४।

स्विदित—वि० [सं०] १ प्रस्वेद से युक्त। पसीने से तरबतर। २ द्रवीभूत। पसीजा हुआ। पिघला हुआ (को०)।

स्विध्य—वि० [सं०] [वि० स्त्री० स्विध्या] सूखी अच्छी लकड़ी या समिधा संबंधी। सूखी और अच्छी लकड़ी का (को०)।

स्विन्न—वि० [सं०] १ पसीने से युक्त। स्वेदविशिष्ट। २ सीझा हुआ। उबला हुआ। (जैसे अन्नादि)। ३. तरबतर। सिक्त (को०)।

स्विन्नांगुलि—वि० [सं० स्विन्न+अंगुलि] जिसकी उँगलियाँ पसीने से तर या गीली हों (को०)।

स्विषु—वि० [सं०] जिसके पास उत्तम शर हों। जो तीर, धनुर्धारी पर निशाना साधता हो (को०)।

स्विष्ट—वि० [सं०] १ भली भाँति यज्ञ से पूजित। २ सत्कृत। सम्मानित। पूज्य (को०)।

स्विष्टकृत्—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का होम।

स्विष्टि¹—वि० [सं०] अच्छी तरह यज्ञ करनेवाला।

स्विष्टि²—संज्ञा स्त्री० सफल। उत्तम रीति से किया हुआ या सफल यज्ञ (को०)।

स्वीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपना करना। अपनाना। अंगीकार करना। कबूल करना। २ पत्नी के रूप में ग्रहण करना। विवाह करना। ३ मानना। स्वीकार करना। मंजूर करना। ४ वादा करना। प्रतिज्ञा करना।

स्वीकरणीय—वि० [सं०] स्वीकार करने के योग्य। मानने के योग्य।

स्वीकर्तव्य—वि० [सं०] स्वीकार करने के योग्य। मानने के योग्य।

स्वीकर्ता—वि० [सं० स्वीकर्तृ] स्वीकार करनेवाला। मंजूर करनेवाला।

स्वीकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपनाने की क्रिया। अंगीकार। कबूल। मंजूर। २ लेना। ग्रहण। ३ भार्या रूप से ग्रहण करना। परिग्रह। ४ प्रतिज्ञा। वादा। इकरार। कौल।

स्वीकारग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] बल प्रयोग। जोर। बलपूर्वक ले लेना (को०)।

स्वीकारना—क्रि० स० [सं० स्वीकार + हिं० ना (प्रत्य०)] ग्रहण करना। स्वीकार करना।

स्वीकारपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] लिखित स्वीकारोक्ति अथवा अपनी संपत्ति का विनियोगपत्र।

स्वीकाररहित—वि० [सं०] जिसका स्वीकार न हुआ हो। जो स्वीकार न किया गया हो (को०)।

स्वीकारांत—वि० [सं० स्वीकारांत] जिसका समापन स्वीकार के साथ हो। स्वीकृतियुक्त (को०)।

स्वीकारात्मक—वि० [सं०] स्वीकृतियुक्त। स्वीकृतिपरक।

स्वीकारोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कथन या बयान जिसमें अपना अपराध स्वीकार किया जाय। अपराध की स्वीकृति। इकबाले जुर्म। जैसे,—अभियुक्तों में से दो ने मजिस्ट्रेट के सामने स्वीकारोक्ति की।

स्वीकार्य—वि० [सं०] स्वीकार करने के योग्य। मानने के योग्य।

स्वीकृच्छ्र—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक व्रत जिसमें तीन तीन दिन क्रमशः गोमूत्र, गोबर तथा जौ की लपसी खाकर रहते हैं।

स्वीकृत—वि० [सं०] १ स्वीकार किया हुआ। कबूल किया हुआ। माना हुआ। अंगीकृत। मंजूर। २. प्रतिज्ञात। वचन दिया हुआ (को०)।

स्वीकृति—वि० [सं०] १ स्वीकार का भाव। मंजूरी। समति। रजामंदी। जैसे,—(क) वायसराय ने उस बिल पर अपनी स्वीकृति दे दी। (ख) उनकी स्वीकृति से यह नियुक्ति हुई है। २ ग्रहण करना। अपनाना। दे० 'स्वीकरण'।

क्रि० प्र०—देना।—माँगना। मिलना।—लेना।

स्वीकृतिपरक—वि० [सं०] जिससे स्वीकृति सूचित हो। स्वीकारात्मक।

स्वीकृतियुक्त—वि० [सं०] जिससे किसी विषय या विचार पर किसी का स्वीकार सूचित हो। किसी के स्वीकार या समति से युक्त।

स्वीट—वि० [अं०] १ मीठा। मधुर। स्वादु। २ चारु। ललित। मनोज्ञ। ३ मनोरम। मनोहर। रुचिकर।

स्वीडिश[1]—संज्ञा स्त्री० [अं०] स्वीडेन देश की भाषा।

स्वीडिश[2]—वि० स्वीडेन का।

स्वीय[1]—वि० [सं०] अपना। निज का।

स्वीय[2]—संज्ञा पुं० अपने आदमी। स्वजन। आत्मीय। संबंधी। नातेरिश्तेदार।

स्वीया—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपने ही पति मे अनुराग रखनेवाली स्त्री। विशेष दे० 'स्वकीया'।

स्वीयाक्षर—संज्ञा पुं० [सं०] अपने हाथ के अक्षर। दस्तखत। हस्ताक्षर [को०]।

स्वे(पु)—वि० [हिं० स्व] दे० 'स्व'। उ०—जहँ अभेद करि दुहुन सो करत और स्वे काम। भनि भूषन सब कहत हैं तासु नाम परिनाम।—भूषण (शब्द०)।

स्वेच्छा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपनी इच्छा। अपनी मर्जी। जैसे,—वे सब काम स्वेच्छा से करते है।

स्वेच्छाकृत—वि० [सं०] जो अपनी इच्छा से किया गया हो।

स्वेच्छाचार—संज्ञा पुं० [सं०] मनमाना काम करना। जो जी मे आवे वही करना। यथेच्छाचार।

स्वेच्छाचारिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वेच्छाचार का भाव या धर्म। निरंकुशता। उच्छृंखलता।

स्वेच्छाचारी—वि० [सं० स्वेच्छाचारिन्] अपने इच्छानुसार चलनेवाला। मनमाना काम करनेवाला। निरंकुश। अबाध्य। जैसे,—वहाँ के पुलिस कर्मचारी बडे स्वेच्छाचारी हे।

स्वेच्छादत्त - वि० [सं०] जो अपनी इच्छा से किसी को दिया गया हो।

स्वेच्छापूर्वक—वि० [सं०] अपनी इच्छा के अनुकूल या माफिक। जैसे,—वे सब काम स्वेच्छापूर्वक करते हैं।

स्वेच्छाप्रेरित—वि० [सं०] अपनी आकाक्षा से कृत।

स्वेच्छामरण—संज्ञा पुं० [सं०] अपने इच्छानुसार मरण या मृत्यु।

स्वेच्छामृत्यु[1]—संज्ञा पुं० [सं०] भीष्म पितामह, जो अपने इच्छानुसार मरे थे।

स्वेच्छामृत्यु[2]—वि० अपने इच्छानुसार मरनेवाला।

स्वेच्छामृत्यु[3]—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपनी इच्छा से मरण। स्वेच्छामरण [को०]।

स्वेच्छासेवक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० स्वच्छासेविका] वह जो बिना किसी पुरस्कार या वेतन के किसी कार्य मे अपनी इच्छा से योग दे। स्वयसेवक।

स्वेच्छासैनिक—संज्ञा पुं० [सं०] वह मनुष्य जो बिना वेतन के अपनी इच्छा से फौज मे सिपाही या अफसर का काम करे। वालंटियर वलंटियर।

विशेष—स्वतंत्रताप्राप्ति के पूर्व हिंदुस्तान मे स्वेच्छासैनिक या वालंटियर अधिकतर यूरोपियन और यूरेशियन होते रहे है। इनमे संकट काल मे बंदरो, रेलो, छावनियो और नगरो की रक्षा करने का काम लिया जाता था।

स्वेच्छोपहार—संज्ञा पुं० [सं०] अपनी इच्छा से भेंट की हुई वस्तु या उपहार।

स्वेटर—संज्ञा पुं० [अं०] ऊन की बुनी हुई बनियान, जाकिट या फतुही। उ०—रोओ मत। यह देखो हम तुम्हारे लिये स्वेटर बुन रही है।—सन्यासी, पृ० २४।

स्वेत(पु)[1] वि० [सं० श्वेत] दे० 'श्वेत'।

स्वेत(पु)[2]—वि० [सं० स्वेद] प्रस्वेद। पसीना। जैसे,—स्वेतरज = स्वेदज।—गोरख०, पृ० २०५।

स्वेतरगी—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वेत + हिं० रंगी] कीर्ति। यश। (डिं०)।

विशेष—कीर्ति का वर्णन श्वेत किया जाता है।

स्वेतरज(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० स्वेदज] दे० 'स्वेदज'। उ०—स्वेतरज अंडरज जेरज उदबीरज। —गोरख०, पृ० २०५।

स्वेद[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ पसीना। प्रस्वेद। उ०—भयौ तन स्वेद प्रकंपि जँभाति। ठगी मनु मूरि ठगोरी मिपाति।—पृ० रा० २१४०२। २ भाप। वाष्प। ३ ताप। गरमी। ४ पसीना लानेवाली औषध।

स्वेद[2]—वि० पसीना लानेवाला।

स्वेदक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] कांति लौह।

स्वेदक[2]—वि० पसीना लानेवाला। घर्मदायक।

स्वेदकण—संज्ञा पुं० [सं०] पसीने की बूंद।

स्वेदचूषक—संज्ञा पुं० [सं०] ठढी हवा। शीतल वायु।

स्वेदच्छिद—वि० [सं०] स्वेद या पसीना को दूर करनेवाला। शीतलता प्रदायक [को०]।

स्वेदज[1]—वि० [सं०] १ पसीने से उत्पन्न होनेवाला। २ गर्म भाप या उष्ण वाष्प से उत्पन्न होनेवाला।

स्वेदज[2]—संज्ञा पुं० वे जीव जो स्वेद से पैदा होते हैं। जैसे,—जूँ, लीक, खटमल, मच्छर आदि कीडे मकोडे।

स्वेदजल—संज्ञा पुं० [सं०] पसीना। प्रस्वेद।

यौ०—स्वेदजलकण, स्वेदजलकणिका, स्वेदजलकन(पु) = पसीने की बूंद। उ०—तैसे अंग अंगन खुले है स्वेदजलकन, खुली अलकन खरी खुली छवि छलकै।—भिखारी० ग्र०, भा० १, पृ० १४३।

स्वेदज शाक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का शाक जो भूमि, गोबर, पांस, लकडी आदि मे उत्पन्न होता है। छत्तौना। छत्रक। छत्रा। छत्राक। भुइँछत्ता। भुईफोड।

विशेष—वैद्यक मे यह शीतल, दोषजनक, पिच्छिल, खारी तथा वमन, अतिसार ज्वर और कफ रोग को उत्पन्न करनेवाला माना गया है।

स्वेदन[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ पसीना निकलना। २ वैद्यो का एक यत्र जिसकी सहायता से ओपधियाँ शोधी जाती है।

विशेष—एक हँडिया मे तरल पदार्थ (जल, स्वरस, काढा आदि) भरकर उसका मुँह कपडे से भली भाँति बाँध देते है। फिर उस कपडे के ऊपर उस ओपधि की, जिसका स्वेदन करना होता है, पोटली रखकर हँडिया का मुँह ढकने से अच्छी तरह ढँक देते है और बरतन को धीमी आँच पर चढा देते हैं। इस क्रिया से भाप के द्वारा वह ओपधि शोधी जाती है।

३ पारद को शुद्ध करना। पारद का शोधन (को०)। ४ इद्रियमल। कफ। श्लेष्मा (को०)। ५ वह जिससे स्वेद उत्पन्न हो। स्वेदजनक वस्तु। वफारा।

स्वेदन[2]—वि० प्रस्वेदजनक। पसीना लानेवाला (को०)।

स्वेदनत्व—सज्ञा पुं० [सं०] स्वेदन का भाव।

स्वेदनाश—सज्ञा पुं० [सं०] हवा। वायु।

स्वेदनिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ तवा। २ रसोईघर। पाकशाला। ३ शराब चुआने का बरतन या भभका।

स्वेदनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ तवा। २ तसली। कडाही (को०)।

स्वेदबिंदु—सज्ञा पुं० [सं० स्वेदबिन्दु] प्रस्वेद के बिंदु। पसीने की बूँद।

स्वेदमाता—सज्ञा स्त्री० [सं० स्वेदमातृ] शरीर मे का रस।

स्वेदलेश—सज्ञा पुं० [सं०] पसीने की छोटी कणिका। स्वेदबिंदु।

स्वेदवारि—सज्ञा पुं० [सं०] पसीना। प्रस्वेद।

स्वेदविप्रुट्—सज्ञा पुं० [स० स्वेदविप्रुष्] स्वेदबिंदु (को०)।

स्वेदायन—सज्ञा पुं० [सं०] रोमकूप। लोमछिद्र।

स्वेदित—वि० [सं०] १ स्वेद से युक्त। पसीने से युक्त। २ वफारा दिया हुआ। सेका हुआ। उ०—इस प्रकार अपने मुख की भाप से नेत्रो को स्वेदित कर दो।—नूतनामृतसागर (शब्द०)। ३ प्रस्वेदयुक्त किया हुआ। जिसका स्वेदन किया गया हो (को०)।

स्वेदी—वि० [सं० स्वेदिन्] १ पसीना लानेवाला। घर्मकारक। २ जिसे पसीना हुआ हो। स्वेद से युक्त (को०)।

स्वेदोद, स्वेदोदक—सज्ञा पुं० [स०] पसीना। प्रस्वेद। स्वेदजल (को०)।

स्वेदोद्गम—सज्ञा पुं० [स०] पसीना होना (को०)।

स्वेद्य—वि० [सं०] स्वेद के योग्य। पसीने के योग्य।

स्वेष्ट—वि० [स०] जो अपने को इष्ट या प्रिय हो (को०)।

स्वै(पु)[1]—वि० [सं० स्वीय] अपना। निज का। (डिं०)।

स्वै(पु)[2]—सर्व० [हिं० सो + ही] वही। वह ही। दे० 'सो'। उ० सो सुकृती सुचिमत सुसत सुसील सयान सिरोमनि स्वै।—तुलसी (शब्द०)।

स्वैर[1]—वि० [स०] १ अपने इच्छानुसार चलनेवाला। मनमाना काम करनेवाला। स्वच्छद। स्वतत्र। स्वाधीन। यथेच्छाचारी। २ मथर। शात। सौम्य। मद। ३ अनुद्योगी। सुस्त। आलसी (को०)। ४ यथेच्छ। मनमाना। ऐच्छिक।

स्वैर[2]—सज्ञा पुं० [सं०] १ स्वच्छदता। स्वेच्छता २ यथेच्छता (को०)।

स्वैरकथा—सज्ञा स्त्री० [स०] स्वच्छद वार्तालाप। निस्सकोच या असयत वार्ता (को०)।

स्वैरगत[1]—वि० [सं०] स्वेच्छापूर्वक घूमनेवाला। जो स्वच्छद भाव से भ्रमणशील हो।

स्वैरगत[2]—सज्ञा पुं० स्वच्छदता या स्वतत्रतापूर्वक गमन (को०)।

स्वैरगति—वि०, सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'स्वैरगत'।

स्वैरचारिणी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ मनमाना काम करनेवाली स्त्री। २ व्यभिचारिणी स्त्री।

स्वैरचारी—वि० [सं० स्वैरचारिन्] मनमाना काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी। निरकुश।

स्वैरता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ यथेच्छाचारिता। २ स्वच्छदता।

स्वैरथ सज्ञा पुं० [स०] १ ज्योतिष्मन् के एक पुत्र का नाम। २ विष्णुपुराण के अनुसार एक वर्ष का नाम जिसके देवता स्वैरथ माने जाते है।

स्वैरवर्ती—वि० [सं० स्वैरवर्तिन्] अपने इच्छानुसार चलने या काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी।

स्वैरविहारी—वि० [सं० स्वैरविहारिन्] इच्छानुसार विहरण करने या घूमनेवाला (को०)।

स्वैरवृत्त—वि० [सं०] अपने इच्छानुसार चलने या काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी।

स्वैरवृत्ति[1]—सज्ञा स्त्री० [सं०] यथेच्छाचारिता। स्वच्छदता (को०)।

स्वैरवृत्ति[2]—वि० स्वच्छद। स्वेच्छाचारी। स्वैरवर्ती (को०)।

स्वैराचार[1]—सज्ञा पुं० [सं०] जो जी मे आवे वही करना। मनमाना काम करना। स्वेच्छाचार। यथेच्छाचार।

स्वैराचार[2]—वि० यथेच्छाचारी। दे० 'स्वैरी' (को०)

स्वैराचारी—वि० [सं० स्वैराचारिन्] [वि० स्त्री० स्वैराचारिणी] अबाध्य। निरकुश। स्वेच्छाचारी (को०)।

स्वैरालाप—सज्ञा पुं० [सं०] निस्सकोच वार्ता। स्वैरकथा (को०)।

स्वैराहार—सज्ञा पुं० [सं०] यथेच्छ भोजन।

स्वैरिंध्री—सज्ञा स्त्री० [स० स्वैरिन्ध्री] दे० 'सैरिंध्री'।

स्वैरिणी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ असती। कुलटा। व्यभिचारिणी। २ गादुर। गेदुर। चमगादर। ३ मुनियो का समाज। तापसवर्ग। मुनिश्रेणी (को०)।

स्वैरिता—सज्ञा स्त्री० [सं०] यथेच्छाचारिता। स्वच्छदता। स्वाधीनता।

स्वैरित्व—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'स्वैरिता'।

स्वैरी—वि० [सं० स्वैरिन्] [वि० स्त्री० स्वैरिणी] स्वेच्छाचारी। स्वतत्र। निरकुश। अबाध्य।

स्वोक्त वि० [सं०] स्वकथित। स्वय कहा हुआ। स्वय उक्त (को०)।

स्वोचित—वि [सं०] जो अपने अनुकूल या योग्य हो (को०)।

स्वोजस्—वि० [सं०] अत्यत दृढ। अतीव शक्तिशाली (को०)।

स्वोत्थ—वि० [स०] स्वय उद्भूत। स्वाभाविक [को०]।

स्वोत्थित—वि० [सं०] स्वय उठा हुआ। स्वय उत्पन्न [को०]।

स्वोदय—सज्ञा पुं० किसी निश्चित स्थान पर नक्षत्र या आकाशीय पिंड का उदय होना [को०]।

स्वोदरपूरक—वि० [स०] अपना ही पेट भरनेवाला। अपने ही खाने की चिंता करनेवाला।

स्वोदरपूरण—सज्ञा पुं० [सं०] अपना ही उदर या पेट भरना। उदरभर। अघाकर खाना [को०]।

स्वोपज्ञ—वि० [स०] स्वय निर्मित। स्वय रचित [को०]।

स्वोपधि—सज्ञा पुं० [सं०] १ आत्मनिर्भरता। २ निश्चित तारा। अचल ग्रह [को०]।

स्वोपार्जित—वि० [सं०] अपना उपार्जन किया हुआ। अपना कमाया हुआ। जैसे,—उनकी सारी सपत्ति स्वोपार्जित है।

स्वोरस—सज्ञा पुं० [स०] १ दे० 'स्वरस'। २ तुष। छिलका। भूसी (को०)। ३ अपना वक्षस्थल (को०)।

स्वोवशीय—सज्ञा पुं० [सं०] विशेषत भावी जीवन सबधी आनद, सुख या समृद्धि [को०]।

ह

ह—सस्कृत या हिंदी वर्णमाला का तैंतीसवाँ व्यजन जो उच्चारण विभाग के अनुसार ऊष्म वर्ण कहलाता है तथा इसका उच्चारण स्थान कठ है।

हं—क्रि० वि० [स० हम्] दे० 'हम्'।

हंक(पु)—सज्ञा स्त्री० [देश० हक्क, हिं० हाँक] १ हाँक। पुकार। २ बढावा। ललकार। उ०—सकत लक असक बक हंकनि हुडकारत।—पद्माकर ग्र०, पृ० १०।

हंकना(पु)¹—क्रि० अ० [हिं० हक+ना] चिल्लाना। हाँक देना। उ०—वर तीर मारै परे मुड हंकै।—प० रासो पृ० ४५।

हंकना(पु)²—क्रि० स० बढावा देना। ललकारना। उ०—(क) हंकत भयउ निज दल सकल ह्वै करि भटन की पिट्ठि पै। (ख) नृप मनि अनूप गिरि भूप जब निज दल बल हंकत भयउ।—पद्माकर ग्र०, पृ० ११।

हंका—सज्ञा स्त्री० [हिं० हाँक] ललकार। दपट। उ०—सका दै दसानन को हंका दै सुवक्का वीर, डका दै विजय को कपि कूदि परयो लका मे।—पद्माकर (शब्द०)।

क्रि० प्र०—देना। —मारना।

हंकार¹—सज्ञा पुं० [सं० अहङ्कार] दे० 'अहकार'। उ०—(क) खग खोजन कहँ तू परा पीछे अगम अपार। बिन परिचय ते जानहू, झूठा है हकार।—कबीर बी० (शिशु०), पृ० २०६। (ख) गुरु के चरनन मे धरो, चित बुधि मन हकार।—सतवानी०, भा० १, पृ० १४२।

हंकार²—सज्ञा पुं० [सं०हुङ्कार] वीरो का दर्पनाद। ललकार। दपट। उ०—हकार हक्क कल कूह मचि जय सवद मच्चिय घनह।—पृ० रा०, पृ०३८१।

हंकारना—क्रि०अ० [हिं० हुकार] हुकार शब्द करना। वीरनाद करना। दपटना।

हंकारी—वि० [सं० अहङ्कारिन्] दर्पयुक्त। घमडी। अहकारी।

हंगाम—सज्ञा पुं० [फा०] १ काल। समय। २ ऋतु। मौसिम [को०]।

हंगामा—सज्ञा पुं० [फा० हगामह्] १ उपद्रव। हलचल। दगा। बलवा। मारपीट। लड़ाई झगडा।

क्रि० प्र०—करना। —मचना। —होना।

२ शोरगुल। कलकल। हल्ला।

हंगोरी—सज्ञा पुं० [देश०] एक बहुत बडा पेड जो दार्जिलिंग के पहाडो मे होता है।

विशेष—इस वृक्ष की लकडी बहुत मजबूत होती है और मेज, कुरसी, आलमारी आदि सजावट के सामान बनाने के काम मे आती है। पहाडी लोग इसका फल भी खाते हैं।

हंजा¹—सज्ञा स्त्री० [सं०हञ्जा] चेटी। सेविका [को०]

हंजा(पु)²—सज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'प्रेमी'। उ०—पेच सुरधी पाघरा, टाँके मतघर ढाल। काढी चढ आछी कहूँ, हजा भीषण हाल।—बाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० ८।

हंजि—सज्ञा पुं० [सं० हञ्ज] छीक।

हंजिका—सज्ञा स्त्री० [हञ्जिका] १ भार्ङ्गी नामक पौधा। भारगी। २ चेटी। सेविका [को०]।

हंझि(पु)—सज्ञा पु० [स० हस] दे० 'हस'। उ०—डीभू लक मरालि गय पिकसर एही वाणि। ढोला एही मारुई, जेह हंझि निवाँणि।—ढोला०, दू० ४६०।

हंटर—सज्ञा पुं० [अ० हट (=आखेट, शिकार) या हटर] लबी चाबुक। कोडा।

क्रि० प्र०—जमाना।—मारना। लगाना।

हंड(पु)—सज्ञा पुं० [सं० भाण्ड, प्रा० हड, हिं० हडा] हडा। मिट्टी का घडा बरतन। उ०—ब्रह्माड हट चढाइया, मानो उरै अन्न। कोई गुरु कृपा तै ऊबरै, दादू साधू जन्न।—दादू० बानी, पृ० २९२। (अथवा प्रा० हिंडन)

हंडना¹(पु)—क्रि०अ० [सं० अभ्यटन, प्रा० अहडन, हिंडन अथवा भडन (=नटखटी)] १ घूमना। फिरना। जैसे,—काशी हडे, प्रयाग मूडे। २ व्यर्थ इधर उधर फिरना। आवारा घूमना। ३ (वस्त्र आदि का) व्यवहार मे आना। पहनना या ओढा जाना।

हंडना²—क्रि० स० इधर उधर ढूँढना। छानबीन करना। खोजना।

हंडर—सज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'हडरवेट'।

हडरवेट—संज्ञा पुं० [ग्र० हण्ड्रेडवेट] एक अंग्रेजी तौल जो ११२ पाउंड या प्राय १ मन १४॥ सेर की होती है।

हंडल—संज्ञा पुं० [ग्र० हैंडल] १ बेंट। दस्ता। मुठिया। २ किसी कल या पेंच का वह भाग जो हाथ से पकडकर घुमाया जाता है।

हंडा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० हण्डा] १ परिचारिका। चेटिका। दासी। २ निम्न जातीय औरत। ३ मिट्टी का बडा पात्र। दे० 'हंडा'[2] [को०]।

हंडा[2]—संज्ञा पुं० [सं० भाण्डक या हण्डा] पीतल या तांबे का बहुत बडा बरतन जिसमे पानी भरकर रखा जाता है।

हंडा[3]—अव्य० अपने से निम्नतम श्रेणी की औरत के लिये प्रयुक्त संबोधनात्मक अव्यय।

हंडिका—संज्ञा स्त्री० [सं० हण्डिका] दे० 'हँडिया'। उ०—रोटी ऊपर पोइ कै तवा चटायौ आनि। पिचरि माँहे हंडिका, सुदर रांधी जांनि।—सुदर० ग्र०, भा० २, पृ० ७५६।

यौ०—हंडिकासुत = मिटटी का लघुतम पात्र। मिट्टी का छोटा बरतन।

हंडी—संज्ञा स्त्री० [सं० हण्डी] दे० 'हँडिया', 'हांडी'।

हंडीर—वि० [सं० √हण्ड, प्रा० हिंड] हिंडन करनेवाला। चारो ओर भ्रमण करनेवाला। घूमनेवाला। उ०—तीन पनच धुनही करन बडे कटन तडीर। सगुन बिना पग ना धरै, विकट बन हंडीर।—पृ० रा०, ७।७६।

हंडे—अव्य [सं० हण्डे] दे० हंडा[3]।

हंढना(पु)—क्रि० अ० [हिं० हडना] दे० 'हडना'। उ०—कबीर सब जग हंढिया मदिल कंधि चढाइ। हरि बिन अपना को नही, देखे ठोकि बजाइ।—कबीर ग्र० पृ० ६१।

हंत—अव्य० [सं० हन्त] आश्चर्य, प्रसन्नता, करुणा, सौभाग्य, आरंभ, खेद या शोक आदि का सूचक शब्द।

हंतकार—संज्ञा पुं० [सं० हन्तकार] १ अतिथि या सन्यासी आदि के लिये निकाला हुआ भोजन जो पुष्कल का चौगुना अर्थात् मोर के सोलह अंडो के बराबर होना चाहिए। २ 'हंत' की ध्वनि। हंत शब्द (को०)।

हंतव्य—वि० [सं० हन्तव्य] १ वध्य। २ उल्लघनीय। ३ खडनीय [को०]।

हंता—संज्ञा पुं० [सं० हन्तृ][स्त्री० हन्त्री] १ मारनेवाला। वध करनेवाला। जैसे,—शत्रुहंता, पितृहंता। २ लुटेरा। डाकू (को०)।

हंतु—संज्ञा पुं० [सं० हन्तु] १ मौत। मृत्यु। २ वृषभ। बैल [को०]।

यौ०—हंतुकाम = हनन या घातन की कामना से युक्त। वधेच्छुक। हन्तुमना - जो हनन करना चाहता हो। मारने की नीयतवाला।

हंतृमुख—संज्ञा पुं० [सं० हन्तृमुख] एक बाल ग्रह [को०]।

हंतोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० हन्तोक्ति] करुणा, खेद, दुख, सहानुभूति-परक हंत शब्द की उक्ति [को०]।

हंत्री—वि० [सं० हन्त्री] १ लूटनेवाली। २ मारनेवाली [को०]।

हंदा—संज्ञा पुं० [सं० हन्तकार] पुरोहित या ब्राह्मण के लिये निकाला हुआ भोजन।

विशेष—पजाब के खत्री ब्राह्मणो मे यह प्रथा है कि मरने की रसोई मे से कुछ अंश अपने पुरोहित के लिये अलग कर देते हैं। इसी को हंदा कहते हैं।

हंवा[1]—अव्य० [हिं० हाँ] सम्मति या स्वीकृतिसूचक अव्यय। हाँ। (राजपूताना)।

हंवा[2]—संज्ञा पुं० [सं० हम्बा] दे० 'हंभा'। उ०—शोक ते ली अफर आज डकार। वत्स हंवा कर उठे डिडकार।—साकेत, पृ० १८६।

यौ०—हंवारव = दे० 'हंभारव'।

हंवीरा—संज्ञा स्त्री० [सं० हम्बीरा] एक रागिनी।

हंभा—संज्ञा स्त्री० [सं० हम्भा] गाय, बैल, बछडे आदि के बोलने का शब्द। रँभाने का शब्द।

हंभार(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हम्भारव] रँभाना। चिल्लाना। दे० 'हंभा'। उ०—(क) कदन्न गाव सपत्त वच्छ। हंभार दियौ सुर उच्च तच्छ।—पृ० रा०, १।१५३। (ख) छत छीन चोर मन भए पग। हंभार सब्द गो करि उलग।—पृ० रा०, १५।१८।

हंभारव—संज्ञा पुं० [सं० हम्भारव] हंभा की ध्वनि। रँभाने का शब्द [को०]।

हंभाशब्द—संज्ञा पुं० [सं० हम्भाशब्द] दे० 'हंभा', 'हंभारव' [को०]।

हंस—संज्ञा पुं० [सं०] १ बत्तख के आकार का एक जलपक्षी जो बडी बडी झीलो मे रहता है।

विशेष—इसकी गरदन बत्तख से लंबी होती है और कभी कभी उसमे बहुत सुंदर घुमाव दिखाई पडता है। यह पृथ्वी के प्राय सब भागो मे पाया जाता है और छोटे छोटे जलजंतुओ और उदिभद पर निर्वाह करता है। यद्यपि हंस का रंग श्वेत ही प्रसिद्ध है, पर आस्ट्रेलिया मे काले रंग के हंस भी पाए जाते हैं योरप मे इसकी दो जातियाँ होती हैं—एक मूक हंस' दूसरी 'तूर्य हंस'। मूक हंस बोलते नही, पर तूर्य हंस की आवाज बडी कडी होती है। अमेरिका मे भूरे और चितकबरे हंस भी होते हैं। चितकबरे हंस का सारा शरीर सफेद होता है, केवल सिर और गरदन कालापन लिए लाखी रंग की होती है। भारतवर्ष मे हंस सब दिन नही रहते हैं। वर्षाकाल मे उनका मानसरोवर आदि तिब्बत की झीलो मे चला जाना और शरत्काल मे लौटना प्रसिद्ध है। यह पक्षी अपनी शुभ्रता और सुंदर चाल के लिये बहुत प्राचीन काल से प्रसिद्ध है। कवियो मे तथा जनसाधारण मे इसके मोती चुँगने और नीर-क्षीर-विवेक करने (दूध मे से पानी अलग करने) का प्रवाद चला आता है जो कल्पना मात्र है। युरोप के पुराने कवियो मे भी ऐसा प्रवाद था कि यह पक्षी बहुत सुदर राग गाता है, विशेषत मरते समय। किसी शब्द के आगे लगकर यह शब्द श्रेष्ठता का वाचक भी होता है, जैसे, कुलहंस।

२ सूर्य। उ०—(क) हंस बंस, दशरथ जनक, राम लपन से भाइ।—तुलसी (शब्द०)। (ख) हंस तुरंगम-हंस रवि, हंस मराल, सुछंद। हंस जीव कहु कहत कवि परम हंस गोविंद।—अनेकार्थ०, पृ० १६०।

यौ०—हसत्रम । हससुना ।

३ ब्रह्म । परमात्मा । ४ शुद्ध आत्मा । माया से निर्लिप्त आत्मा । उ०—जे एहि छीर समुद मँह परे । जीव गँवाइ हस होइ तरे । —जायसी (शब्द०) । ५ जीवात्मा । जीव । उ०—सिर धुनि हसा चले हो रमैया राम ।—कबीर (शब्द०) । ६ विष्णु । ७ विष्णु का एक अवतार ।

विशेष—एक बार सनकादिक ने ब्रह्मा से जाकर पूछा—कृपा कर बताइए कि विषय को चित्त ग्रहण किए हुए है या विषय ही चित्त को गहण किए है । ये दोनो ऐसे मिले हुए हैं कि हममे अलग नही करते बनता । जब ब्रह्मा उत्तर न दे सके, तब सनकादिक को अपने ज्ञान का गर्व हो गया । इसपर ब्रह्मा ने भक्तिपूर्वक भगवान् का ध्यान किया । तब भगवान् हस का रूप धारण करके सामने आए और सनकादिक से बोले तुम्हारा यह प्रश्न ही अज्ञानपूर्ण है । विषय और उनका चिंतन दोनो माया हैं, अर्थात् एक है । इस प्रकार सनकादिक का ज्ञानगर्व दूर हो गया ।

८ उदार और सयमी राजा । श्रेष्ठ राजा । ९ सन्यासियो एक भेद । उ०—कहि आचार भक्ति विधि भाखी हस धर्म प्रगटायो ।—सूर (शब्द०) । १० एक मत्र । ११ प्राणवायु । १२ घोडा । उ०—हरे हरदिया हस खिग गर्रा फुलवारी ।—सुजान०, पृ० ८ । १३ शिव । महादेव । १४ ईर्ष्या । द्वेष । १५ दीक्षागुरु । आचार्य । १६ पर्वत । १७ कामदेव । १८ भैसा । १९ दोहे के नवे भेद का नाम जिसमे १४ गुरु और २० लघु वर्ण होते है । (पिगला) । २० एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक भगण और दो गुरु होते हैं । जैसे, -'राम खरारी' । इसे 'पक्ति' भी कहते है । २१ रजत । चाँदी (को०) । २२ महाभारत मे वर्णित जरासध के एक सेनापति का नाम (को०) । २३ बृहत्सहिता के अनुसार विशिष्ट लक्षणयुक्त एक प्रकार का वृप (को०) । २४ अपने वर्ग या कोटि का प्रधान अथवा श्रेष्ठ व्यक्ति । अग्रणी व्यक्ति या वस्तु । जैसे, कविहस । २५ प्लक्ष द्वीप का ब्राह्मण (को०) । २६ ब्रह्मा के एक पुत्र का नाम (को०) । २७ एक प्रकार का नृत्य । २८ सगीत मे एक ताल । हसक (को०) । २९ वास्तु विद्या के अनुसार प्रासाद का एक भेद ।

विशेष—यह हस के आकार का बनाया जाता था । यह बारह हाथ चौडा और एक खड का होता था और इसके ऊपर एक शृग बनाया जाता था ।

हसक—सज्ञा पुं० [स०] १ हस पक्षी । २ पैर की उँगलियो मे पहनने का एक गहना । बिछुआ । उ०—ते नगरी ना नागरी प्रतिपद हसक हीन ।—केशव (शब्द०) । ३ सगीत मे एक प्रकार का ताल (को०) ।

हसकाता—सज्ञा स्त्री० [स० हसकान्ता] हसिनी (को०) ।

हसकालीतनय—सज्ञा पुं० [सं०] भैसा । महिष (को०) ।

हसकीलक—सज्ञा पुं० [सं०] रतिबध का एक प्रकार (को०) ।

हसकूट—सज्ञा पुं० [स०] १ बैल के कधो के बीच उठा हुआ कूबड । डिल्ला । २ हिमालय के एक शृग का नाम (को०) ।

हसग—सज्ञा पुं० [स०] हस जिनका वाहन है, ब्रह्मा (को०) ।

हसगति[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ हस के समान सुदर धीमी चाल । २ ब्रह्मत्व की प्राप्ति । सायुज्य मुक्ति । ३ बीस मात्राओं के एक छद का नाम जिसमे ग्यारहवी और नवी मात्रा पर विराम होता है । इसके तुकात मे गुरु लघु का कोई नियम नही है । इसी छद की बारहवी मात्रा पर यति मानकर इसे मजुतिलका भी कहते है ।

हसगति[2]—वि० जिसकी गति या चाल हस के सदृश हो ।

हसगद्गदा—सज्ञा स्त्री० [स०] प्रियभाषिणी स्त्री । मधुरभाषिणी स्त्री ।

हसगमन—सज्ञा पु० [सं०] हस के समान सुदर गति (को०) ।

हसगमना—सज्ञा स्त्री० [स०] एक देवागना का नाम (को०) ।

हसगर्भ—सज्ञा पुं० [सं०] एक रत्न का नाम । (रत्नपरीक्षा) ।

हसगवनि(पु)—वि० स्त्री० [स० हसगामिनी] हस के समान चलनेवाली । उ०—हसगवनि तुम्ह नहिं बन जोगू । सुनि अपजसु मोहि देइहि लोगू ।—मानस, २।६३ ।

हसगामिनी[1]—वि० स्त्री० [सं०] हस के समान सुदर, मद गति से चलनेवाली ।

हसगामिनी[2]—सज्ञा स्त्री० १ हस के समान सुदर मद गति से चलनेवाली स्त्री । २. ब्रह्मा की शक्ति, ब्रह्माणी का एक नाम (को०) ।

हसगुह्य—सज्ञा पुं० [स०] भागवत के अनुसार विशिष्ट स्तुतिपरक एक मत्र (को०) ।

हसगृह—सज्ञा पुं० [स०] सोने का कमरा । शयनगृह (को०) ।

हसचूड—सज्ञा पुं० [सं०] एक यक्ष का नाम (को०) ।

हस चौपड—सज्ञा पु० [स० हस + हिं० चौपड] एक प्रकार का पुराना चौपड का खेल जो पासो से खेला जाता है ।

विशेष—इसकी तख्ती मे ६२ घर होते थे । एक ६३ वाँ घर केंद्र मे होता था, जो जीत का घर होता था । तख्ती के प्रत्येक चौथे और पाँचवे घर मे एक हस का चित्र होता था । खेलनेवाले का पासा जब हस पर पडता था, तब वह दूनी चाल चल सकता था ।

हसच्छत्र—सज्ञा पुं० [स०] शुठी । सोंठ (को०) ।

हसज—सज्ञा पुं० [स०] १. हस के पुत्र । सूर्य के पुत्र—धर्मराज, कर्ण आदि (को०) । २ कार्तिकेय का एक अनुचर ।

हसजा—सज्ञा स्त्री० [स०] सूय की कन्या । सूर्यतनया । यमुना ।

हसणी(पु)†—सज्ञा स्त्री० [हिं० हस + णी (प्रत्य०)] दे० 'हसिका', 'हसी' । उ०—सरवर तटि हसणी तिसाई । जुगति बिना हरि जल पिया न जाई ।—कबीर ग्र०, पृ० १८९ ।

हसतूल—सज्ञा पुं० [स०] हस का कोमल पर । हस का पख ।

हसतूलिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'हसतूल' ।

हसदफरा—संज्ञा पुं० [?] वे रस्से जो छोटी नाव में उसकी मजबूती के लिये बँधे रहते हैं।

हसदाहन—संज्ञा पुं० [सं०] धूप। गूगल।

हसद्वार—संज्ञा पुं० [सं०] मानसरोवर के समीप का एक स्थान [को०]।

हसद्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] एक द्वीप का नाम। प्लक्ष द्वीप [को०]।

हसनाद—संज्ञा पुं० [सं०] हस का कूजन। हस का कलरव [को०]।

हसनादिनी[1]—वि० स्त्री० [सं०] सुदर बोलनेवाली। मधुरभाषिणी।

हसनादिनी[2]—संज्ञा स्त्री० स्त्रियों का एक विशिष्ट प्रकार [को०]।

विशेष—हसनादिनी स्त्रियाँ सुकुमार, सुदर, क्षीण कटिवाली, नितबगुर्वी, गजेंद्र के समान मथर गतियुक्त कही गई हैं। इनका स्वर कोकिल के समान मधुर होता है।

हसनाभ—संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम [को०]।

हसनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हस+नी (प्रत्य०)] दे० 'हसी'।

हसनीलक—संज्ञा पुं० [सं०] कामशास्त्र में रति का एक प्रकार। दे० 'हसकीलक' [को०]।

हसपक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ हस का पख। २ हाथो की एक विशेष मुद्रा या स्थिति [को०]।

हसपथ—संज्ञा पुं० [सं०] एक जनपद का नाम।

हसपद—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक तौल या मान। कर्ष। २. हस के पैर का चिह्न। ३ किसी छूटे हुए शब्द या अक्षर का सूचक चिह्न। छूटे हुए अक्षर या शब्द के लिये पक्ति के नीचे बनाया जानेवाला चिह्न।—भा० प्रा० लि०, पृ० १५०।

विशेष—लेखक जब किसी अक्षर या शब्द को भूल से छोड जाता तो वह अक्षर या शब्द या तो पक्ति के ऊपर या नीचे अथवा हाशिये पर लिखा जाता था और कभी वह अक्षर या शब्द किस स्थान पर चाहिए था यह बतलाने के लिये ∧ या × चिह्न भी मिलता है जिसको 'काकपद' या 'हसपद' कहते हैं।

हसपदिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुष्यत की पहिली भार्या का नाम।

हसपदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक लता का नाम। २ एक अप्सरा का नाम (को०)। ३ एक वृत्त (को०)।

हसपाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ हिंगुल। ईंगुर। शिंगरफ। २ सिंदूर (को०)। ३ पारद। पारा (को०)।

हसपादिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'हसपदी' (को०)।

हसपादी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'हसपदी'।

हसप्रपतन—संज्ञा पुं० [सं०] एक तीर्थ का नाम [को०]।

हसबस(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हसवश] सूर्यवश। उ०—राम कस न तुम्ह कहहु अस हसबस अवतस '—मानस, २।९।

यौ०—हसबस गुरु=सूर्यवशियों के गुरु। वशिष्ठ ऋषि। उ०—हसबस गुरु जनक पुरोधा। जिन्ह जग मग परमारथ सोधा।—मानस, २।२७७।

हसबीज—संज्ञा पुं० [सं०] हंस का अडा [को०]।

हसमगला—संज्ञा स्त्री० [सं० हसमङ्गला] एक प्रकार की रागिनी जो शकराभरण, सोरठ और अडाना के मेल से बनी है।

हसमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हसों की पक्ति। २ एक वर्णवृत्त का नाम। इसमें क्रमशः सगण, रगण और एक गुरु होता है। उ०—सुर गो के सहाई। जमुना तीर जाई। रूपे री सुहाना। लखिकै हसमाला।—छद०, पृ० १३६।

हसमाषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] माषपर्णी [को०]।

हसयान[1]—वि० [सं०] जिसका वाहन हस हो [को०]।

हसयान[2]—संज्ञा पुं० हस की आकृति का विमान अथवा वह यान जिसका वाहक हस हो।

हसरथ—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा (जिनका वाहन हस है)।

हसरव—संज्ञा पुं० [सं०] हस की ध्वनि। हसनाद।

हसराज—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक बूटी जो पहाड़ में चट्टानों में लगी हुई मिलती है। समलपत्ती।

विशेष—यह एक छोटी घास होती है जिसमें चारों ओर आठ दस अगुल के सूत के से डठल फैलते हैं। इन डठलों के दोनों ओर बद मुट्ठी के आकार की छोटी छोटी कटावदार पत्तियाँ गुछी होती हैं। यह बूटी देखने में बड़ी सुदर होती है, इससे बगीचों में ककड पत्थर के ढेर रखके इसे लगाते हैं। वैद्यक में यह गरम मानी जाती है और ज्वर में दी जाती है। कहते हैं, इससे बवासीर से खून जाना भी बद हो जाता है।

२ एक प्रकार का अगहनी धान। ३ हसों का राजा। बडा हस (को०)।

हसरुत—संज्ञा पुं० [सं०] हस की ध्वनि। हसरव। हसनाद [को०]।

हसरोम—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हसतूल'।

हसला(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हस, + अप० डा या ला (प्रत्य०)] साधु जिसकी आत्मा शुद्ध हो। शुद्ध आत्मावाला साधु। उ०—साधु सदा सजमि रहै, मैला कदे न होइ। सुनि सरोवर हसला, दादू बिरला कोइ।—दादू० बानी, पृ० ३०४।

हसलिपि—संज्ञा स्त्री० [सं०] लिखने का एक विशिष्ट प्रकार। एक प्रकार की लिपि (जैन)।

हसलील—संज्ञा पुं० [सं०] सगीत में एक ताल [को०]।

हसलोमश—संज्ञा पुं० [सं०] कसीस।

हसलोहक—संज्ञा पुं० [सं०] पीतल [को०]।

हसवश—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यवश।

हसवक्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] स्कद के एक गण का नाम [को०]।

हसवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक लता का नाम।

हसवाह्य—वि० [सं०] जो हस द्वारा वहन किया जाय। हस की सवारी करनेवाला [को०]।

हसवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा (जिनकी सवारी हस है)।

हसवाहिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती (जिनकी सवारी हस है)।

हसविक्रातगामिता—सज्ञा स्त्री० [स० हसविक्रान्तगामिता] हस के सदृश गति। हस जैसी चाल।

हसश्रेणी—सज्ञा स्त्री० [स०] हसो की पक्ति। हसमाला [को०]।

हससुता—सज्ञा स्त्री० [स०] सूर्य की कन्या। यमुना नदी। उ०—हससुता की सुदर कगरी औ कुजन की छाही।—सूर (शब्द०)।

हसाघ्रि—सज्ञा पुं० [स० हसाङ्घ्रि] हिंगुल। ईंगुर। सिंगरफ।

हसाशु—वि० [स०] उज्वल। श्वेत [को०]।

हसागमणि (पु)—वि० स्त्री० [स० हसगामिनी] हस के तुल्य सुदर एव धीमी गतिवाली। दे० 'हसगामिनी'। उ०—(क) चदमुखी, हसागमणि, कोमल दीरघ केस। कचनवरणी कामनी वेगउ आनि मिलेस।—ढोला०, दू० २०७।

हसाधिरूढ—सज्ञा पुं० [स० हसाधिरूढ] ब्रह्मा का एक नाम [को०]।

हसाधिरूढा—सज्ञा स्त्री० [स० हसाधिरूढा] हसारूढा। सरस्वती [को०]।

हसाभिख्य—सज्ञा पु० [स०] चाँदी।

हसारूढ—सज्ञा पुं० [सं० हसारूढ] ब्रह्मा (जो हस पर सवार होते है)।

हसारूढा—सज्ञा स्त्री० [स० हसारूढा] सरस्वती।

हसाल—सज्ञा पुं० [स० हसालि] ३१ मात्राओ का एक प्रकार का छद। दे० 'हसालि'। छद प्रभाकर के अनुसार इसका लक्षण है 'बीसौ सत्रह यति धरि निरसकु रची, सबै या छद हसाल भायौ'। उ०—तो सो ही चतुर सुजान परवीन अति, परे जिन पीजरे मोह कूँआ। पाय उत्तम जनम लायके चपल मन, गाय गोविंद गुन जीत जूआ। आप ही आप अज्ञान नलिनी बँधो, बिना प्रभु भजे कइ बार मुआ। दास सुदर कहै परमपद तो लहै, राम हरि राम हरि बोल सूआ।—छद ०, पृ० ७० तथा सुदर० ग्र० (भू०), भा० १, पृ० ५१।

हसालि—सज्ञा स्त्री० [स०] ३७ मात्राओ का एक छद जिसमे बीसवीं और सत्रहवी मात्रा पर यति और अत मे यगण होता है। यह मात्रिक छद दडक वृत्त के अतर्गत है।

हसावली—सज्ञा स्त्री० [स०] हसो की पक्ति। हसश्रेणी [को०]।

हसास्य—सज्ञा पुं० [स०] हाथो की एक विशेष स्थिति [को०]।

हसिका—सज्ञा स्त्री० [स०] हस की मादा। हसी।

हसिनि (पु)—सज्ञा स्त्री० [स० हस] दे० 'हसी'। उ०—जस तुम्हार मानस विमल हसिनि जीहा जासु। मुकुताहल गुन गन चुनइ राम बसहु मन तासु।—मानस, २।१२८।

हसिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक विशेष प्रकार की गति।

हसिर—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का नूपक [को०]।

हसी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ हस की मादा। स्त्री हस। २ दूध देनेवाली गाय की एक अच्छी जाति। (पजाब)। ३ बाईस अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो मगण, एक तगण, तीन नगण, एक सगण और एक गुरु होता है। (SSS, SSS, SSI, III, III, III, IIS, S)।

हसुला (पु)—सज्ञा पु० [स० हस + अप० ला (प्रत्य०)] दे० 'हस'। उ०—देसि परादे हसुला भया उडीणा आथि। हस उडारी समली जाय मीलीये सग साथि।—प्राण०, पृ० १०५।

हक (पु)—सज्ञा स्त्री० [हिं० हांक] दे० 'हाँक'।

हँकडना—क्रि० अ० [हिं० हाँक] १ जोर जोर से चिल्लाना। झगडते हुए दर्प के साथ बोलना। ललकारना। हुकारना। २ गाय, बैल, साँड आदि पशुओ का जोर जोर से चिल्लाना।

हँकडान, हँकडाव†—सज्ञा स्त्री० [हिं० 'हाँक' से व्युत्पन्न हँकडने का भाव या जोर जोर से चिल्लाने की क्रिया।

हँकनी†—सज्ञा स्त्री० [हिं० हाँकना] १ हलवाहो की बैलो को हाँकने की छोटी छडी। पैना। २ हाँकने का काम। हाँकने की क्रिया। ३ हाँकनेवाली स्त्री।

हँकरना—क्रि० अ० [हिं० हाँक] दे० 'हँकडना'।

हँकराना—क्रि० स० [हिं० हाँक] १ हाँक देकर बुलाना। जोर से आवाज लगाकर किसी दूर के मनुष्य को सबोधन करना। २. बुलाना। पुकारना। उ०—मोहन ग्वाल सखा हँकराए।—सूर (शब्द०)। ३ पुकारने का काम दूसरे से कराना। बुलवाना। उ०—(क) राजा सब सेवक हँकराई। भाँति भाँति की वस्तु मँगाई।—विश्राम (शब्द०)। (ख) राजा छरीदार हँकराई।—कबीर म०, पृ० ५००।

हँकराव, हँकरावा—सज्ञा पुं० [हिं० हँकराना] १. बुलाने की क्रिया या भाव। बुलाहट। पुकार। २ बुलावा। न्योता। निमत्रण।

हँकलाना (पु)—क्रि० अ० [हिं० ?] अटक अटककर बोलना। रुक रुककर बोलना। उ०—कटि हलाइ हकलाइ कछु अद्भुत ख्याल बनाइ। अस को जा नहि फाग मे परगट दियो हँसाइ।—पद्माकर ग्र०, पृ० १५५।

हँकवा—सज्ञा पुं० [हिं० हाँक] शेर या किसी हिंस्र पशु के शिकार का एक ढग।

विशेष—इसमे बहुत से लोग ढोल, ताशे आदि बजाते और शोर करते हुए, जिस स्थान पर शेर होता है, उस स्थान के चारो ओर से चलते है और इस प्रकार शेर को हाँककर उस मचान की ओर ले जाते है जहाँ शिकारी उसे मारने के लिये बदूक भरे बैठे रहते है।

हँकवाना—क्रि० स० [हिं० हाँकना का प्रेर० रूप] १ हाँक लगवाना। बुलवाना। दूसरे से पुकारने का काम कराना। २. पशुओ या चौपायो को आवाज देकर हटवाना या किसी ओर भगाना। ३ रथ, बहली, इक्के आदि मे जुते जानवर को किसी के द्वारा चलवाना या आगे बढने के लिये प्रेरित कराना।

सयो० क्रि०—देना।

हँकवैया (पु)†—सज्ञा पु० [हिं० हाँकना + वैया (प्रत्य०)] हाँकनेवाला।

हँकाई—सज्ञा स्त्री० [हिं० हाँकना] १ रथ, बहली, इक्का, बैलगाडी आदि के पशुओ को हाँकने की क्रिया या भाव। २ हाँकने की मजदूरी।

हँकाना—क्रि० स० [हिं० हांक] १ चौपायों या जानवरों को आवाज देकर हटाना या किसी ओर से ले जाना । हाँकना । २ पुकारना । बुलाना । ३ दूसरे से हाँकने का काम कराना । हँकवाना ।

हँकार[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० हक्कार] १ आवाज लगाकर बुलाने की क्रिया या भाव । पुकार । २ वह ऊंचा शब्द जो किसी को बुलाने या संबोधन करने के लिये किया जाय । पुकार ।
मुहा० हकार पड़ना = बुलाने के लिये आवाज लगाना । पुकार मचाना ।

हँकार(पु)[2]—संज्ञा पुं० [सं० अहङ्कार, पु० हिं० हकार] दे० 'अहंकार' । उ०—सुरत ढाडस लाइकै तुम वाद करहु हँकार ।—धरनी० बानी, पृ० ३६ ।

हँकारना(पु)[1]—क्रि० स० [हिं० हँकार + ना (प्रत्य०)] १. आवाज देकर किसी को संबोधन करना । जोर से पुकारना । ऊँचे स्वर से बुलाना । टेरना । नाम लेकर चिल्लाना । उ०—ऊँचे तरु चढि श्याम सखन को बारबार हँकारत ।—सूर (शब्द०) । २ अपने पास आने को कहना । बुलाना । पुकारना । उ०—(क) धाय दामिनी वेग हँकारी । ओहि सौंपा हीये रिस भारी ।—जायसी (शब्द०) । (ख) देखी जनक भीर भइ भारी । शुचि सेवक सब लिए हँकारी ।—तुलसी (शब्द०) ।
संयो० क्रि०—देना । —लेना ।
३ दान कराना । बुलवाना । उ०—जाचक लिये हँकारि, दीन्हि निछावर कोटि विधि । चिर जीवहु सुत चारि, चक्रवर्ति दसरत्थ के ।- मानस, १।२६५ । ४ युद्ध के लिये आह्वान करना । ललकारना । हांक देना । उ०—देखत तहाँ जुरे भट भारी । एक एक सन भिरे हँकारी ।—रघुराज (शब्द०) ।

हँकारना[2]—क्रि० अ० गरजना । हुंकार करना ।

हँकारा - संज्ञा पुं० [हिं० हँकारना] १ पुकार । बुलाहट । २ निमंत्रण । आह्वान । ३ बुलौवा । न्योता । उ०—गुर बसिष्ठ कहँ गएउ हँकारा । आए द्विजन्ह सहित नृपद्वारा ।—तुलसी (शब्द०) ।
क्रि०प्र०—जाना ।—भोजन ।

हँकारी†—संज्ञा पुं० [हिं० हँकार + ई (प्रत्य०)] १ वह जो लोगों को बुलाकर लाने के काम पर नियुक्त हो । २ प्रतिहारी । सेवक ।

हँडकुलिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० हँडिया + कुलिया] बच्चों के खेलने के लिये रसोई के बहुत छोटे बरतनों का समूह ।

हँडवाई—संज्ञा स्त्री० [सं० भाण्ड या हण्डा, हण्डिका] भोजन आदि गृह-कार्य में प्रयुक्त होनेवाले पात्र । घर का माल असबाब । बर्तन-भाँडा । उ०—(क) हँडवाइ कीय मन माज मुद्ध । उज्जल रजक्क जनु उफनि दूध ।—पृ० रा०, १४।१२४ । (ख) हँडवाई घर में रही, और बिसाति न कोय ।—अर्ध०, पृ० ३० ।
मुहा०—हडवाई खाना = बर्तन भाँडा बेचकर प्राप्त द्रव्य से जीवन-यापन करना । उ०—हँडवाई खाई सकल रहे टका द्वै चारि ।—अर्ध०, पृ० ३१ ।

हँटवाना—क्रि० स० [हिं० हटना] हँटवाना । चलाना । रवाना करना । उ०—हँटवाई गाड़ी चहुँ ओर । नगदी माल निवरगी ठौर ।—अर्ध०, पृ० २८ ।

हुँडाना—क्रि० स० [सं० अभ्यटन या हिण्डन] १ घुमाना । फिराना । २ व्यवहार में लाना । काम में लाना ।

हुँडिक—संज्ञा पुं० [देश०] तालों का ठाट । (सुनार) ।

हँडिया—संज्ञा स्त्री० [सं० भाण्डिका अथवा हण्डिका] १ बड़े लोटे के आकार का मिट्टी का बरतन जिसमें चावल दाल पकाते या कोई वस्तु रखते हैं । हाँडी ।
मुहा०—हँडिया चढ़ाना = कोई वस्तु पकाने के लिये पानी रखकर हाँडी आग पर रखना । हँडिया चढ़ना = भोजन पकाना । पकाने के लिये हँडिया का अग्नि पर रखना ।
२ इस आकार का शीशे का पात्र जो शोभा के लिये लटकाया जाता है और जिसमें मोमबत्ती जलाई जाती है । ३ जौ, चावल आदि सड़ाकर बनाई हुई शराब ।

हँडावना(पु)—क्रि० स० [सं० हिण्डन, पु० हिं० हँडना, हुँडना] घुमाना । भटकाना । उ०—चहुँ का ना चहूँ का मीतु । जामैं चारि हँडावैं मीतु ।—प्राण०, पृ० १२७ ।

हँथोरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हथेली] दे० 'हथोरी' ।

हँथौरा—संज्ञा पुं० [हिं० हथौड़ा] दे० 'हथौड़ा' ।

हँथौरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हथौड़ा] दे० 'हथौड़ी' ।

हँफनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाँफना] हाँफने की क्रिया या भाव । अधिक परिश्रम के कारण जल्दी जल्दी और जोर जोर से चलती हुई साँस । हाँफ ।
मुहा०—हँफनि मिटाना = दम लेना । दम मारना । सुस्ताना । थकावट दूर करना । उ०—रात कहिबे में नंदलाल को उताल कहा हाल तौ हरिननैनी हफनि मिटाय लैं ।—शिव० (शब्द०) ।

हँफनी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० हांफना] हांफने का भाव या क्रिया । हाफ । दे० 'हँफनि' ।

हँसतामुखी(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० हँसता + मुख] हँसते चेहरेवाला । प्रसन्नमुख । उ०—जो देखा तो हँसतामुखी ।—जायसी (शब्द०) ।

हँसन—संज्ञा स्त्री० [हिं० हँसना] १ हँसने की क्रिया या भाव । २ हँसने का ढंग ।

हँसना[1]—क्रि० अ० [सं० हसन] १ आनंद के वेग से कंठ से एक विशेष प्रकार का आघातरूप स्वर निकालना । खुशी के मारे मुँह फैलाकर एक तरह की आवाज करना । खिलखिलाना । ठट्ठा मारना । हास करना । कहकहा लगाना ।
संयो०—क्रि०—देना ।—पड़ना ।
यौ०—हँसना बोलना = आनंद की बातचीत करना । जैसे,—चार दिन की जिंदगी में हँस बोल लो । हँसना खेलना = आनंद करना । हँसना हँसाना = आनंद से हँसना और अन्य को हँसाना या आनंदित करना ।

मुहा०—किसी व्यक्ति पर हँसना = विनोद की बात कहकर किसी को तुच्छ या मूर्ख ठहराना। उपहास करना। जैसे,—तुम दूसरो पर तो बहुत हँसते हो, पर आप कुछ नही कर सकते। किसी वस्तु पर हँसना = विनोद की बात कहकर किसी वस्तु को तुच्छ या बुरा ठहराना। उपहास करना। व्यंगपूर्ण निंदा करना। अनादर करना। उ०—(क) हँसिबे जोग, हँसे नहिं खोरी।—तुलसी (शब्द०)। (ख) हँसहि मलिन खल विमल बतकही।—तुलसी (शब्द०)। हँसते बोलते = दे० 'हँसते हँसते'। हँसते हँसते = प्रसन्नता से। खुशी से। बिना किसी प्रकार का कष्ट या बाधा का अनुभव किए। जैसे, – (क) राजपूतो ने हँसते हँसते युद्ध मे प्राण दिए। (ख) मैं हँसते हँसते यह सब कष्ट सह लूँगा। हँसते हँसते पेट मे बल पडना = इतना अधिक हँसना कि पेट मे दर्द होने लगे। हँसते हुए = दे० हँसते हँसते'। हँस बोल लेना = प्रसन्नतापूर्वक बातचीत करना। हँसता मुँह या चेहरा = प्रसन्न मुख। ऐसा चेहरा जिससे प्रसन्नता का भाव प्रकट होता हो। ठठाकर हँसना = जोर से हँसना। अट्टहास करना। उ०—दोउ एक सग न होहिं भुवालू। हँसब ठठाइ, फुलाउब गालू।—तुलसी (शब्द०)। बात हँसकर उडाना = ध्यान न देना। तुच्छ, साधारण या हलका समझकर विनोद मे टाल देना। जैसे,—मैं काम काम की बात कहता हूँ, तुम हँसकर उडा देते हो।

२ रमणीय लगना। मनोहर जान पडना। गुलजार या रौनक होना। जैसे,—यह जमीन कैसी हँस रही है। ३ केवल मनोरंजन के लिये कुछ कहना या करना। दिल्लगी करना। हँसी करना। मजाक करना। मसखरापन करना। जैसे,—मैं तो यो ही हँसता था, कुछ तुम्हारी छडी लिए नही लेता था। ४ आनद मनाना। प्रसन्न या सुखी होना। खुशी मनाना। जैसे,—यह तो दुनिया है कोई हँसता है, कोई रोता है।

हँसना²—क्रि० स० किसी का उपहास करना। व्यंग या हँसी की बात कहकर किसी को तुच्छ या मूर्ख ठहराना। विनोद के रूप मे किसी को हेठा, बुरा या मूख प्रकट करना। अनादर करना। हँसी उडाना। जैसे,—तुम दूसरो को तो हँसते हो, पर अपना दोष नही देखते।

हँसनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० हँसना] दे० 'हँसन'। उ०—अरुन अधर द्विज पाँति अनूपम ललित हँसनि जनु मन आकरषित।—तुलसी पृ० ४१५।

यौ०—हँसनि हँसावनि = स्वय हँसने और दूसरे को हँसाने की क्रिया या भाव। उ०—हँसनि हँसावनि पुनि डहकावनि।—नद० ग्र०, पृ० २६४।

हँसमुख—वि० [हिं० हँसना + मुख] १ प्रसन्न वदन। जिसके चेहरे से प्रसन्नता का भाव प्रकट होता हो। २ विनोदशील। हास्यप्रिय। ठठोल। हँसी दिल्लगी करनेवाला। चुहलबाज।

हँसली—संज्ञा स्त्री० [सं० अंसला] १ गरदन के नीचे और छाती के ऊपर की धन्वाकार हड्डी। २ गले मे पहनने का स्त्रियो का एक गहना जो मडलाकार और ठोस होता है तथा बीच मे मोटा और छोरो पर पतला होता है।

हँसाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० हँसना] १ हँसने की क्रिया या भाव। २ उपहास। लोगो मे निंदा। बदनामी। उ०—सूरदास कूबरि रँग राते ब्रज मे होति हँसाई।—सूर (शब्द०)।

यौ०—जग हँसाई। जगत हँसाई।

हँसाना—क्रि० स० [हिं० हँसना] १ दूसरे को हँसने मे प्रवृत्त करना। कोई ऐसी बात करना जिससे दूसरा हँसे। २ आनदित करना। खुश करना। प्रसन्न करना।

सयो० क्रि०—देना। —मारना।

हँसाय(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'हँसाई'।

हँसावनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० हँसाना] हँसाने का काय या स्थिति। उ०—लै लै व्यजन चखनि चखावनि। हँसनि हँसावनि, पुनि डहकावनि।—नद० ग्र०, पृ० २६४।

हँसिया¹—संज्ञा पुं० [सं० हस] १ लोहे का एक धारदार औजार जो अर्धचद्राकार होता है और जिससे खेत की फसल या तरकारी आदि काटी जाती है। २ लोहे की धारदार अर्धचद्राकार पट्टी जिससे कुम्हार गीली मिट्टी काटते है। ३ चमडा छीलकर चिकना करने का औजार। ४ हाथी के अकुश का टेढा भाग।

हँसिया²—संज्ञा स्त्री० [सं० हनु ? या सं० अंसल + हिं० इया (प्रत्य०)] गरदन के नीचे की धन्वाकार हड्डी। हँसली।

हँसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हँसना] १ हँसने की क्रिया या भाव। हास। उ०—बरजा पितै हँसी औ राजू।—जायसी (शब्द०)।

क्रि० प्र०—आना।

यौ०—हँसी खुशी = प्रसन्नता। हँसी ठट्ठा = आनदक्रीडा। मजाक।

मुहा०—हँसी छूटना = हँसी आना। हास की मुद्रा प्रकट होना।

२ हँसने हँसाने के लिये की हुई बात। मजाक। दिल्लगी। मनोरजन। विनोद। जैसे,—तुम तो हँसी हँसी मे रोने लगते हो।

क्रि० प्र०—करना। —होना।

यौ०—हँसी खेल = (१) विनोद और क्रीडा। (२) साधारण बात। सहज बात। आसान बात। हँसी ठठोली = विनोद और हास। दिल्लगी।

मुहा०—हँसी समझना या हँसी खेल समझना = साधारण बात समझना। आसान बात समझना। कठिन न समझना। जैसे—लीडर बनना क्या हँसी खेल समझ रखा है? हँसी में उडाना = किसी बात को यो ही दिल्लगी समझकर ध्यान न देना। साधारण समझकर ख्याल न करना। परिहास की बात कहकर टाल देना। हँसी मे ले जाना = किसी बात को मजाक समझना। किसी बात का ऐसा अर्थ समझना मानो वह ध्यान देने की नही है, केवल मनबहलाव की है। जैसे,—तुम तो मेरी बात हँसी मे ले जाते हो। हँसी मे फाँसी = दिल्लगी की बातचीत होते होते झगडा या मारपीट की नौबत आना।

३ किसी व्यक्ति को मूर्ख या किसी वस्तु को तुच्छ ठहराने के लिये कही

दृष्टि से। पक्ष मे। विषय मे। जैसे,—(क) ऐसा करना तुम्हारे हक मे अच्छा न होगा। (ख) हम तुम्हारे हक मे दुआ करेंगे।

३ कर्तव्य। फर्ज।

मुहा०—हक अदा करना = वह बात करना जो न्याय, नीति आदि की दृष्टि से करणीय हो। कर्तव्य पालन करना। जैसे,—वे दोस्ती का हक अदा कर रहे है।

४ वह वस्तु जिसे पाने, पास रखने या काम मे लाने का अथवा वह बात जिसे करने का न्याय से अधिकार प्राप्त हो। जैसे,—(क) यह रुपया तो नौकरो का हक है। (ख) यहाँ टहलना हमारा हक है। ५ वह द्रव्य या धन जो किसी काम या व्यवहार मे किसी को रीति के अनुसार मिलता हो। किसी मामले मे दस्तूर के मुताबिक मिलनेवाली कुछ रकम। दस्तूरी। जैसे,—(क) पुरोहित का हक तो पाँच रुपए सैकडा है। (ख) हमारा हक देकर तब जाइए। (ग) अदालत मे मुहर्रिरो का हक भी तो देना पडता है।

क्रि० प्र०—चाहना।—देना।—पाना।—माँगना।

मुहा०—हक दबाना या मारना = वह रकम न देना जो किसी को रीति के अनुसार दी जाती हो। जैसे,—नौकरो का हक मारकर आप राजा न हो जायँगे।

६ ठीक बात। वाजिब बात। उचित बात। ७ उचित पक्ष। न्याय पक्ष। जैसे,—मै तो हक पर हूँ, मुझे किस बात का डर है।

मुहा०—हक पर होना = न्याय्य पक्ष का अवलवन करना। उचित बात का आग्रह करना।

८ खुदा। ईश्वर। (मुसलमान)।

हकअंदेश—वि० [अ० हक + फा० अंदेश] हित सोचनेवाला। भलाई चाहनेवाला [को०]।

हकआगाह—वि० [फा० हकआगाह] सत्यनिष्ठ। सज्जन। साधु। महात्मा [को०]।

हकगो—वि० [फा० हकगो] सत्यभाषी। हक या न्याय की बात कहनेवाला [को०]।

हकगोई—सज्ञा स्त्री० [फा० हकगोई] सत्यवक्तृत्व। सत्यवादिता [को०]।

हकतलफी—सज्ञा स्त्री० [अ० हक + तलफी] १ अधिकार का अपहरण। हक छीनना या मार लेना। बेइंसाफी। अन्याय। उ०—विधाता ने उसे छोटा न बनाया होता, तो आज उसकी यह हकतलफी न होती। —गबन, पृ० ३०३। २ हानि। क्षति।

हकतायत—सज्ञा स्त्री० [अ० हक + ताअत] अधीनता। ताबेदारी। उ०—लिखा नबी कोरान मे आयत। मेरी उमत करै हकतायत।—सत० दरिया, पृ० २२।

हकताला—सज्ञा पुं० [अ० हक + तआला] महिमाशाली ईश्वर। खुदा। परमात्मा। उ०—ता महि तुम हजरत की वाला। सब कै एक वहै हकताला।—ह० रासो, पृ० ४०।

हकदक—वि० [अनु०] हक्का बक्का। स्तभित। चकित।

क्रि० प्र०—रहना। होना।

हकदार[१]—सज्ञा पुं० [अ० हक + फा० दार] १ वह जिसे हक हासिल हो। स्वत्व या अधिकार रखनेवाला। जैसे,—इस जायदाद के जितने हकदार हैं सब हाजिर हो। २ वह काश्तकार जिसका अपनी जमीन पर मौरूसी हक होता है।

हकदार[२]—वि० स्वत्व या अधिकार रखनेवाला [को०]।

हकधक—सज्ञा पु० [अनुध्व०] चकित। भौचक्का। बेसुध। हक्का-बक्का। उ०—कबहूँ हकधक हो रहै, उठै प्रेम हित गाय। सहजो आँख मुँदी रहै, कबहूँ सुधि हो जाय।—सतवाणी०, भा० १, पृ० १५८।

हकनाक†—वि० [अ० हक + फा० ना (प्रत्य०) + अ० हक] हक नाहक। व्यर्थ। फिजूल। बिलकुल बेकार। उ०—तब तो वह ब्राह्मन महादेव जी पै मरन लाग्यो। तब महादेव जी प्रगट होइ वा ब्राह्मन सो कहे, जो तू हकनाक क्यो मरत है? वाके भाग्य मे पुत्र नाही।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ४५।

हकनाहक[१]—अव्य० [अ० हक + फा० ना (प्रत्य०) + अ० हक] १. बिना उचित अनुचित के विचार के। जबरदस्ती। धीगाधीगी से। जैसे,—क्यो हकनाहक बेचारे की चीज ले रहे हो। २ बिना कारण या प्रयोजन। निष्प्रयोजन। व्यर्थ। फजूल। जैसे,—क्यो हकनाहक लड रहे हो। उ०—हकनाहक पकरे सकल जडिया कोठीवाल। हुडीवाल सराफ नर अरु जौहरी दलाल।—अर्ध०, पृ० ४३।

हकनाहक[२]—सज्ञा पु० नीति अनीति। न्याय अन्याय। उचित अनुचित। सत्य असत्य [को०]।

हकपसद—वि० [अ० हक + फा० पसद] हक, न्याय या सत्य को पसद करनेवाला।

हकपसदी—सज्ञा स्त्री० [अ० हक + फा० पसदी] हकपसद होना। सत्य को पसद करना। सत्यप्रियता [को०]।

हकपरस्त—वि० [अ० हक + फा० परस्त] १ ईश्वरभक्त। २ सत्य का उपासक। सत्यनिष्ठ। न्यायी।

हकपरस्ती—सज्ञा स्त्री० [अ० हक + परस्ती] धर्मपरायणता। सत्यनिष्ठता।

हकफरामोश—वि० [अ० हक + फा० फरामोश] कृतघ्न। उपकार और एहसान भूल जानेवाला। नमकहराम [को०]।

हकफरामोशी—सज्ञा स्त्री० [अ० हक + फा० फरामोशी] कृतघ्नता। नीचता। नमकहरामी [को०]।

हकबक—वि० [अनु०] दे० 'हक्का बक्का'।

हकबकाना—क्रि० अ० [अनु० हक्का बक्का] किसी ऐसी बात पर जिसका पहले से अनुमान तक न रहा हो अथवा जो अनहोनी या भयानक हो, स्तभित हो जाना। ठक रह जाना। हक्का-बक्का हो जाना। सहसा निश्चेष्ट और मौन होकर मुँह ताकने लगना। घबरा जाना।

हकमालिकाना—सज्ञा पुं० [अ० हक + फा० मालिकानह्] किसी चीज या जायदाद के मालिक का हक।

हकमौरूसी—संज्ञा पुं० [अ० हक मौरूसी] वह अधिकार जो पितृपरंपरा से प्राप्त हो। वह हक जो बाप दादों से चला आता हो।

हकरसी—संज्ञा स्त्री० [अ० हक + फा० रसी] न्याय पाना। इन्साफ पाना। उ०—ताज की वफादारी, ईमानदारी, मुल्क का इन्तजाम सब लोगों की हकरसी, और हरेक आदमी के फायदे के लिये इन्साफ करना बहुत जरूरी है।—श्रीनिवास ग्रं०, पृ० ३८६।

हकला—वि० [हिं० हकलाना] रुक रुककर बोलनेवाला। वाग्दोष के कारण हकलानेवाला। किसी वाक्य को एक साथ न बोल सकनेवाला।

हकलाना—क्रि० अ० [अनु० हक] स्वर नाली के ठीक काम न करने या जीभ तेजी से न चलने के कारण बोलने में अटकना। रुक रुककर बोलना।

हकलापन—संज्ञा पुं० [हिं० हकला + पन (प्रत्य०)] १ हकला होने की क्रिया या भाव। हकलाने का भाव। २ हकलाने की आदत या दोष।

हकलाहट†—संज्ञा स्त्री० [हिं० हकलाना] दे० 'हकलापन'।

हकलाहा—वि० [हिं० हकलाना] दे० 'हकला'।

हकशफा—संज्ञा पुं० [अ० हकशुफा] किसी जमीन को खरीदने का औरों से ऊपर या अधिक वह हक या स्वत्व जो गाँव के (जिसमें बेची हुई जमीन हो) हिस्सेदारों अथवा पड़ोसियों को प्राप्त हो।

विशेष—यदि कोई व्यक्ति इस प्रकार की जमीन बेच देता है, तो जिसे इस प्रकार का स्वत्व प्राप्त होता है, वह अदालत के द्वारा उतना ही या जितना अदालत ठहरा दे, अथवा खरीदार ने जितना दाम देकर खरीद की हो उतना दाम देकर वह जमीन ले सकता है।

हकार—संज्ञा पुं० [सं०] ह अक्षर या वर्ण।

हकारत—संज्ञा स्त्री० [अ० हकारत] अपमान। तिरस्कार। तुच्छता [को०]।

मुहा०—हकारत की निगाह से देखना = ओछी या अपमानयुक्त दृष्टि से ताकना।

हकारना¹—क्रि० स० [देश०] १ पाल तानना या खड़ा करना। २ झंडा या निशान उठाना। (लश्करी)।

हकारना²—क्रि० स० [सं० आकारण] बुलाना। पुकारना। उ०—(क) राजह सूर हकार लिय।—दिय सादर सनमान। वीर विरद वरदाय प्रति, लग्गे वत्त पुछान पृ० रा०, ६।१४७। (ख) विरमिय हम्मिय क्रोध करि चर कह दीन हकार। पगुर नृप नहिं जग करि अमिय नृप असवार।—प० रासो, पृ० १३३।

हकीकत—संज्ञा स्त्री० [अ० हकीकत] १ तत्व। सचाई। असलियत। सत्यता। २ मर्यादा। बिसात। हसियत (को०)। ३ तथ्य। ठीक बात। असल असल बात। ४ ठीक ठीक वृत्तांत। असल हाल। सत्य वृत्त। जैसे—उसकी हकीकत यों है। उ०—शबे फुरकत में रो रोकर सहर की। हकीकत क्या कहूँ मैं रात भर की।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० २६।

मुहा०—हकीकत खुलना = असल बात का पता लग जाना। ठीक ठीक बात मालूम हो जाना। हकीकत में = वास्तव में। सचमुच।

हकीकतन—अव्य० [अ० हकीकतन्] यथार्थतः। वास्तव में। वाकई। सचमुच [को०]।

हकीकी—वि० [अ० हकीकी] १ असली। ठीक। सच्चा। सत्य। २ खास अपना। सगा। आत्मीय। जैसे,—हकीकी भाई। ३ ईश्वरोन्मुख। भगवत्संबंधी। जैसे,—इश्क हकीकी। उ०—शगल बहतर है इश्कबाजी का। क्या हकीकी व क्या मजाजी का।—कविता कौ०, भा० ८, पृ० ४। ४ शब्द का अर्थ। अभिधेय अर्थ।

हकीगत(पु)†—संज्ञा स्त्री० [अ० हकीकत] दे० 'हकीकत'। उ०—भील गुह्यो वन मिले भाव सूँ, परम भगत पोरस भरपूर। मोटण लागो आप दिस मांजो, जिणनूँ कहो हकीगत जाझी, दल राखस करणाहिव दूर।—रघु० रू०, पृ० ११०।

हकीम—संज्ञा पुं० [अ०] १ विद्वान्। आचार्य। ज्ञानी। जैसे,—हकीम अरस्तू। २ यूनानी रीति से चिकित्सा करनेवाला वैद्य। चिकित्सक।

हकीमी¹—संज्ञा स्त्री० [अ० हकीम + ई (प्रत्य०)] १ यूनानी आयुर्वेद। यूनानी चिकित्सा शास्त्र। २ हकीम का पेशा या काम। वैदगी। जैसे, वे लखनऊ में हकीमी करते हैं।

हकीमी²—वि० हकीम का। हकीम संबंधी। जैसे,—हकीमी इलाज। हकीमी नुस्खा।

हकीयत—संज्ञा स्त्री० [अ० हकीयत] १ स्वत्व। अधिकार। २ वह वस्तु या जायदाद जिसपर हक हो। ३ अधिकार होने का भाव। जैसे,—तुम अपनी हकीयत साबित करो।

हकीर—वि० [अ० हकीर] १ जिसका कुछ महत्व न हो। बहुत छोटा। तुच्छ। नाचीज। उ०—क्या बात कहते हो पीराने पीर। मुजे क्या जो बूजे हो तुमने हकीर।—दक्खिनी०, पृ० २३४। २ उपेक्षा के योग्य। उपेक्षणीय। उ०—मैं इस हकीर हज्जाम के मुँह से निकले शब्दों की सचाई तसलीम करता हूँ।—पीतल०, पृ० ३६०।

हको हक्क—संज्ञा पुं० [प्रा० हक्क, हक अथवा अनुध्व०] जोर से बोलने की ध्वनि। हाँक। उ०—हकोहक्क बाजी गजे मेघनद्द। जगे लोडलोय कुसद्दे कुमद्द।—पृ० रा०, १२।६३।

हकूक—संज्ञा पुं० [अ० हकूक] 'हक' का बहुवचन। कई प्रकार के स्वत्व या अधिकार।

हकूमत‡—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'हुकूमत'।

हक्क¹—संज्ञा पुं० [सं० अनु०] हाथी को बुलाने का शब्द।

हक्क²—संज्ञा पुं० [अ० हक्क] दे० 'हक'। उ०—हक्का बेली हक्क है वे हक्का वे हक्क। हरिया एकै हक्क बिन सब दिन जाहि अनहक्क।—राम० धर्म०, पृ० ६६।

हक्क³—संज्ञा पुं० [अ०] खुरचना। छीलना। काटना। तराशना [को०]।

हक्कना(पु)—क्रि० स० [प्रा० हक्क, हिं० हाँक] चिल्लाना। हाँक देना। उ०—घर मध्य धरै घर हक्क खल।—ह० रासो, पृ० ७८।

हक्क हलाल—संज्ञा पुं० [अ० हक्क हलाल] विहित या जायज स्वत्व। उचित अधिकार। उ०—हक्क हलाल आप से आवै, लेना और हराम।—पलटू०, भा० ३, पृ० ६१।

हक्का¹—संज्ञा पुं० [अ० हक्क] वह नोट या पुरजा जो कोई गल्ले का व्यापारी किसी असामी के लगान की जमानत के रूप में जमींदार को देता है।

हक्का†[२]—संज्ञा पुं० [देश०] लकडी का एक प्रकार का आघात या प्रहार। (लखनऊ)।

हक्का[३]—संज्ञा पुं० [सं०] उलूक। उल्लू [को०]।

हक्काक—संज्ञा पुं० [अ०] १ नग जडनेवाला। नग को काटने, सान पर चढाने, जटने आदि का काम करनेवाला। जडिया। २ खुरचनेवाला। छीलने या खोदनेवाला व्यक्ति (को०)।

हक्कानी—वि० [अ० हक्कानी] ईश्वरीय। खुदाई। हक संबंधी।

हक्कानीयत—संज्ञा स्त्री० [अ० हाक्कानीयत] १ सत्यता। सचाई। यथार्थता। २ हक्कानी होने का भाव [को०]।

हक्का बक्का—वि० [अनु० हक, धक] किसी ऐसी बात पर स्तंभित जिसका पहले से अनुमान तक न रहा हो अथवा जो अनहोनी या भयानक हो। सहसा निश्चेष्ट और मौन होकर मुँह ताकता हुआ। भौचक। घबराया हुआ। चित्रलिखा सा। ठक। जैसे—यह सुनते ही वह हक्का बक्का हो गया।

हक्कार—संज्ञा पुं० [सं०] चिल्लाकर बुलाने का शब्द। पुकार।

हक्काहक्क—संज्ञा पुं० [सं०] पुकार। ललकार [को०]।

हगनहटी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० हगना] १ मलत्याग की इंद्रिय। गुदा। २ वह स्थान जहाँ लोग पाखाना फिरते है।

मुहा०—हगनहटी करना या बनाना = किसी स्थान पर गंदा करना। हगनहटी। मचाना = बारबार दस्त करना।

हगना—क्रि० अ० [सं० हदन] १ मलोत्सर्ग करना। मलत्याग करना। झाडा फिरना। पाखाना फिरना।

संयो० क्रि०—देना।

मुहा०—हग भरना या मारना = (१) हग देना। मलोत्सर्ग कर देना। (२) अत्यंत भयभीत होना। बहुत डर जाना। २ दबाव के मारे कोई वस्तु दे देना। झक मारकर अदा कर देना। जैसे,—दावा होगा तो सब रुपया हग दोगे। ३ बहुत गंदा कर देना।

हगनेटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हगनहटी] दे० 'हगनहटी'।

हगाना†—क्रि० स० [हिं० हगना का सक० रूप] १ हगने की क्रिया कराना। पखाना फिरने पर विवश करना।

संयो० क्रि०—देना।

२ पाखाना फिरने मे सहायता देना। मलत्याग कराना। जैसे,—बच्चे को हगाना।

मुहा०—हगा मारना = बहुत थका देना या किसी को परेशान करना। हगा लेना = किसी से बलात् प्राप्य वस्तु या द्रव्य वसूल करना।

हगास—संज्ञा स्त्री० [हिं० हगना + आस (प्रत्य०)] हगने की इच्छा। मलत्याग का वेग या इच्छा।

क्रि० प्र०—लगना।

हगोडा†—वि० [हिं० हगना + ओडा (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० हगोडी] बहुत हगनेवाला। बहुत झाडा फिरनेवाला।

हग्गन†, हग्गू†—वि० [हिं०] बहुत हगनेवाला। हगोड़ा।

हच्चक—संज्ञा स्त्री० [हिं० हचकना] धक्का। झोका। झटका।

मुहा०—हचक खाना = आगे पीछे या नीचे ऊपर होना। झटका खाना। झोका खाना।

हचकना†[१]—क्रि० अ० [अनु० हच हच] चारपाई, गाडी आदि का झोका खाना या बार बार हिलना। धक्के से हिलना डोलना।

हचकना[२]—क्रि० स० १ दे० 'हचकाना'। २ जोर से मारना।

मुहा०—हचक देना = जोर से मारना।

हचका—संज्ञा पुं० [हिं० हचकना] धक्का। झोका।

क्रि० प्र०—देना। मारना।

हचकाना—क्रि० स० [हिं० हचकना का सक० रूप] धक्के से हिलाना। झोका देकर हिलाना।

हचकीला—वि० [हिं० हचक + ईला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० हचकीली] हचकनेवाला। हिलने डुलनेवाला [को०]।

हचकोला—संज्ञा पुं० [हिं० हचकना] १ वह धक्का जो गाडी, चारपाई आदि पर उछलने या हिलने डोलने से लगे। धचका। २. आघात। चढाव उतार। उ०—आया हचकोला फाग का। खग लगे परखने नये नये सुर अपने अपने राग का।—इत्यलम्, पृ० २०६।

हचना—क्रि० अ० [अनु० हच] किसी काम के करने मे संकोच या आगा पीछा करना। हिचकना।

हज[१]—संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानो का काबे के दर्शन के लिये मक्के जाना। मुसलमानो की मक्के की तीर्थयात्रा। जैसे,—सत्तर चूहे खा के बिल्ली हज को चली।

हज[२]—संज्ञा पुं० [अ० हज] १ आनंद। मजा। राहत। सुख। २ भाग। हिस्सा। लाभ। ३ खुशी। हर्ष [को०]।

हजम[१]—संज्ञा पुं० [अ०] स्थूलता। मोटाई। दल। २—आकार प्रकार [को०]।

हजम[२]—संज्ञा पुं० [अ० हज़्म, हज़्म] १ पेट मे पचने की क्रिया या भाव। पाचन। २ पाचन शक्ति। हाजमा (को०)। ३ तस्करता। गबन [को०]।

हजम[३]—वि० १ जो पाचन शक्ति द्वारा रस या धातु के रूप मे हो गया हो। पेट मे पचा हुआ। जैसे,—दूध हजम होना। रोटी हजम करना।

क्रि० प्र०—करना। होना।

१ बेईमानी से दूसरे से लेकर जो न दी गई हो। बेईमानी से लिया हुआ। अनुचित रीति से अधिकार किया हुआ। जैसे—(क) दूसरे का माल या रुपया हजम करना। (ख) दूसरे की चीज हजम करना।

क्रि० प्र०—करना।—होना।—कर जाना।—कर लेना।

मुहा०—हजम होना = बेईमानी से ली हुई वस्तु का अपने पास रहना। जैसे—बेईमानी का माल हजम न होना।

हजर[१]—संज्ञा पुं० [अ०] प्रस्तर। पत्थर।

यौ०—हजरुलवकर = गोरोचन । हजरे असवद = कावा की दीवार मे लगा हुआ काला पत्थर । विशेष दे० 'सगअसवद' ।

हजर²—सज्ञा पुं० [अ० हज़र] एक जगह स्थित होना या ठहरना । अवस्थिति । उपस्थिति । मौजूदगी । सफर का विपरीतार्थ ।

हजरत—सज्ञा पुं० [अ० हज़रत] १ महात्मा । महापुरुष । जैसे,—हजरत मुहम्मद । २ अत्यत आदर का सबोधन । महामान्य । ३ चालाक या धूर्त व्यक्ति । नटखट या खोटा आदमी । (व्यग्य) । जैसे—आप बडे हजरत हैं, यो झगडा लगाया करते हैं । ४ समीपता । सामीप्य (को०) ।५ गोष्ठी । मजलिस । सभा । दरबार (को०) । ६ अत्यत आदरणीय व्यक्ति । उ०—ता महि तुम हजरत की बाला ।—ह० रासो, पृ० ४० ।

हजरत सलामत—सज्ञा पुं० [अ० हजरत सलामत] १ बादशाहो या नवाबो के लिए सबोधन का शब्द । २ बादशाह ।

यौ०—हजरतसलामत पसद = जो बादशाह को प्रिय या पसद हो ।

हजाम—सज्ञा पुं० [अ० हज्जाम] दे० 'हज्जाम' ।

हजामत¹—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ हज्जाम का काम । बाल बनाने का काम । दाढी के बाल मूँडने या काटने का काम । क्षौर । २ बाल बनाने की मजदूरी । ३ सिर या दाढी के बढे हुए बाल जिन्हे काटना या मुँडाना हो ।

मुहा०—हजामत बढना या बढाना = बालो का बढना या बढाना । हजामत बनाना = (१) दाढी या सिर के बाल साफ करना या काटना । (२) लूटना । धन हरण करना । माल मूस लेना । जैसे,—धूर्तो ने वहाँ उसकी खूब हजामत बनाई । (३) दड देना । मारना । पीटना । हजामत बनवाना = दाढी के बाल साफ कराना या सिर के व ल कटाना । हजामत होना = (१) किसी के धन का धोखा देकर हरण होना, लूट होना । (२) दड होना । शासन होना । मार पडना । जैसे,—बचा की वहा खूब हजामत हुई ।

हजामत²—सज्ञा स्त्री० [अ० हजामत] प्रवीणता । दक्षता । कुशलता । होशियारी (को०) ।

हजार—वि० [फा० हज़ार] जो गिनती मे दस सौ हो । सहस्र । उ०—तुम सलामत रहो हजार बरस । हर बरस के हो दिन पचास हजार ।—कविता कौ०, भाग० ४, पृ० ४६० । २ अत्यधिक । बहुत से । अनेक । जैसे,—उनमे हजार ऐब हो, पर वे हैं तो तुम्हारे भाई । उ०—दोउनि को दोउनि के रूप लखिबे कौं मनो चार आँख होत ही हजार आँख ह्वै गईं ।—रत्नाकर, भा० २, पृ० ११ ।

हजार²—सज्ञा पुं० दस सौ की सख्या या अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१००० ।

हजार³—क्रि० वि० कितना ही । चाहे जितना अधिक । जैसे,—तुम हजार कहो, तुम्हारी बात मानता कौन ?

हजारदास्ताँ—सज्ञा पुं० [फा० हज़ार दास्ताँ] एक प्रसिद्ध चिडिया । विशेष दे० 'बुलबुल ।

हजारपा—सज्ञा पुं० [फा० हजारपा] हजार पाँववाला, कनखजूरा । गोजर (को०) ।

हजारहाँ—वि० [फा० हजारहा] हजारो । हजारहा । उ०—जिनके बुजुर्गो के पीछे हजारहाँ बन्दगाने खुदा के पेट पलते थे, ।—प्रेमघन, भा० २, पृ० ८५ ।

हजारहा—वि० [फा० हजारहा] १ हजारो । सहस्रो । २ बहुत से ।

हजारा—वि० [फा० हज़ारह्] (फूल) जिसमे हजार या बहुत अधिक पखडियां हो । सहस्रदल । जैसे—हजारा गेंदा ।

हजारा—सज्ञा पुं० १ फुहारा । फौवारा । २ एक प्रकार की आतिशबाजी । ३ पौधो मे पानी देने का एक प्रकार का पात्र जिसमे फौवारा लगा होता है । उ०—शाम को चक्रधर मनोरमा के घर गए, वह बागीचे मे दौड दौडकर हजारे से पौधो को सीच रही थी ।—काया०, पृ०, ७२ ।

हजारी¹—सज्ञा पुं० [फा० हज़ारी] १ एक हजार सिपाहियों का सरदार । वह सरदार या नायक जिसके अधीन एक हजार फौज हो ।

यौ०—पचहजारी । दसहजारी ।

विशेष—इस प्रकार के पद अकबर ने सरदारो और राजाओ, महाराजाओ को दे रखे थे ।

यौ०—हजारी बजारी = सरदारो से लेकर बनियो तक सब । अमीर गरीब सब । सर्वसाधारण ।

२ हजार सिपाहियो का दल (को०) । ३ एक पद या ओहदा जो शाही सल्तनत मे प्रचलित था । ४ व्यभिचारिणी का पुत्र । दोगला । वर्णसकर ।

हजारी²—वि० हजार की सख्या से सबधित (को०) ।

हजारों—वि० [फा० हजार + ओं (प्रत्य०)] १ सहस्रो । २ बहुत से । अनेक । न जाने कितने । जैसे,—तुम्हारे ऐसे हजारो आते है ।

मुहा०—हजारो घडे पानी पड जाना = बहुत लज्जित होना । हजारो मे = (१) बहुत से लोगो के बीच मे । जैसे,—वह हजारो मे एक है । (२) खुले रूप से । हजारो के समक्ष । खुल्लम खुल्ला । जैसे,—मै हजारो मे कहूँगा, मुझे डर किसका ।

हजूम—सज्ञा पुं० [अ०] दे० 'हुजूम' (को०) ।

हजूर¹—सज्ञा पुं० [अ० हुजूर] दे० 'हुजूर' ।

हजूर²—वि० [अ०] त्रस्त । भयभीत । डरा हुआ या डरनेवाला (को०) ।

हजूरा(पु)—अव्य० [अ० हुजूर] हुजूर मे । समीप या पार्श्व मे । उ०—(क) चौवा चदन कपूरा । कस्तूरी अग्र हजूरा ।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० १२८ । (ख) भक्त होय सतगुर का पूरा । रहै पुरुष के नित्त हजूरा ।—कबीर सा०, पृ० ८२० ।

हजूरी¹—सज्ञा पुं० [अ० हुजूर] [स्त्री० हजूरी] किसी बादशाह या राजा के सदा पास रहनेवाला सेवक । चाकर । दास । उ०—सचु जोग प्रानपति पूरी । नानक जोगी भया हजूरी ।—प्राण०, पृ० २७८ ।

हजूरी²—सज्ञा स्त्री० सेवा । उपस्थिति । उ०—सदा हजूरी सतगुर चरणी । सत टहल सतगुर की शरणी ।—प्राण०, पृ० ९२ ।

हज़ूल—वि० [अ०] कुलटा। व्यभिचारिणी [को०]

हजो—संज्ञा स्त्री० [अ० हज्व] १ निंदा। बुराई। अपकीर्ति। बदनामी।

क्रि० प्र० करना।—होना।

२ वह कविता जो किसी के प्रति निंदा, अपकीर्ति या व्यंग्योक्तिपरक हो।

हज्ज[1]—संज्ञा पुं० [अ०] दे० 'हज[1]'। उ०— खालिक खलक खलक मे खालिक, ऐसा अजब जहूरा है। हाजी हज्ज हज्ज मे हाजी, हाजिर हाल हजूरा हे।—पलटू०, भा० ३, पृ० ८०।

हज्ज[2]—संज्ञा पुं० [अ० हज्ज] दे० 'हज[2]'।

हज्जाम—संज्ञा पुं०[अ०] १ हजामत बनानेवाला। सिर और दाढी के बाल मूँडने या काटनेवाला। नाई। नापित। उ०—मैं इस हकीर हज्जाम के मुँह से निकले शब्दों की सचाई तसलीम करता हूँ।—पीतल०, पृ० ३६०। २ सिंगी लगानेवाला जर्राह। पछना लगानेवाला व्यक्ति (को०)।

हज्जामी—संज्ञा स्त्री० [अ० हज्जाम+ई(प्रत्य०)] हज्जाम का काम या पेशा।

हज्जार(पु)—वि० [फा० हजार] सहस्र। हजार। उ०—पैयर दए पचास सँग, हय दिय जुग हज्जार। सब परिगह के सँग पठय, कनक सिंघ सरदार।—प० रासो, पृ० ३८।

हज़्म—संज्ञा पुं० [अ० हज़्म] दे० 'हजम[2]' [को०]।

हट—संज्ञा स्त्री०[स० हठ] दे० 'हठ'।

हटक—संज्ञा स्त्री०[हिं० हटकना] १ वारण। वर्जन।

मुहा०—हटक मानना = मना करने पर किसी काम से रुकना। निषेध का पालन करना। उ०—बसी धुनि मृदु कान परत ही गुरुजन हटक न मानति।—सूर (शब्द०)।

२ गायों को हाँकने की क्रिया या भाव।

हटकन†—संज्ञा स्त्री० [हिं० हटकना] १ वारण। वर्जन। मना करना। २ चौपायों को फेरने का काम। हाँकना। ३ चौपयों को हाँकने की छडी या पैना।

हटकना[1]—क्रि० स० [हिं० हट (= दूर होना) + करना] १ मना करना। निषेध करना। वर्जन करना। किसी काम से हटाना या रोकना। उ०—(क) तुम्ह हटकहु जौं चहहु उबारा। कहि प्रतापु, बल रोष हमारा।—तुलसी (शब्द०)। (ख) जुरी आय सिगरी जमुना तट हटक्यो कोउ न मान्यो।—सूर (शब्द)। २ चौपायों को किसी ओर जाने से रोककर दूसरी ओर फेरना। रोककर दूसरी तरफ हाँकना। उ०—(क) पायँ परि बिनती करौं हौं हटकि लावौ गाय।—सूर (शब्द०)। (ख) माधव जू ! नेकु हटकौ गाय।—सूर (शब्द०)।

मुहा०—हटकि = (१) हठात्। जबरदस्ती। (२) बिना कारण।

हटकना[2]—क्रि० अ० रुकना। हिचकिचाना।

हटका†—संज्ञा पुं० [हिं०हटकना (= रोकना)] १. किवाडो को खुलने से रोकने के लिये लगाया हुआ काठ। किल्ली। अर्गल। ब्योंडा। २ प्रतिबंध। रोक। निवारण। उ०—ना थिर रहहि न हटका मानैं, पलक पलक उठि धौना।—जग० श०, भा० २, पृ० ६५।

हटतार[1]—संज्ञा पुं० [स० हरिताल] एक खनिज पदार्थ जिसमे संखिया और गंधक मिला रहता है। विशेष दे० 'हरताल'।

हटतार[2]—संज्ञा स्त्री० [हिं० हठनार ?] १. माला का सूत। उ०—प्रीत प्रीत हटतार तैं नेह जु सरसै आइ। हिय तामैं कौ रसिक निधि बेधि तुरत ही जाइ।—(शब्द०)। २ हठपूर्वक देखने का तार या सिलसिला। टकटकी। उ०—वह रूप की रासि लखी तब तें सखी आँखिन कैं हटतार भई।—घनानंद, पृ० ५०।

हटतार(पु)[3]—संज्ञा स्त्री० [स० हट्ट + ताल] असतोष व्यक्त करने के लिये या भय के कारण बाजार बंद करना। दूकानो मे ताला लगा देना। उ०—तीन दिवस अजमेर मे परी हट्ट हटतार।—पृ० रा०, ५।८८।

हटताल—संज्ञा स्त्री० [सं० हट्ट (= बाजार) + ताल (= ताला)] किसी कर या महसूल से अथवा और किसी बात से असंतोष प्रकट करने के लिये दूकानदारो का दूकान बंद कर देना अथवा काम करनेवालो का काम बंद कर देना। हडताल।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

हटना[1]—क्रि० अ० [स० घट्टन] १ किसी स्थान को त्यागकर दूसरे स्थान पर हो जाना। एक जगह से दूसरी जगह पर जा रहना। खिसकना। सरकना। टलना। जैसे,—(क) थोडा पीछे हटो। (ख) जरा हटकर बैठो। (ग) उन्होने बहुत जोर लगाया, पर पत्थर अपनी जगह से न हटा।

संयो० क्रि०—हटना बढना = ठीक स्थान से कुछ इधर उधर होना या सरकना।

२ पीछे की ओर धीरे धीरे जाना। पीछे सरकना। पश्चात्पद होना। जैसे,—भालो की मार से सेना हटने लगी। ३. विमुख होना। जी चुराना। करने से भागना। जैसे,—मैं काम से नही हटता।

मुहा०—(किसी बात से) पीछे न हटना = मुँह न मोडना। विमुख न होना। तत्पर या प्रस्तुत रहना। कोई काम करने को तैयार रहना। जैसे,—जो बात मैं कह चुका हूँ, उससे पीछे न हटूँगा।

४ सामने से दूर होना। सामने से चला जाना। जैसे,—हमारे सामने से हट आओ, नही तो मार खाओगे।

मुहा० —हटकर सड = चल। दूर हो। (अत्यंत अवज्ञा का सूचक)।

५ किसी बात का नियत समय पर न होकर और आगे किसी समय होना। टलना। जैसे,—विवाह की तिथि अब हट गई। ६ न रह जाना। दूर होना। मिटना या शात होना। जैसे,—आपदा हटना, संकट हटना, सूजन हटना। ७ व्रत, प्रतिज्ञा आदि से विचलित होना। बात पर दृढ न रहना। ८ किसी ओहदा, पद, अधिकार आदि से अलग हो जाना। पद का त्याग करना। जैसे,—अस्वस्थता के कारण वे मंत्री के पद से हट गए।

हटना(पु)†[2]—क्रि० स० [हिं० हटकना] मना करना। निषेध करना। वारण करना। वर्जित करना। रोकना। उ०—देत दुख बार बार कोऊ नहिं हटत।—सूर (शब्द०)।

हटनी उडी—सज्ञा स्त्री० [हिं० हटना + उडना] मालखभ की एक कसरत जिसमे पीठ के बल होकर ऊपर जाते हैं।

हटपर्णि, हटपर्णी—सज्ञा स्त्री० [स०] शैवाल। सेवार [को०]।

हटवया†—सज्ञा पुं० [हिं० हाट + वया] [स्त्री० हटवई] हाट या बाजार मे बैठकर सौदा बेचनेवाला। दूकानदार। विक्रेता।

हटरी†—सज्ञा स्त्री० [सं० अस्थि, हड्ड, प्रा० अट्ठि, हड्डि, सं० हट्ट + अप० डी (प्रत्य०)] १ दे० 'ठठरी'। २ दे० 'हाट' या 'हट्टी'। उ०—हटरी छोडि चला बनिजारा। इस हटरी बिच मानिक मोती, कोई बिरला परखनहारा।—सतवाणी०, भा० २, पृ० ८।

हटवा—सज्ञा पुं० [हिं० हाट] वह जो हाट पर बैठकर सौदा बेचता हो। हाटवाला। दूकानदार। उ०—जैसे हाट लगावे, हटवा सौदा बिन पछतावोगे।—कबीर श०, भा० १, पृ० २१।

हटवाई—सज्ञा स्त्री० [हिं० हाट + वाई (प्रत्य०)] सौदा लेना या बेचना। क्रय विक्रय। खरीद फरोख्त। उ०—माधो! करौ हटवाई हाट उठि जाई।—कबीर (शब्द०)।

हटवाडा⑤†—सज्ञा पुं० [हिं० हटवा + डा (प्रत्य०) या हटवार] १ दे० 'हटवार'। २ पण्यवीथिका। बाजार। विपणि। उ०—जग हटवाडा स्वाद ठग, माया वेसाँ लाइ। रामचरन नीकाँ गही, जिनि जाइ जनम ठगाइ।—कबीर ग्र०, पृ० ३२।

हटवाना—क्रि० स० [हिं० हटाना का प्रेरणा०] हटाने का काम दूसरे कराना। हटाने मे प्रवृत्त करना। दूसरे से स्थानातरित कराना।

हटवानी†—सज्ञा पुं० [हिं० हट (=हाट) + वानी (प्रत्य०)] दे० 'हटवार'। उ०—घर घर दर दर दिए कपाट। हटवानी नहि बैठें हाट।—अर्ध०, पृ० २४।

हटवार⑤†[1]—सज्ञा पुं० [हिं० हाट + वारा (वाला)] बाजार मे बैठकर सौदा बेचनेवाला। दूकानदार।

हटवार[2]—वि० [हिं० हटना] स्थानातरित करनेवाला। हटाने का काम करनेवाला। हटानेवाला।

हटवैया†—वि० [हिं० हटाना + वैया] दे० 'हटवार'[2]।

हटा—सज्ञा पुं० [हिं० हटकना, हटका] वारण। वर्जन। निषेध। उ०—कोउ काहु को हटा न माना। झूठा खसम कबीर न जाना।—कबीर बी० (शिशु०), पृ० ७३।

हटाना—क्रि० स० [हिं० हटना का सक० रूप] १ एक स्थान से दूसरे स्थान पर करना। एक जगह से दूसरी जगह पर ले जाना। सरकाना। खिसकाना। किसी ओर चलाना या बढाना। जैसे,—चौकी बाईं ओर हटा दो।

सयो० क्रि०—*देना।—लेना।*

२. किसी स्थान पर न रहने देना। दूर करना। जैसे,—(क) चारपाई इस कोठरी मे से हटा दो। (ख) इस आदमी को यहाँ से हटा दो। ३ आक्रमण द्वारा भगाना। स्थान छोडने पर विवश करना। जैसे,—थोडे से वीरो ने शत्रु की सारी सेना हटा दी। ४ किसी काम का करना या किसी बात का विचार या प्रसग छोड़ना। जाने देना। जैसे,—(क) खतम करके हटाओ, कब तक यह काम लिए बैठे रहोगे। (ख) बखेडा हटाओ। ५ किसी को नौकरी या पद से अलग करना। बर्खास्त करना। पदमुक्त करना। ६ किसी व्रत, प्रतिज्ञा आदि से विचलित करना। बात पर दृढ न रहने देना। डिगाना।

हटुई†—सज्ञा स्त्री० [हिं० हाट] दूकानदारी।

हटुवा†—सज्ञा पुं० [हिं० हाट + उवा (प्रत्य०)] १ दूकानदार। २ दूकान पर सौदा या अनाज तौलनेवाला। बया।

हटैत—सज्ञा पुं० [हिं० हाट] १ दूकानदार। हाटवाला। २ सामान। माल। सौदा।

हटौती—सज्ञा स्त्री० [हिं० हाड + औती (प्रत्य०)] देह की गठन। शरीर का ढाँचा। जैसे,—उसकी हटौती बहुत अच्छी है।

हट्ट—सज्ञा पुं० [सं०] १ बाजार। हाट। २ दूकान।

यौ०—चौहट्ट = बाजार का चौक। हट्टचौरक। हट्टवाहिनी = जल के निकास के लिये बाजार मे बनी हुई नाली। हट्टविलासिनी। हट्टवेश्माली = बाजार मे दूकानों की कतार।

हट्टचौरक—सज्ञा पुं० [स०] बाजार मे घूमकर चोरी करने या माल उचकनेवाला। चाईं। गिरहकट।

हट्टविलासिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वारवधू। वारागना। वेश्या। २ नख नाम का एक प्रसिद्ध गध द्रव्य। विशेष दे० 'नख'–२। ३. हरिद्रा। हल्दी [को०]।

हट्टाकट्टा—वि० [स० हृष्ट + काष्ठ] [वि० स्त्री० हट्टीकट्टी] हृष्टपुष्ट। मोटाताजा। मजबूत। दृढाग।

मुहा०—हट्टेकट्टे आना = हृष्टपुष्ट होकर वापस आना। उ०—हजारो आदमी नीचे से वहाँ जाते हैं और खासे हट्टेकट्टे आते है।—सैर०, पृ० १६।

हट्टाध्यक्ष—सज्ञा पुं० [सं०] बाजार का निरीक्षण करनेवाला। अधिकारी [को०]।

हट्टी—सज्ञा स्त्री० [स०] छोटी हाट। चीजो के बिकने की जगह। दूकान। (पश्चिम)।

हठ—सज्ञा स्त्री०, पुं० [स०] [वि० हठी, हठीला] १ किसी बात के लिये अडना। किसी बात पर जम जाना कि ऐसा हो हो। टेक। जिद। दुराग्रह। जैसे,—(क) नाक कटी, पर हठ न हटी। (ख) तुम तो हर बात के लिये हठ करने लगते हो। (ग) बच्चो का हठ ही तो है। उ०—जौ हठ करहु प्रेम बस बामा। तौ तुम्ह दुख पाउब परिनामा।—मानस, २।६२।

यौ०—हठधर्म। हठधर्मी।

मुहा०—हठ पकडना = किसी बात के लिये अड जाना। जिद करना। दुराग्रह करना। हठ रखना = जिस बात के लिये कोई अडे, उसे पूरा करना। हठ मे पडना = हठ करना। उ०—मन हठ परा न मान सिखावा।—तुलसी (शब्द०)। हठ बाँधना = हठ पकडना। हठ माँडना = हठ ठानना। उ०—क्यो हठ माँडि रही री सजनी! टेरत श्याम सुजान।—सूर (शब्द०)।

२ दृढ प्रतिज्ञा। अटल संकल्प। दृढतापूर्वक किसी बात का ग्रहण। उ०—(क) जो हठ राखै धर्म को तेहि राखै करतार। (ख) तिरिया तेल, हमीर हठ चढ़ै न दूजी बार। (शब्द०)।

मुहा०—हठ करना = दे० 'हठ ठानना'। उ०—जौ हठ करहु प्रेम बस बामा। तौ तुम्हें दुख, पाउब परिनामा।—मानस, २।६२। हठ ठानना = दृढ प्रतिज्ञा या अटल संकल्प करना। उ०—ग्रहह तान दारुनि हठ ठानी। समुझत नहिं कछु लाभ न हानी।—मानस, १। २१८।

३ बलात्कार। जबरदस्ती। ४ शत्रु पर पीछे से आक्रमण। ५ अवश्य होने की क्रिया या भाव। अवश्यभाविता। अनिवार्यता। ६ आकाशमूली। जलकुंभी (को०)। ७ अचिंतित या अतर्कित की प्राप्ति। आकस्मिक लाभ (को०)। ८ शक्तिमत्ता। प्रचंडता। बल (को०)।

हठकर्म—संज्ञा पुं० [सं० हठकर्मन्] हठपूर्वक किया हुआ काम। शक्ति-प्रयोग का कार्य (को०)।

हठकामुक—संज्ञा पुं० [सं०] वह कामुक जो कामतुष्टि के लिये किसी स्त्री पर बलप्रयोग करे (को०)।

हठजोग—संज्ञा पुं० [सं० हठयोग] दे० 'हठयोग'। उ०—एक भक्ति मैं जानौं और झूठ सब बात। और झूठ सब बात करै हठजोग अनारी। ब्रह्म दोष वो लेय कथा को राखै जारी।—पलटू०, भा० १, पृ० २६।

हठता—संज्ञा स्त्री० [सं०] हठ करने का भाव।

हठतारा†—संज्ञा पुं० [हिं० हठतार] दे० 'हड़ताल'। उ०—नाठो धरम नाम सुनि मेरो, नरक कियो हठतारो। मो को ठौर नहीं अब कोऊ अपनो बिरद सम्हारो।—सतवाणी०, पृ० ६५।

हठधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] अपने मत पर उचित अनुचित या सत्य असत्य का विचार छोड़कर जमा रहना। दुराग्रह। कट्टरपन।

हठधरमी†—संज्ञा स्त्री० [सं० हठ + हिं० धरमी] दे० 'हठधर्मी'। उ०—तौभी उनकी जातीय हठधरमी और विलास लालसा ने।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २६१।

हठधर्मिता—संज्ञा स्त्री० [हिं० हठधर्मी] हठधर्मी होने का भाव। संकीर्णता। कट्टरपन।

हठधर्मी—संज्ञा स्त्री० [सं० हठ + धर्म + ई (प्रत्य०)] १ सत्य असत्य, उचित अनुचित का विचार छोड़कर अपनी बात पर जमे रहना। दूसरे की बात जरा भी न मानना। दुराग्रह। २. अपने मत या संप्रदाय की बात लेकर अड़ने की क्रिया या प्रवृत्ति। विचारों की संकीर्णता। कट्टरपन। जैसे,—यह मुसलमानों की हठधर्मी है कि वे व्यर्थ छेड़छाड़ करते हैं।

हठना(पु)—क्रि० अ० [हिं० हठ + ना (प्रत्य०)] १ हठ करना। जिद पकड़ना। दुराग्रह करना। उ०—(क) बरज्यो नेकु न मानत क्योहूँ सखि ये नैन हठे।—सूर (शब्द०)। (ख) जो पै तुम या भाँति हठैहो।—सूर (शब्द०)। (ग) सुन बेमूढ़ अगूढ़ बातें करे, हठा है काल तोहि काटि डारे।—संत० दरिया, पृ० ७१।

मुहा०—हठकर = बलात्। जबरदस्ती। किसी का कहना न मानकर। उ०—सुनि हठि चला महा अभिमानी।—तुलसी (शब्द०)।

२. प्रतिज्ञा करना। दृढ संकल्प करना।

हठपर्णि, हठपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मुस्तक मोथा। नागरमोथा २ शैवाल। सेवार (को०)।

हठयोग—संज्ञा पुं० [सं०] वह योग जिसमे चित्तवृत्ति हठात् बाह्य विषयों से हटाकर अंतर्मुख की जाती है और जिसमें शरीर को साधने के लिये बड़ी कठिन कठिन मुद्राओं और आसनों आदि का विधान है।

विशेष—नेती, धौती आदि क्रियाएँ इसी योग के अंतर्गत हैं। कायव्यूह का भी इसमे विशेष विस्तार किया गया है और शरीर के भीतर कुंडलिनी, अनेक प्रकार के चक्र तथा मणिपूर आदि स्थान माने गए हैं। स्वात्माराम की 'हठप्रदीपिका' इसका प्रधान ग्रंथ माना जाता है। मत्स्येंद्रनाथ और गोरखनाथ इस योग के मुख्य आचार्य हो गए हैं। गोरखनाथ ने एक पंथ भी चलाया है जिसके अनुयायी कनफटे कहलाते हैं। पतंजलि के योग के दार्शनिक अंश को छोड़कर उसकी साधना के अंश को लेकर जो विस्तार किया गया है, वही हठयोग है।

हठयोगी—संज्ञा पुं० [सं० हठयोगिन्] वह साधक जो हठयोग की साधना करता हो।

हठरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाट + री (स्वा० प्रत्य०)] हाट। बाजार। उ०—तुव महलनकी सुरति करन हित हठरी रुचिर बनाई, तुव मुख चंद्र प्रकाश लख न हित दीपावली सुहाई।—भारतेंदु ग्रं०, भा० २, पृ० ८६।

हठवाद—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हठधर्म'।

हठवादिता—संज्ञा स्त्री० [सं० हठवादी + ता (प्रत्य)] हठवादी होने का भाव। कट्टरता।

हठवादी—वि० [सं० हठवादिन्] १ हिंसक। २ हठवाद करनेवाला। संकीर्ण विचारोंवाला।

हठविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] हठयोग।

हठशील—वि० [सं०] हठ करनेवाला। हठी। जिद्दी।

हठसील(पु)—वि० [सं० हठशील] हठी। जिद्दी। उ०—यह न कहिय सठही हठसीलहि। जो मन लाई न सुन हरिलीलहि।—मानस, ७।१२८।

हठात्—अव्य० [सं०] १ हठपूर्वक। दुराग्रह के साथ। लोगों के मना करने पर भी। २ जबरदस्ती से। बलात्। ३ अवश्य। निश्चय। जरूर।

हठात्कार—संज्ञा पुं० [सं०] बलात्कार। जबरदस्ती।

हठादेशी—वि० [सं० हठादेशिन्] किसी के प्रति हठ का आदेशक। जो किसी के प्रति बल या शक्ति का प्रयोग करने का आदेश आज्ञप्त करता हो।

हठायात—वि० [सं०] अपरिहार्य। अनिवार्य (को०)।

हठालु†—वि० [सं० हठ + आलु (प्रत्य०)] हठीला। हठी। उ०—पीथल कान्हड़ दे पतौ, गोग हमीर हठाल। साकौ कर पहुँतौ सरग अचलौ ऐ उजवाल।—बाँकी ग्रं०, भा० १, पृ० ८२।

हठालु(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुंभिका। जलकुंभी (को०)।

हठाश्लेष—संज्ञा स्त्री० [सं०] बलपूर्वक या हठात् आलिंगन करना।

हठिक—वि० [सं०] अतर्कित। आकस्मिक [को०]।

हठिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कोलाहल। शोर। हल्ला गुल्ला।

हठिल(पु)—वि० [सं० हठ+हिं० इला (प्रत्य०)] हठ करनेवाला। जिद्दी। हठीला। उ०—जब हम रहली हठिल दिवानी, तब पिय मुखहु न बोले।—कबीर श०, भा० १, पृ० २६।

हठी—वि० [सं० हठिन्] हठ करनेवाला। अपनी बात पर अड़नेवाला। जिद्दी। टेकी। उ०—हठी तपी केते बनवासी।—प्राण०, पृ० २१६।

हठील(पु)—वि० [सं० हठ+हिं० ईला (प्रत्य०)] हठी। हठयुक्त। हठीला। उ०—पंडित पूत अपाठ असत ह्वै जग में आदर। हयगति होय हठील मोल के समै बेआदर।—राम० धर्म०, पृ० १७५।

हठीला—वि० [सं० हठ+ईला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० हठीली] १ हठ करनेवाला। हठी। जिद्दी। उ०—तू अजहूँ तजि मान हठीली कही तोहि समुझाय।—सूर (शब्द०)। २ दृढप्रतिज्ञ। बात का पक्का। अपने संकल्प या वचन को पूरा करनेवाला। ३ लड़ाई में जमा रहनेवाला। धीर। उ०—ऐसो तोहि न बूझिए हनुमान हठीले।—तुलसी (शब्द०)।

हड़—संज्ञा स्त्री० [सं० हरीतकी] १ बड़ा पेड़ जिसके पत्ते महुए के से चौड़े चौड़े होते हैं और शिशिर में झड़ जाते हैं।

विशेष—यह उत्तर भारत, मध्य प्रदेश, बंगाल और मद्रास के जंगलों में पाया जाता है। इसकी लकड़ी बहुत चिकनी, साफ, मजबूत और भूरे रंग की होती है जो इमारत में लगाने और खेती तथा सजावट के सामान बनाने के काम में आती है। इसका फल व्यापार की एक बड़ी प्रसिद्ध वस्तु है और अत्यंत प्राचीन काल से औषध के रूप में काम में लाया जाता है। वैद्यक में हड़ के बहुत अधिक गुण लिखे गए हैं। हड़ भेदक और कोष्ठ शुद्ध करनेवाली ओषधों में प्रधान है और संकोचक होने पर भी पाचक चूर्णों में इसका योग रहा करता है। हड़ की कई जातियाँ होती हैं जिनमें से दो सर्वसाधारण में प्रसिद्ध है—छोटी हड़ और बड़ी हड़ या हर्रा। छोटी 'जोगी हड़' कहलाती है। वैद्यक में हड़ शीतल, कसैली, मूत्र लानेवाली और रेचक मानी जाती है। पाचक, चूर्ण आदि में छोटी हड़ का ही अधिकतर व्यवहार होता है। त्रिफला में बड़ी हड़ (हर्रा) ली जाती है। बड़ी हड़ का व्यवहार चमड़ा सिझाने, कपड़ा रँगने आदि में बहुत अधिक होता है। हड़ में कसाव-सार बहुत अधिक होता है, इससे यह संकोचक होती है। वैद्यक में हड़ सात प्रकार की कही गई है—विजया, रोहिणी, पूतना, अमृता, अभया, जीवंती और चेतकी।

२ एक प्रकार का गहना जो हड़ के आकार का होता है और नाक में पहना जाता है। लटकन।

हड़कंप—संज्ञा पुं० [देश० या अनुध्व०] भारी हलचल या उथल पुथल। तहलका। जैसे,—शत्रु की सेना के पहुँचते ही किले में हड़कंप मच गया।

क्रि० प्र०—मचना।—होना।

हड़क—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ पागल कुत्ते के काटने पर पानी के लिये गहरी आकुलता।

क्रि० प्र०—उठना।—होना।

२ किसी वस्तु को पाने की गहरी झक। पागल करनेवाली चाह। उत्कट इच्छा। रट। धुन। जैसे,—तुम्हें तो उस किताब की हड़क सी लग गई है।

क्रि० प्र०—लगना।—होना।

हड़कत—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाड़] दे० 'हड़जोड़'।

हड़कना—क्रि० अ० [हिं० हड़क] किसी वस्तु के अभाव से दुखी होना। तरसना।

हड़का[1]—संज्ञा पुं० [अनु०] हड़कने का भाव।

उ०—एक हड़का हुआ कुत्ता आया था, मार दिया।—गुलेरी जी०, पृ० ४७।

हड़का[2]—वि० बावला। पागल। दे० 'हड़काया'।

हड़काना—क्रि० स० [देश०] १ आक्रमण करने, घेरने, तंग करने आदि के लिये पीछे लगा देना। लहकारना। पीछे छोड़ना। २ किसी वस्तु के अभाव का दुःख देना। तरसाना। जैसे—क्यों बच्चे को जरा जरा सी चीज के लिये हड़काते हो। ३ उत्साह को दबा देना। हतोत्साह करना। ४ कोई वस्तु माँगनेवाले को न देकर भगा देना। नाहीं करके हटा देना। उ०—हड़काया भला, परकाया नहीं भला। (कहा०)।

हड़काया—वि० [हिं० हड़काना] [वि० स्त्री० हड़काई] १ पागल। बावला। (कुत्ते के लिये)। जैसे—हड़काई कुतिया। २ किसी वस्तु के लिये उतावला। घबराया हुआ।

हड़गिल्ल—संज्ञा पुं० [हिं० हाड़] एक पक्षी। दे० 'हड़गीला'। उ०—गिद्ध, गरुड़, हड़गिल्ल भजत लखि निकट भयद रव।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० २६८।

हड़गीला—संज्ञा पुं० [हिं० हाड़+गिलना] एक चिड़िया का नाम। बगले की जाति का एक पक्षी जिसकी टाँगें और चोंच बहुत लंबी होती हैं। दस्ता। विशेष दे० 'चनियारी'।

हड़जोड़—संज्ञा पुं० [हिं० हाड़+जोड़ना] एक प्रकार की लता। वज्रांगी।

विशेष—यह भीतरी चोट के स्थान पर लगाई जाती है। इसमें थोड़ी थोड़ी दूर पर गाँठें होती हैं। कहते हैं इससे टूटी हुई हड्डी भी जुड़ जाती है।

हड़ताल[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० हट्ट (=दूकान या बाजार)+ताला] किसी कर या महसूल से अथवा और किसी बात से असतोष प्रकट करने के लिये दूकानदारों का दूकान का बंद कर देना या काम करनेवालों का काम बंद कर देना। हटतार।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

हड़ताल[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० हरिताल] एक खनिज पदार्थ। विशेष दे० 'हरताल'।

हड़ना[1]—क्रि० अ० [हिं० धड़ा] तौल में जाँचा जाना।

संयो० क्रि०—जाना।

हड़ना[2]—क्रि० अ० [सं० हण्डन, हिण्डन] भटकना। उ०—बाहर निकलता है होर हड़ता फिरता है।—दक्खिनी०, पृ० ४३६।

हडप—वि० [अनु०] १ पेट मे डाला हुआ । निगला हुआ । २ गायब किया हुआ । अनुचित रीति से ले लिया हुआ । उडाया हुआ ।

मुहा०—हडप करना = गायब करना । बेईमानी से ले लेना । अनुचित रीति से अधिकार कर लेना । जैसे—दूसरे का रुपया इसी तरह हडप कर लोगे ।

हडपना—क्रि० स० [अनु० हडप १ मुँह मे डाल लेना । खा जाना । २ दूसरे की वस्तु अनुचित रीति से ले लेना । गायब करना । उडा लेना । जैसे,—दूसरे का माल या रुपया हडपना ।

हडप्पा—सज्ञा पु० [देश०] एक अत्यत प्राचीन एव ऐतिहासिक स्थान जो पाकिस्तान मे है ।

हडफुटनी†, हडफूटन†—सज्ञा स्त्री० [हिं० हाड + फूटना] १ शरीर के भीतर का वह दर्द जो हड्डियो के भीतर तक जान पडे । हड्डियो की पीडा । वह रोग जिसमे मज्जा और हड्डी मे वायु का कोप हो ।—माधव०, पृ० १३६ । २ वह अजीर्ण जिसमे अफरा, हडफूटन कुछ न हो । यह पाँचवाँ अजीर्ण माना जाता है ।—माधव०, पृ० ६४ ।

हडफूटनी†—सज्ञा स्त्री० [हिं० हडफटन] चमगादड ।

विशेष—लोग चमगादर की हड्डी की गुरिया पैर के दर्द मे पहनते है । अत चमगादड का यह नाम पडा है ।

हडफोड—सज्ञा पुं० [हिं० हाड + फोडना] एक प्रकार की चिडिया ।

हडवड—सज्ञा स्त्री० [अनु०] उतावलेपन की मुद्रा । जल्दवाजी प्रकट करनेवाली गतिविधि ।

मुहा०—हडवड करना = जल्दी मचाना । जल्दवाजी करना ।

हडवडाना¹—क्रि० अ० [अनु०] जल्दी करना । उतावलापन करना । शीघ्रता के कारण कोई काम घवराहट से करना । आतुर होना । जैसे—अभी हडवडाओ मत, गाडी आने मे देर है ।

सयो० क्रि०—जाना ।

हडवडाना²—क्रि० स० किसी को जल्दी करने के लिये कहना । जैसे,—तुम जाकर हडवडाओगे तब वह घर से चलेगा ।

सयो० क्रि०—देना ।

हडवडिया—वि० [हिं० हडवडी + इया (प्रत्य०)] हडवडी करनेवाला । जल्दी मचानेवाला । जल्दवाज । उतावला । आतुरता प्रकट करनेवाला ।

हडवडी—सज्ञा स्त्री० [अनु०] १ जल्दी । उतावली । शीघ्रता । २ शीघ्रता के कारण आतुरता । जल्दी के कारण घवराहट । जैसे,—हडवडी मे काम ठीक नही होता है ।

क्रि० प्र०—करना ।—पडना ।—लगना ।—होना ।

मुहा०—हडवडी मे पडना=ऐसी स्थिति मे पडना जिसमे काम बहुत जल्दी जल्दी करना पडे । उतावली की दशा मे होना ।

हडवोँग—सज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'हरवोँग' । उ०—एक हडवोँग का आलम है । दाव व आदाव वालाए ताक, कहकहे पर कहकहा पड रहा है । फिसाना०, भा० ३, पृ० ४७ ।

हडहडना(पु)—क्रि० अ० [अनु०] घवराहट या प्रसन्नता के कारण जोरो से आवाज करना । ध्वनि करना । चिल्लाना । उ०—(क) चहुँवान राव हडहड हँस्यौ, हेरि नैन इम उच्चर्‌यौ । ह० रासो, पृ० ७२ । (ख) जहाँ, कडकडैं वीर गजराज हय —हडहडैं, घडहडैं धरनि ब्रह्मड गाजै ।—सुदर ग्र०, भा० २, पृ० ८८२ ।

हडहडाना—क्रि० स० [अनु०] जल्दी करने के लिये उकसाना । शीघ्रता करने की प्रेरणा करना । जल्दी मचाकर दूसरे को घवराना । जैसे—वह क्यो न चलेगा, जब जाकर हडहडाओगे तब उठेगा ।

हडहा¹—सज्ञा पुं० [देश०] जगली वैल ।

हडहा²—सज्ञा पुं० [हिं० हाड] वह जिसने किसी के पुरखे की हत्या की हो ।

हडहा³—वि० [हिं० हाड] [वि० स्त्री० हडही] १ अस्थि सवधी । हड्डी सवधी । २ जिसकी देह मे हड्डियाँ ही रह गई हो । वहुत दुवला पतला ।

हडा—सज्ञा पुं० [अनु०] १ चिडियो को उडाने का शब्द जो खेत के रखवाले करते हैं ।

मुहा०—हडा हडा करना = बोलकर चिडिया उडाना ।

२ पथरकला वदूक ।

हडावर, हडावरि(पु)—सज्ञा स्त्री० [हिं० हाड + स० आवलि] १ ठठरी । दे० 'हडावल'–२ । उ०—राम सरासन ते चल तीर, रहे न शरीर हडावरि फूटी ।—तुलसी (शब्द०) । २ हड्डियो की माला । हडावल । उ०—कायरि कया हडावरि वाँधे । मुडमाल और हत्या काँधे ।—जायसी (शब्द०) ।

हडावल—सज्ञा स्त्री० [हिं० हाड + स० आवलि] १ हड्डियो की पक्ति या समूह । २ हड्डियो का ढाँचा । ठठरी । ३ हड्डियो की माला ।

हडि—सज्ञा पु० [सं० हडि] १ प्राचीन काल की काठ की वेडी जो पैर मे डाल दी जाती थी । २ एक जाति । हडिक ।

हडिक—सज्ञा पु० [स०] एक जाति जिसका पेशा झाडू लगाना तथा मल उठाना आदि है [को०] ।

हडीला—वि० [हिं० हाड + ईला (प्रत्य०)] १ जिसमे हड्डी हो । २ जिसकी देह मे केवल हड्डियाँ रह गई हो । वहुत दुवला पतला ।

हडवा—सज्ञा स्त्री० [सं० हरिद्रा] एक प्रकार की हल्दी जो कटक मे होती है ।

हड्ड—सज्ञा पुं० [स०] अस्थि । हड्डी [को०] ।

हड्डक—सज्ञा पु० [स०] एक जाति । दे० 'हडिक' [को०] ।

हड्डज—सज्ञा पुं० [स०] मज्जा । मेद । वसा [को०] ।

हड्डा—सज्ञा पुं० [स० इडाचिका] पतग जाति का एक कीट जो मधुमक्खियो के समान छत्ता वनाकर अडे देता है । भिड । वर्रे । ततैया ।

हड्डि, हड्डिक, हड्डिप—सज्ञा पु० [स०] दे० 'हडिक' ।

हड्डी—सज्ञा स्त्री० [स० अस्थि, प्रा० अत्थि, अट्ठि (सस्कृत कोशो का 'हड्ड' शब्द देशभाषा से ही लिया जान पडता है, हेमचद्र ने भी

इसे देशी कहा है।)] शरीर की तीन प्रकार की वस्तुओं—कठोर, कोमल और द्रव—मे से कठोर वस्तु जो भीतर ढाँचे या आधार के रूप मे होती है। अस्थि।

विशेष—शरीर के ढाँचे या ठठरी मे अनेक आकार और प्रकार की हड्डियाँ होती है। यद्यपि ये खड खड होती हैं, तथापि एक दूसरी से जुडी होती है। मनुष्य के शरीर मे दो सौ से अधिक हड्डियाँ होती हैं। हड्डियो के खड खड जुडे रहने से अगो मे लचीलापन रहता है जिसमे वे बिना किसी कठिनता के अच्छी तरह हिल-डुल सकते है। शरीर मे हड्डियो के होने से ही हम सीधे खडे हो सकते हैं। बचपन मे हड्डियाँ मुलायम और लचीली होती है, इसी से बच्चे वर्ष सवा वर्ष तक खडे नहीं हो सकते। युवावस्था आने पर हड्डियाँ अच्छी तरह दृढ और कडी हो जाती हैं। बुढापे मे वे जीर्ण और कडी हो जाती हे और सहज मे टूट सकती है। शरीर की और वस्तुओं के समान हड्डी भी एक सजीव वस्तु है, उसमे भी रक्त का सचार होता है। इसमे चूने का अश कुछ विशेष होता है। किसी हड्डी के टुकडे को लेकर कुछ देर तक गधक के तेजाब मे रखे तो उसका कडापन दूर हो जायगा।

मुहा०—हड्डी उखडना = हड्डी का जोड खुल जाना। हड्डी का जोड खुलना = हड्डी उखडना। हड्डी गुड्डी तोडना = खूब मारना पीटना। बुरी तरह मारना। हड्डी चबाना = कोई वस्तु किसी के पास न होने पर भी उसके लिये परिश्रम करना। निस्सार वस्तु से सार प्राप्त करने का व्यर्थ श्रम करना। हड्डी चूसना = अशक्त होने पर भी व्यक्ति से जबर्दस्ती कुछ लेना या काम कराना। हड्डी टूटना = हड्डी का टूट जाना या फूटना। अस्थिभग होना। हड्डियाँ गढना या तोडना = खूब मारना। खूब पीटना। हड्डियाँ निकल आना = मास न रहने के कारण हड्डियाँ दिखाई पडना। शरीर बहुत दुबला होना। पुरानी हड्डी = पुराने आदमी का दृढ शरीर। पुराने समय का मजबूत आदमी। जैसे,—यह पुरानी हड्डी है, बुढापे मे भी तुम्हे पछाड सकते है। हड्डी बोलना = दे० 'हड्डी टूटना'। हड्डी से हड्डी बजाना = लडाई झगडा करना।

२ कुल। वश। खानदान। जैसे,—हड्डी देखकर विवाह करना।

हड्डीला—वि० [हिं० हड्डी + ईला (प्रत्य०)] जिसमे सिर्फ हड्डियाँ हो, मास अत्यल्प हो। हड्डियो से भरा हुआ या युक्त। उ०—झपटकर पहले कुदन ने दस दस के उन नोटो को अपने हड्डीले चगुल मे बटोर लिया।—शराबी, पृ० ७३।

हढक्क—सज्ञा पुं० [सं०] छोटी ढोल [को०]।

हँढावना(पु)†—क्रि० स० [हिं० उढाना] दे० 'ओढाना'। उ०—मुद्रा पहिरो झोली लेहो, मस्तकि धूरि लगावउ। मदा अजीती काया रहिती खिथा अग हढावउ।—प्राण०, पृ० १२४।

हणवत†—सज्ञा पुं० [सं० हनुमत् हनुमन्त, प्रा० हनुमत] दे० 'हनुमान'। उ०—हणवतहकार मचती रहै पकडिया सोपिया बावन बीर।—रामानद०, पृ० ५।

हणहणना(पु)†—क्रि० अ० [अनु०] दे० 'हिनहिनाना'। उ०—प्रह फूटी, दिसि पुडरी, हणहणिया हयथट्ट। ढोलइ धण ढढोलियउ, सीतल सुद्द घट्ट।—ढोला०, दू० ६०२।

हत[1]—वि० [स०] १ वध किया हुआ। मारा हुआ। जो मारा गया हो। २ जिसपर आघात किया गया हो। जिसपर चोट लगाई गई हो। पीटा हुआ। ताडित। ३ खोया हुआ। गँवाया हुआ। जो न रह गया हो। रहित। विहीन। जैसे,—श्रीहत, हतोत्साह। ४ जिसमें या जिसपर ठोकर लगी हो। जैसे,—हतरेणु। ५ नष्ट किया हुआ। ६ तग किया हुआ। हैरान। ७ पीडित। ग्रस्त। ८ स्पर्श किया हुआ। लगा हुआ। जिससे छू गया हो। (ज्योतिष)। ९ गया बीता। निकृष्ट। निकम्मा। १० गुणा किया हुआ। गुणित। (गणित)। ११ फूटा हुआ या फोडा हुआ। जैसे, नेत्र (को०)। १२ जिसे छला गया हो। छला हुआ (को०)। १३ जिसका यत्न व्यर्थ हो गया हो। विफलप्रयास। हताश (को०)।

हत[2]—सज्ञा पुं० १ वध। हनन। २ गुणा [को०]।

हत(पु)†[3]—सज्ञा पु० [स० हस्त, प्रा० हत्थ] दे० 'हाथ'। उ०—फेरत वन वन गाऊँ धरावत, कहे 'तुकाया' बधु लकटी ले ले हत।—दक्खिनी०, पृ० ९८।

हतकटक—वि० [स० हतकण्टक] काँटो से रहित। शत्रुविहीन [को०]।

हतक[1]—सज्ञा स्त्री० [अ० हतक (=फाडना)] १ हेठी। बेइज्जती। अप्रतिष्ठा। उ०—अपने प्यार की इस हतक पर गगा झल्ला उठी।—आधा गाँव, पृ० ११। २ ढिठाई। धृष्टता। बेअदबी।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

यौ०—हतक इज्जत। हतक इज्जती।

हतक[2]—वि० [सं०] १ दुःशील। दुर्वृत्त। पापात्मा। उ०—मैं जानी ही मिलन तैं मिटिहै तन सताप। अब सजनी दूनो चढयौ हतक मनोजहि दाप।—स० सप्तक, पृ० १४४। २ जिसे चोट पहुँचाई गई हो। ३ दीन दुःखी। दुर्दैवग्रस्त। पीडित [को०]।

हतक[3]—सज्ञा पुं० कायर या नीच, भीरु व्यक्ति [को०]।

हतकइज्जती—सज्ञा स्त्री० [अ० हतक + इज्जत] अप्रतिष्ठा। मानहानि। बेइज्जती। जैसे,—उसने उस अखबार पर हतकइज्जती का दावा किया है।

हतकिल्विष—वि० [स०] जिसकी कलुषता दूर हो गई हो। निष्कलुष। पाप से मुक्त [को०]।

हतचित्त—वि० [स०] दे० 'हतचेत'।

हतचेत—वि० [स० हतचेतस्, हिं० हत + चेत] अचेत। बेहोश। हतज्ञान। उ०—शोक से अति आर्त, अनुज समेत। भरत यो कह हो गए हतचेत।—साकेत, पृ० १९०।

हतचेतन—वि० [स०] दे० 'हतचेत'। उ०—बुद्धि के दुर्ग पहुँचा विद्युत् गति हतचेतन। राम मे जगी स्मृति, हुए सजग पा भाव प्रमन।—अनामिका, पृ० १६४।

हतचेता—वि० [स० हतचेतस्] १ कोई निश्चय न कर पाने से ऊहापोह मे पडा हुआ। घबडाया हुआ। व्याकुल। २ दे० 'हतज्ञान'।

हतच्छाय—वि० [सं०] कांतिहीन। क्षीणप्रभ। धूमिल [को०]।

हतजल्पित—संज्ञा पुं० [सं०] बेकार की बात। व्यर्थ का वार्तालाप [को०]।

हतजीवित¹—वि० [सं०] जो जीवन से निराश हो। हताश।

हतजीवित²—वि० निराशा से भरी जिंदगी। २. जीवन से निराश होना। नैराश्य।

हतज्ञान—वि० [सं०] ज्ञानशून्य। अचेत। बेहोश। संज्ञाशून्य।

हतताप—वि० [सं०] जिसका ताप दूर हो गया हो। शीतल [को०]।

हतत्रप—वि० [सं०] निर्लज्ज [को०]।

हतत्विप्—वि० [सं०] जिसकी दीप्ति या प्रभा समाप्त हो गई हो। हतच्छाय [को०]।

हतदैव—वि० [सं०] दई का मारा। अभागा।

हतद्विप्—वि० [सं०] जिसने शत्रुओं का विनाश किया हो।

हतधी—वि० [सं०] दे० 'हतचेत', 'हतबुद्धि' [को०]।

हतध्वांत—वि० [सं०] जिसने अंधकार दूर कर दिया हो। कालुष्य-हीन। कालिमारहित [को०]।

हतन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हत+ (अन् =) न (प्रत्य०)] वध। हनन। हतन हिए उ०—ताकौ मैं आन्यौ। तब हरि और खेल इक ठान्यौ।—नंद० ग्रं०, पृ० २८५।

हतना(पु)—क्रि० स० [सं० हत + हिं० ना (प्रत्य०)] १ वध करना। मार डालना। उ०—कहाँ राम रन हतौ प्रचारी।—तुलसी (शब्द०)। २ मारना। पीटना। प्रहार करना। ३ अन्यथा करना। पालन न करना। भंग करना। न मानना। उ०—मद्यपान रत, स्त्रिजित होई। सन्निपात युत वातुल जोई। देखि देखि तिनको सब भागैं। तासु बात हति पाप न लागैं।—केशव (शब्द०)।

हतपुत्र—वि० [सं०] जिसके संतान का हनन किया गया हो। जिसके पुत्र को मार डाला गया हो।

हतप्रभ—वि० [सं०] जिसकी कांति या तेज नष्ट हो गया हो। प्रभा से रहित।

हतप्रभाव—वि० [सं०] १ जिसका प्रभाव न रह गया हो। जिसका असर जाता रहा हो। २ जिसका अधिकार न रह गया हो। जिसकी बात कोई न मानता हो।

हतप्रमाद—वि० [सं०] जिसका प्रमाद दूर हो गया हो [को०]।

हतप्राय—वि० [सं०] जो लगभग मार डाला गया हो [को०]।

हतबांधव—वि० [सं० हतबान्धव] जिसके बंधु बांधव, संबंधी हत हों। स्वजनों से रहित।

हतबुद्धि—वि० [सं०] बुद्धिशून्य। मूर्ख।

हतभग, हतभाग—वि० [सं०] दे० 'हतभाग्य'।

हतभागी(पु)—वि० [सं० हत + या भागी] [वि० स्त्री० हतभागिन, हतभागिनि(पु), हतभागिनी] अभागा। भाग्यहीन। उ०—पावकमय ससि स्रवत न आगी। मानहु मोहि जानि हतभागी।—मानस ५।१२।

हतभाग्य—वि० [सं०] भाग्यहीन। बदकिस्मत। उ०—शैल निर्झर न बना हतभाग्य, गल नहीं सका जो कि हिम खंड। दौड़कर मिला न जलनिधि अंक, आह वैसा ही हूँ पाषंड।—कामायनी, पृ० ४८।

हतमति—वि० [सं०] हतज्ञान। हतचित्त।

हतमना—वि० [सं० हत + मनस्] जिसका मन टूट गया हो। निराश-हृदय। खिन्नमन। उ०—जा चुके सब लोग फिर आवास, हतमना कुछ और कुछ सोल्लास।—सामधेनी, पृ० ४२।

हतमान—वि० [सं०] १ जिसका घमंड चूर चूर हो गया हो। जिसका गर्व दूर हो गया हो। २ जिसका अपमान किया गया हो। तिरस्कृत।

हतमानस—वि० [सं०] हतज्ञान। हतचेता।

हतमूर्ख—वि० [सं०] अत्यंत मूर्ख। जड़मति। बुद्धिशून्य [को०]।

हतमेधा—वि० [सं० हतमेधस्] जिसकी मेधा नष्ट हो गई हो। हतचेता। हतबुद्धि [को०]।

हतयुद्ध—वि० [सं०] जो युद्ध के उत्साह से हीन हो। युद्धवृत्ति से रहित।

हतरथ—संज्ञा पुं० [सं०] वह रथ जिसके अश्व और सारथी मार डाले गए हों [को०]।

हतलक्षण—वि० [सं०] अभागा। हतभाग्य। बदकिस्मत [को०]।

हतलेवा(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ + लेना] विवाह की एक रस्म। पाणिग्रहण। उ०—बनड़ा नूँ सूपैं बनी, हतलेवे मिल हाथ। सठ कर दे चुगली समे, श्रवण चुगल मुख साथ।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृष्ठ ५८।

हतवाना—क्रि० स० [हिं० हतना का प्रेरणा० रूप] १ वध कराना। मरवा डालना। २ किसी व्यक्ति को किसी के द्वारा खूब पिटवाना।

हतविधि—वि० [सं०] अभागा। भाग्यहीन [को०]।

हतविनय—वि० [सं०] जिसका विनय नष्ट हो गया हो। उच्छृँखल। विनयरहित। अशिष्ट [को०]।

हतवीर्य—वि० [सं०] बलरहित। शक्तिहीन।

हतवृत्त—वि० [सं०] जिसमें छंदसंबंधी दोष हो। जो सदोष छंद युक्त हो [को०]।

हतवेग—वि० [सं०] जिसकी गति नष्ट या अवरुद्ध हो गई हो [को०]।

हतव्रीड—वि० [सं०] निष्त्रप। निर्लज्ज [को०]।

हतशिष्ट, हतशेष—वि० [सं०] जीवित बचा हुआ। जो मारे जाने से बचा हुआ हो [को०]।

हतश्रद्ध—वि० [सं०] श्रद्धारहित। श्रद्धाविहीन।

हतश्री—वि० [सं०] जिसकी श्री या कांति नष्ट हो गई हो। श्रीविहीन। संपत्तिरहित।

हतसंपद्—वि० [सं० हतसम्पद्] दे० 'हतश्री'।

हतसाध्वस—वि० [सं०] विगतभय। निर्भीक [को०]।

हतस्त्रीक—वि० [सं०] १ जिसकी औरत को किसी ने मार डाला हो। २ जिसने किसी या किसी की पत्नी का हनन किया हो। स्त्री-हत्या करनेवाला [को०]।

हतस्मर—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह जिसने कामदेव का विनाश किया हो। शिव। कामरिपु [को०]।

हतस्वर—वि० [सं०] जिसका स्वर या ध्वनि नष्ट हो गई हो। जिसे स्वरभंग हुआ हो [को०]।

हतहृदय—वि० [सं०] जिसका हृदय टूट गया हो। भग्नाश [को०]।

हता¹—वि० स्त्री० [सं०] नष्ट चरित्र की। व्यभिचारिणी।

हता²—संज्ञा स्त्री० १ नष्ट चरित्र की स्त्री। सतीत्वभ्रष्ट स्त्री। २ वह कन्या जो विवाह के अयोग्य हो। चरित्रहीनता के कारण विवाह न करने लायक कन्या [को०]।

हता³—क्रि० अ० [हिं० होना क्रिया का भूतकाल] [अन्य रूप हती, हते, हता, आदि] था।

हतादर—वि० [सं०] अनादृत। असमानित [को०]।

हताना(पु)—क्रि० स० [हिं० 'हतना' का प्रेरणा०] दे० 'हतवाना'।

हतारोह—वि० [सं०] जिसके ऊपर बैठनेवाले मारे गए हो। जैसे, रथ, हाथी आदि [को०]।

हतावशेष—वि० [सं०] जो मारे जाने से बच गया हो। हतशेष।

हताश—वि० [सं०] १ जिसे आशा न रह गई हो। निराश। नाउम्मीद। २ शक्तिहीन। कमजोर (को०)। ३ कठोर। क्रूर। निर्दय (को०)। ४ निष्फल। फलहीन (को०)। ५ क्षुद्र। नीच। बदमाश (को०)।

हताश्रय—वि० [सं०] जिसका आश्रय नष्ट हो चुका हो। आश्रयहीन। निरवलंब [को०]।

हताश्व—वि० [सं०] जिसके रथ के अश्व मारे जा चुके हो।

हताश्वास—वि० [सं० हत + आश्वास] जिसे प्राप्त आश्वासन फलीभूत न हो सका हो। जिसे भरोसा या सहारा न रह गया हो। उ०—कहता प्रति जड जंगम जीवन। भूले थे अब तक बंधु प्रमन। यह हताश्वास मन भार श्वास भर बहता।—तुलसी, पृ० ११।

हताहत—वि० [सं० हत + आहत] मारे गए और घायल। जैसे,—उस युद्ध मे हताहतो की संख्या एक हजार थी।

हति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वध। विनाश। हत्या। २ आहत करना। घायल करना। ३ आघात। चोट। प्रहार। ४ गुणन। गुणा। ५ क्षति। क्षय। हानि। ६ ऐब। दोष। विकार [को०]।

हतियार(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० हति या हेति अथवा हत्याकारक] वह अस्त्र या शस्त्र जिससे वध किया जाय। उ०—उहै धनुक उन्ह भौंहन्ह चढा। केइ हतियार काल अस गढा।—जायसी ग्रं० (गुप्त), पृ० १८७।

हतियारा†—वि० [सं० हत्या + कारक] [वि० स्त्री० हत्यारिन, हत्यारी] हत्या करनेवाला। वध करनेवाला। क्रूर। निर्दय। हत्यारा उ०—(क) साला हतियारा कहीं का।—मैला०, पृ० ३२४। (ख) हे हतियारी हतति है, प्रान मयति दिन रैन।—ब्रज० ग्रं०, पृ० ५३।

हती(पु)†—क्रि० अ० [हिं० होना क्रिया के भूतकाल का स्त्री० रूप] थी। उ०—नहिं वह काशी रह गई, हती हेममय जौन।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० १५५।

हतेक्षण—वि० [सं०] नेत्रहीन। अंधा [को०]।

हतोज—वि० [सं० हतौजस्] उत्साहहीन। निरुत्साह।

हतोत्तर—वि० [सं०] जो कुछ उत्तर न दे सके। निरुत्तर [को०]।

हतोत्साह—वि० [सं०] जिसे कुछ करने का उत्साह न रह गया हो। जिसे कोई बात करने की उमंग न हो। उ०—इस बार एक आया विवाह, जो किसी तरह भी हतोत्साह।—अपरा०, पृ० १७४।

हतोद्यम—वि० [सं०] जिसकी चेष्टा या प्रयत्न विफल हो [को०]।

हतौजा—वि० [सं० हतौजस्] जिसकी शक्ति, प्रताप, कांति आदि नष्ट हो गई हो। जिसका वीरताजन्य उत्साह खत्म हो गया हो [को०]।

हत्त(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हस्त, प्रा० हत्थ हत्त] दे० 'हाथ'। उ०—हुता सज्जण हीअडे सयणा हदा हत्त। जउ सोहणो साचइ होअइ, सोहणो वडी बसत्त।—ढोला०, दू० ५०९।

हत्तुल्मकदूर—क्रि० वि० [अ० हत्त + उल + मकदूर] यथाशक्ति। यथासाध्य। जहाँ तक हो सके। उ०—ईश्वर ने चाहा तो हत्तुल्मकदूर किसी किस्म की तकलीफ न होने पाएगी।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १३४।

हत्थ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हस्त, प्रा० हत्थ] दे० 'हाथ'। उ०—नाखे बार-बार निसासा, हत्था तेग गही चंद्र हासा।—रघु० रू०, पृ० २१०।

हत्थल(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हस्ततल, प्रा० हत्थल, पु०हिं० हाथल] हाथ का पंजा। मणिबंध के नीचे का भाग। हथेली।

हत्था—संज्ञा पुं० [सं० हस्त, प्रा० हत्थ, हिं० हाथ] १ किसी भारी औजार का वह भाग जो हाथ से पकडा जाता हो। दस्ता। मूठ। २ रेशमी कण्डे बुननेवालो के करघे मे लकडी का वह ढाँचा जो छत से लगाकर नीचे लटकाया रहता है और जो इधर उधर झूलता रहता है। ३ तीन हाथ के लगभग लंबा लकडी का बल्ला जो एक छोर पर हाथ की हथेली के समान चौडा और गहरा होता है और जिससे खेत की नालियो का पानी चारो ओर उलीचा जाता है। हाथा। हथेरा। ४ निवार बुनने मे लकडी का एक औजार जो एक ओर कुछ पतला होता है और कघी की भाँति सूत बैठाने के काम मे आता है। ५ एक प्रकार का भद्दा रंग जो सुर्खी लिए पीला या मटमैला होता है। ६ पत्थर या ईंट जो दंड करते समय हाथ के नीचे रख लेते हैं। ७ केले के फलो का घौद या गुच्छा। पंजा। ८ ऐपन से बना हाथ के पंजे का चिह्न जो पूजन आदि के अवसर पर दीवार पर बनाया जाता है। हाथ का छापा। ९ गडेरियो का वह औजार जिससे वे कंबल बुनते समय पटिया ठोकते हैं। १० बैठने की कुर्सी का वह भाग जिसपर हाथ टेकते हैं।

हत्थाजडी—सज्ञा स्त्री० [हिं० हाथी + जडी] एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियाँ सुगधित होती हैं और जो भारतवर्ष के कई भागो मे पाया जाता है।

विशेष—इस पौधे की पत्तियो का रस घाव और फोडे आदि पर रखा जाता है। विच्छू और भिड के डक मारे हुए स्थान पर भी यह लगाया जाता है। सस्कृत मे इसे हस्तिशुडा कहते है।

हत्थि(पु)—सज्ञा पुं० [स० हस्तिन्, प्रा० हत्थि] हस्ति। हाथी। गज। फील। उ०—मिवा औरगहि जिति सकै, औरन राजा राव। हत्थि मत्थ पर सिंह बिनु आन न घाले घाव।—भूषण ग्र०, पृ० १००।

यौ०—हत्थिमत्थ = हाथी का मस्तक।

हत्थी—सज्ञा स्त्री० [हिं० हत्था, हाथ] १ किसी औजार या हथियार का वह भाग जो हाथ से पकडा जाय। दस्ता। मूठ। २ चमडे का वह टुकडा जिसे छीपी रग छापते समय हाथ मे लगा लेते है। ३ वह लकडी जिससे कडाह मे ईख का रस चलाते है। ४ गोमुखी की तरह का ऊनी थैला जिससे घोडो का बदन पोछते है। ५ बारह गिरह लबी लकडी जिसमे पीतल के छह दॉत लगे रहते है और जो कपडा बुनते समय उसे ताने रहने के लिए लगाई जाती है।

हत्थे—क्रि० वि० [स० हस्ते, प्रा० हत्थे, हिं० हाथे] हाथ मे।

मुहा०—हत्थे चढना = (१) हाथ मे आना। अधिकार मे आना। प्राप्त होना। (२) वश मे होना। प्रभाव के भीतर आना। हत्थे लगना = दे० 'हत्थे चढना'।

हत्थेदड—सज्ञा पुं० [हिं० हत्था + दड] वह दड (कसरत) जो ऊँची ईंट या पत्थर पर हाथ रखकर किया जाता है।

हत्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मार डालने की क्रिया। वध। खून।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

२ वध करने का पाप। हत्या करने का दोष (को०)।

मुहा०—हत्या लगना = हत्या का पाप लगना। किसी के वध का दोष ऊपर आना। जैसे,—गाय मारने से हत्या लगती है। हत्या लेना = हत्या का पाप ओढना। उ०—एहू कहँ तसि मया करेहू। पुरवहु आस कि हत्या लेहू।—जायसी ग्र० (गुप्त), पृ० २६२।

३ अत्यत दुर्बल और कमजोर प्राणी। ४ हैरान करनेवाली बात। झझट। बखेडा। जैसे,—(क) कहाँ की हत्या लाए, हटाओ। (ख) चलो, हत्या टली।

मुहा०—हत्या टलना = झझट दूर होना। हत्या सिर मढना या लगाना = बखेडे का काम देना। झझट लादना।

हत्यारा—सज्ञा पुं० [हिं० स० हत्या + कार] दे० 'हत्यारा'।

हत्यारा—वि०, सज्ञा पुं० [स० हत्या + कार] [स्त्री० हत्यारिन, हत्यारी] हत्या करनेवाला। वध करनेवाला। जान लेनेवाला। हिंसा करनेवाला। उ०—अरु प्रभु मो तै जनम तिहारौ। जिनि जानै यह कस हत्यारौ।—नद० ग्र०, पृ० २२६।

हत्यारी—सज्ञा स्त्री० [हिं० हत्यारा] १ हत्या करनेवाली। प्राण लेनेवाली। २. हत्या का पाप। प्राणवध का दोष। खून का अजाब।

क्रि० प्र०—लगना।

हथ[1]—सज्ञा पुं० [स० हस्त, प्रा० हत्थ, हथ्थ, हिं० हाथ] 'हाथ' का सक्षिप्त रूप जिसका व्यवहार समस्त पदो मे होता है। जैसे,—हथकडा, हथफेर, हथलेवा। उ०—रघुनाथ श्री हथ हथे रावण, परम सता कोध पावण।—रघु० रू०, पृ० २२७।

हथ[2]—सज्ञा पुं० [सं०] १ आघात। २ वध। हनन। हत्या। ३ मौत। मृत्यु। ४ दुखी या निराश मनुष्य [को०]।

हथा[3]—सज्ञा पुं० [सं० हस्ति, प्रा० हत्थि, हथ्थि, हिं० हाथी] 'हाथी' शब्द का सक्षिप्त रूप जो समस्त पदो मे व्यवहृत किया जाता है। जैसे,—हथनाल, हथशाला आदि।

हथउधार—सज्ञा पुं० [हिं० हाथ + उधार] वह कर्ज जो थोडे दिनो के लिये यो ही बिना किसी प्रकार की लिखा पढी के लिया जाय। हथफेर। दस्तगरदाँ।

क्रि० प्र०—करना।—देना।—लेना।

हथकडा—सज्ञा पुं० [सं० हस्त, हिं० हाथ + सं० काण्ड] १ हाथ को इस प्रकार जल्दी से और ढग के साथ चलाने की क्रिया जिससे देखनेवालो को उसके द्वारा किए हुए काम का ठीक ठीक पता न लगे। हाथ की सफाई। हस्तलाघव। हस्तकौशल। जैसे,—बाजीगरो के हथकडे। २ गुप्त चाल। चालाकी का ढग। चतुराई की युक्ति। जैसे,—यह सब हथकडे मै खूब पहचानता हूँ। ३ गुप्त अभिसधि। षड्यत्र। ४ तिकडमबाजी। धूर्तता भरी चाल।

हथकडेबाज—सज्ञा पुं० [हिं० हथकडा] तिकडमबाज एव धूर्त व्यक्ति।

हथकटी—सज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ] गतके का दावँ जिसमे हाथ पर प्रहार करते है। उ०—अखाडे मे गतका लेकर खडे हुए है तो मालूम हुआ बिजली चमक गई। एक दफा ललकार दिया कि रोक हथकटी।—फिसाना०, भा० १, पृ० ७।

हथकडा—सज्ञा पुं० [हिं० हाथ + कडा] १ उपाय। साधन। उ०—मान सच्चा हाथ आने के लिये, हाथ की ही हथकडी, है हथकडे।—चुभते०, पृ० १५। २ 'हथकटी' का पुलिंग। दे० 'हथकडी'। उ०—बहुत शोर होगा, कैदी के कठिन हथकडे तडकेगे।—अग्नि०, पृ० ७।

हथकडी—सज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ + कडी] डोरी से बँधा हुआ लोहे का छोटा कडा जो कैदी के हाथ मे पहना दिया जाता है (जिससे वह भाग न सके)। उ०—मान सच्चा हाथ आने के लिये हाथ की ही हथकडी है हथकडे।—चुभते०, पृ० १५।

क्रि० प्र०—पडना।—डालना।

यौ०—हथकडी बेडी = हाथ और पैर का लौहबधन।

हथकरा—सज्ञा पुं० [हिं० हाथ + करना] १ धुनिये की कमान मे बँधा हुआ कपडे या रस्सी का टुकडा जिसे धुनिये हाथ से पकडे रहते है। २ चमडे का दस्ताना जिसे चारे के लिये कँटीले झाड काटते समय पहन लेते है।

हथकरी¹—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ + कड़ा] दूकान के किवाड़ो मे लगा हुआ एक प्रकार का ताला।

विशेष—यह ताला एक कड़ी से जुड़े हुए लोहे के दो कड़ो के रूप मे होता है और दोनों ओर ताले के अँकुड़े की तरह खुला रहता है। इसी मे हाथ डालकर कुंजी लगा दी जाती है।

हथकरी(पु)²—संज्ञा स्त्री० दे० 'हथकड़ी'। उ०—सुंदर विरहनि वदि मैं विरह दीनी आइ। हाथ हथकरी, तौक गलि, क्यौं करि निकस्यौ जाइ।—सुंदर० ग्र०, भा० २, पृ० ६८३।

हथकल—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ + कल] १ पेच कसने के लिये लुहारो का एक औजार। २ करघे की दो डोरियाँ जिनका एक छोर तो हत्ये के ऊपर बँधा रहता है और दूसरा लग्घे मे। ३ तार ऐंठने के लिये एक औजार जो आठ अंगुल का होता है और जिसमें पेचकश लगा होता है। ४ दे० 'हथकरा'।

हथकोडा—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ + कोडा] कुश्ती का एक पेच।

हथखडा—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ + काड] दे० 'हथकडा'।

हथछुट—वि० [हिं० हाथ + छूटना] जिसका हाथ मारने के लिये बहुत जल्दी उठता या छूटता हो। जिसकी मार बैठने की आदत हो।

हथछोड़†—वि० [हिं० हाथ + छोडना] दे० 'हथछुट' [को०]।

हथडा(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हस्त, प्रा० हथ्थ + डा (प्रत्य०)] दे० 'हाथ'। उ०—करहा काछी कालिया, भुइँ भारी घर दूरि। हथडा कॉइन खचिया, राह गिलतइ सूर।—ढोला०, दू० ४९६।

हथधरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ + धरना] लकडी की वह पटरी जो नाव से लगाकर जमीन तक दो आदमी इसलिये पकडे रहते है जिसमे उसपर से होकर लोग उतर जायँ।

हथना(पु)†—क्रि० स० [सं० हत, हिं० हतना] दे० 'हतना'। उ०—रघुनाथ श्री हथ हथे रावण, परम सता कीध पावण।—रघु० रू०, पृ० २२७।

हथनापुर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हस्तिनापुर] दे० 'हस्तिनापुर'। उ०—हाड हटक्को हथ्थि बीर खच्यो कर सद्दं। कै हथनापुर चद ! वीर खचै बलिभद्रं।—पृ० रा०, २६।६३।

हथनारि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथी + नाल] दे० 'हथनाल'। उ०—उठी कोर हय गय प्रवल, दिठ्ठ दुग्रन छुटि धीर। दिषि धनुधर हथनारि घरि, भरकि भरहरी भीर।—पृ० रा०, ८।४९।

हथनाल—संज्ञा पुं० [हिं० हाथी + नाल] वह तोप जो हाथियो पर चलती थी। गजनाल।

हथनी—संज्ञा स्त्री० [सं० हस्तिनी, हिं० हाथी + नी (प्रत्य०)] हाथी की मादा।

हथफूल—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ + फूल] १ एक प्रकार की आतशबाजी। २ हथेली की पीठ पर पहनने का एक जडाऊ गहना जो सिकडियों के द्वारा एक ओर तो अँगूठियो से बँधा रहता है और दूसरी ओर कलाई से। हथसाँकर। हथसंकर। उ०—भुजबंध पहुँचि बीटी हथफूल है जु खासा।—ब्रज० ग्र०, पृ० ५८।

हथफेर—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ + फेरना] १ प्यार करते हुए शरीर पर हाथ फेरने की क्रिया। २ रुपए पैसे के लेन देन के समय हाथ से कुछ चालाकी करना जिसमे दूसरे के पास कम या खराब सिक्के जायँ। हाथ की चालाकी। ३ दूसरे के माल को चुपचाप ले लेना। किसी वस्तु या धन को सफाई के साथ उडा लेना।

क्रि० प्र०—करना।

४ थोडे दिनो के लिये विना लिखापढी के लिया या दिया हुआ कर्ज। हथउधार।

क्रि० प्र०—देना। —लेना।

हथफेरि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० हथ + फेरी] हाथ की सफाई। उ०—ज्यौं हथफेरि दिखावत चाँवर, अंत तौ धूरि की धूरि छनैगी।—सुंदर० ग्र०, भा० २, पृ० ४६१।

हथबेँटा†—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ + बेँट] एक प्रकार की कुदाली जो खडे गन्ने काटने के काम मे आती है।

हथरकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ + रखना] चमडे की थैली जो कोल्हू मे गन्ने डालनेवाला हाथ मे पहने रहता है।

हथरस†—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ + रस] हस्तमैथुन। हस्तक्रिया।

हथलपक, हथलपका—वि० [हिं० हाथ + लपकना] हाथ से लपक लेने या उडा देनेवाला। द्रव्यादि पर हाथ मारनेवाला। उ०—अब ऐसा हथलपका हो गया है कि सौ जतन से पैसे रख दो, खोजकर निकाल लेता है।—रंगभूमि, भा० २, पृ० ७५१।

हथलपकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ + लपकी] चोरी। झपट्टा। छीनाझपटी। उ०—दुरवस्था मे जगतसिंह की हथलपकियाँ बहुत अखरती।—मान०, भा० ५, पृ० ३०८।

हथलपकौअल—वि० [हिं० हाथ + लपकौवल] हाथ बढाकर छीन लेना। हस्तगत कर लेना। छीना झपटी। उ०—(क) शेक्सपीयर पर हथलपकौअल कर मरचेंट आफ वेनिस के भी मरचेंट बन गए।—प्रेमघन०, भा०२, पृ० ४३४। (ख) ऐसी भी हथलपकौअल ठीक नहीं कि जो बेतरह उधर से कुछ उडा लिया।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३१।

हथलपक्का†—वि०[हिं० हाथ + लपकना] दे० 'हथलपक', 'हथलपका'।

हथली¹—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ + ली] चरखे की मुठिया जिसे पकडकर चरखा चलाते है।

हथली(पु)†²—संज्ञा स्त्री० [सं० हस्त + तली या स्थली, प्रा० हत्थल्ली] दे० 'हथेली'। उ०—हथली सोहैं मनु पूरण चदा। अंगुरिन पाँति शोभा अरविंदा।—कबीर सा०, पृ० ९९।

हथलेवा—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ + लेना] विवाह मे वर कन्या का हाथ अपने हाथ मे लेने की रीति। पाणिग्रहण। उ०—सेद सलिल रोमाच कुस, गहि दुलही अरु नाथ। हियो दियो सँग हाथ के हथलेवा ही हाथ।—बिहारी (शब्द०)।

हथवाँस†—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ + बाँस (प्रत्य०)] नाव चलाने के समान। जैसे,—लग्गा, पतवार, डाँडा इत्यादि।

हथवाँसना†—क्रि० स० [हिं० हाथ + अवाँसना] १ किसी व्यवहार में लाई जानेवाली वस्तु में पहले पहल हाथ लगाना। काम में लाना। व्यवहार करना। २ अपने अधिकार में ले लेना। अधिकृत करके स्वयं कार्यप्रयुक्त करना जिससे अन्य कोई उसका उपयोग न कर सके। उ०—अस विचारि गुह ज्ञाति सन कहेउ सजग सब होहु। हथवाँसहु बोरहु तरनि कीजिय घाटारोहु।—तुलसी (शब्द०)।

हथवाह(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ + वाह] शस्त्र अस्त्र टूट जाने पर योद्धाओं का परस्पर हाथाबाँही करते हुए भिड जाना। कुश्ती। मल्लयुद्ध।

हथशाल(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० हथ + शाल] वह स्थान जहाँ हाथी बाँधा जाता है। हथसार। उ०—हाथी हथशालन में, घोड़े घुड़सालन में, कुल के कुटुंब लोक देखत खरे रहे।—राम० धर्म०, पृ० ६५।

हथसकर—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ + साँकर] हथेली की पीठ पर पहनने का एक गहना जो फूल के आकार का होता है और जिसमें पतली सिकड़ियाँ लगी होती है। हथफूल।

हथसाँकड़†, हथसाँकर, हथसाँकल(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ + साँकर] दे० 'हथसकर'।

हथसाँकला—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ + साँकल] दे० 'हथसकर'।

हथसार—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथी + सं० शाल, हिं० सार] वह घर जिसमें हाथी रखे जाते हैं। फीलखाना। गजशाला।

हथा†—संज्ञा पुं० [सं० हस्तक, प्रा० हत्थअ, हिं० हत्था, हथा, या हिं० हाथ] पूजन आदि के अवसर पर गीले पिसे हुए चावल और हल्दी पोतकर दीवार पर बनाया हुआ पंजे का चिह्न। ऐपन का छापा।

हथाहथी¹—अव्य० [हिं० हाथ (द्विरु०)] १ एक हाथ से दूसरे के हाथ में बराबर जाते हुए। हाथोंहाथ। २ शीघ्र। तुरंत।

हथाहथी(पु)²—संज्ञा स्त्री० [सं० हस्ताहस्ति, हिं० हथ] छीना झपटी। हाथाबाँही। उ०—डारत अबीर एरी बीर, बलबीर मेरो हथाहथी ले गयो गँवेरो नित चोरि कै।—दीन० ग्रं०, पृ० २२।

हथिनापुर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हस्तिनापुर] दे० 'हस्तिनापुर'। उ०—(क) नूर धूप तें अच्छछ, पउ हथिनापुर सारिय।—पृ० रा०, २१।१६४। (ख) अहिछत्ता, हथिनापुर जात। चले बनारसि उठि परभात।—अर्ध०, पृ० ५३।

हथिनाला(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हस्ति + नाल, हिं० हथनाल] दे० 'हथनाल'। उ०—चलै चक्क जो लै हथिनाला। पसरहिं धूम होइ अँधकाला।—हिंदी प्रेमा०, पृ० २२४।

हथिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० हस्तिनी प्रा० हत्थिणी] हाथी की मादा।

हथिया¹—संज्ञा पुं० [सं० हस्त, प्रा० हत्थ (नक्षत्र) + हिं० इया (स्वा० प्रत्य०)] हस्त नक्षत्र।

हथिया²—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ] कंघी के ऊपर की लकड़ी। (जुलाहे)।

हथियाना—क्रि० स० [हिं० हाथ + आना या इयाना (प्रत्य०)] १ हाथ में करना। अधिकार में करना। ले लेना। २ धोखा देकर ले लेना। उड़ा लेना। ३ हाथ में पकड़ना। हाथ से पकड़कर काम में लाना। ४ हत्था या हथेरा से खेत में पानी पहुँचाना।

हथियार—संज्ञा पुं० [हिं० हथियाना (= हाथ से पकड़ना)] हाथ से पकड़कर काम में लाने की साधनवस्तु। वह वस्तु जिसकी सहायता से कोई काम किया जाय। औजार। २. तलवार, भाला आदि आक्रमण करने या मारने का साधन। अस्त्र शस्त्र।

क्रि० प्र०—चलना।—चलाना।

मुहा०—हथियार उठाना = (१) मारने के लिये अस्त्र हाथ में लेना। (२) लड़ाई के लिये तैयार होना। हथियार करना = हथियार चलाना। हथियार डालना = युद्ध में परास्त होना। हथियार बाँधना = युद्धार्थ शस्त्रास्त्रों से सज्जित होना। लड़ाई के लिये तैयार होना। हथियार लगाना = अस्त्रशस्त्र धारण करना।

३ लिंगेंद्रिय। (बाजारू)।

हथियारघर—संज्ञा पुं० [हिं० हथियार + घर] वह गृह या आगार जहाँ पर शस्त्रास्त्र रखे जाते हों।

हथियारबंद—वि० [हिं० हथियार + फा० बंद (सं० बंध)] जो हथियार बाँधे हो। सशस्त्र। जैसे,—हथियारबंद सिपाही।

हथिसार(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हस्तिशाल] हस्तिशाला। हथसाल। उ०—कंचन गढल हृदय हथिसार, तेंहिर थंभ पयोधर भार।—विद्यापति, पृ० १६०।

हथी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हस्तिन्] दे० 'हाथी'। उ०—(क) कित हौं, कित महिमा नाथ की। कहत हौं चींटी हथी साथ की।—नंद० ग्रं०, पृ० २७०। (ख) घुमडनि मिलनि देखि डर आवै। मनमथ मानो हथी लरावै।—नंद० ग्रं०, पृ० १३२।

हथुई†—वि० [हिं० हाथ, हथ] हाथ से संबंधित। हाथ द्वारा निर्मित। हाथ की। जैसे, हथुई मिट्टी, हथुई रोटी।

हथुई मिट्टी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ + मिट्टी] गीली मिट्टी या वह लेप जो कच्ची दीवार का खुरदुरापन दूर करने के लिये लगाया जाता है।

हथुई रोटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ + रोटी] वह रोटी जो गीले आटे की लोई को हाथ से गढकर बनाई गई हो।

हथेरा—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ + एरा (प्रत्य०)] तीन, साढ़े तीन हाथ लंबा लकड़ी का वह बल्ला जिसका एक सिरा हथेली की तरह चौड़ा होता है और जिससे खेती की नाली का पानी चारों ओर सिंचाई के लिये उलीचते हैं। हाथा।

हथेरी(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ + एली] दे० 'हथेली'। उ०—भरी रच रहे लिए गागरिया भई लाल हथेरी दूर करकी।—ब्रजमाधुरी, पृ० २४।

हथेल—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ] वह लचीली कमाची जिसपर बुना हुआ कपड़ा तानकर रखा जाता है। पनिक। पनकट। (जुलाहे)।

हथेली—संज्ञा स्त्री० [सं० हस्ततल, प्रा० हत्थतल, हत्थल, हथ्थल] १ हाथ की कलाई का चौडा सिरा जिसमे उँगलियाँ लगी होती है। हाथ की गद्दी। हस्ततल। करतल।

मुहा०—हथेली मे आना = (१) हाथ मे आना। अधिकार मे आना। मिलना। प्राप्त होना। (२) वश मे होना। हथेली मे करना = अपने अधिकार मे करना। ले लेना। हथेली खुजलाना = द्रव्य मिलने का आगम सूचित होना। कुछ मिलने का शकुन होना।

विशेष—यह एक प्रचलित प्रवाद है कि जब दाहिने हाथ की हथेली खुजलाती है, तब कुछ मिलता है।

हथेली का फफोला = अत्यत सुकुमार वस्तु। बहुत नाजुक चीज जिसके टूटने फूटने का सदा डर रहे। हथेली देना या लगाना = हाथ का सहारा देना। सहायता करना। मदद करके सँभालना। हथेली पीटना या बजाना = ताली पीटना। किसकी हथेली मे बाल जमे है ? = कौन ऐसा ससार मे है ? जैसे,—किसकी हथेली मे बाल जमे है जो उसे मार सकता है। हथेली सा = बिल्कुल चौरस या सपाट। समतल। हथेली पर जान रखना या लेना = प्राणत्याग का भय न रखना। जान देने के लिये हरदम, हर हालत मे तैयार रहना। हथेली पर जान होना = ऐसी स्थिति मे पडना जिसमे प्राण जाने का भय हो। जान जोखो होना। हथेली पर दही जमाना = किसी काम के लिये बहुत जल्दबाजी करना। किसी से कोई काम कराने के लिये अत्यत शीघ्रता करना। हथेली पर सर रखना या लेना = दे० 'हथेली पर जान रखना'। हथेली पर सरसो उगाना या जमाना = असभव कार्य को भी सभव कर दिखाना। किसी कठिन काम को अत्यत शीघ्रता से कर दिखाना।

२ चरखे की मुठिया जिसे पकडकर चरखा चलाते है।

हथेव(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ] हथौडा। घन। उ०—हनि हथेव हिय दरपन साजै। छोलनी जाप लिहे तन माँजै।—जायसी (शब्द०)।

हथोडी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ] १ हथोरी। हथेली। २ दे० 'हथौडी'।

हथोरी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ + ओरी (प्रत्य०)] दे० 'हथेली'। उ०—जानौ रकत हथोरी बूडी। रवि परभात तात, वै जूडी।—जायसी (शब्द०)।

हथोटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ + औटी (प्रत्य०)] १ किसी काम मे हाथ लगाने का ढग। हाथ से करने का ढब। हाथ की शैली। हस्तकौशल। जैसे,—अभी तुम्हे इसकी हथौटी नही मालूम है, इसी से देर लगती है। उ०—रसना को भाग, साँचे स्रौननि सुभूषन हे, जगमगी रहे महा मोहन हथौटी के।—घनानद, पृ० २०५।

मुहा०—हथौटी जमना, मँजना या सध जाना = (१) काम करने मे कुशलता प्राप्त होना। हाथ रमा होना या सध जाना। हथौटी मे सीखना = कला या हुनर की जानकारी प्राप्त करना। किसी काम को करने का गुण सीखना।

२ किसी काम मे लगा हुआ हाथ। किसी काम मे हाथ डालने की क्रिया या भाव। जैसे,—उसकी हथौटी बडी मनहूस है। जिस काम मे हाथ लगाता है, वह चौपट हो जाता है।

हथौडा—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ + औडा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० हथौटी] १. किसी वस्तु को ठोकने, पीटने या गढने के लिये साधन-वस्तु। लुहारो या सुनारो का वह औजार जिसमे वे किसी धातुखड को तोडते, पीटते या गढते है। मारतोल। २ कील ठोकने, खूँटे गाडने आदि का औजार।

हथौडी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हथौडा का लघ्वर्थक रूप] छोटा हथौडा।

हथौना—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ + औना (प्रत्य०)] दूल्हे और दुलहन के हाथ मे मिठाई रखने की रीति।

हथ्थ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हस्त, प्रा० हत्थ] हस्त। हाथ।

हथ्थल(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हस्ततल, प्रा० हत्थल] हाथ का पजा। हथेली।

हथ्थि, हथ्थी—संज्ञा पुं० [सं० हस्ती] हाथी। हस्ती।

हथ्याना(पु)—क्रि० स० [हिं० हाथ] दे० 'हथियाना'।

हथ्यार(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० हथियार] दे० 'हथियार'। उ०—नाए न माथहि दक्खिन नाथ न साथ मे फौज न हाथ हथ्यारो।—भूषण ग्र०, पृ० १३६।

हद—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ किसी वस्तु के विस्तार का अतिम सिरा। किसी चीज की लबाई, चौडाई, ऊँचाई या गहराई की सबसे अधिक पहुँच। सीमा। मर्यादा। जैसे,—सडक की हद, गाँव की हद।

यौ०—हदबदी। हदसमाअत।

मुहा०—हद बाँधना = सीमा निर्धारित होना। यह ठहराया जाना कि किसी चीज का घेरा अथवा लबाई, चौडाई यहाँ तक है। हद बाँधना = सीमा निर्धारित करना। हद तोडना = सीमा के बाहर जाना या कुछ करना। सीमा का अतिक्रमण करना। हद से बाहर = ठहराई हुई सीमा के आगे। हद कायम करना = दे० 'हद बाँधना'।

२ किसी वस्तु या बात का सबसे अधिक परिमाण जो ठहराया गया हो। अधिक से अधिक सख्या या परिमाण जो साधारणत माना जाता हो या उचित हो। पराकाष्ठा। जैसे,—(क) उस मेले मे हद से ज्यादा आदमी आए। (ख) उसने मिहनत की हद कर दी। उ०—खेला करी कोकिल कुरग बार बारे करे, कुढि कुढि केहरी कलक लक हद ली।—केशव (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना = अति कर देना। —होना = पराकाष्ठा हो जाना।

मुहा०—हद से ज्यादा = बहुत अधिक। अत्यत। हद व हिसाब नही = बहुत ही ज्यादा। अत्यत अपार। अपरिमेय।

३ ओट। आड (को०)। ४ मुसलिम धर्मशास्त्र द्वारा विहित दड (को०)। ५ किसी बात की उचित सीमा या निश्चित स्थान। कोई बात कहाँ तक करनी चाहिए, इसका नियत मान। कोई काम, व्यवहार या आचरण कहाँ तक ठीक है, इसका अदाज। मर्यादा। जैसे,—तुम तो हर एक बात मे हद से बाहर चले जाते हो।

मुहा०—हद से गुजरना = मर्यादा का अतिक्रमण करना। जहाँ उचित हो उससे किसी बात मे आगे बढना।

हदका(पु)†—सज्ञा पुं० [अनु०] धक्का। हचका।

हदफ—सज्ञा पु० [अ० हदफ] १ लक्ष्य। निशाना। २ ऊँचा पुश्ता। ३ निशानेबाजी सीखने के लिये निर्मित युद्ध का वह स्थान जहाँ लक्ष्यवेध किया जाता है [को०]।

हदस†—सज्ञा पुं० [अ० हादिसह] भय। डर। खौफ।

हदसना—क्रि० अ० [हिं० हदस + ना(प्रत्य०)] भयभीत हो जाना। खौफ खाना। डरना।

हदसमाअत—सज्ञा स्त्री० [अ०] किसी बात का दावा करने के लिये समय की नियत अवधि। वह मुकर्रर वक्त जिसके भीतर अदालत मे दावा करना चाहिए। (कचहरी)।

मुहा०—हद समाअत होना = हद समाअत पूरी होना। दावा करने की अवधि का बीत जाना।

हदसिआसत—सज्ञा स्त्री० [अ०] किसी न्यायालय के अधिकार की सीमा। उतना स्थान जितने के भीतर के मुकदमे कोई अदालत ले सके।

हदीस—सज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमानो का वह धर्मग्रथ जिसमे मुहम्मद साहब के कार्यों के वृत्तात और भिन्न भिन्न अवसरो पर कहे हुए वचनो का सग्रह है और जिसका व्यवहार बहुत कुछ स्मृति के रूप मे होता है।

हद्द—सज्ञा स्त्री० [अ० हद्द] दे० 'हद'। उ०—(क) हद्द कारिगर हुन्नर कीन्हा। जैसे दूध मे जामन दीन्हा।—कबीर सा०, भा०, ४, पृ० ५३४। (ख) हद्द अनहद्द ना उठै बानी।—पलटू०, भा० २, पृ० ३०। (ग) है नीचता और बेएतबारी की हद्द।—वो दुनिया, पृ० २८।

हद्दा—सज्ञा स्त्री० [सं०] मेषादि लग्नो का प्रारंभिक तीस अश।

विशेष—सख्याविशेष के अनुपात से इनमे पाँच पाँच ग्रहो का भाग रहता है। जैसे, मेष लग्न के ३० अश मे ६ भाग गुरु, ६ अश शुक्र, ८ अश बुध तथा पाँच पाँच अश भौम और शनि का होता है। अन्य लग्नो के अश भी इसी प्रकार ग्रहो मे विभक्त किए जाते है। वर्षप्रवेश के आदि मे शुभाशुभ गणना मे इसका प्रयोग किया जाता है। नीलकठीय ताजक मे इसका विस्तृत विवरण द्रष्टव्य है।

हन्—वि० [स०] मारनेवाला। वध करनेवाला। हननेवाला। (समस्त पदो मे प्रयुक्त)। जैसे, पितृहन्, मातृहन्, ब्रह्महन्, पुत्रहन् आदि।

हन—सज्ञा पु० [स०] मारना। काटना। वध। हनन [को०]।

हनन[1]—सज्ञा पुं० [स०] [वि० हननीय, हनित] १ मार डालना। वध करना। जान मारना। २ आघात करना। चोट लगाना। पीटना। ३ गुणन। गुणा करना। जरब देना। (गणित)। ४ एक प्रकार का क्षुद्र कीट (को०)। ५ ढोल, नगाडा, धौंसा आदि बजाने की लकडी (को०)।

हनन[2]—वि० हनन करनेवाला। मारने या वध करनेवाला।

हननशील—वि० [सं०] क्रूर। वधिक। प्राण लेनेवाला।

हनना(पु)†—क्रि० स० [स० हनन] १ मार डालना। वध करना। प्राण लेना। उ०—छन महँ हने निसाचर जेते।—तुलसी (शब्द०)। २ आघात करना। चोट मारना। प्रहार करना। कसकर मारना। उ०—(क) मुष्टिक एक ताहि कपि हनी।—तुलसी (शब्द०)। (ख) आवत ही उर महँ हनेउ मुष्टि प्रहार प्रघोर।—तुलसी (शब्द०)। ३ पीटना। ठोंकना। ४ लकडी से पीट या ठोंककर बजाना। उ०—जोगींद्र सिद्ध-मुनीस देव बिलोकि प्रभु दुदुभि हनी।—तुलसी (शब्द०)।

हननी—वि० स्त्री० [स० हनन + ई(प्रत्य०)] मार डालनेवाली। हनन करनेवाली। उ०—री, हुआ तुझको न कुछ सकोच। तू बनी जननी कि हननी, सोच।—साकेत, पृ० १८२।

हननीय—वि० [स०] १ हनन करने योग्य। मारने योग्य। २ जिसे मारना हो।

हनफी—सज्ञा पुं० [अ० हनफी] मुसलमानो मे सुन्नियो का एक सप्रदाय। हजरत इब्राहीम का अनुयायी।

हनवाना(पु)—क्रि० स०[हि हनना का प्रेरणा०] मारने या हनने का कार्य दूसरे से कराना। मरवाना।

हनवाना[2]—क्रि० अ० [स०√स्ना, √स्नपय्, प्रा० √ण्हव√ण्हाव> ण्हावअत, हिं० नहवाना] दे० 'नहवाना', 'नहलाना'।

हनाना†—क्रि० अ० [स०√स्नापय्, प्रा०√ण्हावय] दे० 'नहाना'।

हनितवत(पु)—सज्ञा पुं० [प्रा० हनुमन्त] दे० 'हनुमत'।

हनिवत(पु)—सज्ञा पुं० [प्रा० हनुमन्त] दे० 'हनुमत'।

हनिवँत(पु)—सज्ञा पुं० [प्र० हनुमन्त] दे० 'हनुमान'। उ०—नहिं सो राम, हनिवँत बडि दूरी। को लेइ आव सजीवन मूरी।—जायसी (शब्द०)।

हनी—सज्ञा पुं० [अ०] मधु। शहद।

हनीमून—सज्ञा पुं० [अ०] विवाह के बाद पति पत्नी का प्रमोदकाल। विवाह के अनतर पति पत्नी का आनद विलास एव क्रीडा का मास।

हनील—सज्ञा पुं० [स०] केवडा। केतकी [को०]।

हनु—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दाढ की हड्डी। जबडा। २ ठुड्डी। चिबुक। ३ अस्त्र। हथियार (को०)। ४ वह वस्तु जिससे जीवन को क्षति हो (को०)। ५ मरण। मृत्यु (को०)। ६ रोग। बीमारी (को०)। ७ एक प्रकार की ओषधि। ८ स्वेच्छाचारिणी स्त्री। कुलटा। वेश्या (को०)।

हनुका—सज्ञा स्त्री० [स०] दाढ की हड्डी। जबडा।

हनुग्रह—सज्ञा पु० [स०] एक रोग जिसमे जबडे बैठ जाते हैं और जल्दी खुलते नही।

विशेष—यह रोग किसी प्रकार की चोट लगने आदि से वायु कुपित होने के कारण होता है।

हनुफाल—सज्ञा पुं० [स० हनु + फाल] एक छद। दे० 'हनूफाल'।

हनुभेद—सज्ञा पु० [स०] १ जबडे का खुलना। २ एक प्रकार का ग्रहण या ग्रास (को०)।

हनुमत—संज्ञा पुं० [सं० हनुमत्] दे० 'हनुमान्'। उ०—तब हनुमत कही सब रामकथा निज नाम।—मानस, ५।६।

हनुमत उड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हनुमत + उड़ना] मालखंभ की एक कसरत जिसमें सिर नीचे और पैर ऊपर की ओर करके सामने लाते हैं और फिर ऊपर खसकते हैं।

हनुमती—संज्ञा स्त्री० [हिं० हनुमत] मालखंभ की एक कसरत जिसमें एक पाँव के अँगूठे से बेंत पकड़कर खूब तानते हैं और फिर दूसरे पाँव को अटी देकर और उससे बेंत पकड़कर बैठते हैं।

हनुमज्जयंती—संज्ञा स्त्री० [सं० हनुमत् + जयन्ती] हनुमान जी का जन्मोत्सव।

विशेष—हनुमज्जयंती पुराणों के आधार पर वर्ष में दो दिन मनाई जाती है। प्रथम चैत्र पूर्णिमा को जिस दिन उष काल में हनुमान् का जन्मोत्सव मनाया जाता है। द्वितीय कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को जो दक्षिण में विशेष प्रचलित है।

हनुमत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हनुमत्] दे० 'हनुमान्'।

हनुमत्कवच—संज्ञा पुं० [सं०] १ हनुमान को प्रसन्न करने का एक मंत्र जिसे लोग तावीज वगैरह में रखकर पहनते हैं। २ हनुमान जी को प्रसन्न करने की एक स्तुति।

हनुमद्धारा—संज्ञा स्त्री० [सं० हनुमत् + धारा] चित्रकूट का एक पवित्र स्थान। उ०—लहराते धीर से, वह है हनुमद्धारा—पचकोसी का पहाड़।—कुकुर०, पृ० ५४।

हनुमान्[1]—वि० [सं० हनुमत्] १ दाढ़वाला। जबड़ेवाला। २ भारी दाढ़ या जबड़ेवाला। महावीर।

हनुमान्[2]—संज्ञा पुं० पंपा के एक वीर बंदर जिन्होंने सीताहरण के उपरांत रामचंद्र की बड़ी सेवा और सहायता की थी।

विशेष—ये लंका में जाकर सीता का समाचार भी लाए थे और रावण की सेना के साथ लड़े थे। ये अपने अपार बल, वीरता और वेग के लिये प्रसिद्ध हैं और बंदरों के समान इनकी उत्पत्ति भी विष्णु के अवतार राम की सहायता के लिये देवांश से हुई थी। इनकी माता का नाम अंजना था और ये वायु या मरुत् देवता के पुत्र कहे जाते हैं। कहीं कहीं इन्हें शिव के वीर्य या अंश से भी उत्पन्न कहा गया है। ये रामभक्तों में सबसे आदि कहे जाते हैं और राम ही के समान इनकी पूजा भी भारत में सर्वत्र होती है। ये बलप्रदाता माने जाते हैं और हिंदू पहलवान या योद्धा इनका नाम लेते हैं और इनकी उपासना करते हैं।

हनुमान—संज्ञा पुं० [सं० हनुमान्] दे० 'हनुमान्'।

हनुमान बैठक—संज्ञा स्त्री० [हिं० हनुमान + बैठक] एक प्रकार की बैठक (कसरत) जिसमें एक पैर पैंतरे की तरह आगे बढ़ाते हुए बैठते उठते हैं।

हनुमूल—संज्ञा पुं० [सं०] जबड़े का मूल स्थान [को०]।

हनुमोक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ दाढ़ का एक रोग जिसमें बहुत दरद होता है और मुँह खोलते नहीं बनता। २ जबड़े का खुलना। हनुभेद (को०)।

हनुवँ(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० हनुमत] दे० 'हनुमान्'। उ०—जनहुँ लंक सब लूटी, हनुवँ बिधंसी बारि। जागि उठिउँ अस देखत, सखि! कहु सपन बिचारि।—जायसी (शब्द०)।

हनुसंहति—संज्ञा स्त्री० [सं०] जबड़ा बैठने की व्याधि।

हनुसंहनन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हनुसंहति'।

हनुल—वि० [सं०] पुष्ट या दृढ़ दाढ़वाला। मजबूत जबड़ेवाला।

हनूँ(पु)‡—संज्ञा पुं० [हिं० हनुवँ] हनुमान्। उ०—जनहुँ लंक सब लूसी हनूँ बिधंसी बारि।—जायसी ग्र० (गुप्त), पृ० ३५८।

हनू—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'हनु' [को०]।

हनूफाल—संज्ञा पुं० [सं० हनू + हिं० फाल, फलाँग] एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में बारह मात्राएँ और अंत में गुरु लघु होते हैं। उ०—इति हनूफाल्य छंद। कल बरनि बरनि सुकंद।—पृ० रा०, ११६७।

हनूमान्—संज्ञा पुं० [सं० हनूमत्] दे० 'हनुमान्'।

हनूष—संज्ञा पुं० [सं०] दैत्य। राक्षस [को०]।

हनोज—अव्य० [फा० हनोज़] अभी। अभी तक। जैसे,—हनोज दिल्ली दूर है। उ०—कवि सेवक बूढ़े भए तो कहा पै हनोज है मौज मनोज ही की।—सेवक (शब्द०)।

हनोद—संज्ञा पुं० [देश०] हिंडोल राग के एक पुत्र का नाम।

हन्न[1]—संज्ञा पुं० [सं०] पुरीष। विष्ठा। मल [को०]।

हन्न[2]—वि० जिसका उत्सर्जन या त्याग किया गया हो (विष्ठा)।

हन्नाह(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सन्नाह] दे० 'सनाह'। उ०—तुम्ह लेहु लेहु मुष जप जोध। हन्नाह सूर नव पहरि क्रोध।—पृ० रा०, २०।४७।

हन्यमान—वि० [सं०] जो मारने योग्य हो। हननीय। वध्य। २ जो मारा जा रहा हो [को०]।

हप†—संज्ञा पुं० [अनुध्व०] कोई वस्तु मुँह में चट से लेकर ओठ बंद करने का शब्द। जैसे,—हप से खा गया।

मुहा०—हप कर जाना = झट से मुँह में डालकर खा जाना। चटपट उड़ा जाना। उ०—देखते देखते मारा भात हप से खा गया। हप करना = दे० 'हप कर जाना'।

हपटाना†—क्रि० अ० [हिं० हाँफना] हाँफना।

हपुषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दवा के काम आनेवाला एक फल जो बहुत काला होता है। ध्मांक्षनाशिनी [को०]।

हप्पा—संज्ञा पुं० [अनुध्व०] १ भोजन। ग्रास। कौर। २ उत्कोच। घूस।

हप्पू[1]—संज्ञा पुं० [?] अफीम [को०]।

हप्पू[2]—वि० अधिक खानेवाला।

हप्ता(पु)†—संज्ञा पुं० [फा० हफ्तह्] दे० 'हफ्ता'। उ०—द्वै हप्ता हित ह्वै गई, जब रुखसत मंजूर।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० १५४।

हफनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाफना] हँफने की क्रिया। हँफने का भाव। हफनी। उ०—गई बावरी बावरी आई आतुर न्हाइ। तपनि तरल नैनी सही मो हित हफनि मिटाइ।—स० सप्तक, पृ० २६४।

हप्त—वि० [सं० सप्त, फा० हफ्त] सात की संख्या का बोधक या वाचक। सात [को०]।

हफ्तगाना—संज्ञा पुं० [फा० हफ्तगानह्] गाँव के पटवारी के सात कागज जिनमे वह जमीन, लगान आदि का लेखा रखता है—खसरा, वहीखाता, जमाबदी, स्याहा, बुझारत, रोजनामचा और जिसवार ।

हफ्तदह—वि० [फा० हफ्तदह] सप्तदश । सत्रह [को०] ।

हफ्तहजारी—संज्ञा पुं० [फा० हफ्तहजारी] १ मुगलकालीन एक प्रतिष्ठित पद । २ वह व्यक्ति जिसे यह पद प्राप्त हो [को०] ।

हफ्ता—संज्ञा पुं० [फा० हफ्तह्] सात दिन का समय । सप्ताह ।

हफ्ती—संज्ञा स्त्री० [फा० हफ्ती] एक प्रकार की जूती ।

हबकना¹—क्रि०अ०[अनुध्व० हप] १ मुँह बाना । खाने या दाँत से काटने के लिये झट से मुँह खोलना । २ (पु) उतावली करना । हप् हप् करना । जल्दबाजी करना । उ०—हबकि न बोलिबा ठबकि न चालिबा धीरैं धरिबा पाव । गरब न करिबा सहजै रहिबा भणत गोरख राव ।—गोरख०, पृ० ११ ।

हबकना²—क्रि० स० १ किसी भोज्य वस्तु या फल आदि को जल्दी जल्दी दाँतो से काटकर खाना । दाँत काटना । जैसे,—कुत्ते ने पीछे से आकर हबक लिया ।

हबड हबड(पु)†—क्रि० वि० [अनुध्व०] दे० 'हबर हबर' । उ०—दुरमति दभ गहे कर मे डफ हबड हबड दै तारी । —धरम० श०, पृ० ६१ ।

हबडा—वि० [देश०] १ जिसके बहुत बडे बडे दाँत हो । बडदता । २ भद्दा । कुरूप । बदशकल ।

हबर दबर, हबर हबर—क्रि० वि० [अनु० हडबड] १ जल्दी जल्दी । उतावली से । जल्दबाजी से । जैसे,—घर मे तलवा नही टिकता, हबर दबर आई फिर बाहर जा झमकी । २ जल्दी के कारण । ठीक तौर से नही । हडबडी से । जैसे,—इस तरह हबर हबर करने से काम नही होता ।

हबराना(पु)‡—क्रि० अ० [अनु०] दे० 'हडबडाना'

हबश—संज्ञा पुं० [फा० हब्श] अफ्रिका का एक प्रदेश जो मिस्र के दक्षिण पडता है और जहाँ के लोग बहुत काले होते है ।

हबशिन—संज्ञा स्त्री० [फा० हबशी] १ हबश देश की औरत । हबशी औरत जो शाही महलो मे पहरा देने का काम करती थी । २ अत्यत ही काली स्त्री ।

हबशी—संज्ञा पुं० [फा०] १ हबश देश का निवासी जो बहुत काला होता है ।

विशेष—हबशियो का रग बहुत काला, कद नाटा, बाल घुँघराले और ओठ बहुत मोटे होते है । पहले ये गुलाम बनाए जाते थे और विकते थे ।

२ एक प्रकार का अगूर जो जामुन की तरह काला होता है ।

हबशी सनर—संज्ञा पुं० [फा०] अफ्रिका का गैंडा जिसके दो सीग या खाँग होते हैं ।

हबस(पु)—संज्ञा पु० [फा० हबश, हब्श] अफ्रिका का एक प्रदेश । दे० 'हबश' । उ०—करनाट, हबस, फिरगहू विलायती, बलख, रूम अरितिय छतियाँ दलति हैं ।—भूषण ग्र०, पृ० ८६ ।

हबसी(पु)—संज्ञा पुं० [फा० हबशी] दे० 'हबशी' । उ०—तिल न होइ मुख मीत पर जानौ वाको हेत । रूप खजाने की मनौ हबसी चौकी देत ।—रसनिधि (शब्द०) ।

हबाब—संज्ञा पुं० [अ०] १ बुद्बुद् । बुल्ला । २ शीशे का पतला गोला ।

हबाबी—वि० [अ०] नि सार । हबाब जैसा । क्षणभगुर ।

हबि(पु)—संज्ञा पुं० [स० हवि] दे० 'अग्नि' । उ०—निमल तेज लग्गी वि भुअ, चष रत्ता हबि जान ।—पृ० रा०, ६६।४६३ ।

हबीब—संज्ञा पुं० [अ०] १ दोस्त । मित्र । २ प्रिय । प्यारा ।

यौ०—खुदा का हबीब = पैगबर मुहम्मद साहब जो खुदा के परम प्रिय माने जाते है ।

हबूब—संज्ञा पुं० [अ० हबाब या हुबाब] १ पानी का बबूला । बुल्ला । उ०—(क) यह सब मौज चौज सुख सगा, तन हबूब बुल्ले सम जाई ।—घट०, पृ० १५६ । (ख) तन हबूब बुल्ला जस फूटा ।—घट०, पृ० ३१० । २ नि सार बात । झूठमूठ की बात । उ०—साधु जानै महासाधु, खल जानै महाखल, बानी झूठी साँची कोटि उठत हबूब हैं ।—तुलसी (शब्द०) । ३ धूल से भरी तेज हवा । आँधी (को०) ।

हबेली—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'हवेली' ।

हब्ब—संज्ञा पुं० [अ०] १. गुटिका । गोली । २. अन्न का दाना [को०] ।

हब्बा—संज्ञा पु० [अ० हब्बह्] १ अन्न का दाना । दाना । बीज । २ रत्ती भर वजन । आठ चावल का भार । ३ बहुत थोडा, जरा सा अश या भाग । अत्यल्प मात्रा [को०] ।

यौ०—हब्बा भर = बहुत थोडा । रत्ती भर । हब्बा हब्बा = कौडी कौडी ।

हब्बा डब्बा—संज्ञा पु० [हिं० हाँफ > हँफ + अनु० डब्बा] जोर जोर से साँस या पसली चलने की बीमारी जो बच्चो को होती है ।

हब्बुल् आस—संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार की मेहँदी जो बगीचो मे लगाई जाती है और दवा के काम मे आती है । विलायती मेहँदी ।

विशेष—इस मेहँदी की पत्तियो से एक प्रकार का सुगधित तेल निकाला जाता है। इस तेल से बाल भी बढते हैं। इसके फल अतिसार और सग्रहणी मे दिए जाते है और गठिया का दर्द दूर करने और खून रोकने के काम मे आते हैं ।

हब्स—संज्ञा पुं० [अ०] १ कैद । कारावास । २ अवरोध । रुकावट । रोक (को०) । ३ बरसात मे हवा का बद हो जाना । ऊमस (को०) ।

यौ०—हब्से दम = (१) श्वासावरोध । दम घुटना । (२) कुभक प्राणायाम । हब्से दवाम = आजन्म कारावास । उम्र भर की कैद । हब्से बेजा = हब्स बेजा ।

हब्स बेजा—संज्ञा पुं० [अ० हब्स ए बेजा] अनुचित रीति से बदी करना । बेजा तौर पर कहीं कैद रखना । (कानून) ।

हम¹—सर्व० [सं० अहम्] उत्तम पुरुष बहुवचन का सूचक सर्वनाम शब्द। मैं का बहुवचन।

हम(पु)²—संज्ञा पुं० अहंकार। अपने को श्रेष्ठ मानने की या बड़प्पन की भावना। 'हम' का भाव। उ०—जब हम था तब गुरु नहीं जब गुरु तब हम नाहिं।—कबीर (शब्द०)।

हम³—अव्य० [फ़ा०] १ साथ। संग। २ आपस में। परस्पर। ३ समान। तुल्य।

यौ०—हमअसर। हमकौम = सजातीय। एक जाति का। हमखाना=सह निवासी। एक साथ रहनेवाला। हमदर्दी। हमजिंस। हमजोली।

हमअसर—संज्ञा पुं० [फ़ा० हम + अ० अस्र, असर] १ वे जिनपर एक ही प्रकार का प्रभाव पड़ा हो। समान संस्कार या प्रवृत्ति युक्त। समान प्रभाव या संस्कारवाला। २ एक ही समय में होनेवाले। साथी। संगी।

हमउम्र—वि० [फ़ा० हम + अ० उम्र] अवस्था में समान। बराबर उम्र का।

हमकौम—वि० [फ़ा० हम + अ० कौम] एक ही जाति के। सजातीय।

हमख्याल—वि० [फ़ा० हम + खयाल] समान विचारवाला। उ०—जब जब पर्दा फाश किया जाता है तब तब अमृत राय और उनके हमख्यालों का पारा ऊपर चढ़ जाता है।—प्रसाद०, पृ० १४५।

हमख्वाबा—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० हमख्वाबह्] पत्नी। भार्या। बीवी [को०]।

हमचश्म—वि० [फ़ा०] बराबरी का दर्जा रखनेवाला।

हमचश्मी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] मित्रता। दोस्ती। बराबरी। उ०—दो चार अब तुम से क्यों कर होवे हमचश्मी के दावे से। कि नरगिस की चमन में देखकर गरदन ढलकती है।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० ४३।

हमजिंस—संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक ही वर्ग या जाति के प्राणी। एक ही प्रकार के व्यक्ति।

हमजुल्फ—संज्ञा पुं० [फ़ा० हमजुल्फ] साली का पति। साढ़ू। उ०—आपकी फूफी के नवासे का हमजुल्फ हूँ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ८६।

हमजोली—संज्ञा पुं० [फ़ा० हम + हिं० जोड़ी] साथी। संगी। सहयोगी। सखा। उ०—खेलूँगी कभी न होली। उससे जो नहीं हमजोली।—अर्चना, पृ० ३४।

हमता(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० अहम्, हिं० हम + सं० ता (प्रत्य०) अथवा सं० अहन्ता] अहंभाव। अहंकार। उ०—हमता जहाँ तहाँ प्रभु नाहीं सो हमता क्यों मानौ।—सूर०, १।१११।

हमतोल—वि० [हिं० हम + तोल] तुल्य। बराबर। समान। उ०—औ हमतोल आपस में कर दोसती। किया भाव लोरक का मैंना सती।—दक्खिनी०, पृ० ३७३।

हमदम—संज्ञा पुं० [सं०] हर समय का साथी। दोस्त। मित्र।

हमदर्द—वि०, संज्ञा पुं० [फ़ा०] दुःख का साथी। दुःख में सहानुभूति रखनेवाला।

हमदर्दी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] दूसरे के दुःख में दुःखी होने का भाव। सहानुभूति। जैसे,—मुझे उसके साथ कुछ भी सहानुभूति नहीं है।

हमन(पु)—सर्व० [सं० अहम्] हम। उ०—हमन है इश्क मस्ताना हमन को होशियारी क्या।—कबीर ग्रं०, भा० २, पृ० ७०।

हमनिवाला—वि० संज्ञा पुं० [फ़ा० हमनिवालह्] एक साथ बैठकर भोजन करनेवाले। आहार के सखा। घनिष्ठ मित्र।

हमपचं†, हमपचे†—सर्व० [हिं० हम + पंच] हम लोग।

हमपल्ला—वि० [फ़ा० हमपल्लह्] जो तुल्य हो। समान। बराबरीवाला [को०]।

हमपेशा—वि० [फ़ा० हमपेशह्] एक ही तरह का पेशा करनेवाला। जो व्यवसाय एक करता हो, वही व्यवसाय करनेवाला दूसरा। सहव्यवसायी।

हमबिस्तर—वि० [फ़ा०] १ एक ही शय्या पर सोनेवाला। २ एक ही बिछौने पर साथ में सोया हुआ।

क्रि० प्र०—करना।—बनाना।—होना।

हमबिस्तरी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १ एक ही बिछौने पर साथ में सोने की क्रिया। २ प्रसंग। मैथुन। संभोग। सहवास।

हममजहब—वि० [फ़ा० हम + अ० मजहब] समान धर्म के अनुयायी। एक ही मजहब को माननेवाले। सहधर्मी।

हमर‡—सर्व० [हिं०] दे० 'हमारा'। उ०—हे छोर छीन सब हमर देश।—नई०, पृ० २०।

हमरकाब—वि० [फ़ा०] घुड़सवार के साथ चलनेवाला। सवारी के साथ जानेवाला। उ०—रक्षक शरीर का, हमरकाब, साथ लेता सेना निज।—अपरा, पृ० ८४।

हमरा†—सर्व० [हिं० हम] दे० 'हमारा'। उ०—(क) धर्म हमरा ऐसा निर्बल और पतला हो गया है कि केवल स्पर्श से वा एक चुल्लू पानी से मर जाता है।—भारतेंदु ग्रं०, भाग ३, पृ० ५८३। (ख) हम जाने हैं, परम तापसो हमरे सजन सुजाना। हम जाने है, परम निरिंद्रिय हमरे ये मेहमाना।—कबीर, पृ० १३।

हमराज—वि० [फ़ा० हमराज] रहस्य जाननेवाला। मर्मज्ञ। उ०—ना देखे पन उस दुख का दरवाज कोई। खुदा बिन न था उसको हमराज कोई।—दक्खिनी, पृ० १४०।

हमराह—अव्य० [फ़ा०] (कहीं जाने में किसी के) साथ। संग में। जैसे,—लड़का उसके हमराह गया।

मुहा०—हमराह करना = साथ में करना। संग या साथ में लगाना। हमराह होना = साथ जाना।

हमराही—वि० [फ़ा०] सहपथिक। साथ यात्रा करनेवाला। सहयात्री। उ०—फ्रांस और इंगलैंड पुराने अड्डे पूँजीशाही। कुछ ही दिन रह सके जग में संग और हमराही।—हंस०, पृ० ४०।

हमरो(पु)—सर्व० [हिं०] हमारा। उ०—(क) कुपित भयो सुरपति मतवारो। हमरो अवर ववन रखवारो।—नंद० ग्रं०, पृ०

३०८। (ख) कहन लगे वृदावन ऐसो। यह हमरौ बैकुठ न जैसो।—नद०, ग्र०, पृ० २५७।

हमल—सज्ञा पुं० [ग्र०] स्त्री के पेट मे बच्चे का होना। पाँव भारी होना। गर्भ। विशेष दे० 'गर्भ'।

क्रि० प्र०—होना।

मुहा०—हमल गिरना = गर्भपात होना। पेट से बच्चे का पूरा हुए विना निकल जाना। हमल गिराना = गर्भपात करना। पेट के बच्चे को विना समय पूरा हुए निकाल देना। हमल रहना = गर्भ रहना। पेट मे बच्चे की योजना होना।

२ भार। वोझ (को०)।

हमला—सज्ञा पुं० [ग्र० हमलह्, हम्लह्] १ लडाई करने के लिये चल पडना। युद्धयात्रा। चढाई। धावा। जैसे,—मुगलो के कई हमले हिंदुस्तान पर हुए। २ मारने के लिये झपटना। प्रहार करने के लिये वेग से बढना। ग्राक्रमण। ३ प्रहार। वार। ४ किसी को हानि पहुँचाने के लिये किया हुग्रा प्रयत्न। नुकसान पहुँचाने की कारखाई। ५ विरोध मे कही हुई बात। शब्द द्वारा ग्राक्षेप। क्रूर व्यग्य। जैसे,—यह हमला हमारे ऊपर है, हम इसका जवाव देगे।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

हमलावर—वि०, सज्ञा पुं० [फा० हमलह्ग्रावर] ग्राक्रमण करनेवाला। उत्क्रामक (को०)।

हमवतन—सज्ञा पुं० [फा० हम + ग्र० वतन] एक ही प्रदेश के रहनेवाले। स्वदेशवासी। देशभाई।

हमवार—वि० [फा०] जिसकी सतह वरावर हो। जो ऊँचा नीचा न हो। जो ऊवड खावड न हो। समतल। सपाट। जैसे,—जमीन हमवार करना।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

हमशीरा—सज्ञा स्त्री० [फा० हमशीरह्] वहन। भगिनी। उ०—मैं इनके हमशीरा की खास का मामू हूँ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ८६।

हमसना(पु)—क्रि० ग्र० [हिं० हुमसना] दे० 'हुमकना'। उ०—हमसि कन्ह ग्रसि रीस, सीस चुकि परिय वाम भुज।—पृ० रा०, ७।१५७।

हमसफर—वि० [फा० हमसफर] साथ यात्रा करनेवाला। सहयात्री।

हमसवक—सज्ञा पुं० [फा० हमसवक] एक साथ पढनेवाला। सहपाठी।

हमसर[1]—सज्ञा पुं० [फा०] दरजे मे वरावर ग्रादमी। गुण, वल या पद मे समान व्यक्ति। जोड का ग्रादमी। वरावरी का ग्रादमी।

हमसर[2]—वि० जोड का। वरावरी का।

हमसरी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ समानता का भाव। तुल्यता। वरावरी। जैसे,—वह तुमसे हमसरी का दावा रखता है। २ ग्रक्खडपन। उद्दडता (को०)।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

हमसाज—सज्ञा पुं० [फा० हमसाज़] मित्र। दोस्त (को०)।

हमसाया—सज्ञा पुं० [फा० हमसायह्] पडोसी। प्रतिवेशी।

हमसिन—वि० [फा०] समान ग्रवस्था या उम्र का। हमउम्र।

हमहमी—सज्ञा स्त्री० [हिं० हम] दे० 'हमाहमी'।

हमाकत—सज्ञा स्त्री० [ग्र०] दे० 'हिमाकत' (को०)।

हमाम—सज्ञा पुं० [ग्र० हम्माम] नहाने का घर जहाँ गरम पानी रहता है। स्नानागार। उ०—मैं तपाय त्रय ताप सो राख्यो हियो हमाम। मकु कबहूँ ग्रावे इहाँ पुलक पसीजे स्याम।—विहारी (शब्द०)।

हमायल—सज्ञा स्त्री० [ग्र० हमाइल, हमायल] १ एक ग्राभूषण। दे० 'हमेल'। २ गले मे डालकर वगल मे लटकाने की वस्तु। ३ दे० 'परतला'। ४ छोटी या गुटकानुमा कुरान की पुस्तक (को०)।

हमार—सर्व० [प्रा० ग्रम्हरो, ग्रम्हार, हमार, हिं० हमारा] दे० 'हमारा'। उ०—हम लखि लखहि हमार, लखि हम हमार के बीच। तुलसी ग्रलखहि का लखहि, राम नाम जपु नीच।—तुलसी ग्र०, पृ० ८८।

हमारा—सर्व० [हिं० हम + ग्रारा (प्रत्य०)] [स्त्री० हमारी] 'हम' शब्द का सवध कारक रूप।

हमारो(पु)‡—सर्व० [हिं०] दे० 'हमारा' उ०—कहूँ लाभ करि कै ग्रापकी मोहरे खरच करते तो हमारो सगरो धर्म नष्ट होइ जातो।—दो सौ वावन०, भा० २, पृ० ७३। (ख) नारद प्रियतम भक्त हमारो। तुमको कियो ग्रनुग्रह भारो।—नद० ग्र०, पृ० २५४।

हमाल[1]—सज्ञा पुं० [ग्र० हम्माल] १ भार उठानेवाला। वोझ ऊपर लेनेवाला। २ सँभालनेवाला। रक्षा करनेवाला। रक्षक। रखवाला। उ०—पंज प्रतिपाल भूमिभार को हमाल, चहूँ चक्क को ग्रमाल, भयो दडक जहान को।—भूषण ग्र०, पृ० १५। ३ (वोझ उठानेवाला) मजदूर। कुली। उ०—(क) पल पल्लो भर इन लिया तेरा नाज उठाइ। नैन हमालन दै ग्ररे दरस मजूरी ग्राइ।—रसनिधि (शब्द०)। (ख) हारि हमाल की पोट सी डारि कै ग्रौर दिवाल की ग्रोट ह्वै खेले।—ग्रर्ध०, पृ० ७।

हमाल[2]—वि० [ग्र०] सदृश। तुल्य। समान (को०)।

हमालल—सज्ञा पुं० [सं० हिमालय ?] सिहल या सीलोन का सव से ऊँचा पहाड जिसे 'ग्रादम की चोटी' कहते है।

हमासत—सज्ञा स्त्री० [ग्र०] शूरता। वीरता (को०)।

हमासुमा—सर्व [हिं० हमा + फा० शुमा] हम तुम। उ०—एक न एक मामला खडा करके हमासुमा को पीसते ही रहते है।—गोदान, पृ० ९४।

हमाहमी—सज्ञा स्त्री० [हिं० हम की द्विरुक्ति] १ ग्रपने ग्रपने लाभ का ग्रातुर प्रयत्न। वहुत से लोगो मे से प्रत्येक का किसी वस्तु को पाने के लिये ग्रपने को ग्रागे करने की धुन। स्वार्थपरता। २ ग्रपने को ऊपर करने का प्रयत्न। ग्रहकार।

हमीर—सज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'हम्मीर'।

हमे—सर्व [हिं० हम] 'हम' का कर्म ग्रौर सप्रदान कारक का रूप। हमको। जैसे—(क) हमे वताग्रो। (ख) हमे दो।

हमेल—संज्ञा स्त्री० [अ० हमायल] सिक्कों या सिक्के के आकार के धातु के गोल टुकडो की माला जो गले मे पहनी जाती है।

विशेष—यह प्राय अशरफियों या पुराने रुपयों को तागे मे गूँथ कर बनती है।

हमेव ⓤ†—संज्ञा पु० [सं० अहम् + एव] अहकार। अभिमान।

मुहा०—हमेव टूटना = गर्व चूर्ण होना। शेखी निकल जाना।

हमेशा—अव्य० [फ़ा० हमेशह्] सब दिन या सब समय। सदा। सर्वदा। सदैव। जैसे,—(क) वह हमेशा ऐसा ही कहता है। (ख) इस दवा को हमेशा पीना।

मुहा०—हमेशा के लिये = सब दिन के लिये।

हमेस, हमेसा—अव्य० [फ़ा० हमेशह्, हमेशा] दे० 'हमेशा'। उ०—भलि तजत हौं भूल नहिं यहै भूलि कौ देस। तुम जिन भूलौ नाथ मम राखहु सुरत हमेस।—स० सप्तक, पृ० ३४५।

हमैं ⓤ—अव्य० [हिं०] दे० 'हमें'।

हम्द—संज्ञा स्त्री० [अ०] खुदा या ईश्वर का स्तोत्र। प्रार्थना। उ०—क्या नस्र क्या नज्म हर एक बाद कूँ, जेब व रौनक है खुदा के हम्द सूँ।—दक्खिनी०, पृ० २००।

हम्माम—संज्ञा पुं० [अ०] नहाने की कोठरी जिसमे गरम पानी रखा रहता है और जो आग या भाप से गरम रखी जाती है। स्नानागार।

हम्माल—संज्ञा पु० [अ०] मजूर। मोटिया। दे० 'हमाल'[१] [को०]।

हम्मीर—संज्ञा पु० [सं०] १ सपूर्ण जाति का एक सकर राग जो शकराभरण और मारू के मेल से बना है।

विशेष—इसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं और इसके गाने का समय सध्या को एक से पाँच दड तक है। यह राग धर्म सबधी उत्सवो या हास्य रस के लिये अधिक उपयुक्त समझा जाता है।

२ रणथभोर गढ का एक अत्यत वीर चौहान राजा जो सन् १३०० ई० मे अलाउद्दीन खिलजी से बडी वीरता के साथ लडकर मारा गया था।

हम्मीरनट—संज्ञा पुं० [सं०] सपूर्ण जाति का एक सकर राग।

विशेष—यह राग नट और हम्मीर के मेल से बना है। इसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

हम्ह ⓤ†[१]—सर्व० [हिं० हम] दे० 'हम'। उ०—अब होइ सुभर दहहि हम्ह घटै।—जायसी ग्र०, पृ० ७५।

हम्है[२]—सर्व० [हिं० हमे] दे० 'हमे'। उ०—सो धनि बिरहै जरि मुई तेहि क धुवाँ हम्ह लाग।—जायसी ग्र०, पृ० १५०।

हयकष—संज्ञा पु० [सं० हयङ्कष] १ रथ का चालक। सारथि। २ इद्र के सारथी मातलि का नाम [को०]।

हयद ⓤ—संज्ञा पु० [सं० हयेन्द्र] बडा या अच्छा घोडा। उ०—यौ कहि हयद हक्किय हरषि दत चब्बि सेलहि लहिय।—सुजान०, पृ० २०।

हय—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० हया, हयी] १ घोडा। अश्व। २ कविता मे सात की मात्रा सूचित करने का शब्द (उच्चैःश्रवा के सात मुँह के कारण)। ३. चार मात्राओं का एक छद। ४ इद्र का एक नाम। ५ धनु राशि। ६ रतिमंजरी के अनुसार एक विशेष प्रकार का पुरुष [को०]।

हयकर्म—संज्ञा पुं० [सं० हयकर्मन्] घोडो का ज्ञान [को०]।

हयकातरा, हयकातरिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] राजनिघटु के अनुसार एक पौधा जिसे अश्वकातरा भी कहते हैं [को०]।

हयकोविद—वि० [सं०] अश्वशास्त्र का ज्ञाता [को०]।

हयगध—संज्ञा पुं० [सं० हयगन्ध] काला नमक।

हयगधा—संज्ञा स्त्री० [सं० हयगन्धा] १ अश्वगधा। असगध। २ यवानी। अजमोदा [को०]।

हयगर्दभ—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

हयगृह—संज्ञा पुं० [सं०] अश्वशाला। घुडसार।

हयग्रीव—संज्ञा पु० [सं०] १ विष्णु के चौबीस अवतारो मे से एक अवतार।

विशेष—मधु और कैटभ नाम के दो दैत्य जब वेद को उठा ले गये थे, तब वेद के उद्धार और उन राक्षसों के विनाश के लिये भगवान् ने यह अवतार लिया था।

२ एक असुर या राक्षस।

विशेष—यह असुर कल्पात मे ब्रह्मा की निद्रा के समय वेद उठा ले गया था। विष्णु ने मत्स्य अवतार लेकर वेद का उद्धार किया और इस राक्षस का वध किया था।

३ रामायण के अनुसार एक और राक्षस का नाम। ४ तात्रिक बौद्धो के एक देवता।

यौ०—हयग्रीवरिपु = विष्णु का एक नाम। हयग्रीवहा = विष्णु।

हयग्रीवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा का एक नाम।

हयघ्न—संज्ञा पुं० [सं०] कनेर। करवीर [को०]।

हयचर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] यज्ञ के अश्व का परिभ्रमण [को०]।

हयच्छटा—संज्ञा स्त्री० [सं०] घोडो का झुड। हयदल [को०]।

हयज्ञ—संज्ञा पु० [सं०] १ घोडे का जानकार। २ अश्व का साईस [को०]।

हयज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] घोडो का ज्ञान [को०]।

हयदानव—संज्ञा पुं० [सं०] केशी नामक एक राक्षस [को०]।

हयद्विषन्—संज्ञा पुं० [सं०] महिष। भैंसा [को०]।

हयन—संज्ञा पुं० [सं०] १ वर्ष। साल। २ चारो तरफ से ढकी हुई गाडी या पालकी जिसपर ओहार पडा हो [को०]।

हयना ⓤ—क्रि० स० [सं० हत, प्रा० हय + हिं० ना (प्रत्य०)] १ वध करना। मार डालना। हनन करना। उ०—(क) छन महँ सकल निशाचर हये।—तुलसी (शब्द०)। २ मारना। पीटना। चोट लगाना। ३. पीटकर बजाना। ठोककर बजाना। उ०—देवन हये निसान।—तुलसी (शब्द०)। ४ काटना। छिन्न करना। अग से अवयव विच्छिन्न करना। उ०—कटत झटिति पुनि नूतन भए। प्रभु बहु बार बाहु सिर हए।—मानस, ६।९१। ५ नष्ट करना। न रहने देना। उ०—प्रीति प्रतीति रीति परिमिति पति हेतुवाद हठि हेरि हई है।—तुलसी (शब्द०)।

हयनाल—संज्ञा स्त्री० [सं० हय + हिं० नाल] घोडे द्वारा खींची जानेवाली तोप। वह तोप जिसे घोडे खीचते हैं।

हयनिर्घोष—संज्ञा पु० [सं०] घोडे के खुरो की या उनके हिनहिनाने की आवाज [को०]।

हयप—संज्ञा पु० [सं०] घोडे की देखभाल करनेवाला। साईस [को०]।

हयपुच्छिका, हयपुच्छी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मषवन। माषपर्णी [को०]।

हयप्रिय—संज्ञा पु० [सं०] जौ। यव।

हयप्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जगली खजूर। खजूरी। २ असगध। अश्वगधा (को०)।

हयमार—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हयमारक' [को०]।

हयमारक—संज्ञा पुं० [सं०] करवीर। कनेर।

हयमारण—संज्ञा पु० [सं०] १ कनेर। २ अश्वत्थ। पीपल।

हयमुख—संज्ञा पु० [सं०] १ एक देश का नाम जिसके सबध मे प्रसिद्ध है कि वहाँ घोडे के से मुँहवाले आदमी बसते है। २ और्व ऋषि का क्रोधरूपी तेज जो समुद्र मे स्थित होकर वडवानल कहलाता है (रामायण)। ३ महाभारत के अनुसार विष्णु का एक रूप (को०)।

हयमेध—संज्ञा पुं० [सं०] अश्वमेध यज्ञ।

हयवाहन—संज्ञा पु० [सं०] १ कुवेर का एक नाम। २ सूर्य के पुत्र रेवत का एक नाम [को०]।

यौ०—हयवाहनशकर = रक्तकाचन। लाल कचनार।

हयविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] अश्व की शुभता तथा उसके गुणावगुण आदि जानने की विद्या [को०]।

हयशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] अश्वशाला। घुडसार। अस्तवल।

हयशास्त्र—संज्ञा पु० [सं०] अश्वशास्त्र। अश्वविद्या [को०]।

हयशिक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अश्वशास्त्र। हयविद्या [को०]।

हयशिर—संज्ञा पु० [सं० हयशिरस्] १ एक ऋषि का नाम। २ रामायण मे उल्लिखित एक दिव्यास्त्र का नाम।

हयशिरा—संज्ञा पु० [सं० हयशिरस्] विष्णु का हयग्रीव रूप [को०]।

हयशीर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का हयग्रीव रूप।

हयसग्रहण—संज्ञा पु० [सं० हयसङ्ग्रहण] घोडे का नियत्रण या हाँकने की कला [को०]।

हयसयान—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हयसग्रहण' [को०]।

हयसाला(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० हयशाला] अश्वशाला। घुडशाला। उ०—राखेउ बाँधि सिसुन्ह हयसाला।—मानस, ६। २४।

हयस्कध—संज्ञा पुं० [सं० हयस्कन्ध] हयदल। घोडो का समूह [को०]।

हय हय(पु)—अव्य० [सं० हा हा] [हाय हाय] दे० 'हाय हाय'। उ०—सोहड सहु भेला किया, तिण वेला तिण वार। नर नारी सहु विलविलई, हय हय सरजण हार।—ढोला०, दू० ६०७।

हयाग—संज्ञा पु० [सं० हयाङ्ग] धनु राशि।

हया[1]—संज्ञा स्त्री० [अ०] लज्जा। लाज। शर्म। उ०—हया से सर झुका लेना, अदा से मुस्करा देना। हसीनो का भी कितना सहल है, बिजली गिरा देना।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० ६२०।

यौ०—हयादार। हयादारी। वेहया। वेहयाई।

हया[2]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अश्वगधा। २ वडवा। घोडी [को०]।

हयात—संज्ञा स्त्री० [अ०] जिंदगी। जीवन। उ०—लाई हयात आए, कजा ले चली चले। अपनी खुशी न आए न अपनी खुशी चले।—कविता कौ० ८,भा० ४, पृ० ४४१।

यौ०—हीन हयात = जिंदगी भर के लिये। किसी के जीवन काल तक। जैसे,—मुआफी हीनहयात। हीन हयात मे = जिंदगी मे। जीते जी। जीवनकाल मे।

हयादार—संज्ञा पुं० [अ० हया + फा० दार] वह जिसे हया हो। लज्जाशील। शर्मदार।

हयादारी—संज्ञा स्त्री० [अ० हया + फा० दारी] हयादार होने का भाव। लज्जाशीलता।

हयाध्यक्ष—संज्ञा पु० [सं०] अश्वशाला का प्रधान अधिकारी। घोडे का प्रधान निरीक्षक [को०]।

हयानद—संज्ञा पु० [सं० हयानन्द] मूँग। मुद्ग [को०]।

हयानन—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु का एक अवतार। विशेष दे० 'हयग्रीव'। २ वाल्मीकि रामायण के अनुसार हयग्रीव का स्थान।

हयानना—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक योगिनी का नाम [को०]।

हयायुर्वेद—संज्ञा पु० [सं०] घोडो की चिकित्सा का शास्त्र। शालिहोत्र।

हयारि—संज्ञा पुं० [सं०] करवीर। कनेर।

हयारूढ—संज्ञा [सं०] घुडसवार। असवार [को०]।

हयारोह—संज्ञा पुं० [सं०] १ घोडे पर चढना। घुडसवारी। २ असवार। घुडसवार [को०]।

हयालय—संज्ञा पु० [सं०] अश्वशाला। घुडसाल [को०]।

हयाशन—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का धूप का पौधा जो मध्य भारत तथा गया और शाहाबाद के पहाडो मे बहुत होता है।

हयाशना—संज्ञा स्त्री० [सं०] सल्लकी का वृक्ष [को०]।

हयासनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक गधद्रव्य। लोबान [को०]

हयास्य—संज्ञा पु० [सं०] विष्णु [को०]

हयि—संज्ञा पु०, स्त्री० [सं०] आकाक्षा। स्पृहा [को०]।

हयी[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] घोडी।

हयी[2]—संज्ञा पुं० [सं० हयिन्] १ घुडसवार। २ वह जिसके पास अश्व हो। घोडेवाला (को०)।

हयुषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक पौधा। पुं० दे० 'हपुषा' [को०]।

हयेष—संज्ञा पुं० [सं०] जौ। यव [को०]।

हर[1]—वि० [सं०] १ हरण करनेवाला। ले लेनेवाला। छीनने या लूटनेवाला। जैसे,—धनहर, वस्त्रहर, पश्यतोहर। २ दूर करनेवाला। मिटानेवाला। न रहने देनेवाला। जैसे,—रोगहर, पापहर। ३. वध करनेवाला। नाश करनेवाला। मारनेवाला। जैसे,—असुरहर। ४ ले जानेवाला। लानेवाला। पहुँचानेवाला।

वाहक। जैसे,—संदेशहर। ५ आकर्षक। ६ अभ्यर्थी। दावेदार। हकदार (को०)। ७ कब्जा या अधिकार करनेवाला (को०)। ८ विभाजक। बाँटनेवाला (को०)।

हर²—संज्ञा पुं० १ शिव। महादेव। २ एक राक्षस जो वसुदा के गर्भ से उत्पन्न माली नामक राक्षस के चार पुत्रों में से एक था और विभीषण का मंत्री था। ३ गणित में वह संख्या जिससे भाग दें। भाजक। ४ गणित में भिन्न में नीचे की संख्या। ५ अग्नि। आग। ६ गदहा। ७ छप्पय के दसवें भेद का नाम। ८ टगण के पहले भेद का नाम। ९ ग्रहण करना या लेना (को०)। १० हरण करना (को०)। ११ ग्रहण करनेवाला व्यक्ति। ग्राहक (को०)।

हर†³—संज्ञा पुं० [सं० हल] हल।

यौ०—हरवाहा। हरवल। हरौरी। हरहा।

हर(पु)⁴—वि० [हिं० हरा या सं० हरित] दे० 'हरा' और 'हरियर'। उ०—बोलि विप्र सोधे लगन्न, सुध घटी परट्ठिय। हर बाँसह मंडप बनाय करि भाँवरि गठिय।—पृ० रा०, २०।६९।

हर⁵—वि० [फा०] प्रत्येक। एक एक। जैसे, (क) हर शख्स के पास एक एक बंदूक थी। (ख) वह हर रोज आता है।

यौ०—हरकारा। हरजाई।

मुहा०—हर एक = प्रत्येक। एक एक। हर कोई या हर किसी = प्रत्येक मनुष्य। सब कोई या सब किसी। सर्वसाधारण। जैसे,—हर किसी के पास ऐसी चीज नहीं निकल सकती। हर कोई = सर्वसाधारण। जैसे,—हर कोई यह काम नहीं कर सकता हर। तरह = प्रत्येक ढंग से। हर हालत में। हर फन मौला = हर एक फन जाननेवाला। प्रत्येक काम में माहिर। हर दफा, हर बार या हर मर्तबा = प्रत्येक अवसर पर। हर रोज = प्रतिदिन। नित्य। हर वक्त = हर समय। हर दम। निरंतर। हर हाल में = प्रत्येक दशा में। हर दम = प्रतिक्षण। सदा। जैसे,—वह हर दम यहीं पड़ा रहता है। हर यक = दे० 'हर एक'। हर हमेशा = सदा। सर्वदा।

हर⁶—संज्ञा पुं० [जर०] अंग्रेजी के मिस्टर शब्द का जरमन समानार्थवाची शब्द। महाशय। जैसे,—हर स्ट्रस्मैन, हर हिटलर।

हरई‡—संज्ञा स्त्री० [हिं० हलका, हलकी] हलकापन। लघुता। अगुरुता। उ०—विहि नेह विरोध बढ्यौ सबसे उर आवत कौन के लाज गई। जेहि के भरि भार पहार दबैं, जग माँझ भई तिन तें हरई।—' नानद, पृ० ८३।

हरएँ(पु)—अव्य० [हिं० हरुवे] १ धीरे धीरे। मंद गति से। आहिस्ते से। उ०—हेरत ही हरि को हरषाय हिये हठि कै हरएँ चलि आई।—बेनी (शब्द०)। २ तीव्रता से नहीं। जोर से नहीं।

हरक¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ अपहरण करनेवाला। चोर। तस्कर। २ धूर्त। प्रतारक। वंचक। शठ। ३ भाजक। हर। ४ शिव का एक नाम। ५ लंबी और लचनेवाली तलवार [को०]।

हरक²—वि० हरण करनेवाला।

हरकत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ गति। चाल। हिलना। डोलना। २. चेष्टा। कर्म। क्रिया। ३ स्वर या स्वरबोधक चिह्न, मात्रा आदि (को०)। ४ बुरी चाल। बेजा कार्रवाई। दुष्ट व्यवहार। नटखटी। उ०—(क) तुम्हारी सब हरकतें हम देख रहे हैं। (ख) यह सब उसी की हरकतें हैं (ग) नाशाइस्ता हरकत, बेजा हरकत।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

हरकना(पु)†¹—क्रि० स० [हिं० हटक (= रोक) + ना] दे० 'हटकना'। उ०—भट रुद्रगन, भूत गनपति सेनापति, कलिकाल की कुचाल काहू तो न हरकी।—तुलसी ग्र०, पृ० २४१।

हरकना†²—क्रि० अ० [हिं० हटक + ना] दे० 'हड़कना'।

हरकारा—संज्ञा पुं० [फा० हरकारह्] १ चिट्ठी पत्री ले जानेवाला। सँदेसा ले जानेवाला। उ०—हरकारा घोड़े पर सवार होते ही आँखों से ओझल हो गया।—पीतल०, पृ० ३८३। २ चिट्ठीरसाँ। डाकिया।

हरकेस—संज्ञा पुं० [सं० हरिकेश] एक प्रकार का धान जो अगहन में तैयार होता है।

हरक्कत(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं०] नुकसान। हानि। उ०—तिन तिन चले छिपाय प्रकट में होय हरक्कत।—पलटू०, भा० ३, पृ० ५५।

हरख(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० हर्ष, प्रा०, अप०, हिं० हरख] दे० 'हर्ष'। उ०—(क) छिन महिं अगिनि छिनक जलपात, त्यौं यह हरख शोक की बात।—अर्ध०, पृ० ४०। (ख) मतिराम सुकवि सँदेसो अनुमानियत, तेरे नख सिख अंग हरख कटोटे सों।—मतिराम ग्र०, पृ० ३९९।

हरखना(पु)—क्रि० अ० [हिं० हरख + ना (प्रत्य०)] हर्षित होना। प्रसन्न होना। खुश होना। उ०—कौतुक देखि सकल सुर हरखे।—तुलसी (शब्द०)

हरखनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० हर्षण] हरखने की क्रिया या भाव। हर्ष। आनंद। उ०—नेत्र की करखनि, वदन की हरखनि, तैसियै सिर तें कुसुम गुबरखनि।—नंद० ग्र०, पृ० २४८।

हरखाना¹—क्रि० अ० [हिं० हरखना] दे० 'हरखना'। उ०—तुरत उठे लछमन हरखाई।—तुलसी (शब्द०)।

हरखाना²—क्रि० स० प्रसन्न करना। खुश करना। आनंदित करना।

हरखित(पु)—वि० [सं० हर्षित] दे० 'हर्षित'। उ०—द्विजहिं दूरि तें निरखि निरखि हरि हरखित होई।—नंद० ग्र०, पृ० २०४।

हरगिज—अव्य० [फा० हरगिज] किसी दशा में। कदापि। कभी। जैसे,—वह वहाँ हरगिज न जायगा।

हरगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] कैलास पर्वत। उ०—जौ हठ करउ त निपट कुकरमू। हरगिरि तें गुरु सेवक धरमू।—मानस, २।२५३।

हरगिला†—संज्ञा पुं० [हिं० हाड़] दे० 'हड़गीला'।

हरगिस(पु)—अव्य० [फा० हरगिज़] दे० 'हरगिज'। उ०—करत न हरगिस लाड़िले वा बिन सेज न सैन।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ७८५।

हरगौरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिव का अर्धनारीश्वर रूप। अर्धनारीनटेश्वर की मूर्ति [को०]।

हरगौरी रस—संज्ञा पुं० [सं०] रससिंदूर। (आयुर्वेद)।

हरचंद—अव्य० [फा०] १ कितना ही। बहुत या बहुत बार। जैसे,—मैंने हरचंद मना किया, पर उसने न माना। २ यद्यपि। अगरचे।

हरचंदन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हरिचन्दन] दे० 'हरिचंदन'। उ०—गुलक विराजत कर्ण महँ शीरप शुभद नियार। हरचंदन को तिलक वर, उर सुमनन के हार।—प० रासो, पृ० ६।

हरचूडामणि—संज्ञा पुं० [सं० हरचूडामणि] शिव का शिरोभूषण, चंद्रमा [को०]।

हरज†—संज्ञा पुं० [अ०] १ दे० 'हर्ज'। २ उपद्रव। गडबड (को०)।

हरजा¹—संज्ञा पुं० [फा० हर + जा (=जगह)] संगतराशों की यह टाँकी जिससे वे सतह को हर जगह बराबर करते हैं। चौरस करने की छेनी। चौरसी।

हरजा²—अव्य० हर जगह। हर एक स्थान पर [को०]।

हरजा³—संज्ञा पुं० [अ० हरज, हर्ज] १ हरज। हर्ज। २ हरजाना। ३ हानि। नुकसान।

हरजाई¹—संज्ञा पुं० [फा०] १ हर जगह घूमनेवाला। जिसका कोई ठीक ठिकाना न हो। २ बहल्ला। आवारा।

हरजाई²—संज्ञा स्त्री० १ व्यभिचारिणी स्त्री। कुलटा। २ वेश्या। रंडी। खानगी।

हरजाना—संज्ञा पुं० [फा०] १ नुकसान पूरा करना। हानि का बदला। क्षतिपूर्ति। २ वह धन या वस्तु जो किसी को उस नुकसान के बदले में (उसके द्वारा जिससे या जिसके कारण नुकसान पहुँचा हो) दी जाय, जो उसे उठाना पड़ा हो। हानि के बदले में दिया जानेवाला धन। क्षतिपूर्ति का द्रव्य। जैसे,—अगर तुमने वक्त पर सभी चीज न दी तो १००) हरजाना देना पडेगा।

क्रि० प्र०—देना।—माँगना।—लेना।

हरजेवडी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की छोटी झाडी जिसे बाख भी कहते हैं। निरविषी। पुरही।

विशेष—यह झाडी प्राय सारे भारत और सभी गरम प्रदेशों में पाई जाती है। इसकी डालियों और पत्तियों पर बहुत से रोएँ होते हैं। इसकी जड और पत्तियों का व्यवहार ओषधि के रूप में होता है।

हरट्ट(पु)—वि० [सं० हृष्ट] दृढ अंगोंवाला। मजबूत। मोटा ताजा। हट्टाकट्टा। हृष्ट पुष्ट। उ०—हैवर हरट्ट साजि, गैवर गरट्ट सम, पैदर के ठट्ट फौज जुरी तुरकाने की।—भूषण (शब्द०)।

हरटिया(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अरहट्ट] दे० 'हरठिया'।

हरठिया†—संज्ञा पुं० [हिं० रहँट] रहँट के बैल हाँकनेवाला व्यक्ति।

हरडा†—संज्ञा पुं० [सं० हरीतकी] दे० 'हड' और 'हर्रा'।

हरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ जिसकी वस्तु हो उसकी इच्छा के विरुद्ध लेना। छीनना। लूटना या चुराना। जैसे,—धनहरण, वस्त्रहरण। २ दूर करना। हटाना। न रहने देना। मिटाना। जैसे,—रोगहरण, संकटहरण, पापहरण। ३ नष्ट करना। नाश। विनाश। संहार। ४ ले जाना। वहन। जैसे,—संदेशहरण। ५ (गणित में) भाग देना। तकसीम करना। ६ दायजा जो विवाह में दिया जाता है। ७ वह भिक्षा जो यज्ञोपवीत के समय ब्रह्मचारी को दी जाती है। ८ वीर्य। शुक्र (को०)। ९ सोना। स्वर्ण (को०)। १० कपर्दिका। कौडी (को०)। ११ उबलता हुआ जल (को०)। १२ बलपूर्वक किसी को भगा ले जाना। जैसे,—संयोगिता-हरण, सुभद्राहरण। १३ घोडे का दानापानी। घोडे का चारा (को०)। १४ कर। हस्त। हाथ (को०)।

हरणकसीप(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० हिरण्यकशिपु] दे० 'हिरण्यकशिपु'। उ०—हरणकसीप वध कर अधपती देही। इंद्र को बीभो प्रहलाद न लेही।—दक्खिनी०, पृ० २८।

हरणहार(पु)—वि० [सं० हरण + हिं० (प्रत्य०) हार (=वाला)] दूर करनेवाला। हरनेवाला। उ०—विपदा हरणहार हरि हे करो पार।—आराधना, पृ० २१।

हरणाखी(पु)—वि० [सं० हरिणाक्षी] हरिणाक्षी। मृगनयनी। उ०—काछी करह विथूंभिया घडियउ जोइण जाइ। हरणाखी जउ हसि कहइ, आणिसि एथि विसाइ।—ढोला०, दू० २२८।

हरणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मरण। मृत्यु। मौत। २ पानी के निकास की नाली। जलप्रणाली [को०]।

हरणीय—वि० [सं०] हरण करने या ले लेने योग्य [को०]।

हरता(पु)¹—संज्ञा पुं० [सं० हर्त्ता] दे० 'हर्ता'। उ०—तु धाता करतार तु भरता हरता देव। तु दत्ता गोरस तुही प्रसन होउ प्रभु मेव।—पृ० रा०, ६।२१। (ख) है हरता करतार प्रभु कारन करन अखेद।—हम्मीर०, पृ० ६४।

हरता²(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं०] हरत्व। शिवत्व।

हरताई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० हर + हिं० ताई (प्रत्य०)] शिवत्व। हरत्व। महादेवत्व। उ०—अब याकै बल करउँ लराई। हरउँ छनक मैं हर हरताई।—नंद० ग्रं०, पृ० १२२।

हरता धरता—संज्ञा पुं० [सं० हर्त्ता + धर्त्ता (वैदिक)] १ रक्षा और नाश दोनों करनेवाला। वह जिसके हाथ में बनाना बिगाडना या रखना मारना दोनों हो। सब अधिकार रखनेवाला स्वामी। २ सब बात का अधिकार रखनेवाला। सब कुछ करने की शक्ति या अधिकार रखनेवाला। पूर्ण अधिकारी। जैसे,—आजकल वही उनकी सारी जायदाद के हरता धरता हो रहे हैं।

हरतार(पु)¹—संज्ञा स्त्री० [सं० हरिताल] दे० 'हरताल'। उ०—का हरतार पार नहि पावा। गंधक काहे कुरकुटा खावा।—जायसी (शब्द०)।

हरतार(पु)२—वि० [स० हर्तृ (>हर्ता) का बहुवचन हर्तार] दे० 'हर्ता'। उ०—भावी हरतार करतार प्रभु लेखियै।—हम्मीर०, पृ० ६४।

यौ०—हरतार करतार = जो हर्ता और कर्ता हो।

हरताल—संज्ञा स्त्री० [स० हरिताल] एक खनिज पदार्थ जिसमे सौ मे ६१ भाग संखिया और ३९ भाग गंधक का रहता है।

विशेष—यह खनिज पदार्थ एक उपधातु है जो खानो मे रोडो के रूप मे स्वाभाविक मिलता है और बनाया भी जा सकता है। यह पीले रंग का और चमकीला होता है। इसमे गंधक और संखिया दोनो के सम्मिलित गुण होते हैं। वैद्य लोग इसको शोधकर गलित कुष्ट, वातरक्त आदि रोगो मे देते हैं जिससे घाव भर जाते है। आयुर्वेद मे हरताल की गणना उपधातुओ मे है। इसमे स्याही या रंग उडाने का गुण होता है, इससे पुराने समय मे पोथी लिखनेवाले किसी शब्द या अक्षर को उडाने के स्थान पर उसपर घुली हुई हरताल लगा देते थे जिससे कुछ दिनो मे अक्षर उड जाते थे। रँगाई मे भी इसका व्यवहार होता है और छीट छापनेवाले भी अपनी प्रक्रिया मे इसका व्यवहार करते है।

पर्या०—पिंजर। ताल। गोदंत। विडालक। चित्रगंध।

मुहा०—(किसी बात पर) हरताल लगाना या फेरना = नष्ट करना। किया न किया बराबर करना। रद्द करना। जैसे,—तुमने तो मेरे सब कामो पर हरताल फेर दी।

हरताली१—वि० [हिं० हरताल + ई] हरताल के रंग का।

हरताली२—संज्ञा पुं० एक प्रकार का पीला या गंधकी रंग।

हरतालेश्वर—संज्ञा पुं० [स०] एक रसौषध जो हरताल के योग से बनती है।

विशेष—पहले पुनर्नवा (गदहपूरना) के रस से हरताल को खरल करके टिकिया बनाते है। फिर उस टिकिया को पुनर्नवा की राख मे रखकर मिट्टी के बरतन मे डाल मंद आँच पर चढा देते हैं। इस प्रकार पाँच दिन तक वह टिकिया पकत है, फिर ठढी करके रख ली जाती है। इस भस्म की एक रत्ती गिलोय के काढे के साथ सेवन करने से वातरक्त, अठारह कार के कुष्ठ, फिरंग वात, विसर्प और फोडे आराम हो ज ते है।

हरतेज—संज्ञा पुं० [स० हरतेजस्] पारा। पारद।

विशेष—पुराणो और वैद्यक मे यह शिव का वीर्य कहा गया है। विशेष विवरण के लिये दे० 'पारा'।

हरद(पु)—संज्ञा स्त्री० [स० हरिद्रा] दे० 'हल्दी'। उ०—कनक कलस तोरन मनि जाला। हरद दूब, दधि, अच्छत माला।—तुलसी (शब्द०)।

हरदग्धमूर्ति—संज्ञा पुं० [स०] कामदेव का नाम जिसको शिव जी ने भस्म कर दिया था [को०]।

हरदा—संज्ञा पुं० [सं० हरिद्रा] फसल मे लगनेवाले कीटाणुओ का समूह। फसल का एक रोग। गेरुई।

विशेष—यह पीले या गेरुए रंग की बुकनी रूप मे फसल की पत्तियो पर जम जाता है और उसे बडी हानि पहुँचाता है। इसे गेरुई भी कहते हैं।

मुहा०—हरदा बैंगनी होना = लाल पीला होना। उ०—तुम तो हरदा बैंगनी हो। तुम्हारे मुँह कौन लगे।—फिसाना०, भा० ३, पृ० १७।

हरदिया†१—वि० [पू०हिं० हरदी] हल्दी के रंग का। पीला।

हरदिया२—संज्ञा पुं० पीले रंग का घोडा।

हरदिया देव(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हरदत्त + देव] दे० 'हरदौल'।

हरदी†—संज्ञा स्त्री० [सं० हरिद्रा] दे० 'हल्दी'।

हरदू—संज्ञा पुं० [देश०] एक बडा पेड जो हिमालय मे जमुना के पूर्व तीन हजार फुट तक के ऊँचे लेकिन तर स्थानो मे होता है।

विशेष—इस वृक्ष की छाल अंगुल भर मोटी बहुत मुलायम, खुरदुरी और सफेद होती है। भीतर की लकडी बहुत मजबूत और पीले रंग की होती है और साफ करने से बहुत चमकती है। इससे खेती के और सजावट के सामान, बंदूक के कुंदे, कंघियाँ और नावें बनती हैं।

हरदौल—संज्ञा सं० [स० हरदत्त] ओडछा के राजा जुझारसिंह (सन् १६२६–३५ ई०) के छोटे भाई।

विशेष—ये बडे सच्चे और भ्रातृभक्त थे। एक बार जब महाराज जुझारसिंह दिल्ली के बादशाह के काम से गए थे, तब वे राज्य का प्रबंध अपने छोटे भाई हरदत्तसिंह या हरदौल सिंह के उपर छोड गए थे। इनके सुशासन मे बेईमानो की नही चलने पाई थी। इससे जब महाराज जुझारसिंह लौटकर आए, तब उन सब ने मिलकर राजा को यह सुझाया कि हरदौल के साथ महारानी (उनकी भावज) का अनुचित संबंध है। महारानी अपने देवर को बहुत प्यार करती थीं और हरदत्त भी उन्हें अपनी माता के समान मानते थे। राजा ने अपने संदेह की बात रानी से कही, और यह भी कहा कि हम तुम्हें सच्ची तभी मान सकते हैं जब तुम अपने हाथ से हरदौल को विष दो। रानी ने अपने सतीत्व की मर्यादा के विचार से स्वीकार किया और हरदौल को विषमिश्रित मिठाई खिलाने को बुलाया। हरदौल के आने पर रानी ने सब व्यवस्था कही। सुनते ही हरदौल ने कहा कि माता तुम्हारे सतीत्व की मर्यादा की रक्षा के लिये मैं सहर्ष इसे खाऊँगा। इतना कहकर वे भावज के हाथ से मिठाई लेकर झट से खा गए और थोडी देर मे परलोक सिधारे। इस घटना का प्रजा पर बडा प्रभाव पडा और सब लोग हरदौल की देवता के समान पूजा करने लगे। धीरे धीरे इनकी पूजा का प्रचार बहुत बढा और सारे बुंदेलखड मे ही नही बल्कि संयुक्त प्रांत (उत्तर प्रदेश) और पंजाब तक ये पुजने लगे। इनकी चौरी या वेदी स्थान स्थान पर बनी मिलती हैं और बहुत से घरानो मे ये कुलदेवता के रूप मे पूज्य माने जाते हैं। इन्हें हरदिया देव भी कहते हैं।

हरद्वान(पु)—संज्ञा सं० [देश०] एक स्थान का नाम जहाँ की तलवार प्रसिद्ध थी।

हरद्वानी(पु)—वि० [हिं० हरद्वान+ई] हरद्वान का बना हुआ। उ०—हाथन्ह गहे खडग हरद्वानी। चमकहि सेल वोजु कै वानी।—जायसी (शब्द०)।

हरद्वार—संज्ञा पुं० [स० हरिद्वार] दे० 'हरिद्वार'।

हरनछि, हरनछिछ(पु)—वि० [सं० हरिणाक्षी] हरिणाक्षी। मृगनैनी। उ०—हरि मागहि हरनछिछ, करहि तलपत्त पत्त धर। पृ० रा०, २१३०८।

हरनर्तक—संज्ञा पुं० [सं०] एक छद का नाम।

हरना[1]—क्रि० स० [स० हरण] १ जिसकी वस्तु हो, उसकी इच्छा के विरुद्ध ले लेना। छीनना, लूटना या चुराना। २ दूर करना। हटाना। न रहने देना। ३ मिटाना। नाश करना। जैसे,—दु ख या पीडा हरना, सकट हरना। उ०—मेरी भव वाधा हरौ राधा नागरि सोइ।—विहारी (शब्द०)। ४ ले जाना। उठाकर ले जाना। वहन करना। ५ अपनी ओर आकर्षित करना। खीचना।

मुहा०—मन हरना=मन खीचना। किसी के मन को अपनी ओर आकर्षित करना। मोहित करना। लुभाना। उ०—हरि दिखराय मोहनी मूरति मन हरि लियो हमारो।—सूर। (शब्द०)। प्राण हरना=(१) मार डालना। (२) वहुत सताप या दु ख देना। उ०—मिलत एक दारुन दुख देही। विछुरत एक प्रान हरि लेही।—तुलसी (शब्द०)।

हरना[2]—क्रि० अ० [हिं० हारना] १ जुए आदि मे हारना। २ पराजित होना। परास्त होना। ३ थकना। शिथिल होना। हिम्मत हारना।

हरना(पु)[3]—संज्ञा पुं० [स० हरिण] दे० 'हिरन'।

हरनाकस(पु)—संज्ञा पुं० [स० हिरण्यकशिपु] दे० 'हिरण्यकशिपु'। उ०—हरनाकस औ कस को गयो दुहुन को राज।—गिरिधर (शब्द०)।

हरनाच्छ(पु)†—संज्ञा पुं० [स० हिरण्याक्ष] दे० 'हिरण्याक्ष'।

हरनी[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० हरिन+ई(प्रत्य०)] हिरन की मादा। मृगी।

हरनी[2]—संज्ञा स्त्री० [हिं० हड+नी(प्रत्य०)] कपडो मे हड (हर्रा) का रग देने की क्रिया।

हरनेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव के नेत्र। शकर का नेत्र। २ तीन की सख्या का वाचक शब्द [को०]।

हरनौटा—संज्ञा पु० [हिं० हिरन+औटा (प्रत्य०)] हिरन का वच्चा। छोटा हिरन।

हरपरेवरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हर, हल+परना (=पडना)+री (प्रत्य०)] किसानो की औरतो का एक टोटका जो वे पानी न वरसने पर करती हैं।

हरपा†—संज्ञा पु० [देश०] १ सुनारो का तराजू रखने का डिव्बा। २ सिंदूर रखने की डिविया। सिंधोरा।

हरपारेउरी—संज्ञा स्त्री० [स० हरिपर्वरी] दे० 'हरफारेवडी'। उ०—लागि सोहाई हरपारेउरी। ओनइ रही केरन्ह की घउरी।—जायसी ग्र० (गुप्त), पृ० १४३।

हरपुजी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० हर, हल+पूजा] कार्तिक मे हल का पूजन जो किसान करते है।

विशेष—किसान लोग इस पूजन मे उत्सव करते और मिठाई आदि बाँटते है।

हरप्रिय—संज्ञा पुं० [स०] करवीर। कनेर।

हरफ[1]—संज्ञा पुं० [अ० हरफ, हर्फ] मनुष्य के मुँह से निकलनेवाली ध्वनियो के सकेत जिनका व्यवहार लिखने मे होता है। अक्षर। वर्ण। उ०—सोहत अलक कपोत पर बढ छवि सिंधु अथाह। मनौ पारसी हरफ इक लसत आरसी माह।—स० सप्तक, पृ० २४६। २. शब्द। वात (को०)। ३ दोष। वुराई। ऐव (को०)। ४ व्याकरण मे अव्यय। प्रत्यय (को०)।

मुहा०—किसी पर हरफ आना=दोष लगना। कसूर लगना। जैसे,—तुम वेफिक्र रहो, तुम पर जरा भी हरफ न आवेगा। हरफ उठाना=अक्षर पहचानकर पढ लेना। जैसे,—अव तो वच्चा हरफ उठा लेता है। हरफ पकडना=(१) किसी की त्रुटि पकडना। गलती पकडना। (२) वोलने मे टोकना। हरफ वैठाना=छापे के अक्षरो को क्रम से रखना। टाइप जमाना। हरफ वनाना=(१) सुदर अक्षर लिखना। (२) अक्षर लिखने का अभ्यास करना। (३) किसी दस्तावेज मे जाल के लिये फेरफार करना। किसी पर हरफ लाना=दोष देना। इलजाम लगाना। लाछित करना।

हरफगीर—वि० [अ० हर्फ+फा० गीर] १ अक्षर अक्षर का गुण दोष देखनेवाला। वहुत वारीकी से दोप देखने या पकडनेवाला। २ वाल की खाल निकानेवाला।

हरफगीरी—संज्ञा स्त्री० [अ० हर्फ+फा० गीरी] वहुत वारीकी से गुण दोप देखना। वडी सूक्ष्म परीक्षा। वाल की खाल निकालना।

हरफा—संज्ञा पु० [देश०] कटा चारा या भूसा रखने का घर जो लकडी के घेरे से बनाया जाता है।

हरफारेवडी—संज्ञा स्त्री० [सं० हरिपर्वरी] १ कमरख की जाति का एक पेड। लवली।

विशेष—इसमे आँवलो के से छोटे छोटे फल लगते है जो खाने मे कुछ खटमीठे होते है।

२ उक्त पेड का फल जो खाया जाता हे।

हरफारचोरी(पु)—संज्ञा स्त्री० [स० हरिपर्वरी] दे० 'हरफारेवडी'। उ०—लागी सोहाई हरफारचोरी। उनै रही केरा कै घौरी।—जायसी ग्र०, पृ० १३।

हरवर†[1]—संज्ञा पुं० [अनु०] दे० 'हडवड', 'हडवडी'।

हरवर[2]—क्रि० वि० हडवडी या उतावली से।

हरवरा(पु)—वि० [हिं०] उतावला उ०—तहँ युद्ध को भे हरवरे।—हिम्मत०, पृ० २।

हरबरानाⓟ†—क्रि० अ० [हिं० हरबर] दे० 'हड़बड़ाना'।

हरबरिया†—वि० [हिं० हरबर] उतावला।

हरबरीⓟ—संज्ञा स्त्री०, पुं० [हिं० हरबर + ई (प्रत्य०)] दे० 'हड़बड़ी'। उ०—गाढ़ी चोप चुहल की हिय मैं हरबरी।—घनानद, पृ० १९।

हरबल¹—संज्ञा पुं० [अ० हरावल] दे० 'हरावल'। उ०—चढ़ि चले साह हरबल सबीर।—ह० रासो, पृ० ७०।

हरबलⓟ²—संज्ञा पुं० [हिं० हरबर] दे० 'हरबर'। उ०—गर्व गुमान महत कहावे, भक्ति करन को हरबल धाए।—कबीर सा०, भा० ३, पृ० २९२।

हरबा—संज्ञा पुं० [अ० हरबह्] अस्त्र। हथियार।

यौ०—हरबा हथियार।

२ पुरुषेंद्रिय। लिंग। (बाजारू)।

हरबासरⓟ—संज्ञा पुं० [सं० हरि अथवा हर (= विष्णु या शिव 'रुद्र') + वासर (= तिथि)] एकादशी। उ०—हरबासर दिन पहुँतो छड़ आय। चंद्र वदन घन लागइ छै पाय।—वी० रासो, पृ० ५१।

विशेष—संस्कृत मे हरिवासर शब्द का प्रयोग एकादशी के लिये हुआ है, अथवा हर का अर्थ शिव या रुद्र है। रुद्र ग्यारह माने गए हैं अत हर का अर्थ ग्यारह होगा और वासर का अर्थ दिन या तिथि इस प्रकार 'हरबासर' का अर्थ ग्यारहवाँ दिन या एकादशी है।

हरबीज—संज्ञा पुं० [सं०] पारा। पारद।

हरबोंग¹—वि० [हिं० हर (= हल) + बोंग (= बगड़, लठ)] १ गँवार। लट्ठमार। अक्खड़। २ मूर्ख। जड़।

हरबोंग²—संज्ञा पुं० १ अंधेर। कुशासन। गड़बड़ी। २ उपद्रव। उत्पात। ३ अव्यवस्था। बदअमली। गड़बड़ी। उ०—किसी ने मोहनभोग का थाल उठाया किसी ने फलों का, कोई पचामृत बाँटने लगा। हरबोंग सा मच गया।—काया०, पृ० १३८।

क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

हरभूली—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का धतूरा जिसके बीज फारस से बबई मे आते और बिकते हैं।

हरम¹—संज्ञा पुं० [अ०। तुल० सं० हर्म्य] १ अंत पुर। जनानखाना। २ काबा। मसजिद (को०)। ३ मक्के के आस पास का क्षेत्र जहाँ जीवहत्या महापाप है (को०)। ४ गुंबद। गुंबज (को०)।

यौ०—हरमखाना, हरमगाह = दे० 'हरमसरा'। हरमसरा = अंत पुर। जनानखाना।

हरम²—संज्ञा स्त्री० १ जनानखाने मे दाखिल की हुई स्त्री। मुताही। रखेली स्त्री। २ दासी। ३ स्त्री। बेगम। ४ प्राचीन कोठी। पुरानी इमारत (को०)। ५ वृद्धावस्था। जरा। बुढ़ापा (को०)।

हरमल—संज्ञा पुं० [देश०] डेढ़ दो हाथ ऊँची एक प्रकार की झाड़ी।

विशेष—यह झाड़ी सिंध, पंजाब, काश्मीर और दक्षिण भारत मे बहुतायत से पाई जाती है। इसकी पत्तियाँ ओषधि के रूप मे काम आती हैं और उसके बीजों से एक प्रकार का लाल रंग निकलता है।

हरमजदगी—संज्ञा स्त्री० [फा० हरामजादगी] शरारत। नटखटी। बदमाशी।

हरमुखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त। दे० 'हलमुखी'।

हरयाल, हरयालाⓟ—संज्ञा स्त्री० [हिं०] हरियाली। हरीतिमा।

हरयेⓟ—अव्य० [हिं०] दे० 'हरुए'।

हरवल¹—संज्ञा स्त्री० [हिं० हर + औल (प्रत्य०)] वह रुपया जो हल-वाहों को बिना ब्याज के पेशगी या उधार दिया जाता है।

हरवलⓟ²—संज्ञा पुं० [तु० हरावल] दे० 'हरावल'।

हरवली—संज्ञा स्त्री० [तु० हरावल] सेना की अग्रसरता। फौज की अफसरी। उ०—जो नहि देतो अनी तहूँ दृगन हरवली आय। मन मवास जे मुनिन के को सर करतो जाय।—रसनिधि (शब्द०)।

हरवल्लभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ संगीत दामोदर के अनुसार ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक का नाम। २ श्वेत धतूरा का पुष्प या फल जो शिव को प्रिय है (को०)।

हरवा‡¹—संज्ञा पुं० [सं० हार + हिं० वा (प्रत्य०)] दे० 'हार'। उ०—चंपक हरवा अंग मिलि अधिक सुहाइ। जानि परै सिय हियरे जब कुँभिलाइ।—तुलसी (शब्द०)।

हरवाⓟ²—वि० [सं० लघुक] दे० 'हलका'। उ०—(क) सुंदर मौन गहे रहै जानि सकै नहि कोइ। बिन बोलै गुरवा रहै बोलै हरवा होइ।—सुंदर० ग्रं०, भा० २, पृ० ७३५। (ख) नैनहि नै हरवो होइ जात, गिनै अघ बिंद ज्यौं जोग जती को।—सुंदर० ग्रं०, भा० २, पृ० ४७५।

हरवाइⓟ—वि० [हिं० हरवा] शीघ्रतापूर्वक। उ०—हरवाइ जाय सिय पाइँ परी। ऋषिनारि सूँघि सिर गोद धरी।—राम च०, पृ० ६५।

हरवाना—क्रि० अ० [हिं० हड़बड़] जल्दी करना। शीघ्रता करना। उतावली करना। हड़बड़ी मचाना।

हरवाल—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की घास जिसे 'मुरारी' भी कहते हैं।

हरवाह†—संज्ञा पुं० [सं० हर, हल + वाह] दे० 'हरवाहा'।

हरवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का वाहन। शिव की सवारी। वृषभ। बैल।

हरवाहा—संज्ञा पुं० [हिं० हर, हल + सं० वाह] हल चलानेवाला मजदूर या नौकर। हलवाहा। उ०—मन कै बैल सुरत हरवाहा।—कबीर० श०, भा० २, पृ० २४।

हरवाही—संज्ञा स्त्री० [हिं० हरवाह + ई (प्रत्य०)] १ हलवाहे का काम। २ हलवाहे की मजदूरी।

हरशंकरी—संज्ञा स्त्री० [सं० हरशङ्कर] पीपल और पाकर (पक्कड़) के एक साथ लगे हुए पेड़ जो बहुत पवित्र माने जाते हैं।

हरशृंगारा—संज्ञा स्त्री० [सं० हरशृङ्गारा] संगीत शास्त्र मे एक रागिनी का नाम (को०)।

हरशेखरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा जो शिव के सिर पर रहती हैं।

हरषⓟ‡—संज्ञा पुं० [सं० हर्ष] दे० 'हर्ष'।

हरषना(पु)¹—क्रि० अ० [सं० हर्ष, हिं० हरप + ना (प्रत्य०)] १ हर्षित होना। प्रसन्न होना। खुश होना। उ०—हरषे पुर नरनारि सब मिटा मोहमय सूल।—तुलसी (शब्द०)। २ पुलकित होना। रोमाच से प्रफुल्ल होना। उ०—नाइ चरन सिर मुनि चले पुनि पुनि हरषत गात।—तुलसी (शब्द०)।

हरषना(पु)²—क्रि० स० [हिं० हरपाना] हर्षित करना। उ०—अपनी जीवन जग मैं बरषै। दुख करषै, सब जतुन हरषै।—नद० ग्र०, पृ० ३०५।

हरषाना(पु)¹—क्रि० अ० [सं० हष, हिं० हरष + आना (प्रत्य०)] हर्षित होना। प्रसन्न होना। खुश होना। उ०—जे पर भनित सुनत हरषाही।—तुलसी (शब्द०)। २ पुलकित होना। रोमाच से प्रफुल्ल होना।

हरषाना²—क्रि० स० हर्षित करना। प्रसन्न करना।

हरषित(पु)—वि० [सं० हर्षित] दे० 'हर्षित'।

हरसख—सज्ञा पुं० [सं०] कुबेर का एक नाम [को०]।

हरसना(पु)—क्रि० अ० [सं० हर्षण] प्रसन्न होना। दे० 'हरषना'। उ०—सहन सौरभ स समीरण पर सहस्रो किरण हरसो। —अर्चना, पृ० १६।

हरसाना(पु)—क्रि० स० [हिं० हरसना] दे० 'हरषाना'। उ०—ही मै धारे श्याम रग हा को हरसावै जग।—प्रमघन०, भा० १, पृ० १६८।

हरसिंगार—सज्ञा पुं० [सं० हार + शृगार] मझोले कद का एक पेड और उसका पुष्प इसे परजाता भी कहते है।

विशेष—इसकी पत्तियाँ चार पाच अगुल लबी, तीन-चार अगुल चौडी और किनारो पर कुछ कटावदार होती है। पतली नोक कुछ दूर तक निकली होती है। यह पेड फूलो के लिये बगीचो मे लगाया जाता है और विध्य पर्वत के कई स्थानो पर जगली होता है। यह शरद् ऋतु मे कुआर से अगहन तक फूलता है। फूल मे छोटे छोटे पाच दल और नारगी रग की लबी पोली डाँडी होती है। फूल पेड मे बहुत काल तक लगे नही रहते, बराबर झडा करते है। डाँडिया को लोग पीला रग निकालने के लिये सुखाकर रखते है। इसकी पत्ती ज्वर की बहुत अच्छी ओपधि समझी जाती है।

हरसूनु—सज्ञा पुं० [सं०] १ स्कद का एक नाम। कार्तिकेय। २ गणपति। गणेश [को०]।

हरसौधा†—सज्ञा पुं० [हिं० हरिस] कोल्हू मे वह स्थान या पाटा जिसपर बैठकर बैल हाँके जाते है।

हरहस(पु)—सज्ञा पुं० [सं० हर + हस] सूर्य। उ०—हुवै जेम हरहस सूं वासर कमल विकास।—बाँकी० ग्र०, भा० ३, पृ० ५२।

हरहट†—वि० [हिं० हरकना] नटखट (बैल) जो बार बार खेत चरने दौडे या इधर उधर भागता फिरे (चौपाया)। हरहाई। जैसे,—हरहट गैया।

हरहर¹—सज्ञा स्त्री० [अनुध्व०] १ पानी एव हवा के तीव्र वेग से बहने की ध्वनि। उ०—नीचे प्लावन की प्रलय धार ध्वनि हरहर। —तुलसी०, पृ० ४। २ जोरो से हँसने की ध्वनि। उ०— (क) प्रभु जी की प्रभुताई, इद्र हू की जडताई, मुनि हँसै हेरि हेरि हरि हँसै हरहर।—नद० ग्र०, पृ० ३६२। (ख) नद कुँवर तब हरहर हँसै। हँसत जु रदन बदन मे लसे।— नद० ग्र०, पृ० ३०१। (ग) काम कुटिलता ही कहि गावै हरहर हाँसा।—रै० बानी, पृ० १२।

हरहराट(पु)†—सज्ञा पुं० [अनु०] थरथराहट। कपन।

हरहराना—क्रि० अ० [अनुध्व०] नदियो का हरहर शब्द करते हुए द्रुत गति से बहना। उ०—नदियाँ बाढ की बाढ पर आ खसी खास्एक (घासपात) बहाती हरहराती चहूँ फेकती।— प्रेमघन०, भा० २, पृ० १२।

हरहा†¹—वि० [हिं० हरकना] नटखट। दे० 'हरहट'।

हरहा²—सज्ञा पुं० हर मे न नधनेवाले बैल। उ०—धीरे धीरे चल दी, सारी दुनियाँ छल दी, पीछे भाई के हरहो के ढगले।— आराधना, पृ० ८०।

हरहा³—सज्ञा पुं० [देश०] भेडिया। वृक।

हरहाई(पु)¹—वि० स्त्री० [हि हरहा] नटखट (गाय) जो बार बार खेत चरने दौड़े या इधर उधर भागती फिरे। हरहट। उ०— जिमि कपिलहि घालै हरहाई।—तुलसी (शब्द०)।

हरहाई²—सज्ञा पुं० खूँटे से अपने को छुडाकर या राह चलते लोगो के खेत खलिहान चर डालनेवाली आदत या स्वभाव। नटखटी। नटखट होने का भाव। उ०—ज्यों पशु हरहाई करहि खेत बिराने खाहि।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० १६६।

हरहार—सज्ञा पुं० [सं०] १ शिव का हार, सर्प। उ०—हठि हित करि प्रीतम हियो कियो जू सौति सिंगार। अपने कर मोतिन गुह्यो भयो हरा हरहार।—बिहारी (शब्द०)। २ शेषनाग।

हरहारा(पु)†—सज्ञा पुं० [हिं० हर + हार (वाला)] हलधर। कृषक। किसान। उ०—राजे, आयो ऐ जेठ असाढ, हरहारे ने हह रे सम्हारिए।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ९१६।

हरहोरवा—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

हरांस†—सज्ञा पुं० [अ० हर (= गरम होना) + सं० अश] १ मद ज्वर। हरारत। २ शैथिल्य। थकान। थकावट।

हरा¹—वि० [सं० हरित, प्रा० हरिअ] [वि० स्त्री० हरी] १ घास या पत्ती के रग का। हरित। सब्ज। जैसे,—हरा कपडा, हरी पत्ती।

यौ०—हरामन। हराभरा = (१) हरीतिमा या हरियाली से भरा हुआ। (२) सद्य प्रसूत। ताजा। टटका। (३) खिला हुआ। प्रसन्न। प्रफुल्ल। विकसित। जैसे—हरा भरा चेहरा।

२ प्रफुल्ल। प्रसन्न। ताजा। जैसे,—(क) नहाने से जी हरा हो गया। (ख) माँ बेटे को देख हरी हो गई। (ग) हरा भरा चेहरा।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

३. जो मुरझाया न हो। सजीव। ताजा। जैसे,—पानी देने से पौधे हरे हो गए। ४. (घाव) जो सूखा या भरा न हो। जैसे—

घाव लगने से घाव फिर हरा हो गया । ५ दाना या फल जो पका न हो । जैसे—हरा दाना, हरे अमरूद, हरे बूट ।

मुहा०—हरा करना = तरो ताजा करना । खुश कर देना । हरा दिखाई पड़ना या सूझना = झूठी आशा करना । व्यर्थ की कल्पना करना । हरा बाग = केवल अभी लुभानेवाली पर पीछे कुछ न ठहरनेवाली बात । व्यर्थ आशा बँधानेवाली बात । हरा भरा = (१) जो हरे पेड़ पौधों और घास आदि से भरा हो । (३) जो बाल बच्चों से भरी पूरी हो । जिसकी गोद में शिशु किलकते हों । जैसे,—तेरी गोद हरी भरी रहे । हरे में आँखें होना या फूलना = हरियाली सूझना । मन बढ़ा रहना और आगम का ध्यान न रहना ।

हरा²—संज्ञा पुं० १ घास या पत्ती का सा रंग । हरित वर्ण । जैसे,—नीला और पीला मिलाने से हरा बन जाता है । २ चौपायों को खिलाने का ताजा चारा ।

हरा³(पु)‡—संज्ञा पुं० [सं० हार] हार । माला । उ०—(क) अपने कर मोतिन गुह्यो भयो हरा हरहार ।—बिहारी (शब्द०) । (ख) कुच दुंदन की पहिराय हरा मुख सोंधी सुरा महकावति है —श्रीधर पाठक (शब्द०) ।

हरा⁴—संज्ञा स्त्री० [सं०] हर या महादेव की स्त्री पार्वती ।

हरा⁵—संज्ञा पुं० [सं० हरित] हरे रंग का घोड़ा । सब्जा । उ०—हरे कुरंग महुअ बहु भाँती । गररं कोकाह बुलाह सुपाँती । —जायसी (शब्द०) ।

हराई†¹—संज्ञा स्त्री० [हिं० हर, हल] खेत का उतना भाग जितना एक हल के चक्कर में जुत जाता है । बाह । जैसे—चार हराई हो गई ।

मुहा०—हराई फाँदना = जुताई की कूँड़ शुरू करना ।

हराई²—संज्ञा स्त्री० [हिं० हारना] हारने की क्रिया या भाव । हार ।

हराद्रि—संज्ञा पुं० [सं०] कैलास पर्वत । हरगिरि [को०] ।

हरानत—संज्ञा पुं० [सं०] रावण का एक नाम ।

हराना—क्रि० स० [हिं० हारना, या हरना] युद्ध में प्रतिद्वंद्वी को हटाना । मारना या बेकाम करना । परास्त करना । पराजित करना । शिकस्त देना । जैसे,—लड़ाई में हराना । २ शत्रु को विफलमनोरथ करना । दुश्मन को नाकामयाब करना । ३ प्रयत्न में शिथिल करना । और अधिक श्रम के योग्य न रखना । थकाना ।

संयो० क्रि०—देना ।

हरापन—संज्ञा सं० [हिं० हरा + पन (प्रत्य०)] हरे होने का भाव । हरितता । सब्जी ।

हराम¹—वि० [अ०] निषिद्ध । विधिविरुद्ध । बुरा । अनुचित । दूषित । जैसे,—मुसलमानों के लिये सूद खाना हराम है । उ०—खात हे हराम दाम करत हराम काम घट घट तिनही के अपयश छानेंगे ।—अकबरी०, पृ० ३२ ।

हराम²—संज्ञा पुं० १ वह वस्तु या बात जिसका धर्मशास्त्र में निषेध हो । वर्जित बात या वस्तु । २ शूकर । सूअर जिसके छूने खाने आदि का इस्लाम में निषेध है । उ०—आँबरो, अधम, जड़ जाजरो जरा जवन, सूकर के सावक ढका ढकेल्यो मग में । गिरो हिये हहरि हराम हो हराम हन्यो हाय हाय करत परीगो काल फाँग में ।—तुलसी (शब्द०) ।

मुहा०—(कोई बात) हराम करना = किसी बात का करना मुश्किल कर देना । ऐसा करना कि कोई काम आराम से न कर सके । जैसे,—तुमने तो काम के मारे खाना पीना हराम कर दिया । (कोई बात) हराम होना = किसी बात का करना मुश्किल हो जाना । कोई बात न करने पाना । जैसे—रात भर इतना शोर हुआ कि नींद हराम हो गई ।

३ बेईमानी । अधर्म । बुराई । पाप । जैसे,—(क) हराम का रुपया हम नहीं लेते । (ख) हराम को छूना बुरा है । (ग) हराम की कमाई खाते शर्म नहीं आती ।

मुहा०—हराम का या हराम का खाना = (१) जो बेईमानी से प्राप्त हो । जो पाप या अधर्म से कमाया गया हो । जैसे—हराम का माल उड़ाते शर्म नहीं आती । (२) मुफ्त का । जो बिना मिहनत का या काम के मिले । जैसे—पड़े पड़े हराम का खाना खाओ । हरामघाट उतारना = किसी को बुराई की राह पर ले जाना ।—अपनी०, पृ० ८६ । हराम का माल या कमाई = दे० 'हराम का' और 'हराम'—३ ।

यौ०—हरामखोर ।

४ स्त्री पुरुष का अनुचित संबंध । व्यभिचार । जैसे,—हराम का लड़का ।

यौ०—हरामजादा ।

मुहा०—हराम का जना, पिल्ला या बच्चा = (१) दोगला । वर्णसंकर । (२) दुष्ट । पाजी । बदमाश । (गाली) । हराम का पेट = व्यभिचार से रहा हुआ गर्भ ।

हरामकार—संज्ञा पुं० [अ० + फा०] १ निषिद्ध कर्म करनेवाला । बुरे काम करनेवाला । २ व्यभिचारी । पर-स्त्री-लंपट ।

हरामकारी—संज्ञा स्त्री० [अ० + फा०] निषिद्ध कर्म । पाप । बुराई । २ व्यभिचार । पर-स्त्री-गमन ।

हरामखोर—वि०, संज्ञा पुं० [अ० + फा०] १ पाप की कमाई खानेवाला । अनुचित रूप से धन पैदा करनेवाला । २ बिना मिहनत मजदूरी किए यों ही किसी का धन लेनेवाला । मुफ्तखोर । ३ अपना काम न करनेवाला । आलसी । निकम्मा ।

हरामखोरी—संज्ञा स्त्री० [अ० + फा० + ई (प्रत्य०)] १ मुफ्त का माल खाने की प्रवृत्ति । मुफ्तखोरी । २ घूस खाना या लेना । घूसखोरी । ३ नमकहराम का काम । नमकहरामी [को०] ।

हरामजदगी—संज्ञा स्त्री० [फा० हरामजदगी] १ दोगलापन । २ धूर्तता ।

हरामजादा—संज्ञा पुं० [अ० हराम + फा० जादा] [संज्ञा स्त्री० हरामजादी] १ व्यभिचार से उत्पन्न पुरुष । दोगला । वर्णसंकर । २ दुष्ट । पाजी । बदमाश । खल । (गाली) । उ०—भकुआ

भरकी अरु हिलसी हरामजादे लावर दगैल स्यार आँखिन दिखाए तें ।—ठाकुर०, पृ० २७ ।

हरामी—वि०[अ० हराम + ई (प्रत्य०)] १ व्यभिचार से उत्पन्न । २ दुष्ट । पाजी । नटखट । (गाली) । उ०—हिंदू हरामी की कहूँ । कुफरान बुत पूजें नकल ।—तुरसी० श०, पृ० २७ ।

यौ०—हरामी का पिल्ला या बच्चा = दे० हराम का जना, पिल्ला या बच्चा ।

हरामुद्दालह—वि० [अ० हरामुद्दहर] अत्यत या शरारती दुष्ट । बहुत पाजी । (गाली) ।

हरारत सज्ञा स्त्री० [अ०]१ गर्मी । ताप । जोश । २ हलका ज्वर । ज्वराश । मद ज्वर ।

हरावर(पु)[1]—सज्ञा स्त्री० [दि० हडावर] दे० 'हडावरि' ।

हरावर[2]—सज्ञा पु० [तु० हरावल] दे० 'हरावल' ।

हरावरि(पु)[1]—सज्ञा स्त्री० [हिं० हाड] दे० 'हडावरि' ।

हरावरि[2]—सज्ञा पुं० [तु० हरावल] दे० 'हरावल' ।

हरावल—सज्ञा पुं० [तु०]१ सेना का अगला भाग । सिपाहियो का वह दल जो फौज मे सबके आगे रहता है । उ०—ज्ञान निस्सान को चढै बजाय कै, हरावल छमा घर घाट चीन्हा ।—पलटू०, भा० २, पृ० १४ । २ ठगो या डाकुओ का सरदार जो आगे चलता है ।

हरास—सज्ञा पुं० [फा० हिरास] १ भय । डर । २ आशका । खटका । अदेशा । उ०—अतहु उचित नृपहिं बनबासू । बय बिलोकि हिय होइ हरासू । —तुलसी (शब्द०) । ३ विपाद । दुख । रज । उ०—राज सुनाइ दीन्ह बनबासू । सुनि मन भएउ न हरप हरासू ।—तुलसी (शब्द०) । ४ नैराश्य । नाउम्मेदी ।

हराहर(पु)[1]—सज्ञा पुं० [स० हलाहल] दे० 'हलाहल' ।

हराहर(पु)[2]—सज्ञा स्त्री० [हिं० हरना] छीना झपटी । उ०—दिन होरी खेल की हराहर भरचौ हो सु तौ, भाग जागें सोयौ निधरक नैन ढाँपि कै ।—घनानद, पृ० २१० ।

हराहरि—सज्ञा स्त्री० [अ० हरारत] क्लाति । थकावट । शैथिल्य । उ०—कछु मेरे तवै परिरभन सो सुठि अग हराहरि खोइ गई ।—उत्तर०, पृ० १३ ।

हरि[1]—वि०[सं०]१ पिंगल (वर्ण) । भूरा या बादामी । २ पीला । ३ हरे रग का । हरा । हरित् । ४ हरीतिमायुक्त पीला । ५ वहन करनेवाला । ढोने या ले जानेवाला (को०) ।

हरि[2]—सज्ञा पु० १ विष्णु । भगवान् । २ इद्र । ३ घोडा । ४ बदर या बनमानुस । ५ सिंह । ६ सिह राशि । ७ सूर्य । ८ किरण । ९ चद्रमा । १० गीदड । ११ शुक । सूआ । तोता । १२ मोर । मयूर । १३ कोकिल । कोयल । १४ हस । १५ मेढक । मडूक । १६ सर्प । साँप । १७ अग्नि । आग । १८ वायु । १९ विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण । २० श्रीराम । उ०—हरि हित हरहु चाप गरुआई ।—तुलसी (शब्द०) । २१ शिव । २२ यम । २३ शुक्र । २४ गरुड के एक पुत्र का नाम । २५ एक पर्वत का नाम । २६ एक वर्ष या भूभाग का नाम । २७. अठारह वर्णों का एक छद या वृत्त । उ०—वानर गन वानन सन केशव जवही मुरचो । रावन दुखदावन जगपावन समुहे जुरचो (शब्द०) । २८ बौद्धशास्त्रो मे एक बडी सख्या का नाम । २९ ब्रह्मा का नाम (को०) । ३० मनुष्य । मनुज । मानव (को०) । ३१ भर्तृहरि कवि । ३२ उच्चैश्रवा । इद्र का अश्व (को०) । ३३ पीत वर्ण या हरापन लिए पीला रग (को०) । ३४ एक लोक का नाम (को०) । ३५ तामस मन्वतर के एक देववर्ग का नाम (को०) ।

हरि†[3]—वि० [फा० हर] प्रत्येक । उ०—कहेसि ओहि सँवरौ हरि फेरा । —जायसी ग्र०, पृ० १११ ।

हरि(पु)[4]—अव्य० [हिं० हुरुए] धीरे । आहिस्ते । उ०—सूखा हिया हार भा भारी । हरि हरि प्रान तजहि सब नारी—जायसी (शब्द०) ।

यौ०—हरि हरि = धीरे धीरे । शनै शनै ।

हरिअर(पु)†[1]—वि० [स० हरितर अथवा स० हरित् + हिं० र (प्रत्य०)] पेड की पत्ती के रग का । हरा । सब्ज ।

हरिअर[2]—सज्ञा पुं० एक रग का नाम जो पेड की पत्तियो के समान हरा होता है । उ०—अजगव खडेउ ऊख जिमि मुनिहि हरिअरइ सूझ ।—तुलसी (शब्द०) ।

हरिअराना†—क्रि० अ० [हिं० हरिअर से ना० धा०] दे० 'हरिआना' दे० 'हरिआना' ।

हरिअरि(पु)†—क्रि० [हि हरिअर] हरित् वर्ण का । हरा । सब्ज । उ०—हरिअरि भूमि कुसुभी चोला ।—जायसी (शब्द०) ।

हरिअरी(पु)†—सज्ञा स्त्री० [हिं० हरिअर + ई (प्रत्य०)] १ हरे रग का विस्तार । २ घास और पेड पौधो का समूह । हरियाली ।

हरिआना†—क्रि० अ० [हिं० हरिअर] १ हरा होना । सब्ज होना । २ मुरझाया न रहना । ताजा होना । ३ शैथिल्य या क्लाति न रहना । थकावट दूर होना । ४ हर्षित होना । खुश होना । प्रसन्न होना ।

सयो० क्रि०—आना ।—उठना ।

हरिआली—सज्ञा स्त्री० [सं० हरित् + आलि] १ हरेपन का विस्तार । २ घास और पेड पौधा का फैला हुआ समूह । जैसे,—सडक के दोनो ओर बडी सुदर हरिआली है ।

हरिंक—सज्ञा पुं० [सं०] १ लाल या भूरे रग का घोडा । २ चौर । तस्कर (को०) । ३ जुआडी, जो पासे के साथ हो (को०) ।

हरिकथा—सज्ञा स्त्री० [सं०] भगवान् या उनके विविध अवतारो का चरित्रवर्णन ।

हरिकर्म—सज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ ।

हरिकात—वि० [स० हरिकान्त] १ जो हरि को प्रिय हो । २ जिसे इद्र चाहते हो । इद्रप्रिय । ३ सिह की तरह सुदर (को०) ।

हरिकारा†—सज्ञा पु० [फा० हरकारह, हिं० हरकारा] दे० 'हरकारा' । उ०—आवत हरिकारन हूँ को जगदिशि पग थहरत ।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० २७ ।

हरिकीर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] भगवान् या उनके अवतारो की स्तुति का गान। भगवान् का भजन।

हरिकेलीय—संज्ञा पुं० [सं०] वग देश का एक नाम।

हरिकेश[1]—वि० [सं०] भूरे बालोंवाला।

हरिकेश[2]—संज्ञा पुं० १ सूर्य की सात प्रधान कलाओं मे से एक। २ शिव का एक नाम। ३ सविता का एक नाम। सूर्य का नाम (को०)। ४ एक यक्ष का नाम जो शिव को प्रसन्न करके गणो का एक नायक हुआ था। दडपाणि। ५ श्यामक नामक यादव का पुत्र जो वसुदव का भतीजा लगता था।

हरिक्राता—संज्ञा स्त्री० [सं० हरिक्राता] एक प्रकार की लता। विष्णुक्राता।

हरिक्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] पटना के पास एक तीर्थ का नाम।

हरिखड(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हरि + खण्ड] मयूरपिच्छ। मोरपख।

हरिगध—संज्ञा पुं० [सं० हरिगन्ध] पीला चदन।

हरिगण—संज्ञा पुं० [सं०] अश्वयूथ। घोडो का समूह [को०]।

हरिगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम [को०]

हरिगीता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह मत या सिद्धात जिसे नारायण ने नारद मुनि को बताया था। २ एक वृत्त का नाम। दे० 'हरिगीतिका'।

हरिगीतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोलह और बारह के विराम के अट्ठाइस मात्राओ का एक छद जिसकी पाँचवी, बारहवी, उन्नीसवी और छब्बीसवी मात्रा लघु होनी चाहिए। अत मे लघु गुरु होता है। जैसे—निज दास ज्यों रघुबस भूषन कबहुँ मम सुमिरन करचो।—मानस ७।१२।

हरिगृह—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु का मदिर। २ एक नगर का नाम जिसे एकचक्र भी कहते है [को०]।

हरिगोपक—संज्ञा पुं० [सं०] इद्रगोप। बीरबहूटी [को०]।

हरिचद—संज्ञा पुं० [सं० हरिश्चन्द्र] दे० 'हरिश्चन्द्र'।

हरिचदन—संज्ञा पुं० [सं० हरिचन्दन] १ एक प्रकार का चदन। २ स्वर्ग के पाँच वृक्षो मे से एक।

विशेष—स्वर्ग के पाच वृक्षो के नाम इस प्रकार कहे गए हैं—पारिजात, मदार, हरिचदन, सतान और कल्पवृक्ष।

३ कमल का पराग। ४ केसर। ५ चद्रिका। चाँदनी।

हरिचर्म—संज्ञा पुं० [सं०] व्याघ्रचर्म। बाघबर।

हरिचाप—संज्ञा पुं० [सं०] इद्रधनुष।

हरिज—संज्ञा पुं० [सं०] क्षितिज [को०]।

हरिजच्छ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हर्यक्ष] सिंह। उ०—कठीरव हरि केहरी पुडरीक हरिजच्छ।—अनेकार्थ०, पृ०, ९८।

हरिजटा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वाल्मीकि रामायण के अनुसार एक राक्षसी जिसे रावण ने सीता को समझाने के लिये नियत किया था।

हरिजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ भगवान् का दास। ईश्वर का भक्त। उ०—धर्मशास्त्र तीरथ हरिजन कर, निंदा करत पुनहु दुख तिनकर।—कबीर सा०, पृ० ४६५। २ अछूत कही जानेवाली जाति का व्यक्ति। निम्नवर्ण का व्यक्ति। शूद्र।

हरिजान(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हरियान] दे० 'हरियान'। उ०—सुनु हरिजान ग्यान निधि कहा कछुक कलिधम।—मानस, ७।९७।

हरिण[1]—संज्ञा पुं० [स्त्री० हरिणी] १ मृग। हिरन। २ हिरन की एक जाति।

विशेष—शेष चार जातियो के नाम ये है—ऋष्य, रुरु, पृषत् और मृग।

३ हस। ४ सूर्य। ५ एक लोक का नाम। ६ विष्णु का एक नाम। ७ शिव का एक नाम। ८ एक नाग का नाम। ९ नकुल। नेवला (को०)। १० शिव के एक गण का नाम। ११ श्वेत वर्ण जो पीलापन लिए हो (को०)।

हरिण[2]—वि० १ भूरे या बादामी रग का। २ पीलापन लिए श्वेत वर्ण का (को०)। ३ किरणों से युक्त। किरणवाला (को०)।

हरिणक—संज्ञा पुं० [सं०] १ मृग। हिरन। २ छोटा हरिना [को०]।

हरिणकलक—संज्ञा पुं० [सं० हरिणकलङ्क] चद्रमा। मृगलाछन।

हरिणचर्म—संज्ञा पुं० [सं० हरिणचर्मन्] हिरन का चमडा। मृगछाल [को०]।

हरिणधामा—संज्ञा पुं० [सं० हरिणधामन्] चद्रमा। चद्र [को०]।

हरिणनयन,—वि० पुं० [सं०] हरिण के सदृश नेत्रवाला।

हरिणनयना, हरिणनयनी—वि० स्त्री० [सं०] हिरन की आँखो के समान सुदर आँखोवाली। सुदरी। हरिणाक्षी।

हरिणनतक—संज्ञा पुं० [सं०] किनर जाति [को०]।

हरिणनेत्र—वि० पुं० [सं०] दे० 'हरिणनयन'।

हरिणनेत्रा—वि० स्त्री० [सं०] हरिण के समान सुदर आँखो वाली। हरिणनयना [को०]।

हरिणप्लुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णार्धसम वृत्त का नाम जिसके विषम चरणो मे ३ सगण, एक लघु और एक गुरु होता है तथा सम मे एक नगण, दो भगण और एक रगण होता है।

हरिणलक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रमा।

हरिणलाछन—संज्ञा पुं० [सं० हरिणलाञ्छन] मृगलाछन। चद्रमा।

हरिणलोचन—वि० पुं० [सं०] [वि० स्त्री० हरिणलोचना] दे० 'हरिणनयन'।

हरिणलोचना—वि० स्त्री० [सं०] हिरन के तुल्य सुदर नेत्रवाली। हरिणाक्षी। हरिणनयनी [को०]।

हरिणलोलाक्षी—वि० स्त्री० [सं०] हिरन जैसी चचल आँखवाली [को०]।

हरिणहृदय—वि० [सं०] हिरन सा। डरपोक। बुजदिल।

हरिणाक—संज्ञा पुं० [सं० हरिणाङ्क] १ मृगाक। चद्रमा। चद्र। २ कपूर। कर्पूर [को०]।

हरिणाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

हरिणाक्षी—वि० स्त्री० [सं०] हिरन की आखो के समान सुदर आँखोवाली। सुदरी।

हरिणाखी(पु)‡—वि० स्त्री० [सं० हरिणाक्षी, प्रा०, अप० हरिणाखी] दे० 'हरिणाक्षी'। उ०—धन हरिणाखी ईम कहीं।—बी० रासो, पृ० ५९।

हरिणाधिप—संज्ञा पुं० [सं०] मृगेंद्र। सिंह [को०]।

हरिणारि—संज्ञा पुं० [सं०] हरिण का शत्रु, सिंह [को०]।

हरिणाश्व—संज्ञा पुं० [सं०] वायु। पवन [को०]।

हरिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मादा हिरन। हिरन की मादा। २ मजिष्ठा। मँजीठ। मजीठ। ३ जर्द चमेली। ४ कामशास्त्र के अनुसार स्त्रियो की चार जातियो या भेदो मे से एक जिसे चित्रिणी भी कहते है।

विशेष—दो अच्छी जाति की स्त्रियो मे यह मध्यम है। यह पद्मिनी की अपेक्षा कम सुकुमार तथा चचल और क्रीडाशील प्रकृति की होती हे।

५ सुदरी या तरुणी स्त्री (को०)। ६ एक वर्णवृत्त का नाम जिसमे सत्रह वर्ण होते है। इसका स्वरूप इस प्रकार है—न स म र स ल गु (।।। ।।ऽ ऽऽऽ ऽ।ऽ ।।ऽ ।ऽ)। ७ दस वर्णों का एक वृत्त। जैसे,—फूलन की सुभ गेंद नई। सूँघि सची जनु डारि दई।—केशव (शब्द०)। ८ सोने की प्रतिमा। स्वर्ण-प्रतिमा (को०)। ९ हरित वर्ण। हरा रग (को०)। १० हरदी। हरिद्रा (को०)।

यौ०—हरिणीदृक् = हरिनी के समान चचल नेत्रवाला। हरिणी-दृशी, हरिणीनयना = हरिणी के समान चचल नेत्रवाली स्त्री।

हरिणेश—संज्ञा पुं० [सं०] मृगराज। मृगेंद्र। सिंह [को०]।

हरित्[1]—वि० [सं०] १ भूरे या बादामी रग का। कपिश। २ हरे रग का। हरा। सब्ज। ३ कुछ हरा रग लिए पीला (को०)।

हरित्[2]—संज्ञा पुं० १ सूर्य के घोडे का नाम। २ मरकत। पन्ना। ३ सिह। ४ सूर्य। ५ विष्णु। ६ एक प्रकार का तृण। घास। तृण। ७ द्रुतगामी अश्व (को०)। ८ मूँग (को०)। ९ हरा, पीला या पिंगल वर्ण (को०)। १० जैनो के अनुसार हरिक्षेत्र की नदी का नाम।

हरित्[3]—संज्ञा स्त्री० १ हरिद्रा। हलदी। हरदी। २ दिक्। दिशा (को०)। ३ तृण। घास (को०)।

हरित[1]—वि० [सं०] १ भूरे या बादामी रग का। २ पीला। जर्द। ३ हरे रग का। हरा। सब्ज। ४ ताजा। नवीन। नया।

हरित[2]—संज्ञा पुं० १ सिंह। २ कश्यप के एक पुत्र का नाम। ३ यदु के एक पुत्र का नाम। ४ युवनाश्व के एक पुत्र का नाम। ५ द्वादश मन्वतर का एक देवगण। ६ सेना। ७ सब्जी। हरियाली। ८ सब्जी। शाक भाजी। ९ हरित वर्ण (को०)। १० कपिश या भूरा रग (को०)। ११ सोना। स्वर्ण (को०)। १२ पाडु रोग (को०)। १३ एक सुगधित पौधा। स्थौणेयक (को०)। १४ रोहिताश्व के पुत्र का नाम (को०)। १५ हरित या भूरे रग का पदार्थ (को०)। एक तृण। मथानक (को०)।

हरितक—संज्ञा पुं० [सं०] १ हरा तृण। २ शाक। सब्जी [को०]।

यौ०—हरितच्छद = हरे पत्तोवाला। हरितपत्र युक्त। हरित-पत्रिका = मरकतपत्री। हरितप्रभ = पाडु वर्ण का। पीला। हरितभेषज = कमल रोग की औषध। हरितलता = दे० 'हरित-पत्रिका'। हरितशाक = दे० 'शिग्रु'।

हरितकपिश—वि० [सं०] पीलापन या हरापन लिए भूरा। लीद के रग का।

हरितकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'हरीतकी' [को०]।

हरितगोमय—संज्ञा पुं० [सं०] गोभिल गृह्यसूत्र के अनुसार ताजा गोबर।

हरितनेमी—संज्ञा पुं० [सं० हरितनेमिन्] वह जिसके रथ के चक्के सोने के हो, शिव [को०]।

हरितपण्य—संज्ञा पुं० [सं०] शाक सब्जी का व्यापार। शाक विक्रयण।

हरितमणि—संज्ञा पुं० [सं०] मरकत। पन्ना।

हरितमनि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हरितमणि] एक रत्न। पन्ना। उ०—हरितमनिन्ह के पत्र फल पदुम राग के फूल। रचना देखि विचित्र अति मन बिरचि कर भूल।—तुलसी (शब्द०)।

हरितहरि—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य [को०]।

हरिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दूर्वा। दूब। नीलदूर्वा। २ हरिद्रा। हल्दी। ३ हरे या भूरे रग का अगूर। ४ भूरे रग की गाय। ५ स्वरभक्ति का एक भेद। ६ हरि या विष्णु का भाव। विष्णुपन। हरित्व। उ०—हरिहि हरिता विधिहि विधिता सिवहि सिवता जो दई। सो जानकीपति मधुर मूरति मोदमय मगलमई।—तुलसी ग्र०, पृ० ५२३।

हरिताभ—वि० [सं०] हरित वर्ण का। हरे रग का। हरा। उ०—आज उल्लसित धरा, पल्लवित विटपो मे बहु वर्ण विकास। पीपल, नीम, अशोक, आम्र से फूट रहा हरिताभ हुलास।—युगवाणी, पृ० ८०।

हरिताल—संज्ञा पुं० [सं०] १ हरताल नाम की धातु। विशेष दे० 'हरताल'। २ एक प्रकार का कबूतर जिसका रग कुछ पीलापन या हरापन लिए होता है।

हरितालक—संज्ञा पुं० [सं०] १ दे० 'हरताल'। २ नाटक के अभिनय मे शरीर मे रग आदि मे पोतने का कर्म।

हरितालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ भादो की शुक्ल पक्ष की तृतीया। तीज।

विशेष—स्त्रियो को इस व्रत को करने का विधान है। इस दिन स्त्रियाँ निर्जल व्रत रखती हैं और नये वस्त्र पहनकर शिव-पार्वती का पूजन करती है।

२ दूर्वा नामक घास। दूब। दूर्वा (को०)।

हरिताली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मालकगनी। २ तलवार का वह भाग जो धारदार होता है। ३ भादो के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि। विशेष दे० 'हरितालिका'। ४ आकाश मे मेघ आदि की पतली धज्जी या रेखा। ५ वायु। पवन।

हरिताश्म—संज्ञा पुं० [सं० हरिताश्मन्] १ पन्ना। मरकत। २ नीला थोथा या कसीस [को०]।

हरिताश्मक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हरिताश्म' [को०]।

हरिताश्व—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य [को०]।

हरितुरगम—संज्ञा पुं० [सं० हरितुरङ्गम] १ इद्र का एक नाम। २ इद्र का अश्व [को०]।

हरितुरग—संज्ञा पुं० [सं०] इद्र का अश्व [को०]।

हरितोपल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हरिताश्म'।

हरितोपलेपन—संज्ञा पुं० [सं०] १ हरे वर्ण का लेपन, रेखाकन या आवरण [को०]।

हरित्पति—संज्ञा पुं० [सं०] दिशाओं के पति। दिग्पति। दिगीश [को०]।

हरित्पर्णी—संज्ञा पुं० [सं०] मुरई। मूली [को०]।

हरिदंत—संज्ञा पुं० [सं० हरिदन्त] दिगंत। दिशाओं का अंत [को०]।

हरिदंतर—संज्ञा पुं० [सं० हरिदन्तर] विभिन्न दिशाएँ। दिशातर। दिगंतर [को०]।

हरिदंबर—वि० [सं० हरिदम्बर] हरा या पीत वस्त्र पहननेवाला [को०]।

हरिदर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] १ सब्जा घोडा। २ सूर्य जिनका घोडा हरित् माना गया है।

हरिदश्व—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य का एक नाम [को०]।

हरिदास—संज्ञा पुं० [सं०] भगवान् का सेवक या भक्त।

हरिदिक्—संज्ञा स्त्री० [सं० हरिदिश्] इंद्र की दिशा। पूर्व दिशा जिसका अधिपति इंद्र है [को०]।

हरिदिन, हरिदिवस—संज्ञा पुं० [सं०] एकादशी।

हरिदिशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूर्व दिशा, जिसके लोकपाल या अधिष्ठाता इंद्र है।

हरिदेव—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विष्णु। २ श्रवण नामक नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता इंद्र हैं।

हरिद्गर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] १ दे० 'हरिदर्भ।' २ हरा या पीताभ कुश जिसकी पत्तियाँ चौडी हो (को०)।

हरिद्दंतावल—संज्ञा पुं० [सं० हरिद्दन्तावल] हरदी। हरिद्रा [को०]।

हरिद्रंजनी—संज्ञा स्त्री० [सं० हरिद्रञ्जनी] हरिद्रा। हरदी [को०]।

हरिद्र—संज्ञा पुं० [सं०] पीला चंदन।

हरिद्रक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पीला चंदन। २ एक नाग का नाम।

हरिद्रखंड–संज्ञा पुं० [सं० हरिद्रखण्ड] एक औषध जिसके सेवन से दाद, खुजली, फोडा फुंसी और कुष्ट रोग दूर होता है।

विशेष—सोंठ, काली मिर्च, पिप्पली, तज, पत्रज, वायविडंग, नागकेसर, निसोथ, त्रिफला, केसर और नागरमोथा सब टके टके भर लेकर चूर्ण करे और गाय के घी में भून डाले तथा ४ टके भर हरदी का चूर्ण ८ सेर दूध में मिलाकर खोया बना ले। फिर मिस्री की चाशनी में सबको मिलाकर टके टके भर की गोलियाँ बाँध ले।

हरिद्राग—संज्ञा पुं० [सं० हरिद्राङ्ग] एक प्रकार का कबूतर।

हरिद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हलदी। २ एक नदी का नाम। ३ वन। जंगल।—अनेकार्थ (शब्द०)। ४ मंगल।—अनेकार्थ (शब्द०)। ५ सोना धातु।—अनेकार्थ (शब्द०)। ६ निशा। उ०—कहत हरिद्रा बनथली, निशा हरिद्रा होइ। बहुरि हरिद्रा मंगली, हरद हरिद्रा सोइ।—अनेकार्थ०, पृ० १६१।

हरिद्राक्त—वि० [सं०] हरिद्रा से लिप्त या पुता हुआ [को०]।

हरिद्रागणपति—संज्ञा पुं० [सं०] गणपति या गणेश जी की एक मूर्ति जिनपर मंत्र पढकर हलदी चढाई जाती है।

हरिद्रागणेश—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हरिद्रागणपति' [को०]।

हरिद्राद्वय—संज्ञा पुं० [सं०] हलदी और दारु हलदी।

हरिद्राप्रमेह—संज्ञा पुं० [सं०] प्रमेह का एक भेद जिसमें पेशाब हलदी के समान पीला आता है और जलन होती है।

हरिद्राभ[1]—वि० [सं०] पीतवर्ण का। पीला।

हरिद्राभ[2]—संज्ञा पुं० १ पीला रंग। पीत वर्ण। २ आमा हलदी। कचूर। कर्चूर [को०]।

हरिद्रामेह—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हरिद्राप्रमेह'।

हरिद्राराग—संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य में पूर्व राग का एक भेद। वह प्रेम जो हलदी के रंग के समान कच्चा हो, स्थायी या पक्का न हो।

विशेष—पूर्व राग के कुसुंभ राग, मंजिष्ठा राग आदि कई भेद किए गए हैं। हलायुध में 'क्षणमात्रानुरागश्च हरिद्राराग उच्यते' अर्थात् क्षणिक अनुराग को हरिद्रा राग कहा है।

हरिद्रव—संज्ञा पुं० [सं०] १ हरा द्रव या रस। २ नागकेसर के पुष्पों का चूर्ण [को०]।

हरिद्रु—संज्ञा पुं० [सं०] १ वृक्ष। पेड। २ दारुहल्दी [को०]।

हरिद्वार—संज्ञा पुं० [सं०] एक अत्यंत पवित्र पुरी जो प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान है।

विशेष—यहाँ से गंगा पहाडो को छोडकर मैदान में आती हैं। इसी से इसे 'गंगाद्वार' भी कहते हैं। 'हरिद्वार' इसलिये कहते हैं कि इस तीर्थ के सेवन से विष्णुलोक का द्वार खुल जाता है।

हरिद्विष्—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का द्रोही, असुर [को०]।

हरिद्वेषी—संज्ञा पुं० [सं० हरिद्वेषिन्] १ वह जो विष्णु का द्वेषी हो। वह जो विष्णु के प्रति द्रोहभावना से युक्त हो। २ असुर।

हरिधनु, हरिधनुष—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्रधनुष। उ०—बकराजि राजति गगन हरिधनु तडित दिसि दिसि सोहई। नभनगर की सोभा अतुल अवलोकि मुनि मन मोहई।—तुलसी ग्रं०, पृ० ४१८। २ विष्णु का धनुष जो समुद्रमथन से उत्पन्न हुआ था और जिसका नाम शार्ङ्ग है।

हरिधाम—संज्ञा पुं० [सं० हरिधामन्] विष्णुलोक। वैकुंठ।

हरिन—संज्ञा पुं० [सं० हरिण] [स्त्री० हरिणी] खुर और सींगवाला एक चौपाया जो प्राय सुनसान मैदानों, जंगलों और पहाडों में रहता है। मृग।

विशेष—हरिन की बहुत जातियाँ होती हैं, जैसे—कृष्णसार, एण, कस्तूरी मृग, बारहसिंगा, साँभर इत्यादि। यह जंतु अपनी तेज चाल, कुदान और चंचलता के लिये प्रसिद्ध है। यह झुंड बाँधकर रहता है और स्वभावत डरपोक होता है। मादा हरिन के सींग नहीं बढते, अंकुर मात्र रह जाते हैं, इसी से पालने-वाले अधिकतर मादा हरिन पालते हैं। इसकी आँखें बहुत बडी

वडी श्रौर काली होती है, इसी से कवि लोग बहुत दिनो से स्त्रियो के सुदर नेत्रो की उपमा इसकी श्राँखो से देते श्राए है। शिकार भी जितना इस जतु का ससार मे हुश्रा श्रौर होता है, उतना शायद ही श्रौर किसी पशु का होता हो। 'मृगया' जिस प्रकार यहाँ राजाश्रो का एक साधारण व्यसन रहा है, उसी प्रकार श्रौर देशो मे भी। हिदुश्रो के यहाँ इसका चमडा बहुत पवित्र माना जाता है, यहाँ तक कि उपनयन सस्कार मे भी इसका व्यवहार होता है। प्राचीन ऋषिमुनि भी मृगचर्म धारण करते थे श्रौर श्राजकल के साधु सन्यासी भी।

हरिनक्षत्र—सज्ञा पुं० [स०] श्रवण नक्षत्र, जिसके अधिष्ठाता देवता विष्णु है।

हरिनख—सज्ञा पुं० [सं०] १ सिंह या वाघ का नाखून। २ वह तावीज जिसमे वाघ के नाखून लगाए गए हो।

विशेष—स्त्रियाँ यह तावीज वच्चे को नजर श्रादि से वचाने के खयाल से पहनाती हैं। इसे वघनहाँ भी कहते है। सूरदास ने केहरिनख शब्द का इस अर्थ मे प्रयोग किया है।

हरिनग(पु)—सज्ञा पुं० [सं०] सर्प का मणि।

हरिननैनी(पु)—वि० स्त्री० [सं० हरिणनयनी] मृग के सदृश नेत्रवाली। मृगनैनी। उ०—हाहा कै निहोरे हूँ न हेरति हरिननैनी।—मति० ग्र०, पृ० ३२२।

हरिनवारि(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० हरिन + वारि] मृगजल। मृगतृष्णा। उ०—पायो केहि घृत विचारु हरिनवारि महत। तुलसी तकु तासु सरन जाते सव लहत।—तुलसी ग्र०, पृ० ५२२।

हरिनहर्रा—सज्ञा पुं० [देश०] सोहाग नामक वडा सदावहार वृक्ष जिसके वीजो से जलाने का तेल निकलता है। विशेष दे० 'सोहाग'।

हरिना(पु)—सज्ञा पुं० [स० हरिणक] दे० 'हरिन'। उ०—कहाँ दीन हरिनान के अति ही कोमल प्रान। ये तेरे तीखे कहाँ सायक वज्र समान।—शकुतला, पृ० ६।

हरिनाकुस(पु)‡—सज्ञा पु० [स० हिरण्यकशिपु] विष्णु का प्रबल विरोधी दैत्यराज जो प्रह्लाद का पिता था। विशेष दे० 'हिरण्यकशिपु'। उ०—हरिनाकुस श्रौ कस को गयो दुहुन को राज।—गिरिधर (शब्द०)।

हरिनाक्ष(पु)—सज्ञा पु० [स० हिरण्याक्ष] एक दैत्यराज जो हिरण्यकशिपु का भाई था। विशेष दे० 'हिरण्याक्ष'।

हरिनाच्छ(पु)—सज्ञा पुं० [सं० हिरण्याक्ष] दे० 'हिरण्याक्ष'। उ०—मारि हरिनाच्छ उर फार कर नखन सो, भार हर भूमि अति शोक टारचो।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ४३८।

हरिनाथ—सज्ञा पुं० [स०] (वदरो मे श्रेष्ठ) हनुमान्।

हरिनाम—सज्ञा पुं० [स० हरिनामन्] भगवान् का नाम। उ०—भजता क्यो नाही हरिनाम। तेरी कौडी लगे न दाम।—(शब्द०)।

हरिनामा—सज्ञा पुं० [स० हरिनामन्] मूंग। मुद्ग [को०]।

हरिनी—सज्ञा स्त्री० [हिं० हरिन] १ मादा हिरन। स्त्री जाति का मृग। मृगी। उ०—(क) यह तन हरियर खेत, तरुनी हरिनी चरि गई। अजहूँ चेत, अचेत, यह अधचरा वचाइ ले।—सम्मन (शब्द०)। (ख) हरिनी के नैनान सो हरि नीके नैनान।—विहारी (शब्द०)। २ जूही का फूल। यूथिका।—अनेकार्थ (शब्द०)। ३ वाज पक्षी की मादा।—अनेकाथ (शब्द०)। ४ स्वर्णप्रतिमा। सोने की मूर्ति। उ०—हरिनी प्रतिमा हेम की, हरिनी मृग की तीय हरिनी जूथी जासु की फूल माल हरि हीय।—अनेकार्थ०, पृ० १६१। ५ सोनजुही। स्वर्णयूथिका। ६ गणिका। वेश्या। उ०—हरिनी गनिका जूथिका हेमपुप्पिका जाय।—अनेकार्थ०, पृ० १०५।

हरिनेत्र¹—वि० [स०] कपिश या भूरी श्रौर हरी श्राँखोवाला [को०]।

हरिनेत्र²—सज्ञा पुं० १ विष्णु का नेत्र। २ वह श्राँख जो हरे या भूरे वर्ण की हो। ३ कुमुद। श्वेत कमल। ४ उलूक। उल्लू [को०]।

हरिन्मणि—सज्ञा पुं० [स०] पन्ना। मरकतमणि [को०]।

हरिन्मुद्ग—सज्ञा पुं० [स०] हरित वर्ण की मूँग। शारद [को०]।

हरिपद—सज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु लोक। वैकुठ। उ०—जो यह मगल गावहि हरिपद पावहि हो।—तुलसी (शब्द०)। २ विष्णु के चरण। उ०—धरनि धरहि मन धीर कह विरचि हरिपद सुमिरु।—मानस, १।१८४। ३ गया जिले मे पडनेवाला फल्गु नदी का तटवर्ती एक तीर्थ जिसे विष्णुपद कहते है। ४ मेष की सक्राति। वासतिक विपुव। दे० 'महाविपुव'। ५ एक छद का नाम जिसके चारो पदो मे मिलकर कुल ५४ मात्राएँ होती हैं।

विशेष—हरिपद छद के विपम (पहले श्रौर तीसरे) चरणो मे १६ तथा सम (दूसरे श्रौर चौथे) चरणो मे ११ मात्राएँ होती हैं श्रौर अत मे गुरु लघु होता है—'विपम हरिपद कीजिय सोरह सम शिव (११) दै सानद।' जैसे,—रघुपति प्रभु तुम हो जग मे नित, पालो करके दास। परम धरम ज्ञाता परमानहु येही मन की श्रास।—छद०, पृ० ८२।

हरिपर्ण—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जिसके पत्ते हरे हो। हरे पत्तोवाला। २ मूलक। मुरई। विशेष दे० 'मूली'।

हरिपर्वत—सज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम [को०]।

हरिपिंडा—सज्ञा स्त्री० [सं० हरिपिण्डा] स्कद की एक मातृका का नाम [को०]।

हरिपुर—सज्ञा पुं० [स०] विष्णुलोक। वैकुठ। उ०—हरिपुर गएउ परम वडभागी।—मानस, ४।२७।

हरिपैंडी—सज्ञा स्त्री० [हिं० हरि + पैंडी (= सीढी)] हरिद्वार तीर्थ मे गगा का एक विशेप घाट जहाँ के स्नान का बहुत माहात्म्य है।

हरिप्रस्थ सज्ञा पुं० [सं०] इद्रप्रस्थ।

हरिप्रिय—सज्ञा पुं० [सं०] १ कदव। २ वधूक। गुलदुपहरिया। ३ शिव (को०)। ४ शख। ५ मूर्ख आदमी। ६ पागल।

७ सनाह। बकतर। ८ खस का मूल (को०)। ६ एक प्रकार का चदन (को०)। १० एक प्रकार का बडा कद जो कोकण की ओर होता है। दे० 'विष्णुकद'।

हरिप्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] १ लक्ष्मी। २ एक मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे १२+१२+१२+१० के विराम से ४६ मात्राएँ होती हे और अत मे गुरु होता है। इसे 'चचरी' भी कहते है। उ०—पौढिये कृपानिधान देव देव रामचद्र चद्रिका समेत चद्र चित्त रैनि मोहै।—(शब्द०)। ३ तुलसी। ४ पृथ्वी। ५ मधु। ६ मद्य। ७ द्वादशी। ८ लाल चदन।

हरिप्रीता—सज्ञा स्त्री० [स०] ज्योतिष मे एक मुहूर्त का नाम। उ०—नवमी तिथि मधुमास पुनीता। सुकुल पच्छ, अभिजित, हरिप्रीता।—तुलसी (शब्द०)।

हरिवालुक—सज्ञा पुं० [स०] एक सुगधित द्रव्य। एलवालुक (को०)।

हरिबीज—सज्ञा पुं० [स०] हरताल।

हरिबोध—सज्ञा पु० [स०] विष्णु का बोधन या जागरण (को०)।

यौ०—हरिबोधदिन = देवोत्थान का दिन। हरिबोधिनी एकादशी।

हरिबोधिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] कार्तिक शुक्ल एकादशी। देवोत्थान एकादशी।

हरिभक्त—सज्ञा पु० [स०] विष्णु या भगवान् का भक्त। ईश्वर का प्रेमी। ईश्वर का भजन करनेवाला।

हरिभक्ति—सज्ञा स्त्री० [सं०] विष्णु या ईश्वर की भक्ति। ईश्वरप्रेम।

हरिभगत(पु)—सज्ञा पुं० [स० हरिभक्त] भगवान् का भक्त। भगवद्भक्त। उ०—कहहु कवन विधि भा सवादा। दोउ हरिभगत काग उरगादा।—मानस, ७।५५।

हरिभगति(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० हरिभक्ति] भगवान् की भक्ति। भगवदभक्ति। उ०—सो हरिभगति काग किमि पाई। विश्वनाथ मोहि कहहु बुझाई।—मानस, ७।५४।

हरिभद्र—सज्ञा पुं० [स०] हरिवालुक। एलवालुक (को०)।

हरिभाविणी, हरिभाविनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो हरि की भक्ति करती हो। हरि की भावना करनेवाली महिला। भगवद्भक्त स्त्री (को०)।

हरिभुज—सज्ञा पुं० [स०] वह जो मेढक खाता है। साँप। सर्प।

हरिमथ—सज्ञा पुं० [स० हरिमन्थ] १ गनियारी का पेड जिसकी लकडी रगडने से आग निकलती है। अग्निमथ। २ मटर। ३ चना। ४ एक प्रदेश का नाम।

हरिमथक—सज्ञा पुं० [स० हरिमन्थक] चणक। चना (को०)।

हरिमथज—सज्ञा पुं० [स० हरिमन्थज] १ चना। चणक। २ एक प्रकार की मूँग। काली मूँग (को०)।

हरिमदिर—सज्ञा पुं० [स० हरिमन्दिर] १ समुद्र जो विष्णु का निवास है। उ०—कजज की मति सी बडभागी। श्री हरिमदिर सौ अनुरागी।—रामच०, पृ० ६६। २ विष्णु का मदिर या देवस्थान।

हरिमणि—सज्ञा पुं० [स०] सर्प मणि।

हरिमा—सज्ञा पुं० [सं० हरिमन्] १ पीतता। पीलापन। २ पीत वर्ण। पीत राग। ३ काल। समय। ४ पाडु रोग। पीलिया (को०)।

हरिमेध—सज्ञा पुं० [सं०] १ अश्वमेध यज्ञ। २ विष्णु या नारायण का एक नाम।

हरिय—सज्ञा पुं० [सं०] पिंगल वर्ण का अश्व। पीताभ घोडा (को०)।

हरियर‡[1]—सज्ञा पुं० [अ० हरीरह्] दे० 'हरीरा'।

हरियर[2]—वि० [सं० हरिततर या हिं० हरा] दे० 'हरा'। उ०—(क) नाम भजो तो अब भजो, बहुरि भजोगे कब्ब। हरियर हरियर रूखडे, ईंधन हो गए सब्ब।—कबीर सा०, पृ० १८।

हरियराना—क्रि० अ० [हिं० हरियर] दे० 'हरिअराना'।

हरियल(पु)—वि० [हिं० हरिअर] दे० 'हरिअर'। उ०—गैल गली सब हरियल भूमि। नील सिखर चढि सूरति घूमि।—घट०, पृ० २६७।

हरिया†[1]—सज्ञा पुं० [हिं० हर (=हल) + इया (प्रत्य०)] हल जोतनेवाला। हलवाहा।

हरिया[2]—सज्ञा पुं० [सं० हरितक] हराभरापन। प्रफुल्लता। उ०—आगे आगे दौं जलै रे पीछे हरिया होय। कहत कबीर सुनो भाइ साधो हरि भज निर्मल होय।—सतबाणी०, पृ० २६।

हरियाई(पु)†—सज्ञा स्त्री० [सं० हरित + आली, प्रा० हरिय + आली, हिं० हरियाली] हरीतिमा। हरियाली। उ०—लसति लहलही जहाँ सघन सुदर हरियाई।—श्रीधर पाठक (शब्द०)।

हरियाथोथा—सज्ञा पुं० [हिं० हरा + थोथा] नीला थोथा। तूतिया।

हरियाणा†—सज्ञा पुं० [देश०] स्वतत्र भारत का एक प्रात। उ०—देसा मा देस हरियाणा। जित दूध दही का खाणा।—लोकोक्ति।

विशेष—स्वतत्र भारत का एक प्रदेश जो पहले सयुक्त पजाब का एक छोटा सा डिविजन था। सन् १९६६ की पहली नवबर को इस राज्य या प्रदेश को स्वतत्र भारत के १७वे राज्य के रूप मे मान्यता मिली।

हरियान—सज्ञा पुं० [सं०] विष्णु के वाहन, गरुड।

हरियानवी[1]—वि० [हिं० हरियाना] हरियाना प्रदेश की। जैसे,—हरियानवी बोली।

हरियानवी[2]—सज्ञा स्त्री० दे० 'हरियानी'।

हरियाना[1]—क्रि० अ० [हिं० हरा] दे० 'हरिआना'।

हरियाना[2]—सज्ञा पुं० [देश०] स्वतत्र भारत का एक प्रात। विशेष दे० 'हरियाणा'।

हरियानी—सज्ञा स्त्री० [हिं० हरियाना (एक प्रात)] हिसार, रोहतक करनाल आदि क्षेत्रो की बोली जिसे जाटू या बाँगडू भी कहते हैं।

हरियायल(पु)†—सज्ञा पुं० [देश० हारिल] एक पक्षी। दे० 'हारिल'। उ०— नहि चैन परै पल देखे बिना हरियायल ज्यो पकरी लकरी।—नट०, पृ० ३०।

हरियारी(पु)†—सज्ञा स्त्री० [सं० हरितालि, प्रा० हरियाली] दे० 'हरियाली'। उ०—नयो नेह, नयो मेह, नई भूमि हरियारी, नवल दूलह प्यारो, नवल दुलहैया।—नद० ग्र०, पृ० ३७३।

हरियाल(पु)—वि० [हिं० हरा] हरित । हरा भरा । उ०—जन दरिया गुरदेव जी, मोहि ऐसे किया निहाल । जैसे सूखी बेलडी, बरस किया हरियाल । —दरिया० बानी, पृ० ३ ।

हरियाली—संज्ञा स्त्री० [सं० हरित + आलि (= पंक्ति, समूह)] १ हरेपन का विस्तार । हरे रंग का फैलाव । २ हरे हरे पेड़ पौधों या घास का समूह या विस्तार । जैसे,—बरसात में चारों ओर हरियाली छा जाती है ।

मुहा०—हरियाली सूझना = चारों ओर आनंद ही आनंद दिखाई पड़ना । मौज की बातों की ओर ही ध्यान रहना । आनंद में मग्न रहना । जैसे,—अभी तो हरियाली सूझ रही है, जब रुपये देने पड़ेंगे, तब मालूम होगा । ३ हरा चारा जो चौपायों के सामने डाला जाता है । ४ दूर्वा । दे० 'दूब' । ५ कजली का पर्व । दे० 'हरियाली तीज' । उ०—उसी दिन से कजली अथवा 'हरियाली' की स्थापना होती ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३४६ ।

हरियाली तीज—संज्ञा स्त्री० [हिं० हरियाली + तीज] सावन बदी तीज जिसे 'कजली' भी कहते हैं ।

हरियावँ†—संज्ञा पुं० [देश०] फसल की एक बँटाई जिसमें ९ भाग असामी और ७ भाग जमींदार लेता है ।

हरियोजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र का एक नाम । २ रथ आदि में घोड़े को जोतना या नाधना [को०] ।

हरिरोमा—वि० [सं० हरिरोमन्] जिसके शरीर पर नवीन एवं सुंदर रोम हों, जो नित्यतरुण हो [को०] ।

हरिल†—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'हारिल' ।

हरिलीला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ भगवान् की लीला । ईश्वर की लीला । २ चौदह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसका स्वरूप इस प्रकार है—'साँची कही भरत बात सबै सुजान' ।—केशव (शब्द०) ।

विशेष—यदि अंतिम वर्ण लघु लें तब तो इसे अनंग छंद कह सकते हैं, पर यदि अंतिम लघु वर्ण को गुरु के स्थान पर मानें तो यह प्रसिद्ध वसंततिलका वृत्त ही है । केशव ने ही इसका यह नाम दिया है ।

हरिलोक—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णुलोक । वैकुंठ ।

हरिलोचन¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ केकड़ा । २ उलूक । उल्लू । ३ एक रोग ग्रह [को०] ।

हरिलोचन²—वि० भूरी आँखोंवाला । पिंगाक्ष [को०] ।

हरिलोमा—वि० [सं० हरिलोमन्] जिसके केश पिंगलवर्ण के हों । पिंगलकेश [को०] ।

हरिवंश—संज्ञा पुं० [सं०] १ कृष्ण का कुल । २ एक ग्रंथ जो महाभारत का परिशिष्ट माना जाता है और जिसमें कृष्ण तथा उनके कुल के यादवों का सविस्तार वृत्तांत दिया गया है । संतानप्राप्ति के लिये इसका श्रवण विधिपूर्वक किया जाता है । ३ कपि या बंदरों का वंश [को०] ।

हरिव—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक बड़ी संख्या [को०] ।

हरिवर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] जंबू द्वीप के नौ खंडों में से एक खंड का नाम ।

विशेष—इसकी स्थिति निषध और हेमकूट पर्वत के मध्य में कही गई है । यहाँ भगवान् नरहरि रूप में स्थित माने गए हैं ।

हरिवल्लभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लक्ष्मी । २ तुलसी । ३. अधिक मास की कृष्णा एकादशी । ४ जया । नाम का पौधा (को०) ।

हरिवालुक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हरिवालुक' [को०] ।

हरिवास¹—संज्ञा पुं० [सं०] अश्वत्थ । पीपल ।

हरिवास²—वि० पीला वस्त्र धारण करनेवाला । पीतांबरधारी (विष्णु) ।

हरिवासर—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य का दिन । रविवार । २ विष्णु का दिन । एकादशी ।

हरिवासुक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हरिवालुक' [को०] ।

हरिवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] १ गरुड़ । २ सूर्य का एक नाम । ३ इंद्र का एक नाम ।

यौ०—हरिवाहन दिशा = पूर्वदिक् । पूर्व दिशा ।

हरिबीज—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हरिबीज' [को०] ।

हरिवृष—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हरिवर्ष' [को०] ।

हरिशंकर—संज्ञा पुं० [सं० हरिशङ्कर] १ विष्णु और शिव । २ एक रसौषध जो पारे और अभ्रक के योग से बनती है और प्रमेह में दी जाती है ।

विशेष—शुद्ध पारे और अभ्रक को लेकर सात दिन तक आँवले के रस में घोटते हैं, फिर सुखाकर एक रत्ती की मात्रा में देते हैं ।

हरिशयन—संज्ञा पुं० [सं०] हरि का शयन । विष्णु का शयन करना ।

हरिशयनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] आषाढ़ शुक्ल एकादशी ।

विशेष—पुराणों के अनुसार इस दिन विष्णु भगवान् शेष की शय्या पर सोते हैं और फिर कार्तिक की प्रबोधिनी एकादशी को उठते हैं ।

हरिशर—संज्ञा पुं० [सं०] शिव । महादेव ।

विशेष—त्रिपुरविनाश के समय शिव ने विष्णु भगवान् को अपने धनुष का बाण बनाया था, इसी से इनका यह नाम पड़ा है ।

हरिश्चंद्र¹—वि० [सं० हरिश्चन्द्र] सोने की सी चमकवाला । स्वर्णाभ । (वैदिक) ।

हरिश्चंद्र²—संज्ञा पुं० सूर्यवंश का अट्ठाईसवाँ राजा जो त्रिशंकु का पुत्र था ।

विशेष—पुराणों में ये बड़े ही दानी और सत्यव्रती प्रसिद्ध हैं । मार्कंडेय पुराण में इनकी कथा विस्तार से आई है । इंद्र ने ईर्ष्यावश विश्वामित्र को इनकी परीक्षा के लिये भेजा । विश्वामित्र ने इनसे सारी पृथ्वी दान में ली और फिर ऊपर से दक्षिणा माँगने लगे । अंत में राजा ने रानी सहित अपने

को बेचकर ऋषि की दक्षिणा चुकाई। वे काशी मे डोम के सेवक होकर श्मशान पर मुर्दा लानेवालो से कर वसूल करने लगे। एक दिन उनकी रानी ही अपने मृत पुत्र को श्मशान मे लेकर आई। उसके पास कर देने के लिये कुछ भी द्रव्य नही था। राजा ने उससे भी कर नही छोडा और आधा कफन फडवाया। इसपर भगवान् ने प्रकट होकर उनके पुत्र को जिला दिया और अत मे अयोध्या की प्रजा सहित सबको वैकुठ भेज दिया। महाभारत मे राजसूय यज्ञ करके राजा हरिश्चद्र का स्वर्ग प्राप्त करना लिखा है। ऐतरेय ब्राह्मण मे 'शुन शेप' की गाथा के प्रसग म भी हरिश्चद्र का नाम आया है, पर वहाँ कथा दूसरे ढग की है। उसमे हरिश्चद्र इक्ष्वाकु वश के राजा वेधस् के पुत्र कहे गए है। गाथा इस प्रकार है—नारद के उपदेश से राजा ने पुत्र की कामना करके वरुण से यह प्रतिज्ञा की कि जो पुत्र होगा, उसे वरुण को भेंट करूँगा। वरुण के वर से जब राजा को पुत्र हुआ, तब उसका नाम उन्होने रोहित रखा। जब वरुण पुत्र माँगने लगे, तब राजा बराबर टालते गए। जब रोहित बडा होकर शस्त्र धारण के योग्य हुआ, तब वह मरना स्वीकार न कर जगल मे निकल गया और इद्र के उपदेशानुसार इधर उधर फिरता रहा। अत मे वह अजीगत नामक एक ऋषि के आश्रम पर पहुँचा और उनसे सौ गायो के बदले मे शुन शेप नामक उनके मझले पुत्र को लेकर अपने पिता के पास आया जिन्हें वरुण के कोप से जलोदर रोग हो गया था। शुन शेप को यज्ञ मे बलि देने के लिये जब सब तैयारियाँ हो चुकी, तब शुन शेप अपने छुटकारे के लिये सब देवताओ की स्तुति करने लगा। अत मे इद्र के उपदेश से उसने अश्विनीकुमार का स्मरण किया जिससे उसके बधन कट गए और रोहित के पिता हरिश्चद्र का जलोदर रोग भी दूर हो गया। जब शुन शेप मुक्त होकर अपने पिता के साथ न गया, तब विश्वामित्र ने उसे अपना बडा पुत्र बनाया।

हरिश्मश्रु—सज्ञा पुं० [सं०] हिरण्याक्ष दैत्य के नौ पुत्रो मे से एक जो ब्रह्मकल्प मे परावसु गधर्व के नौ पुत्रो मे से एक था।

हरिष(पु)—सज्ञा पुं० [सं० हृष] प्रसन्नता। आनद। दे० 'हर्ष'। उ०—सपति विपति नही मैं मेरा हरिष सोक दोइ नाही।—दादू०, पृ० ५६४।

हरिषेण—सज्ञा पुं० [सं०] विष्णु पुराण के अनसार दसवें मनु के पुत्रो मे से एक। २ जैन पुराणो के अनुसार भारत के दस चक्रवर्तियो मे से एक। ३ एक प्राचीन भट्ट या कवि का नाम जिसने गुप्तवशीय सम्राट् समुद्रगुप्त की वह प्रशस्ति लिखी थी जो प्रयाग के किले मे भीतर के खभे पर है।

हरिसकरी—सज्ञा स्त्री० [सं० हरिशङ्करी] १ विष्णु और शिव की सम्मिलित स्तुति। उ०—रुचिर हरिसकरी नाम मत्रावली द्वद्व दुख हरनि आनदखानी।—तुलसी ग्र०, पृ०४८१। २ देवी की एक मूर्ति।

हरिसकीर्तन—सज्ञा पुं० [सं० हरिसङ्कीर्तन] विष्णु के नामो का सस्वर बार बार कीर्तन। भगवान् के नामो का बार बार सस्वर कथन।

हरिस—सज्ञा स्त्री० [सं० हलीषा] हल का वह लबा लट्ठा जिसके एक छोर पर फालवाली लकडी आडी जुडी रहती है और दूसरे छोर पर जूवा अटकाया जाता है। ईषा।

हरिसख—सज्ञा पुं० [सं०] एक गधर्व का नाम।

हरिसा(पु)†—सज्ञा पुं० [सं० हलीषा] दे० 'हरिस'। उ०—काँध जुआठे रसरी लाए हरिसा बना सुडवरा।—सत० दरिया, पृ० १४३।

हरिसिंगार—सज्ञा पुं० [सं० हार + शृङ्गार] एक पुष्पवृक्ष। परजाता। विशेष दे० 'हरसिंगार'।

हरिसिद्धि—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी का नाम।

हरिसुत—सज्ञा पुं० [सं०] १ श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न। २ इद्र के अश से उत्पन्न अर्जुन। ३ जैन मतानुसार भारत के दशम चक्रवर्ती।

हरिसूनु—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हरिसुत' [को०]।

हरिसौरभ—सज्ञा पुं० [सं०] मृगमद। कस्तूरी [को०]।

हरिहय—सज्ञा पुं० [सं०] १ इद्र। शक्र। २ सूर्य। ३ गणेश। ४ इद्र का अश्व [को०]।

हरिहर—सज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु और शिव का सयुक्त रूप। हरेश्वर। २ एक नदी का नाम [को०]।

हरिहर क्षेत्र—सज्ञा पुं० [सं०] बिहार मे सोन नदी के किनारे पर स्थित एक तीर्थस्थान।

विशेष—यहाँ कातिक पूर्णिमा को गगास्नान और बडा भारी मेला होता है। यह मेला पद्रह दिन तक रहता है और बहुत दूर दूर से यहाँ दूकानें आती है। हाथी, घोडे आदि जानवर भी बिकने के लिये आते है।

हरिहरात्मक¹—सज्ञा पुं० [सं०] १ गरुड का एक नाम। २ शिव का वाहन, वृषभ [को०]।

हरिहरात्मक²—वि० जिसमे हरि (विष्णु) और हर (शिव) दोनो सयुक्त हो।

हरिहाई(पु)¹—वि० स्त्री० [हिं०] दे० 'हरहाई'।

हरिहाई²—सज्ञा स्त्री० हरहाईपन। परेशान करने की आदत।

हरिहित—सज्ञा पुं० [सं०] बीरबहूटी। इद्रवधू। उ०—स्याम सरीर रुचिर स्रमसीकर सोनितकन बिच बीच मनोहर। जनु खद्योत निकर हरिहित गन भ्राजत मरकत सैल सिखर पर।—तुलसी ग्र०, पृ० ४००।

हरी¹—वि० स्त्री० [हिं० 'हरा' का स्त्री०] हरित। सब्ज।

हरी²—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक वृत्त का नाम जिसमे १४ वर्ण होते हैं तथा जिसके प्रत्येक चरण मे जगण, रगण, जगण, रगण, और अत मे लघु गुरु होते है। इसे 'अनद' भी कहते है। २ कश्यप की क्रोधवशा नाम की पत्नी के गर्भ से उत्पन्न दस कन्याओ मे से एक जिससे सिह, बदर आदि पैदा हुए थे।

हरी(पु)†³—सज्ञा स्त्री० [हिं० हर (=हल)] जमीदार के खेत की जुताई मे असामियो का हल बैल देकर या काम करके सहायता करना।

हरी[४]—संज्ञा पुं० [सं० हरि] दे० 'हरि'।

हरी कसीस—संज्ञा स्त्री० [हिं० हीरा + कसीस] दे० 'हीरा कसीस'।

हरीकेन—संज्ञा पुं० [अं०] १ एक प्रकार की लालटेन जिसकी बत्ती मे हवा का झोका आदि नही लगता। २ बवडर। अधवायु। महावात [को०]।

हरी चाह—संज्ञा स्त्री० [हिं० हरी + चाह] १ एक प्रकार की घास जिसकी जड मे नीबू की सी सुगन्ध होती है। गध तृण। २ एक प्रकार की चाय जिसकी पत्तियाँ हरी होती है।

हरीचुग†—संज्ञा पुं० [हिं० हरी (= हरियाली) + चुगना] वह जो केवल अच्छे समय मे साथ दे। सपन्न अवस्था मे साथ देनेवाला।

हरीछाल केला—संज्ञा पुं० [हिं०] बवइया केला जिसकी छाल हरी होती है और पकने पर भी उसका रग नही बदलता। विशेष दे० 'केला'।

हरीत—संज्ञा पुं० [सं० हारीत] दे० 'हारीत'।

हरीतकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] हड। हर्रे।

हरीतक्यादि क्वाथ—संज्ञा पुं० [सं०] हड के प्रधान योग से बना हुआ एक प्रकार का काढ़ा।

विशेष—हड का छिलका, अमलतास का गूदा, गोखरू, पखानभेद, धमासा और अडूसा इन सब का चूर्ण लेकर पानी मे काढा उतारा जाता है। यह मूत्रकृच्छ्र और वधकुष्ठ रोग मे दिया जाता है।

हरीतिमा—संज्ञा स्त्री० [हिं० हरा, हरी] हरियाली। हरापन।

हरीफ—संज्ञा पुं० [अ० हरीफ] १ दुश्मन। शत्रु। २ प्रतिद्वद्वी। प्रतिस्पर्धी। विरोधी। उ०—दास पलटू अहै हरीफ पक्का।—पलटू०, पृ० ८। ३ एक ही नायिका के दो प्रेमी। रकीब (को०)।

हरीम—संज्ञा पुं० [अ०] १ घर की चहारदिवारी या प्राचीर। २ घर। मकान [को०]।

हरीर—संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का अत्यत बारीक रेशमी कपडा [को०]।

हरीरा[१]—संज्ञा पुं० [अ० हरीरह्] एक प्रकार का पेय पदार्थ जो दूध मे सूजी, चीनी और इलायची आदि मसाले और मेवे डालकर औटाने से बनता है। यह अधिकतर प्रसूता स्त्रियो को दिया जाता है।

हरीरा(पु)[२]—वि० [हिं० हरिअर] [स्त्री० हरीरी] १ हरा। सब्ज। २ हर्षित। प्रसन्न। प्रफुल्ल।

हरीरी[१]—संज्ञा स्त्री० [अ० हरीरह्] दे० 'हरीरा'[१]।

हरीरी[२]—वि० स्त्री० [हिं० हरियर] १ दे० 'हरीरा'। २. हर्षित। प्रसन्न। उ०—छन होत हरीरी मही को लखे, छन जोवति है छनजोति छटा। अवलोकति इद्र वधू की पँत्यारी, बिलोकति है छिन कारी घटा।—कोई कवि (शब्द०)।

हरील†—संज्ञा पुं० [हिं०] एक पक्षी। दे० 'हारिल'।

हरीश[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ बंदरो के राजा। २ हनुमान। ३ सुग्रीव।

हरीश[२]—संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार का पतला कीडा। कनसलाई [को०]।

हरीष(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० हर्ष०] दे० 'हर्ष'।

हरीषना(पु)†—क्रि० अ० [सं० हर्ष] हर्षित होना। आनदित होना। उ०—सुकन सुणी हरीष्यो मन माँहि।—बी० रासो०, पृ० ६०।

हरीषा—सं० स्त्री० [सं०] एक प्रकार का सामिष व्यजन [को०]।

हरीस[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० हलीषा] हल का वह लबा लट्ठा जिसके एक छोर पर फालवाली लकडी आडे बल जडी रहती है और दूसरे छोर पर जूआ लगाया जाता है। हरिस।

हरीस[२]—वि० [अ०] लालची। लिप्सु। लोभी।

हरुआ(पु)†—वि० [सं० लघुक, पा० लहुअ, विपर्यय 'हलुअ'] [वि० स्त्री० हरुई] जो भारी न हो। जिसमे गुरुत्व न हो। हलका। (क) निज जडता लोगन्ह पर डारी। होहि हरुअ रघुपतिहि निहारी।—मानस, १।२५८। (ख) सोन नदी अस पिउ मोर गरुआ। पाहन होइ परै जो हरुआ।—जायसी (शब्द०)।

हरुआई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० हरुआ + ई (प्रत्य०)] १ हलकापन। उ० देह बिसाल परम हरुआई। मदिर ते मदिर चढ धाई।—मानस, ५।२६। २ फुरती। शीघ्रता।

हरुआना†—क्रि० अ० [हिं० हरुआ + ना (प्रत्य०)] १ हलका होना। लघु होना। २. फुरती करना। जल्दी करना। उ०—कर धनु लै किन चदहि मारि। तू हरुआय जाय मदिर चढि ससि सम्मुख दर्पन विस्तारि। याही भाँति बुलाय, मुकुर महि अति बल खड खड करि डारि।—सूर (शब्द०)।

हरुई†—वि० स्त्री० [हिं० हरुआ का स्त्री०] दे० 'हरुआ'।

हरुए(पु)†—क्रि० वि० [हिं० हरुआ] १ धीरे धीरे। आहिस्ता से। २ इस प्रकार जिसमे आहट न मिले। हलकेपन से। चुपचाप। उ०—(क) ना जानौ कित ते हरुए हरि आय मूँदि दिए नैन।—सूर (शब्द०)। (ख) आपहि तें तजि मान तिया हरुए हरुए गरबै लगि जैहै।—पदमाकर (शब्द०)।

हरुण—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध मतानुसार एक बहुत बडी सख्या।

हरुवा†—वि० [सं० लघुक] दे० 'हरुआ'। उ०—कीन्हेसि जो अति गिरवर गरुवा। चहइ तो करै तृणहु से हरुवा।—चित्रा०, पृ० २।

हरू(पु)†—वि० [सं० लघु] दे० 'हरुअ'। उ०—कचन देके काँच बिसाहै, हरू गरू नहि तौलै।—कबीर शा०, भा० ४, पृ० २४।

यौ०—हरू गरू = हलका और वजनी।

हरूफ—संज्ञा पुं० [अ० हरूफ] हरफ का बहुवचन। अक्षर। वर्ण। हरफ।

हरें(पु)†—क्रि० वि० [हिं० हरुए] आहिस्ता। धीरे।

यौ०—हरें हरें = धीरे धीरे। शनैं शनैं।

हरे[१]—संज्ञा पुं० [सं०] 'हरि' शब्द का सबोधन का रूप। उ०—(क) जय राम सदा सुखधाम हरे। रघुनायक सायक चाप धरे।—

मानस, ६।११०। (ख) हति नाथ अनाथन्ह पाहि हरे। विषया बन पामर भूलि परे।—मानस, ७।१४।

हरे(पु)[2]—क्रि० वि०[हि० हरुए]१ धीरे से। आहिस्ता से। तेजी के साथ नही। मद मद। उ०—लाज के साज धरेई रहे तव नैनन लै मन ही सो मिलाए। कैसी करौ अब क्यो निकसै री हरेई हरे हिय मे हरि आए।—केशव (शब्द०)। २ जो ऊँचा या जोर का न हो। जो तीव्र न हो (ध्वनि, शब्द आदि)। उ०—दूरि तें दौरत, देव, गए सुनि के धुनि रोस महा चित चीन्हो। सग की औरें उठी हँसि कै तव हेरि हरे हरि जू हँसि दीन्हो।—देव (शब्द०)। ३ जो कठोर या तीव्र न हो। हलका। कोमल। (आघात, स्पर्श आदि)।

यौ०—हरे हरे = धीरे धीरे। उ०—रोस दरसाय वाल हरि तन हेरि हेरि फूल की छरी सो खरी मारती हरे हरे।—(शब्द०)।

हरेई(पु)—सज्ञा पुं० [?] घोडो की एक जाति। उ०—हसा हरेई वाजि। ती तुरिय तावी साजि।—ह० रासो, पृ० ३२५।

हरेक—वि० [फा० हर + एक] प्रत्येक । हरएक।

हरेणु[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ मटर। २ बाड जो ग्राम आदि का हद बाँधने के लिये लगाई जाय। ३ लका का एक नाम (को०)।

हरेणु[2]—सज्ञा स्त्री० १ समाननीय स्त्री। कुलस्त्री। २ हरिणी जो ताम्र वर्ण की हो। ताँबे के रग की मृगी। ३ एक सुगधित वस्तु। रेणुका नामक गधद्रव्य [को०]।

हरेणुक—सज्ञा पुं० [स०] मटर। मटर [को०]।

हरेना†—सज्ञा पुं० [हि० हरा] वह विशेष प्रकार का चारा जो व्यानेवाली गाय को दिया जाता है।

हरेरा†—वि० [हि० हरा + एरा (प्रत्य०)] दे० 'हरा', 'हरिअर'।

हरेरी†—वि० [हि० हरा] दे० 'हरिअरी'।

हरेव—सज्ञा पुं० [देश०] १ मगोलो का देश। २ मगोल जाति। उ०—पछिउँ हरेव दीन्हि जो पीठी। सो पुनि फिरा सौंह कै दीठी।—जायसी (शब्द०)।

हरेवा—सज्ञा पुं० [हि० हरा] हरे रग की एक चिडिया। हरी बुलबुल। उ०— पचै वाग उठ्ठे चुटक्के हरेव। मनौ मडिय मौज केकी परेव।—पृ० रा०, १२।१७५।

विशेष—इस पक्षी की चोच काली, पैर पीले और लवाई १४ या १५ अगुल होती है। यह युक्तप्रात, मध्यप्रदेश और वगाल मे पाई जाती है। यह पेड की जड और रेशो से कटोरे के आकार का घोसला बनाती और दो अडे देती है। यह बहुत अच्छा वोलती है, इससे इसे 'हरी बुलबुल' भी कहते है।

हरैं(पु)—क्रि० वि० [हि० हरुए] दे० 'हरे'।

हरैना—सज्ञा पुं० [हि० हर(= हल)ऐना (प्रत्य०) [वि० स्त्री० अल्पा० हरैनी] १ वह टेढी गावदुम लकडी जो हल के लट्ठे (हरिस) के एक छोर पर आडे वल मे लगी रहती है और जिसमे लोहे का फाल ठोका रहता है। २ वैलगाडी के सामने की ओर निकली हुई लकडी।

हरैनी—सज्ञा स्त्री० [हि० हर = हल] दे० 'हरैना'।

हरैया(पु)—सज्ञा पुं० [हि० हरना] हरनेवाला। दूर करनेवाला। उ०—दसरत्थ के नद है दुख हरैया।—तुलसी (शब्द०)।

हरोना—सज्ञा पु० [हि० हरा + ओना] एक प्रकार की अरहर जो रायपुर जिले मे बहुत होती है।

हरोल—सज्ञा पु० [तु० हरावल] दे० 'हरावल' उ०—प्रेम है हरोल आगे आवन सवन के जू भागे छल यूथ सील वल सो भगायो है।—दीन० ग्र०, पृ० १३४।

हरौती—सज्ञा स्त्री० [हि० हरा + औती (प्रत्य०)] एक प्रकार की छडी। हरी लकडी की छडी। उ०—हाथ मे हरौती की पतली सी छडी, आँखो मे सुरमा, मुँह मे पान, मेहदी लगी हुई लाल दाढी, जिसकी सफेद जड दिखलाई पड रही थी।—इद्र०, पृ० ६५।

हरौल—सज्ञा पुं० [तु० हरावल] दे० 'हरावल'। उ०—जुरे दुहुन के दृग भमकि रुके न भीने चीर। हलकी फौज हरौल ज्यो परत गोल पर भीर।—विहारी (शब्द०)।

हर्कत—सज्ञा स्त्री० [अ० हरकत] दे० 'हरकत'।

हर्गिज—अव्य० [फा० हरगिज] दे० 'हरगिज'। उ०—मिलो जब गाँव भर से, वात कहना, बात सुनना, भल कर मेरा, न हर्गिज नाम लेना।—ठडा०, पृ० १८।

हर्ज—सज्ञा पुं० [अ०] १ काम मे रुकावट। बाधा। अडचन। जैसे,—नौकर के न रहने से वडा हर्ज हो रहा है। २ हानि। नुकसान। जैसे—इनके यहाँ रहने से आपका क्या हर्ज है।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

हर्जा[1]—सज्ञा पु० [फा० हर्जह्] तावान। क्षतिपूर्ति। हरजाना [को०]।

हर्जा[2]—सज्ञा पुं० [फा० हर्जह्] व्यर्थ। अनर्गल। वेहूदा।

हर्जा[3]—सज्ञा पु० [अ० हर्ज] दे० 'हज', 'हरज'।

हर्जाना—सज्ञा पु० [फा० हर्जानह्] दे० 'हरजाना'।

हर्तव्य—वि० [स०] हरण करने लायक [को०]।

हर्ता—सज्ञा पुं० [स० हर्तृ] [सज्ञा स्त्री० हर्त्री]। १ हरण करनेवाला। २ नाश करनेवाला। ३ काटकर अलग करनेवाला। विच्छिन्न करनेवाला। ४ तस्कर। चोर (को०)। ५ डकैत। डाकू (को०)। ६ सूर्य (को०)। ७ वह जो कर लगाए। राजा (को०)।

हर्तार—सज्ञा पुं० [सं० हर्तार] हरण करनेवाला। हर्ता।

हर्तु—सज्ञा पुं० [स०] १ मरण। मृत्यु। २ गाढ अनुराग। [को०]।

हर्तृ—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'हर्ता' [को०।

हर्द—सज्ञा पुं० [सं० हरिद्रा] दे० 'हलदी'।

हर्दी—सज्ञा स्त्री० [स० हरिद्रा] दे० 'हलदी'।

हर्फ—सज्ञा पुं० [अ० हर्फ] दे० 'हरफ'।

हर्ब—सज्ञा पुं० [अ०] युद्ध। लडाई। सग्राम [को०]।

यौ०—हर्वगाह = युद्धस्थल। लडाई का मैदान।

हर्वा—सज्ञा पुं० [अ० हरवह्] दे० 'हरवा'।

हर्म—संज्ञा पुं० [सं० हर्मन्] जृंभा । जँभाई [को०] ।

हर्मिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी स्तूप पर बना हुआ ग्रीष्मभवन [को०] ।

हर्मित—वि० [सं०] १ फेंका हुआ । क्षिप्त । २ छोडा हुआ । डाला हुआ । ३ भेजा हुआ । प्रेषित । ४ जलाया हुआ [को०] ।

हर्मुट—संज्ञा पुं० [सं०] १ कछुआ । कच्छप । २ सूर्य [को०] ।

हर्म्य संज्ञा पुं० [स्त्री०] १ राजभवन । महल । प्रासाद । २ बडा भारी मकान । हवेली । ३ नरक । ४ यंत्रणागृह (को०) । ५ अग्निकुड । ६ तदूर । अँगीठी (को०) ।

हर्म्यगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] राजप्रासाद का अत पुर । उ०—'तालाव होते थे और खुली छत की इमारतें भी होती थीं शिविकागर्भ, नलिकागर्भ और हर्म्यगर्भ—हिं० पु० स० पृ० २८८ ।

हर्म्यचर—वि० [सं०] प्रासाद या हर्म्य मे रहनेवाला । बडी कोठी या हवेली मे रहनेवाला [को०] ।

हर्म्यतल—संज्ञा पुं० [सं०] प्रासाद की ऊपरी मजिल या छत [को०] ।

हर्म्यपृष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] मकान की पाटन या छत । दे० 'हर्म्यतल' ।

हर्म्यवलभी—संज्ञा स्त्री० दे० 'हर्म्यतल' [को०] ।

हर्म्यभाज्—वि० [सं०] प्रासाद मे रहनेवाला [को०] ।

हर्म्यस्थ—वि० [सं०] जो हर्म्य मे वर्तमान हो ।

हर्म्यस्थल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हर्म्यतल' ।

हर्यंककुल—वि० [सं० हर्यङ्ककुल] जिसका प्रतीक सिंह हो उस कुल अर्थात् सूर्य वश मे उत्पन्न होनेवाला [को०] ।

हर्यक्ष¹—वि० [सं०] भूरी आँखोवाला [को०] ।

हर्यक्ष²—संज्ञा पुं० १ सिंह । शेर । २ सिंह राशि । ३ वदर । ४ कुबेर । ५ रोग उत्पन्न करनेवाला दैत्य । ६ एक असुर । ७ पृथु के एक पुत्र । ८ शिव का एक नाम [को०] ।

हर्यत—संज्ञा पुं० [सं०] १ अश्व । घोडा । २ अश्वमेध यज्ञ के उपयुक्त अश्व । ३ यज्ञ [को०]

हर्यश्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र का घोडा । २ शिव । ३ रुद्र [को०] ।

यौ०—हर्यश्वचाप, हर्यश्वधनु = इंद्रचाप । इंद्रधनुष ।

हर्या(पु)†—वि० [हिं० हरा] दे० 'हरा' । उ०—जमी के तले यक ठरा कर मकान, हर्या उस तले एक पत्थर अहे जान । —दक्खिनी०, पृ० ३३६ ।

हर्यात्मा—संज्ञा पुं० [सं० हर्यात्मन्] व्यास का एक नाम [को०] ।

हरयारी(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० हरा, हरियर] दे० 'हरियाली' । उ०—चोप हरयारी हिलमिल बाढी । पावस निज सपति है काढी । —घनानद, पृ० ३६० ।

हर्र—संज्ञा स्त्री० [हिं०] हड । दे० 'हर्रे' ।

हर्रा—संज्ञा पुं० [सं० हरीतकी] बडी जाति की हड जिसका उपयोग त्रिफला मे होता है और जो रँगाई के काम मे आती है । विशेष दे० 'हर्रे', 'हड' ।

मुहा०—हर्रा कदम मे = रास्ते मे मैला या गोबर है । (पालकी के कहार) । हर्रा लगे न फिटकरी और रग चोखा होय = बिना किसी प्रयास या व्यय के कोई कार्य बन जाना । उ०—अत 'हर्रा लगे न फिटकरी और रग चोखा होय' वाली कहावत...' ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २१७ ।

हर्रे—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'हड' ।

हर्रैया—संज्ञा स्त्री० [हिं० हर्रे] १ हाथ मे पहनने का एक गहना जिसमे हड के से सोने या चाँदी के दाने पाट मे गुथे रहते हैं । २. माला या कठे के दोनों छोरों पर का चिपटा दाना जिसके आगे सुराही होती है ।

हर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रफुल्लता या भय आदि के कारण रोंगटों का खडा होना । २. प्रफुल्लता । आनद । चित्तप्रसादन खुशी ।

क्रि० प्र०—करना ।—मनाना ।—होना ।

३ ३३ सचारी भावों मे से एक का नाम ।

विशेष—साहित्य मे 'हर्ष' की गिनती सचारी भावों मे की गई है ।

३ धर्म के पुत्रों मे से एक । ४ भागवत के अनुसार कृष्ण के एक पुत्र का नाम । ५ काम के वेग से इंद्रिय का उत्तेजित होना । कामोत्तेजना । कामोद्दीपन (को०) । ५ तीव्र आकाक्षा । उत्कट इच्छा (को०) । ६ एक दैत्य का नाम । ७ कान्यकुब्ज के एक नरेश का नाम । दे० 'हर्षवर्धन' ।

यौ०—हर्षविषाद = खुशी और रज ।

हर्षक¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ चित्रगुप्त के एक पुत्र का नाम । २ मगध के शिशुनाक वश का एक प्राचीन राजा ।

हर्षक²—वि० [वि० स्त्री० हर्षका, हर्षिका] हर्ष प्रदान करनेवाला । आनददायक ।

हर्षकर—वि० [सं०] खुश करनेवाला । आनद देनेवाला । हर्षकारक ।

हर्षकारक—वि० [सं०] दे० 'हर्षकर' ।

हर्षकीलक—संज्ञा पुं० [सं०] कामशास्त्र मे वर्णित एक प्रकार के आसन का नाम ।

हर्षगद्गद्—वि० [सं०] जिसकी वाणी आनद के कारण कंपित हो (को०) ।

हर्षगर्भ—वि० [सं०] प्रसन्न । खुश । आनदित [को०] ।

हर्षचरित—संज्ञा पुं० [सं०] बाण कवि का रचित एक प्रसिद्ध गद्य-काव्य जिसमे उनके आश्रयदाता कान्यकुब्जाधिपति सम्राट् हर्षवर्धन का वृत्तात है ।

हर्षचल—वि० [सं०] हर्षातिरेक से चचल या कंपित ।

हर्षज¹—वि० [सं०] जो हर्ष के कारण उत्पन्न हो ।

हर्षज²—संज्ञा पुं० शुक्र । वीर्य [को०] ।

हर्षण¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रफुल्लता या भय मे रोंगटों का खडा होना । जैसे,—लोमहर्षण । २. प्रफुल्लित करना या होना । ३ कामदेव के पाँच बाणों मे से एक । ४ आँख का एक रोग । ५. एक प्रकार का श्राद्ध । ६ फलित ज्योतिष मे विष्कभ आदि

२७ योगो मे से एक योग । ७ काम के वेग से इद्रिय का तनाव । ८ श्राद्ध के देवता । श्राद्धदेव (को०) । ९ आनद । हर्ष । प्रसन्नता (को०) । १० सेना या दल का उत्साह बढाना । ११ अस्त्र का एक सहार ।

हर्षण[2]—वि० [वि० स्त्री० हर्षणा, हर्षणी] १ प्रफुल्लताकारक । आनद देनेवाला । २ रोमाचित करनेवाला [को०] ।

हर्षणीय—वि० [सं०] हर्षप्रद । आनददायक [को०] ।

हर्षद—वि० [सं०] आनददायक ।

हर्षदान—सज्ञा पुं० [सं०] प्रसन्नतापूर्वक दिया हुआ दान [को०] ।

हर्षदोहल—सज्ञा पुं० [स०] वासनात्मक इच्छा । कामेच्छा [को०] ।

हर्षधारिका—सज्ञा स्त्री० [स०] सगीत मे एक ताल जो चौदह प्रकार के तालो मे से एक है ।

हर्षध्वनि—सज्ञा स्त्री० [स०] उल्लास, आनद आदि के कारण की जानेवाली आवाज [को०] ।

हर्षना ⓟ—क्रि० अ० [सं० हर्षण] प्रफुल्लित होना । खुश होना । प्रसन्न होना । उ०—लखि प्रतीति मन मँह भइय, हर्ष महिमा मीर ।—ह० रासो, पृ० ५० ।

हर्षनाद—सज्ञा पु० [स०] दे० 'हर्षध्वनि' ।

हर्षनिष्वनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] सगीत मे एक प्रकार की रागिनी का नाम ।

हर्षनि स्वन, हर्षनिस्वन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हर्षध्वनि' [को०] ।

हर्षपुरी—सज्ञा स्त्री० [स०] सगीत मे एक राग ।

हर्षप्रद—वि० [स०] हर्षित करनेवाला । आनददायक ।

हर्षभाक्—वि० [सं० हर्षभाज्] आनद का भागी । खुश । प्रसन्न ।

हर्षमाण—वि० [स०] प्रसन्न । हर्षित । खुश [को०] ।

हर्षयित्नु[1]—वि० [सं०] आनददायक [को०] ।

हर्षयित्नु[2]—सज्ञा पुं० १ सोना । सुवर्ण । २ पुत्र । सतान [को०] ।

हर्षवर्द्धन, हर्षवर्धन—सज्ञा पुं० [सं०] भारत का वैस क्षत्रिय वशीय एक समाट जिसकी सभा मे बाण कवि रहते थे ।

विशेष—हर्षचरित नामक ग्रथ बाणकवि ने इनके जीवन पर लिखा है । यह बौद्ध था और इसका राज्य विक्रम की सातवी शताब्दी मे था । प्रसिद्ध चीनी यात्री हुएन्साग इसी के समय मे भारतवर्ष मे आया था ।

हर्षविवर्धन—वि० [सं०] हर्ष, आनद, प्रसन्नता आदि की वृद्धि करनेवाला [को०] ।

हर्षविह्वल—वि० [सं०] आनदातिरेक मे निमग्न । आनदमग्न [को०] ।

हर्षसपुट—सज्ञा पुं० [सं० हर्षसम्पुट] एक रतिबध [को०] ।

हर्षसमन्वित—वि० [सं०] दे० 'हर्षान्वित' ।

हर्षस्वन—सज्ञा पुं० [सं०] आनद की ध्वनि । दे० 'हर्षध्वनि' [को०] ।

हर्षाकुल—वि० [सं०] हर्ष से आकुल । आनदमग्न [को०] ।

हर्षातिरेक, हर्षातिशय—सज्ञा पुं० [सं०] आनदातिरेक । हर्ष की अधिकता । [को०] ।

हर्षाना ⓟ[1]—क्रि० अ० [स० हर्ष + हिं० आना (प्रत्य०)] आनदित होना । प्रसन्न होना । प्रफुल्ल होना ।

हर्षाना[2]—क्रि० स० हर्षित करना । आनदित करना ।

हर्षान्वित—वि० [सं०] प्रसन्न । खुश [को०] ।

हर्षाविष्ट—वि० [स०] हर्षयुक्त । प्रसन्न । आनदित [को०] ।

हर्षाश्रु—सज्ञा पुं० [स०] हर्ष से उत्पन्न आँसू । आनन्दाश्रु [को०] ।

हर्षिणी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह वस्तु जिसके ग्रहण से आनद की अनुभूति हो । २ विजया । सिद्धि । भाँग [को०] ।

हर्षित[1]—वि० [स०] १ आनदित । प्रसन्न । प्रफुल्ल । खुश । २ जो प्रसन्न किया गया हो (को०) । ३ रोमाचयुक्त । रोमाचित (को०) ।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

हर्षित[2]—सज्ञा पु० आनद । आह्लाद [को०] ।

हर्षी—वि० [स० हर्षिन्] १ आनदित । खुश । प्रसन्न । हर्षित । २ आनदकारक । प्रसन्न करनेवाला [को०] ।

हर्षीका—सज्ञा स्त्री० [स०] एक वृत्त का नाम [को०] ।

हर्षुल[1]—वि० [स०] हर्षित रहनेवाला । खुशमिजाज ।

हर्षुल[2]—सज्ञा पुं० १ प्रेमी । नायक । प्रियतम । २ हिरन । मृग । ३ एक बुद्ध का नाम ।

हर्षुला—सज्ञा स्त्री० [सं०] वह कन्या जिसकी ठुड्डी मे बाल या दाढी हो ।

विशेष—शास्त्रो मे ऐसी कन्या विवाह के अयोग्य कही गई है ।

हर्षोत्कर्ष—सज्ञा पुं० [सं०] हर्षातिशय । आनदातिरेक [को०] ।

हर्षोत्फुल्ल—वि० [सं०] हर्ष से विकसित । खुशी से फूला हुआ ।

हर्षोदय—सज्ञा पुं० [स०] आनद की उत्पत्ति [को०] ।

हर्सा†—सज्ञा पुं० [सं० हलीषा] हल का लबा लट्ठा । हरिस । हलीषा ।

हल्—सज्ञा पुं० [स०] शुद्ध व्यजन जिसमे स्वर न मिला हो ।

विशेष—लिखने मे अक्षर के नीचे एक छोटी तिरछी लकीर बना देने से यह सूचित होना है । जैसे 'पृथक्' शब्द मे 'क' के नीचे ।

हलत—सज्ञा पुं० [सं०] शुद्ध व्यजन जिसके उच्चारण मे स्वर न मिला हो । दे० 'हल्' ।

विशेष—व्यजन दो रूपो मे आते हैं—स्वरात और हलत ।

हल[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ वह यत्र या औजार जिससे बीज बोने के लिये जमीन जोती जाती है । वह औजार जिसे खेत मे सब जगह फिराकर जमीन को खोदते और भुरभुरी करते है । सीर । लागल ।

विशेष—यह खेती का मुख्य औजार है और सात आठ हाथ लबे लट्ठे के रूप मे होता है, जिसके एक छोर पर दो ढाई हाथ का लकडी का टेढा टुकडा आडे बल मे जडा रहता है । इसी आडी लकडी मे जमीन खोदनेवाला लोहे का फाल ठोका रहता है । लबे लट्ठे को 'हरिस' या 'हर्सा' और आडी जडी लकडी को 'हरैना' कहते हैं ।

क्रि० प्र०—चलाना ।

मुहा०—हल जोतना = (१) खेत मे हल चलाना । (२) खेती करना ।

२ एक अस्त्र का नाम ।

विशेष—श्री कृष्ण के बडे भाई बलराम का यह प्रमुख अस्त्र था । इसी से उनका एक नाम 'हल्ली' भी है ।

३ जमीन नापने का लट्ठा । ४ वृहत्संहिता के अनुसार उत्तर के एक देश का नाम । ५ सामुद्रिक के अनुसार पैर की एक रेखा या चिह्न । ६ प्रतिषेध । विघ्न । बाधा (को०) । ७ कुरूपता । विकृतियुक्तता । भद्दापन (को०) । ८ एक नक्षत्रसमूह (को०) । ९ कलह । विवाद । झगडा (को०) ।

हल³—संज्ञा पुं० [अ०] १ हिसाब लगाना । गणित करना । २ किसी कठिन बात का निर्णय । किसी समस्या का समाधान (या उत्तर) । जैसे—यह मुश्किल किसी तरह हल होती दिखाई नही देती । ३ मिलकर एकमेक हो जाना । घुलना । उलझन का सुलझना या खुल जाना (को०) । ४ किसी गणित या अन्य विषय के प्रश्न का उत्तर या जवाब (को०) ।

हलकप—संज्ञा पुं० [हिं० हलना (=हिलना) + कप] १ भारी हल्ला या उथलपुथल । हलचल । आदोलन । हडकप । उ०—जब अहेर सो आयो नाही । तब हलकप परचो पुर माँही ।—रघुराज (शब्द०) ।

क्रि० प्र०—मचना ।—मचाना ।

२ चारो ओर फैली हुई घबराहट । लोगो के बीच फैला हुआ आवेग या आकुलता । उ०—शत्रुन के दल मे हलकप परचो सुनि कै नृप केरी अवाई ।—(शब्द०) ।

क्रि० प्र०—डालना । —पडना ।

हलक—संज्ञा पुं० [अ० हलक] गले की नली । कठ । उ०—ऐसा यार हरीफ रहत मन हलक मे ।—पलटू०, पृ० ३०० । २ गला । गरदन । ३ मुडन । मूँडना । क्षौर कर्म (को०) ।

मुहा०—हलक के नीचे उतरना = (१) मुँह मे डाली हुई वस्तु का पेट मे ले जानेवाले स्रोत मे जाना । पेट मे जाना । (२) किसी बात का मन मे बैठना । असर होना । हलक तक भरना = आवश्यकता से अधिक खाना । ठूँस ठूँसकर भोजन करना । हलक पर छुरी फेरना = दे० 'गला रेतना' और 'गले पर छुरी फेरना' । हलक मे डालना = कठ के नीचे उतारना । पेट मे पहुँचाना । पेट मे डालना । हलक से उतरना = (१) गले के नीचे उतारना । पेट मे पहुँचना । (२) मन मे बैठना ।

हलकई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० हलका + ई (प्रत्य०)] । १ हलकापन । गुरुत्वाभाव । २ ओछापन । तुच्छता । ३ हेठी । अप्रतिष्ठा । जैसे—वहाँ जाने से कोई हलकई न होगी ।—बालकृष्ण भट्ट (शब्द०) ।

हलककुद्—संज्ञा पुं० [सं०] हल की वह लकडी जो लट्ठे के एक छोर पर आडे बल मे जडी रहती है और जिसमे फाल ठोका रहता है । हरैना । विशेष दे० 'हल'—१ ।

हलकन†—संज्ञा स्त्री० [हिं० हलकना] १ हलकने की स्थिति । हिलने डुलने की क्रिया । छलकन ।

हलकना(पु)†—क्रि० अ० [सं० हल्लन (=हिलना) अथवा 'हल हल' अनु०] १ किसी वस्तु मे भरे जल का हिलाने से हिलना डोलना या शब्द करना । जैसे,—दौडने से पेट मे पानी हलकता है । २ हिलोरें लेना । तरग मारना । लहराना । ३ बत्ती की लौ का झिलमिलाना । ४ हिलना । डोलना । उ०—पानिप के भारन सँभारत न गात, लक लचि लचि जाति कचभारन के हलकै ।—द्विजदेव (शब्द०) ।

हलकम†—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'हडकप', 'हलकप' ।

हलका¹—वि० [सं० लघुक, प्रा० लहुक, लहुअ, विपर्यय 'हलुक'] [वि० स्त्री० हलकी] १ जो तौल मे भारी न हो । जिसमे वजन या गुरुत्व न हो । 'भारी' का उलटा । जैसे,—यह पत्थर हलका है, तुम उठा लोगे । उ०—गरुवा होय गुरु होय बैठे हलका डगमग कर डोलै ।—कबीर श०, भा० १, पृ० १०३ । २ जो गाढा न हो । पतला । जैसे,—हलका शरबत । ३ जो गहरा या चटकीला न हो । जो शोख न हो । जैसे,—हलका रग, हलका हरा । ४ जो गहरा न हो । उथला जैसे,—किनारे पर पानी हलका है । ५ जो उपजाऊ न हो । जो उर्वरा न हो । अनुर्वर । जैसे,—यहाँ की जमीन हलकी है, पैदावार कम होती है । ६ जो अधिक न हो । कम । थोडा । जैसे,—(क) हलका भोजन । (ख) हमे हलके दामो का एक घोडा चाहिए । ७ जो जोर का न हो । मद । थोडा थोडा । जैसे,—हलका दर्द, हलका ज्वर । ८ जो कठोर या प्रचड न हो । जो जोर से न पडा या बैठा हो । जैसे,—हलकी चपत, हलकी चोट । ९. जिसमे गभीरता या बडप्पन न हो । ओछा । तुच्छ । टुच्चा । जैसे,—हलका आदमी, हलकी बात । १० जो करने मे सहज हो । जिसमे कम परिश्रम हो । आसान । सुखसाध्य । जैसे,—हलका काम । ११ जिसके ऊपर किसी कार्य या कर्तव्य का भार न हो । जिसे किसी बात के करने की फिक्र न रह गई हो । निश्चित । जैसे,—कन्या का विवाह करके अब वे हलके हो गए १२ प्रफुल्ल । ताजा । जैसे,—नहाने से बदन हलका हो जाता है । १३. जो मोटा न हो । झीना । पतला । महीन । जैसे,—हलका कपडा १४ कम अच्छा । घटिया । जैसे,—यह माल उससे कुछ हलका पड़ता है । १५ निदित । अप्रतिष्ठित । १६ जिसमे कुछ भरा न हो । खाली । छूँछा । उ०—सखि ! बात सुनौ इक मोहन की, निकसे मटकी सिर लै हलकै । पुनि बाँधि लई सुनिए नत नार कहूँ कहुँ कुद करी छलकै ।—केशव (शब्द०) ।

मुहा०—हलका करना = अपमानित करना । तुच्छ ठहराना । लोगो की दृष्टि मे प्रतिष्ठा कम करना । जैसे,—तुमने दस आदमियो के बीच मे हलका किया । हलकी बात = (१) ओछी या तुच्छ बात । (२) बुरी बात । हलके भारी होना = (१) ऊबना । भार अनुभव करना । बोझ सा समझना । जैसे,—चार दिन मे तुम्हारे यहाँ से चले जायँगे, क्यो हलके भारी हो रहे हो । (२) तुच्छता प्रकट करना । लोगो की नजर मे ओछा बनना । हलकी भारी बोलना = खोटे वचन कहना । खरी खोटी सुनाना । बुरे शब्द मुँह से निकालना । लोगो की दृष्टि मे हलका होना = ओछा या तुच्छ समझा जाना । प्रतिष्ठा खोना । बुरा समझा जाना । हलके हलके = धीरे धीरे । मद गति से । आहिस्ता आहिस्ता । हलका सोना = हलका सुनहरी रग । (रँगरेज) ।

हलका†²—संज्ञा पुं॰ [अनु॰ 'हल हल' या 'हिलना'] पानी की हिलोर। तरग। लहर।

हलका³—संज्ञा पुं॰ [अ॰ हलकह्] १ वृत्त। मडल। गोलाई। २ घेरा। परिधि। उ॰—जुल्फ के हलके मे देखा जब से दाना खाल का। मुर्ग दिल आशिक का तब से सैद है इस जाल का।—कविता कौ॰, भा॰ ४, पृ॰ २३। ३ मडली। झुड। दल। उ॰—औ वाहइआँ आफलें, कुजर हलकाँ काय।—बाँकी॰ ग्र॰, भा॰ १, पृ॰ २६। ४ हाथियो का झुड। उ॰—सत्ता के सपूत भाऊ तेरे दिए हलकनि वरनी ऊँचाई कविराजन की मति मैं। मधुकर कुल करटनि के कपोलन तें उडि उडि पियत अमृत उडुपति मैं।—मतिराम (शब्द॰)। ५ कई गाँवो या कस्वो का समूह जो किसी काम के लिये नियत हो। इलाका। क्षेत्र। जैसे,—थाने का हलका। पटवारियो का हलका। ६ गले का पट्टा। ७ लोहे का वद जो पहिए के घेरे मे जडा रहता है। हाल। ८ लोहे या लकडी का गोलाकार कुडा (को॰)।

हलकाई†—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ हलका + ई (प्रत्य॰)] १ हलकापन। लघुता। २ ओछापन। नीचता। ३ अप्रतिष्ठा। हेठी।

हलकान†—वि॰ [हिं॰ हलका (= हिलना, कपन ?) अ॰ हलाकत या हैरान] दे॰ 'हैरान'। उ॰—गिरह माँहि धधा घना, भेस माँहि हलकान। जन दरिया कैसे भजूं, पूरन ब्रह्म निदान।—दरिया॰ बानी, पृ॰ ४०।

हलकाना†¹—क्रि॰ अ॰ [हिं॰ हलका + ना (प्रत्य॰)] हलका होना। बोझ कम होना।

हलकाना²—क्रि॰ स॰ हलका करना। गुरुत्व या वजन कम करना।

हलकाना³—क्रि॰ स॰ [हिं॰ हलकना] १ किसी वस्तु मे भरे हुए पानी को हिलाना या हिलाकर आवाज पैदा करना या वुलाना। २ हिलोरा देना।

हलकाना⁴—क्रि॰ स॰ [हिं॰] दे॰ 'हिलगाना'।

हलकानी†—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ हलकान + ई] हलकान होने की क्रिया या भाव। हैरानी।

हलकापन—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ हलका + पन (प्रत्य॰)] १ हलका होने का भाव। भार का अभाव। लघुता। २ ओछापन। नीचता। तुच्छता बुद्धिक्षुद्रता। खोटाई। ३ अप्रतिष्ठा। हेठी। इज्जत की कमी।

हलकार—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ हरकारा] दूत। चर। उ॰—प्रणधि, दूत, जासूस ए छवि पावत हलकार।—नद॰ ग्र॰, पृ॰ १०८।

हलकारा‡—संज्ञा पुं॰ [हिं॰] दे॰ 'हरकारा'।

हलकारी¹—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ हड + कारी] कपडा रँगने के पहले उसमे फिटकरी, हड या तेजाव आदि का पुट देना जिसमे रग पक्का हो।

हलकारी²—संज्ञा स्त्री॰ [अ॰ हलकह (= घेरा)] हलदी के योग से वने हुए रग के द्वारा कपडो के किनारे पर की छपाई।

हलकोरा†—संज्ञा पुं॰ [अनु॰ हल हल] हिलोरा। तरग। लहर। उ॰—धाम के हलकोरो ने रग की लहरें ला ला कर ।
—प्रेमघन॰, भा॰ २, पृ॰ १२।

हलगोलक—संज्ञा पुं॰ [स॰] एक प्रकार का कीडा।

हलग्राही¹—वि॰ [सं॰ हलग्राहिन्] हल पकडनेवाला। हल की मूँठ पकडकर खेत जोतनेवाला।

विशेष—हल पकडना बहुत स्थानो मे ब्राह्मणो और क्षत्रियो के लिये निषिद्ध समझा जाता है।

हलग्राही²—संज्ञा पुं॰ खेती करनेवाला। किसान।

हलचल¹—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ हलना + चलना] १ लोगो के बीच फैली हुई अधीरता, घवराहट, दौड धूप, शोरगुल आदि। खलवली। धूम। जैसे,—सिपाहियो के शहर मे घुसते ही हलचल मच गई।

क्रि॰ प्र॰—डालना। जैसे,—शिवाजी ने मुगलो की सेना मे हलचल डाल दी। पडना।—मचना।—मचाना।

२ उपद्रव। दगा। ३ हिलना। डोलना। कप। विचलन।

हलचल²—वि॰ इधर उधर हिलता डोलता हुआ। डगमगाता हुआ। कपायमान।

हलजीवी—वि॰ [सं॰ हलजीविन्] हल चलाकर अर्थात् खेती करके निर्वाह करनेवाला। किसान।

हलजुता—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ हल + जोतना] १ तुच्छ कृषक। मामूली किसान। २ गँवार।

हलडा—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ आरा] दे॰ 'हलरा'।

हलदड—सं॰ पुं॰ [सं॰ हलदण्ड] हल का लबा लट्ठा। हरिस। उ॰—गिरि कदर सम नासा अत। हल दड से वड्डे दत।—नद॰ ग्र॰, पृ॰ २३६।

हलद†—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰] दे॰ 'हलदी'। उ॰—मुशाजा मुस्तरी होकर हलद सूरज लगाया है।—अली आदिल॰, पृ॰ २७।

हलद हात—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ हलदी + हाथ] विवाह के तीन या पाँच दिन पहले वर और कन्या के शरीर मे हल्दी और तेल लगाने की रस्म। हल्दी चढना।

हलदिया¹—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ हलदी] १ एक पित्त रोग जिसमे शरीर पीला पड जाता है। पीलिया रोग। विशेष—दे॰ 'कामल'। २ एक प्रकार का जहर। एक विष का नाम।

हलदिया²—वि॰ हलदी के रग का। पीला।

हलदी—संज्ञा स्त्री॰ [स॰ हरिद्रा] ३ डेढ दो हाथ ऊँचा एक पौधा जिसमे चारो ओर टहनियाँ नही निकलती, काड के चारो हाथ पौन हाथ लवे और तीन चार अगुल चौडे पत्ते निकलते हैं।

विशेष—इसकी जड, जो गाँठ के रूप मे होती है, व्यापार की एक प्रसिद्ध वस्तु है, क्योकि वह मसाले के रूप मे नित्य के व्यवहार की भी वस्तु है और रँगाई तथा औषध के काम मे भी आती है। गाँठ पीसने पर विलकुल पीली हो जाती है। इससे दाल, तरकारी आदि मे भी यह डाली जाती है और इसका रग भी बनता है। इसकी खेती हिंदुस्तान मे प्राय. सब जगह होती है। हलदी की कई जातियाँ होती हैं। साधारणत दो प्रकार की हलदी देखने मे आती है—एक बिलकुल पीली, दूसरी लाल या ललाई

लिए जिसे रोचनी हलदी कहते हैं। वैद्यक मे यह गरम, पाचक, अग्निवर्धक और कृमिघ्न मानी जाती है। रँगाई मे काम आनेवाली हलदी की जातियाँ ये है—लोकहँाडी हलदी, मोथला हलदी, ज्वाला हलदी और आँवा हलदी।

२ उक्त पौधे की गाँठ जो मसाले आदि के रूप मे व्यवहार मे लाई जाती है।

मुहा०—हलदी उठना या चढना = विवाह के तीन या पाँच दिन पहले दूल्हे और दुलहन के शरीर मे हलदी और तेल लगाने की रस्म होना। हलदी लगना = विवाह होना। हलदी लगा के वैठना = (१) कोई काम न करना, एक जगह वैठा रहना। (२) घमड मे फूला रहना। अपने को बहुत लगाना। हलदी लगी न फिटकिरी = विना कुछ खर्च किए। मुफ्त मे।

हलदू—सज्ञा पु० [हिं० हल्द (= हलदी)] एक वहुत वडा और ऊँचा पेड जिसकी छाल डेढ अगुल मोटी, सफेद और खुरदुरी होती है।

विशेष—इसके भीतर की लकडी पाली और वहुत मजवूत होती है। यह पेड तर जगहो मे, जैसे हिमालय की तलहटी मे, होता है। इसकी लकडी वहुत वजनी होती है तथा साफ करने से चमकती है। इससे खेती और सजावट के सामान जैसे, मेज, कुरसी, आलमारी, कघियाँ, वदूक के कुदे इत्यादि वनते हैं। इस पेड को करम (दे० 'करम' का विशेष) भी कहते हैं।

हलद्दी—सज्ञा स्त्री० [सं०] हलदी। हरिद्रा [को०]।

हलधर—सज्ञा पुं० [स०] १ हल को धारण करनेवाला। २ वलराम जी जो हल नामक अस्त्र धारण करते थे। उ०—मारो हलधर अगिनित वीरा।—कवीर सा०, पृ० ४८।

हलना(पु)†—क्रि० अ० [स० हल्लन (= डोलना, करवट लेना)] १ हिलना डोलना। उ०—अगनि उतग जग जैतवर जोर जिन्है चिक्करत दिक्करि हलत कलकत हैं।—मतिराम (शब्द)। २ घुसना। प्रवेश करना। पैठना। जैसे,—पानी मे हलना, घर मे हलना। ३ समूह मे घुसकर लडना। भिडना। टूट पडना। उ०—प्यादन सो प्यादे पखरैतन सो पखरैत, वखतरवारे वखतरवारे हलते।—भूषण ग्र०, पृ० ६६।

हलपत†—सज्ञा पुं० [हिं० हल + पट्ट (= पाटा)] हल की आडी लगी हुई लकडी जो वीच मे चौडी होती है। परिहत।

हलपाणि—सज्ञा पु० [सं०] वलराम जो हाथ मे हल लिए रहते थे। हलधर।

हलफ—सज्ञा पुं० [अ० हलफ] वह वात जो ईश्वर को साक्षी मानकर कही जाय। किसी पवित्र वस्तु की शपथ। कसम। सौगध।

मुहा०—हलफ उठवाना या देना = शपथ खिलाना या खाने को कहना। हलफ उठाना या लेना = शपथपूर्वक कहना। कसम खाना। ईश्वर को साक्षी देकर कहना।

हलफदरोगी—सज्ञा स्त्री० [अ० हलफदरोगी] अदालत मे झूठी शपथ लेना। झूठी कसम खाना [को०]।

हलफन—क्रि० वि० [अ० हलफन] कसम से। कसम खाकर। शपथपूर्वक [को०]।

हलफनामा—सज्ञा पुं० [अ० हलफ + फा० नामह्] वह कागज जिसपर कोई वात ईश्वर को साक्षी मानकर अथवा शपथपूर्वक लिखी गई हो।

हलफल—सज्ञा स्त्री० [अनु० प्रा० हल्लप्फल्ल, हल्लफल] त्वरा। शीघ्रता। व्यग्रता। हडवडी। उ०—रह रह सुदरि, माठ करि, हलफल लगी काइ। डाँभ दिरावइ करइलउ, से कता मरि जाइ।—ढोला०, दू० ३२१।

हलफा—सज्ञा पुं० [अनु० हल हल] १ हिलोर। लहर। तरग। २ एक प्रकार का वच्चो रोग जिसमे साँस तेज चलती है।

क्रि० प्र०—उठना।

मुहा०—हलफा मारना = लहरें लेना। लहराना। हलफा चलना = वहुत तेजी से साँस चलना। उलटी साँस चलना।

विशेष—किसी किसी रोग की घातक स्थिति मे साँस उलटी चलने लगती है।

हलफी—वि० [अ० हलफी] हलफ के साथ। शपथयुक्त [को०]।

हलव—सज्ञा पुं० [अ० हलव देश] [वि०, हलवी, हलब्वी] फारस की ओर के एक देश का नाम। सीरिया, जहाँ का शीशा प्रसिद्ध था। दे० 'शाम'। उ०—कधी सौदा लेकर आवे अरव का। कधी शीसा लेवे जलव का हलव का।—दक्खिनी०, पृ० २७७।

हलवल(पु)†—सज्ञा पुं० [हिं० हल + वल] खलवली। हलचल। धूम।

हलवला—वि० [हिं० हलवल] अधीर। व्यग्र। व्याकुल। उ०—तव वनारसी ह्वै हलवले। वरसत मेह वहुरि उठि चले।—अर्ध०, पृ० २८।

हलवलाना¹—क्रि० अ० [हिं० हलवल] भय या शीघ्रता आदि के कारण घवराना। हडवडाना।

हलवलाना²—क्रि० स० दूसरे को घवडाने मे प्रवृत्त करना।

हलवलाहट—सज्ञा स्त्री० [हिं० हलवलाना] हलवलाने की क्रिया या भाव। खलवली। घवराहट।

हलवी—वि० [अ० हलवी] हलव देश का (शीशा)। वढिया (शीशा)। उ०—नैन सनेहन के मनो हलवी सीसा आइ। गुपुत प्रगट तिन मैं सदा मीत सुमुख दरसाइ।—स० सप्तक, पृ० १६५।

हलब्वी¹—वि० [अ० हलवी] दे० 'हलवी'। जैसे—हलब्वी शीशा।

हलब्वी‡²—वि० [?] पर्याप्त। काफी। वहुत। जैसे,—उसने घूस मे हलब्वी रकम पिलाई है।

हलभल†—सज्ञा पुं० [अनु०] दे० 'हलवल'।

हलभली¹†—सज्ञा स्त्री० [हिं० हलवल] खलवली। हलचल। घवराहट। हलभल।

हलभली²—सज्ञा स्त्री० [प्रा० हलहलअ] त्वरा। जल्दी। हडवडी।

हलभूति¹—सज्ञा पुं० [स०] शकराचार्य का एक नाम।

हलभूति²—सज्ञा स्त्री० दे० 'हलभृति'।

हलभृत—सज्ञा पुं० [स० हलभृत्] १ वलराम। २ किसान। कृषक [को०]।

हलभृति—सज्ञा स्त्री० [सं०] कृषि का काम। किसानी [को०]।

हलमरिया—संज्ञा स्त्री० [पुर्त० आलमारी] जलयान या जहाज के नीचे का खाना। (लश०)।

हलमलना†—क्रि० अ० [हिं० हिलना + मलना] काँपना। डगमगाना। उ०—मुरग रसातल भूतल जितौ। सब हलमल्यौ कलमल्यौ तितौ।—नंद० ग्रं०, पृ० २३८।

हलमा—संज्ञा स्त्री० [अ० हलमह्] कुचाग्र। चूचुक। भिटनी [को०]।

हलमार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] हल की रेखा। हल जोतने से बनी रेखा। लांगलपद्धति। कूँड [को०]।

हलमिल लैला—संज्ञा पुं० [सिंहली] एक प्रकार का बड़ा पेड़ जो सिंहल या सीलोन में होता है।

विशेष—इस वृक्ष की लकड़ी बहुत मजबूत होती है और खेती के सामान आदि बनाने के काम में आती है। मैसूर में भी यह पेड़ पाया जाता है।

हलमुख—संज्ञा पुं० [सं०] हल का फाल।

हलमुखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, नगण और सगण आते हैं। उ०—एनि सीख न धर हरी, बार सौ बरजत अरी। होहिंगे हम सब सुखी, जो तजै वह हलमुखी।—छंद ०, पृ० १४७।

हलरद—वि० [सं०] हल की तरह बेडौल लंबे दाँतोंवाला। बड़े बड़े दाँतोंवाला [को०]।

हलरा—संज्ञा पुं० [सं० हिल्लोल] दे० 'हिलोर', 'हिलोरा'।

हलराक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पौधा। आहुल्य [को०]।

हलराना—क्रि० स० [हिं० हिलोरा] (बच्चों को) हाथ पर लेकर इधर उधर हिलाना डुलाना। प्यार से हाथ पर झुलाना। उ०—(क) जसोदा हरि पालनै झुलावै। हलरावै दुलराइ मल्हावै जोइ सोई कछु गावै।—सूर०, १०।४३। (ख) लै उछंग कबहुँक हलरावै। कबहु पालने घालि झुलावै।—मानस, १।२००।

हलवंश—संज्ञा पुं० [सं०] हल का लंबा लट्ठा। हरिस [को०]।

हलवत—संज्ञा स्त्री० [हिं० हल + वत या औत (प्रत्य०)] वर्ष में पहले पहल खेत में हल ले जाने की रीति या कृत्य। हरौती।

हलवा—संज्ञा पुं० [अ०] १ एक प्रकार का मीठा भोजन या मिठाई जो मैदे या सूजी को घी में भूनकर उसे शरबत या चाशनी में पकाने से बनती है। मोहनभोग। २ गीली और मुलायम चीज। ३ आसान कार्य। सरल काम।

यौ०—सोहन हलवा।

मुहा०—हलवे माँडे से काम = केवल स्वार्थ साधन से ही प्रयोजन। अपने लाभ ही से मतलब। जैसे,—तुम्हें तो अपने हलवे माँडे से काम, किसी का चाहे कुछ हो। हलवा निकल जाना = कचूमर निकल जाना। अत्यंत दुर्गति होना। हलवा निकालना = बहुत पीटना। खूब मारना। जैसे,—मारते मारते हलवा निकाल देंगे। हलवा समझना = सरल और आसान समझना।

हलवाइन—संज्ञा स्त्री० [हिं० हलवाई] १. हलवाई की स्त्री। २ वह स्त्री जो मिठाई बनाने का काम करती हो।

हलवाई—संज्ञा पुं० [अ० हलवा + ई (प्रत्य०)] [स्त्री० हलवाइन] मिठाई बनाने और बेचनेवाला। मिठाई बनाकर या बेचकर जीविका चलानेवाला।

मुहा०—हलवाई की दूकान पर दादा का फातेहा पढ़ना = अपने पास कुछ नहीं है, इस आशय की कसम खाना। उ०—चौधरी—माँग न लेता तो क्या करता, हलवाई की दूकान पर दादा का फातेहा पढ़ना मुझे पसंद नहीं।—मान०, भा० ५, पृ० १९५।

हलवाह—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो दूसरे के यहाँ हल जोतने का काम करता हो। हल चलाने का काम करनेवाला मजदूर या नौकर।

विशेष—हल चलाने के लिये गाँवों में चमार आदि जाति के लोग ही रखे जाते हैं।

हलवाहा[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] जमीन की एक नाप जिसका व्यवहार प्राचीन काल में होता था।

हलवाहा†[२]—संज्ञा पुं० दे० 'हलवाह'।

हलहति—संज्ञा स्त्री० [सं०] हल चलाना। जुताई [को०]।

हलहर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हलधर] खेत जोतने का हल। उ०—जैसे हलहर बिना जिमी नहिं बोइए। सूत बिना कैसे मणी पिरोइए।—कबीर ग्रं० पृ० २९२।

हलहल[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ हल चलाना। कर्षण करना। २ धूम। हलचल। खलबली।

हलहल[२]—संज्ञा पुं० [अनु० या देशी हल्लोहल्ल] १ किसी वस्तु में भरे जल के हिलने डोलने का शब्द। २ हलचल। त्वरा। शीघ्रता। उ०—ऊँमर दीठा जावता, हलहल करइ करूर। एराकी आोखभिया जइसइ केती दूर।—ढोला०, दू० ६४१।

हलहला‡—संज्ञा स्त्री० [सं०] आनंदसूचक ध्वनि। किलकार।

हलहलाना†[१]—क्रि० स० [हिं० हलना या अनु० हलहल] १ ऐसी वस्तु को हिलाना जिसके भीतर पानी भरा हो। २ खूब जोर से हिलाना डुलाना। झकझोरना। ३ जोरों से भीतर घुसेड़ना या प्रवेश कराना।

हलहलाना[२]—क्रि० अ० काँपना। थरथराना। कंपित होना। जैसे,—मारे बुखार के हलहला रहा है। २ भयादि के कारण अपने स्थान से एकदम हिल उठना या च्युत होना। उ०—धमकत धरनि अहि सिर निहाय। हलहलिय द्रिग्ग उद्दिग्ग थाय।—पृ० रा०, १।६२५।

हला[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वयस्या। सहेली। सखी। २ पृथ्वी। ३ जल। ४ सोमरस [को०]।

हला[२]—अव्य० सखी के लिये नाटक में प्रयुक्त संबोधन [को०]।

हलाक[१]—वि० [अ०] १ मरा हुआ। मृत। २ मारा हुआ। वध किया हुआ। उ०—प्राण प्रयाण किया पछै, ह्वै नर नाम हलाक।—बाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० ५२। ३ आकांक्षायुक्त। इच्छुक (को०)।

हलाक[२]—संज्ञा पुं० १ मार डालना। वध करना। २ मृत्यु। मौत। ३ बरबाद होना। नष्ट भ्रष्ट होना। बरबादी। विनाश [को०]।

मुहा०—हलाक करना = मार डालना । वध करना । हलाक होना = (१) मर जाना । मृत होना । (२) बरबाद होना ।

हलाकत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ हत्या । वध । मार डालना । २ मृत्यु । विनाश । ३ परिश्रम । मेहनत (को०) । ४ शिथिलता । शैथिल्य । थकान (को०) ।

हलाकान‡—वि० [अ० हलाकत या हैरान + ई] परेशान । हैरान । तग । उ०—क्यो निर्दोषियो के हलाकान करने की ठान ठानते हो ।—प्रेमघन०, भाग २, पृ० ४६७ ।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

हलाकानी‡—संज्ञा स्त्री० [हि० हलाकान] तग होने की क्रिया या भाव । परेशानी । हैरानी ।

हलाकी—[अ० हलाक + हि० ई (प्रत्य०)] हलाक करनेवाला । मार डालनेवाला । मारू । घातक । उ०—जोग कथा पठई ब्रज को, सब सो सठ चेरी की चाल चलाकी । ऊधो जू ! क्यो न कहैं कुबरी जो बरी नटनागर हेरि हलाकी ।—तुलसी (शब्द०) ।

हलाकी[२]—संज्ञा स्त्री० १ विनाश । बरबादी । २ मृत्यु । मौत [को०] ।

हलाकू[१]—वि० [अ० हलाक + ऊ (प्रत्य०)] हलाक करनेवाला । वध करनेवाला ।

हलाकू[२]—संज्ञा पुं० एक तुर्क सरदार वा बादशाह जो चगेज खाँ का पोता था और उसी के समान क्रूर तथा हत्याकारी था।

हलाचली—संज्ञा स्त्री० [अनु०] दे० 'हलचल' ।

हलाना†—क्रि० स० [हि० हिलना] दे० 'हिलाना' । उ०—डर ते नैन सजल ह्वै आए ! जनु अरविद अलिद हलाए ।—नद० ग्र०, पृ० २५० ।

हलाभ—संज्ञा पुं० [स०] वह घोडा जिसकी पीठ पर काले या गहरे रग के रोएँ बराबर कुछ दूर तक चले गए हो ।

हलाभला—संज्ञा पुं० [हि० भला + (अनु०) हला] निबटारा । निर्णय । जैसे,—बहुत दिनो से यह पीछे लगा है, इसका भी कुछ हलाभला कर दो । २ परिणाम । फल । उ०—भले ही भले निबहै जो भली यह देखिबे ही को हला हु भला । मिल्यो मन तौ मिलिबोई कहूँ, मिलिबो न अलौकिक नदलला ।—केशव (शब्द०) ।

हलाभियोग—संज्ञा पुं० [स०] वर्ष मे पहले पहल खेत मे हल ले जाने की रीति या कृत्य । हलवत । हरौती ।

हलायुध—संज्ञा पुं० [स०] १ बलराम का एक नाम । २ सस्कृत का एक कोश ग्रथ ।

हलाल[१]—वि० [अ०] १ जो धर्मशास्त्र के अनुसार उचित हो । जो शरअ या मुसलमानी धर्मपुस्तक के अनुकूल हो । २ जो हराम न हो । विधिविहित । जायज । ३ जिसे स्वीकार किया जा सके । जिसे ग्रहण किया जा सके । स्वीकरणीय ।

यौ०—हलालखोर । नमकहलाल ।

हलाल[२]—संज्ञा पुं० वह पशु जिसका मास खाने की मुसलमानी धर्मपुस्तक मे आज्ञा हो । वह जानवर जिसके खाने का निषेध न हो ।

मुहा०—हलाल करके खाना = ईमानदारी से अर्जन करके उपयोग मे लाना । जैसे,—जिसका खाना, उसका हलाल करके खाना । हलाल करना = (१) ईमानदारी के साथ व्यवहार करना । बदले मे पूरा काम करना । (२) खाने के लिये पशुओ को मुसलमानी शरअ के मुताबिक, धीरे धीरे गला रेतकर मारना । जबह करना । उ०—सब मैं खुदा कुरान बतावै । करौ हलाल सो दरद न आवै ।—घट०, पृ० २११ । (३) गला काटना । गरदन उतारना । (४) कष्ट देना । अत्यत पीडा पहुँचाना । हलाल का = (१) जो जारज न हो । वैध । जायज । (२) धर्मशास्त्र के अनुकूल ईमानदारी से पाया हुआ । जैसे—हलाल का रुपया । हलाल की कमाई = ईमानदारी से किया हुआ अर्जन । मिहनत की कमाई ।

हलालखोर—संज्ञा पुं० [अ० हलाल + फा० खोर + ई] १ हलाल की कमाई खानेवाला । मिहनत करके जीविका करनेवाला । २. मैला या कूडा करकट साफ करने का काम करनेवाला । मेहतर । भगी ।

हलालखोरी—संज्ञा स्त्री० [अ० हलाल + फा० खोर + ई] १ हलालखोर की स्त्री । २ पाखाना उठाने या कूडा करकट साफ करने का काम करनेवाली स्त्री । ३ हलालखोर का काम । ४ हलालखोर का भाव या धर्म ।

हलाह—संज्ञा पुं० [स०] चितकबरा घोडा । दे० 'हलाभ' ।

हलाहल—संज्ञा पुं० [स०] १ वह प्रचड विष जो समुद्रमथन के समय निकला था ।

विशेष—इस विष की तीव्र उष्मा या ज्वाला के प्रभाव से सारे देवता और असुर व्याकुल हो गए थे । अत मे शिव जी ने देवासुर की प्रार्थना पर इसे अपने कठ मे धारण किया था । इसी से उनका नाम नीलकठ पडा ।

२ महाविष । भारी जहर । उ०—विक तो कहँ जो अजहूँ तु जियैं । खल, जाय हलाहल क्यो न पियैं ?—केशव (शब्द०) । ३ एक जहरीला पौधा ।

विशेष—भावप्रकाश के अनुसार इस पौधे के पत्ते ताड के से, कुछ नीलापन लिए तथा फल गाय के थन के आकार के सफेद लिखे गए हैं । इसका कद या जड की गाँठें भी गाय के थन के आकार की कही गई हैं । लिखा है कि इसके आसपास घास या पेड पौधे नही उगते और मनुष्य केवल इसकी महक से मर जाता है ।

४ एक प्रकार का सर्प । ब्रह्मसर्प (को०) । ५ अजना नाम की एक प्रकार की छिपकली (को०) । ६. एक बुद्ध (को०) ।

हलि—संज्ञा पुं० [स०] १ बडा हल । २ हल की रेखा । कूँड । ३ कृषि । खेती [को०] ।

हलिक—संज्ञा पुं० [स०] १ हल चलानेवाला । हलवाहा । किसान । २. एक नाग असुर [को०] ।

हलिक्ष्ण—संज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का सिंह ।

हलिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हलसतति या समूह । २ लागली वृक्ष । कलियारी नाम का पौधा [को०] ।

हलिप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] कदंब का वृक्ष [को०]।

हलिप्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मद्य। मदिरा। २ ताडी, जो बलराम जी को प्रिय थी।

हलिभ—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों के मत से एक बडी संख्या का वाचक शब्द [को०]।

हलिमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्कंद या कुमार की मातृकाओं में से एक।

हलिवइ(पु)—क्रि० वि० [सं० लघुक, प्रा० लहुअ, अप० हलुअ, गुज० हळवे] धीरे। दे० 'हरुए[1]'। उ०—सज्जरण दुज्जरण के कहे, भडिक न दीजइ गालि। हलिवइ हलिवइ छडियइ, जिमि जल छडइ पालि।—ढोला०, दू० १६६।

यौ०—हलिवइ हलिवइ = शनै शनै। धीरे धीरे।

हली[1]—संज्ञा पुं० [सं० हलिन्] १ हल नाम का अस्त्र धारण करनेवाले, बलराम। २ एक ऋषि का नाम। ३ किसान।

हली[2]—संज्ञा स्त्री० [सं०] कलिकारी या कलियारी नाम का पौधा।

हलीक्ष्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक पशु। २ अन्न। आँत [को०]।

हलीन—संज्ञा पुं० [सं०] १ केतकी। २ शाक वृक्ष। शाल वृक्ष। सागौन का पेड [को०]।

हलीप्रिय(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हलिप्रिय] कदंब वृक्ष।

हलीप्रिया(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० हलिप्रिया] मदिरा। सोमरस।

हलीम[1]—संज्ञा पुं० [देश०] मटर के डंठल जो बवई की ओर काटकर चौपायों को खिलाए जाते हैं।

हलीम[2]—वि० [अ०] [वि० स्त्री० हलीमा] जो सहनशील हो। सीधा। गंभीर। शांत।

हलीम[3]—संज्ञा पुं० १ एक प्रकार का खाना (खिचडी) जो मुहर्रम में बनता है। (मुसलमान)। २ मोटा पशु (को०)। ३ अल्लाह। ईश्वर। खुदा।

हलीमक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पांडु रोग का एक भेद। उ०—अन्न में अप्रीति और भ्रम ये उपद्रव वातपित्त से प्रकट हलीमक रोग के है।—माधव०, पृ० ७६।

विशेष—यह वातपित्त के कोप से उत्पन्न कहा गया है। इसमें रोगी के चमडे का रंग कुछ हरापन, कालापन या धूमिलपन लिए पीला हो जाता है। उसे तंद्रा, मंदाग्नि, जीर्णज्वर, अरुचि और भ्रांति होती है तथा उसके अंगों में पीडा रहती है।

२ एक नाग असुर (को०)।

हलीशा, हलीषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हरिस। हल के बीचवाली लकडी। उ०—बीचवाली सीधी लंबी लकडी को ईषा, हलीषा, लागलीषा, कहते थे।—संपूर्णानंद अभि० ग्र०, पृ० २४८।

हलीसा—संज्ञा पुं० [सं० हलीषा] नाव खेने का छोटा डाँडा जिसका एक जोडा लेकर एक ही आदमी नाव चला सकता है। चप्पू। (लश०)।

मुहा०—हलीसा तानना = डाँड चलाना। चप्पू चलाना।

हलुआ—संज्ञा पुं० [अ० हलवा] दे० 'हलुवा'। उ०—नेह मौन छवि मधुरता मैदा रूप मिलाय। बेंचत हलुवाई मदन हलुआ सरस बनाय।—स० सप्तक, पृ० १८०।

हलुआइन†—संज्ञा स्त्री० [हिं० हलुआई] १ हलवाई की स्त्री। हलवाई का काम करनेवाली औरत।

हलुआई—संज्ञा स्त्री० [हिं० हलुआ + ई] दे० 'हलवाई'।

हलुक(पु)†—वि० [सं० लघुक] दे० 'हलका'। उ०—पत्र तोल में हलुक उठाना। तौ यहि विधि झूठी कर जाना।—घट०, पृ० २३२।

हलुकई†—संज्ञा स्त्री० [हिं०] हलकापन। दे० 'हलकाई'।

हलुका(पु)†—वि० [हिं०] हलका।

हलुवा—संज्ञा पुं० [अ० हलवा] दे० 'हलवा'।

हलुवाई†—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'हलवाई'। उ०—बेंचत हलुवाई मदन हलुआ सरस बनाय।—स० सप्तक, पृ० १८०।

हलुहार—संज्ञा पुं० [सं०] वह घोडा जिसके अडकोश काले हों और जिसके माथे पर दाग हो।

हलू†—क्रि० वि० [सं० लघुक] दे० 'हौले'। उ०—सो जूँ मोम उसके पिघल ध्यान में। कही उस बुड्ढी कूँ हलू कान में।—दक्खिनी०, पृ० ८३।

हलूक—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ उतना पदार्थ जितना एक बार वमन में मुँह से निकले। २ वमन। कै। जैसे,—दो हलूकों में जान निकल गई।

हलूर(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० हलोर] दे० 'हिलोर'। उ०—धन धधा व्यौहार सब, माया मिथ्यावाद। पाँणी नीर हलूर ज्यूँ, हरिनांव बिना अपवाद।—कबीर ग्र०, पृ० १८८।

हलेरा(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० हलोर] दे० 'हिलोर'।

हलेपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'हलीषा' [को०]।

हलेसा—संज्ञा पुं० [सं० हलीषा] दे० 'हलीसा'।

हिलोर(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० हिलना या अनु० हलहल] हिलोरा। तरंग। लहर।

हलोरना—क्रि० स० [हिं० हिलोर + ना (प्रत्य०)] १ पानी में हाथ डालकर उसे हिलाना डुलाना। जल को हाथ के आघात से तरंगित करना। २ मथना। ३ अनाज फटकना। हाथ या सूप के द्वारा मिली हुई मिट्टी और कूडे से अनाज को अलग करना। ४ दोनों हाथों से या बहुत अधिक मान में किसी पदार्थ का, विशेषत द्रव्य का, संग्रह करना। जैसे—आजकल वह रंग के व्यापार में खूब रुपए हलोर रहे हैं।

हलोरा(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० हलना या अनु० हलहल] हिलोरा। तरंग। लहर। उ०—सोहै सितासित को मिलिबो, तुलसी हुलसै हिय हेरि हलोरे। मानौं हरे तृन चारु चरैं बगरे सुरधेनु के धौल कलोरे।—तुलसी (शब्द०)।

हलोहल्ल(पु)—संज्ञा पुं० [अनु०] हलचल। व्याकुलता। हलबल। उ०—बहै धार धार करै मार मार। हलोहल्ल मीर नयौ नाग पीर।—पृ० रा०, २४।१७६।

हल्क—संज्ञा पुं० [अ० हल्क] दे० 'हलक'।

हल्का[1]—वि० [सं० लघुक, प्रा० लहुक, विपर्यय हलुक] दे० 'हलका'।

हल्का[2]—संज्ञा पुं० [फा० हल्कह्] । इलाका । हलका । क्षेत्र । उ०—अब चलो शराब पिला दो और जल्द इस हल्के से कुछ कमा लो।—चोटी०, पृ० १६। (अन्य अर्थों के लिये दे० 'हलका'[2])।

हल्द—संज्ञा स्त्री० [सं० हलदी] दे० 'हलद'।

हल्दहात—संज्ञा स्त्री० [हिं० हल्दी + हाथ] विवाह के तीन या पाँच दिन पहले वर और कन्या के शरीर मे हल्दी लगाने की रीति। हल्दी चढाना।

हल्दी—संज्ञा स्त्री० [सं० हलदी या हरिद्रा] दे० 'हलदी'।

हल्य[1]—वि० [सं०] १ जोती जानेवाली (जमीन)। २ भद्दा। कुरूप। ३ हल सबधी [को०]।

हल्य[2]—संज्ञा पुं० १. जोती हुई जमीन। २ खेत, जो जोतने योग्य हो। ३ भद्दापन। कुरूपता [को०]।

हल्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] अनेक हल। हल समूह [को०]।

हल्लक—संज्ञा पुं० [सं०] लाल कमल।

हल्लन—संज्ञा पु० [सं०] १ करवट बदलना। २ इधर से उधर हिलना डोलना।

हल्लना(पु)—क्रि० अ० [हिं० हिलना] दे० 'हिलना'। उ०—कभू हल्लवै भुम्मि गज्जत वीर। कभू घोर अधार वर्पत पीर। —ह० रासो, पृ० ८४।

हल्लर फल्लर(पु)—संज्ञा पुं० [अनु०] टालमटोल। हीलाहवाली। उ०—माहव सूम मिलाव मत, अँडा धरां हिसाव। के हल्लर फल्लर करै, पावै कल्लर राव।—बाँकी० ग्र०, भा० ३, पृ० ८१।

हल्ला—संज्ञा पुं० [अनु०] १ एक या अधिक मनुष्यो का ऊँचे स्वर से बोलना। चिल्लाहट। शोरगुल। कोलाहल।

क्रि० प्र०—करना।—मचना।—मचाना।—होना।

यौ०—हल्ला गुल्ला = शोर गुल।

२ लडाई के समय की ललकार। धावे के समय किया हुआ शोर। हाँक। ३ सेना का वेग से किया हुआ आक्रमण। धावा। हमला। जैसे,—राजपूतो ने एक ही हल्ले मे किला ले लिया।

मुहा०—हल्ला बोलना = सेना का हमला करना। ललकारते हुए शत्रु टूट पडना।

हल्लीश, हल्लीष—संज्ञा पुं० [सं०] १ नाट्यशास्त्र मे वर्णित अठारह उपरूपको मे से एक।

विशेष—इसमे एक ही अक होता है और नृत्य की प्रधानता रहती है। इसमे एक पुरुष पात्र और सात, आठ या दस स्त्रियाँ पात्री होती हैं।

२ मडल बाँधकर होनेवाला एक प्रकार का नाच जिसमे एक पुरुष के आदेश पर कई स्त्रियाँ नाचती हैं।

हल्लीस—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हल्लीश' [को०]।

हल्लीशक—संज्ञा पु० [सं०] १ दे० 'हल्लीशक'। २ एक प्रकार का वाद्य [को०]।

हल्लीषक, हल्लीसक—संज्ञा पुं० [सं०] मडलाकार नृत्य। घेरा बनाकर नाचना। उ०—उनका प्रधान नृत्य हल्लीषक कहलाता था। प्रा० भा० प०, पृ० ८६।

हल्लू हल्लू†—क्रि० वि० [हिं० हौले हौले] धीरे धीरे। उ०—मिट्ठा मिट्ठा मोट का पानी। मै मोट चलावउँ हल्लू हल्लू।—दक्खिनी०, पृ० ३८७।

हवग—संज्ञा पुं० [सं० हवङ्ग] फूल नामक मिश्रित धातु के पात्र मे दधि और ओदन खाना [को०]।

हव—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी देवता के निमित्त अग्नि मे दी हुई आहुति। बलि। २ अग्नि। आग। ३ स्तुतिपूर्वक आवाहन करना (को०)। ४ आह्वान। पुकार (को०)। ५ आदेश। आज्ञा (को०)। ६ चुनौती (को०)।

हवदा(पु)—संज्ञा पुं० [अ० हौदज, हौदा] दे० 'हौदा'। कसिय हवदा ध्वजधार बली।—ह० रासो, पृ० १२६।

हवन—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी देवता के निमित्त मत्र पढकर घी, जौ, तिल आदि अग्नि मे डालने का कृत्य। होम।

क्रि० प्र०—करना।—होना। २ अग्नि। आग। ३ अग्निकुड। ४ अग्नि मे आहुति देने का यज्ञपात्र। हवन करने का चमचा। स्रुवा। ५ हवन करना (को०)। ६ स्तवन या प्रार्थनापूर्वक आवाहन (को०)। ७ लडने के लिये चुनौती या ललकार (को०)।

हवनायु—संज्ञा पु० [हवनायुस्] आग। अग्नि [को०]।

हवनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अग्निकुड। हविर्नी [को०]।

हवनीय[1]—वि० [सं०] जो हवन के योग्य हो। जिसे आहुति के रूप मे अग्नि मे डालना हो।

हवनीय[2]—संज्ञा पुं० वह पदार्थ जो हवन करने के समय अग्नि मे डाला जाता है। जैसे,—घी, जौ, तिल आदि।

हवन्नक—वि० [अ० हवन्नक] १ अहमक। गावदी। बुद्धू। बौडम। २ वदशकल। भद्दी आकृति का [को०]।

हवलदार—संज्ञा पुं० [अ० हवाल (= सुपुर्दगी) + फा० दार (= रखनेवाला)] १ बादशाही जमाने का वह अफसर जो राजकर की ठीक ठीक वसूली और फसल की निगरानी के लिये तैनात रहता था। २ फौज मे वह सबसे छोटा अफसर जिसके मातहत थोडे से सिपाही रहते है। उ०—रग महल मे जग खडे है, हवलदार और सूबेदार।—कबीर श०, भा० ३, पृ० ५०।

हवले(पु)—क्रि० वि० [हिं०] दे० 'हौले'। उ०—ओछा कुल मे ऊपना, दोभा डावडियाह। हवले बोलै होट मे, मूरख मावडियाह।—बाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० १७।

हवस—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ लालसा। कामना। चाह। जैसे,—हमे अब किसी बात की हवस नही है। उ०—हवस करै पिय मिलन की, औ सुख चाहै अग। पीड सहे बिनु पद्मिनी पूत न लेत उछग।—कबीर सा० स०, पृ० ४२। २ लोभ। लालच (को०)।

३ उमग। हौसला (क्व०)। ४ झूठी कामना। झूठी या दिखावटी आसक्ति (क्व०)। ५ साहस। बहादुरी। दिलेरी (क्व०)।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

यौ०—हवसदार = आकाक्षायुक्त। आकाक्षी। इच्छुक। हवसपरस्त = अत्यत लोभी या लालची।

मुहा०—हवस निकलना = इच्छा पूरी होना। हौसला पूरा होना। हवस निकालना = इच्छा पूरी करना। हौसला पूरा करना। हवस पकाना = व्यर्थ कामना करना। केवल मन मे ही किसी कामनापूर्ति का अनुमान किया करना। मनमोदक खाना। हवस पूरी करना = इच्छा पूरी करना। हवस पूरी होना = इच्छा पूर्ण होना। हवस बुझना या बुतना = हौसला खतम होना। ६ वृद्धिविकार। खब्त। ७ तृष्णा। जैसे—बुड्ढे हुए पर हवस न गई।

हवा—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ वह सूक्ष्म प्रवाह रूप पदार्थ जो भूमडल को चारो ओर से घेरे हुए है और जो प्राणियो के जीवन के लिये सब से अधिक आवश्यक है। वायु। पवन। विशेष—दे० 'वायु'।

क्रि० प्र०—आना।—चलना।—बहना।

यौ०—हवाखोरी। हवाचक्की। हवागाडी = मोटर गाडी।

मुहा०—हवा उडना = खबर फैलना। बात फैलना या प्रसिद्ध होना। हवा उडाना = (१) अधोवायु छोडना। पादना। (२) किवदती उडाना। अफवाह फैलाना। हवा करना = पखे से हवा का झोका लाना। पखा हाँकना। हवा के रुख जाना = जिस ओर को हवा बहती हो उसी ओर जाना। हवा के मुँह पर जाना = दे० 'हवा के रुख जाना'। (लश०)। हवा के घोडे पर सवार होना = बहुत उतावली मे होना। बहुत जल्दी मे होना। उ०—यह नादिरी हुक्म! तुम हवा के घोडो पर सवार हो, कुछ ठिकाना है क्या हुक्म दिया कि फौरन जगा दो।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ३६२। हवा गिरना = हवा थमना। तेज हवा का चलना बद होना। हवा खाना = (१) शुद्ध वायु के लिये बाहर निकलना। बाहर घूमना। टहलना। उ०—अच्छा, उनको यहाँ ला सकती हो या कहो तो हवा खाते हुए हम ही चले चले।—सैर०, पृ० १८। (२) प्रयोजन सिद्धि तक न पहुँचना। बिना सफलता प्राप्त किए यो ही रह जाना। अकृतकार्य होना। जैसे,—वक्त पर तो आए नही, अब जाओ हवा खाओ। हवा गाँठ मे बाँधना = असभव बात के लिए प्रयत्न करना। अनहोनी बात के पीछे हैरान होना। हवा चलना = समय की धारा का प्रवाहित होना। समय का आना। उ०—अजी किबला, अब तो हवा ही ऐसी चली है कि जवान तो जवान बुडढो तक को बुडभस लगा है।—फिसाना०, भा० १, पृ० ६। हवा फाँककर रहना या हवा पीकर रहना = बिना आहार के रहना। (व्यग्य)। जैसे,—कुछ खाने को नही पाते तो क्या हवा पीकर रहते हो? हवा पकडना = पाल मे हवा भरना (लश०)। हवा बताना = किसी वस्तु से वचित रखना। टाल देना। इधर उधर की बात कहकर हटा देना। जैसे,—वह अपना काम निकालकर तुम्हे हवा बता देगा। हवा बाँधकर जाना = हवा की चाल से उलटा जाना। जिस ओर से हवा आती हो, उस ओर जाना (विशेषत नाव के लिये)। हवा बाँधना = (१) लबी चौडी बातें कहना। शेखी हाँकना। बढ बढकर बोलना। (२) बिना जड की बात कहना। गप हाँकना। झूठी बातें जोडकर कहना। हवा पलटना, फिरना या बदलना = (१) दूसरी ओर की हवा चलने लगना। (२) दशातर होना। दूसरी स्थिति वा अवस्था होना। हालत बदलना। हवाबदली = स्थानपरिवर्तन। जलवायु परिवर्तन। उ०—हवाबदली के इरादे से आज ही यहाँ आया हूँ।—जिप्सी, पृ० १। हवा भर जाना = खुशी या घमड से फूल जाना। हवा बिगडना = (१) सक्रामक रोग फैलना। बवा या मरी फैलना। (२) रीति या चाल बिगडना। बुरे विचार फैलना। दिमाग मे हवा भर जाना = सिर फिरना। उन्माद होना। बुद्धि ठीक न रहना। हवा देना = (१) मुँह से हवा छोडकर दहकाना। फूँकना (आग के लिये)। (२) बाहर हवा मे रखना। ऐसे स्थान मे लाना जहाँ खूब हवा लगे। जैसे—इन कपडो को कभी कभी हवा दे दिया करो। (३) झगडे का बढाना। झगडा उकसाना। हवा सा = बिल्कुल महीन या हलका। हवा लगते गल जाना = जरा सी बात मे इधर का उधर हो जाना। रच मात्र बाधा से डाँवाडोल हो जाना। लेश मात्र प्रतिकूल प्रभाव से नष्ट हो जाना। उ०—हम नही हैं फूल जो वे दे ममल। है न ओले जो हवा लगते गले।—चुभते०, पृ० १६। हवा से लडना = किसी से अकारण लडना। हवा से बातें करना = (१) बहुत तेज दौडना या चलना। (२) आप ही आप या व्यर्थ बहुत बोलना। हवा लगना = (१) हवा का झोका बदन पर पडना। वायु का स्पर्श होना। (२) वात रोग से ग्रस्त होना। (३) उन्माद होना। सिर फिर जाना। बुद्धि ठीक न रहना। (४) आसेब, प्रेत आदि का आवेश होना। प्रेताविष्ट होना। (५) किसी के प्रभाव मे आना। (किसी की) हवा लगना = किसी की सगत का प्रभाव पडना। सुहबत का असर होना। किसी के दोषो का किसी मे आना। जैसे,—तुम्हे भी उसी की हवा लगी। हवा हो जाना = (१) झटपट चल देना। भाग जाना। (२) बहुत तेज दौडना या चलना। जैसे,—चाबुक पडते ही वह घोडा हवा हो जाता है। (३) न रह जाना। एक बारगी गायब हो जाना। अभाव हो जाना। जैसे,—बहुत आशा लगाए थे, पर सारी बातें हवा हो गई। उ०—गुजारे के लिये मोटी रकम पेंशन मे मिलनेवाली है वह भी हवा हो जायगी।—किन्नर०, पृ० २४। हवा होना = दे० 'हवा हो जाना'। उ०—यह कहकर शहसवार हवा हुआ।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ६०। कही की हवा खाना = कही जाना। (किसी को) कही की हवा खिलाना = कही भेजना। जैसे,—तुम्हें जेलखाने की हवा खिलावेंगे।

२ भूत। प्रेत। (जिनका शरीर वायव्य माना जाता है)। ३ अच्छा नाम। प्रभाव। प्रसिद्धि। ख्याति। ४, व्यापारियो या

महाजनो मे धाक। वडप्पन या उत्तम व्यवहार का विश्वास। साख।

मुहा०—हवा उखडना = (१) नाम न रह जाना। प्रसिद्ध न रहना। (२) साख न रह जाना। बाजार मे विश्वास उठ जाना। हवा बँधना = (१) अच्छा नाम हो जाना। लोगो के बीच प्रसिद्ध हो जाना। (२) बाजार मे साख होना। व्यवहार मे लोगो के बीच अच्छी धारणा होना।

५ किसी बात की सनक। धुन। ६ इच्छा। स्पृहा आकाक्षा (को०)। ७ लोभ। लालच (को०)।

हवाई१—वि०[अ० अथवा अ० हवा + हिं० ई (प्रत्य०)] १ हवा का। वायु सबधी। २ हवा मे चलनेवाला। जैसे,—हवाई जहाज। ३ बिना जड का। जिसमे सत्य का आधार न हो। कल्पित या झूठ। निर्मूल। जैसे,—हवाई खबर, हवाई बात।

यौ०—हवाई किला = अयथार्थ बात। अव्यावहारिक चोचला। हवाई खबर = झूठी सूचना। अफवाह। हवाई महल = दे० 'हवाई किला'। हवाई बात = दे० 'हवाई खबर'।

मुहा०—हवाई किले बनाना = अयथार्थ कल्पनाएँ करना। अव्यवहार्य योजना बनाना। हवाई महल बनाना = दे० 'हवाई किले बनाना'।

हवाई२—सज्ञा स्त्री० हवा मे कुछ दूर तक बडे झोंक से जाकर बुझ जानेवाली एक प्रकार की आतशबाजी। बान। आसमानी। उ०—सत्त नाम लै उडै पलीता, हरदम चढत हवाई।—कबीर श०, भा०३, पृ० ४६।

मुहा०—(मुँह पर) हवाइयाँ उडना = चेहरे का रग फीका पड जाना। आकृति से भय, लज्जा या उदासी प्रकट होना। विवर्णता होना। (मुँह पर) हवाइयाँ छूटना = दे० (मुँह पर) 'हवाइयाँ उडना'। उ०—ऐसा फरमाइशी कहकहा लगाया कि छम्मी जान के मुँह पर हवाइयाँ छूटने लगी।—फिसाना०, भा० १, पृ० ५। हवाई गुम होना = घबडा जाना। अक्ल गायब हो जाना। हवाई छोडना = आतिशबाजी छोडना।

हवाई अड्डा—सज्ञा पुं० [हिं० हवाई + अड्डा] हवाई जहाज के उडने और उतरने का स्थान। वायुयान केंद्र।

हवाई आक्रमण—सज्ञा पुं० [हिं० हवाई + सं० आक्रमण] दे० 'हवाई हमला'।

हवाईगर—सज्ञा पुं० [फा० हवाईगीर] दे० 'हवागीर'। उ०—सिकलीगर हवाईगर सुनार लुहार। धीमर चमार एई छत्तीस पउनिया।—अर्ध०, पृ० ४।

हवाई जहाज—सज्ञा पु० [हिं० हवाई + अ० जहाज़] वायुयान।

हवाई डाक—सज्ञा पुं० [हिं० हवाई + डाक] हवाई जहाज से जानेवाली डाक या चिट्ठी पत्री।

हवाई फायर, हवाई फैर—सज्ञा पुं० [हिं० हवाई + अ० फायर] लोगो को डराने के लिये हवा मे झूठी बदूक चलाना।

हवाई बदूक—सज्ञा स्त्री० [हिं० हवाई + फा० बदूक] झूठी बदूक। नकली बदूक।

हवाई बेडा—सज्ञा पुं० [हिं० हवाई + बेडा] युद्धक विमानो का दल [को०]।

हवाई मार्ग—सज्ञा पु० [हिं० हवाई + स० मार्ग] आकाश मे हवाई जहाज के आने जाने का रास्ता।

हवाई युद्ध—सज्ञा पुं० [हिं० हवाई + सं० युद्ध] हवाई जहाजो द्वारा आकाश मे होनेवाली लडाई।

हवाई हमला—सज्ञा पु० [हिं० हवाई + अ० हमला] आकाश मार्ग से हवाई जहाजो द्वारा होनेवाला आक्रमण।

हवाखोरी—सज्ञा स्त्री० [अ० हवा + फा० खोर + ई (प्रत्य०)] १ हवा खाना। टहलना। खुली हवा मे घूमना। उ०—सवेरे ही लाला मदनमोहन हवाखोरी के लिये कपडे पहन रहे थे।—श्रीनिवास ग्र०, पृ० २१५। २ निरर्थक घूमना। आवारागर्दी करना।

हवागीर—सज्ञा पुं० [फा०] आतशबाजी के बान बनानेवाला।

हवाचक्की—सज्ञा स्त्री० [हि० हवा + चक्की] आटा पीसने की वह चक्की जो हवा के जोर से चलती हो। पवन चक्की।

हवादार१—वि० [फा०] जिसमे हवा आती जाती हो। जिसमे हवा आने जाने के लिये काफी छेद, खिडकियाँ या दरवाजे हो। जैसे,—हवादार कमरा, हवादार मकान, हवादार पिँजरा।

हवादार२—सज्ञा पुं० वह हलका तख्त जिसपर बैठाकर बादशाह को महल या किले के भीतर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते थे।

हवादार†३—वि० [अ० हवा + फा० दार] १ शुभचितक। हितू। हित चाहनेवाला। खैरख्वाह। उ०—वली मोसिल मे था इक शख्स मक्कार। उठा जाहिर मे वह शह का हवादार।—दक्खिनी०, पृ० १६०। २ मित्र। दोस्त (को०)।

हवादारी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ हितचितन। कल्याणकामना। शुभकामना। २ दोस्ती। मैत्री [को०]।

हवान—संज्ञा पुं० [अ० हवा, हवाई] एक प्रकार की छोटी तोप जो जहाजो पर रहती है। कोठी तोप। (लश०)।

हवाना—सज्ञा पुं० [हवाना द्वीप] तवाकू का एक भेद। अमेरिका के हवाना नामक स्थान की तवाकू।

हवापानी—सज्ञा पुं० [हि०] १ जलवायु। आबोहवा। २. सैर सपाटा। घूमना फिरना।

हवाबाज—सज्ञा पुं० [अ० हवा + फा० बाज] १ वायुयान। उ०—हवाबाज ऊपर घहराते हैं। डाक सैनिक आते जाते है।—बेला, पृ० ५२।

हवाबाजी—सज्ञा स्त्री० [अ० हवा + फा० बाजी] हवाबाज का काम। वायुयान चलाने का काम, पद या पेशा [को०]।

हवाम—सज्ञा पुं० [अ०] जमीन के भीतर बिल मे रहनेवाले प्राणी। जैसे,—साँप, चूँटा, मूपक आदि [को०]।

हवाल—सज्ञा पुं० [अ० अहवाल] १ हाल। दशा। अवस्था। २ गति। परिणाम। उ०—बकरी पाती खाति है ताकी काढी

खाल। जो नर बकरी खात हैं तिनका कौन हवाल।—कबीर (शब्द०)। ३ सवाद। समाचार। वृत्तात।

यौ०—हाल हवाल = हालचाल।

हवालदार—संज्ञा पुं० [हि०] दे० 'हवलदार'।

हवाला—संज्ञा पुं० [अ० हवालह्] १ किसी बात की पुष्टि के लिये किसी के वचन या किसी घटना की ओर सकेत। प्रमाण का उल्लेख। २ उदाहरण। दृष्टात। मिसाल। नजीर।

क्रि० प्र०—देना।

३ अधिकार या कब्जा। सुपुर्दगी। जिम्मेदारी।

मुहा०—(किसी के) हवाले करना = किसी को दे देना। किसी को सुपुर्द करना। सौंपना। जैसे,—जिसकी चीज है, उसके हवाले करो। किसी के हवाले पडना = वश मे आ जाना। चगुल मे आ जाना। उ०—अव ह्वै हैं कहा अरविद सो आनन इदु के आय हवाले परघो।—पद्माकर (शब्द०)। (किसी के) हवाले रहना = अधिकार मे रहना। उ०—सो मुलुक कौ पैसा सब गोपालदास के हवाले रहे।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० २४२।

हवालात—संज्ञा पुं०, स्त्री० [अ०] १ पहरे के भीतर रखे जाने की क्रिया या भाव। नजरबदी। २ अभियुक्त की वह साधारण कैद जो मुकदमे के फैसले के पहले उसे भागने से रोकने के लिये दी जाती है। हाजत। ३ वह मकान जिसमे ऐसे अभियुक्त रखे जाते हैं।

क्रि० प्र०—मे देना।

मुहा०—हवालात करना = पहरे के भीतर बद करना।

हवालाती—वि० [अ०] १ जो हवालात मे रखा जा चुका हो। जो हवालात में रह चुका हो। २ जो हवालात मे हो।

हवाली—संज्ञा पुं० [अ०] आस पास की जगह। चारो ओर का स्थान [को०]।

हवाली मवाली—संज्ञा पुं० [अ० हवाली + अनु० या अ० मवाली] साथी। हमराही। आसपास के यार दोस्त। उ०—मिर्जा और साजिद और अख्तर और हवाली मवाली की एक न चली।—सैर० पृ० ३६।

हवास—संज्ञा पुं० [अ०] १ इद्रियाँ। २ सवेदन। ३ चेतना। संज्ञा। होश। सुध।

यौ०—हवासगुम = हतसज्ञ। स्तभित। होश हवास।

मुहा०—हवास गुम होना = होश ठिकाने न रहना। भय आदि से स्तभित होना। ठक रह जाना। हवास पैतरा होना = दे० 'हवास गुम होना। उ०—काने को देखते ही दारोगा साहब के हवास पैतरा हुए। काटो तो लहू नही वदन मे।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ५४।

हवासवाख्ता—वि० [अ० हवास + फा० बाख्तह्] जो होश हवास मे न हो। घवड़ाया हुआ [को०]।

हवि शेष—संज्ञा पुं० [सं०] हवि का बचा हुआ भाग [को०]।

हवि श्रवा—संज्ञा पुं० [सं० हवि श्रवस्] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम [को०]।

हवि—संज्ञा पुं० [सं० हविस्] १ देवता के निमित्त अग्नि मे दिया जानेवाला घी, जौ या इसी प्रकार की सामग्री। वह द्रव्य जिसकी आहुति दी जाय। हवन की वस्तु। २ आज्य। घी (को०)। ३ जल। पानी (को०)। ४ शिव (को०)। ५ यज्ञ (को०)। ६ भोजन (को०)।

हविर्गी—संज्ञा स्त्री० [सं०] हवनकुड।

हविरद—वि० [सं०] हवि का भक्षण करनेवाला [को०]।

हविरशन—संज्ञा पुं० [सं०] १ घी अथवा द्रव्य सामग्री। २ पावक। अग्नि। कृशानु। ३ चित्रक नाम का एक वृक्ष [को०]।

हविराहुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] हवि की आहुति [को०]।

हविर्गंधा—संज्ञा स्त्री० [सं० हविर्गन्धा] शमीवृक्ष [को०]।

हविर्गृह—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हविर्गेह' [को०]।

हविर्गेह—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ यज्ञ हो। यज्ञस्थल [को०]।

हविर्दान—संज्ञा पुं० [सं०] हवि प्रदान करना।

हविर्धानी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कामधेनु। सुरभी।

हविर्धूम—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि मे हवि देने से उत्पन्न धूम।

हविर्निर्वपण पात्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह पात्र जिससे हवि प्रदान करते हैं। श्रुवा [को०]।

हविर्भाज्—वि० [सं०] हविष्य ग्रहण करनेवाला [को०]।

हविर्भुज्—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्नि। २ विष्णु, शिव आदि देवता जो हवि को प्राप्त करते है (को०)। ३ क्षत्रियों के पितृ वर्ग (को०)।

हविर्भू—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हवन की भूमि। २ कर्दम की पुत्री जो पुलस्त्य की पत्नी थी।

हविर्मंथ—संज्ञा पुं० [सं० हविर्मन्थ] गनियारी का वृक्ष। गणिकारी नाम का वृक्ष [को०]।

हविर्यज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] घृत का हवन करना। घी की आहुति जो एक प्रकार का यज्ञ है [को०]।

हविर्याजी—संज्ञा पुं० [सं० हविर्याजिन्] यज्ञ करानेवाला। हवन करानेवाला, पुरोहित [को०]।

हविर्वर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक वर्ष अर्थात् भूखड का नाम। २ अग्नीध्र के एक पुत्र का नाम [को०]।

हविर्हुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] हवि का हवन। आज्य की आहुति [को०]।

हविष्पात्र—संज्ञा पुं० [सं०] हवि रखने का बरतन। हवि का पात्र।

हविष्मती—संज्ञा स्त्री० [सं०] कामधेनु।

हविष्मान्[1]—वि० [सं० हविष्मत्] [वि० स्त्री० हविष्मती] जो हवन करता हो। हवन करनेवाला।

हविष्मान्[2]—संज्ञा पुं० १ अगिरा के एक पुत्र का नाम। २ छठे मन्वतर के सप्तर्षियो मे से एक। ३ पितरो का एक गण।

हविष्यंद—संज्ञा पुं० [सं० हविष्यन्द] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

हविष्य¹—वि० [सं०] १ हवन करने योग्य। २ जो हविष्य पाने के योग्य हो (को०)। ३ जिसकी आहुति दी जानेवाली हो।

हविष्य²—संज्ञा पुं० १ वह वस्तु जो किसी देवता के निमित्त अग्नि मे डाली जाय। बलि। हवि। उ०—देव दम्भ के महामेध मे सब कुछ ही बन गया हविष्य।—कामायनी, पृ० ७। २ घृत। घी (को०)। ३ नीवार। मुन्यन्न। तिन्नी का चावल (को०)। ४ घृत मिश्रित चावल, यव आदि साकल्य (को०)।

हविष्यभक्ष, हविष्यभुज्¹—वि० [सं०] यज्ञ की सामग्री का भक्षण करनेवाला।

हविष्यभक्ष, हविष्यभुज्²—संज्ञा पुं० अग्नि। पावक (को०)।

हविष्यशन्न—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ मे शेष बचे हुए पदार्थ।

हविष्यान्न—संज्ञा पुं० [सं०] वह अन्न या आहार जो यज्ञ के समय किया जाय। खाने की पवित्र वस्तुएँ। जैसे,—जौ, तिल, मूँग, चावल इत्यादि।

हविष्याशी—वि०, संज्ञा पुं० [सं० हविष्याशिन्] दे० 'हविष्यभक्ष','हविष्यभुज्' (को०)।

हविस‡—संज्ञा स्त्री० [अ० हवस] दे० 'हवस'।

हवीत—संज्ञा पुं० [देश० ?] लकडियो का बना हुआ एक यंत्र जिसमे लगर डालने के समय जहाज की रस्सियाँ बाँधी या लपेटी जाती है (लश०)।

हवेली—संज्ञा स्त्री०[अ०] १ पक्का बडा मकान। प्रासाद। हर्म्य। २ पत्नी। स्त्री। जोरू।

हवोला(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० हिल्लोल] लहर। उ०—महल तिस दोला रागूं के हवोला।—रघु० रू०, पृ० २३८।

हव्य¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ घृत। घी। २ आहुति। ३. हवन की सामग्री। वह वस्तु जिसकी किसी देवता के अर्थ अग्नि मे आहुति दी जाय। जैसे,—घी, जौ, तिल आदि।

विशेष—देवताओ के अर्थ जो सामग्री हवन की जाती है, वह हव्य कहलाती है और पितरो को जो अर्पित की जाती है वह कव्य कहलाती है।

यौ०—हव्य कव्य = देवताओ और पितरो को क्रमश दी जानेवाली आहुति।

हव्य²—वि० हवनीय। हवन के योग्य (को०)।

हव्यप—संज्ञा पुं० [सं०] तेरहवें मन्वतर के सप्तर्षियो मे एक ऋषि का नाम (को०)।

हव्यपाक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह पात्र जिसमे यज्ञान्न पकाया जाय। २ वह वस्तु जो हवन करने के लिये पकाई जाय। चरु (को०)।

हव्यभुज्—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि।

हव्ययोनि—संज्ञा पुं० [सं०] देवता।

हव्यलेही—संज्ञा पुं० [सं० हव्यलेहिन्] अग्नि का एक नाम (को०)।

हव्यवाद्—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि देवता।

हव्यवाह्, हव्यवाह—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्नि। २ अश्वत्थ वृक्ष। पीपल जिसकी लकडी की अरणी बनती है।

हव्याश, हव्याशन—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि।

हशफा—संज्ञा पुं० [अ० हशफह्, हश्फह्] लिंग का अग्रभाग (को०)।

हशम—संज्ञा पुं० [अ०] १ नौकर चाकर। सेवक। २ मालिक के लिये युद्ध मे लडनेवाले नौकर। भृति सैनिक (को०)।

हशमत—संज्ञा स्त्री०[अ०] १ गौरव। श्रेष्ठता। बडाई। वैभव। ऐश्वर्य। उ०—क्या माल खजाने मुल्क मकाँ क्या दौलत हशमत फौजें लश्कर।—राम० धर्म०, पृ० ६०। २ प्रताप। रोब। दबदबा (को०)। ३ नौकर चाकर, टहलुए आदि (को०)। ४ फौज। सेना। लावलश्कर।

हशरात—संज्ञा पुं० [अ० हशरह का बहु व०] वर्षा ऋतु मे पैदा होनेवाले कीडे मकोडे (को०)।

हश्त—वि० [फा०] अष्ट। आठ। उ०—कर नियत अव्वल मुज कूँ क्या हश्त तूं आखिर। पाया मगर हूँ पाँच जनम छूट ई जनम ते।—दक्खिनी०, पृ० ३२६।

यौ०—हश्तगुश्त, हश्तअगुश्त = आठ अगुल का। हश्तगोशा = अष्टकोणात्मक। हश्तपहलू = आठ पहल का। हश्तबिहिश्त = आठो स्वर्ग।

हश्तुम—वि० [फा०] अष्टम। आठवाँ (को०)।

हश्र—संज्ञा पुं० [अ०] १ कयामत। महाप्रलय। २ विपत्ति। मुसीबत। उ०—कर दूँगा अभी हश्र बर्पा देखिए जल्लाद। धब्बा य मेरे खूँ का छुडाना नही अच्छा।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ८५४।

मुहा०—हश्र ढाना = कयामत लाना। आफत पैदा करना। हश्र बरपा करना = दे० 'हश्र ढाना'। हश्र बरपा होना = आफत पैदा होना। उपद्रव मचना।

हसतिका—संज्ञा स्त्री० [सं० हसन्तिका] अँगीठी। गोरसी। बोरसी।

हसती¹—संज्ञा स्त्री० [सं० हसन्ती] १ अँगीठी। गोरसी। बोरसी। उ०—कालागुरु की सुरभि उडाकर मानो मगल तारे। हँसे हसती मे खिलखिलकर अनलकुसुम अगारे।—साकेत, पृ० २८३। २. वह आधार जिसपर दीपक रखा जाय। दीवट (को०)। ३ मल्लिका का एक प्रकार या भेद (को०)। ४ एक प्रकार की शाकिनी (को०)।

हसती²—वि० स्त्री० हास्ययुक्त। हँसती हुई (को०)।

हस—संज्ञा पुं० [सं०] १ हँसी। हास। २ आनद। उल्लास। खुशी। ३ अवमानना। अपहास। उपहास (को०)।

हसत्¹—वि० [सं०] हँसता हुआ। उपहास करता हुआ।

हसत्²—संज्ञा स्त्री० वह अग्निपात्र (चूल्हा) या बोरसी जो इधर उधर ले जाने के लायक हो (को०)।

हसत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हस्ती] दे० 'हस्ती'। उ०—हसत चढ़े चारण हुवै, माया सरसत मेल।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० ७५।

हसद—संज्ञा पुं० [अ०] ईर्ष्या । डाह ।

हसन¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ हास करना । हँसना । २ परिहास । दिल्लगी । ३ विनोद । ४ स्कद के एक अनुचर का नाम ।

हसन²—संज्ञा पुं० [अ०] अली के दो बेटो मे से एक जो अजीद के साथ लडाई करने मे मारे गए थे और जिनका शोक शीया मुसलमान मुहर्रम मे मनाते है । इनके दूसरे भाई का नाम हुसेन था । उ०—एक दिवस जबरैल जो आए । हसन हुसेन को दुख सुनाए ।—हिंदी प्रेमा०, पृ० २३३ ।

हसन³—वि० १ सुदर । सौदर्ययुक्त । शोभन । प्रियदर्शन । २ अच्छा । श्रेष्ठ [को०] ।

हसनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अँगीठी । गोरसी । बोरसी । [को०] ।

हसनीमणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] अग्नि । आग [को०] ।

हसनीय—वि० [सं०] हँसने योग्य । उपहास्य [को०] ।

हसब¹—अव्य० [अ०] अनुसार । रू से । मुताबिक । हस्ब । जैसे—हसब हैसियत, हसब कानून ।

यौ०—हसब हाल = समयानुसार । उपयुक्त । उ०—गजल जवानी शुतुर्मुर्ग परी हसब हाल अपने के ।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ७९० ।

हसब²—संज्ञा पुं० १ गणना । गिनती । शुमार । २ अदाज । अनुमान ३ बडप्पन । बडाई । श्रेष्ठता [को०] ।

यौ०—हसबोनसब = कुलीनता और श्रेष्ठता । वश एव प्रतिष्ठा ।

हसब³—संज्ञा स्त्री० जलाने की लकडी । ईंधन [को०] ।

हसम(पु)—संज्ञा पुं० [अ० हशम] स्वामी का काम करनेवाले नौकर । वेतनभोगी सेवक । नौकर चाकर । उ०—अब गढ कोट हसम पुर जेते । तुम रक्षक हम जानत तेते ।—ह० रासो, पृ० ७७ ।

हसर¹—संज्ञा पुं० [अ० हजर] रिसाले के सवारो के तीन भेदो मे से एक जो हल्के होते हैं और जिनके अस्त्र तथा घोडे भी हलके होते है । अन्य दो भेद लैंसर और ड्रैगून है ।

हसर²—संज्ञा पुं० [अ० हस्र] दे० 'हस्र' ।

हसरत—संज्ञा स्त्री० [अ०]१ रज । अफसोस । शोक । २ दुख । कष्ट । मुसीबत (को०) । ३ नैराश्य । नाउम्मेदी । ४ अरमान । इच्छा । चाह । लालसा । उ०—न आया वो दिलवर औ आई घटा । तो हसरत की बस दिल पै छाई घटा ।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ४८६ ।

यौ०—हसरत भरा = अरमानो से भरा हुआ । आकाक्षायुक्त । जैसे,—हसरत भरा दिल । हसरत भरी जिंदगी ।

मुहा०—हसरत टपकना = अरमान या इच्छा व्यक्त होना । हसरत निकलना = अकाक्षा या इच्छा पूरी होना । हसरत निकालना = मन की लालसा पूरी करना । हसरत बाकी रहना = इच्छा अपूर्ण रहना । हसरत मिटाना = हवस पूरी करना ।

हसावर†—संज्ञा पुं० [हिं० हस] खाकी रग की एक बडी चिडिया ।

विशेष—इस पक्षी की गरदन एक हाथ लबी और चोंच केले के फल के समान होती है । इसके बगल के कुछ पर और पैर लाल होते हैं ।

हसिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हँसने की क्रिया या भाव । हँसी । २ दिल्लगी । मजाक । ३. उपहास । ठट्ठा ।

हसित¹—वि० [सं०] १ जो हँसा गया हो । जिसपर लोग हँसते हो । २ जो हँस रहा हो । हँसता हुआ । ३ विकसित । प्रफुल्लित । ४ जो हँसा हो ।

हसित²—संज्ञा पुं० १ हँसना । हास । हास्य । २ हँसी । ठट्ठा । उपहास । ३ कामदेव का धनुष ।

हसिता—वि० [सं० हसितृ] हँसने या उपहास करनेवाला [को०] ।

हसिर—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चूहा ।

हसीन—वि० [अ०] १ सुदर । रूपवान । खूबसूरत । २. प्रियदर्शन । शोभन । खुशनुमा ।

यौ०— हसीन तरीन = अत्यत रूपवान । सुदरतम ।

हसीना—संज्ञा स्त्री० [अ० हसीनह्] सुदरी स्त्री । खूबसूरत औरत [को०] ।

हसीर¹—संज्ञा पुं०[अ०] चटाई । बोरिया । उ०—पगफूर बी मैं फकीर बी मैं । जरबफ्त जुबूँ हसीर बी मैं ।—दक्खिनी०, पृ० १७३ ।

हसीर²—वि० १ दुखी । रजीदा । २ क्लात । थका माँदा [को०] ।

हसील†—वि० [देश०] सीधा । सरल ।

हसुली—संज्ञा स्त्री० [हिं० हँसुली] दे० 'हँसुली' । उ०—स्त्री पुरुष दोनो ही हसुली और छाप पहनते थे ।—हिं० पु० स०, पृ० २१ ।

हस्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ कर । हाथ । २ हाथी की सूँड । ३ कुहनी से लेकर उँगली के छोर तक की लबाई या नाप । एक नाप जो २४ अगुल की होती है । हाथ । ४ हाथ का लिखा हुआ लेख । लिखावट । ५ एक नक्षत्र जिसमें पाँच तारे होते हैं और जिसका आकार हाथ का सा माना गया है । विशेष—दे० 'नक्षत्र' । ६ सगीत या नृत्य मे हाथ हिलाकर भाव बताना ।

विशेष—यह सगीत का सातवाँ भेद कहा गया है और दो प्रकार का होता है—लयाश्रित और भावाश्रित ।

७ वासुदेव के एक पुत्र का नाम । ८ छद का एक चरण । ९ गुच्छ । समूह । जैसे,—केश हस्त । १० मदद । सहयोग । सहायता (को०) । ११ एक वृक्ष का नाम (को०) । १२ चमडे की धौंकनी । भाथी (को०) । १३ आभास । सकेत । प्रमाण (को०) ।

हस्त²—वि० जो हस्त नक्षत्र मे उत्पन्न हो [को०] ।

हस्तक—संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथ । २ सगीत का ताल । ३ प्राचीन काल का एक बाजा जो हाथ मे लेकर बजाया जाता था । करताल । ४ हाथ से बजाई हुई ताली । उ०—वहु हाव भाव हस्तक सुदेव । यह चद्र कला पातुर सुभेव ।—ह० रासो, पृ० १११ । ५ एक हाथ या २४ अगुल की माप (को०) । ६ हाथ का अवलबन, टेक या सहारा (को०) । ७ हाथो की स्थिति (को०) ।

हस्तकमल—संज्ञा पुं० [सं०] १ कमल के समान हाथ । २ कमल जो हाथ मे लिया हुआ हो (को०) ।

हस्तकला—संज्ञा स्त्री० [सं०] हाथ से किया हुआ कलापूर्ण कार्य । दस्तकारी ।

हस्तकार्य, हस्तकार्य्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथ का काम। हाथ से किया हुआ कार्य। २. दस्तकारी।

हस्तकोहली—संज्ञा स्त्री० [सं०] वर और कन्या की कलाई मे मगल-सूत्र बाँधने की क्रिया या रीति।

हस्तकौशल—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी काम मे हाथ की सफाई। किसी काम मे हाथ चलाने की निपुणता। २ हाथ से किया हुआ कलापूर्ण काम। दस्तकारी।

हस्तक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हाथ का काम। २ दस्तकारी। ३ हाथ से इंद्रिय सचालन। सरका कूटना। हस्तमैथुन।

हस्तक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] किसी काम मे हाथ डालना। किसी होते हुए काम मे कुछ कार्रवाई कर बैठना या बात भिडाना। दखल देना। जैसे,—हमारे काम मे तुम हस्तक्षेप क्यो करते हो ? हम जैसे चाहेंगे वैसे करेंगे।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

हस्त खस्त(पु)—वि० [फा० हस्त (=है - अस्तित्वयुक्तता) + खस्त (= खस्ता) क्षणभगुर। नश्वर। उ०—यह तन हस्त खस्त खराब खातिर अदेसा बिसियार।—रै० बानी, पृ० २६।

हस्तग—वि० [सं०] १ जो किसी के अधिकार मे जानेवाला हो। २ किसी के हाथ मे जानेवाला [को०]।

हस्तगत—वि० [सं०] १ हाथ मे आया हुआ। प्राप्त। लब्ध। हासिल। जैसे,—वह पुस्तक किसी प्रकार हस्तगत करो। २ अपने पक्ष, अधिकार या वश मे आया हुआ। अधिकृत। वशीभूत।

क्रि० प्र०—करना। —होना।

हस्तगामी—वि० [सं० हस्तगामिन्] १ किसी के हाथ या अधिकार मे जानेवाला। हस्तग। २ दे० 'हस्तगत' [को०]।

हस्तगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम [को०]।

हस्तग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथ पकडना। २ पाणिग्रहण। विवाह।

हस्तग्राह[1]—वि० [सं०] हाथ ग्रहण करानेवाला। सहारा देनेवाला।

हस्तग्राह[2]—संज्ञा पुं० हाथ मे ग्रहण करना [को०]।

हस्तग्राहक—वि० [सं०] हाथ पकडनेवाला। सहारा चाहनेवाला। मदद की याचना करनेवाला [को०]।

हस्तचापल्य—संज्ञा पुं० [सं०] हाथ की फुरती। हाथ की सफाई।

हस्तचालन—संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथ चलाना या हिलाना। २ हाथो से सकेत करना। हाथ से इशारा करना।

हस्तजोडी—संज्ञा पुं० [सं० हस्तज्योडि] करजोडी नामक पौधा। विशेष दे० 'हत्याजडी'।

हस्तज्योडी—संज्ञा पुं० [सं० हस्तज्योडि] करजोडी नामक पौधा। विशेष दे० 'हत्याजडी' [को०]।

हस्ततल—संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथ का तल भाग। हथेली। २ हाथी की सूँड का एकदम निचला भाग [को०]।

हस्तताल—संज्ञा पुं० [सं०] हाथ से ताली बजाना। करताली [को०]।

हस्ततुला—संज्ञा पुं० [सं०] हाथ मे तौलने या वजन करने की छोटी तराजू। काँटा [को०]।

हस्तत्र—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हस्तत्राण'।

हस्तत्राण—संज्ञा पुं० [सं०] अस्त्रो के आघात से रक्षा के लिये हाथ में पहना जानेवाला दस्ताना।

हस्तदक्षिण[1]—वि० [सं०] १ दाहिनी ओर स्थित। दाहिनी ओर बैठा हुआ। २ ठीक। सही [को०]।

हस्तदक्षिण[2]—संज्ञा पुं० दाहिना हाथ [को०]।

हस्तदीप—संज्ञा पुं० [सं०] हाथ का दीपक। हाथ की लालटेन या दीपक।

हस्तदोप—संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथ से डाँडी मारने या नाप मे फर्क डालने का अपराध। २ हाथ से लिखने मे गलती हो जाना। उ०—कजली त्योहार मे कृत्यादि के विरुद्ध शुक्ला तृतीया का उल्लेख नि सदेह हस्तदोष वा भ्रम का होना प्रमाणित करता है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३४४।

हस्तधारण—संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथ पकडना। २ हाथ का सहारा देना। ३ पाणिग्रहण करना। विवाह करना। ४. वार को हाथ पर रोकना।

हस्तपर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का ताड।

हस्तपाद—संज्ञा पुं० [सं०] हाथ और पैर। हाथपाँव।

हस्तपुच्छ—संज्ञा पुं० [सं०] मणिबध के नीचे का हिस्सा। पजा [को०]।

हस्तपृष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] हथेली का पिछला या उलटा भाग।

हस्तप्रद—वि० [सं०] मदद देनेवाला। सहायता करनेवाला। मददगार। सहायक [को०]।

हस्तप्राप्त—वि० [सं०] दे० 'हस्तगत'।

हस्तप्राप्य—वि० [सं०] १ हाथ से प्राप्त करने योग्य। जहाँ तक हाथ पहुँच सके। २ जो सरलता से प्राप्त हो सके।

हस्तबिंब—संज्ञा पुं० [सं० हस्तबिम्ब] शरीर मे सुगधित द्रव्यो का लेपन।

हस्तभ्रंश—संज्ञा पुं० [सं०] किसी काम को करने के अवसर पर हाथ का बहक जाना।

हस्तभ्रंशी—वि० [सं० हस्तभ्रंशिन्] १ हाथ से गिरा हुआ। जो हाथ से गिरा या फिसल गया हो। २ जो हाथ मे आकर निकल गया हो। ३ काम करने मे जिसका हाथ बहक जाता हो [को०]।

हस्तभ्रष्ट—वि० [सं०] दे० 'हस्तभ्रंशी' [को०]।

हस्तमणि—संज्ञा पुं० [सं०] कलाई मे पहनने का रत्न। कलाई मे पहनने का रत्नाभरण।

हस्तमैथुन—संज्ञा पुं० [सं०] हाथ के द्वारा इंद्रिय का सचालन। सरका कूटना। हस्तक्रिया।

हस्तयोग—संज्ञा पुं० [सं०] किसी काम मे हाथो का प्रयोग करना या हाथ का अभ्यास होना [को०]।

हस्तरेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हथेली मे पडी हुई लकीरें।

विशेष—हाथ मे पड़ी हुई इन रेखाओ के विचार से सामुद्रिक मे सबद्ध व्यक्ति के सबध मे जानकारी और शुभाशुभ फल का

निर्णय होता है। इसके विद्वान् केवल हस्तरेखाओं के आधार पर जन्मकुडली का निर्माण और भूत तथा भविष्य कथन करते हैं।

हस्तरोधी—संज्ञा पुं० [सं० हस्तरोधिन्] शिव का एक नाम।

हस्तलक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १ हथेली की रेखाओं द्वारा शुभाशुभ आदि की सूचना। २ अथर्ववेद का एक प्रकरण।

हस्तलाघव—संज्ञा पुं० [सं०] किसी काम मे हाथ चलाने की निपुणता। हाथ की फुरती। २ हाथ की सफाई।

हस्तलिखित—वि० [सं०] हाथ का लिखा हुआ (ग्रंथ आदि)।

हस्तलिपि—संज्ञा स्त्री० [सं०] हाथ की लिखावट। लेख।

हस्तलेख—संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथ की लिखावट। २ हाथ के लिखे हुए प्राचीन ग्रंथ।

हस्तलेपन—संज्ञा पुं० [सं०] हाथ से लेप करना।

हस्तवत्—वि० [सं०] हाथवाला अर्थात् दक्ष। चतुर। कुशल। प्रवीण।

हस्तवर्ती—वि० [सं० हस्तवर्तिन्] हाथ मे का। हाथ मे स्थित। जो हाथ मे हो। दे० 'हस्तगत'।

हस्तवात रक्त—संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमे हथेलियो मे छोटी छोटी फुसियाँ निकलती हैं और धीरे धीरे सारे शरीर मे फैल जाती हैं।

हस्तवाप—संज्ञा पुं० [सं०] हाथो से बाण आदि शस्त्रास्त्र का संचालन या क्षेपण [को०]।

हस्तवाम—वि० [सं०] १ बाईं दिशा मे अथवा गलत ढंग से स्थित। २ जो सही या उचित न हो। त्रुटिपूर्ण [को०]।

हस्तवारण—संज्ञा पुं० [सं०] वार या आघात को हाथ पर रोकना।

हस्तविन्यास—संज्ञा पुं० [सं०] हाथो का विन्यास या स्थिति [को०]।

हस्तविषमकारी—संज्ञा पुं० [सं० हस्तविषमकारिन्] हाथ की सफाई से बाजी जीतना।

हस्तवेश्य—संज्ञा पुं० [सं०] हाथो का श्रम।

हस्तसंज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हाथ का इशारा या संकेत।

हस्तसंवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] हाथ से मर्दन या मालिश करना।

हस्तसिद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हाथ का या शारीरिक श्रम। हाथ से काम करना। २ भाड़ा। भृति। मजदूरी [को०]।

हस्तस्थ, हस्तस्थित—वि० [सं०] जो हाथ मे हो। हाथ मे ग्रहण किया हुआ [को०]।

हस्तसूत्र, हस्तसूत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूत का कंगन जिसमे कपड़े की पोटली बँधी होती है और जो विवाह के समय वर और कन्या की कलाई मे पहनाया जाता है। २ वलय। कंकण। कटक (को०)।

हस्तस्वस्तिक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० हस्तस्वस्तिका] हाथों को स्वस्तिक के आकार मे छाती पर रखना। हाथो से स्वस्तिक का आकार बनाना [को०]।

हस्तहार्य—वि० [सं०] १ जो हाथो से ग्रहण करने योग्य हो। २ जो हाथ से ग्रहण किया जा सके। ३ व्यक्त। सुस्पष्ट। स्फुट। प्रकट [को०]।

हस्तांकित—वि० [सं० हस्ताङ्कित] हाथ से लिखा हुआ।

हस्तांगुलि—संज्ञा स्त्री० [सं० हस्ताङ्गुलि] हाथ की अंगुलियाँ।

हस्तांजलि—संज्ञा स्त्री० [सं० हस्ताञ्जलि] हाथ का संपुट। हथेलियों की अंजलि। हथेलियों को मिलाकर बनाई हुई अंजुलि [को०]।

हस्तांतर—संज्ञा पुं० [सं० हस्तान्तर] दूसरा हाथ। अन्य हाथ।

हस्तांतरण—संज्ञा पुं० [सं० हस्तान्तरण] संपत्ति या अधिकार का दूसरे व्यक्ति के हाथ जाना या दूसरे को देना। कोई वस्तु अन्य व्यक्ति के हाथ मे देना [को०]।

हस्तांतरित—वि० [सं०] १ जो दूसरे को प्रदत्त हो। दूसरे को दिया हुआ। उ०—चक हस्तांतरित कर चक्रपाल चलने लगा और उसने आभार के साथ उन चरवाहों पर विदा की दृष्टि की।—चक्रकार, पृ० २६। २ जो एक से दूसरे के हाथ मे गया या दिया गया हो। जैसे,—संपत्ति, अधिकार आदि।

हस्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] हस्त नामक नक्षत्र। दे० 'हस्त'-४।

हस्ताक्षर—संज्ञा पुं० [सं०] अपने हाथ से लिखा हुआ अपना नाम जो किसी लेख आदि के नीचे लिखा जाय। दस्तखत।

हस्ताग्र—संज्ञा पुं० [सं०] हाथ का अगला भाग। हाथ की अंगुलियाँ।

हस्तादान[1]—संज्ञा पुं० [सं०] हाथ से किसी वस्तु को ग्रहण करना।

हस्तादान[2]—वि० जो हाथ मे ग्रहण करे।

हस्ताभरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथ का आभरण या गहना। हाथ का आभूषण। २ एक साँप [को०]।

हस्तामलक—संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथ मे लिया हुआ आँवला। २ वह वस्तु या विषय जिसका अंग प्रत्यंग हाथ मे लिए हुए आँवले के समान, अच्छी तरह समझ मे आ गया हो। वह चीज या बात जिसका हर एक पहलू साफ साफ जाहिर हो गया हो। जैसे,—यह पुस्तक पढ़ जाइए, सारा विषय हस्तामलक हो जायगा।

हस्तामलकवत्—वि० [सं०] जो हस्तामलक के समान हो। जो अच्छी तरह समझ मे आ गया हो।

हस्तारूढ—वि० [सं०] जो बिलकुल साफ या व्यक्त हो।

हस्तालंब—संज्ञा पुं० [सं० हस्तालम्ब] हाथ का सहारा। सहारा [को०]।

हस्तालंबन—संज्ञा पुं० [सं० हस्तालम्बन] किसी का सहारा प्राप्त करना। भरोसा पाना [को०]।

हस्तावलंब—संज्ञा पुं० [सं० हस्तावलम्ब] सहारा। आश्रय [को०]।

हस्तावलग्न—वि० [सं०] हाथो मे या हाथ पर लगा हुआ।

हस्तावाप—संज्ञा पुं० [सं०] हस्तावार। दे० 'हस्तत्राण'।

हस्तावार—संज्ञा पुं० [सं० हस्त + आवार (= रक्षा)] एक प्रकार का हस्तत्राण जो धनुष की प्रत्यंचा की रगड़ से बाँह को बचाने के लिये धारण किया जाता है। उ०—महाराज, हस्तावार सहित धनुष यह है।—शकुंतला, पृ० १२७।

हस्ताहस्ति—संज्ञा स्त्री० [स०] हाथाबाँही । हाथापाई । मुठभेड । चाँटे या घूँसे की लडाई । गुत्थमगुत्थी ।

हस्ताहस्तिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'हस्ताहस्ति' ।

हस्ति—सज्ञा पुं० [स० हस्तिन्] दे० 'हस्ती' ।

हस्तिकद—सज्ञा पुं० [स० हस्तिकन्द] एक पौधा जिसका कद खाया जाता है। हाथीकद ।

हस्तिक—सज्ञा पुं० [स०] १ हाथी के आकार का खिलौना। खेल या क्रीडा के लिये बना हुआ हाथी । २ हाथियो का समूह। हस्तियूथ । ३ मामूली नौकर चाकर । साधारण कोटि का सेवक [को० ।

हस्तिकक्ष—सज्ञा पुं० [स०] सुश्रुत मे वर्णित एक प्रकार का जहरीला कीडा ।

हस्तिकक्ष्य—सज्ञा पुं० [सं०] १ सिंह । २ व्याघ्र । बाघ ।

हस्तिकरज—सज्ञा पुं० [सं० हस्तिकरञ्ज] बडी जाति का करज या कजा । विशेष दे० 'करज' ।

हस्तिकरजक—सज्ञा पुं० [स० हस्तिकरञ्जक] दे० 'हस्तिकरज' ।

हस्तिकरणक—सज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार हथियारो का वार रोकने का एक प्रकार का पटल या ढाल ।

हस्तिकर्ण—सज्ञा पुं० [स०] १ अडी का पेड । एरड । रेड । २ टेसू का पेड । पलाश । ३ कच्चू । बडा । ४ शिव के गणो मे से एक का नाम । ५ एक राक्षस का नाम । ६ गण देवताओ मे से एक ।

हस्तिकर्णकदल—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पलाश या टेसू ।

हस्तिकर्णिक—सज्ञा पुं० [स०] एक योगासन । हस्तिकर्णिका [को०] ।

हस्तिकर्णिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] हठयोग का एक आसन ।

हस्तिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन बाजा जिसमे बजाने के लिये तार लगा रहता था । एक प्रकार का तत्रवाद्य ।

हस्तिकोलि—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का बेर का फल [को०] ।

हस्तिकोशातकी—संज्ञा स्त्री० [स०] तरोई या तोरई का एक भेद [को०] ।

हस्तिगिरि—सज्ञा पुं० [स०] १ काची नाम की नगरी जो मुक्तिदायक और सप्तपुरियो मे एक है । २ एक पर्वत का नाम [को०] ।

हस्तिघात—सज्ञा पुं० [सं०] हाथी को मारना । हाथी का वध [को०] ।

हस्तिघोषा, हस्तिघोषातकी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की तरोई । बडी तरोई । वृहद्घोषा [को०] ।

हस्तिघ्न¹—वि० [सं०] हस्तिघात करनेवाला । जो हाथी का वध कर सके । हाथी को मारनेवाला [को०] ।

हस्तिघ्न²—सज्ञा पुं० मनुज । मनुष्य । आदमी [को०] ।

हस्तिचार—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का शस्त्र जो शरभ की आकृति का होता था और जिससे हस्तियो को भयभीत करके भगा देते थे [को०] ।

हस्तिचारिणी—सज्ञा स्त्री० [स०] महाकरज । दे० 'करज' ।

हस्तिचारी—सज्ञा पु० [स० हस्तिचारिन्] हाथी चलानेवाला । महावत । पीलवान [को०] ।

हस्तिजागरिक—संज्ञा पुं० [सं०] हाथियो का निरीक्षक । हाथियो की देखभाल करनेवाला व्यक्ति [को०] ।

हस्तिजिह्वा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ हाथी की जीभ । २ दाहिनी आँख की एक नस ।

हस्तिजीवी—सज्ञा पुं० [सं० हस्तिजीविन] महावत । पीलवान [को०] ।

हस्तिदत—सज्ञा पु० [सं० हस्तिदन्त] १ हाथीदाँत । २ दीवार मे गडी हुई कपडे आदि टाँगने की खूँटी । ३ मूलिका । मूली ।

यौ०—हस्तिदतफला = एर्वारु । फूट । ककडी ।

हस्तिदतक—सज्ञा पुं० [स० हस्तिदन्तक] मूलिका मूली [को०] ।

हस्तिदती—सज्ञा पु० [स० हस्तिदन्ती] मूली ।

हस्तिद्वयस—वि० [स०] जो हाथी की तरह ऊँचा हो । हाथी के समान बडा या लबा [को०] ।

हस्तिनख—सज्ञा पुं० [स०] १. हाथी के नाखून । २ वह बुर्ज या टीला जो गढ की दीवार के पास उन स्थानो पर बना होता है जहाँ चढाव होता है ।

हस्तिनपुर, हस्तिनापुर—सज्ञा पुं० [स०] चद्रवशियो या कौरवो की राजधानी जो वर्तमान दिल्ली नगर से कुछ दूर पर थी ।

पर्या०—गजाह्वय । नाग साह्वय । नागाह्व । हस्तिनीपुर ।

विशेष—यह नगर हस्तिन् नामक राजा का बसाया हुआ था । इसका स्थान दिल्ली से उत्तरपूर्व २८ कोस पर निश्चित किया गया है ।

हस्तिनासा—सज्ञा स्त्री० [स०] हाथी की सूँड । नागनासा ।

हस्तिनिषदन—सज्ञा पुं० [स०] योग का एक आसन [को०] ।

हस्तिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मादा हाथी । हथिनी । २ एक प्रकार का सुगधित द्रव्य । हट्टविलासिनी । ३ कामशास्त्र के अनुसार स्त्री के चार भेदो मे से सबसे निकृष्ट भेद ।

विशेष—इसका शरीर स्थूल, ओठ और उँगलियाँ मोटी और आहार, कामवासना अन्य प्रकार की सब स्त्रियो से अधिक कही गई है । अन्य भेद पद्मिनी, चित्रिणी और शखिनी है । विशेष के लिये वे शब्द द्रष्टव्य ।

हस्तिप—सज्ञा पुं० [स०] १ हाथी पर बैठनेवाला या उसे अपने अनुकूल करनेवाला व्यक्ति । २ हाथी की देखभाल करनेवाला व्यक्ति । महावत ।

हस्तिपक—सज्ञा पुं० [स०] महावत । फीलवान । उ०—सावत्सर, अश्ववाहक, हस्तिपक, क्रीडक, नर्म्म सचिव ।—वर्ण०, पृ० ६ ।

हस्तिपत्र—सज्ञा पुं० [स०] हस्तिकद । हाथीकद [को०] ।

हस्तिपद—सज्ञा पुं० [स०] हाथी के पैर । सबसे विशाल पैर ।

हस्तिपर्णिका—सज्ञा स्त्री० [स०] तुरई । तरोई । कोषातकी ।

हस्तिपर्णिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] तरोई ।

हस्तिपर्णी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ ककडी । २ मूर्वा या मोरटा नामक लता (को०) । विशेष दे० 'मूर्वा' ।

हस्तिपादिका—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की ओषधि ।

हस्तिपाल, हस्तिपालक—सज्ञा पु० [स०] हाथीवान् । फीलवान [को०] ।

हस्तिपिंड—सज्ञा पुं० [सं० हस्तिपिण्ड] एक नाग असुर [को०] ।

हस्तिपिप्पली—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक ओषधि । गजपिप्पल ।

हस्तिपृष्ठक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन नगर जिसके पास कुटिका नाम की नदी बहती थी ।

हस्तिप्रधान—वि० [सं०] कौटिल्य के अनुसार जो मुख्यत हाथी पर ही निर्भर हो [को०] ।

हस्तिप्रमेह—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का प्रमेह जिसमे मूत्र के साथ हाथी के मद का सा पदार्थ बिना वेग के तार सा निकलता है और पेशाब ठहर ठहरकर होता है ।

हस्तिप्रमेही—वि० [सं० हस्तिप्रमेहिन्] जिसे हस्तिप्रमेह रोग हो [को०] ।

हस्तिबंध—संज्ञा पुं० [सं० हस्तिबन्ध] वह स्थान जहाँ हाथियों को फँसाया जाता है [को०] ।

हस्तिबंधनी—संज्ञा स्त्री० [सं० हस्तिबन्धनी] कौटिल्य अर्थशास्त्रानुसार वह सिखाई हुई हथिनी जो जगली हाथियो को फँसाकर बंधन मे डालती है [को०] ।

हस्तिभद्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक नाग असुर [को०] ।

हस्तिमकर—संज्ञा पुं० [सं०] दरियाई हाथी । जलहस्ती [को०] ।

हस्तिमद—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी के गडस्थल या कनपटी मे बहनेवाला मद । दान [को०] ।

हस्तिमयूरक—संज्ञा पुं० [सं०] एक पौधा । दे० 'अजमोदा' [को०] ।

हस्तिमल्ल—संज्ञा पुं० [सं०] १ ऐरावत । २ गणेश । ३ पाताल-स्थित आठ प्रधान नागो मे से एक नाग जिसे शख भी कहते हैं । ४ राख का ढेर । ५ धूल की वर्षा । ६ पाला । हिमपात ।

हस्तिमाया—संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्रजाल । माया [को०] ।

हस्तिमुख—संज्ञा पुं० [सं०] १ गजानन । गणपति । गणेश । २ एक राक्षस का नाम (को०) ।

हस्तिमेह—संज्ञा पुं० [सं०] प्रमेह रोग का एक भेद । दे० 'हस्तिप्रमेह' ।

हस्तियूथ—संज्ञा पुं० [सं०] हाथियो का झुंड या दल ।

हस्तिराज—संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथियो के झुंड का प्रधान हाथी । २ बहुत विशाल हाथी [को०] ।

हस्तिरोध्रक—संज्ञा पुं० [सं०] लोध का वृक्ष । लोध्र वृक्ष [को०] ।

हस्तिरोहणक—संज्ञा पुं० [सं०] महाकरज । दे० 'करज' [को०] ।

हस्तिलोध्रक—संज्ञा पुं० [सं०] लोध या लोध्र वृक्ष [को०] ।

हस्तिवक्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] गजानन । गणेश [को०] ।

हस्तिवर्चस—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी की गरिमा, गति, शान और उसके शरीर की विशालता [को०] ।

हस्तिवाह—संज्ञा पुं० [सं०] १ अकुश जिससे महावत हाथी का नियत्रण करता है । २ पीलवान । महावत । हस्तिपक [को०] ।

हस्तिविषाणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] केला । कदली [को०] ।

हस्तिव्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार हाथियो का एक व्यूह ।

विशेष—इस व्यूह मे आक्रमण करनेवाले हाथी उरस्य मे, तेज भागनेवाले (अपवाह्य) मध्य मे और व्याल (मतवाले) पक्ष मे रहते हैं ।

हस्तिशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] फीलखाना । हथिसार [को०] ।

हस्तिशुंड—संज्ञा पुं० [सं० हस्तिशुण्ड] हाथी की सूँड । सूँड [को०] ।

हस्तिशुंडा—संज्ञा स्त्री० [सं० हस्तिशुण्डा] दे० 'हस्तिशुंडी' ।

हस्तिशुंडी—संज्ञा स्त्री० [सं० हस्तिशुण्डी] इंद्रवारुणी लता । विशेष दे० 'रुद्रायण' ।

हस्तिश्यामाक—संज्ञा पुं० [सं०] १ काला सावाँ । २ बाजरा ।

हस्तिषड्गण—संज्ञा पुं० [सं०] छह हाथियो का झुंड [को०] ।

हस्तिसोमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी का नाम [को०] ।

हस्तिस्नान—संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथियो का नहाना । २ व्यर्थ का काम । दे० 'गजस्नान' । (लाक्ष०)

हस्तिहस्त—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी का हाथ अर्थात् सूँड [को०] ।

हस्ती[1]—संज्ञा पुं० [सं० हस्तिन्] [स्त्री० हस्तिनी] १ हाथी ।

विशेष—हेमचंद्र ने कहा है कि हस्ती चार प्रकार के कहे गए हैं—भद्र, मद्र, मृग और मिश्र । पृथ्वीराज रासो मे भद्र, मद, मृग, और साधारण ये चार भेद कहे है । भोजराजकृत युक्तिकल्पतरु मे इनके सबध मे विशेष विवरण द्रष्टव्य है ।

२ अजमोदा । ३ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम । ४ चद्रवंशी राजा सुहोत्र के एक पुत्र जिन्होने हस्तिनापुर नगर बसाया था ।

हस्ती[2]—वि० १ जिसको हाथ हो । हस्तयुक्त । हाथवाला । २ सूँड-वाला । शुंडयुक्त ३ कार्यकुशल । चतुर । होशियार [को०] ।

हस्ती[3]—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ अस्तित्व । होने का भाव । जैसे,—इसमे तो उनकी हस्ती ही मिट जायगी । २ बडा व्यक्तित्व ।

मुहा०—(किसी की) क्या हस्ती है=क्या गिनती है । कोई महत्व नहीं । तुच्छ है । हस्ती मिटना = (१) अस्तित्व समाप्त होना । (२) रोबदाब खतम होना । हस्ती मिटाना = (१) नष्ट करना । (२) व्यक्तित्व समाप्त करना । हस्ती रखना = (१) अस्तित्व रखना (२) रोबदाब होना । दबदबा होना । हस्ती होना = दे० 'हस्ती रखना' ।

हस्ते—अव्य० [सं०] १ हाथ से । मारफत । जैसे,—१०० रुपये उसके हस्ते मिले । २ हाथ मे । हस्त शब्द का सस्कृत मे सप्तमी (अधिकरण कारक) का रूप ।

हस्तेकरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथ मे या मारफत करना । २ पाणि-ग्रहण करना । विवाह [को०] ।

हस्त्य—वि० [सं०] १ हाथ से सबधित । हाथ सबधी । २ हाथ के द्वारा या हाथ से किया हुआ । शारीरिक (श्रम आदि) । ३ हाथ से दिया हुआ या प्रदत्त [को०] ।

हस्त्यध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] हाथियो का प्रधान निरीक्षक [को०] ।

हस्त्यशन—संज्ञा पुं० [सं०] लोबान का पौधा ।

हस्त्याजीव—संज्ञा पुं० [सं०] फीलवान । महावत [को०] ।

हस्त्यायुर्वेद—संज्ञा पुं० [सं०] हथियो की चिकित्सा का शास्त्र ।

हस्त्यारोह—संज्ञा पुं० १ हाथी पर सवार व्यक्ति । हाथी पर बैठने-वाला व्यक्ति । २. फीलवान । महावत [को०] ।

हस्त्यारोही[1]—वि० [सं० हस्त्यारोहिन्] हाथी पर बैठने या सवार होनेवाला ।

हस्त्यारोही[2]—संज्ञा पुं० हाथी का सवार। वह व्यक्ति जनो हाथी पर बैठा हुआ हो [को०]।

हस्त्यालुक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का कद [को०]।

हस्पताल—संज्ञा पुं० [अ० हॉस्पिटल] अस्पताल। चिकित्सालय। दवाखाना। उ०—निदान जो वे मरी, हस्पताल मे गईं।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १९१।

हस्व—वि० [अ०] अनुसार। माफिक।

यौ०—हस्बे कायदा = नियम, कायदे के अनुसार। हस्बे कानून = विधि या कानून के मुताबिक। हस्बे जाबिता = (१) नियमानुसार। विधि के अनुकूल। हस्बे जैल = नीचे लिखे अनुसार। हस्बे दस्तूर = विधि या नियम के अनुसार। हस्बे मशा = इच्छानुकूल। हस्बे-मामूल = यथानियम। हस्बे रिवाज = रिवाज और रस्म के अनुसार। हस्बे हाल = दे० 'हसब हाल'। हस्बे हुक्म = आज्ञानुसार। हस्बे हैसियत = (१) हैसियत या वित्त के मुताबिक। २ शक्ति या सामर्थ्य के अनुसार। हस्बे हौसला = हिम्मत या उत्साह के माफिक।

हस्र[1]—वि० [सं०] १ हँसनेवाला। मुस्करानेवाला। हासयुक्त। २ अज्ञ। मूर्ख। बेवकूफ [को०]।

हस्र[2]—संज्ञा पुं० [अ०] अवलबन। निर्भरता। सहारा [को०]

हस्सम(पु)—संज्ञा पुं० [अ० हशम] स्वामी के लिये लडनेवाले सेवक। सेना। दे० 'हसम'। उ०—हस्सम हय गय मुक्कि तक्कि षट्टू वन धाइय।—पृ० रा०, १०। १६।

हहर—संज्ञा स्त्री० [हिं० हहरना] १ थर्राहट। कँपकँपी। २ भय। डर। ३ चकपकाने या चकित होने की स्थिति। ४ घबराहट। ५ प्रसन्नता या हर्ष के कारण होनेवाली हडबडी।

हहरना—क्रि० अ० [अनु०] १ काँपना। थरथराना। उ०—पहल पहल जौ रूई झाँपै। हहरि हहरि अधिकौ हिय काँपै।—जायसी (शब्द०)। २ डर के मारे काँप उठना। दहलना। बहुत डर जाना। थर्राना। उ०—नाथ भलो ' रघुनाथ मिले रजनीचर सेन हिये हहरी।—(शब्द०)। ३ दग रह जाना। चकित रह जाना। आश्चर्य से ठक रह जाना। ४ कोई बात बहुत अधिक देखकर क्षुब्ध होना। डाह करना। सिहाना। उ०—काम बन नदन की उपमा न देत बनै, देखि कै विभव जाको सुरतरु हहरत।—कोई कवि (शब्द०)। ५ कोई वस्तु बहुत अधिक देखकर दग होना। अधिकता देखकर चकपकाना। उ०—ठहर ठहर परे कहरि कहरि उठै, हहरि हहरि हर सिद्ध हँसे हेरि कै।—तुलसी (शब्द०)। ६ परेशान होना। हैरान होना। ७ हर्ष और आह्लादपूर्वक किसी व्यक्तिविशेष से मिलना।

सयो० क्रि०—उठना।—जाना

हहराना[1]—क्रि० अ० [अनु०] १ काँपना। थरथराना। २ डर के मारे काँपना। दहलना। थर्राना। उ०—चचल चपेट चरनचकोट चाहैं, हहरानी फौजैं भहरानी जातुधान की।—तुलसी (शब्द०)। ३ डरना। भयभीत होना। ४ दे० 'हरहराना'।

हहराना[2]—क्रि० स० दहलाना। भयभीत करना।

हहल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] भयकर विष। मारक विष। हलाहल [को०]।

हहल[2]—संज्ञा स्त्री० [अनु० हहर] हहरने की स्थिति, भाव या क्रिया। भय। खौफ। कँपकँपी। थरथराहट। थर्राहट।

हहलाना—क्रि० अ० [अनु०] दे० 'हहरना'।

हहलाना—क्रि० अ०, क्रि० स०, दे० 'हहराना'।

हहव—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध मतानुसार एक नरक [को०]।

हहा[1]—संज्ञा पुं० [सं०] एक गधर्व जाति। हाहा [को०]।

हहा[2]—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ हँसने का शब्द। ठट्ठा। जैसे,—क्यो 'हहा हहा' करते हो ? उ०—तुलसी सुनि केवट के बरबैन हँसे प्रभु जानकी ओर हहा है।—तुलसी। २ दीनतासूचक शब्द। गिडगिडाने का शब्द। अत्यत अनुनय विनय का शब्द। ३ विनती। चिरौरी। गिडगिडाहट।

क्रि० प्र०—करना।

मुहा०—हहा खाना = बहुत गिडगिडाना। बहुत विनती करना। हहा खवाना(पु) = विनती कराना। निवेदन कराना। उ०—तेरे मनाइबे बीच उनिंदित, सोच मै क्यो पलकैं तू मिलाई। काल के लालन भूखे हुते, सुभली करी तैंने हहा तौ खवाई।—नट०, पृ० ८८।

४ हाहाकार।

हागर—संज्ञा पुं० [सं० हाङ्गर] एक बृहदाकार मत्स्य [को०]।

हान्न—संज्ञा पुं० [सं० हान्त्र] १ मृत्यु। मरण। मौत। २ युद्ध। लडाई। सघर्ष। ३ एक दैत्य का नाम राक्षस [को०]।

हाबीरी—संज्ञा स्त्री० [सं० हाम्बीरी] एक प्रकार की रागिनी।

हास—वि० [सं०] हस का या हस सबधी।

हाँ[1]—अव्य [सं० आम्] १ स्वीकृतिसूचक शब्द। समतिसूचक शब्द। वह शब्द जिसके द्वारा यह प्रकट किया जाता है कि हम यह बात करने को तैयार है। जैसे,—प्रश्न—तुम वहाँ जाओगे ? उत्तर—'हाँ'। २ एक शब्द जिसके द्वारा यह प्रकट किया जाता है कि वह बात जो पूछी जा रही है, ठीक है। जैसे,—प्रश्न—तुम वहाँ गए थे ? उत्तर—हाँ।

मुहा०—हाँ करना = (१) स्वीकार होना। समत होना। राजी होना (२) ठीक मान लेना। यह मानना कि कोई बात ऐसी ही है। हाँ न करना = इधर उधर की बात कहकर जल्दी स्वीकार न करना। न मानना। न राजी होना। हाँ हाँ करना = (१) स्वीकारसूचक शब्द कहना। मान लेना। जैसे,—अभी तो हाँ हाँ कर रहा है, पीछे धोखा देगा। (२) बात न काटना। 'ठीक है' 'ठीक है' कहना। (३) खुशामद करना। हाँ जी हाँ जी करना = (१) खुशामद करना। चापलूसी करना। स्वार्थ या दबाव वश समर्थन करना। उ०—जिसके घर मे रहना। ऊँट बिलैया ले गई तो हाँ जी हा जी कहना। (कहावत)। हाँ मे हाँ मिलाना = (१) बिना विचार किए बात का समर्थन करना। प्रसन्न करने के लिये किसी के मन की बात कहना। (२) खुशामद करना। चापलूसी करना।

३ कोई बात स्वीकार न करने पर भी दूसरे रूप मे स्वीकार सूचित करनेवाला शब्द। वह शब्द जिसके द्वारा किसी बात का दूसरे रूप मे, या अशत माना जाना प्रकट किया जाता है। यह बात तो नही है या ऐसा तो मैं नही कर सकता पर इतना हो सकता है, या इतनी बात मानी जा सकती है। जैसे,—(क) तुम्हें हम अपने साथ तो न ले चलेंगे, हाँ, पीछे से आ सकते हो। (ख) हमारे सामने तो वह कुछ नही कहता, हाँ औरो से कहता हो तो नही जानते। ४ मना करना, वारण करना, वरजना आदि अर्थो मे प्रयुक्त शब्द।

हाँ(पु)†[२]—अव्य० [स० इह] इहाँ। दे० 'यहाँ'।

हाँक—सज्ञा स्त्री० [सं० हुङ्कार] १ किसी को बुलाने के लिये जोर से निकाला हुआ शब्द। जोर की पुकार। उच्च स्वर से किया हुआ सबोधन।

यौ०—हाँक पुकार।

मुहा०—हाँक देना या हाँक लगाना = जोर से पुकारना। हाँक मारना = दे० 'हाँक देना' या 'हाँक लगाना'। हाँक पुकारकर कहना = डके की चोट कहना। सबके सामने निर्भय और निस्सकोच कहना। सबको सुनाकर कहना।

२ लडाई मे धावा या आक्रमण करते समय गर्वसूचक चिल्लाहट। डाँट। दपट। ललकार। हुकार। गर्जन। उ०—रजनिचर घरनि घर गर्भ अर्भक स्रवत सुनत हनुमान की हाँक बाँकी।—तुलसी (शब्द०)। ३ बढावे का शब्द। उत्साह दिलाने का शब्द। बढावा। उ०—तुलसी उत हाँक दसानन देत, अचेत भै बीर को धीर धरै।—तुलसी (शब्द०)। ४ सहायता के लिये की हुई पुकार। दुहाई। उ०—बसत श्री सहित बैकुठ के बीच गजराज की हाँक पै दौरि आए।—सूर (शब्द०)।

हाँकना—क्रि० स० [हि० हाँक + ना (प्रत्य०)] १ जोर से पुकारना। चिल्लाकर बुलाना। २ ललकारना। लडाई मे धावे के समय गर्व से चिल्लाना। हुकार करना। उ०—भूमि परे भट घूमि कराहत, हाँकि हने हनुमान हठीले।—तुलसी (शब्द०)। ३ बढ बढकर बोलना। लबी चौडी बातें कहना। सीटना। जैसे—(क) हमारे सामने वह इतना नही हाँकता। (ख) शेखी हाँकना। डीग हाँकना। (ग) वह दूकानदार बहुत दाम हाँकता है। ४ मुँह से बोलकर या चाबुक आदि मारकर जानवरो (घोडे, बैल आदि) को आगे बढाना। जानवरो को चलाना। जैसे,—बैल हाँकना। उ०—हाँकि हाँकि दलनि दनाइ दहपट्टी हते, बाजी औ बितु ड भु ड झूमत खरे जे हैं।—हम्मीर०, पृ० ५७। ५ खीचनेवाले जानवर को चलाकर गाडी, रथ आदि चलाना। गाडी चलाना। उ०—खोज मारि रथ हाँकहु ताता।—तुलसी (शब्द०)। ६ मारकर या बोलकर चौपायो को भगाना। चौपायो को किसी स्थान से हटाना। जैसे,—खेत मे गाएँ खडी है, हाँक दो।

सयो० क्रि०—देना।

७ पखा हिलाना। बीजन डुलाना। झलना। ८ पखे से हवा पहुँचाना। हवा करना। जैसे,—मुझे मत हाँको, उन लोगो को हाँको।

हाँका[१]—सज्ञा पुं० [हि० हाँकना] शेर आदि दरिंदे जानवरो के शिकार करने का एक ढग। विशेष दे० 'हुँकवा'।

हाँका(पु)[२]—सज्ञा पु० [हि० हाँक] दे० 'हाँक'।

हाँकारी—वि० [हि० हाँ + कारी] किसी बात पर हाँ कहनेवाला। किसी विचार पर स्वीकृति व्यक्त करनेवाला।

हाँगर—सज्ञा पुं० [स० हाङ्गर] एक प्रकार की बडी मछली।

हाँगा—सज्ञा पुं० [स० आङ्ग] १ शरीर का बल। बूता। ताकत।

मुहा०—हाँगा छूटना = बल काम न करना। साहस छूटना। हिम्मत न रहना।

२ जबरदस्ती। अत्याचार। धीगा धीगी। जैसे,—पुलिसवाले सबके साथ हाँगा करते हैं।

हाँगी—सज्ञा स्त्री० [हि० हाँ] हामी। स्वीकृति।

मुहा०—हाँगी भरना = हामी भरना। स्वीकार करना। मानना या अगीकार करना। उ०—छारि डारी पुलक, प्रसेद हू निवारि डारी, नेक रसना हू तें भरी न कछु हाँगी री। एते पै रह्यो न प्रान मोहन लटू पै भटू, टूक टूक ह्वै कै जो छटूक भई आँगरी।—पद्माकर (शब्द०)।

हाँडना[१]—क्रि० अ० [सं० हिण्डन] व्यर्थ इधर उधर फिरना। आवारा घूमना।

हाँडना[२]—वि० [वि० स्त्री० हाँडनी] हाँडनेवाला। व्यर्थ इधर उधर घूमनेवाला। आवारा फिरनेवाला। जैसे,—हाँडनी नारि।

हाँडी—सज्ञा पु० [सं० भाण्ड, हिं० हडा ('हडिका' प्राकृत से लिया प्रतीत होता है)] १ मिट्टी का मझोला बरतन जो बटलोई के आकार का हो। हँडिया।

मुहा०—हाँडी उबलना = (१) हाँडी मे पकाई जानेवाली चीज का गरम होकर ऊपर आना। (२) खुशी से फूलना। इतराना। हाँडी चढना या चढाना = कोई चीज पकाने के लिये हाँडी का आग पर रखा जाना। उ०—जैसे हाँडी काठ की चढै न दूजी बार—(शब्द०)। हाँडी पकना = (१) हाँडी मे पकाई जानेवाली चीज का पकना। (२) बकवाद होना। मुँह से बहुत बातें निकलना। (३) भीतर ही भीतर कोई युक्ति खडी होना। कोई षट्चक्र रचा जाना। कोई मामला तैयार किया जाना। जैसे,—भीतर ही भीतर खूब हाँडी पक रही है। किसी के नाम पर हाँडी फोडना = किसी के चले जाने पर प्रसन्न होना। बावली हाँडी = वह भोजन जिसमे बहुत सी चीजें एक मे मिल गई हो।

२ इसी आकार का शीशे का पात्र जो सजावट के लिये कमरे मे टाँगा जाता है और जिसमे मोमबत्ती जलाई जाती है।

हाँण(पु)†—सज्ञा स्त्री० [सं० हानि] दे० 'हानि'। उ०—सुख दुख मित्र उदासरूं ह्वै मिस सज्जण हाँण।—रघु० रू०, पृ० ६।

हाँता(पु)—वि० [स० हात (= छोडा हुआ)] [वि० स्त्री० हाँती] १ अलग किया हुआ। त्याग किया हुआ। छोडा हुआ।

२ दूर किया हुआ। हटाया हुआ। उ०—(क) प्रिया, वचन कस कहसि कुभाती। भीर प्रतीति प्रीति करिहाँती।—तुलसी (शब्द०)। (ख) जानत प्रीति रीति रघुराई। नाते सब हाँते करि राखत राम सनेह सगाई।—तुलसी (शब्द०)। (ग) कत, सुनु मत, कुल अन किए अत हानि, होतो कीजे हीय ते भरोसो भुज बीस को।—तुलसी (शब्द०)।

हाँथ(पु)—संज्ञा पुं० [स० हस्त, प्रा० हत्थ, हिं० हाथ] दे० 'हाथ'। उ०—कोउ कर जोरि कहत तुअ हाँथ निवाह।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ७२।

हाँन(पु)—संज्ञा स्त्री० [स० हानि] दे० 'हानि'। उ०—करै सिंह गुजार भारी भयाँन। सुनो प्राँनहारी डरै जीव हाँन।—ह० रासो, पृ० ३६।

हाँपना—क्रि० अ० [अनु० या सं० हाफिक] दे० 'हाँफना'।

हाँफना—क्रि० अ० [अनु० हँफ हँफ या स० हाफिक] कडी मिहनत करने, दौडने या रोग आदि के कारण जोर जोर से और जल्दी जल्दी साँस लेना। तीव्र श्वास लेना। जैसे—वह चार कदम चलता है तो हाँफने लगता है।

हाँफा—संज्ञा पुं० [हिं० हाँफना] हाँफने की क्रिया या भाव। तीव्र और क्षिप्र श्वास। जल्दी जल्दी चलती हुई साँस।

मुहा०—हाँफा छूटना = कडी मिहनत करने पर या रोगादि के कारण थोडा श्रम करने पर हाँफने लगना। उ०—जिन्हें चार पग चलने मे हाँफा छूटता।—प्रेमघन० भा० २, पृ० २८१।

हाँमैला—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की चिडिया।

हाँस†[१]—संज्ञा स्त्री० [स० हास] दे० 'हँसी'। उ०—स्याम गात सरोज आनन, ललित गति मृदु हाँस।—सतवाणी०, पृ० ६०।

हाँस(पु)[२]—संज्ञा पुं० [स० हंस] जीवात्मा। जीव। प्राण। दे० 'हस'। उ०—साज्या काल न छोडै पास। छूटै पिंड उडावै हाँस।—प्राण०, पृ० १।

हाँस(पु)[३]—संज्ञा स्त्री० [स० असली, हिं० हसली, हँसुली या देश०] दे० 'हंसली'। उ०—देखत अपनी औरत कूँ लाया गले। सो वाहाँ केरा हाँस भाया गले।—दक्खिनी०, पृ० ६२।

हाँसना(पु)‡—क्रि० अ० [स० हसन] दे० 'हँसना'।

हाँसल(पु)[१]—संज्ञा पु० [हिं० हाँस] घोडो का एक भेद। वह घोडा जिसका रग मेहँदी सा लाल और चारो पैर कुछ काले हो। कुम्मैत हिनाई। उ०—हाँसल गौर गियाह बखाने। - जायसी (शब्द०)।

हाँसल(पु)†[२]—संज्ञा पुं० [अ० हासिल] हासिल। लगान। कर। उ०—मह अघ दीघ हाँसल मोक।—रघु० रू०, पृ० १२२।

हाँसवर†—संज्ञा स्त्री० [हिं० हँसली] दे० 'हँसली'।

हाँसिल—संज्ञा स्त्री० [अ० हाजर] १ रस्सा लपेटने की गराडी। २ लगर की रस्सी। पागर। (लश्करी)।

क्रि० प्र०—तानना।

हाँसी—संज्ञा स्त्री० [स० हास्य] १ हँसी। हँसने की क्रिया या भाव। २. परिहास। हँसी ठट्ठा। दिल्लगी। मजाक। ठठोली। उ०—(क) निर्गुन कौन देस को वासी। ऊधो ! नेकु हमहिं समुझा-वहु, वूझति साँच न हाँसी।—सूर (शब्द०)। (ख) हमरे प्रान अघात होत है, तुम जानत हौ हाँसी।—सूर (शब्द०)। ३ उपहास। निंदा। उ०—(क) ऊधो, कही सो बहुरि न कहियो। हाँसी होन लगी या ब्रज मे, अनबोले ही रहियो।—सूर (शब्द०)। (ख) जेते ऐडदार दरबार सरदार सब ऊपर प्रताप दिल्लीपति को अभग भो। मतिराम कहै करवाल के कसैया केते गाडर से मूँड, जग हाँसी को प्रसग भो।—मतिराम (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

हाँसु(पु)—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक कठाभूषण। हँसुली। उ०—कचन कया सो रानी रहा न तोला माँसु। क्त कसौटी घालि कै चूरा गढै कि हाँसु।—जायसी ग्र०, पृ० १७०।

हाँसुल(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० हाँस ?] एक प्रकार का अश्व। कुम्मैत हिनाई। दे० 'हाँसल'। उ०—लील समुद चाल जग जानै। हाँसुल भँवर किआह बखानै।—जायसी ग्र० (गुप्त), पृ० १५०।

हाँ हाँ—अव्य० [हिं० अहाँ (= नही)] निषेध या वारण करने का शब्द। वह शब्द जिसे बोलकर किसी को कोई काम करने से चटपट रोकते हैं। जैसे,—हाँ हाँ ! यह क्या कर रहे हो ?

हा[१]—अव्य० [सं०] १ शोक, दुख, पीडा या निराशासूचक शब्द। २ आश्चर्य या आह्लादसूचक शब्द। ३ क्रोध, फटकार, व्यग्य-सूचक शब्द। ४ भयसूचक शब्द।

यौ०—हाकार = हा करनेवाला व्यक्ति या शोकादिसूचक हा शब्द की ध्वनि। हाकृत = हाय हाय की आवाज से भरा हुआ शोकसूचक रुदन। हा हत। हा हा।

हा[२]—संज्ञा पुं० हनन करनेवाला। मारनेवाला। वध या नाश करने-वाला। (यौगिक शब्दो के अत मे प्रयुक्त)। उ०—कौन शत्रु तैं हत्यो कि नाम शत्रुहा लिया ?—केशव (शब्द०)।

हाइ(पु)‡—अव्य० [हिं० हाय] दे० 'हाय'।

हाइड्रोजन—संज्ञा पु० [अ०] एक वायवीय तत्व जो जल का घटक है।

हाइड्रोसील—संज्ञा पुं० [अ०] अडकोश या फोते मे शरीर के विकृत जल का जमा होना। अडवृद्धि। फोते का वढना।

हाइफन—संज्ञा पुं० [अ०] एक विराम चिह्न जो एक मे समस्त दो या अधिक शब्दो के बीच मे लगाया जाता है। सामासिक चिह्न। जैसे,—रघुकुल-कमल-दिवाकर।

हाइभाइ(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० हाव + भाव] हावभाव। मुद्रा। भगिमा। उ०—वीर भोग वसुमती वीरभोगी वर चाहो। हाइभाइ कटाच्छ वीर वीरा तन साहौं।—पृ० रा०, १७।७४।

हाइल(पु)—वि० [देश०] दे० 'हायल'।

हाई—संज्ञा स्त्री० [स० घात] १ दशा। हालत। अवस्था। जैसे—अपनी हाई और पर छाई। २ ढग। घात। तौर। ढव। उ०—ऊधो, दीनी प्रीति दिनाई। बातनि सुहृद, करम कपटी के, चले चोर की हाई।—सूर (शब्द०)।

हाईकोर्ट—सज्ञा पुं० [अ०] हिंदुस्तान मे किसी प्रदेश या प्रांत की दीवानी और फौजदारी की सबसे बडी अदालत। सबसे बडा न्यायालय। उच्च न्यायालय।

विशेष—हिंदुस्तान के प्रत्येक बडे प्रदेश मे एक हाईकोर्ट है। जसे,—कलकत्ता हाईकोर्ट, इलाहाबाद हाईकोर्ट, आदि।

हाई ड्रोफोबिया—सज्ञा पु० [अ०] शरीर के भीतर एक प्रकार का उपद्रव या व्याधि जो पागल कुत्ते, गीदड आदि के काटने से होता है। इसमे मनुष्य प्यास के मारे व्याकुल रहता है, पर पानी सामने आने से चिल्लाकर भागता है। जलत्रास रोग। जलातक।

हाईस्कूल—सज्ञा पु० [अ०] अँगरेजी की वह वडी पाठशाला जिसमे दसवी कक्षा तक विश्वविद्यालय की पढाई के पहले की पढाई पूरी होती है।

हाउस—सज्ञा पु० [अ०] १ घर। मकान। जैसे,—वोर्डिंग हाउस, काँजी हाउस, कानीहाउस। २ कोठी। बडी दूकान। जैसे,—हाउस की दलाली। ३ सभा। मडली। जैसे,—हाउस आफ लार्ड् स।

हाउस आफ कामन्स—सज्ञा पु० [अ०] दे० 'कामनसभा'।

हाउस आफ लार्ड् स—सज्ञा पुं० [अ०] दे० 'लार्डसभा'।

हाऊ—सज्ञा पु० [अनु०] एक कल्पित भयानक जतु जिसका नाम बच्चो को डराने के लिये लिया जाता है। हौवा। भकाऊँ। जूजू। उ०—खेलन दूरि जात कित कान्हा। आजु सुन्यो वन हाऊ आयो तुम नहिं जानत नान्हा।—सूर (शब्द०)।

हाक(पु)—सज्ञा पु० [हिं० हाँक] पुकार। गर्जन। उ०—दादू धरती करते एक डग, दरिया करते फाल। हाकी पर्वत फाडते, सो भी खाए काल।—दादू०, पृ० ४०१।

हाकर—सज्ञा पुं० [अ० हॉकर] १ घूम घूमकर सामान बेचनेवाला व्यक्ति। फेरीवाला। फेरीदार। २ वह व्यक्ति जो घूम घूमकर। अखबार बेचता हो।

हाकल—सज्ञा पुं० [म०] एक छद का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे १५ मात्राएँ और अत मे एक गुरु होता है। इसके पहले और दूसरे चरण मे ११ और तीसरे तथा चौथे चरण मे १० अक्षर होते हैं।

हाकलिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] पद्रह अक्षरो का एक वर्णवृत्त।

हाकली—सज्ञा स्त्री० [स०] दस अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तीन भगण और एक गुरु होता है।

हाकिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] तत्र शास्त्रानुसार एक प्रकार की घोर देवी। (तत्र)।

हाकिम—सज्ञा पुं० [अ०] १ हुकूमत करनेवाला। शासक। गवर्नर। २ प्रधान अधिकारी। सरदार। बडा अफसर। ३ स्वामी। मालिक (को०)। ४ नरेश। राजा। बादशाह। उ०—तात सरूपी हाकिमा जिन अमल पसारा।—कबीर श०, भा० १, पृ० ५०।

यौ०—हाकिमे आला, हाकिमे वाला = उच्चाधिकारी। प्रधान अफसर। हाकिमे वक्त = तत्कालीन शासक। हाकिमे हकीकी = ईश्वर। परमात्मा।

मुहा०—हाकिम का कुत्ता = किसी हाकिम के अधीन वे छोटे कर्मचारी जो हाकिम से मिलने मे बाधा पैदा करें और बिना घूस लिए मिलने न दें।

हाकिमाना—वि० [अ० हाकिमानह्] १ हाकिम के ढग का। रोवदाब से युक्त। २ हाकिम से सबद्ध।

हाकिमी[1]—सज्ञा स्त्री० [अ० हाकिम + ई (प्रत्य०)] हाकिम का काम। हुकूमत। प्रभुत्व। शासन। उ०—कहूँ हाकिमी करत है, कहूँ बदगी आय। हाकिम बदा आप ही दूजा नही देखाय।—रसनिधि (शब्द०)।

हाकिमी[2]—वि० १ हाकिम का। हाकिम सबधी। २ हाकिम जैसा।

हाकी—सज्ञा पुं० [अ० हॉकी] एक खेल जिसमे एक टेढी लकडी या डडे से गेंद मारते हैं। चौगान की तरह का एक अँगरेजी खेल।

हागडदि(पु)—सज्ञा पुं० [देश०] हाहाकार।

हाजत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ जरूरत। आवश्यकता। उ०—न उसकूँ वजीर है न उसकूँ नजीर। न हाजत उसे है न ताज ओ सरीर।—दक्खिनी०, पृ० ११७। २ चाह। उ०—नहीं शमा व चिराग की हाजत। दिल है मुझ बज्म का दिया मेरा।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० ४२।

यौ०—हाजतख्वाह = इच्छा की पूर्ति चाहनेवाला। हाजतमद = (१) निर्धन। (२) इच्छुक। अभिलाषी। हाजत रवाँ = कामनाएँ पूरी करनेवाला।

३ पहरे के भीतर रखा जाना। हिरासत। हवालात।

मुहा०—हाजत मे देना = पहरे के भीतर देना। हवालात मे डालना। हाजत मे रखना = हवालात मे रखना।

४ शौच आदि की तीव्रता या वेग।

मुहा०—हाजत रफा करना = शौच जाना।

हाजती[1]—वि० [अ०] १ अभिलाषी। आकाक्षी। चाहनेवाला। २ जो हाजत मे रखा गया हो। हवालाती। ३ हाजतवाला।

हाजती[2]—सज्ञा स्त्री० वह चौकी जो रोगी के पलग के पास इसलिये लगा दी जाती है जिससे पाखाना और पेशाब करने मे रोगी को कष्ट न हो।

हाजमा—सज्ञा पुं० [अ० हाजमह्] पाचन क्रिया। पाचनशक्ति। भोजन पचने की क्रिया।

मुहा०—हाजमा खराब होना या हाजमा विगडना = अन्न न पचना।

हाजरी(पु)—वि० [अ० हाजिर] दे० 'हाजिर'। उ०—साँई सिरजनहार तूँ, तूँ पावन तूँ पाक। तूँ काइम करतार तूँ, तू हरी हाजरी आप।—दादू०, पृ० ५७५।

हाजिक—वि० [अ० हाजिक] १ दक्ष। प्रवीण। निपुण। २ किसी शास्त्र का अत्यत निपुण जानकार [को०]।

हाजिब—सज्ञा पुं० [अ०] १ चोबदार। दडधारी। २ भौह। भ्रू। ३ प्रहरी। द्वारपाल। उ०—यहाँ सब अपस का कहा उन हजूर। सुने बात सारी व हाजिब जरूर।—दक्खिनी०, पृ० २७०।

हाजिम—वि० [अ० हाजिम] १ हजम करनेवाला। भोजन पचानेवाला। पाचक। २ अग्रसोची। दूरदेश। बुद्धिमान (को०)।

हाजिर—वि० [अ० हाजिर] १ समुख उपस्थित । सामने आया हुआ । मौजूद । विद्यमान । जैसे,—(क) तुम उस दिन हाजिर नही थे । (ख) जो कुछ मेरे पास है, हाजिर है । २ कोई काम करने के लिये सनद्ध । प्रस्तुत । तैयार । जैसे,—मेरे लिये जो हुक्म होगा, मैं हाजिर हूँ ।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

मुहा०—हाजिर आना = हाजिर होना । हाजिर मे हुज्जत न होना = जो मौजूद हो, उसको प्रस्तुत या ग्रहण करने मे किसी प्रकार की हीलाहवाली न होना ।

३ परदेशी । शरणार्थी (को०) । ४ जो ऊँचा हो । उच्च (भूमि) । ५ मना करनेवाला (को०) ।

यौ०—हाजिरजामिन = अपराधी को न्यायालय मे उपस्थित करने की जिम्मेदारी लेनेवाला । हाजिर जामिनी = अपराधी को न्यायालय मे उपस्थित करने की जमानत । हाजिर दिमाग = (१) किसी बात की तह पहुँचकर ठीक राय देनेवाला । (२) तुरत उचित उत्तर देनेवाला । प्रत्युत्पन्नमति । हाजिरजवाव । हाजिरनाजिर, हाजिरोनाजिर = (१) ईश्वर । परमात्मा । (२) किसी स्थान पर उपस्थित और देखनेवाला । उपस्थित और द्रष्टा ।

हाजिरजवाव—वि० [अ० हाजिर जवाव] उत्तर देने मे निपुण । जोड की तोड बात कहने मे चतुर । बात का चटपट अच्छा जवाव देने मे होशियार । उपस्थितबुद्धि । प्रत्युत्पन्नमति । जैसे,—बीरवल बडे हाजिरजवाव थे ।

हाजिरजवाबी—सज्ञा स्त्री० [अ० हाजिरजवाबी या अ० हाजिरजवाव + हिं० ई (प्रत्य०)] चटपट उत्तर देने की निपुणता । उपस्थित बुद्धि । प्रत्युत्पन्नमतित्व । जैसे,—बीरवल की हाजिरजवाबी से अकवर वहुत खुश रहता था ।

हाजिरवाश—वि० [अ० हाजिर + फा० वाश] १ सामने मौजूद रहनेवाला । बरावर सेवा मे रहनेवाला । २ लोगो के पास जाकर बरावर मिलने जुलनेवाला ।

हाजिरवाशी—सज्ञा स्त्री० [अ० हाजिर + फा० वाशी] १ सेवा मे निरतर उपस्थिति । २ लोगो से जाकर मिलना जुलना । खुशामद ।

हाजिराई—सज्ञा पुं० [अ० हाजिर हिं० + आई (प्रत्य०)] १ भूतप्रेत बुलाने या दूर करनेवाला । ओझा । सयाना । २ जादूगर । ऐंद्रजालिक । मायिक ।

हाजिरात—सज्ञा स्त्री० [अ० हाजिरात] वदना या पूजा आदि के द्वारा किसी के ऊपर कोई आत्मा, भूत प्रेत, जिन आदि बुलाना जिससे वह झूमने और अनेक प्रकार की बातें कहने तथा प्रश्नो के उत्तर देने लगता है ।

हाजिराती—सज्ञा पुं० [अ० हाजिराती] हाजिरात करनेवाला ओझा । सयाना [को०] ।

हाजिरी—सज्ञा स्त्री० [अ० हाजिरी] १ उपस्थिति । विद्यमानता । मौजूदगी । वर्तमानता । २. विद्यार्थियो या मजदूरो की गणना । ३ न्यायालय मे सम्मन अथवा वारट के द्वारा प्रतिपक्षी और गवाहो की उपस्थिति (को०) ।

मुहा०—हाजिरी वजाना = किसी अधिकारी अथवा वडे आदमी के यहाँ वरावर उपस्थित होना । दरवारगीरी करना । हाजिरी देना = (१) उपस्थिति सूचित करना । (२) दे० 'हाजिरी वजाना' । हाजिरी लेना = विद्यार्थियो अथवा मजदूरो आदि का नाम पुकारकर उनकी उपस्थिति मालूम करना या लिखना ।

हाजिरीन—सज्ञा पुं० [अ० हाजिरीन] हाजिर शब्द का बहुवचन । उपस्थित लोग ।

हाजी[1]—सज्ञा पु० [उर्दू । अ० शब्द 'हाज' है] १ हज करनेवाला । तीर्थाटन के लिये मक्के मदीने जानेवाला । २ वह जो हज कर आया हो । (मुसल०) ।

हाजी—वि० [अ०] १ निंदा या बुराई करनेवाला । निंदक । २ हिज्जे या अक्षरो के क्रमविन्यास को साफ साफ बोलनेवाला [को०] ।

हाजुर(पु)—वि० [अ० हाजिर] दे० 'हाजिर' । उ०—हाजुर मीर हमाम मीर गिरदान सामि नमि ।—पृ० रा०, ६१।१६६४ ।

हाट[1]—सज्ञा स्त्री० [स० हट्ट] १. वह स्थान जहाँ कोई व्यवसायी वेचने के लिये चीजे रखकर बैठता है । दूकान । २ वह स्थान जहाँ बिक्री की सव प्रकार की वस्तुएँ रहती हो । वाजार । उ०—प्रेम विकता मैं सुना, माथा साटे हाट । बूझत विलँव न कीजिए ततछिन दीजै काट ।—सतवाणी०, पृ० १६ ।

यौ०—हाटवाट = पण्यवीथिका । वाजार । उ०—(क) शतसख्य हाटवाट भमते ।—कीर्ति०, पृ० २८ । (ख) हाट वाट नहिं जाइ निहारी ।—मानस, २।१५६ । हाट वाजार = दे० 'हाटवाट ।'

मुहा०—हाट करना = (१) दूकान रखकर बैठना । (२) सौदा लेने के लिये वाजार जाना । हाट खोलना = (१) दूकान रखना । रोजगार करना । (२) दूकान पर आकर विक्री की चीजें निकालकर रखना । हाट वाजार करना = सौदा लेने वाजार जाना । जैसे,—वह स्त्री हाट बाजार करती है । हाट लगना = दूकान या वाजार मे विक्री की चीजें रखी जाना । हाट चढना = वाजार मे विकने के लिये आना । उ०—पडित होइ सो हाट न चढा ।—जायसी (शब्द०) । हाट जाना = कुछ खरीदने या वेचने के उद्देश्य से वाजार जाना । हाट भरना = वाजार मे खरीद और विक्री करनेवालो की भीड इकट्ठी होना ।

३. वाजार लगने का दिन ।

हाट[2]—सज्ञा पुं० [स०] १ मैनफल वृक्ष और उसका फल । विशेष—दे० 'मैनफल' । २ कमल की जड । भसीड । ३ कमल का छत्ता [को०] ।

हाटक[1]—सज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत मे वर्णित एक देश का नाम । २ सोना । स्वर्ण । उ०—फाटक दै कर हाटक माँगत भोरी निपट विचारी ।—सूर (शब्द०) । ३. भाडा । किराया । जैसे,—नौका हाटक । ४ धतूर (को०) ।

हाटक[2]—वि० [सं०] [स्त्री० हाटकी] १ सुनहरा । स्वर्ण के वर्ण का स्वर्णिम । २ स्वर्णनिर्मित । सोने का वना हुआ [को०] ।

हाटकगिरि—सज्ञा पुं० [स०] सुमेरु पर्वत (को०) ।

हाटकपुर—संज्ञा पुं० [सं०] सोने का बना हुआ नगर। लंका नगर। उ०—नाँघि सिंधु हाटकपुर जारा। निसिचर गन बधि बिपिन उजारा।—मानस, ५।३३।

हाटकमय—वि० [सं०] सोने का। स्वर्णमय [को०]।

हाटकलोचन—संज्ञा पुं० [सं०] हिरण्याक्ष नाम का दैत्य। उ०—कनककसिपअरु हाटकलोचन। जगत विदित सुरपति पद मोचन।—तुलसी (शब्द०)।

हाटकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पाताल की एक नदी [को०]।

हाटकीय—वि० [सं०] १ सोने का। सोना संबंधी। २ स्वर्णनिर्मित। सोने का बना हुआ।

हाटकेश, हाटकेशान—संज्ञा पुं० [सं०] शिव की एक मूर्ति का नाम। हाटकेश्वर।

हाटकेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव की एक मूर्ति या रूप का नाम जिसकी उपासना गोदावरी के तट पर होती है। २ भागवत के अनुसार वितल नामक अधोलोक मे स्थित शिव का नाम।

हाड़(पु)¹—संज्ञा पुं० [सं० हड्ड या अस्थि]। अस्थि। हड्डी। उ०—चरग चगु गत चातकहि नेम प्रेम की पीर। तुलसी परबस हाड परि परिहै पुहुमी नीर।—तुलसी (शब्द०)। २ वश या जाति की मर्यादा। कुलीनता। उ०—देवनदन देखने सुनने, पढने लिखने सब बातो मे अच्छा है, पर हाड मे तो अच्छा नहीं है।—ठेठ०, पृ० ८।

हाड़†²—संज्ञा पुं० [सं०] आषाढ का महीना। उ०—बस! अबके हाड मे यह आम खूब फलेगा, चाचा भतीजा दोनो यही बैठकर आम खाना।—गुलेरीजी० पृ० ५१।

हाड़ना†¹—क्रि० स० [सं० हरण] तौलने मे बरतन आदि के कारण किसी पलडे के भारी पडने पर दूसरे पलडे पर पत्थर आदि रखकर दोनो पलडे ठीक बराबर करना। अहँडा करना। धडा करना।

हाडना²—क्रि० स० [सं० हिण्डन] दे० 'हांडना'। उ०—सतगुर बिन सौदा किया जन हरिया वे काम। साकट ऐसे सूकरा हाडै घर घर जाम।—राम० धर्म०, पृ० ५२।

हाडा¹—संज्ञा पुं० [हिं० आर, आड (=डक)] लाल रग की बडी भिड। लाल ततैया।

हाडा²—संज्ञा पुं० क्षत्रियो की एक शाखा। उ०—सोनीगरा काहूँ कहूँ बषाँण। हाडा बूँदी का धणी।—बी० रासो, पृ० १८।

हाडि(पु)—संज्ञा, स्त्री० [सं० हण्डिका, हाडिका] दे० 'हांडी'। उ०—पाँहण टाकि न तौलिए, हाडि न कीजै बेह। माया राता मानवी तिन सूँ किसा सनेह।—कबीर ग्र०, पृ० ४८।

हाडिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] हडिका। हँडिया।

हाडी¹—संज्ञा स्त्री० [सं० हाडिका] १ जमीन मे पत्थर गाडकर बनाया हुआ गड्ढा जिसमे अनाज रखकर साफ करने के लिये मूसल से कूटते है। २ वह गड्ढेदार पत्थर जिसपर रखकर पीटने से पीतल आदि की चद्दर कटोरेनुमा बन जाती है।

हाडी²—संज्ञा पुं० [सं० आडि] १ एक प्रकार का बगला। २ काक। काग। कौआ।

हाडी³—संज्ञा पुं० [प० हाड (=असाढ)] एक प्रकार का पहाडी राग।

हाडी⁴—संज्ञा स्त्री० [देश०?] निम्न श्रेणी की एक जाति। उ०—इन पेशेवाली जातियो से भी नीचे हाडी, डोम, चाडाल और विघातू थे।—अकबरी०, पृ० ६।

हाण(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० हानि] दे० 'हानि'। उ०—हहो करै हित हाण झभो तन व्याध जगावै।—रघु० रू०, पृ० ७।

हात¹—वि० [सं०] छोडा हुआ। त्यागा हुआ।

हात(पु)²—संज्ञा पुं० [सं० हस्त, प्रा० हत्थ, हथ्थ, हिं० हाथ] दे० 'हाथ'। उ०—(क) उडै पग हात किरका हवै अगग, वहै रत जेम सावण वहाला।—रघु० रू०, पृ० २६। (ख) कँवले कँवल से नर्म तर है तेरे हात रग।—अली आदिल०, पृ० ७६।

हातव्य—वि० [सं०] १ छोडने योग्य। त्याज्य। परित्याज्य। २ जो पीछे छोड दिया जाय (को०)।

हाता¹—संज्ञा पुं० [अ० इहातह्] १ घेरा हुआ स्थान। वह जगह जिसके चारो ओर दीवार खिंची हो। बाडा। २ देशविभाग। मडल। हलका या सूबा। प्रात। जैसे,—बगाल हाता, बबई हाता। ३ रोक। हद। सीमा।

हाता(पु)²—वि० [सं० हात] [वि० स्त्री० हाती] १ अलग। दूर किया हुआ। हटाया हुआ। उ०—(क) कत सुनु मत, कुल अत किए अत हानि, हातो कीजै हीय तै भरोसो भुज बीस को।—तुलसी (शब्द०)। (ख) जानत प्रीति रीति रघुराई। नाते सब हाते करि राखत राम सनेह सगाई।—तुलसी (शब्द०)। (ग) मधुकर! रह्यो जोग लौं नातो। कतहिं बकत बेकाम काज बिनु, होय न ह्याँ ते हातो।—सूर (शब्द०)। (घ) हरि से हितू सो भ्रमि भूलि हू न कीजै मान, हातो किए हिय हू सो होत हित हानियै।—केशव (शब्द०) २ नष्ट। बरबाद।

हाता³—वि०, संज्ञा पुं० [सं० हन्ता] मारनेवाला। वध करनेवाला (समास मे प्रयुक्त)।

हातिफ—संज्ञा पुं० [अ० हातिफ] १ आकाशवाणी। २ एक फरिश्ता। उ०—जो रखी फिरदोस पर टुक इक नजर। गैब के हातिफ ने यूँ लाया खबर।—दक्खिनी०, पृ० १७८।

हातिम—संज्ञा पुं० [अ०] १ निपुण व्यक्ति। चतुर या कुशल व्यक्ति। २ किसी काम मे पक्का आदमी। उस्ताद। जैसे,—वह लडने मे बडे हातिम हैं। ३ एक प्राचीन अरब सरदार जो बडा दानी, परोपकारी और उदार प्रसिद्ध है।

मुहा०—हातिम की कबर पर लात मारना = बहुत अधिक उदारता या परोपकार करना। (व्यग्य मे प्रयुक्त)।

४ वह जो अत्यत परोपकारी हो। परोपकारी व्यक्ति। ५ अत्यत दानी मनुष्य। अत्यत उदार मनुष्य।

हातिमताई—संज्ञा पुं० [अ०] १ दे० 'हातिम'। २ वह पुस्तक जिसमे हातिम की उदारता, परोपकारिता आदि का वर्णन है।

हाती‡—संज्ञा पुं० [सं० हस्ती, प्रा० हथ्थी] दे० 'हाथी'। उ०—माई, राजा जसरत के चारि हाती हए, चारो ठाडे दरवाजे, अनद भए।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ६३०।

हातु—संज्ञा पुं० [स०] १ मृत्यु । मौत । २ राजपथ । सडक ।

हात्र—संज्ञा पुं० [स०] १ मजदूरी । भाडा । भृति । २ आघात । हनन । वध । ३ मृत्यु । मौत । ४. एक दैत्य [को०] ।

हाथ—संज्ञा पुं० [स० हस्त, प्रा० हत्थ, हथ्थ] १ मनुष्य, वदर आदि प्राणियो का वह डडाकार अवयव जिसमे वे वस्तुओ को पकडते या छूते है । बाहु से लेकर पजे तक का अग, विशेषत कलाई और हथेली या पजा । कर । हस्त ।

मुहा०—हाथ आगे करना = छडी या रूल आदि की मार खाने के लिये छोटे छात्रो द्वारा हथेली सामने करना । हाथ आना, हाथ पडना, हाथ चढना = दे० 'हाथ मे आना या पडना' । उ०—नाथ वह जो सनाथ करता है । हाथ आया न हाथ के बूते ।—चोखे०, पृ० ४ । हाथ मे आना या पडना = अधिकार या वश मे आना । कब्जे या काबू मे आना । मिलना या इख्तियार मे हो जाना । जैसे,—(क) सब वही ले लेगा, तुम्हारे हाथ मे कुछ भी न आवेगा । (ख) अब तो वह हमारे हाथ मे है, जैसा कहेगे वैसा करेगा । (किसी को) हाथ उठाना = सलाम करना । प्रणाम करना । (किसी पर) हाथ उठाना = किसी को मारने के लिये थप्पड या घूंसा तानना । मारना । जैसे,—बच्चे पर हाथ उठाना अच्छी बात नही । उ०—औरतो पर हाथ उठाते हो ।—सैर कु०, पृ० १४ । हाथ उठाकर देना = अपनी खुशी से देना । जैसे,—कभी हाथ उठाकर एक पैसा भी तो नही दिया है । हाथ उठाकर कोसना = शाप देना । किसी के अनिष्ट की ईश्वर से प्रार्थना करना । हाथ उतरना = हाथ की हड्डी उखड जाना । हाथ ऊँचा रहना = दे० 'हाथ ऊँचा होना' । उ०—हाथ ऊँचा सदा रहा किसका । हित सकल सुख सहज सहेजे मे ।—चोखे०, पृ० ११ । हाथ ऊँचा होना = (१) दान देने मे प्रवृत्त होना । (२) देने लायक होना । खर्च करने लायक होना । सपन्न होना । हाथ कट जाना = (१) कुछ करने लायक न रह जाना । साधन या सहायक का अभाव हो जाना । (२) प्रतिज्ञा आदि से बद्ध हो जाना । इच्छानुसार कुछ करने के लिये स्वच्छद न रह जाना । हाथ कटा देना = (१) अपने को कुछ करने योग्य न रखना । साधन या सहायक खोदेना । उ०—धन किसी का देख काटे होठ क्यो । हाथ तो हमने कटाया है नही ।—चुभते०, पृ० ५२ । (२) अपने को प्रतिज्ञा आदि से बद्ध कर देना । कोई ऐसा काम करना जिससे इच्छानुसार कुछ करने की स्वतत्रता न रह जाय । बँध जाना । हाथ चलाना = वार करना । प्रहार करना । हाथ का झूठा = अविश्वसनीय । जिसपर एतबार न किया जा सके । धोखेबाज । बेईमान । हाथ का दिया = (१) दिया हुआ । प्रदत्त । जैसे,—तुम्हारे हाथ का दिया हम कुछ भी नही जानते । (२) दान दिया हुआ । जैसे,—हाथ का दिया साथ जाता है । हाथ का सच्चा = (१) ईमानदार । (२) अचूक वार करनेवाला । ऐसा वार करनेवाला जो खाली न जाय । (३) ऐसा सटीक काम करनेवाला जिसमे भूल चूक न हो । हाथ का मैल = हाथ मे आता जाता रहनेवाला । साधारण वस्तु । तुच्छ वस्तु । जैसे,—रुपया पैसा हाथ का मैल है । (किसी के) हाथ की चिट्ठी या पुरजा = किसी के हाथ से लिखा हुआ पत्र या पुरजा । हस्तलेख । हाथ की लकीर = (१) हथेली मे पडी हुई लकीरे । हस्तरेखा जिनसे शुभाशुभ फल कहा जाता है । (२) भाग्य । किस्मत । हाथ के नीचे आना या हाथ तले आना = काबू मे आना । वश मे होना । ऐसी स्थिति मे पडना कि जो बात चाहे कराई जा सके । हाथ खाली जाना = (१) वार चूकना । प्रहार न बैठना । (२) युक्ति सफल न होगा । चाल चूक जाना । हाथ खाली होना = पास मे कुछ द्रव्य न रह जाना । रुपया पैसा न रहना । हाथ खाली न होना = काम मे फँसा रहना । फुरसत न होना । हाथ खुजलाना = (१) किसी को मारने का जी करना । किसी को थप्पड लगाने की इच्छा होना । (२) मिलने का आगम होना । द्रव्यप्राप्ति के लक्षण दिखाई पडना (ऐसा विश्वास है कि जब हथेली मे खुजलाहट होती है तब कुछ मिलता है) । हाथ खीचना = (१) किसी काम से अलग हो जाना । योग न देना । (२) खर्च बद कर देना । देना बद कर देना । हाथ खीच लेना = दे० 'हाथ खीचना' । उ०—चाहिये इस तरह न खिँच जाना । किस लिये हाथ खीच लेते हे ।—चुभते०, पृ० २८ । हाथ खुलना = (१) दानमे प्रवृत्ति होना । (२) खर्च करना । (३) रोक या प्रतिबध का खत्म होना । हाथ गरम होना = दे० 'मुट्ठी गरम होना' । हाथ घसना = दे० 'हाथ मलना' । उ०—हाथ घसै निरधन हुवौं, माँखी ज्यो जग माँहि ।—बाँकी० ग्र०, भाग ३, पृ० ८२ । हाथ चलना = (१) किसी काम मे हाथ का हिलना डोलना । जैसे,—अभ्यास न होने से उसका हाथ जल्दी जल्दी नही चलता । (२) किसी काम को करने का गुर समझ मे आ जाना । किसी काम को करने का अभ्यास होना । (३) मारने के लिये हाथ उठना । थप्पड या घूंसा तानना । जैसे,—तुम्हारा हाथ बडी जल्दी चल जाता है । हाथ चलाना = (१) किसी काम मे हाथ हिलाना डुलाना । (२) मारने के लिये थप्पड तानना । मारना । (३) किसी वस्तु को छूने या लेने के लिये हाथ बढाना । जैसे,—छाती पर हाथ चलाना । हाथ चूमना या हाथ आँखो से लगाना = (१) किसी की कलानिपुणता पर मुग्ध होकर उसके हाथो को प्यार करना । किसी की कारीगरी पर इतना खुश होना कि उसके हाथों को प्रेम की दृष्टि से देखना । जैसे,—(क) इस चित्र को देखकर जी चाहता है कि चित्रकार के हाथ चूम लूं । (ख) यह काम कर डालो तो हाथ चूम लूं । (२) स्त्रियो का, विशेषकर बडी बूढी स्त्रियो का बच्चो के हाथ चूमकर स्नेह व्यक्त करना । हाथ चालाक या हाथचला = (१) फुरती से दूसरे की चीज उडा लेनेवाला । दूसरे की वस्तु लेने मे हाथ की सफाई दिखानेवाला । (२) किसी काम मे हाथ की सफाई दिखानेवाला । हस्तलाघव दिखानेवाला । हाथ चालाकी = हाथ की सफाई या फुरती । हस्तकौशल । हस्तलाघव या क्षिप्रता ।

हाथ चाटना = सामने रखा भोजन कुछ भी न छोडना, सब खा जाना। सब खाकर भी न तृप्त होना। हाथ छूटना = मारने के लिये हाथ उठना। (किसी पर) हाथ छोडना= मारना। प्रहार करना। हाथ जडना = थप्पड मारना। प्रहार करना। हाथ जोडना = (१) प्रणाम करना। नमस्कार करना। (२) अनुनय विनय करना। (३) प्रार्थना करना। (दूर से) हाथ जोडना = ससर्ग या सबध न रखना। किनारे रहना। पीछा छुडाना। जैसे,—ऐसे आदमियो को हम दूर ही से हाथ जोडते हैं। हाथ जूठा होना = हाथ मे खाने पीने की चीज लगी रहना या हाथ का मुँह मे पड जाना (ऐसा हाथ अशुद्ध माना जाता है)। (किसी काम मे) हाथ जमना = दे० 'हाथ बैठना'। हाथ झाडना = (१) लडाई मे खूब शस्त्र चलाना। खूब हथियार चलाना। (२) वार करना। प्रहार करना। खूब मारना। हाथ झुलाते या हिलाते आना = कुछ भी न लेकर आना। खाली हाथ लौटना। हाथ झाड देना = खाली हाथ हो जाना। कह देना कि मेरे पास कुछ नही है। हाथ झाडकर खडे हो जाना = खाली हाथ दिखा देना। कह देना कि मेरे पास कुछ नही है। जैसे,—तुम्हारा क्या ? तुम तो हाथ झाडकर खडे हो जाओगे, सारा खर्च हमारे ऊपर पडेगा। हाथ झाडना = अपने पास कुछ भी न रह जाना। खाली हाथ हो जाना। उ०—कहैं कबीर अत की बारी, हाथ झाड ज्यो चला जुवारी।—कबीर श०, भा० १, पृ० २६। हाथ झुलाते आना = खाली हाथ आना। कुछ भी लेकर न आना। उ०—कोई खत वत लाए हो या यो ही आए हो हाथ झुलाते।—फिसाना०, भा० ३, पृ० १८२। हाथ टूटना = (१) सामर्थ्य न रहना। काम करने की हाथ मे ताकत न रहना। उ०—क्या हुआ जो कुछ हमे टोटा हुआ। है हमारा हाथ तो टूटा नही।—चुभते०, पृ० ५२। (३) अत्यत घने प्रिय बधु या सहयोगी का न रह जाना। दे० 'बाँह टूटना'। हाथ टेकना = सहारा देना। हाथ डालना = (१) किसी काम मे हाथ लगाना। योग देना। (२) दखल देना। (३) बुरी भावना से किसी स्त्री को हाथ लगाना। (४) लूटना। माल मारना। हाथ तकना = दूसरे के देने के आसरे रहना। दूसरे के आश्रित रहना। हाथ तग होना = खर्च करने के लिये रुपया पैसा का न रहना। हाथ थिरकाना या नचाना = नाचने या बोलने मे हाथ मटकाना हिलाना। हाथ दिलाना = नजर झडवाना। भूत प्रेत की बाधा शात करने के लिये सयाने को दिखाना। हाथ दिखाना = (१) भविष्य शुभाशुभ जानने के लिये सामुद्रिक जाननेवाले से हाथ की रेखाओ का विचार कराना। (२) वैद्य को नाडी दिखाना। (३) हस्तकौशल दिखाना। हाथ की कारीगरी प्रदर्शित करना। (४) युद्ध मे शत्रुओ पर जमकर शस्त्र चलाना। समर भूमि मे युद्धकौशल का प्रदर्शन करना। उ०—हजारों रसाला वाढे अपाडे दिखाया हाथ। न बीरी रुस्तम काढे बखाणे नवाब।—बाँकी० ग्र०, भा० ३, पृ० १२७। हाथ देखना = (१) वैद्य का रोगी की नाडी देखकर रोग की स्थिति जानना। नाडी देखना। (२) सामुद्रिक का विचार करना। हथेली की रेखाओ से शुभाशुभ भविष्य का विचार करना। हाथ देते ही पहुँचा पकडना = थोडी सी सुविधा मिलते ही अधिक सुविधा प्राप्त करने का प्रयत्न करना। उ०—इसके मानी क्या ! हाथ देते ही पहुँचा पकड लिया। - फिसाना०, भा० ३, पृ० २८३। हाथ देना = (१) सहारा देना। (२) बाजी लगाना। (३) गुप्त रूप से सौदा तै करना। (४) दीया बुझाना। (५) भूत प्रेत की बाधा का विचार करना। (६) रोकना। मना करना। (किसी का) हाथ धरना = (१) कोई काम करने से रोकना। जैसे,—जिसको जो चाहे दें, कोई हाथ धर सकता है। (२) किसी को सहारा देना। अपनी रक्षा मे लेना। (३) पाणिग्रहण करना। विवाह करना। (किसी पर) हाथ धरना = किसी को आशीर्वाद देना। (किसी वस्तु या बात से) हाथ धोना = (१) खो देना। प्राप्ति की सभावना न रखना। नष्ट करना। जैसे,—(क) जान से हाथ धोना। (ख) मकान से हाथ धोना। (२) समझ न होना। बिना बुद्धि के या बिना विचारे काम करना। उ०—अक्ल को तो हुस्न आरा रो चुकी अक्ल से कब की हाथ धो चुकी।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ३२०। हाथ धोकर पीछे पडना = (१) किसी काम मे जी जान से लग जाना। सब कुछ छोडकर काम मे प्रवृत्त हो जाना। (२) किसी को हानि पहुँचाने मे सब काम धधा छोडकर लग जाना। जैसे,—न जाने क्यो वह आजकल हाथ धोकर मेरे पीछे पडा है। उ०—धो न बैठेंगे हितो से हाथ हम। हाथ धोकर क्यो न वे पीछे पडें।—चुभते०, पृ० १४। हाथ धो बैठना = किसी काम से, किसी प्रिय वस्तु या व्यक्ति से निराश हो बैठना। हाथ न रखने देना या पुट्ठे पर हाथ न धरने देना = (१) बहुत तेजी दिखाना। हाथ रखते ही उछलने कूदने या दौडने लगना (घोडे के लिये प्रयुक्त)। (२) जरा भी बातो मे न आना। थोडी सी बात भी मानने के लिये तैयार न होना। दृढ रहना। जैसे,— उसे कैसे राजी करे, हाथ तो रखने ही नही देता। हाथ पकडना = (१) किसी काम से रोकना। (२) सहारा देना। सबल देना। उ० है गई अब बुरी पकड पकडी। आप आ हाथ ले पकड मेरा।—चुभते०, पृ० ४। (३) आश्रय देना। शरण मे लेना। रक्षक होना। (४) पाणिग्रहण करना। विवाह करना। हाथ पडना = (१) हाथ लगना। किसी व्यक्ति, वस्तु या पदार्थ से हाथ का स्पर्श होना। हाथ छू जाना। (२) मार पडना। मार खा जाना। (३) न चाहते हुए भी किसी का साथ हो जाना। (४) छापा पडना। डाका पडना। लूट होना। जैसे,—आज बाजार मे हाथ पड गया। हाथ पत्थर तले दबना = (१) मुश्किल मे फँसना। सकट या कठिनता की स्थिति मे पडना। (२) कुछ कर धर न सकना। कुछ करने की शक्ति या अवकाश न रहना। (३) लाचार होना। विवश होना। (४) किसी चलते हुए काम को बद करने के लिये विवश होना। हाथ पर गगाजली रखना = (१) गगा की शपथ देना। कसम खिलाना। (२) गगा की शपथ खाना। कसम खाना। हाथ पर नाग खेलाना = अपनी जान जोखो मे डालना। प्राण सकट मे डालना। हाथ पर जीव लेना = दे० 'हथेली पर सिर रखना या लेना'। यह जानते हुए

भी कि इस काम मे मौत निश्चित है, उसे करने के लिये उद्यत होना। उ०—अस लागेहु केहि के सिख दीन्हें। आएहु मरै हाथि जिउ लीन्हे।—जायसी ग्र०, पृ० २६७। हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना = खाली बैठे रहना। कुछ काम धधा न करना। हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाना = निराश हो जाना। हाथ पर हाथ मारना = (१) प्रतिज्ञा करना। किसी वात को दृढ करना। किसी वात को पक्का करना। (२) वाजी लगाना। उ०—आओ हाथ पर हाथ मारो।—फिसाना०, भा०३, पृ० १११। हाथ पसारना या फैलाना = कुछ माँगना। याचना करना। (किसी के आगे) हाथ पसारना या फैलाना = (किसी से) कुछ माँगना। याचना करना। जैसे,—हम गरीव है तो किसी के आगे हाथ फैलाने तो नही जाते। उ०—परम उदार, चतुर चिंतामनि, कोटि कुबेर निधन कौ। राखत है जन की परतिज्ञा, हाथ पसारत कन कौ।—सूर०, १।६। हाथ पसारे जाना = इस ससार से खाली हाथ जाना। परलोक मे कुछ साथ न ले जाना। हाथ पाँव चलना = काम धधे के लिये सामर्थ्य होना। कार्य करने की योग्यता होना। जैसे,—इतने वडे हुए, तुम्हारे हाथ पाँव नही चलते हैं। हाथ पाँव चलाना = काम धधा करना। हाथ टूटना = (१) अग भग होना। (२) शरीर मे पीडा होना। उ०—कल से चडू नसीव नही हुआ। जम्हाई पर जम्हाई आती है और हाथ पाँव टूटे जाते हे।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ६३। हाथ पाँव ठडे होना = (१) शरीर मे गरमी न रह जाना। मरणासन्न होना। (२) भय या आशका से स्तव्ध हो जाना। ठक हो जाना। हाथ पाँव डाल देना = कुछ न करना। निष्क्रिय या निकम्मा वन जाना। उ०—डाल दो हाथ पाँव मत अपने। आँख मे आँख डालकर देखो।—चोखे०, पृ० १६। हाथ पाँव तोडना = (१) अग भग करना। (२) हाथ पाँव थर्राना। डर के मारे कँपकँपी होना। हाथ पाँव निकालना = (१) शरीर हृष्ट-पुष्ट होना। मोटा ताजा होना। (२) सीमा का अतिक्रमण करना। हद से गुजरना। (३) नटखटी करना। शरारत करना। (४) छेडछाड करना। हाथ पाँव फूलना = (१) भय से स्तव्ध होना। डर या शोक से घवरा जाना। (२) व्यय के आधिक्य को देख-कर घवडा उठना। उ०—ठाकुर साहव फर्स्ट क्लास जेंटुल-मैन के नाम एक महीने मे इस कदर विल आए कि हाथ पाँव फूल गए।—फिसाना०, भा०३, पृ० १५७। हाथ पाँव फेकना = हाथ पाँव की मिहनत करना। उ०—लाभ है ले रहे लडकपन का, हाथ औ पाँव फेंकते लडके।—चोखे०, पृ० १३। हाथ पाँव वचाना = अपने शरीर की रक्षा करना। जैसे,—हाथ पाँव वचाकर काम करना। हाथ पाँव पटकना = छटपटाना। हाथ पाँव मारना या हिलाना = (१) तैरने मे हाथ पैर चलाना। (२) शोक, दुख या पीडा से छट-पटाना। तडपना। (३) घोर प्रयत्न करना। वहुत कोशिश करना। जैसे,—उसने वहुत हाथ पाँव मारे पर उसे ले न सका। उ०—छह रोज तक उन्होंने हाथ पाँव मारे। सातवे रोज दो चोरो को फाँसा।—फिसाना०, भा०३, पृ० २३६। (४) वहुत परिश्रम करना। खूव मिहनत करना। हाथ पाँव से छूटना = अच्छी तरह वच्चा पैदा होना। सहज मे कुशलपूर्वक प्रसव होना। (स्त्रि०)। हाथ पाँव हारना = (१) साहस छोडना। हिम्मत हारना। (२) निराश होना। हताश होना। हाथ पीले पडना = (१) किसी प्रकार विवाह कर देना। (२) विवाह करना (हिंदुओ मे विवाह के समय शरीर मे हल्दी लगाने की रीति है)। हाथ पैर जोडना = वहुत विनती करना। अनुनय विनय करना। हाथ फेकना = (१) हाथ चलाना। (२) वार करना। हथियार चलाना। (किसी पर) हाथ फेरना = प्यार से शरीर सहलाना। प्यार करना। (किसी वस्तु पर) हाथ फेरना = किसी वस्तु को उडा लेना। ले लेना। हाथ वद होना = दे० 'हाथ तग होना'। हाथ वढाना = (१) कोई वस्तु लेने के लिये हाथ फैलाना। (२) हद से वाहर जाना। सीमा का अतिक्रमण करना। (३) सहयोग देना। सहायता करना। (किसी काम मे) हाथ वँटाना या वटाना = शामिल होना। शरीक होना। योग देना। उ०—वेर न वीर लगाओ, वढाकर हाथ वटाओ।—अर्चना, पृ० २६। हाथ बाँधकर खडा होना = (१) हाथ जोडकर खडा होना। (२) सेवा मे उपस्थित रहना। हाथ वाँधे खडा रहना = सेवा मे वरावर उपस्थित रहना। खिदमत मे हाजिर रहना। उ०—जव किसी का पाँव हैं हम चूमते। हाथ वाँधे सामने जव हैं खडे।—चोखे०, पृ० ३५। (किसी के) हाथ विकना = किसी को मोल दिया जाना। (किसी व्यक्ति का) किसी के हाथ विकना = (१) किसी का क्रीत दास होना। किसी का खरीदा गुलाम होना। (२) किसी के विल्कुल अधीन होना। उ०—ऊधो नही हम जानत ही मनमोहन कूवरी हाथ विकैहैं।—मति० ग्र०, पृ० ४०४। (किसी काम मे) हाथ वैठना या जमना = अभ्यास होना। मश्क होना। ऐसा अभ्यास होना कि हाथ वरावर ठीक चला करे। उ०—काम की यह वात है, हर काम मे। वैठता है हाथ वैठाते रहे।—चोखे०, पृ० २१। (किसी पर) हाथ वैठना या जमना = किसी पर ठीक और भरपूर थप्पड या वार पडना। काम करते करते हाथ थक जाना। हाथ भरना = हाथ मे रग या महावर लगाना। हाथ मँजना = अभ्यास होना। मश्क होना। हाथ माँजना = अभ्यास करना। हाथ मलना = (१) भूल चूक का वुरा परिणाम होने पर अत्यत पश्चात्ताप करना। वहुत पछताना। (२) निराश और दुखी होना। उ०—तो लगेगी हाथ मलने आवरू। हाथ गरदन पर अगर डाला गया।—चोखे०, पृ० १६। हाथ मारना = (१) वात पक्की करना। दृढ प्रतिज्ञा करना। (२) वाजी लगाना। (किसी वस्तु पर) हाथ मारना = उडा लेना। गायव कर लेना। वेईमानी से ले लेना। (भोजन पर) हाथ मारना = (१) खूव खाना। (२) वडे वडे कौर मुँह मे डालना। हाथ मारकर भागना = दौडने और पकडने का खेल खेलना। हाथ मिलाना = (१) भेंट होने पर प्रेमपूर्वक एक दूसरे का हाथ पकडना। (२) लडना। पजा लडाना। (३) सौदा पटाकर लेना। हाथ मीजना = अपना कोई वश न चलने पर अत्यत निराश होना। दे० 'हाथ मलना'। उ०—रोवत

समुझि कुमातुकुल मीजि हाथ धुनि माथ।—तुलसी ग्र०, पृ० ७४। हाथ मे करना = (१) वश मे करना। काबू मे करना। (२) अधिकार मे करना। ले लेना। प्राप्त करना। (मन) हाथ मे करना = मोहित करना। लुभाना। प्रेम मे फँसाना। हाथ मे ठीकरा लेना = भिक्षावृत्ति का अवलबन करना। भीख माँगना। मँगता हो जाना। हाथ मे पडना = (१) अधिकार मे आना। (२) वश मे होना। काबू मे आना। हाथ मे लाना = दे० 'हाथ मे करना'। हाथ मे लेना = (१) करने का भार ऊपर लेना। जिम्मे लेना। (२) अपने अधिकार मे करना। स्वायत्त करना। हाथ मे हाथ देना = पाणिग्रहण कराना। (कन्या को) व्याह देना। हाथ मे होना = (१) अधिकार मे होना। पास मे होना। (२) वश मे होना। अधीन होना। उ०—हानि लाभ जीवन मरन जस अपजस विधि हाथ।—तुलसी (शब्द०)। हाथ मे गुन या हुनर होना = किसी कला मे निपुणता होना। हाथ रँगना = (१) हाथ मे मेहँदी लगाना। (२) किसी बुरे काम मे पडकर अपने को कलकित करना। कलक माथे पर लेना। (३) रिशवत लेना। घूस लेना। (किसी पर) हाथ रखना = (१) मदद देना। सहायक होना। सक्रिय सहयोग देना। उ०—इस वास्ते तुमसे अरज करि जोर कीजति है वली। अब हाथ उसपर रक्खियै तो जग लेहि फतेअली।—सुजान०, पृ० १०। (किसी का) हाथ रोकना = कोई काम न करने देना। कुछ करते समय हाथ थाम लेना। कुछ करने से मना करना। (अपना) हाथ रोकना = (१) किसी काम का करना वद कर देना। किसी काम से अलग हो जाना। विरत हो जाना। (२) मारने के लिये हाथ उठाकर रह जाना। (३) खर्च करते समय आगा पीछा सोचना। सँभालकर खर्च करना। जैसे,—आमदनी घट गई है तो हाथ रोककर खर्च किया करो। हाथ रोपना या ओडना = हाथ फैलाना। माँगना। (कोई वस्तु) हाथ लगना = (१) हाथ मे आना। मिलना। प्राप्त होना। जैसे,—तुम्हारे हाथ तो कुछ भी न लगा। (२) गणित करते समय वह सख्या जो अतिम सख्या ले लेने पर वच रहती है। जैसे,—१२ के २ रखे, हाथ लगा १। (किसी काम मे) हाथ लगना = (१) आरभ होना। शुरू किया जाना। जैसे,—जव काम मे हाथ लग गया तब हुआ समझो। (२) किसी के द्वारा किया जाना। किसी का लगाव होना। जैसे,—जिस काम मे तुम्हारा हाथ लगता है, वह चौपट हो जाता है। (किसी वस्तु मे) हाथ लगना = छू जाना। स्पर्श होना। (किसी काम मे) हाथ लगाना = (१) आरभ करना। शुरू करना। (२) करने मे प्रवृत्त होना। योग देना। जैसे,—जिस काम मे तुम हाथ लगाओगे वह क्यो न अच्छा होगा। (किसी वस्तु मे) हाथ लगाना = छूना। स्पर्श करना। हाथ लगे मैला होना = इतना स्वच्छ और पवित्र होना कि हाथ से छूने से मलिनता आ जाना या मैला होना। हाथ साधना = (१) यह देखने के लिये कोई काम करना कि उसे आगे अच्छी तरह कर सकते हैं या नही। (२) अभ्यास करना। मश्क करना। (३) दे० 'हाथ साफ करना'। (किसी पर) हाथ साफ करना = किसी को मारना। (किसी वस्तु पर) हाथ साफ करना = वेईमानी से ले लेना। अन्याय से हरण करना। उडा लेना। (भोजन पर) हाथ साफ करना = खूब खाना। (किसी के सिर पर) हाथ रखना = किसी की रक्षा का भार ग्रहण करना। शरण या आश्रय मे लेना। मुरव्वी होना। (अपने या किसी के सिर पर) हाथ रखना = सिर की कसम खाना। शपथ उठाना। हाथ से = द्वारा। मारफत जैसे,—(क) तुम्हारे हाथ से यह काम हो जाता तो अच्छा था। (ख) तुमने किसके हाथ से रुपया पाया? हाथ से जाना या निकल जाना = (१) अपने अधिकार मे न रहना। कब्जे मे न रह जाना। (२) अवसर या मौका न रह जाना। उ०—न जाने तडके तडके किस मनहूस का मुँह देखा है कि भर दिन के मजे हाथ से गए।—फिसाना०, भा० १, पृ० ७। (३) वश मे न रह जाना। काबू मे न रह जाना। जैसे,—चीज हाथ से निकल जाना, अवसर हाथ से जाना। हाथ से हाथ मिलाना = दान देना। खैरात करना। अपने हाथ से दूसरे के हाथ पर कुछ रखना। जैसे,—आज एकादशी है, कुछ हाथ से हाथ मिलाओ। हाथ हिलाते आना = (१) खाली हाथ लौटना। कुछ लेकर या प्राप्त करके न आना। (२) विना कार्य सिद्ध हुए लौट आना। हाथो के तोते उड जाना = (१) हाथ मे आई हुई वस्तु का निकल जाना या वेहाथ होना। (२) होश हवाश गायव हो जाना। घवडा जाना। उ०—उन्होने काँपते हुए जवाव दिया कि क्या बताऊँ, हाथो के तोते उड गए।—फिसाना०, भा० ३, पृ० २९१। हाथो मे चाँद आना = (१) पुत्र उत्पन्न होना। लडका पैदा होना। (स्त्रियाँ)। (२) मनचाही वस्तु मिलना। इच्छित वस्तु की प्राप्ति होना। हाथो मे पिसान लगाकर भडारी बनना = (१) गृह कार्य या समारोह आदि मे कुछ काम न करते हुए भी वहुत वडी जिम्मेदारी का कार्य करने या कार्य की सफलता का श्रेय लेने का ढोग रचना। (२) झूठा ढोग रचना। नकली वेश बनाना। उ०—अनेक जन व्यर्थ भी हाथो मे पिसान लगाकर भडारी वनने पर तत्पर हो जाते।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ४५१। हाथो मे रखना = वडे लाड प्यार या आदर समान से रखना। हाथो हाथ = एक के हाथ से दूसरे के हाथ मे होते हुए। जैसे,—चीज हाथो हाथ वहाँ पहुँच गई। हाथो हाथ विक जाना या उड जाना = खूब विक्री होना। वडी गहरी माँग होना। जैसे,—ऐसी उपयोगी पुस्तक हाथो हाथ विक जायगी। हाथो हाथ लेना = वडे आदर और समान से स्वागत करना। (किसी के) हाथ वेचना = किसी को मूल्य लेकर देना। (किसी के) हाथ भेजना = किसी के हाथ मे देकर भेजना। किसी के द्वारा प्रेषित करना। (किसी के) हाथो = किसी के द्वारा।

२ लवाई की एक माप जो मनुष्य की कुहनी से लेकर पजे के छोर तक की मानी जाती है। चौवीस अगुल का मान। जैसे—दस हाथ की धोती। वीस हाथ जमीन।

मुहा०—हाथो कलेजा उछलना = (१) वहुत जी धडकना। (२) आनद-मग्न होना। बहुत खुशी होना। हाथ भर कलेजा होना = (१) वहुत

खुशी होना। आनद से फूलना। (२) उत्साह होना। साहस बँधना।
३ युद्ध, लडाई आदि मे आक्रमण करने का ढग। वार करने की कला। ४ ताश, जूए आदि के खेल मे एक एक आदमी के खेलने की वारी। दावँ। जैसे,—अभी चार ही हाथ तो हमने खेला है।

मुहा०—उलटकर या उलटा हाथ मारना = शत्रु के वार को रोकते हुए उसपर आघात करना। प्रत्याक्रमण करना। हाथ मारना = (१) कुशलतापूर्वक शत्रु पर वार करना। (२) दावँ जीतना। हाथ बनाना = दे० 'हाथ मारना'।

४ किसी कार्यालय के कार्यकर्ता। कारखाने मे काम करनेवाले आदमी। जैसे,—आजकल हाथ कम हो गए है, इसी से देर हो रही है। ५ किसी औजार या हथियार का वह भाग जो हाथ से पकडा जाय। दस्ता। मुठिया।

हाथकडा—सज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'हथकडा'।

हाथड†—सज्ञा पुं० [हिं० हाथ + ड (प्रत्य०)] जाँते या चक्की की मुठिया।

हाथतोड—सज्ञा पुं० [हिं० हाथ + तोडना] कुश्ती का एक पेच जिसमे जोड का पजा उलटा पकडकर मरोडते है और उसी मरोडे हुए हाथ के ऊपर से अपनी उसी वगल की टाँगे जोड की टाँगो मे फँसाकर उसे चित करते हैं।

हाथधुलाई—सज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ + धुलाई] वह बँधी रकम जो चमारो को मरे हुए चौपायो के फेंकने के लिये दी जाती है।

हाथपान—सज्ञा पुं० [हिं० हाथ + पान] हाथफूल के समान हथेली की पीठ पर पहनने का एक गहना जो पान के आकार का होता है और जजीरो के द्वारा अँगूठियो और कलाई से लगाकर बँधा रहता है।

हाथफूल—सज्ञा पुं० [हिं० हाथ + फूल] हथेली की पीठ पर पहनने का फूल के आकार का एक गहना जो सिकडियो के द्वारा अँगूठियो और कलाई से लगाकर बाँधा जाता है।

हाथवाँह—सज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ + वाँह] वाँह करने (कसरत) का एक ढग।

हाथा—सज्ञा पुं० [हिं० हाथ] १ किसी औजार या हथियार का वह भाग जो मुट्ठी मे पकडा जाता है। दस्ता। २ दो तीन हाथ लवा लकडी का एक औजार जिससे सिंचाई करते समय खेत मे आया हुआ पानी उलीचकर चारो ओर पहुँचाते हैं। ३. पजे की छाप या चिह्न जो गीले पिसे चावल और हल्दी आदि पोतकर दीवार पर छापने से वनता है। छापा।

विशेष—उत्सव, पूजन आदि मे स्त्रियाँ ऐसा छापा वनाती है।

हाथाछाँटी—सज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ + छाँटना] १ व्यवहार मे कपट या वेईमानी। चालाकी। धूर्तता। चालवाजी। २ चालवाजी या वेईमानी से रुपया पैसा उडाना। माल हजम करना।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

हाथाजोडी—सज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ + जोडना] १ एक पौधा जो औपध के काम मे आता है। २ सरकडे की वह जड जो दो मिले पजो के आकार की वन जाती है।

विशेष—इस प्रकार की जड का रखना लोग वहुत फलदायक और कल्याणकारक मानते है।

हाथापाई—सज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ + पायँ] ऐसी लडाई जिसमे हाथ पैर चलाए जायँ। मारपीट। उठापटक। मुठभेड। भिडत। धौलधप्पड।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

हाथावाँही—सज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ + वाँह] दे० 'हाथापाई'।

हाथाली (पु)†—सज्ञा स्त्री० [स० हस्ततली] दे० 'हथेली'। उ०—राति ज रुन्नी निसह भरि, सुणी महाजनि लोइ। हाथाली छाला पडया, चीर निचोइ निचोइ।—ढोला०, दू० १५६।

हाथाहाथी¹—अव्य० [हिं० हाथ + हाथ] १ एक हाथ से दूसरे हाथ मे। हाथोहाथ। २ तुरत। शीघ्र। जल्दी।

हाथाहाथी²—सज्ञा स्त्री० दे० 'हाथापाई'।

हाथि (पु)†—सज्ञा पुं० [हिं० हाथ] दे० 'हाथ'।

हाथी¹—सज्ञा पुं० [सं० हस्तिन्, हस्ती, प्रा० हत्थी] [स्त्री० हथिनी] एक बहुत वडा स्तनपायी जतु जो सूँड के रूप मे वढी हुई नाक के कारण और सब जानवरो से विलक्षण दिखाई पडता है।

विशेष—यह जमीन से ७-८ हाथ ऊँचा होता है और इसका धड बहुत चौडा और मोटा होता है। धड के हिसाब से इसकी टाँगे छोटी और खभे की तरह मोटी होती है। पैर के पजे गोल चक्राकार होते है। आँखें डीलडौल के हिसाब से छोटी और कुछ ऊदापन लिए होती है। जीभ लवी होती है। पूँछ के छोर पर वालो का गुच्छा होता है। इसकी सबसे वडी विशेषता है नाक जो एक गावदुम नली के समान जमीन तक लटकती रहती है और सूँड कहलाती है। यह सूँड हाथ का भी काम देती है। इससे हाथी छोटी से छोटी वस्तु जमीन पर से उठा सकता है और पेड की वडी वडी डालो को तोडकर मुँह मे डाल लेता है। इससे वह अपने शत्रुओ को लपेटकर पटक देता या चीर डालता है। सूँड मे पानी भरकर वह अपने ऊपर डालता भी है। नर हाथी के मुखविवर के दोनो छोरो पर हाथ डेढ हाथ लवे और ५-६ अगुल चौडे गोल डडे की तरह के सफेद चमकीले दाँत निकले होते हैं जो केवल दिखावटी होते है। इन दाँतो का वजन बहुत अधिक—७५ से १७५ सेर तक होता है। इसके कान गोल सूप की तरह के होते हैं। मस्तक चौडा और बीच से कुछ विभक्त दिखाई पडता है। सिर की हड्डियाँ जालीदार होती है। पसलियाँ बीस जोडी होती हैं।
हाथी पृथ्वी के गरम भागो मे—विशेषत हिंदुस्तान और अफ्रिका मे—पाए जाते हैं। अफ्रिका और हिंदुस्तान के हाथियो मे कुछ भेद होता है। अफ्रिका के हाथी के दो निकले हुए दाँतो के सिवा चार दाढें होती हैं और हिंदुस्तानी के दो ही। अफ्रिका के हाथी का मस्तक गोल और कान इतने वडे होते हैं कि सारे कधे को ढँके रहते है। वरमा और स्याम की ओर सफेद हाथी भी पाए जाते है जिनका बहुत अधिक आदर और मोल होता है। हिंदुस्तान के हाथियो के भी अनेक भेद होते हैं, जैसे,—

दँतैला, मकना (कद मे छोटा और विना दाँत का), पलँगदाँत, गनेसा, सूअरदता, पथरदता, सँकरिया, अकुसदता या गुडा इत्यादि। कोई कोई हिंदुस्तानी हाथी के दो प्रधान भेद करते है—एक कमरिया, दूसरा मिरगी या शिकारी। कमरिया का शरीर भारी और सूँड लबी होती है। मिरगी कुछ अधिक ऊँचा और फुरतीला होता है और उसकी सूँड भी कुछ छोटी होती है। सवारी के लिये कमरिया हाथी अधिक पसद किया जाता है और शिकार के लिये मिरगी। हाथी गहरे जगलो मे झुंड वाँधकर रहते हैं और मनुष्य की तरह एक वार मे एक वच्चा देते हैं। हाथी की वाढ १८ से २४ वें वर्ष तक जारी रहती है। पाले हुए हाथी सौ वर्ष से अधिक जीते हैं। जगली और भी अधिक जीते होंगे। हिंदुस्तान मे हाथी रखने की रीति अत्यत प्राचीन काल से है। प्राचीन समय मे राजाओ के पास हाथियो की भी वडी वडी सेनाएँ रहती थी जो शत्रु के दल मे घुसकर भयकर सहार करती थी। हाथी रखना अमीरी का वडा भारी चिह्न समझा जाता है। अफ्रिका के जगली इसका मास भी खाते हैं। हाथी पकडने के कई उपाय हैं। अधिकतर गड्ढा खोदकर हाथी फँसाए जाते हैं।

यौ०—हाथीखाना। हाथीनाल। हाथीदाँत। हाथीनशीन। हाथीपाँव।

मुहा०—हाथी सा = वहुत मोटा। अत्यत स्थूलकाय। हाथी की राह = आकाशगगा। डहर। (दरवाजे पर) हाथी झूमना = अत्यत ऐश्वर्यशाली होना। वहुत अमीर होना। हाथी पर चढना = वहुत अमीर होना। हाथी पर चढाना = अत्यत आदर समान करना। हाथी वाँधना = वहुत अमीर होना। जैसे,—तुम्ही वेईमानी करके हाथी वाँध लोगे? निशान का हाथी = सेना या जुलूस मे वह हाथी जिसपर झडा और डका रहता है। हाथी के सग गाँडे खाना = वलवान की वरावरी करना।

हाथी(पु)[२]—सज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ + ई] हाथ का सहारा। करावलव। उ०—दस्तगीर गाढे कर साथी। वह अवगाह दीन्ह तेहि हाथी।—जायसी (शब्द०)।

हाथीखाना—सज्ञा पुं० [हिं० हाथी + फा० खानह्] वह घर जिसमे हाथी रखा जाय। फीलखाना।

हाथीचक—सज्ञा पुं० [हिं० हाथी + चक्र] एक प्रकार का पौधा जो औपध के काम मे आता है।

हाथीदाँत—सज्ञा पुं० [हिं० हाथी + दाँत] हाथी के मुँह के दोनो छोरो पर हाथ डेढ हाथ निकले हुए सफेद दाँत जो केवल दिखावटी होते हैं।

विशेष—यह वहुत ठोस, मजवूत और चमकीला होता है तथा अधिक मूल्य पर विकता है। इससे अनेक प्रकार के सजावट के सामान वनते है, जैसे,—चाकू के वेंट, कघियाँ, कुरसियाँ, शीशे के फ्रेम इत्यादि। इसपर नक्काशी भी वडी ही सुदर होती हे।

हाथीनाल—सज्ञा स्त्री० [हिं० हाथी + नाल] वह पुरानी तोप जिसे हाथियो की पीठ पर रखकर ले जाते थे। हथनाल। गजनाल।

हाथीपाँव—सज्ञा पुं० [हिं० हाथी + पाँव] १ एक रोग जिसमे टाँगें फूलकर हाथी के पैर की तरह मोटी और वेडौल हो जाती हैं। फीलपाँव। २ एक प्रकार का वढिया सफेद कत्था।

हाथीपीच—सज्ञा पुं० [हिं० हाथी + पीच] एक प्रकार का हाथीचक जो शाम और रूम की ओर से आता है और औपध के काम का होता है।

हाथीवच—सज्ञा स्त्री० [हिं० हाथी + वच] एक पौधा जिसकी तरकारी वनाई जाती है।

हाथीवान—सज्ञा पुं० [हिं० हाथी + वान (प्रत्य०)] हाथी की रक्षा करने और उसे चलाने के लिये नियुक्त पुरुष। फीलवान। महावत।

हादसा—सज्ञा पुं० [अ० हादिसह्] वुरी घटना। दुघटना। आपत्ति।

हादिस—वि० [अ०] १ नया। नवीन। नूतन। २ जो हमेशा से न हो। अचिरस्थायी [को०]।

हादिसा—सज्ञा पुं० [अ० हादिसह्] १ नवीन घटना। नई वात। २ दे० 'हादसा' [को०]।

हादी—सज्ञा पुं० [अ०] १ हिदायत देनेवाला। मार्गदर्शक। उ०—वाद चदे हजरते शेखे रफीक, वाकिफे, असरारे हक हादी तरीक।—दक्खिनी०, पृ० २०३। २ उष्ट्रपाल। रैवारी

हान(पु)[१]—सज्ञा स्त्री० [स० हानि] दे० 'हानि'। उ०—जरा मरन वा घर नही, नही लाभ नहि हान।—धरम०, पृ० ७६।

हान[२]—सज्ञा पुं० [सं०] १ त्यागने की क्रिया। परित्याग। त्याग। २ विफलता। वैफल्य। ३ अपसपण। अपयान। ४ कमी। अभाव। ५ समाप्ति। विराम। ६ शौर्य। शक्ति [को०]।

हानव्य—वि० [स०] जिसकी स्थिति जवडे मे हो। जैसे,—दाँत [को०]।

हानि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ न रह जाने का भाव। नाश। अभाव। क्षय। जैसे,—प्राणहानि, तिथिहानि। २ नुकसान। क्षति। लाभ का उलटा। पास के द्रव्य आदि मे त्रुटि या कमी। घाटा। टोटा। जैसे,—इस व्यापार मे वडी हानि हुई। ३ स्वास्थ्य मे वाधा। तदुरुस्ती मे खरावी। जैसे,—जिस वस्तु से हानि पहुँचती है, उसे क्यो खाते हो? ४ अनिष्ट। अपकार। वुराई। ५ तिरस्कार। उपेक्षा (को०)। ६ न्यूनता। कमी (को०)। ७ दोष। त्रुटि (को०)। परित्यजन। परित्याग (को०)। ८ गति। गमन (को०)।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

मुहा०—हानि उठाना = नुकसान सहना। हानि पहुँचना = नुकसान होना। हानि पहुँचाना = नुकसान करना।

हानिकर—वि० [सं०] १ हानि करनेवाला। जिससे नुकसान पहुँचे। २ अनिष्ट करनेवाला। वुरा परिणाम उपस्थित करनेवाला। ३ स्वास्थ्य मे त्रुटि या वाधा पहुँचानेवाला। तदुरुस्ती विगाडनेवाला। रोगी वनानेवाला।

हानिकारक—वि० [सं०] दे० 'हानिकर'।

हानिकारी—वि० [सं० हानिकारिन्] दे० 'हानिकर'।

हानीय—वि० [सं०] जो छोडने अथवा परित्याग करने के योग्य हो। दे० 'हातव्य' [को०]।

हानु—संज्ञा पुं० [सं०] दत। दाँत [को०]।

हान्यौ(पु)—वि० [सं० हनन] मारा हुआ। उ०—नदमुवन तव ही पहिचान्यौ। दुष्ट न दुरै दई की हान्यौ।—नद० ग्र०, पृ० २८५।

हापन—संज्ञा पुं० [सं०] १ परित्याग करने या हटा देने के लिये वाध्य करने की क्रिया। २. ह्रास। अभाव [को०]।

हापुत्रिका, हापुत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का खजन [को०]।

हाफ—वि० [अ०] आधा। अर्ध।

हाफिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] जँभाई। जृभा [को०]।

हाफिज[1]—संज्ञा पुं० [अ० हाफ़िज़] १ वह धार्मिक मुसलमान जिसे कुरान कठ हो। उ०—दादू यह तन पिंजरा माँही मन सूवा। एकै नाँव अलह का, पढि हाफिज हूवा।—दादू०, पृ० ४७। २ वह जिसकी स्मरण शक्ति तीव्र हो (को०)।

हाफिज[2]—वि० बचानेवाला। रक्षक। उ०—वह अपना सँभाले हमारा भी खुदा हाफिज है।—रगभूमि, भा० २, पृ० ७०४।

हाफिजा—संज्ञा पुं० [अ० हाफ़िज़ह्] याददाश्त। स्मरणशक्ति [को०]।

हाफू(पु)—संज्ञा पुं० [यू० ओपियम, अ० अफयून, फा० अपयून, मरा० अफू, हिं० अफीम, आफू] अफीम। उ०—रज्जव रजमाँ पाइए हाफू जली गुनाह।—रज्जव०, पृ० ३।

हाबिस—संज्ञा पुं० [देश०] जहाज का लगर उखाडने अथवा उसे खीचने की क्रिया।

हाबी[1]—संज्ञा स्त्री० [अ० हॉबी] अभिरुचि। शौक। उ०—लाला भगवानदीन जी की हाबी थी—पढाना पढना, पढना पढाना।—अपनी०, पृ० १०१।

हाबी[2]—वि० [अ० हावी] दे० 'हावी'। उ०—वरकि उनपर बदजेहा हावी है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ८६।

हाबुस—संज्ञा पुं० [सं० हविष्य] जौ की कच्ची बाल जो प्राय भूनकर और नमक मिर्च मिलाकर खाई जाती है।

हाबूडा—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की पिछडी जाति जिसका काम लूटमार और चोरी आदि करना है।

हामिद—वि० [अ०] १ तारीफ या प्रशसा करनेवाला। प्रशसक। २ ईश्वर का स्तवन करनेवाला [को०]।

हामिल—वि० [अ०] [वि० स्त्री० हामिला] १ बोझ उठानेवाला। वाहक। २ रखनेवाला। धारण करनेवाला [को०]।

हामिला—संज्ञा स्त्री० [अ० हामिलह्] वह स्त्री जिसके पेट मे बच्चा हो। गर्भिणी स्त्री।

हामी[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाँ] 'हाँ' करने की क्रिया या भाव। स्वीकृति। स्वीकार। उ०—तनिक जवान से भरी हामी।—पलटू०, पृ० २।

मुहा०—हामी भरना = किसी बात के उत्तर मे 'हाँ' कहना। स्वीकार करना। मजूर करना। मानना।

हामी[2]—वि०, संज्ञा पुं० [अ०] १ वह जो हिमायत करता हो। पक्षपाती। समर्थक। पृष्ठपोषक। उ०—शुक्ल जी देशभक्त लेखक थे, वह साहित्य मे देशभक्ति के हामी थे।—आचार्य०, पृ० २२। २ सहायक। मददगार।

हाय[1]—प्रत्य० [सं० हा] १ शोक और दुख सूचित करनेवाला एक शब्द। घोर दुख या शोक मे मुँह से निकलनेवाला एक शब्द। आह। २ कष्ट और पीडा सूचित करनेवाला शब्द। शारीरिक व्यथा के समय मुँह से निकलनेवाला शब्द।

क्रि० प्र०—करना।

यौ०—हाय तोबा = हाय हाय करना। चिल्ल पो मचाना। उ०—वडी हायतोबा के बाद वह टाँगे पर बैठी।—पिजडे०, पृ० ५६।

मुहा०—हाय करके या हाय मारकर रह जाना = निरुपाय होकर कष्ट सहन करना। हाय मारना = (१) शोक से हाय हाय करना। कराहना। (२) दहल जाना। स्तभित हो जाना।

हाय[2]—संज्ञा स्त्री० १ कष्ट। पीडा। दुख। जैसे,—गरीब की हाय का फल तुम्हारे लिये अच्छा नही। उ०—तुलसी हाय गरीब की हरि सो सही न जाय।। (चलित) (शब्द०)।

मुहा०—(किसी की) हाय पडना = पहुँचाए हुए दुख या कष्ट का बुरा फल मिलना। जैसे,—इतने गरीबो की हाय पड रही है, उसका कभी भला न होगा।

२ जलन। ईर्ष्या। डाह।

मुहा०—हाय करना, हाय होना = किसी की उन्नति, धन सपत्ति, समान आदि देखकर ईर्ष्या करना।

हायक—वि० [सं०] परित्याग करनेवाला। छोड देनेवाला [को०]।

हायन—संज्ञा पुं० [सं०] १ वर्ष। सवत्सर। साल। २ एक प्रकार का चावल (को०)। ३ आग की लौ। लपट (को०)। ४ छोड देना। परित्याग (को०)। ५ गुजर जाना। गुजरना (को०)।

हायनक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का मोटा चावल जो लाल होता है।

हाय भाय(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हाव + भाव] भावभगिमा। मुद्रा। हावभाव। उ०—अद्भुत अकह अनूप अनत हायभायनि की, लूरति लरी की लरी भरी अति चितचायनि की।—रत्नाकर, भा० १, पृ० १५।

हायल(पु)[1]—वि० [सं० हात (= छोडा हुआ), प्रा० हाय, अथवा हिं० घायल] घायल। शिथिल। मूर्छित। बेकाम। उ०—किय हायल चित चाय लगि बजि पायल तुव पाय। पुनि सुनि सुनि मुख मधुर धुनि, क्यो न लाल ललचाय।—बिहारी (शब्द०)।

हायल[2]—वि० [अ०] दो वस्तुओ के बीच मे पडनेवाला। व्यवधान रूप से स्थित। रोकनेवाला। अतरवर्ती।

हाय हाय[1]—अव्य० [सं० हा हा] शोक, दुख या शारीरिक कष्टसूचक शब्द। दे० 'हाय'। उ०—सुनि कटु वचन कुठार सुधारा। हाय हाय सब सभा पुकारा।—मानस, १।२७६।

क्रि० प्र०—करना।—मचना।—होना। उ०—बस हाय हाय मच गई, रोने की अवाजे आने लगी।—प्रेमघन०, भा०२, पृ० २४।

हाय हाय[२]—संज्ञा स्त्री० १ कष्ट। दुःख। पीडा। शोक। २ व्याकुलता। घबराहट। आकुलता। परेशानी। झंझट। जैसे,— (क) तुम्हे तो रुपए के लिये सदा हाय हाय रहती है। (ख) जिंदगी भर यह हाय हाय न मिटेगी।

हार[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० हारि] १ युद्ध, क्रीडा, प्रतिद्वंद्विता आदि मे शत्रु के समुख असफलता। लडाई, खेल, बाजी या चढा ऊपरी मे जोड या प्रतिद्वंद्वी के सामने न जीत सकने का भाव। पराजय। शिकस्त। जैसे,—लडाई मे हार, खेल मे हार इत्यादि।

क्रि० प्र०—जाना।—मानना।—होना।

यौ०—हारजीत।

मुहा०—हार खाना = पराजय होना। हारना। हार देना = पराजित करना। हराना। हार बोलना = हार मान लेना।

२ शिथिलता। श्रांति। थकावट। ३ हानि। क्षति। हरण। ४ जब्ती। राज्य द्वारा हरण। ५ युद्ध। ६ विरह। वियोग।

हार[२]—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोने, चाँदी या मोतियो आदि की माला जो गले मे पहनी जाय। उ०—नव उज्वल जलधार, हार हीरक सी सोहति।—भारतेंदु ग्रं०, भा १, पृ० २८२।

विशेष—किसी के मत से इसमे ६४ और किसी के मत से १०८ दाने होने चाहिए।

मुहा०—हार मोर हो जाना = गायब हो जाना। उ०—निजरा आगे निमष मै, हार मोर ह्वै जाय।—बाँकी० ग्रं०, भा०३, पृ० २२।

२ वह जो ले जानेवाला या वहन करनेवाला हो। ३ अंकगणित मे भाजक। ४ पिंगल या छंद शास्त्र मे गुरु मात्रा। ५ ले लेना। हरण (को०)। ६ अलग करना। रहित करना (को०)। ७ मोती की माला। ८ क्षेत्र का विस्तार। ९ मार्ग। रास्ता। उ०—हार मुक्त को फूल को, हार क्षेत्र विस्तार, हार विरह को बोलिबो, मारग कहियत हार।—अनेकार्थ०, पृ० १६२।

हार[३]—वि० १ मनोहर। मन हरनेवाला। सुदर। २ नाश करनेवाला। ३ ले जानेवाला या हरण करनेवाला (को०)। ४ उगाहने या वसूल करनेवाला। ५ शिव सबधी। ६ विष्णु सबधी।

हार[४]—संज्ञा पु० [देश० या स० अरण्य] १ वन। जगल। २ नाव के बाहरी तख्ते। ३ चरने का मैदान। चरागाह। गोचारण भूमि। ४ कृषिभूमि। खेत।

हार[५]—प्रत्य० [सं० धार, हिं० हार] वाला अर्थ का सूचक प्रत्यय। दे० 'हारा'। जैसे,—पावनिहार।

हारक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ हरण करनेवाला। लेनेवाला। २ जानेवाला। ३ मन हरनेवाला। मनोहर। सुदर। ४ चोर। लुटेरा। ५ धूर्त। खल। ६ गणित मे भाजक। ७ जुआडी (को०)। ८ हार। माला। ९ एक विज्ञान (को०)। १० शाखोट वृक्ष (को०)। ११. गद्य का एक प्रकार या भेद (को०)।

हारक[२]—वि० १ ले लेनेवाला। हरण करनेवाला। २ लूटनेवाला। चोरी करनेवाला। ३ आकर्षित करनेवाला। आकर्षक। ४ मोहक। मनोहर। सुदर (को०)।

हारगुटिका—संज्ञा स्त्री० [स०] हार की गुरिया। माला के दाने।

हारणा—संज्ञा स्त्री० [स०] हरण कराने की क्रिया (को०)।

हारद(पु)—वि० [सं० हार्द] दे० 'हार्द', 'हार्दिक'।

हारना[१]—क्रि० अ० [स० हारि, हिं० हार + ना (प्रत्य०) अथवा स० हृत या हारित, प्रा० हारिअ, हि० हारि] १ युद्ध, क्रीडा, प्रतिद्वंद्विता आदि मे शत्रु के सामने असफल होना। लडाइ, खेल, बाजी या लाग डाँट मे दूसरे पक्ष के मुकाबिले मे न जीत सकना। पराभूत होना। पराजित होना। शिकस्त खाना। जैसे,—लडाई मे हारना, खेल या बाजी मे हारना।

सयो० क्रि०—जाना।

२ व्यवहार या अभियोग मे दूसरे पक्ष के मुकाबिले मे कृतकार्य न होना। मुकदमा न जीतना। जैसे,—मुकदमे मे हारना। ३ श्रांत होना। शिथिल होना। थक जाना। प्रयत्न मे निराश होना। असमर्थ होना। जैसे,—जब वह उसे न ले सका, तब हारकर बैठ गया।

यौ०—हारा मांदा।

मुहा०—हारे दर्जे = (१) सब उपायो से निराश होकर और कुछ वस न चलने पर। (२) लाचार होकर। विवश होकर। हारकर = (१) असमर्थ होकर। (२) लाचार होकर।

हारना[२]—क्रि० स० १ लडाई, बाजी आदि को सफलता के साथ न पूरा करना। जैसे,—बाजी हारना, दाँव हारना। २ नष्ट करना या न प्राप्त करना। गँवाना। खोना। जैसे,—प्राण हारना, धन हारना। ३ छोड देना। न रख सकना। जैसे,—हिम्मत हारना। दे देना। प्रदान करना। जैसे,—वचन हारना।

हारफल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हारफलक'।

हारफलक—संज्ञा पुं० [स०] पाँच लडियो का हार।

हारबध—संज्ञा पुं० [सं० हारबन्ध] एक चित्रकाव्य जिसमे पद्य हार के आकार मे रखे जाते हैं।

हारबर—संज्ञा पु० [अ०] समुद्र के किनारे, नदी के मुहाने या खाडी मे बना हुआ वह स्थान जहाँ जहाज आकर ठहरते हैं। बंदरगाह। जैसे,—डायमंड हारबर, बबई हारबर।

हारभूरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] द्राक्षा। दाख। अगूर।

हारभूषिक—संज्ञा पुं० [स०] एक प्रचीन जाति।

हारमुक्ता—संज्ञा स्त्री० [स०] हार का मोती। हार मे गुँथा मोती।

हारमोनियम—संज्ञा पुं० [अ०] सदूक के आकार का एक अँगरेजी बाजा जिसपर उँगली रखने और भाथी पर दाब देने से अनेक प्रकार के इच्छित स्वर निकलते हैं। इसमे मद्र, मध्य और तार—ये तीनो सप्तक होते है।

हारम्य(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हर्म्य] प्रासाद। अट्टालिका। हर्म्य। उ०—हारम्य रम्य फिरि मडि लोइ। दालिद्र दीन दीसै न कोइ।—पृ० रा०, १। ६०७।

हारयष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] हार या माला की लडी ।

हारल†—संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार की चिडिया जो अपने चगुल मे कोई लकडी या तिनका लिए रहती है । दे० 'हारिल' ।

हारलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'हारयष्टि'।

हारवार(पु)—संज्ञा स्त्री० [अनु०] दे० 'हडबडी' ।

हारसिंगार—संज्ञा पु० [हिं० हार + सिंगार] हरसिंगार का पेड या फूल । परजाता।

हारहारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का अगूर ।

हारहूण—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन देश का नाम । २ हारहूण देश के निवासी ।

हारहूर—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का मद्य ।

हारहूरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का अगूर।

हारहूरिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'हारहूरा' ।

हारहौर—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन देश का नाम । २ उक्त देश का निवासी ।

हारा१—प्रत्य० [सं० धार (= रखनेवाला)] [स्त्री० हारी] एक पुराना प्रत्यय जो किसी शब्द के आगे लगकर कर्तव्य, धारण या सयोग आदि सूचित करता है । वाला । जैसे,—करनेहारा, देनेहारा, लकडहारा इत्यादि ।

हारा२—संज्ञा स्त्री० [देश०] दक्षिणपश्चिम के कोने की हवा ।

हारा(पु)३—संज्ञा स्त्री० [अ० हाल] हाल । लाचारी । दीनता । उ०—'दही दही' करि महरि पुकारा । हारिल विनवै आपन हारा ।—जायसी ग्र०, पृ० ११ ।

हारावलि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मोतियो की माला । उ०—रसिक जनन जीवन जु हृदय हारावलि धारी ।—भक्तमाल, पृ० ५३७ । २ पुरुषोत्तम देव द्वारा रचित अप्रचलित शब्दो के सग्रह से युक्त सस्कृत का एक कोशग्रथ ।

हारावली—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'हारावलि' ।

हारि१—संज्ञा पुं० [सं०] १ हार । पराभव । शिकस्त । २ क्रीडा या द्यूतक्रीडा मे पराजय । ३ पथिको का दल । कारवाँ ।

हारि२—वि० १ हरण करनेवाला । ले जाने या बलात् ले लेनेवाला । २ आकर्षक । मनोहर । मन हरनेवाला ।

हारि(पु)३—संज्ञा स्त्री० शिथिलता । दे० 'हार१' ।

हारिकठ१—वि० [सं० हारिकण्ठ] १ मधुर कठवाला । मधुरभाषी । २ जो गले मे मोतियो की माला पहने हो [को०] ।

हारिकठ२—संज्ञा पु० कोयल [को०]।

हारिक१—वि० [सं०] हरि के सदृश । हरितुल्य ।

हारिक२—संज्ञा पुं० एक प्राचीन जनपद [को०] ।

हारिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छद का नाम [को०] ।

हारिज—वि० [अ०] १ हानिकर । नुकसानदेह । २ गडबडी फैलानेवाला । उपद्रवकारी । बाधक [को०] ।

हारिण१—वि० [सं०] [वि० स्त्री० हारिणी] हिरण से सबधित [को०]।

हारिण२—संज्ञा पु० हिरन का मास । मृगमास [को०] ।

हारिणाश्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'हारिनाश्वा' ।

हारिणिक—वि० [सं०] हिरण को पकडनेवाला । शिकारी [को०] ।

हारित१—वि० [सं०] १ हरण कराया हुआ । २ लाया हुआ । जिसे ले आए हो । ३ छीना हुआ । ४ खोया हुआ । गँवाया हुआ । ५ छोडा हुआ । समर्पित । ६ वचित । ७ पराजित । हारा हुआ । ८ आकृष्ट । मोहित । मुग्ध ।

हारित२—संज्ञा पुं० १ तोता । सूआ । २ एक वर्णवृत्त जिसमे एक नगण और दो गुरु होते हैं । ३ हरा रग (को०) । ४ सामान्य ढग की हवा जो न बहुत कम और न बहुत तीखी हो (को०) । ५ विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम (को०) । ६ एक प्रकार का कबूतर (को०) ।

हारितक—संज्ञा पुं० [सं०] हरी सब्जी । हरा शाक [को०] ।

हारिद्र१—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का विष जिसका पौधा हल्दी के समान होता है और जो हल्दी के खेतो मे ही उगता है । इसकी गाँठ बहुत जहरीली होती है । २ एक प्रकार का प्रमेह जिसमे हल्दी के समान पीला पेशाब आता है । ३ एक प्रकार का ज्वर (को०) । ४ कदब का वृक्ष । कदब (को०) । ५ स्वर्ण । सोना (को०) । ६ पीला रग (को०) ।

हारिद्र२—वि० पीत वर्ण का । पीला [को०] ।

हारिद्रमेह—संज्ञा पु० [सं०] प्रमेह रोग का एक भेद । हरिद्रा मेह ।

हारिनाश्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सगीत मे एक मूर्छना जिसका स्वरग्राम इस प्रकार है—ग, म, प, ध, नि, स, रे । स, रे, ग, म, प, ध, नि, स, रे, ग, म, प ।

हारिल—संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार की चिडिया जो प्राय: अपने चगुल मे कोई लकडी या तिनका लिए रहती है । इसका रग हरा, पैर पीले और चोच कासनी रग की होती है । हरियल । उ०—हमारे हरि हारिल की लकरी ।—सूर (शब्द०)

हारी१—वि० [सं० हारिन्] [वि० स्त्री० हारिणी] १ हरण करनेवाला । छीननेवाला । २ ले जानेवाला । पहुँचानेवाला । लेकर चलनेवाला । ३ चुरानेवाला । लूटनेवाला । ४ दूर करनेवाला । हटानेवाला । ५ नाश करनेवाला । ध्वस करनेवाला । ६ वसूल करनेवाला । उगाहनेवाला (कर या महसूल) । ७ जीतनेवाला । पराजित करनेवाला । ८ मन हरनेवाला । मोहित करनेवाला । ९ आह्लादित, खुश या प्रसन्न करनेवाला । १० ग्रहण करनेवाला (को०) । ११ हार पहननेवाला ।

हारी२—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक तगण और दो गुरु होते है । २ बदनाम लडकी जो विवाह के अयोग्य कही गई है (को०) । ३ मुक्ता । मोती (को०) ।

हारी३—संज्ञा स्त्री० [हिं०] पराजय । दे० 'हार' ।

मुहा०—हारी मानना न जीती मानना = किसी तरह न मानना । न चित्त मानना न पट मानना । उ०—हजार बार कह दिया,

समझा दिया कि वावा लडो झगडो मत। मगर यह शख्स किसी की सुनता ही नही। हारी मानना है न जीती।—सैर०, पृ० २३।

हारीत--संज्ञा पुं० [सं०] १ चोर। लुटेरा। डाकू। २ धूर्त। शठ। चाँई। ३ चोरी। लुटेरापन। ४ चाँईपन। धूर्तता। ५ कण्व ऋषि के एक शिष्य का नाम। ६ एक ऋषि जो स्मृतिकार हैं। ७ जावाल ऋषि के एक पुत्र का नाम। ८ राजतरंगिणी के अनुसार एक जनपद का नाम। ८ परेवा। कबूतर।

हारीतक--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का कबूतर [को०]।

हारीतवध--संज्ञा पुं० [स० हारीतवन्ध] एक प्रकार का वृत्त।

हारु(पु)--संज्ञा पुं० [स० हार] दे० 'हार'। उ०--मोतीहारु आधो चारु उर रह्यो लसी।—नद० ग्र०, पृ० ३४७।

हारुक--संज्ञा पुं० [स०] १ हरण करनेवाला। छीननेवाला। २ ले जानेवाला।

हारौल--संज्ञा पुं० [तु० हरावल, हिं० हरौल] दे० 'हरावल'।

हार्द[१]--संज्ञा पुं० [स०] १ प्रेम। स्नेह। उ०--हार्द स्नेह प्रियता वहुरि प्रनय राग अनुराग।--अनेकार्थ०, पृ० ५६। २ हृद्गत अभिप्राय। मनोभावना। इरादा (को०)। ३ प्रयोजन। इच्छा। आकाक्षा (को०)। ४ दयालुता। कृपालुता (को०)।

हार्द[२]--वि० हृदय सवधी। हृदय का।

हार्दिक--वि० [सं०] १ हृदय सवधी। हृदय का। २ हृदय से निकला हुआ। सच्चा। जैसे,--हार्दिक सहानुभूति। हार्दिक प्रेम।

हार्दिक्य--संज्ञा पुं० [स०] १ मित्रभाव। मित्रता। सुहृद्भाव। २ महाभारत के अनुसार कृतवर्मा का एक नाम [को०]।

हार्दी[१]--संज्ञा पुं० [स० हार्दिन्] वह वस्तु जो वहुत अधिक पसद की जाय। वह वस्तु जिसके प्रति हृदय वहुत अधिक अनुरक्त हो [को०]।

हार्दी[२]--वि० स्नेहानुभूति करनेवाला। सहृदय [को०]।

हार्न--संज्ञा पुं० [अ०] मोटर द्वारा मार्ग मे की जानेवाली सकेतध्वनि। मोटर का भोपा। उ०--इतने मे मोटर का हार्न सुनाई दिया और एक पल मे रतन आ पहुँची।--गवन, पृ० २५०।

हार्य[१]--वि० [सं०] १ हरण करने या छीनने योग्य। २ ग्रहण करने या लेने योग्य। ३ जो हरण किया या छीना जानेवाला हो। ४ जो ग्रहण किया या लिया जानेवाला हो। ५ अस्थिर, ढुलमुल या विचलित होने योग्य। जैसे, किसी की प्रतिज्ञा या वचन (को०)। ६ जो हिलाया या इधर उधर किया जानेवाला हो। हिलाने योग्य, विशेषत वायु द्वारा। ७ जो आकृष्ट, प्रभावित या वशीभूत करने योग्य हो (को०)। ८ दूर करने, हटाने या वारण करने योग्य। जिसका वारण किया जा सके (को०)। ९ जो नष्ट करने या विध्वस्त करने लायक हो (को०)। १० मनमोहक। सौंदर्ययुक्त। लुभाना (को०)। ११ जिसका अभिनय किया जानेवाला हो (नाटक आदि)। १२ जो भाग दिया जानेवाला हो। जिसमे भाग दिया जाय। (गणित मे) भाज्य।

हार्य[२]--संज्ञा पुं० १ सर्प। सांप। भुजग। २ विभीतक का वृक्ष। ३ गणित मे वह अक जिसमे भाग दिया जाय। भाज्य अक [को०]।

हार्या--संज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का चदन।

हार्र--वि० [अ०] १ उष्ण। गरम। तप्त। २ गर्म करनेवाला। गर्म स्वभाव या प्रभाववाला। जैसे,--ओषधि [को०]।

हार्री--वि० [अ० हार्रह्] १ उष्ण। तप्त। २ जिसमे खेती की जाती हो। जैसे,--भूमि। ३ वोया हुआ। जिसमे वीज वोया गया हो [को०]।

हाल[१]--संज्ञा पुं० [अ०] १ दशा। अवस्था। जैसे,--अब उनका क्या हाल है? उ०--(क) विरहिनि तो वेहाल है, को जानत हाला।--कबीर श०, भा० ३, पृ० १७। (ख) डोला लिए चलो तुम झटपट, छोडो अटपट चाल रे। सजन भवन पहुँचा दो हमको, मन का हाल विहाल, रे।--क्वासि, पृ० ४७। २ परिस्थिति। माजरा। ३ सवाद। समाचार। वृत्तात। जैसे,--वहुत दिनो से उनका कुछ हाल नही मिला। ४ जो वात हुई हो, उसका ठीक ठीक उल्लेख। इतिवृत्त। ब्योरा। विवरण। कैफियत। ५ कथा। आख्यान। चरित्र। जैसे,--इस किताब मे हातिम का सारा हाल है। २ ईश्वर के भक्तो या साधको की वह अवस्था जिसमे वे अपने को विलकुल भूलकर ईश्वर के प्रेम मे लीन हो जाते हैं। तन्मयता। लीनता। (मुसल०)।

यौ०--हालचाल = वर्तमान स्थिति या दशा। हालविहाल, हाल वेहाल = वुरी दशा। दयनीय दशा। हाल समाचार = वर्तमान अवस्था और गतिविधि।

मुहा० --(किसी पर) हाल आना = ईश्वरप्रेम का उद्वेग होना। प्रेम की वेहोशी छाना।

हाल[२]--वि० वर्तमान। चलता। उपस्थित। जैसे,--जमाना हाल।

मुहा०--हाल मे = थोडे ही दिन हुए। जैसे,--वे अभी हाल मे आए है। हाल का = थोडे दिनो का। नया। ताजा।

हाल[३]--अव्य० १ इस समय। अभी। उ०--वात कहिवे मे नदलाल की उताल कहा? हाल तौ हरिननैनी! हूँकनि मिटाय लै।--शिव (शब्द०)। २ तुरत। शीघ्र। उ०--सग हित हाल करि जाचक निहाल करि नृपता वहाल करि कीरति बिसाल की।--गुलाब (शब्द०)।

हाल[४]--संज्ञा स्त्री० [हिं० हालना] १ हिलने की क्रिया या भाव। कप। २ झटका। झोका। धक्का।

क्रि० प्र०--लगना।

३ नौका का कर्ण। नाव की गलही (को०)। ४ लोहे का वद जो पहिए के चारो ओर घेरे मे चढाया जाता है।

हाल[५]--संज्ञा पुं० [अ० हॉल] वहुत वडा कमरा। जिसमे वहुत से लोग एकत्र हो सके। खूब लबा चौडा कमरा।

हाल[६]--संज्ञा पुं० [सं०] १ खेत जोतने का हल। २ बलराम। ३ शालिवाहन राजा। ४ एक प्रकार का पक्षी [को०]।

हाल[७]--संज्ञा पुं० [फा०] १ श्वेत इलायची। २ चैन। आराम। शाति। ३ नाच। नृत्य। ४ चौगान खेलने की गेंद। कदुक [को०]।

हालक—संज्ञा पुं० [सं०] पीलापन लिए भूरे रंग का घोडा ।

हालगाह—संज्ञा पुं० [फा०] चौगान खेलने का मैदान । कदुक की क्रीडा के लिये निर्मित मैदान [को०] ।

हालगोला—संज्ञा पुं० [हिं० हाल + गोला] गेंद । उ०—किधौं चित्त चौगान के मूल सोहै । हिये हेम के हालगोला बिमोहै ।—केशव (शब्द०) ।

हालडोल—संज्ञा पुं० [हिं० हालना + डोलना] १ हिलने की क्रिया या भाव । गति । २ कप । ३ हलकप । हलचल ।

हालत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ दशा । अवस्था । जैसे,—अब उस बीमार की क्या हालत है ? २ आर्थिक दशा । सापत्तिक स्थिति । जीवननिर्वाह की गति । जैसे,—अब उनकी हालत ऐसी नही है कि कुछ अधिक दे सके । ३. चारो ओर की वस्तुओ और व्यापारो की स्थिति । सयोग । परिस्थिति । जैसे,—ऐसी हालत मे हम सिवा हट जाने के और क्या कर सकते थे ।

मुहा०—हालत खराब होना = (१) दशा विगड़ना । प्रतिकूल परिस्थिति होना । (२) पराभूत होना । हालत गैर या तबाह होना = दे० 'हालत खराब होना ।'

हालदार—संज्ञा पुं० [अ० हवालु + फा० दार] १ दे० 'हवलदार' । २ बगाल मे एक जातिगत अल्ल या उपाधि ।

हालदारी—संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार का कर जो विवाह के अवसर पर पहले बगाल मे लगता था ।

हालना(पु)†—क्रि० अ० [सं० हल्लन] १ हिलना । डोलना । गतिवान् होना । हरकत करना । उ०—ज्यो जल हालत है लगि पौन कहै भ्रम तै प्रतिबिंब हि काँपै ।—सुदर० ग्र०, भा० २, पृ० ५८० । २ काँपना । डगमगाना । उ०—भुव हालति जानि अकास हिये । जनु थभित ठौरनि ठौर किये ।—केशव (शब्द०) । ३ झूमना । लहराना । उ०—(क) भूतल भूधर हाले अचानक आप भरत्थ के दुदुभि बाजे ।—केशव (शब्द०) । (ख) हालति न चपलता डोलत समीरन के बानी कल कोकिल कलित कठ परिगो ।—(शब्द०) ।

हालभृत्—संज्ञा पुं० [स०] बलदेव । बलराम [को०] ।

हालरा—संज्ञा पुं० [हिं० हालना] १ बच्चो को हाथ मे लेकर हिलाने की क्रिया । बच्चो को लेकर हिलाना डुलाना । २ झोका । ३ लहर । हिलोर ।

हालहल, हालहाल—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'हलाहल', 'हालाहल' ।

हालहली—संज्ञा स्त्री० [सं०] मदिरा । शराब [को०] ।

हालहूल[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० हल्ला] १ हल्ला गुल्ला । कोलाहल । शोरगुल । २ हलकप । हलचल । आदोलन ।

हालहूल(पु)[2]— क्रि० वि० [हिं० हालना + अनु० हूलना, या हिं० झूलना] हिलडुलकर । उ०—हालहूल ऊँचे नीचे ठौर ठहराहिगे ।—सुदर० ग्र० (जी०), पृ० ६६ ।

हालाँकि—अव्य० [फा०] यद्यपि । गो कि । ऐसी बात है, फिर भी । जैसे,—वह ज्यादा हिम्मत रखता है, हालाँकि तुमसे कमजोर है ।

हाला[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] मदिरा । मद्य । शराब ।

हाला(पु)[2]—संज्ञा पुं० [हिं० हालना] दे० 'हालो' ।

यौ०—हालाडोला = दे० 'हालडोना' । 'हालाहाली' ।

हालात—संज्ञा पुं० [फा०] हालत का बहुवचन । परिस्थितियाँ [को०] ।

हालावाद—संज्ञा पुं० [स० हाला + वाद] साहित्य, विशेषत काव्य की वह प्रवृत्ति या धारा, जिसमे हाला या मदिरा को वर्ण्य विषय मानकर काव्यरचना हुई हो । उ०—'मधुशाला,' 'मधुबाला' इत्यादि काव्य कृतियो से हिंदी मे हालावाद नाम की एक नई प्रवृत्ति चल पडी ।—हिं० का० आ० प्र०, पृ० १८३ ।

विशेष—साहित्य की इस धारा का आधार उमर खैयाम की रुबाइयाँ रही है ।

हालाह—संज्ञा पुं० [सं०] चितकबरा घोडा । हलाह [को०] ।

हालाहल—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'हलाहल' ।

हालाहाली†—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाल] शीघ्रता । जल्दी जल्दी ।

हालाहाली[2]†—क्रि वि० शीघ्रता मे । जल्दी मे ।

हालिक[1]—वि० [सं०] हल सबधी ।

हालिक[2]—संज्ञा पुं० १ कृषक । किसान । खेतिहर । २ एक प्रकार का छद । ३ पशुओ का वध करनेवाला । कसाई । ४. वह जो हल को शस्त्र की तरह युद्ध मे प्रयुक्त करता हो । हल से युद्ध करनेवाला । ५ वह जो हल को खीचता हो । हल का बैल (को०) । ६ हलवाहा (को०) । ७ अनार । दाडिम । उ०—रक्तबीज, हालिक, करक, शुक प्रिय, कुट्टिम मार । ए दाडिम इत देखि बलि, कछु तुव दसन अकार ।—नद० ग्र०, पृ० १०२ ।

हालिक[3]—वि० [अ०] प्राण लेनेवाला । घातक [को०] ।

हालिनी—संज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की बडी गृहगोधा या छिपकली ।

हालिम—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पौधा जिसके बीज औषध के काम मे आते है । चमुर । चद्रसुर । हालो ।

विशेष—यह सारे एशिया मे लगाया जाता है । इसके बीजो से एक प्रकार का सुगधित तेल निकलता है । बीज बाजार मे बिकते हैं और पुष्ट माने जाते है । ग्रहणी और चर्मरोग मे भी इनका व्यवहार होता है ।

हाली[1]—अव्य० [अ० हाल] जल्दी । शीघ्र ।

यौ०—हाली हाली = जल्दी जल्दी । शीघ्रता से ।

हाली[2]—संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी की छोटी बहन । साली [को०] ।

हाली(पु)[3]—संज्ञा पुं० [प० हाल] १ हल चलानेवाला । कृषक । उ०—बाडी माँहि माली निपज्यो हाली माँहि निपज्यो पेत ।—सुदर० ग्र०, भा०२, पृ० ५३३ ।

हाली[4]—वि० [अ०] १ वर्तमान समय का । आधुनिक । २ आभूषित । शृगारित । ३ चालू । जो प्रचलन मे हो । जैसे,—नोट सिक्का आदि । [को०] ।

हालीमवाली— संज्ञा पुं० [अ०] सगी साथी । यार दोस्त ।

हालु— संज्ञा पुं० [स०] दत । दाँत ।

हालूक—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की भेड जो तिब्बत के पूरबी भाग मे होती है और जिसका ऊन बहुत अच्छा होता है ।

हालों, हालौं—संज्ञा पुं० [देश० हालिम] दे० 'हालिम।'

हालो(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० हालना] हलकप। हलचल। उ०—हालो परयो लोकन मे लालो परयो चक्रिन मे चालो परयो लोगन मे चामर चवात हो।—कविता कौ०, भा०१, पृ० १५१।

हाल्ट—संज्ञा पुं० [अ०] दल या सेना का चलते हुए एकदम रुक जाना या ठहर जाना। ठहराव।

विशेष—मार्च करती हुई या चलती हुई सेना को ठहराने के लिये यह शब्द जोर से बोला जाता है।

हाव—संज्ञा पुं० [सं०] १ पास बुलाने की क्रिया या भाव। पुकार। बुलाहट। २ सयोग या शृगार के समय मे नायिका की प्रेमभाव-जनित स्वाभाविक चेष्टाएँ जो पुरुष को आकर्षित करती हैं।

विशेष—साहित्य मे ग्यारह हाव गिनाए गए हैं—लीला, विलास, विच्छित्ति, विभ्रम, किलकिंचित, मोट्टायित, विब्वोक, विहृत, कुट्टमित, ललित और हेला। भाव विधान मे 'हाव' अनुभाव के ही अतर्गत है।

यौ०—हावभाव।

हावक—संज्ञा पुं० [सं०] १ हवन या यज्ञ करानेवाला। २ वह जो आह्वान करे। पुकारनेवाला व्यक्ति (को०)। ३ वह व्यक्ति जो वधू या दुलहिन को बुलाए (को०)।

हावन—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १ उलूखल। ओखली। २ दवा आदि कूटने का ओखली जैसा लोहे का पात्र।

हावनदस्ता—संज्ञा पुं० [फ़ा० हावनदस्तह्] लोहे का ओखली जैसा पात्र और कूटने का लवा लोहे का वट्टा। खरल और वट्टा।

हावनीय—वि० [सं०] हवन कराने योग्य।

हावभाव—संज्ञा पुं० [सं०]स्त्रियो की वह चेष्टा जिससे पुरुषो का चित्त आकर्षित होता है। नाज नखरा।

क्रि० प्र०—करना।—दिखाना।

हावर—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का छोटा पेड।

विशेष—यह पेड अवध, राजपूताना, मध्यप्रदेश और मद्रास मे बहुत होता है। इसकी लकडी मजबूत, वजनी और भूरे रग की होती है और खेती के सामान (हल, पाटे आदि) वनाने के काम मे आती है।

हावलावावला—वि० [हिं० बावला] [वि० स्त्री० हावलीबावली] पागल। सनकी।

हावहाव—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाय] किसी पदार्थ को प्राप्त करने की बहुत अधिक और अनुचित इच्छा। हाय हाय। जैसे,—तुम्हें तो हरदम रुपयो की हावहाव पडी रहती है।

हावी[1]—वि० [अ०] १ छाया हुआ। आच्छादित। जिसने किसी चीज को ढँक लिया हो। २ कुशलता और चतुराई के बल से जिसने किसी को प्रभावित कर लिया हो। ३ प्रभावित करनेवाला। अधिकार करनेवाला। उ०—कवि पर धर्मोपदेष्टा और नीतिकार का हावी होना शुक्ल जी को पसद नही है।—आचार्य०, पृ० ११५।

हावी[2]—वि० [सं० हाविन्] अग्नि मे हवि देनेवाला। साकल्य, घृत आदि हवन करनेवाला। होता (को०)।

हाशिया—संज्ञा पुं० [अ० हाशियह्] १. किसी फैली हुई वस्तु का किनारा। कोर। पाड। वारी। जैसे,—किताब का हाशिया, कपडे का हाशिया। २ गोट। मगजी।

क्रि० प्र०—चढाना।—लगाना।

३ हाशिए या किनारे पर का लेख। नोट।

मुहा०—हाशिए का गवाह = वह गवाह या साक्षी जिसका नाम किसी दस्तावेज के किनारे दर्ज हो। हाशिया चढाना = किसी बात मे मनोरजन आदि के लिये कुछ और बात जोडना। नमक मिर्च लगाना।

यौ०—हाशिया आराई = दे० 'हाशिया चढाना'। हाशियानशीन = (१) दरबार मे मडलाकार बैठनेवाले सभासद। (२) किसी बडे आदमी के पास उठने बैठनेवाले लोग। हशियानशीनी = दरवरदारी। मुसाहिबी।

हास[1]—संज्ञा पुं०[सं०] १ हँसने की क्रिया या भाव। हँसी। उ०—सतो भाई सुनिए एक तमासा। चुप करि रहो त कोई न जानै कहते आवै हासा।—सुदर० भा० २, पृ० ८२७। २ परिहास। दिल्लगी। ठट्ठा। मजाक। ३ निंदा का भाव लिए हँसी। उपहास। ४ आनद। खुशी। ५ हास्य रस का स्थायी भाव (को०)। ६ अत्यत चमकीला श्वेत वर्ण। ७ खिलना। विकसित होना (को०)। ८ अहकार। गर्व। घमड (को०)।

यौ०—हास परिहास, हासविलास = हास और क्रीडा। उ०—चारु चिबुक नासिका कपोला। हासविलास लेत मन मोला।—मानस, १।१२३।

हास[2]—वि० श्वेत (वर्ण)। उज्वल।

हासक—संज्ञा पुं० [सं०] १ हँसानेवाला व्यक्ति। भाँड। विदूषक। २ हास। हास्य (को०)।

हासकर[1]—वि० [सं०] हँसानेवाला। जिसमे या जिससे हँसी आवे।

हासकर[2]—संज्ञा पुं० हास मे प्रवृत्त करने की क्रिया। हँसाना।

हासद—वि० [सं० हास(= प्रसन्नता, खुशी) + द (प्रत्य०)] सुखात। उ०—नाटको मे त्रासद (दु खात) और हासद (सुखात) का भेद किया जाता है।—स० शास्त्र, पृ० १२६।

हासन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ हँसाना। हासयुक्त करना। २ वह जो हँसाता हो। हँसानेवाला।

हासन[2]—वि० हँसानेवाला। मजाक से भरा हुआ। मजाकिया (को०)।

हासनिक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो विनोद या क्रीडा का साथी हो। साथ साथ विनोद या क्रीडा करनेवाला।

हासवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] तात्रिक बौद्धो की एक देवी।

हासशील—वि० [सं०] हँसानेवाला। हँसोड। विनोदी।

हासस्—संज्ञा पुं० [सं०] इदु। चद्रमा। सुधाकर (को०)।

हासा—संज्ञा पुं० [सं०] काल। समय (को०)।

हासिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हँसी। हास्य। २ आनद। क्रीडा। विलास। मौज। मनोरजन (को०)।

हासिद—वि० [अ०] हसद करनेवाला। डाह करनेवाला। ईर्ष्यालु।

हासिनी—वि० स्त्री० [स० हासिन् = हासी, हासिनी] हँसनेवाली। उ०—कौन! कौन तुम निष्ठुर हासिनि ?—रजत०, पृ० ७६।

हासिब—सञ्ज्ञा पुं० [अ०] १ वह आँधी जिसमे धूल और ककड हो। धूल और ककड पत्थर से भरी आँधी। २ वह बादल जो ओले बरसाए [को०]।

हासिल¹—वि० [अ०] १ प्राप्त। लब्ध। वसूल। पाया हुआ। मिला हुआ। २ जो शेष रह जाय या जो बचा हुआ हो। उ०—काया गढ बैठो कुतवलिया हासिल ले सब दाम गनाय।—गुलाल०, पृ० १।

मुहा०—हासिल आना = दे० 'हासिल होना'। हासिल करना = प्राप्त करना। लाभ करना। जैसे,—दौलत हासिल करना, इल्म हासिल करना। हासिल होना = (१) प्राप्त होना। मिलना। (२) शेष रहना। बाकी रहना। बच जाना।

हासिल²—सञ्ज्ञा पुं० १ गणित करने मे किसी सख्या का वह भाग या अक जो शेष भाग के कही रखे जाने पर बच रहे। हाथ।

क्रि० प्र०—आना।—लगना।

२ उपज। पैदावार। ३ लाभ। नफा। ४ गणित की क्रिया का फल। जैसे,—हासिल जरब, हासिल तकसीम। ५ जमा। राजस्व। लगान। वसूली। ६ परिणाम। निचोड। निष्कर्ष (को०)।

यौ०—हासिल कलाम = बात का निष्कर्ष या निचोड। हासिल जमा = योगफल। जोड। मीजान। हासिल जर्ब = दो सख्याओ के गुणन से प्राप्त सख्या। गुणनफल। हासिल तकसीम = लब्धाक। भजनफल। हासिल तफ़ीक = बडी सख्या मे से शेष छोटी सख्या घटाने से प्राप्त शेष सख्या। शेष। हासिल मतलब = साराश। निष्कर्ष।

हासी¹—वि० [सं० हासिन्] [वि० स्त्री० हासिनी] १ हँसनेवाला। जैसे,—चारुहासी। २ उपहास करनेवाला। ३ श्वेत। सफेद।

हासी(पु)²—सञ्ज्ञा स्त्री० [हिं० हँसना] हँसी। हास। उ०—हासी लौं उजासी जाकी जगत हुलासी है।—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० २८१।

हास्त—वि० [स०] हाथ का बना हुआ। हस्तनिर्मित।

हास्तमुकुल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] अजलि [को०]।

हास्तिक¹—वि० हाथी का या हाथी से सबधित [को०]।

यौ०—हास्तिकदत = हाथी का दाँत। हाथीदाँत।

हास्तिक²—सञ्ज्ञा पुं० १ पीलवान। महावत। २ हाथी का सवार। ३ हाथियो का गिरोह, झुड या समूह [को०]।

हास्तिदत—वि० [सं० हास्तिदन्त] हाथीदाँत से निर्मित। हाथीदाँत का बना हुआ [को०]।

हास्तिन¹—वि० [स०] १ हाथी जितना गहरा। जैसे,—पानी। २ हाथी का अथवा हाथी से सबधित [को०]।

हास्तिन²—सञ्ज्ञा पुं० हस्तिनापुर का एक नाम [को०]।

हास्य¹—वि० [सं०] १ हँसने योग्य। जिसपर लोग हँसे। २ उपहसनीय। उपहास के योग्य। ३ हँसनेवाला। हँसी पैदा करनेवाला। हास्य उत्पन्न करनेवाला।

हास्य²—सञ्ज्ञा पुं० १ हँसने की क्रिया या भाव। हँसी। २ नौ स्थायी भावो और रसो मे से एक। उ०—महामुनि भरत कहते हैं कि श्रृगार रस की अनुकृति हास्य है।—रस क०, पृ० ४१। ३ उपहास। निदापूर्ण हँसी। ४ आनद। खुशी। प्रफुल्लता (को०)। ५ ठट्ठा। ठिठोली। दिल्लगी। मजाक।

हास्यकथा—सञ्ज्ञा स्त्री० [स०] १ हँसी की बात। २ कोई ऐसी कहानी या आख्यायिका जो हास्य रस की हो।

हास्यकर—वि० [सं०] १ हँसानेवाला। २ जिसमे हँसी आवे।

हास्यकार—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हासक'।

हास्यकृत—वि० [सं०] दे० 'हास्यकर'।

हास्यजनक—वि० [स०] दे० 'हास्यकर'।

हास्यकार्य—सञ्ज्ञा पुं० [स०] हँसी लानेवाला काम। वह काम जिसे देखकर हँसी आवे। उपहास के योग्य कार्य।

हास्यकौतुक—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] हास्यपूर्ण क्रीडा। हँसी खेल।

हास्यपदवी—सञ्ज्ञा स्त्री० [सं०] उपहास। मजाक [को०]।

हास्यमार्ग—सञ्ज्ञा पुं० [स०] दे० 'हास्यपदवी'।

हास्यरस—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] काव्य के नौ रसो मे से एक जिसका स्थायी भाव हास्य है [को०]।

हास्यरसात्मक—वि० [स०] [वि० स्त्री० हास्यरसात्मिका] जिसमे हास्य रस प्रधान हो। हास्य रस से भरपूर। जैसे, कविता, कहानी आदि।

हास्यरसिक—वि० [स०] हास्यप्रिय। विनोदी [को०]।

हास्यरहित, हास्यहीन—वि० [सं०] १ जो हास्य रस से रहित हो। जो हास्य रसात्मक न हो। २ जो हँसता न हो।

हास्यास्पद—सञ्ज्ञा पुं० [स०] १ हास्य का स्थान या विषय। वह जिसे देखकर लोग हँसे। २ उपहास का विषय। वह जिसके बेढगेपन पर लोग हँसी उडावे।

हास्योत्पादक—वि० [स०] जिससे लोगो को हँसी आवे। उपहास के योग्य। हास्य उत्पन्न करनेवाला।

हास्योद्दीपक—वि० [स० हास्य + उद्दीपन] हास्य उत्पन्न करनेवाला। हास्यकर। उ०—उसके साथी अपनी हास्योद्दीपक उक्तियो और प्रत्युत्पन्न मति के लिये प्रसिद्ध थे।—अकबरी, पृ० २३।

हा हत—अव्य० [स० हा हन्त] अत्यत शोकसूचक शब्द।

हाहल—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] प्राणघातक विष [को०]

हाहव—सञ्ज्ञा पुं० [सं०] एक नरक का नाम [को०]।

हाहस—सञ्ज्ञा पुं० [स०] एक गधर्व का नाम [को०]।

हा हा¹—सञ्ज्ञा पुं० [अनु०] १ हँसने का शब्द। वह आवाज जो जोर से हँसने पर आदमी के मुँह से निकलती है।

यौ०—हाहा ठीठी, हाहा हीही = हँसी ठट्ठा। विनोद। हाहा हूहू।

मुहा०—हाहा हीही करना = (१) हाहा हूहू करना। हँसना। (२) हँसी ठट्ठा करना। विनोद क्रीडा करना। हाहा हीही होना या मचाना = हँसी होना।

२ गिडगिडाने का शब्द। अनुनय विनय का शब्द। दीनता या बहुत विनती की पुकार। दुहाई।

मुहा०—हाहा करना = गिडगिडाना। बहुत विनती करना। दुहाई देना। उ०—हाहा कै हारि रहे मनमोहन पाँय परे जिन्ह लातनि मारे।—केशव (शब्द०)। हाहा खाना = बहुत गिड-गिडाना। अत्यत दीनता और नम्रता से पुकारना। बहुत विनती करना। उ०—साँटी लै जसुमति अति तरजति हरि वसि हाहा खात।—सूर (शब्द०)।

हाहा[२]—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक गधर्व का नाम। २ एक विशाल सख्या का वाचक शब्द (को०)।

हाहा[३]—अव्य० दु ख, वेदना और आश्चर्यसूचक एक अव्यय [को०]।

हाहाकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ भय के कारण बहुत आदमियो के मुँह से निकला हुआ हाहा शब्द। घबराहट की चिल्लाहट। भय, दु ख या पीडा सूचित करनेवाली जनसमूह की पुकार। कुहराम। २ सघर्ष, युद्ध आदि का तीव्र कोलाहल।

क्रि० प्र०—करना।—मचना।—पडना।—होना।

हाहाठीठी—संज्ञा स्त्री० [अनु० हा हा + हिं० ठट्ठा] हँसी ठट्ठा। विनोद क्रीडा। जैसे,—तुम्हारा सारा दिन हाहाठीठी मे जाता है।

मुहा०—हाहा ठीठी करना=हँसी ठट्ठा करना। हाहा ठीठी होना=हँसी मजाक होना। उ०—कोऊ अन्हात पै हाहा ठीठी होत रहत चहुँ।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ४१।

हाहाल—संज्ञा पुं० [सं०] प्राणघातक विष [को०]।

हाहाहूत(पु)†—संज्ञा पुं० [अनु०] हाहाकार। भय का कोलाहल।

हाहा हूहू—संज्ञा पुं० [अनु०] हा हा करके हँसने की क्रिया। हँसी ठट्ठा। विनोद। हाहा ठीठी।

हाही—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाय] किसी वस्तु को प्राप्त करने की अनुचित और बहुत अधिक विकलता। कुछ पाने के लिये 'हाय हाय' करते रहना। जैसे—(क) तुम्हे तो सदा रुपयो की हाही पडी रहती है। (ख) इतनी हाही क्यो करते हो? जब सबको मिलेगा, तुम्हें भी मिल जायगा।

हाहू(पु)—संज्ञा पुं० [अनु०] १ हल्लागुल्ला। शोरगुल। कोलाहल। २ हलचल। धूम।

हाहूबेर—संज्ञा पुं० [देश० हाहू + हिं० बेर] जगली बेर। झडबेरी।

हिंकरना—क्रि० अ० [अनु० हिन हिन अथवा सं० हिङ्कार] घोडो का हिनहिनाना।

हिंकार—संज्ञा पुं० [सं० हिङ्कार] १ रँभाने का वह शब्द जो गाय अपने बछडे को बुलाते समय करती है। २ बाघ के बोलने का शब्द। ३ सामगान का एक अग जिसमे उद्गाता गीत के बीच बीच मे 'हिं' का उच्चारण करता है। ४ व्याघ्र। बाघ।

हिंक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं० हिङ्क्रिया] गाय आदि के रँभाने की ध्वनि [को०]।

हिंग[१]—संज्ञा पुं० [सं० हिङ्गु] दे० 'हींग'।

हिंग[२]—संज्ञा पुं० [सं० हिङ्ग] मार्कंडेय पुराण मे वर्णित एक देश का नाम।

हिंगन(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० हिङ्गोट] दे० 'हिंगनबेर'। उ०—चदन के साती लिव हुआ चदन, क्यो कर रोवे देखो ए हिंगन।—दक्खिनी०, पृ० २२।

हिंगनबेर—संज्ञा पुं० [हिं० हिंगोट + बेर] इगुदी वृक्ष। हिंगोट। हिंगुवा। गोंदी।

हिंगलाची—संज्ञा स्त्री० [सं० हिङ्गुलाची] बौद्धो के अनुसार एक यक्षिणी का नाम।

हिंगलाज—संज्ञा स्त्री० [सं० हिङ्गुलाजा] दुर्गा या देवी की एक मूर्ति अथवा उनका एक भेद। उ०—देवा दुदुभि वज्जिया, हिंगलाज दरबार।—रा० रू०, पृ० ३६६।

विशेष—हिंगलाज देवी का यह स्थान सिंध और बलूचिस्तान के बीच की पहाडियो मे है। यहाँ अँधेरी गुफा मे ज्योति के उसी प्रकार दर्शन होते है जिस प्रकार काँगडे की ज्वालामुखी मे। कराची बदर से उत्तर की ओर समुद्र के किनारे किनारे ४५ कोस चलकर लोग यहाँ पहुँचते हैं।

हिंगली—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का तबाकू।

हिंगलू†—संज्ञा पुं० [हिं०। सं० हिङ्गुल] दे० 'हिंगुल'। उ०—(क) हिंगलू के लीकै पत्रो की आयुर्दा विभाग पर तथा बीच बीच मे पदो आदि के साथ लगी हुई है।—सु दर० ग्र० (भू०), पृ० ६। (ख) अन्य ग्रथो में प्राय छदादि के पीछे हिंगलू की लीकें नही है।—सु दर० ग्र०, भा० १ (भू०), पृ० ११।

हिंगाष्टकचूर्ण—संज्ञा पुं० [हिं० हिंग + सं० अष्टक] वैद्यक मे प्रसिद्ध एक अजीर्णनाशक और पाचक चूर्ण।

विशेष—सोठ, पीपल, कालीमिर्च, अजमोदा, सफेद जीरा, स्याह जीरा, भुनी हींग और सेंधा नमक इन सबको बराबर बराबर एक साथ चूर्ण कर देने से इसका निर्माण होता है। इसके सेवन की मात्रा १ या २ टक है।

हिंगु—संज्ञा पुं० [सं० हिङ्गु] १ हीग। उ०—हरित शाक कबहूँ नहि खाई। हिंगु ल्हसनु सब देइ बहाई।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० १०२। २ हिंगु का वृक्ष। हीग का पेड (को०)। ३ नीम का वृक्ष (को०)।

हिंगुक—संज्ञा पुं० [सं० हिङ्गुक] हिंगुवृक्ष [को०]।

हिंगुनाडिका—संज्ञा स्त्री० [सं० हिङ्गुनाडिका] एक प्रकार का हिंगु वृक्ष और उसका निर्यास। विशेष दे० 'नाडी हिंगु'।

हिंगुदी—संज्ञा स्त्री० [सं० हिङ्गुदी] एक प्रकार का वृताक।

हिंगुनिर्यास—संज्ञा पुं० [सं० हिङ्गुनिर्यास] १ हिंगु वृक्ष का गोंद। हींग। २ नीम वृक्ष [को०]।

हिंगुपत्र—संज्ञा पुं० [सं० हिङ्गुपत्र] १ इगुदी। हिंगोट। २. हिंगुवृक्ष का पत्ता।

हिंगुपत्री—संज्ञा स्त्री० [सं० हिङ्गुपत्री] एक तरह की हींग। वंशपत्री [को०]।

हिंगुपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं० हिङ्गुपर्णी] वंशपत्री [को०]।

हिंगुल—संज्ञा पुं० [सं० हिङ्गुल] १ ईंगुर। सिंगरफ। २ एक नदी का नाम।

हिंगुला—संज्ञा स्त्री० [सं० हिङ्गुला] एक प्रदेश का नाम जो सिंध और बलूचिस्तान के बीच में है और जहाँ 'हिंगुलाजा' या 'हिंगलाज' देवी का स्थान है। विशेष दे० 'हिंगलाज'।

हिंगुलाजा—संज्ञा स्त्री० [सं० हिङ्गुलाजा] दुर्गा या देवी का एक रूप। हिंगलाज देवी।

हिंगुलि—संज्ञा स्त्री० [सं० हिङ्गुलि] ईंगुर [को०]।

हिंगुलिका—संज्ञा स्त्री० [सं० हिङ्गुलिका] कटकारी [को०]।

हिंगुलु—संज्ञा पुं० [हिङ्गुलु] सिंगरफ। ईंगुर [को०]।

हिंगुली—संज्ञा स्त्री० [सं० हिङ्गुली] दे० 'हिंगुदी' [को०]।

हिंगुलेश्वर रस—संज्ञा पुं० [सं० हिङ्गुलेश्वर रस] ईंगुर से बनी हुई एक रसौषध जिसका व्यवहार वातज्वर की चिकित्सा में होता है।

हिंगूज्ज्वला—संज्ञा स्त्री० [सं० हिङ्गूज्ज्वला] एक प्रकार का सुगंधित पदार्थ [को०]।

हिंगूल—संज्ञा पुं० [सं० हिङ्गूल] हिज्जल नाम का पौधा।

हिंगोट—संज्ञा पुं० [सं० हिङ्गुपत्र, प्रा० हिंगुवत्त] एक झाड़दार कँटीला जंगली पेड़। इंगुदी।

विशेष—यह पेड़ मझोले आकार का होता है और इसकी इधर उधर सीधी निकली हुई टहनियाँ गोल गोल और छोटी तथा श्यामता लिए गहरे हरे रंग की पत्तियों से गुछी होती हैं। इसमें बादाम की तरह के गोल छोटे फल लगते हैं जिनकी गुठलियों से बहुत अधिक तेल निकलता है। छाल और पत्तियों में कसाव होता है। प्राचीन काल में जंगल में रहकर तपस्या करनेवाले मुनियों और तपस्वियों के लिये यह पेड़ बड़े काम का होता था, इसी से इसे 'तापसतरु' भी कहते थे।

पर्या०—इंगुदी। हिंगुपत्र। जंगली बदाम।

हिंग्वाष्टक चूर्ण—संज्ञा पुं० [सं० हिङ्ग्वष्टक चूर्ण] दे० 'हिंगाष्टकचूर्ण'।

हिंग्वादिगुटिका—संज्ञा स्त्री० [सं० हिङ्ग्वादि गुटिका] हींग के योग से बनी हुई एक विशेष प्रकार की गोली।

विशेष—भुनी हींग, अमलबेत, काली मिर्च, पीपल, अजवायन, काला नमक, साँभर नमक, सेंधा नमक इन सबको पीसकर बिजौरे नीबू के रस में गोलियाँ बनाते हैं जो गरम पानी के साथ खाई जाती हैं। इसके सेवन से पेट का दर्द दूर होता है।

हिंग्वादि चूर्ण—संज्ञा पुं० [हिङ्ग्वादि चूर्ण] हींग के योग से बनी हुई एक बुकनी।

विशेष—भूनी हींग, पिपलामूल, धनियाँ, जीरा, बच, चव्य, चीता, पाठा, कचूर, अमलबेत, साँभर नमक, काला नमक, सेंधा नमक, जवाखार सज्जी, अनारदाना, हड़ का छिलका, पुष्करमूल, डाँसरा, झाऊ की जड़, इन सबका चूर्ण कर डाले और अदरक तथा बिजौरे के रस के सात सात पुट देकर सुखा डाले। यह बुकनी गुल्म अनाह, अर्श, संग्रहणी, उदावर्त, शूल और उन्माद आदि रोगों में दी जाती है।

हिंच—संज्ञा पुं० [अ० हिच] झटका। आघात। चोट। (लश्करी)।

हिंछना‡—क्रि० अ० [सं० इच्छण] इच्छा करना। चाहना।

हिंछा‡ⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० इच्छा] दे० 'इच्छा'। उ०—महादेव कर मंडप जगत जातरा आउ। जो हिंछा मन जेहि के सो तैसे फल पाउ।—जायसी ग्रं० (गुप्त), पृ० २३१।

हिंजीर—संज्ञा पुं० [सं० हिञ्जीर] हाथी के पैर में बाँधने की रस्सी या जंजीर।

हिंडक¹—वि० [सं० हिण्डक] हिंडन करनेवाला। घूमने फिरनेवाला।

हिंडक²—संज्ञा पुं० एक प्रकार का विष जिसे नाडीतरंग भी कहते हैं। काकोल नाम का विष [को०]।

हिंडन—संज्ञा पुं० [सं० हिण्डन] १ घूमना। फिरना। चंक्रमण। २ लिखना। लेखन (को०)। ३ संभोग। मैथुन (को०)।

हिंडनाⓟ—क्रि० अ० [सं० हिण्डन] घूमना। फिरना। चंक्रमण करना। जाना। उ०—विरचयो लोहबर सिंघ सुभ्र षड षड तन षड्यौ। निढ्ढुर निसक झुझ्झत रन अठ्ठ कोस नृप हिंड्यौ।—पृ० रा०, ६१।२२०८।

हिंडिक—संज्ञा पुं० [सं० हिण्डिक] फलित ज्योतिषी।

हिंडिर—संज्ञा पुं० [सं० हिण्डिर] दे० 'हिंडीर'।

हिंडी—संज्ञा स्त्री० [सं० हिण्डी] दुर्गा का एक नाम।

हिंडीकांत—संज्ञा पुं० [सं० हिण्डीकान्त] शिव का एक नाम।

हिंडीप्रियतम—संज्ञा पुं० [सं० हिण्डीप्रियतम] शिव। हिंडीकांत [को०]।

हिंडीबदाम—संज्ञा पुं० [देश० हिंड + फा० बादाम] अंडमान टापू में होनेवाला एक प्रकार का बड़ा पेड़ जिसमें एक प्रकार का गोंद निकलता है और जिसके बीजों से बहुत सा तेल होता है।

हिंडीर—संज्ञा पुं० [सं० हिण्डीर] १ एक प्रकार की समुद्री मछली की हड्डी जो 'समुद्रफेन' के नाम से प्रसिद्ध है। २ मर्द। नर। पुरुष। ३ वृंताक। वार्ताकु। बैंगन (को०)। ४ अग्निदीपन (को०)। ५ अनार का पेड़।

हिंडुक—संज्ञा पुं० [सं० हिण्डुक] शिव का एक नाम।

हिंडुल—वि० [हिं० हिंडोल] हिलता हुआ। झूलता हुआ। उ०—कंठसरी बहु कांति मिली मुकताहलाँ। हिंडुल नोसरहार जलूस जलाहलाँ।—बाँकी० ग्रं०, भा० ३, पृ० ३६।

हिंडोरⓟ—संज्ञा पुं० [हिं० हिंडोल] दे० 'हिंडोरा'।

हिंडोरनाⓟ—संज्ञा पुं० [हिं० हिंडोर] दे० 'हिंडोला'।

हिंडोरा—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'हिंडोला'।

हिंडोरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हिंडोरा] छोटा हिंडोला।

हिंडोल—संज्ञा पुं० [सं० हिन्दोल] १ हिंडोला। २ एक राग जिसे गांधार स्वर की संतान कहा गया है।

विशेष—एक मत से यह ओडव जाति का है और इसमें पंचम तथा गांधार वर्जित हैं। इसकी ऋतु वसंत और वार मंगल है।

गाने का समय रात को २१ या २६ दड से लेकर २६ दट तक है। ऐसा प्रसिद्ध है कि यह राग यदि शुद्ध गाया जाय तो हिंडोला आपसे आप चलने लगता है। हनुमन् के मत से इसका स्वरग्राम इस प्रकार है—सा ग म प नि मा नि प म ग सा। विलावली, भूपाली, मालश्री, पटमजरी और ललिता इसकी स्त्रियाँ तथा पचम, वसत, विहाग, सिंधुडा और सोरठ इसके पुत्र माने गए है। इसकी पुत्रवधुएँ, सिधुरई, गाधारी, मालिनी और त्रिवेणी कही गई हे।

हिंडोलना‡—सज्ञा पुं० [स० हिण्टोल] दे० 'हिंडाला'। उ०—झूलत गुरुमुख सत अलख हिंडोलने।—चरण० बानी, पृ० १४४।

हिंडोला—सज्ञा पु० [स० हिन्दोल] १ नीचे ऊपर घूमनेवाला एक चक्कर जिसमे लोगो को बैठने के लिये छोटे छोटे मच बने रहते हैं।

विशेष—विनोद या मनबहलाव के लिये लोग इसमे बैठकर नीचे ऊपर घूमते हैं। सावन के महीने मे इसपर झूलने की विशेष चाल हे।

२ पालना। ३ झूला। उ०—अली फूल को हिंडोलो बनो फूल रही जमुना।—नद० ग्र०, पृ० ३७४।

हिंडोली—सज्ञा स्त्री० [सं० हिण्डोली] एक रागिनी जो हनुमत के मत से हिंडोल राग की प्रिया है।

हिंता—सज्ञा पुं० [अ० हितह्] गेहूँ। गोधूम [को०]।

हिंताल—सज्ञा पु० [स० हिन्ताल] एक प्रकार का जगली खजूर जिसके पेड छोटे छोटे—जमीन से दो तीन हाथ ऊँचे—होते हैं। उ०—शाल ताल हिंताल वर सोभित तरुन तमाल।—श्यामा०, पृ० ३९।

विशेष—यह पेड देखने मे बहुत सु दर होता है और दक्षिण के जगलो मे दलदलो के किनारे और गीली जमीन मे बहुत पाया जाता है। अमरकटक के आसपास यह बहुत होता हे। सस्कृत के पुराने कवियो ने इसका बहुत वर्णन किया है।

हिंद—सज्ञा पुं० [फा०] हिंदोस्तान। भारतवर्ष। उ०—मिल जाय हिंद खाक मे हम काहिलो को क्या।—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० ४८०।

विशेष—यह शब्द वास्तव मे 'सिंधु' शब्द का फारसो उच्चारण है। प्राचीन काल मे भारतीय आर्यो और पारसीक आर्यो के बीच बहुत कुछ सबध था। यज्ञ करानेवाले याजक बराबर एक देश से दूसरे देश मे आते जाते थे। शाकद्वीप के मग ब्राह्मण फारस के पूर्वोत्तर भाग से ही आए हुए हैं। ईसा से ५०० वर्ष पहले दारा (दारयवहु) प्रथम के समय मे सिंधु नदी के आसपास के प्रदेश पर पारसियो का अधिकार हो गया था। प्राचीन पारसी भाषा मे सस्कृत के 'स' का उच्चारण 'ह' होता था। जैसे,—सस्कृत 'सप्त' फारसी 'हप्त'। इसी नियम के अनुसार 'सिंधु' का उच्चारण प्राचीन पारस देश मे 'हिंदु' या 'हिंद' होता था। पारसियो के धर्मग्रथ 'आवस्ता' मे 'हप्तहिंद' का उल्लेख है जो वेदो मे भी 'सप्तसिंधु' के नाम से आया है। धीरे धीरे 'हिंद' शब्द सारे देश के लिये प्रयुक्त होने लगा। प्राचीन यूनानी जब फारस आए, तब उन्हें इस देश का परिचय हुआ और वे अपने उच्चारण के अनुसार फारसी 'हिंद' को 'इड' या 'इडिका' कहने लगे, जिससे आजकल 'इडिया' शब्द बना है।

हिंदवा—सज्ञा स्त्री० [फा] एक वनौषधि। कासनी [को०]।

हिंदवाँ†—सज्ञा पुं० [फा० हिंदू] हिंदू का बहुवचन। हिंदू लोग। उ०—जवन जोस वरजोर, हेक मम तोर हजारां। हीण तवै हिंदवां, एक लेखवै अपारां। -- रा० रू०, पृ० २३।

हिंदवाना†—सज्ञा पुं० [फा० हिंद + वान] १ तरबूज। कलीदा। हिंदुआना। २ हिंदुस्तान। भारतवर्ष। उ०—केती हुती रिद्धी सिद्धी केते हुते सत वृद्ध, छोडा हिंदवाना तुर्कान हद्द नामी है।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ४३३।

हिंदवी—सज्ञा स्त्री० [फा०] हिंद या हिंदोस्तान की भाषा। हिंदी जो उत्तरीय भारत के अधिकतर भाग मे बोली जाती है। उ०—कोई हिंदवी मे हिंदू सिद्ध करते।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३८२।

हिंदसा—सज्ञा पुं० [अ० हिंदसह्] १ सख्या। अदद। २ गणित [को०]।

हिंदी¹—वि० [फा०] हिंद का। हिंदुस्तान का। भारतीय।

हिंदी²—सज्ञा पुं० हिंद का रहनेवाला। हिंदुस्तान या भारतवर्ष का निवासी। भारतवासी। उ०—मालिक व आदम व जिन्नो परी। हवशी हिंदी व खैवर और ततरी।—कबीर सा०, पृ० ६७९।

हिंदी³—सज्ञा स्त्री० १ हिंदुस्तान की भाषा। भारतवर्ष की बोली। २ हिंदुस्तान के उत्तरी या प्रधान भाग की भाषा जिसके अतर्गत कई बोलियाँ हैं और जो बहुत से अशो से सारे देश की एक सामान्य भाषा मानी जाती है।

विशेष—मुसलमान पहले पहल उत्तरी भारत मे ही आकर जमे और दिल्ली, आगरा और जौनपुर आदि उनकी राजधानियाँ हुई। इसी से उत्तरी भारत मे प्रचलित भाषा को ही उन्होने 'हिंदवी' या 'हिंदी' कहा। काव्यभाषा के रूप मे शौरसेनी या नागर अपभ्रश से विकसित भाषा का प्रचार तो मुसलमानो के आने के पहले ही से सारे उत्तरी भारत मे था। मुसलमानो ने आकर दिल्ली और मेरठ के आसपास की भाषा को अपनाया और उसका प्रचार बढाया। इस प्रकार वह भी देश के एक बडे भाग की शिष्ट बोलचाल की भाषा हो चली। खुसरो ने उसमे कुछ पद्यरचना भी आरभ की जिसमे पुरानी काव्यभाषा या व्रजभाषा का बहुत कुछ आभास था। इससे स्पष्ट है कि दिल्ली और मेरठ के आसपास की भाषा (खडी बोली) को, जो पहले केवल एक प्रातिक बोली थी, साहित्य के लिये पहले पहल मुसलमानो ने ही लिया। मुसलमानो के अपनाने से खडी बोली शिष्ट बोलचाल की भाषा तो मानी गई, पर देश के साहित्य की सामान्य काव्यभाषा वही ब्रज

(जिसके अतर्गत राजस्थानी भी आ जाती है) और अवधी रही। इस बीच मे मुसलमान खडी बोली को अरबी फारसी द्वारा थोडा बहुत बराबर अलकृत करते रहे, यहाँ तक कि धीरे धीरे उन्होंने अपने लिये एक साहित्यिक भाषा और साहित्य अलग कर लिया जिसमे विदेशी भावो और सस्कारो की प्रधानता रही। ध्यान देने की बात यह है कि यह साहित्य तो पद्यमय ही रहा, पर शिष्ट बोलचाल की भाषा के रूप मे खडी बोली का प्रचार उत्तरी भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक हो गया। जब अँगरेज भारत मे आए, तब उन्होने इसी बोली को शिष्ट जनता मे प्रचलित पाया। अत उनका ध्यान अपने सुबीते के लिये स्वभावत इसी खडी बोली की ओर गया और उन्होने इसमे गद्य साहित्य के आविर्भाव का प्रयत्न किया। पर जैसा ऊपर कहा जा चुका है, मुसलमानो ने अपने लिये एक साहित्यिक भाषा उर्दू के नाम से अलग कर ली थी। इसी से गद्य साहित्य के लिये एक ही भाषा का व्यवहार असभव प्रतीत हुआ। इससे कलकत्ते के फोर्ट विलियम कालेज के प्रोत्साहन से खडी बोली के दो रूपो मे गद्य साहित्य का निर्माण आरभ हुआ– उर्दू मे अलग और हिंदी मे अलग। इस प्रकार 'खडी बोली' का ग्रहण हिंदी के गद्य साहित्य मे तो हो गया, पर पद्य की भाषा बहुत दिनो तक एक ही—वही ब्रजभाषा—रही। भारतेंदु हरिश्चद्र के समय तक यही अवस्था रही। पीछे हिंदी साहित्यसेवियो का ध्यान गद्य और पद्य की एक भाषा करने की ओर गया और बहुत से लोग 'खडी बोली' के पद्य की ओर जोर देने लगे। यह बात बहुत दिनो तक एक आदोलन के रूप मे रही, फिर क्रमश खडी बोली मे भी बराबर हिंदी की कविताएँ लिखी जाने लगी। इस प्रकार हिंदी साहित्य के भीतर अब तीन बोलियाँ आ गईं—खडी बोली, ब्रजभाषा और अवधी। हिंदी साहित्य की जानकारी के लिये अब इन तीनो बोलियो का जानना आवश्यक है। साहित्यिक खडी बोली की हिंदी और उर्दू दो शाखाएँ हो जाने से साधारण बोलचाल की मिलीजुली भाषा को अँगरेज हिंदुस्तानी कहने लगे।

यौ०—हिंदीदाँ = हिंदी भाषा का जानकार। हिंदी का ज्ञाता। हिंदीदानी = हिंदी लिखना और पढना जानना। हिंदीसाज = हिंदी को सँवारनेवाला। हिंदी का तुकबाज। उ०—कोई हिंदीसाज इनके नाच और बाजे की तारीफ मे यों कह गया है कि वपारन बाजा लगा बजने भार मन।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १५२।

हिंदीरेवंद—सज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का पौधा।

विशेष—यह पौधा हिमालय मे ११,००० से १२,००० फुट की ऊँचाई तक उगता है। यह काश्मीर, लद्दाख, नेपाल, सिक्किम और भूटान मे पाया जाता है। इसकी जड औषध के काम मे आती है और चीनी रेवद या रेवदचीनी कहलाती है। इसका रग भी मैला होता है और सुगध भी कम होती है, पर चीनी रेवद की जगह यह बाजारो मे बराबर बिकती है। चीनी जाति का पौधा तिब्बत के दक्षिणपूर्व भाग मे तथा चीन के पश्चिमोत्तर भाग मे होता है और उसकी जड क्राइसोफेनिक एसिड के अश के कारण पीसने पर खूब पीली निकलती है। रेवद की जड दवा के काम मे आती है और यह पुष्ट, उदरशूलनाशक तथा कुछ रेचक होती है। यह आमातिसार मे उपकारी होती है, पर ग्रहणी मे नही।

हिंदु(पु)—सज्ञा पुं० [स० फा० हिंदू] भारतवासी आर्य जाति के वशज। विशेष दे० 'हिंदू'। उ०—हुए हिंदु बलहीण, धरा पण खीण सुराँ ध्रम। मिटे वेद मरजाद, भेद गुण आद पडे भ्रम।—रा० रू०, पृ० २२।

हिंदुआना—सज्ञा पुं० [फा० हिंदुआनह्] तरबूज।

हिंदुई—सज्ञा स्त्री० [फा० हिंदी > हिंदवी] दे० 'हिंदी'। उ०—खुसरो ने फारसी, अरबी, तुर्की भाषाओ के वर्णन के साथ भारत की सर्वप्रचलित भाषा हिंदी (हिंदुई) का भी उल्लेख किया है।—अकबरी०, पृ० २६।

हिंदुगी(पु)—सज्ञा स्त्री० [फा० हिंदी = हिंदवी] दे० 'हिंदी'। उ०—मूलदास जिनदास के भयौ पुत्र परधान। पढयौ हिंदुगी पारसी भागवान बलवान।—अर्ध०, पृ० २।

हिंदुत्व—सज्ञा पुं० [स० हिन्दुत्व या फा० हिंदू + स० त्व (प्रत्य०)] हिंदू का भाव। हिंदूपन।

हिंदुनि(पु)—सज्ञा स्त्री० [फा० हिंदू + इनि (प्रत्य०)] हिंदू स्त्री। विवाहिता हिंदू महिला। उ०—हिंदुनि सो तुरकिनि कहै, तुम्हैं सदा सतोष।—भूषण ग्र०, पृ० १२६।

हिंदुवान(पु)—सज्ञा पुं० [हि० हिन्दु + वान् (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ हिंदू रहते है। हिंदुओ का जनपद। हिंदवान। हिंदुस्तान। उ०—इक्क मत्त किन्न्व सवन, मिट्टव कहँ हिंदुवान।—प० रासो, पृ० १०२।

हिंदुसथाँन(पु)—सज्ञा पुं० [फा० हिंदू + सं० स्थान] दे० 'हिंदुस्तान'। उ०—मेक मपत समत्त मैं, पैंतीसै जसराज। गौ हरि धाम जिहान तज, हिंदुसथाँन जिहाज।—रा० रू०, पृ० १७।

हिंदुस्तान—सज्ञा पुं० [फा० हिंदोस्तान] १ भारतवर्ष। विशेष दे० 'हिंद'। २ भारतवर्ष का उत्तरीय मध्य भाग।

विशेष—भारतवर्ष का यह भाग दिल्ली से लेकर पटना तक और दक्षिण मे नर्मदा के किनारे तक माना जाता है। यह खास हिंदुस्तान कहा जाता है। पजाब, बगाल, महाराष्ट्र आदि के निवासी इस भूभाग को प्राय हिंदुस्तान और यहाँ के निवासियो को हिंदुस्तानी कहा करते हैं।

हिंदुस्तानी[1]—वि० [फा०] हिंदुस्तान का। हिंदुस्तान सबधी।

हिंदुस्तानी[2]—सज्ञा पु० १ हिंदुस्तान का निवासी। भारतवासी। २ उत्तरीय भारत के मध्य भाग का निवासी। भारतवासी। (पजाबी, बगाली आदि मे भेद सूचित करने के लिये)।

हिंदुस्तानी[3]—सज्ञा स्त्री० १ हिंदुस्तान की भाषा। २ बोलचाल या व्यवहार की वह हिंदी जिसमे न तो बहुत अरबी फारसी के शब्द हों न सस्कृत के। उ०—साहिब लोगो ने इस देश की भाषा का एक नया नाम हिंदुस्तानी रखा।—प्रेमघन०, भा० २ पृ० ४१४।

हिंदुस्थान—संज्ञा पुं० [सं०, फा० हिंदू + स० स्थान] हिंदुस्तान । भारतवर्ष । उ०—जितनी प्रजा हिंदुस्थान की है ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २६७ ।

हिंदू—संज्ञा पुं० [स०, फा०] भारतवर्ष में बसनेवाली आर्य जाति के वंशज जो भारत में प्रवर्तित या पल्लवित आर्य धर्म, संस्कार और समाजव्यवस्था को मानते चले आ रहे हों। वेद, स्मृति, पुराण आदि अथवा इनमें से किसी एक के अनुसार चलनेवाला । भारतीय आर्य धर्म का अनुयायी ।

विशेष—यह नाम प्राचीन पारसियों का दिया हुआ है जो उनके द्वारा संसार में सर्वत्र प्रचलित हुआ । प्राचीन भारतीय आर्य अपनी धर्मव्यवस्था को 'वर्णाश्रम धर्म' के नाम से पुकारते थे । प्राचीन अनार्य द्रविड जातियों को उन्होंने अपने समाज में मिलाया, पर उन्हें अपनी वर्णव्यवस्था के भीतर करके अर्थात् सिद्धांत रूप में किसी आर्य ऋषि, राजा इत्यादि की संतति मानकर । पीछे शक, हूण और यवन आदि भी जो मिले, वे या तो वसिष्ठ ऋषि द्वारा उत्पन्न (गाय से सही) वीरों के वंशज माने जाकर अथवा ब्राह्मणों के अदर्शन से पतित क्षत्रिय माने जाकर । सारांश यह कि भारतीय आर्य अपनी धर्मव्यवस्था को मजहब की तरह फैलाते नहीं थे, आसपास की या आई हुई जातियाँ उसे सभ्यता के संस्कार के रूप में आपसे आप ग्रहण करती थीं । प्राचीन काल में आर्य सभ्यता के दो केंद्र थे=भारत और पारस । इन दोनों में भेद बहुत कम (दे० 'हिंद') था । हूणों ने पहले पारसी सभ्यता ग्रहण की, फिर भारत में आकर वे भारतीय आर्यों से मिले । शक जाति तो आर्य जाति की ही एक शाखा थी। पीछे जब पारस के निवासी मुसलमान हो गए तब उन्होंने 'हिंदू' शब्द के साथ 'काफिर', 'काला', लुटेरा आदि कुत्सित अर्थों की योजना की । जब तक वे आर्य धर्म के अनुयायी रहे, तब तक 'हिंदू' शब्द का प्रयोग आदर के साथ 'हिंद के निवासी' के अर्थ में ही करते थे । यह शब्द इसलाम के प्रचार के बहुत पहले का है (दे० 'हिंद') । अत पीछे से मुसलमानों के बुरे अर्थ की योजना करने से यह शब्द बुरा नहीं हो सकता । भविष्य पुराण 'हप्त हिंदु' शब्द का उल्लेख करता है । कालिका पुराण, राम कोश, हेमंत कवि कोश, अदभुतरूप कोश, मेरुतंत्र (आठवीं शताब्दी आदि), कुछ आधुनिक ग्रंथों में इस शब्द को संस्कृत सिद्ध करने का जो प्रयत्न किया गया है, उसे कल्पना मात्र ही समझना चाहिए ।

हिंदूकुश—संज्ञा पुं० [फा०] एक पर्वतश्रेणी जो अफगानिस्तान के उत्तर में है और हिमालय से मिली हुई है ।

हिंदूधर्म—संज्ञा पुं० [फा० हिंदू + सं० धर्म] हिंदुओं का धर्म । वर्णाश्रम धर्म । भारतीय आर्य धर्म ।

हिंदूपन—संज्ञा पुं० [फा० हिंदू + हिं० पन (प्रत्य०)] हिंदू होने का भाव या गुण ।

हिंदोरना—क्रि० स० [सं० हिन्दोल + हिं० ना (प्रत्य०)] पानी के समान पतली चीज में हाथ या कोई चीज डालकर इधर उधर घुमाना । घँघोलना । फेंटना ।

हिंदोल—संज्ञा पुं० [सं० हिन्दोल] १ हिंडोला । झूला । उ०—न कर वेदनासुख से वंचित, बढ़ा हृदय हिंदोल ।—साकेत, पृ० २७० । २ हिंडोल नाम का राग । उ०—इतिहासकार स्मिथ ने लिखा है कि कुछ रूढ़िवादी हिंदू संगीतज्ञ तानसेन की भर्त्सना इसलिए करते हैं कि परंपरागत दो राग हिंदोल और मेघ इनके समय में लुप्त हो गए थे ।—अकबरी०, पृ० १०५ । ३ श्रावण के शुक्लपक्ष में दोलोत्सव जिसमें श्रीकृष्ण की मूर्ति हिंडोले में रखकर उपवनादि में उत्सवार्थ ले जाते हैं । ४ इस प्रकार की यात्रा । भगवतयात्रा ।

हिंदोलक—संज्ञा पुं० [सं० हिन्दोलक] दे० 'हिंडोला' ।

हिंदोला—संज्ञा पुं० [सं० हिन्दोला] दे० 'हिंडोला' ।

हिंदोस्तान—संज्ञा पुं० [फा०] दे० 'हिंदुस्तान' । उ०—वह भाषा कि जो समस्त हिंद वा हिंदोस्तान की हो ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३८१ ।

हिंदोस्तानी—वि०, संज्ञा पुं०, संज्ञा स्त्री० [फा० हिंदुस्तानी] दे० 'हिंदुस्तानी' ।

हिंन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हरिण, हिं० हिरन] मृग । हिरन । उ०—महा मुछछ पुछछैर ही ह उनै सी । नरी पाँतगी आतुरी हिन जैसी।—पद्माकर ग्रं०, पृ० २८१ ।

हिंमत(पु)—संज्ञा स्त्री० [अ० हिम्मत] दे० 'हिम्मत' । उ०—दास कौं प्रनाम मन धारिकै, दयालु मात, दीजिए हिंमत बल कल ब्रह्मबालिका ।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ४३६ ।

हिंस—संज्ञा स्त्री० [सं० हेषा या अनु० हि हि] घोड़ों के बोलने का शब्द । हींस । हिनहिनाहट । उ०—गरजहिं गज, घंटाधुनि घोरा । रथ रव बाजि हिंस चहुँ ओरा ।—तुलसी (शब्द०) ।

हिंसक[1]—वि० [सं०] १ हिंसा करनेवाला । हत्यारा । वध करनेवाला । घातक । २ मारने या पीड़ित करनेवाला । कष्ट पहुँचानेवाला । ३ बुराई करनेवाला । हानि करनेवाला ।

हिंसक[2]—संज्ञा पुं० १ जीवों को मारनेवाला पशु । खूँखार जानवर । २ शत्रु । दुश्मन । ३ मारण, उच्चाटन आदि प्रयोग करनेवाला ब्राह्मण । तांत्रिक ब्राह्मण ।

हिंसन—संज्ञा पुं० [सं०, वि० हिंसनीय, हिंसित, हिंस्य] १ जीवों का वध करना । जान मारना । घात करना । उ०—गोभक्षन द्विज श्रुति हिंसन नित जासु कर्म मैं ।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० ५५० । २ जीवों को पीड़ा पहुँचाना । कष्ट देना । सताना । पीड़न । ३ बुराई करना । अनिष्ट करना या चाहना । ४ वैरी । शत्रु । दुश्मन (को०) ।

हिंसना—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'हिंसन', 'हिंसा' ।

हिंसनीय—वि० [सं०] १ हिंसा करने योग्य । २ जिसकी हिंसा की जानेवाली हो । ३ वध करने योग्य । वध्य (को०) ।

हिंसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वध या पीड़ा । जीवों को मारना या सताना । प्राण मारना या कष्ट देना । २ हानि पहुँचाना । अनिष्ट करना ।

विशेष—हिंसा तीन प्रकार से हो सकती है—मनसा, वाचा और कर्मणा। पुराणों मे हिंसा लोभ की कन्या और अधर्म की भार्या कही गई है। जैन शास्त्रानुसार हिंसा चार प्रकार की होती है—आकुट्टी हिंसा, दर्प हिंसा, प्रमाद हिंसा और कल्प हिंसा। ३ लूट। डकैती (को०)।

हिंसाकर्म—संज्ञा पुं० [सं० हिंसाकर्मन्] १ वध करने या पीडा पहुँचाने का कर्म। मारने या सताने का काम। २ दूसरे का अनिष्ट करने के लिये मारण, उच्चाटन, पुरश्चरण आदि तांत्रिक प्रयोग।

हिंसात्मक—वि० [सं०] १ जिससे हिंसा हो। २ हिंसा से युक्त।

हिंसाप्राणी—संज्ञा पुं० [सं० हिंसाप्राणिन्] हानि पहुँचानेवाले या हिंसक पशु। खूँखार जानवर [को०]।

हिंसाप्राय—वि० [सं०] सामान्यतया हानिकारक [को०]।

हिंसारत—वि० [सं०] दुष्टतापूर्ण कार्य मे आनंद लेनेवाला। उ०—हिंसारत निषाद तामस वपु पसु समान वनचारी।—तुलसी ग्रं०, पृ० ५४२।

हिंसारू—संज्ञा पुं० [सं०] १ हिंसक पशु। हिंस्र पशु। खूँखार जानवर। २ बाघ। शेर।

हिंसारुचि—वि० [सं०] दे० 'हिंसारत' [को०]।

हिंसालु[1]—वि० [सं०] १ हिंसा करनेवाला। मारनेवाला या सतानेवाला। २ हिंसा की प्रवृत्तिवाला।

हिंसालु[2]—संज्ञा पुं० कटहा कुत्ता या दुष्ट कुत्ता। जंगली या शिकारी कुत्ता [को०]।

हिंसालुक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हिंसालु[2]'।

हिंसाविहार—वि० [सं०] दे० 'हिंसारत'।

हिंसासमुद्भव—वि० [सं०] जो हिंसा से उत्पन्न हो [को०]।

हिंसित[1]—वि० [सं०] १ जिसकी हिंसा की गई हो। जिसे मार डाला गया हो। २ जिसे हानि पहुँचाई गई हो। ३ जिसे आघात पहुँचा हो। आहत [को०]।

हिंसित[2]—संज्ञा पुं० १ आघात। चोट। २ क्षति। हानि [को०]।

हिंसितव्य—वि० [सं०] १ हिंसा करने योग्य या जिसकी हिंसा करनी हो। २ जिसे पीडा या कष्ट पहुँचाया जाय (को०)।

हिंसीन—संज्ञा पुं० [सं०] हिंसक पशु। जंगली जानवर। शिकारी जानवर [को०]।

हिंसीर[1]—वि० [सं०] १ हिंसा करनेवाला। हिंसक। २ पीडित करने, बुराई करने या सतानेवाला।

हिंसीर[2]—संज्ञा पुं० १ बाघ। २ खग। पक्षी (को०)। ३ निंदक अथवा बुराई करनेवाला व्यक्ति (को०)।

हिंस्य—वि० [सं०] १ हिंसा के योग्य। २ जिसकी हिंसा होनेवाली हो। ३ जिसे सताया या कष्ट पहुँचाया जाय (को०)।

हिंस्र[1]—वि० [सं०] १ हिंसा करनेवाला। खूँखार। जैसे,—हिंस्र पशु। २ निंदा करने या हानि करनेवाला। ३ विध्वंसक। विनाशक। ४ भयंकर। भयदायक। भयानक (को०)। ५ क्रूर। निर्दय। निष्कृप (को०)।

हिंस्र[2]—संज्ञा पुं० १ खूँखार पशु। जंगली जानवर। हिंसा करनेवाला जानवर। २ विनाश करनेवाला व्यक्ति। ३ शिव। ४ भीम। ५ वह व्यक्ति जो जीवित प्राणियों को कष्ट पहुँचाने में सुख का अनुभव करे। ६ क्रूरता। निर्दयता [को०]।

हिंस्रक—संज्ञा पुं० [सं०] जंगली जानवर। हिंसक पशु। शिकार करनेवाले जानवर [को०]।

हिंस्रजंतु—संज्ञा पुं० [सं० हिंस्रजन्तु] हिंसक पशु [को०]।

हिंस्रपशु—संज्ञा पुं० [सं०] खूँखार पशु। शिकारी जानवर [को०]।

हिंस्रयंत्र—संज्ञा पुं० [सं० हिंस्रयन्त्र] १ कूटयंत्र। पाश। जाल। फंदा। २ मारण, मोहन, उच्चाटन आदि कर्मों का विधायक अभिचार मंत्र [को०]।

हिंस्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नस। नाडी। शिरा। २ जटामासी ३ गुंजा का पौधा। ३ एक प्रकार का अनाज। गवेधु। ४ चर्बी। वसा [को०]।

हिंस्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुश्मनों या डाकुओं की नाव।

हिँकरना(पु)—क्रि० अ० [अनु० हिन हिन] घोडों का बोलना। हिनहिनाना। हींसना। उ०—जो कहु रामलखन बैदेही। हिँकरि हिँकरि हित हेरहिं तेही।—मानस, २।१४३।

हिँगाइन†—वि० [हिं० हींग] हींग के समान गंधवाला। जिसकी गंध कच्ची हींग की महक के समान हो।

हिँगाना†[1]—क्रि० स० [हिं० हेंगा] खेत को पटेले से ठीक करना। पटेला चलाना।

हिँगाना†[2]—क्रि० अ० [हिं० हींग + आइन (प्रत्य०)] हींग के समान गंध आना। हींग की तरह महकना।

हिँगाया(पु)†—वि० पटेला चलाकर बराबर किया हुआ। हेंगाया हुआ [खेत]। उ०—जुते हिँगाए खेत बनत उज्वल दुतिधारी।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ३३।

हिँछना(पु)‡—क्रि० अ० [सं० इच्छन] इच्छा करना। चाहना।

हिँडोर(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० हिंडोल] हिँडोला। उ०—कै तरंग की डोर हिँडोरन करत कलोलैं।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० ४५५।

हिँडोरना(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० हिंडोल] दे० 'हिँडोला'। उ०—(क) माई झूलत नवल लाल, झुलावत ब्रज की बाल कालिंदी के तीर माई रच्यो है हिँडोरना।—नंद० ग्रं०, पृ० ३७८।

हिँडोरा—संज्ञा पुं० [हिं० हिँडोला] दे० 'हिँडोला'।

हिँडोरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हिँडोला] छोटा हिंडोला।

हिँडोल—संज्ञा पुं० [हिं०] १ हिंडोला। २ एक राग।

हिँयवैँ(पु)—अव्य० [हिं०] दे० 'यहाँ'। उ०—मोर पिया बसैं पुर पाटन, हम धन हियवैं हो ललना। अपने पिय की सुद्धि जो पौतिउँ हम धन कहवौं हो ललना।—पलटू०, भा० ३, पृ० ७५।

हिँयाँ(पु)†—अव्य० [हिं०] दे० 'यहाँ'।

हिँव(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हिम] दे० 'हिम'।

हिँवार—संज्ञा पुं० [सं० हिमालय] १ हिम। बर्फ। पाला। २ हिमालय पर्वत।

मुहा०—हिँवार पडना = (१) बर्फ गिरना। (२) बहुत सर्दी पडना। बहुत जाडा होना।

हिँवारै(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हिमालय] हिमालय पर्वत। उ०—केचित जाइ हिँवारै सीझै। मन की मूठि तहाँ अति रीझै।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० ६३।

हिँवालै(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हिमालय] दे० 'हिँवारै'। उ०—को सीझै जाइ हिँवालै। इद्रिय अपनी नहि गालै।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० १४७।

हिँसना(पु)—क्रि० अ० [अनु० हिनहिन] दे० 'हीसना'। उ०—हिँसहि तुरग चिकारैं हाथी। सोभै हक हक मिलि साथी।—हि० क० का०, पृ० २२४।

हि¹—एक पुरानी विभक्ति जिसका प्रयोग पहले तो सब कारको मे होता था, पर पीछे कर्म और सप्रदाय मे ही ('को' के अर्थ मे) रह गया। जैसे—रामहि प्रेम समेत लखि सखिन्ह समीप बोलाइ।—मानस, १।२५५।

विशेष—पाली मे तृतीया और पचमी की विभक्ति के रूप मे 'हि' का व्यवहार मिलता है। पीछे प्राकृतो मे सबध के लिये भी विकल्प से अपादान की विभक्ति आने लगी और सब कारको का काम कभी कभी सबध की विभक्ति से ही चलाया जाने लगा। 'रासो' आदि की पुरानी हिंदी मे 'ह' रूप मे भी यह विभक्ति मिलती है। अपभ्रश मे 'हो' और 'हे' रूप सबध विभक्ति के मिलते हैं। यह 'हि' या 'ह' विभक्ति सस्कृत के 'भिस्' या 'भ्यस्' से निकली जान पडती है।

हि‡²—अव्य० दे० 'ही'। उ०—हरि कर पिचका निरखि तियन के नैना छवि हि ठराई।—नद० ग्र०, पृ० ३८१।

हिअ(पु)—संज्ञा पुं० [प्रा० स० हृत्, प्रा०, अप० हिअ या सं० हृदय, प्रा० हिअय, अप० हिअ] १ हृदय। उ०—स्रवन नाहि पै सव किछु सुना। हिअ नाही गुनना सव गुना।—जायसी ग्र० (गुप्त), पृ० १२५। २ छाती। वक्ष।

हियडा, हिअरा(पु)—संज्ञा पुं० [अप० हिअ+डा (प्रत्य०)] दे० 'हिअ'।

हिआ(पु)—संज्ञा पुं० [प्रा० अप० हिअ] । १ हृदय। २ छाती। उ०—हिआ थार कुच कचन लाडू।—जायसी (शब्द०)।

हिआउ‡—संज्ञा पुं० [हि० हिआ+आउ (प्रत्य०)] दे० 'हिआव'। उ०—(क) जाँचो जल जाहि कहै अमिय पिआउ सो। कासो कहौ काहू सो न बढत हिआउ सो।—तुलसी ग्र०, पृ० ५४६। (ख) अस्ति नास्ति एको नाउँ। कवण सु अखरु जितु रहै हिआउ।—प्राण०, पृ० ११५।

हिआव—संज्ञा पुं० [हि० हिअ+आव (भाव० प्रत्य०)] साहस। जिगरा। हिम्मत। विशेष दे० 'हियाव'। उ०—भँवर जो मनसा मानसर लीन्ह कँवलरस जाइ। घुन जो हिआव न कै सका झूर काठ तस खाइ।—जायसी (शब्द०)।

हिकदा—संज्ञा पुं० [फा० सिह, सेह (=तीन) + हि० कोडी] तीन कोड़ी कपड़ो का समूह। (धोबी)।

हिकदा(पु)—वि० [प०] एक या प्रधान (परमात्मा)। उ०—विर्चो सभो डूरि करि अदर विया न पाइ। दादू रता हिकदा, मन मोहब्बत लाइ।—दादू०, पृ० ६५।

हिकमत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ विद्या। तत्वज्ञान। उ०—धर्मराय को हिकमत दीन्हाँ।—कबीर सा०, पृ० ८१८। २ कला-कौशल। निर्माण की बुद्धि। कोई चीज बनाने या निकालने की अक्ल। जैसे—हिकमते चीन, हुज्जते बगाल। ३ कार्य सिद्ध करने की युक्ति। तदबीर। उपाय। जैसे—उसके हाथ से रुपया निकालने की तुम्ही कोई हिकमत सोचो।

क्रि० प्र०—करना।—निकालना।—लगाना।

४ चतुराई का ढग। चाल। पालिसी। जैसे,—ऐसे मौके पर हिकमत से काम लेना चाहिए। ५ किफायत। ६ हकीम का काम या पेशा। हकीमी। वैद्यक। ७ मल्लाही। (लश०)।

यौ०—हिकमते अमली = कूटनीति। चतुराई। हिकमते इलाही = ईश्वरेच्छा।

हिकमति(पु)—संज्ञा स्त्री० [अ० हिकमत] दे० हिकमत'। उ०—करि सलाम सुरजन तबै, बीरा खायौ कोपि। आप (य) भवन हिकमति रची, स्वामि धर्म सब लोपि।—ह० रासो, पृ० ११४।

हिकमती—वि० [अ० हिकमत] १ कार्यसाधन की युक्ति निकालनेवाला' तदबीर सोचनेवाला। उपाय निकालनेवाला। कार्यपटु। २ चतुर। चालाक। ३ किफायती।

हिकलाना—क्रि० अ० [हि०] दे० 'हकलाना'।

हिकायत—संज्ञा स्त्री० [अ०] कथा। कहानी। प्रसग।

हिकारत—संज्ञा स्त्री० [अ० हकारत] उपेक्षा। अपमान। तिरस्कार। उ०—सिलिया ने हिकारत के साथ कहा—बिरादरी मे क्यो न लेंगे?—गोदान, पृ० २४२।

हिक्कल—संज्ञा पुं० [?] बौद्ध सन्यासियो या भिक्षुओ का दड।

हिक्का¹—संज्ञा स्त्री० [स०] १ हिचकी। २ बहुत हिचकी आने का रोग।

विशेष—वायु का पसलियो और अँतडियो को पीडित करते हुए ऊपर चढकर गले से झटके से निकलना ही हिक्का या हिचकी है। वैद्यक मे वायु और कफ के मेल से पाँच प्रकार की हिक्का कही गई है—अन्नजा, यमला, क्षुद्रा, गभीरा और महती। पेट मे अफरा, पसलियो मे तनाव, कठ और हृदय का भारी होना, मुँह कसैला होना हिक्का होने के पूवलक्षण हैं। गरम, बादी, गरिष्ठ, रूखी और बासी चीजें खाना, मुँह मे धूल जाना, थकावट, मलमूत्र का वेग रोकना हिक्का के कारण कहे गए हैं। जिस हिक्का मे रोगी को कप हो, ऊपर की ओर दृष्टि चढ जाय, आँख के सामने अँधेरा छा जाय, शरीर दुबला होता जाय, छीक बहुत आवे और भोजन मे अरुचि हो जाय, वह असाध्य कही गई है।

३ रोने या सिसकने का वह शब्द जो रुक रुककर आवे। ४ उलूक नाम का पक्षी। उल्लू (को०)।

हिक्का[२]—संज्ञा स्त्री० [देशी] रजकी । धोबिन ।

हिक्काश्वामी—वि० [स० हिक्काश्वासिन्] जिसे वहुत हिचकी आती हो । जिसे हिचकी का रोग हो [को०] ।

हिक्किका—संज्ञा स्त्री० [स०] हिक्का । हिचकी ।

हिक्कित—संज्ञा पु० [स०] दे० 'हिक्का' [को०] ।

हिक्की—वि०[स० हिक्किन्] जिसे हिक्का रोग हो । हिचकी का रोगी ।

हिचक—संज्ञा स्त्री० [हि० हिचकना] किसी काम के करने मे वह रुकावट जो मन मे मालूम हो । आगा पीछा । हिचकिचाहट । उ०—छूने मे हिचक, देखने मे पलकें आँखो पर झुकती है ।—कामायनी, पृ० ६६ ।

हिचकना—क्रि० अ० [सं० हिक्का या अनु० हिच, हिचक + हि० ना (प्रत्य०)] १ हिचकी लेना । वायु का उठा हुआ झोका कठ से निकालना । २ किसी काम के करने मे कुछ अनिच्छा, भय या सकोच के करण प्रवृत्त न होना । आगा पीछा करना । जैसे,—वहाँ जाने से तुम हिचकते क्यो हो ?

हिचकिच—संज्ञा स्त्री० [हि० हिचकना] दे० 'हिचक' ।

हिचकिचाना—क्रि० अ० [अनु०] दे० 'हिचकना' ।

हिचकिचाहट—संज्ञा स्त्री० [अनु० हिचकिचाना + हि० आहट (प्रत्य०)] दे० 'हिचक' ।

हिचकिची—संज्ञा स्त्री० [अनु० हिचकिच + हि० ई] दे० 'हिचक' ।

हिचकी—संज्ञा स्त्री० [अनु० हिच या स० हिक्का] १ पेट की वायु का झोंके के साथ ऊपर चढकर कठ से धक्का देते हुए निकलना । उदरस्थ वायु के कठ मे आघात या शब्द के साथ निकलने की क्रिया । विशेष दे० 'हिक्का' ।

क्रि० प्र०—आना ।—लेना ।

मुहा०—हिचकियाँ लगना = मरने के समय वायु का कठ मे से रह रहकर आघात करते हुए निकलना । मरणासन्न अवस्था होना । मरने के निकट होना ।

२ रह रहकर सिसकने का शब्द । रोने मे रह रहकर कठ से साँस छोडना ।

क्रि० प्र०—बँधना ।

मुहा०—हिचकी लेना = रोने मे साँस का रुक रुककर आना ।

हिचकोला—संज्ञा पु० [हि० हचकना] दे० 'हचकोला' । उ०—रास्ते भर हिचकोलो के कारण नाको दम रहा ।—सन्यासी, पृ० ३०६ ।

हिचना(पु)‡—क्रि० अ० [देश०?] लडना । युद्ध करना । उ०—(क) हिचे मरे खल हात, खग धारँ कुलखोवणा ।—बाँकी ग्र०,भा० १, पृ० ५ । (ख) एक अनेकाँ सूँ हिचैं, छाती वजर कपाट ।—बाँकी० ग्र०, भा०१, पृ०६२ ।

हिचर मिचर—संज्ञा पुं० [हि० हिचक] १ किसी काम के करने मे भय, सकोच या कुछ अनिच्छा के कारण रुकना या देर करना । आगा पीछा । सोच विचार । २ किसी काम को न करना पडे, इसलिये देर करना या इधर उधर की वात कहना । टालमटूल ।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

हिचिर मिचिर†—संज्ञा पुं० [अनु०] दे० 'हिचर मिचर' ।

हिच्छ(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० इच्छा] दे० 'इच्छा' । उ०—आन हिच्छ नहिं दूसरी, देहु कलपि करि सीस । हम परसन परसाद तुव, होहिं भवानी ईस ।—चित्रा०, पृ० १८ ।

हिज आनर—संज्ञा पुं० [अ० हिज आनर] छोटे लाट आदि के पद के आगे लगनेवाला सम्मान का सूचक शब्द । जैसे,—हिज आनर लेफ्टिनेंट गवर्नर ।

हिज एक्सेलेसी—संज्ञा पुं० [अ० हिज़ एक्सेलेंसी] [स्त्री० हर एक्सेलेंसी] राष्ट्रपति, प्रधान सेनापति, राज्यपाल, स्वतत्र देशो के मत्री आदि कुछ विशिष्ट उच्च अधिकारियो के नाम के आगे लगनेवाली प्रतिष्ठासूचक उपाधि । श्रीमान् । जैसे,—हिज एक्सेलेंसी वाइसराय, हिज एक्सेलेंसी कमाडर इन चीफ, हिज एक्सेलेंसी प्राइम मिनिस्टर, नेपाल ।

हिजडा—संज्ञा पुं० [फा० हीज + हिं० डा(स्वा० प्रत्य०)] जो न स्त्री हो, न पुरुष । विशेष दे० 'नपुसक' ।

हिज मैजेस्टी—संज्ञा पु० [अ०] [संज्ञा स्त्री० हर मैजेस्टी] सम्राट् और स्वाधीन देशो के राजाओ के आगे लगनेवाली गौरवसूचक उपाधि । माहमहिमान्वित । मालिक मोअज्जम । जैसे,—हिज मैजेस्टी किंग जार्ज । हिज मैजेस्टी अमानुल्ला ।

हिजरत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ अपना देश छोडकर दूसरे देश मे जा बसना । उ०—बुल्ला हिजरत विच अलाह दे मेरा नित है खास अराम ।—सतवाणी०, पृ० १५२ । २ मुहम्मद साहब की मक्का से मदीने की यात्रा ।

हिजरा‡—संज्ञा पुं० [हिं० हीजडा] स० 'हिजड़ा' ।

हिज रायल हाइनेस—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० हर रायल हाइनेस] स्वाधीन राज्यो या देशो के युवराजो तथा राजपरिवारो के व्यक्तियो के नाम के आगे लगनेवाली गौरवसूचक उपाधि । जैसे,—हिज रायल हाइनेस प्रिंस आव वेल्स ।

हिजरी—संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानी सन् या सवत् जो मुहम्मद साहव के मक्के से मदीने भागने की तारीख (१५ जुलाई, सन् ६२२ ई० अर्थात् विक्रम सवत् ६७६, श्रावण शुक्ल २ का सायकाल) से चला है ।

विशेष—खलीफा उमर ने विद्वानो की समति से यह हिजरी सन् स्थिर किया था । हिजरी सन् का वर्ष शुद्ध 'चाद्र वर्ष' है । इसका प्रत्येक मास चद्रदर्शन (शुक्ल द्वितीया) से आरभ होता है और दूसरे चद्रदर्शन तक माना जाता है । हर एक तारीख सायकाल से आरभ होकर दूसरे दिन सायकाल तक मानी जाती है । इस सन् के बारह महीनो के नाम इस प्रकार है—(१) मुहर्रम, (२) सफर, (३) रबीउल् अव्वल, (४) रबीउस्सानी, (५) जमादिउल् अव्वल, (६) जमादिउल् आखिर, (७) रजब, (८) शाबान, (९) रमजान, (१०) शव्वाल, (११) जल्काद और (१२) जिलहिज्ज । चाद्रमास २९ दिन, ३१ घडी, ५० पल और ७ विपल का होता है, इससे चाद्रवर्ष सौरवर्ष से १० दिन, ५३, घडी, ३० पल और ६ विपल के करीब कम होता है । इस हिसाब से सौ वर्ष मे ३ चांद्रवर्ष २४ दिन और ६

घड़ियाँ बढ जाती हैं। अत विक्रम सवत् या ईसवी सन् से हिजरी सन् का कोई निश्चित अतर नहीं रहता, जिससे दिए हुए हिजरी सन् मे कोई निश्चित सख्या जोडकर ईसवी सन् या विक्रम निकाल लें। इसके लिये गणित करना पडता है।

हिजली बदाम—सज्ञा पुं० [हिजली ? + हिं० बादाम] काटू नामक वृक्ष के फल जो प्राय बादाम के समान होते हैं और जिनसे एक प्रकार का तेल निकलता है जो प्राय बादाम के तेल के समान होता है। यह फल भूनकर खाया जाता है और इसका मुरब्बा भी पडता है। विशेष दे० 'काटू'।

हिज हाइनेस—सज्ञा पु० [अ०] [स्त्री० हर हाइनेस] राजा महाराजाओं के नाम के आगे लगनेवाली गौरवसूचक उपाधि। जैसे,—हिज हाइनेस महाराज सर सयाजी राव गायकवाड।

हिज होलीनेस—सज्ञा पुं० [अ०] पोप तथा ईसाई मत के प्रधान आचार्यों के नाम के आगे लगनेवाली उपाधि।

विशेष—भारत मे भी लोग धर्माचार्यों के नाम के आगे यह उपाधि लगाने लग गए हैं। जैसे,—हिज होलीनेस स्वामी शकराचार्य।

हिजा—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ निंदा। अपकीर्ति। अपवाद। २ मात्राओं के साथ अक्षरो का स्पष्ट उच्चारण [को०]।

हिजाज—सज्ञा पुं० [अ० हिजाज] १ अरब के एक भाग का नाम जिसमे मक्का और मदीना नामक नगर है। २ फारसी सगीत के १२ मुकामो मे से एक का नाम।

हिजाब—सज्ञा पुं० [अ०] १ आड। ओट। परदा। २ शर्म। हया। लज्जा। ३ झिझक। सकोच।

मुहा०—हिजाब उठना = पर्दा हटना। शर्म न रह जाना।

हिजाबत—सज्ञा स्त्री० [अ०] ड्योढीदार या द्वारपाल का काम। दरबानी (को०)।

हिज्ज¹—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'हिज्जल'।

हिज्ज‡²—सज्ञा पुं० [फा० हीज] १ दे० 'हीजडा'। २ आलस्य। सुस्ती। विलब।

हिज्जल—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पेड।

हिज्जे—सज्ञा पु० [अ० हिज्जह्] किसी शब्द मे आए हुए अक्षरो को अलग अलग मात्रा सहित कहना।

क्रि० प्र०—करना।

मुहा०—हिज्जे निकालना = (१) टुकडे टुकडे करना। (२) आपत्ति करना। हिज्जे पकडना = अशुद्धि पकडना। गलती निकालना।

हिज्र—सज्ञा पुं० [अ०] जुदाई। वियोग। बिछोह। उ०—आबरू हिज्र बीच मरता था। मुख दिखाकर उसे जिलाया गया।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० ११।

यौ०—हिज्रनसीब = जिसकी किस्मत मे प्रिय से वियोग ही वियोग हो।

हिज्री—सज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'हिजरी'।

हिटकना†—क्रि० स० [हिं०] दे० 'हटकना'।

हिडब—सज्ञा पुं० [?] [स्त्री० हिडबी] भैस। (डिं०)

हिडिंब—सज्ञा पुं० [सं० हिडिम्ब] एक राक्षस का नाम जिसे भीम ने पाडवो के वनवास के समय मारा था।

यौ०—हिडिंबजित्, हिडिंबनिषूदन, हिडिंबभिद्, हिडिंबरिपु = हिडिंब राक्षस को मारनेवाले, भीम।

हिडिंबा—सज्ञा स्त्री० [स० हिडिम्बा] १ हिडिंब राक्षस की बहिन जो पाडवो के वनवास के समय भीम को देखकर मोहित हो गई थी और जिसके साथ, हिडिंब को मार चुकने पर, भीम ने विवाह किया था। इस विवाह मे भीम को घटोत्कच नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था। २ हनुमान की स्त्री (को०)।

यौ०—हिडिंबापति, हिडिंबारमण = (१) भीमसेन। (२) हनुमान।

हिडोर—सज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'हिंडोला'।

हिडोल, हिडोला(पु)—सज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'हिडोला'। उ०—मुदित मनोभव खेल हिडोल।—विद्यापति, पृ० ३४०।

हित¹—वि० [सं०] १ लाभदायक। उपकारी। फायदेमद। २ अनुकूल। मुवाफिक। ३ अच्छा व्यवहार करनेवाला। भलाई करने या चाहनेवाला। सद्भाव रखनेवाला। स्नेहपूर्ण। खैरख्वाह। उ०—मिली मातु, हित, मीत, गुरु सनमाने सब लोगु।—तुलसी ग्र०, पृ० ६१। ३ रखा हुआ। व्यवस्थित (को०)। ४ लिया हुआ। गृहीत। ५ जिसे प्रेरित किया गया हो। ६ भेजा हुआ। प्रेषित (को०)। ७ गया हुआ। ८ मागलिक। शुभद (को०)।

हित²—सज्ञा पुं० १ लाभ। फायदा। २ कल्याण। मगल। भलाई। उपकार। बेहतरी। उ०—राम विमुख सुत तें हित हानी।—तुलसी (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

यौ०—हितकर। हितकारी।

३ अनुकूलता। मुवाफिकत। ४ स्वास्थ्य के लिये लाभ। तदुरुस्ती को फायदा। ५ प्रेम। स्नेह। अनुराग। उ०—हित करि श्याम सों कह पायो ?—सूर (शब्द०)। ६ मित्रता। खैरखाही। ७ भला चाहनेवाला आदमी। मित्र। ८ सबध। नाता। रिश्ता। ९ उचित, उपयुक्त या योग्य वस्तु। १० सबधी। नातेदार। रिश्तेदार।

हित³—अव्य० १ (किसी के) लाभ के हेतु। खातिर। प्रसन्नता के लिये। २ निमित्त हेतु। कारण। लिये। वास्ते। उ०—हरि हित हरहु चाप गरुवाई।—तुलसी (शब्द०)।

हितक—सज्ञा पुं० [सं०] १ शिशु। बच्चा। बालक। २ किसी जानवर का बच्चा।

हितकर—वि० [सं०] १. भलाई करनेवाला। उपकार या कल्याण करनेवाला। २ लाभ पहुँचानेवाला। उपयोगी। फायदेमद। ३ शरीर को आराम या आरोग्यता देनेवाला। स्वास्थ्यकर।

हितकर्ता¹—सज्ञा पुं० [सं० हितकर्तृ] भलाई करनेवाला व्यक्ति।

हितकर्ता[२]—वि० हितकाम। हितेच्छु।
हितकाक्षी—वि० [सं० हितकाङ्क्षिन्] हित का कांक्षी। हितेच्छु।
हितकाम[१]—संज्ञा पुं० [सं०] भलाई की कामना या इच्छा। खैरखाही।
हितकाम[२]—वि० भलाई चाहनेवाला। हितेच्छु।
हितकामना, हितकाम्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] परहित की आकांक्षा। दूसरे के कल्याण की कामना [को०]।
हितकारक—वि० संज्ञा पुं० [सं०] १ भलाई करनेवाला। उपकार या कल्याण करनेवाला। २ लाभ पहुँचानेवाला। फायदेमंद। ३ स्वास्थ्यकर।
हितकारी—वि०, [सं० हितकारिन्] [वि० स्त्री० हितकारिणी] १ हित या भलाई करनेवाला। उपकार या कल्याण करनेवाला। २ लाभ पहुँचानेवाला। फायदेमंद। ३ स्वास्थ्यकर।
हितकृत्—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हितकारक'।
हितचिंतक—संज्ञा पुं० [सं०हितचिन्तक] भला चाहनेवाला। खैरखाह।
हितचिंतन—संज्ञा पुं० [सं० हितचिन्तन] किसी की भलाई की कामना या इच्छा। उपकार की इच्छा। खैरखाही।
हितता(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० हित + ता (प्रत्य०)] भलाई। उपकार। उ०—स्वामी की सेवक हितता सब कछु निज साँइ द्रोहाई। मैं मति तुला तौलि देखी भइ मेरिहि दिसि गरुआई।—तुलसी ग्र०, पृ० ५४४।
हितपथ्य—वि० [सं०] हितकर और स्वास्थ्यवर्धक।
हितप्रणी—संज्ञा पुं० [सं०] जासूस। गुप्तचर। भेदिया [को०]।
हितप्रवृत्त—वि० [सं०] उपकार या भलाई में लगा हुआ [को०]।
हितप्रेप्सु—वि० [सं०] दे० 'हितकाम' [को०]।
हितबुद्धि[१]—वि० [सं०] कल्याणकामी। शुभेच्छु।
हितबुद्धि[२]—हितकारक बुद्धि [को०]।
हितमाती(पु)—वि० स्त्री० [सं० हित + मत्त] प्रेम में दीवानी। उ०—मैं तो हितमाती अनुराग सों अथाती रवि, जानी नाहि जाती राति साँझ की फजर की।—नट०, पृ० ६६।
हितमित्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ हितकारक मित्र। हितू मित्र। २ बंधु-बांधव। भाई बंधु।
हितवत(पु)—वि० [सं० हितवत् के कर्ताकारक का बहुवचन या हित + वान् (प्रत्य०)] हित करने या चाहनेवाला। उ०—निरंजनहि निर्वान पद, कही तुम्ही हितवंत।—कबीर सा०, पृ० ८५२।
हितवचन—संज्ञा पुं० [सं०] भलाई का वचन। कल्याण का उपदेश। बेहतरी की सलाह।
हितवना(पु)—क्रि० अ० [हिं० हित + औना] दे० 'हिताना'।
हितवाक्य—संज्ञा पुं० [सं०] हितकारक उपदेश या कथन [को०]।
हितवाद—संज्ञा पुं० [सं०] मैत्रीपूर्ण कथन। हितवचन [को०]।
हितवादी—वि० [सं० हितवादिन्] [वि० स्त्री० हितवादिनी] हित की बात कहनेवाला। बेहतरी की सलाह देनेवाला।
हितवार(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हित ?] प्रेम। स्नेह। दुलार।
हिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कुल्या। नाली। बरहा। २ एक विशेष प्रकार की रक्तवाहिनी नस या शिरा।
यौ०—हिताभंग।
हिताई—संज्ञा स्त्री० [सं० हित + आई (प्रत्य०)] नाता। रिश्ता। संबंध।
हिताकांक्षी—वि० [सं० हिताकाङ्क्षिन] हित की आकांक्षा करनेवाला।
हिताधायी—वि० [सं० हिताधायिन्] हित का आधान करनेवाला। हितकारी।
हितान(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हित] भलाई। हित। लाभ। उ०—चली चिन्ह खानी हितान चितान।—घट०, पृ० ३८६।
हिताना(पु)—क्रि० अ० [सं० हित + आना (प्रत्य०)] १ हितकारी होना। अनुकूल होना। २ प्रेमयुक्त होना। उ०—बाँध्यो देखि श्याम को परबस गोपी परम हितानी।—सूर (शब्द०)। ३ प्यारा लगना। अच्छा लगना। भाना। रुचिकर होना। उ०—ऐसे करम नाहिं प्रभु मेरे जाते तुमहिं हितैहौं।—सूर (शब्द०)।
हितान्वेषी—वि० [सं० हितान्वेषिन्] हितेच्छु। हितार्थी [को०]।
हितार्थी—वि० [सं० हितार्थिन] दूसरों का भला या कल्याण चाहनेवाला। हितेच्छु [को०]।
हितावह—वि० [सं०] जिससे भलाई हो। हितकारी। कल्याणकारी।
हिताशंसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हित कहना। हित का कथन [को०]।
हिताहित—संज्ञा पुं० [सं०] भलाई बुराई। लाभ हानि। नफा नुकसान। उपकार और अपकार। जैसे,—जिसे अपने हिताहित का ध्यान नहीं, वह बावला है। उ०—निठुर नियति छल हो कि कर्म फल यह चिर अविदित, चख मदिरा रस, हँस रे पर वश, त्याग हिताहित।—मधुज्वाल, पृ० २०।
हिती—वि० [सं० हित + हिं० ई (प्रत्य०)] १ हितू। भलाई चाहनेवाला। खैरख्वाह। २ मित्र। दोस्त। ३ बंधुबांधव। संबंधी। रिश्तेदार।
हितु—संज्ञा पुं० [सं० हित] दे० 'हित', 'हितू'। उ०—ये तौ उनहीं की अनुहारी। नहिं अचिरज हितु चाहिए भारी।—नंद० ग्र०, पृ० १२५।
हितुआ‡—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'हितू'।
हितुव, हितुवा(पु)‡—संज्ञा पुं० [सं० हित] दे० 'हितू'। उ०—हितुव जानि सोमेस पुनि, किन्नव सधि विचार।—प० रासो, पृ० ५२।
हितू[१]—संज्ञा पुं० [सं० हित] १ भलाई करने या चाहनेवाला व्यक्ति। खैरखाह। दोस्त। उ०—सखि सब कौतुक देखनहारे। जेइ कहावत हितू हमारे।—तुलसी (शब्द०)। २ संबंधी। नातेदार। ३ सुहृद्। स्नेही।
हितू(पु)[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० हित] सखी। उ०—वयसा सैरिंधी सखी हितू सहचरी आही।—अनेकार्थ०, पृ० २५५।
हितेच्छा—संज्ञा स्त्री० [सं०] भलाई की चाह। खैरखाही। उपकार का ध्यान।
हितेच्छु—वि० [सं०] भला चाहनेवाला। शुभेच्छु। खैरखाह। कल्याण मनानेवाला।

हितैषणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शुभेच्छा। हितेच्छा [को०]।

हितैपिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] भलाई चाहने की वृत्ति। खैरखाही।

हितैषी¹—वि० [सं० हितैपिन्] [वि० स्त्री० हितैपिणी] भला चाहनेवाला। खैरखाह। कल्याण मनानेवाला।

हितैषी²—संज्ञा पुं० दोस्त। मित्र। सुहृद्।

हितोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] हित के वचन। भलाई का उपदेश। कल्याणकारी उपदेश। नेक सलाह।

हितोपदेश—सं० पुं० [सं०] १ भलाई का उपदेश। नेक सलाह। २ विष्णुशर्मा रचित संस्कृत का एक प्रसिद्ध ग्रंथ जिसमें व्यवहार-नीति की शिक्षा को लिए हुए उपदेश और कहानियाँ हैं।

हितौना(पु)†—क्रि० अ० [हिं० हितवना] दे० 'हिताना'

हित्त(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हित] दे० 'हित'। उ०—देह निकट तेरे पडी, जीव अमर है नित्त। दुइ में मूवा कौन सा, का सूँ तेरा हित्त।—संतवाणी०, पृ० १५७।

हित्र(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हित] दे० 'हितू'। उ०—पाहन ह्वै ह्वै सब गए, बिन भितियन के चित्र। जासो कियो मिताइया, सो धन भया न हित्र।—कबीर बी० (शिशु०), पृ० २१५।

हिदायत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ पथप्रदर्शन। रास्ता दिखाना। २ सीख। शिक्षा। ३ अधिकारी का आदेश। निर्देश। हुक्म।

यौ०—हिदायतनामा = नियमों, निर्देशों की पुस्तक।

हिदै(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हृदय, प्रा० हिदै] दे० 'हृदय'। उ०—तवै कोपि कै दुष्ट उछ्छंग लीनौ। हिदै फारि तत्काल सो डारि दीनौ।—पृ० रा०, २। १८८।

हिद्दत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ उग्रता। तीव्रता। तेजी। २ उष्णता। गरमी। हरारत (को०)। ३ क्रोध। गुस्सा।

हिनक्कना(पु)—क्रि० अ० [अनु०] दे० 'हिनकना'। उ०—भिनकेति पग्ग हिनक्केति ताजी। मिल भूप भूप महावीर गाजी।—पृ० रा०, ८।४१।

हिनकाना—क्रि० अ० [अनु० हिनहिन + करना] घोडे का बोलना। हिनहिनाना।

हिनती(पु)‡—संज्ञा स्त्री० [सं० हीनता] हीनता। तुच्छता। छोटापन।

हिनवाना—संज्ञा पुं० [फा० हिंदुआनह् > हिंदुआना] दे० 'हिंदवाना'।

हिनहिनाना—क्रि० अ० [अनु० हिन हिन] घोडे का बोलना। हीसना।

हिनहिनाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० हिनहिनाना] घोडे के हीसने की आवाज। घोडे की बोली।

हिना—संज्ञा स्त्री० [अ०] मेहदी। उ०—उसके कदमों से लगी रहती है दिन रात हिना। खूब दुनिया में बसर करती है औकात हिना।—क० कौ०, भा० ४, पृ० ४२।

यौ०—हिना का चोर = हथेली का वह अंश जहाँ मेहदी न लगी हो। हिनावद = मेहदी लगानेवाला।

हिनाई¹—वि० [अ० हिना + आई (प्रत्य०)] मेंहदी के रंग का। हिना के रंग का।

यौ०—हिनाई कागज = एक प्रकार का कागज।

हिनाई²—संज्ञा पुं० पीलापन लिए हुए सुर्ख रंग।

हिनाई³—संज्ञा स्त्री० [सं० हीन] क्षुद्रता। हीनता। लघुता। [को०]।

हिनावदी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ मेंहदी लगाना। २ मुसलमानों में विवाह के समय की एक रस्म [को०]।

हिपोक्रिट—संज्ञा पुं० [अ०] १ कपटी। मक्कार। २ पाखंडी।

हिपोक्रिसी—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ छल। कपट। फरेब। मक्कारी। २ पाखंड।

हिप्नोटिज्म—संज्ञा पुं० [अ० हिप्नॉटिज्म] संमोहन विद्या। उ०—हिप्नोटिज्म के विशेषज्ञ अपनी मोहनविद्या के आशु प्रभाव के लिये अपने पात्र की ऐसी ही अवस्था की प्रतीक्षा किया करते हैं। संन्यासी, पृ० ५२।

हिफाजत—संज्ञा स्त्री० [अ० हिफाजत] १ किसी की वस्तु को इस प्रकार रखना कि वह नष्ट होने या बिगडने न पावे। रक्षा। जैसे,—इस चीज को हिफाजत से रखना। २ बचाव। देखरेख। खबरदारी। सावधानी। जैसे,—वहाँ लडकों की हिफाजत कौन करेगा।

क्रि० प्र०—करना।—रखना।

यौ०—हिफाजते खुदइख्तियारी = आत्मरक्षा। हिफाजते जानोमाल = आत्मरक्षा और धन की रक्षा। जीवन और संपत्ति की रक्षा।

हिफाजती—वि० [अ० हिफाजती] जो रक्षा के लिये हो। जिससे सुरक्षा हो। हिफाजत करनेवाला [को०]।

हिफ्ज—संज्ञा पुं० [अ० हिफ्ज] १ हिफाजत। रक्षा। २ कंठस्थ या मुखाग्र होना। [को०]।

हिबा—संज्ञा पुं० [अ० हिबह्] दे० 'हिब्बा'।

यौ०—हिबा कुनिंदा = दान करने या इनाम देनेवाला।

हिबुक—संज्ञा पुं० [सं०] जन्मकुंडली में लग्न से चौथा स्थान या भवन। पाताल [को०]।

हिब्बा—संज्ञा पुं० [अ० हिब्बह्] १ दाना। २ दो जौ की एक तौल।

मुहा०—हिब्बा भर = जरा सा। थोडा।

३ दान। उ०—फिर अपना सारा कारोबार उन्हें सौंपा और कुछ दिनों के उपरांत यह गाँव उन्हीं के नाम हिब्बा कर दिया।—मान०, भा० ५, पृ० २६४। ४ पारितोषिक। पुरस्कार (को०)।

यौ०—हिब्बानामा।

हिब्बानामा—संज्ञा पुं० [अ० हिब्बह् + फा० नामह्] दानपत्र।

हिमचल(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हिमाचल] दे० 'हिमाचल'। उ०—(क) साथ सखी के नई दुलही को भयो हरि कौ हियो हेरि हिमच्चल।—मतिराम ग्र०, पृ० २७७। (ख) हिमचल राह सती अवतरिया। गण दीन्ह नाम पारवती धरिया।—कबीर सा०, पृ० ३३।

हिमंत(पु)‡—संज्ञा पुं० [सं० हेमन्त] दे० 'हेमंत'। उ०—खुली न कठिन समाधि ऋषि, चली हिमंत सुहारि। सिसिर परस मन बरनि करि, उठी सुकाँम जुहारि।—हृ० रासो, पृ० २२।

हिम¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ पाला। बर्फ। जल का वह ठोस रूप जो सरदी से जमने के कारण होता है। तुषार। उ०—(क) कानन् कठिन भयकरु भारी। घोर घामु हिम बारि बयारी।—मानस, २।६२। (ख) ऊपर हिम था नीचे जल था। —कामायनी, पृ० २। २ जाडा। ठढ। ३ जाडे की ऋतु। ४ चद्रमा। ५ चदन। ६ कपूर। ७ राँगा। ८ मोती। ९ ताजा मक्खन। १० कमल। ११ पृथ्वी के विभागो या वर्षो मे से एक। १२ वह दवा जो रात भर ठढे पानी मे भिगोकर सवेरे मलकर छान ली जाय। ठढा क्वाथ या काढा। खेशाँदा। १३ हिमवान्। हिमालय (को०)। १४ रजनी। निशा। रात्रि (को०)। १५ एक वृक्ष। पद्मकाष्ठ। पद्माख। विशेष दे० 'पदम'²।

हिम²—वि० १ ठढा। सर्द। २ तुषार या पाला से भरा हुआ (को०)।

हिम(पु)³—संज्ञा पुं० [सं० हेम] दे० 'हेम'। उ०—राजा मन मोदित भयो, धीरज धर्म निधान। पच कोटि मँगवाइ हिम, दिय विप्रन कहँ दान।—प० रासो, पृ० १६।

हिमउपल—संज्ञा पुं० [सं०] ओला। पत्थर। जमा हुआ मेह। उ०—जिमि हिम उपल कृपी दलि गरही।—तुलसी (शब्द०)।

हिमऋतु—संज्ञा स्त्री० [सं०] जाडे का मौसम। हेमत ऋतु।

हिमक—संज्ञा पु० [सं०] तालीशपत्र।

हिमकण—संज्ञा पुं० [सं०] बर्फ या पाले के महीन टुकडे।

हिमकणिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बर्फ की छोटी कनी। उ०—वन की एक एक हिमकणिका जैसी सरस और शुचि हे। क्या सौ सौ नागरिक जनो की वैसी विमल रम्य रुचि है ?—पचवटी, पृ० ९।

हिमकर¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ चद्रमा। हिमाशु। उ०—सीय वदन सम हिमकर नाही।—मानस, १।२३७। २ कपूर।

यौ०—हिमकरतनय, हिमकरसुत = बुध ग्रह का नाम।

हिमकर²—वि० शीतप्रदायक। ठढ लानेवाला।

हिमकरधर(पु)—संज्ञा पु० [सं०] चद्रधर। शिव। उ०—सो सभो सूलिन सिव सकर। हर हिमकरधर उग्र भयकर।—नद० ग्र०, पृ० १५४।

हिमकिरण—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रमा।

हिमकूट—संज्ञा पुं० [सं०] १ शीतकाल। ठढक का मौसम। शिशिर ऋतु। २ हिमालय पर्वत। ३ हिमालय का कूट। हिमालय की चोटी (को०)।

हिमखड—संज्ञा पुं० [सं० हिमखण्ड] १ हिमालय पहाड। २ ओला। बनौरी। पत्थर (को०)।

हिमगर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हिम + हिं० गर (प्रत्य०)] पाला। हिम। दे० 'हिंवार'। उ०—जीवजल हिमगर होत है सकत सीत कै सग। सो पखान पानी वह्या गुरु गीषम कै अग।—रज्जव०, पृ० १६।

हिमगर्भ—वि० [सं०] बर्फ से परिपूर्ण।

हिमगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय पर्वत। उ०—(क) तेहि कारन हिमगिरि गृह जाई। जनमी पारवती तनु पाई।—मानस, १।६५। (ख) हिमगिरि के उत्तुग शिखर पर।—कामायनी, पृ० १।

यौ०—हिमगिरिसुता = पार्वती।

हिमगु—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रमा।

हिमगृह—संज्ञा पुं० [सं०] वह घर या कोठरी जो बहुत ठढी हो और जिसमे ठढक के सामान इकट्ठे हो। सर्दखाना।

हिमगृहक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हिमगृह'।

हिमगौर—वि० [सं०] हिम के समान श्वेत। बर्फ की तरह सफेद (को०)।

हिमघ्न—वि० [सं०] जिससे शीत दूर हो। ठढक या हिम को दूर करनेवाला (को०)।

हिमज¹—वि० [सं०] १ बर्फ मे होनेवाला। २ हिमालय मे होनेवाला। ३ हिमालय से उत्पन्न।

हिमज²—संज्ञा पुं० मैनाक पर्वत।

हिमजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ खिरनी का पेड। २ यवनाल से निकली हुई चीनी। ३ पार्वती।

हिमज्वर—संज्ञा पु० [सं०] जाडा देकर आनेवाला बुखार। जडैया। विशेष दे० 'जूडी' (को०)।

हिमझटि—संज्ञा स्त्री० [सं० हिमझण्टि] दे० 'हिमझटि'।

हिमझटि—संज्ञा स्त्री० [सं०] पाला। कोहरा (को०)।

हिमति(पु)—संज्ञा स्त्री० [अ० हिम्मत] दे० 'हिम्मत'। उ०—हजरति हिमति न छाडिये, धरिये मन मैं धीर।—ह० रासो, पृ० १०६।

हिमतैल—संज्ञा पुं० [सं०] कपूर देकर बनाया हुआ तेल।

हिमदीधिति—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रमा।

हिमदुग्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] खिरनी। क्षीरिणी।

हिमदुर्दिन—संज्ञा पु० [सं०] ठढक का मौसम। ठढक का बुरा मौसम (को०)।

हिमद्युति—संज्ञा पु० [सं०] चद्रमा (को०)।

हिमद्रुट्—संज्ञा पुं० [सं० हिमद्रुह्] सूर्य (को०)।

हिमद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] बकायन का पेड।

हिमधर—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय (को०)।

हिमधातु—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय (को०)।

हिमधामा—संज्ञा पु० [सं० हिमधामन्] चद्रमा (को०)।

हिमध्वस्त—वि० [सं०] पाले से नष्ट किया हुआ। पाला मारा हुआ (को०)।

हिमपात—संज्ञा पुं० [सं०] पाला पडना। बर्फ गिरना।

हिमप्रस्थ—संज्ञा पु० [सं०] हिमालय पहाड।

हिमवारि(पु)—संज्ञा पु० [सं० हिमवारि] १ दे० 'हिमवारि'। २ वह जो अत्यत शीतल हो। उ०—घोर घामु हिमवारि बयारी।—मानस, २।६२।

हिमवालुक—संज्ञा पुं० [सं०] कपूर (को०)।

हिमभानु—संज्ञा पुं० [सं०] चद्रमा।

हिमभूधर—संज्ञा पुं० [सं० हिम + भूधर] हिमाचल। हिमालय। उ०—जहँ तहँ मुनिन्ह सुआश्रम कीन्हें। उचित वास हिमभूधर दीन्हें।—मानस १।६५।

हिमभूभृत्—संज्ञा पुं० [सं०] हिमभूधर। हिमालय।

हिममयूख—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

हिमयुक्त—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

हिमरश्मि—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

हिमरितु(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० हिमऋतु] हेमंत ऋतु। जाड़े या मौसम। अगहन और पूस का महीना। उ०—मंगल मूल लगन दिन आवा। हिमरितु अगहनु मास सुहावा।—मानस, १।३१२।

हिमरुचि—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

हिमरोम—संज्ञा पुं० [सं० हिम + रोम] चंद्रमा। उ०—इंदु कलानिधि सुधानिधि, जैवात्रिक ससि सोम। अब्ज अमीकर, छपाकर, विधु कहियत हिमरोम।—नंद० ग्रं०, पृ० ८८।

हिमर्तु—संज्ञा स्त्री० [सं०] हिम ऋतु। जाड़े का मौसिम।

हिमवत(पु)¹—संज्ञा पुं० [सं० हिमवत् शब्द के कर्ता कारक का बहु व०] हिमालय। उ०—बहुरि मुनिन्ह हिमवत कहु लगन सुनाई आइ। समय बिलोकि बिबाह कर पठए देव बोलाइ।—मानस, १।९९।

हिमवत(पु)²—संज्ञा पुं० [सं० हेमन्त] वह ऋतु जिसमें शीत या ठंढ का आधिक्य हो। हेमंत ऋतु। हिम ऋतु। उ०—(क) हिमवत कंत मुक्कं न प्रिय पिया पत्र पामिनि परपि।—पृ० रा०, ६१। ५२। (ख) हिमवत कंत सुग्रह ग्रहति हहकरत फुट्टै हियो।—पृ० रा०, ६१।५३।

हिमवत¹—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हिमवान्'।

हिमवत(पु)²—संज्ञा पुं० [सं० हिमवत्] दे० 'हिमवान्'। उ०—सो सोहति अस बैस कुमारी। हिमगिरिवर जनु हिमवत बारी।—नंद-ग्रं०, पृ० १२०।

हिमवत्कुक्षि—संज्ञा स्त्री० [सं०] हिमालय की कंदरा या गुहा [को०]।

हिमवत्खंड—संज्ञा पुं० [सं० हिमवत्खण्ड] स्कंद पुराण के एक खंड या विभाग का नाम।

हिमवत्पुर—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय की नगरी। ओषधिप्रस्थ नगर जो हिमवान् की राजधानी है [को०]।

हिमवत्प्रभव—वि० [सं०] हिमालय में उत्पन्न। हिमालय से उत्पन्न [को०]।

हिमवत्सुत—संज्ञा पुं० [सं०] मैनाक पर्वत।

हिमवत्सुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पार्वती। २. गंगा।

हिमवल—संज्ञा पुं० [सं०] मोती।

हिमवान¹—वि० [सं० हिमवत्] [वि० स्त्री० हिमवती] बर्फवाला। जिसमें बर्फ या पाला हो।

हिमवान²—संज्ञा पुं० १ हिमालय पहाड़। उ०—गुननिधान हिमवान धरनिधर धुर धनि।—तुलसी ग्रं०, पृ० २९। २ कैलाश पर्वत। ३ चंद्रमा। उ०—पावक पवन पानी भानु हिमवान जम, काल लोकपाल मेरे डर डाँवाडोल है।—तुलसी (शब्द०)।

हिमवारि—संज्ञा पुं० [सं०] हिम का पानी। बर्फ के कारण अत्यंत शीतल पानी।

हिमवालुक—संज्ञा पुं० [सं०] कर्पूर। कपूर [को०]।

हिमवालुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कपूर।

हिमवृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पाला पड़ना। २ ओले या अनौरे गिरना। बर्फ पड़ना [को०]।

हिमशर्करा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की चीनी जो यवनाल से निकाली जाती है।

हिमशिखरी—संज्ञा पुं० [सं० हिमशिखरिन्] हिमालय पर्वत [को०]।

हिमशीतल—वि० [सं०] १ बर्फ की तरह शीतल। अत्यंत ठंढा। जिसका प्रभाव तरल पदार्थ को जमा देनेवाला हो। जैसे, जाड़ा, शीत [को०]।

हिमशुभ्र—वि० [सं०] हिम की तरह शुभ्र या श्वेत [को०]।

हिमशैल—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय पहाड़।

हिमशैलजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।

हिमश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। २ बर्फ का पिघलना [को०]।

हिमश्रथन—संज्ञा पुं० [सं०] बर्फ पिघलना [को०]।

हिमसंघात—संज्ञा पुं० [सं० हिमसङ्घात] दे० 'हिमसंहति'।

हिमसंहति—संज्ञा स्त्री० [सं०] हिम का समूह। बर्फ की ढेरी [को०]।

हिमसर—संज्ञा पुं० [सं० हिमसरस्] शीतल जल। ठंढा पानी [को०]।

हिमसुत—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

हिमहानकृत्—संज्ञा पुं० [सं०] कृशानु। पावक। अग्नि [को०]।

हिमहासक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का खजूर। हिंताल।

हिमांक—संज्ञा पुं० [सं० हिमाङ्क] कपूर।

हिमांत—संज्ञा पुं० [सं० हिमान्त] शीत ऋतु का अंत। हिमऋतु की समाप्ति [को०]।

हिमांबु—संज्ञा पुं० [सं० हिमाम्बु] १ शीतल जल। ठंढा पानी। २ अवश्याय। ओस [को०]।

हिमांभ—संज्ञा पुं० [सं० हिमाम्भस्] दे० 'हिमांबु'।

हिमांशु—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। २ कपूर।

हिमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शीतऋतु। ठंढ का मौसम। जाड़ा २ छोटी इलाइची। ३ एक प्रकार की घास। चणिका। ४ दुर्गा। पार्वती। ५ नागरमोथा। भद्रमुस्तक। ६ असवर्ग। पृक्का [को०]।

हिमाकत—संज्ञा स्त्री० [अ० हिमाकत] नासमझी। बेवकूफी। मूर्खता। उ०—आँखों में हिमाकत का कँवल जब से खिला है। आते हैं नजर कूचओ बाजार वमती।—भारतेंदु ग्रं०, भा० २, पृ० ७९२।

हिमागम—संज्ञा पुं० [सं०] हेमंत ऋतु। जाड़े का मौसम।

हिमाचल—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय पहाड़।

हिमाच्छन्न—वि० [सं०] बर्फ से ढका हुआ।

हिमात्यय—संज्ञा पुं० [सं०] जाड़े की समाप्ति [को०]।

हिमाद्रि—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय पहाड़। उ०—हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती।

हिमाद्रिजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हिमालय की पुत्री। पार्वती। २ गंगा का एक नाम [को०]।

हिमाद्रितनया—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'हिमाद्रिजा'।

हिमानद्ध—वि० [सं०] हिम के कारण जडीभूत अथवा वर्फ से जमा हुआ [को०]।

हिमानिल—संज्ञा पुं० [सं०] ठढी हवा। वर्फीली हवा [को०]।

हिमानी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वर्फ का ढेर। घना तुषार। पाले का समूह। उ०—मृत्यु अरी चिरनिद्रे तेरा, अक हिमानी सा शीतल।—कामायनी, पृ० १८। २ पार्वती। उ०—भवा, भवानी, मृडा, मृडानी। काली कात्याइनी, हिमानी।—नद० ग्र०, पृ० २२४। ३ एक प्रकार की शर्करा जो यवनाल से निकाली जाती है। हिमशर्करा।

यौ०—हिमानीविशद, हिमानीशुभ्र = हिमसीकर या तुषार की तरह श्वेत वर्ण का।

हिमापह—संज्ञा स्त्री०[सं०] वह जिससे शीत दूर हो, अग्नि। आग [को०]।

हिमाब्ज—संज्ञा पुं० [सं०] कमल। नील कमल।

हिमाभ—वि० [सं०] हिम की तरह श्वेत वर्ण का [को०]।

हिमाभ्र—संज्ञा पुं० [सं०] कपूर।

हिमाम(पु)—संज्ञा पुं० [अ० हम्माम] दे० 'हम्माम', 'हमाम'। उ०—मोही सो किन भेटि लै जौ लौं मिली न वाम। सीतभीत तेरो हियो मेरो हियो हिमाम।—पद्माकर ग्र०, पृ० १६१।

हिमामदस्ता—संज्ञा पुं० [फा० हावनदस्तह्] खरल और बट्टा।

हिमायत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ रक्षा। अभिभावकता। सरक्षा। २ तरफदारी। पक्षपात। ३ मडन। समर्थन।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

हिमायतगर—वि० [फा०] दे० 'हिम्मती' [को०]।

हिमायती—वि० [फा०] १. पक्ष करनेवाला। पक्ष लेनेवाला। समर्थन करनेवाला। मडन करनेवाला। २ तरफदार। सहायता करनेवाला। मददगार।

हिमारा—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० हिमारा] गर्दभ। गधा। रासभ [को०]।

हिमाराति—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्नि। आग। २ सूर्य। ३ चित्रक वृक्ष। चीता। ४ आक। मदार।

हिमारि—संज्ञा पुं० [सं०] अनल। अग्नि। आग [को०]।

यौ०—हिमारिरिपु, हिमारिशत्रु = जो हिम के अरि अर्थात् अग्नि का शत्रु हो। जल।

हिमारुण—वि० [सं०] तुषार या पाले के कारण जो भूरे रग का हो गया हो।

हिमार्त—वि० [सं०] १ हिम से पीडित या कांपता हुआ। २. पाले से जमा हुआ या ठिठुरा हुआ [को०]।

हिमाल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हिमालय' [को०]।

हिमालय—संज्ञा पुं० [सं०] १ भारतवर्ष की उत्तरी सीमा पर वरावर फैला हुआ एक वहुत वडा और ऊँचा पहाड जो ससार के सव पर्वतों से वडा है।

विशेष—इसकी ऊँची ऊँची चोटियाँ सदा वर्फ से ढकी रहती हैं और सवसे ऊँची चोटी २९,००२ फुट ऊँची है। यह ससार की सवसे ऊँची चोटी मानी गई है। उत्तर भारत की सवसे वडी नदियाँ इसी पर्वतराज से निकली हैं। पुराणों मे यह पर्वत मेना या मेनका का पति और पार्वती का पिता माना गया है। गगा भी इसकी वडी पुत्री कही गई हैं।

यौ०—हिमालयकन्या, हिमालयपुत्री, हिमालयसुता = दे० 'हिमाद्रिजा'।

२ श्वेत खदिर का वृक्ष। सफेद खैर का पेड।

हिमालया—संज्ञा स्त्री० [सं०] भुइँ आँवला। भूम्यामलकी [को०]।

हिमावती—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्यानाशी। स्वर्णक्षीरी [को०]।

हिमाविल—वि० [सं०] हिम से आच्छन्न। वर्फ से ढँका हुआ। हिमाच्छादित [को०]।

हिमाश्रया—संज्ञा स्त्री० [सं०] पीली जीवती। स्वर्ण जीवतिका [को०]।

हिमाहति—संज्ञा स्त्री० [सं०] तुषारपात। हिमपात [को०]।

हिमाह्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ कपूर। कर्पूर। २ जवू द्वीप के एक वर्ष या खड का नाम।

हिमाह्वय—संज्ञा पुं० [सं०] १ कपूर। कर्पूर। २ कमल। पकज (को०)।

हिमि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हिम] दे० 'हिम'।

हिमिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] तुषार। पाला [को०]।

हिमित—वि० [सं०] जो हिम या वर्फ के रूप मे परिणत हो [को०]।

हिमेलु—वि० [सं०] ठढ से पीडित या आर्त। शीत से सिकुडा हुआ। हिमार्त [को०]।

हिमेश—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय।

हिमोत्तरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की पीली दाख। कपिलवर्ण का अगूर।

हिमोसन्ना—संज्ञा स्त्री० [सं०] हिमानी। दे० 'हिमशर्करा' [को०]।

हिमोद्भवा—संज्ञा पुं० [सं०] १ कचूर। आमाहलदी। २ क्षीरिणी [को०]।

हिमोस्र—संज्ञा स्त्री० [सं०] चद्रमा [को०]।

हिम्न—संज्ञा पुं० [सं०] वुध ग्रह। वुद्ध नाम का ग्रह।

हिम्मत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ कोई कठिन या कष्टसाध्य कर्म करने की मानसिक दृढता या वल। साहस। जिगरा। करेजा। हिम्मत। २ वहादुरी। पराक्रम।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

मुहा०—हिम्मत टूटना = दे० 'हिम्मत हारना'। उ०—हिम्मत टट गई सोचते थे कि अगर इस वीमारी से वच भी गए तो नतीजा क्या होगा।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ११६। हिम्मत पडना = साहस होना। हिम्मत हारना = साहस छोडना। उत्साह न रहना। उ०—हिम्मत न हारिए विसारिए न हरिनाम, जाही विधि राखे प्रभु ताही विधि रहिए।

हिम्मतवर—वि० [फा०] हिम्मतवाला। हिम्मती। साहसी [को०]।

हिम्मती—वि॰[फा॰] १ हिम्मतवाला। साहसी। दृढ। २ पराक्रमी। बहादुर।

हिम्य—वि॰ [सं॰] १ बर्फीला। बर्फ से युक्त। २ ठढा। हिम से जमा हुआ या आवृत [को॰]।

हिय—सज्ञा पुं॰ [सं॰ हृदय, प्रा॰ हिअ] १ हृदय। मन। उ॰—चले भाँट, हिय हरष न थोरा।—तुलसी (शब्द॰)। २ छाती। वक्षस्थल। दे॰ 'हिया'।

मुहा॰—हिय हारना = हिम्मत छोडना। साहस न रखना। उ॰—तेहि कारन आवत हिय हारे। कामी काक बलाक बेचारे।—तुलसी (शब्द॰)।

हियडाⓅ†—सज्ञा पुं॰ [सं॰ हृत् या हृदय, प्रा॰ हिअ, हिं॰ हिय + डा (प्रत्य॰)] दे॰ 'हियरा'। उ॰—प्रीतम तोरइ कारणइ, ताता भात न खाहि। हियडा भीतर प्रिय वसइ, दाझणती डरपाहि।—ढोला॰, दू॰ १६०।

हियरा—सज्ञा पुं॰ [हिं॰ हिय + रा (स्वार्थिक प्रत्य॰)] १ हृदय। मन। उ॰—(क) आँसु बरपि हियरे हरपि, सीता सुखद सुभाय। निरखि निरखि पिय मुद्रिकहिं बरनति है बहु भाय।—केशव (शब्द॰)। (ख) नैसुक हेरि हर्‍यो हियरा मनमोहन मेरो अचानक ही।—(शब्द॰)। २ छाती। वक्षस्थल। उ॰—हियरा लगि भामिनि सोइ रही।—लक्ष्मण॰ (शब्द॰)।

हियाँ†—अव्य॰ [हिं॰ यहाँ, इहाँ] दे॰ 'यहाँ'।

हिया—सज्ञा पुं॰ [सं॰ हृदय, प्रा॰ हिअअ] १ हृदय। मन। उ॰—(क) अब धौं बिनु प्रानप्रिया रहिहैं कहि कौन हितू अवलब हिये।—केशव (शब्द॰)। (ख) साथ सखी के नई दुलही को भयो हरि कौ हियो हेरि हिमचल। आय गए मतिराम तहाँ घरु जानि इकत अनद ते चचल।—मति॰ ग्र॰, पृ॰ २७७। २ छाती। वक्षस्थल। उ॰—(क) बनमाल हिये अरु विप्रलात।—केशव (शब्द॰)। (ख) हिया थार, कुच कचन लाडू।—जायसी। (शब्द॰)।

मुहा॰—हिये का अधा = अज्ञान। मूर्ख। हिये की फूटना = ज्ञान न रहना। अज्ञान रहना। बुद्धि न होना। हिया शीतल या ठढा होना = मन मे सुख शाति होना। मन तृप्त और आनदित होना। हिया जलना = अत्यत क्रोध मे होना। उ॰—क्रूर कुठार निहारि तजै फल ताकि यहै जो हियो जरई।—केशव (शब्द॰)। हिये लगना = गले से लगना। छाती से लगना। आलिंगन करना। उ॰—क्यो हठि मान गहै सजनी उठि बेगि गोपाल हिये किन लागै?—शकर (शब्द॰)। हिये मे लोन सा लगना = बहुत बुरा लगना। अत्यत अरुचिकर होना। उ॰—सुनत रूखि भई रानी, हिये लोन अस लाग।—जायसी (शब्द॰)। हिये पर पत्थर धरना = दे॰ 'कलेजे पर पत्थर धरना'। हिया फटना = कलेजा फटना। अत्यत शोक या दुख होना। हिया भर आना = कलेजा भर आना। शोक या दुख का हृदय मे अत्यत वेग होना। हिया भर लेना = दुख से लबी साँस लेना। विशेष दे॰ मुहा॰ 'जी' और 'कलेजा'।

हियाव—सज्ञा पुं॰ [हिं॰ हिय + आव (भाव॰ प्रत्य॰)] कोई कठिन काम करने की मानसिक दृढता। साहस। हिम्मत। जीवट। उ॰—भीर जो मनसा मानसर लीन्ह कँवल रस जाय। घुन जो हियाव न कै सका झूर काठ तस खाय।—जायसी (शब्द॰)।

क्रि॰ प्र॰—करना।—होना।

मुहा॰—हियाव खुलना = (१) मानसिक दृढता आना। साहस हो आना। हिम्मत बँधना। (२) सकोच, हिचक या भय न रहना। धडक खुलना। हियाव पडना = हिम्मत होना। साहस होना।

हिरगु—सज्ञा पुं॰ [सं॰ हिरङ्गु] राहु ग्रह।

हिरवरⓅ—वि॰ [देश॰] निर्विकार। विकाररहित। शुद्ध। उ॰—जो हीरा घन गहै घनेरा। होय हिरवर बहुरि न फेरा।—दरिया॰ बानी, पृ॰ ५।

हिरमरⓅ—सज्ञा पुं॰ [सं॰ हृदम्बर (= हृदयाकाश) या देश॰] हृदयरूपी आकाश। विकाररहित हृदय। उ॰—हीरा तो हमा भए पछी सकल सरीर। सत्त नाम के जान से भया हिरमर धीर।—सत॰ दरिया, पृ॰ ८५।

हिर—सज्ञा पुं॰ [सं॰] कपडे आदि की पट्टी या मेखला।

हिरकनाⓅ†—क्रि॰ अ॰ [सं॰ हिरुक् (= समीप)] १ पास होना। निकट जाना। २ इतने समीप होना कि स्पर्श हो। सटना। भिडना। जैसे,—हिरककर बैठना। ३ (बच्चों या पशुओ आदि का) परचना।

सयो॰ क्रि॰—जाना।

हिरकानाⓅ†—क्रि॰ स॰ [हिं॰ हिरकना] १ पास करना। नजदीक ले जाना। २ इतने समीप ले जाना कि स्पर्श हो जाय। सटाना। भिडाना। ३ (पशुओ या बच्चो आदि को) परचाना।

सयो॰ क्रि॰—देना।

हिरगुनी—सज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ हीरा + गुन (= सूत)] एक प्रकार की बढिया कपास जो सिंध मे होती है।

हिरण¹—सज्ञा पुं॰ [सं॰] १ सोना। स्वर्ण। २ शुक्र। वीर्य। ३ कौडी। कपर्दिका।

हिरणⓅ‡²—सज्ञा पुं॰ [सं॰ हरिण] दे॰ 'हिरन', 'हरिण'।

हिरणाखी—वि॰ [सं॰ हरिणाक्षी] मृगनयनी। हरिणाक्षी। उ॰—हिरणाखी हसिनइ कहइ, परउँ दिसाउर एक।—ढोला॰, दू॰ २२१।

हिरण्मय¹—वि॰ [सं॰] १ सुनहरा। स्वर्णिम। २ सोने का बना हुआ। स्वर्णनिर्मित।

हिरण्मय²—सज्ञा पुं॰ १ हिरण्यगर्भ। ब्रह्मा। २ एक ऋषि का नाम। ३ जबू द्वीप के नौ खडो या वर्षो मे से एक जो श्वेत और शृंगवान् पर्वतो के बीच कहा गया है। ४ भागवत के अनुसार उक्त खड या वर्ष का शासक, अग्नीध्र का पुत्र।

हिरण्मय कोश—सज्ञा पुं॰ [सं॰] आत्मा के सात आवरणो मे से अतिम आवरण।

हिरण्य¹—सज्ञा पुं॰ [सं॰] १ सोना। स्वर्ण। २ वीर्य। शुक्र। ३ कौडी। ४ एक मान या तौल। ५ धतूरा। ६ हिरण्मय नामक वर्ष

या खड । ७ एक दैत्य । ८ नित्य वस्तु या तत्व । ९ ज्ञान । १० ज्योति । तेज । प्रकाश । ११ अमृत । १२ स्वर्णपात्र । सोने का वर्तन ।(को०) १३ रजत । चाँदी (को०) । १४ कोई मूल्यवान् धातु (को०) । १५ भावप्रकाश के अनुसार एक प्रकार का गुग्गुल (को०) । १६. मरुत् । १७ धन । सपत्ति (को०) । १८ अग्नीध्र का एक पुत्र (को०) ।

हिरण्य[2]—वि० हिरण्यनिर्मित । स्वर्णनिर्मित ।

हिरण्यकठ—वि० [स० हिरण्यकण्ठ] जिसका कठ स्वर्णिम हो [को०] ।

हिरण्यक—सज्ञा पुं० [स०] स्वर्ण की आकाक्षा या मनोरथ [को०] ।

हिरण्यकक्ष वि० [स०] सोने की मेखला पहननेवाला । जो सोने का कमरवद पहने हुए हो [को०] ।

हिरण्यकर्ता—सज्ञा पुं० [सं० हिरण्यकर्तृ] स्वर्णकार । सुनार [को०] ।

हिरण्यकवच[1]—सज्ञा पुं० [स०] शिव का एक नाम ।

हिरण्यकवच[2]—वि० स्वर्णनिर्मित कवचवाला [को०] ।

हिरण्यकशिपु[1]—वि० [स०] सोने के तकिए या गद्दीवाला ।

हिरण्यकशिपु[2]—सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध विष्णुविरोधी दैत्य राजा का नाम जो प्रह्लाद का पिता था ।

विशेष—यह कश्यप और दिति का पुत्र था और भगवान् का बडा भारी विरोधी था । इसे ब्रह्मा से यह वर मिला था कि मनुष्य, देवता और किसी प्राणी से तुम्हारा वध नही हो सकता । इससे यह अत्यत प्रबल और अजेय हो गया । जब इसने अपने पुत्र प्रह्लाद को भगवान् की भक्ति करने के कारण बहुत सताया और एक दिन उसे खभे से बाँध और तलवार खीचकर वार वार कहने लगा कि 'बता ! अब तेरा भगवान् कहाँ है ? आकर तुझे बचावे ।' तब भगवान् नृसिह (आधा सिंह और आधा मनुष्य) का रूप धारण करके खभा फाडकर प्रकट हुए और उसे फाड डाला । भगवान् का चौथा नृसिह अवतार इसी दैत्य को मारने के लिये हुआ था ।

हिरण्यकश्यप—सज्ञा पु० [स० हिरण्यकशिपु] दे० 'हिरण्यकशिपु' ।

हिरण्यकामधेनु—सज्ञा स्त्री० [स०] दान देने के निमित्त वनी हुई सोने की कामधेनु गाय ।

विशेष—स्वर्णनिर्मित ऐसी गाय का दान १६ महादानो मे है ।

हिरण्यकार—सज्ञा पु० [स०] स्वर्णकार । सुनार ।

हिरण्यकृत्—सज्ञा पु० [स०] अग्नि [को०] ।

हिरण्यकृतचूड—सज्ञा पुं० [स०] शिव का एक नाम [को०] ।

हिरण्यकेश—सज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु का एक नाम । २ वह जिसके केश सुनहले वर्ण के हो ।

हिरण्यकेशी—सज्ञा पु० [सं० हिरण्यकेशिन्] १ एक गृह्यसूत्रकार ऋषि का नाम । २ उक्त नाम का एक गृह्यसूत्र ।—हिंदु० सभ्यता, पृ० १४४ ।

हिरण्यकोश—सज्ञा पुं०[सं०] तपाया हुआ सोना अथवा चाँदी [को०] ।

हिरण्यखादि—वि० [सं०] स्वर्णनिर्मित ।

हिरण्यगर्भ[1]—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह ज्योतिर्मय अड जिससे ब्रह्मा और सारी सृष्टि की उत्पत्ति हुई । २ ब्रह्मा । उ०—सृष्टि की समस्या के सुलझाव के लिये स्वभावत एक स्रष्टा की कल्पना हुई और उसे पुरुष, विश्वकर्मा, हिरण्यगर्भ और प्रजापति की सज्ञाएँ दी गई ।—सत० दरिया (भू०), पृ० ५४ ।

विशेष—ब्रह्मा ने जल या समुद्र की सृष्टि करके उसमे अपना बीज डाला, जिससे एक अत्यत देदीप्यमान ज्योतिर्मय या स्वर्णमय अड की उत्पत्ति हुई । यह अड सूर्य से भी अधिक प्रकाशमान् था । इसी अड से सृष्टिनिर्माता ब्रह्मा प्रकट हुए जो ब्रह्म के व्यक्त या सगुण रूप हुए । वेदात की व्याख्या के अनुसार ब्रह्म की शक्ति या प्रकृति पहले रजोगुण की प्रवृत्ति से दो रूपो मे विभक्त होती है—सत्वप्रधान और तम प्रधान । सत्वप्रधान के भी दो रूप हो जाते है—शुद्ध सत्व (जिसमे सत्वगुण पूर्ण होता है) और अशुद्ध सत्व (जिसमे सत्व अशत रहता है) । प्रकृति के इन्ही भेदो मे प्रतिबिंबित होने के कारण ब्रह्म कभी ईश्वर या हिरण्यगर्भ और कभी जीव कहलाता है । जब शक्ति या प्रकृति के तीन गुणो मे से शुद्ध सत्व का उत्कर्ष होता है तब उसे 'माया' कहते हे, और उस माया मे प्रतिबिंबित होनवाले ब्रह्म को सगुण या व्यक्त ईश्वर, हिरण्यगर्भ आदि कहते है । अशुद्ध सत्व की प्रधानता को 'अविद्या' सत्व कहते है और उसमे प्रतिबिंबित होनेवाले ब्रह्म को जीव या प्राज्ञ कहते हैं ।

३ सूक्ष्म शरीर से युक्त आत्मा । ४ एक मत्रकार ऋषि । ५ एक शिवलिंग । ६ विष्णु । ७. षोडश महादान के अतर्गत द्वितीय महादान (को०) ।

हिरण्यगर्भ[2]—वि० ब्रह्मा से सबद्ध । ब्रह्मा सबधी [को०] ।

हिरण्यगर्भा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक नदी का नाम [को०] ।

हिरण्यद[1]—सज्ञा पुं० [स०] समुद्र [को०] ।

हिरण्यद[2]—वि० सोना देनेवाला । स्वर्णदान करनेवाला [को०] ।

हिरण्यदा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी । २ एक नदी का नाम [को०] ।

हिरण्यनाभ—सज्ञा पुं० [स०] १ विष्णु । २ मैनाक पर्वत । ३ बृहत्सहिता के अनुसार वह मकान जिसमे तीन बडी शालाएँ (कमरे) पूर्व,पश्चिम और उत्तर की ओर हो और दक्षिण की ओर कोई शाला न हो ।

हिरण्यपर्वत—सज्ञा पुं० [स०] सुमेरु पर्वत [को०] ।

हिरण्यपुर—सज्ञा पु० [सं०] हरिवश मे वर्णित असुरो का एक नगर जो समुद्र के पार वायुमडल मे स्थित कहा गया है ।

हिरण्यपुरुष—सज्ञा पुं० [स०] स्वर्णनिर्मित पुरुष की प्रतिमा या मूर्ति [को०] ।

हिरण्यपुष्पी—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार पौधा ।

हिरण्यबाहु—सज्ञा पुं० [सं०] १ शिव का एक नाम । २ सोन नद । ३ एक नाग का नाम ।

हिरण्यबिंदु—सज्ञा पुं० [सं० हिरण्यबिन्दु] १ अग्नि । आग । २ एक पर्वत । ३ एक तीर्थ ।

हिरण्यमाली—वि० [सं० हिरण्यमालिन्] [वि० स्त्री० हिरण्यमालिनी] सोने की माला धारण करनेवाला ।

हिरण्यय—वि० [सं०] [वि० स्त्री० हिरण्ययी] सोने का । स्वर्णिम [को०]।

हिरण्यरशन—वि० [सं०] [स्त्री० हिरण्यरशना] सोने की मेखला या कटिसूत्र धारण करनेवाला ।

हिरण्यरेता¹—संज्ञा पुं० [सं० हिरण्यरेतस] १ कृशानु । अग्नि । आग । २ सूर्य । ३ शिव । ४ बारह आदित्यों में से एक । ५ अर्कवृक्ष । मदार । ६ चित्रक वृक्ष । चीता (को०)

हिरण्यरेता²—वि० सोने के सदृश बीज या रेतयुक्त ।

हिरण्यरोमा—संज्ञा पुं० [सं० हिरण्यरोमन्] १ एक लोकपाल जो मरीचि के पुत्र हैं । २ महाभारत के अनुसार भीष्मक का नाम ।

हिरण्यलोमा—संज्ञा पुं० [सं० हिरण्यलोमन्] एक ऋषि जो पाँचवें मन्वतर में हुए थे [को०]

हिरण्यव—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोने का आभूषण । स्वर्णाभरण । किसी देवता या मंदिर पर चढ़ा हुआ धन । देवस्व । देवोत्तर संपत्ति ।

हिरण्यवर्चस्—वि० [सं०] स्वर्णिम दीप्ति से युक्त । सोने की तरह कांतिवाला [को०]।

हिरण्यवर्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह जिसकी कांति या वर्ण स्वर्णिम हो । २ एक नदी का नाम ।

हिरण्यवान्¹—वि० [सं० हिरण्यवत्] [वि० स्त्री० हिरण्यवती] सोनेवाला । जिसमें या जिसके पास सोना हो ।

हिरण्यवान्²—संज्ञा पुं० अग्नि ।

हिरण्यवाह—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव । २. सोन नद ।

हिरण्यवीर्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्नि । २ सूर्य ।

हिरण्यशकल—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ण का छोटा छोटा टुकड़ा । सोने का छोटा टुकड़ा [को०] ।

हिरण्यशृंग—संज्ञा पुं० [सं० हिरण्यशृङ्ग] १ वह जिसकी चोटी या सींग सोने की हो । २ महाभारतोक्त एक पर्वत का नाम [को०] ।

हिरण्यष्ठीव—संज्ञा पुं० [सं०] भागवत पुराण के अनुसार एक पर्वतविशेष [को०] ।

हिरण्यष्ठीवी—वि० [सं० हिरण्यष्ठीविन्] महाभारत के अनुसार (पक्षीविशेष) जो सोना उगलता या वमन करता हो [को०]।

हिरण्यसकाश—वि० [सं० हिरण्यसङ्काश] सोने की तरह दीप्तियुक्त [को०]।

हिरण्यसर—संज्ञा पुं० [सं० हिरण्यसरस्] महाभारत में वर्णित एक तीर्थ ।

हिरण्यसामुदयिक—संज्ञा पुं० [सं०] मुद्रा के रूप में कर वसूल करनेवाला अधिकारी । उ०—बंगाल में नकद कर वसूल करनेवालों को 'हिरण्यसामुदायिक' कहते थे ।—पू० म० भा०, पृ० १०७।

हिरण्यस्थाल—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ण का कटोरा या कटोरे के समान कोई पात्र [को०]।

हिरण्यस्रक्—संज्ञा पुं० [सं० हिरण्यस्रज्] १ सोने की माला । २ वह जिसने सोने की माला या सिकड़ी पहन रखी हो [को०]।

हिरण्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक जिह्वा का नाम [को०]।

हिरण्याक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रसिद्ध दैत्य जो हिरण्यकशिपु का भाई था।

विशेष—यह दैत्य कश्यप और दिति से उत्पन्न हुआ था। इसने पृथ्वी को लेकर पाताल में जा छोड़ा था। ब्रह्मा आदि देवताओं की प्रार्थना पर विष्णु ने वाराह अवतार धारण करके इसे मारा और पृथ्वी का उद्धार किया

यौ०—हिरण्याक्षरिपु, हिरण्याक्षहा=वाराह रूपधारी विष्णु ।

२ वसुदेव के छोटे भाई श्यामक के एक पुत्र का नाम।

हिरण्याश्व—संज्ञा पुं० [सं०] दान देने के लिये बनाई हुई सोने के घोड़े की मूर्ति जिसका दान १६ महादानों में है।

हिरण्याश्वरथ—संज्ञा पुं० [सं०] दान करने के लिये बनाया गया सोने का घोड़ा और रथ। यह दान १६ महादानों में है [को०]।

हिरण्विनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोने की खान [को०] ।

हिरदय(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० हृदय] दे० 'हृदय'। उ०—प्रेम प्रमोद परस्पर प्रगटत गोपहिं। जनु हिरदय गुन ग्राम थूनि थिर रोपहिं।—तुलसी ग्रं०, पृ० ५३ ।

हिरदा(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हृदय] दे० 'हृदय'। उ०—[illegible] अति [illegible] कोमल हिरदा मोद।—[illegible], पृ० ८७ ।

हिरदानी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हृदय] अंतरात्मा । उ०—तेरी गती न मूढ़ चित लाव हिरदानी में।—सुंदर ग्रं०, भा० २, पृ० ८०३।

हिरदावल—संज्ञा पुं० [सं० हृदावर्त] घोड़े की छाती की भौंरी (घूमे हुए रोएँ) जो बड़ा भारी दोष माना जाता है ।

हिरन¹—संज्ञा पुं० [सं० हरिण] [स्त्री० हिरनी] हरिण । मृग । विशेष—दे० 'हरिण'।

मुहा०—हिरन हो जाना = भाग जाना । बहुत तेजी से भागना।

हिरन(पु)²—संज्ञा पुं० [सं० हिरण्य, प्रा० हिरण्ण] सोना । सुवर्ण। उ०—लोहा हिरन होइ धौं कैसे जो पारस नहिं परसै।—कबीर बानी, पृ० १३ ।

हिरनखुरी—संज्ञा स्त्री० [सं० हरिण + खुरी] एक प्रकार की लता या बेल जो बरसात में उगती है और जिसके पत्ते हिरन के खुर से मिलते जुलते होते हैं ।

हिरननैनि, हिरननैनी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० हरिणनयनी] मृगनयनी । उ०—हाँ हँसि हँसि हाँ ही करो, नाहिं नाहि मति हारि । हरि हरखत हेरत हिये हिरननैनि हित ठानि ।—ब्रज० ग्रं०, पृ०७ ।

हिरना(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हरिण] मृग ।

हिरनाकच्छप(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हिरण्यकशिपु] एक दैत्य जो प्रह्लाद का पिता था । विशेष दे० 'हिरण्यकशिपु'। उ०—हिरनाकच्छप दीन भयो जब, दीन्ह्यो सब बरदान ।—जग० श०, पृ०११३ ।

हिरनाकुश(पु)—संज्ञा पुं० [स० हिरण्यकशिपु] दे० 'हिरण्यकशिपु'। उ०—हिरनाकुश वा हिरनाक्ष राऊ। कीन्ह सेवा वहु शभू ठाऊ।—कबीर सा०, पृ० २६।

हिरनाकुस(पु)—संज्ञा पु० [स० हिरण्यकशिपु] दे० 'हिरण्यकशिपु'। उ०—हिरनाकुस औं कस को गयो दुहुन को राज।—गिरधर (शब्द०)।

हिरनाक्ष(पु)—संज्ञा पु० [स० हिरण्याक्ष] दे० 'हिरण्याक्ष'। उ०— हिरनाकुश वा हिरनाक्ष राऊ। कीन्ह सेवा वहु शभू ठाऊ।—कबीर सा०, पृ० २६।

हिरनी—संज्ञा स्त्री० [हि० हिरन + ई (स्त्री० प्रत्य०)] हरिण की मादा। मृगी।

हिरनौटा—संज्ञा पुं० [स० हरिणपोत] हिरन का बच्चा। मृगशावक।

हिरफत—संज्ञा स्त्री० [अ० हिरफत] १ व्यवसाय। पेशा। व्यापार। २ हाथ की कारीगरी। दस्तकारी। ३ हुनर। कलाकौशल। ४ चतुराई। चालाकी। ५ चालवाजी। धूर्तता।

हिरफतवाज—वि० [अ० हिरफत + फा० वाज़] चालवाज। धूर्त।

हिरफती—वि० [फा० हिरफती] धूर्त। वचक। चालवाज [को०]।

हिरमजी—संज्ञा स्त्री० [अ० हिरमजी] १ लाल रग की एक प्रकार की मिट्टी, जिससे कपडे, दीवार आदि रँगते है। २ एक फूल जो लाल होता है। ३ रक्त वर्ण। लाल रग [को०]।

हिरमिजी—संज्ञा स्त्री० [फा० हिरमिजी] दे० 'हिरमजी'।

हिरवा‡—संज्ञा पुं० [स० हीरक] दे० 'हीरा'।

हिरवा चाय—संज्ञा स्त्री० [हि० हीरा + चाय] एक प्रकार की सुगधित घास जिसकी जड मे से नीबू की सी सुगध आती है और जिससे तेल वनता है।

हिरस‡—संज्ञा स्त्री० [अ० हिर्स] दे० 'हिर्स'।

हिरसिया—वि० [अ० हिर्स, हि० हिरस + इया] १ हिर्स करनेवाला। उ०—तूं कादिर दरियाव जिहावन, मै हिरसिया हुसियार।—रै० वानी, पृ० २८। २ ईर्ष्यालु।

हिरसी†—वि० [अ० हिर्स, हि० हिरस + ई] १ हिरिस करनेवाला। ईर्ष्यालु। २. लोभी। लालची। उ०—डण्टी स्वाँगी वहु मिले हिरसी मिले अनत।—सतवानी०, भा० १, पृ० १२६।

हिरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] रक्तनाडी या शिरा।

हिरात—संज्ञा पु० [फा०] अफगानिस्तान के उत्तरी भाग मे स्थित एक नगर का नाम।

हिराती¹—वि० [देश० या फा० हिरात] हिरात नामक स्थान का। अफगानिस्तान के उत्तर मे स्थित हिरात नगर सवधी। जैसे,— हिराती घोडा।

हिराती²—संज्ञा पुं० एक जाति का घोडा जिसका डीलडौल औसत दर्जे का और हाथ पैर दोहरे होते हैं। यह गरमी मे नही थकता।

हिराना†¹—क्रि० अ० [सं० हरण] १ खो जाना। गायव होना। गुम होना। उ०—तीन पाप मेरे, तेरे तीर पर मैया अव, मिलत न हेरे इत, कित धौ हिराने है।—पद्माकर ग्र०, पृ० २७२। २ न रह जाना। अभाव होना। उ०—गुन ना हिरानो गुनगाहक हिरानो है।—(शब्द०)।

सयो० क्रि०—जाना।

३ मिटना। दूर होना। उ०—लखि गोपिन को प्रेम भुलायो। ऊधो को सव जान हिरायो।—सूर (शब्द०)। ४ आश्चर्य से अपने को भूल जाना। हक्का वक्का होना। दग रह जाना। अत्यत चकित होना। उ०—सोभा को सघन वन मेरो घनश्याम नित, नई नई रूचि तन हेरत हिराइऐ।—केशव ग्र०, भा०१, पृ० ६०। ५ अपने को भूल जाना। आपा खोना। उ०—जौ कहि आप हिराइ न कोई। तौ लहि हेरत पाव न सोई।—जायसी (शब्द०)।

हिराना²—क्रि०स० १ भूल जाना। ध्यान मे न रहना। उ०—विकल भई तन दसा हिरानी।—सूर (शब्द०)। २ भूली हुई वस्तु को खोजने मे मदद करना। ढुँढवाना।

हिराना³—क्रि० स० [हिं० हिलाना (=प्रवेश करना और कराना)] खेतो मे भेड, वकरी, गाय आदि चौपाए रखना या रखवाना जिसमे उनकी लेँडी या गोवर से खेत मे खाद हो जाय।

हिरावल—संज्ञा पुं० [तु० हरावल] दे० 'हरावल'।

हिरास¹—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ भय। त्रास। २ नैराश्य। नाउम्मेदी। ३ रज। खेद। खिन्नता।

हिरास²—वि० [फा० हिरासाँ] १ निराश। नाउम्मेद। हताश। २ उदासीन। खिन्न।

हिरासत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ ऐसी स्थिति जिसमे कोई मनुष्य इधर उधर भाग न सके। पहरा। चौकी। २ कैद। नजरवदी।

मुहा०—हिरासत मे करना = कैद करना। पहरे के अदर करना। सिपाहियो के पहरे मे देना।

हिरासाँ—वि० [फा०] १ निराश। नाउम्मेद। २ हिम्मत हारा हुआ। पस्त। ३ उदासीन। खिन्न।

हिरिंग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० ह्रीं] मत्र का वीजाक्षर। ह्रीं। उ०—(क) हिरिंग जाप तासु मुख गाजा लछमी शिव आधारा है। – कवीर० श०, भा० १, पृ० ५६। (ख) पचम अकास मे विश्नु विराजे। लछमी सहित सिंघासन गाजे। हिरिंग वैकुठ भक्त समाजे। जिन भक्तन कारज सारा है।—कवीर० श०, भा० १, पृ० ६१।

हिरिव—संज्ञा पुं० [देश०] तलैया। पल्वल [को०]।

हिरिमथ—संज्ञा पुं० [सं० हरिमन्थ] एक प्रकार का चना। दे० 'हरिमथ' [को०]।

हिरिली—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का कद [को०]।

हिरिवग—संज्ञा पुं० [देश०] लगुड। लाठी [को०]।

हिरिस¹—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का छोटा वृक्ष।

विशेष—यह वृक्ष अवध, राजपूताना, पजाव और सिंध मे पाया जाता है। इसकी छाल भूरे रग की होती है। इसकी पत्तियाँ पाँच छह अगुल लबी और जड की ओर गोलाकार होती हैं।

यह फागुन चैत में फलता है। इसके फल खटमीठे होते हैं और कहीं कहीं खाए जाते हैं।

हिरिस²—संज्ञा स्त्री० [अ० हिर्स] दे० 'हिर्स'।

हिरीसि†—संज्ञा स्त्री० [अ० हिर्स] दे० 'हिर्स'। उ०—जाहि बातुन, जिकीरि, फिकीरि, हिरीसि, हवा सब दूरि गुआ।—सत० दरिया, पृ० ६६।

हिरोदक—संज्ञा पुं० [सं०] रक्त। खून [को०]।

हिरोरा(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हिल्लोल] दे० 'हिलोर', 'हिलोरा'। उ०—सकल कटक में पर्‍यो हिरोरा। छूटैं फिरैं हाथि औ घोरा।—हिं० क० का०, पृ० २१६।

हिरौंजी‡—संज्ञा स्त्री० [अ० हिरमजी]। दे० 'हिरमजी'।

हिरौल(पु)—संज्ञा पुं० [तु० हरावल, हिं० हरौल] दे० 'हरावल'।

हिर्दय(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हृदय] दे० 'हृदय'। उ०—हीरा पाय राय भय भागा। सत्य ज्ञान हिरदय में जागा।—कबीर सा०, पृ० ४६८।

हिर्फत—संज्ञा स्त्री० [अ० हिर्फत] दे० 'हिरफत'।

यौ० -हिर्फतबाज = दे० 'हिरफतबाज'।

हिर्स—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ तृष्णा। लालच। लोभ। २ इच्छा का वेग। कामना की उमंग।

मुहा०—हिर्स करना = तृष्णा करना। हिर्स छूटना = मन में लालच होना। तृष्णा होना। हिर्स दिलाना या देना = (१) प्रबल इच्छा उत्पन्न करना। लालसा जगाना। कामना उत्तेजित करना। (२) लालच दिलाना। हिर्स मिटना = (१) इच्छा का वेग शांत होना। (२) कामेच्छा शांत होना। काम का वेग शांत होना। हिर्स मिटाना = (१) इच्छा पूरी करना। लालसा पूरी करना। (२) काम का वेग शांत करना। हिर्स होना = दे० 'हिर्स छूटना'।

३ किसी की देखादेखी कुछ काम करने की इच्छा। टीस। स्पर्धा।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

यौ०—हिर्साहिर्सी।

हिर्साहा†—वि० [अ० हिर्स] १ लालची। लोभी। २ ईर्ष्यालु। लाग-डाट करनेवाला।

हिर्साहिर्सी—संज्ञा स्त्री० [अ० हिर्स] लाग डाट। देखा देखी।

हिर्सी—वि० [अ० हिर्स + हिं० ई (प्रत्य०)] १ हिर्स रखनेवाला। लालची। २ ईर्ष्यालु। द्वेषी।

हिर्सोहवस—संज्ञा स्त्री० [अ० हिर्स + फा० हवस] हिर्स और हवस। लोभ और लालच [को०]।

हिर्सोहवा—संज्ञा स्त्री० [अ० हिर्स + फा० हवा] लोभ और लालच। अधिक लोभ। उ०—गाफिल हुए सब हिर्सोहवा ढंग लगाए।—कबीर म०, पृ० ४६६।

हिलदा—संज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री० हिलदी] मोटा ताजा आदमी। तगड़ा या तंदुरुस्त आदमी।

हिलकना†¹—क्रि० अ० [अनु० या सं० हिक्का] १ हिचकियाँ लेना। हिचकना। २ सिसकना।

हिलकना²—क्रि० स० [देश०] सुकोड़ना। (मुँह) ऐंठना या सिकोड़ना।

हिलकना³—क्रि० अ० [सं० हिरुक् (= समीप)] दे० 'हिरकना'।

हिलकी†(पु)¹—संज्ञा स्त्री० [अनु० या सं० हिक्का] १ हिचकी। २ भीतर ही भीतर रोने से रह रहकर वायु के निकलने का झोंका या आघात। सिसकने का शब्द। सिसक। उ०—(क) देखी माई कान्ह हिलकियनि रोवै।—सूर०, १०।३४७। (ख) (माई) नैकुहूँ न दरद करति हिलकिनि हरि रोवै।—सूर०, १०।३४८। (ग) कमल नयन हरि हिलकिन रोवै बंधन छोरि जसोवै।—सूर (शब्द०)। (घ) उरलाय लई अकुलाय तऊ अधिकातिक लौं हिलकीन रहीं।—केशव (शब्द०)।

क्रि० प्र०—भरना।—लेना।

हिलकी(पु)²—संज्ञा स्त्री० [हिं० हिलना] उमंग। तरंग।

हिलकोर—संज्ञा पुं० [सं० हिल्लोल] हिलोर। लहर। तरंग।

हिलकोरना—क्रि० स० [हिं० हिलकोर + ना (प्रत्य०)] पानी को हिलाकर तरंगें उठाना। जल को क्षुब्ध करना।

संयो० क्रि०—डालना।—देना।

हिलकोरा—संज्ञा पुं० [सं० हिल्लोल] तरंग। लहर। वीचि। हिलोरा। हिलकोर। उ०—नदी का जल हिलकोरा मार रहा था।—प्रेमघन०, भा०, पृ० ४४४।

मुहा०—हिलकोरा देना = (१) तरंगित करना। (२) लहराना। हिलकोरा मारना या हिलकोरे लेना = लहराना। तरंगित होना।

हिलग—संज्ञा स्त्री० [हिं० हिलगना] १ लगाव। संबंध। २ परिचय। हेलमेल। हिलने मिलने या परचने का भाव। ३ लगन। प्रेम। उ०—देखे भूलियत कछू कहत न आवै सखी, इनकी हिलग नई नई देखियत है।—घनानंद, पृ० २१४।

हिलगत—संज्ञा स्त्री० [हिं० हिलगना] १ हिलगने या परचने का भाव। २ टेव। आदत। बान।

हिलगना¹—क्रि० अ० [सं० अधिलग्न, प्रा० अहिलग्ग] २ अटकना टँगना। किसी वस्तु से लगकर ठहरना। २ फँसना। बझना। ३ हिलमिल जाना। ४ परचना।

हिलगना²—क्रि० अ० [सं० हिरुक् (= समीप। पास)] पास होना। इतने समीप होना कि स्पर्श हो। सटना। भिड़ना। दे० 'हिरकना'।

हिलगाना¹—क्रि० स० [हिं० हिलगना] १ अटकाना। टाँगना। किसी वस्तु से लगाकर ठहराना। २ फँसाना। बझाना। ३ मेलजोल में करना। घनिष्ठता स्थापित करना। ४. परचाना। परिचित और अनुरक्त करना। जैसे—बच्चे को हिलगाना।

हिलगाना²—क्रि० स० [सं० हिरुक् (= पास)] सटाना। भिड़ाना। दे० 'हिरकाना'।

हिलन मिलन—संज्ञा स्त्री० [हिं० हिलना + मिलना] मिलना जुलना। मिलाप। उ०—हिलन मिलन, उनकी लागत मन को अति प्यारी।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० १६।

हिलना¹—क्रि० अ० [स० हल्लन (= इधर उधर लुढकना)] १ डोलना। चलायमान होना। स्थिर न रहना। हरकत करना। जैसे,—पेड की पत्तियाँ हिलना। घडी का लगर हिलना।

सयो० क्रि०—जाना।—उठना।

मुहा०—हिलना डोलना = (१) चलायमान होना। (२) चलना फिरना। घूमना। टहलना। जैसे,—शाम को कुछ हिला डोला करो। (३) श्रम करना। काम धधा करना। (४) प्रयत्न करना। उद्योग करना। जैसे,—बिना हिले डोले कोई काम नही हो सकता।

२ अपने स्थान से टलना। सरकना। चलना। जैसे,—जो लडका अपनी जगह से हिलेगा, वह मार खायगा। ३ काँपना। कपित होना। थरथराना। जैसे,—लिखने मे हाथ हिलना। जाडे से बदन हिलना। ४ खूब जमकर बैठा न रहना कि छूने से इधर उधर न करे। ढीला होना। जैसे—दाँत हिलना। ५ झूमना। लहराना। नीचे ऊपर या इधर उधर डोलना। जैसे,—(क) बहुत से लडके हिल हिलकर पढते हैं। (ख) बुड्ढो का सिर हिलना। ६ घुसना। पैठना। प्रवेश करना। (विशेषत पानी मे)।

यौ०—हिलना मिलना = (१) मेल जोल के साथ होना। घनिष्ठ सबध रखना। (२) मेल जोल से होना। एकता के साथ रहना। (३) एक जी होना। परस्पर गहरे मित्र होना। जैसे,—दोनो खूब हिल मिल गए है। उ०—आनदघन ब्रजजीवन जेंवत हिलिमिलि ग्वार तोरि पतानि ढाक।—घनानद, पृ० ४७३।

मुहा०—हिल मिलकर = (१) मेल जोल के साथ। घनिष्ठता और मैत्री के साथ। एक जी होकर। सुलह के साथ। (२) समिलित होकर। इकट्ठा होकर। एकत्र होकर। उ०—हिल मिल फाग परस्पर खेलहिं, सोभा बरनि न जाई।—गीत (शब्द०)। हिला मिला या हिला जुला = (१) मेल जोल मे आया हुआ। घनिष्ठ सबध रखता हुआ। सुहृद् भाव रखता हुआ। (२) परचा हुआ। परिचित और अनुरक्त। जैसे,—यह बच्चा तुमसे खूब हिला जुला है।

हिलना²—क्रि० अ० [देश०] प्रवेश करना। घुसना। (विशेषत पानी मे)।

हिलनि—संज्ञा स्त्री० [सं० हल्लन, हिं० हिलना] हिलने का कार्य या भाव। उ०—मेरी गति होउ सोई महरानी। जासु भौह की हिलनि विलोकत निसु दिन सारँगपानी।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ७६।

हिलबी—वि० [देश०] हलब देश का। उ०—आँगे हिलबी आदरस, वोहू यमनी वोदार।—बाँकी० ग्र०, भा० ३, पृ० ५७।

हिलमोचि, हिलमोचिका, हिलमोची—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक तरह का साग [को०]।

हिलसा—संज्ञा स्त्री० [सं० इल्लिश] एक प्रकार की मछली जो चिपटी और बहुत काँटेदार होती है।

हिलाना¹—क्रि० स० [हिं० हिलना] १ डुलाना। चलायमान करना। हरकत देना। जैसे,—(क) बैठे बैठे पैर हिलाना। (ख) छडी हिलाना। २ स्थान से उठाना। टालना। हटाना। जैसे,—(क) जब हम बैठ गए, तब कौन हिला सकता है। (ख) इस भारी पत्थर को जगह से हिलाना मुश्किल है। ३ कँपाना। कपित करना। ४ नीचे ऊपर या इधर उधर डुलाना। झुलाना। जैसे,—मुगदर हिलाना, सिर हिलाना।

सयो० क्रि०—डालना।—देना।

हिलाना²—क्रि० स० [हिं० हिलगाना] १ परिचित और अनुरक्त करना। परचाना। घनिष्ठता स्थपित करना। जैसे,—छोटे बच्चे को हिलाना। जानवरो को हिलाना।

हिलाना³—क्रि० स० [देश०] प्रवेश कराना। घुसाना। प्रविष्ट करना। पैठना। (विशेषत पानी मे)।

हिलाल—संज्ञा पुं० [अ०] दूज का चाँद। शुक्ल पक्ष की द्वितीया का चद्रमा। उ०—अजब हुस्न मे खूब साहब जमाल। जिस हुस्न तल दब रहे नित हिलाल।—दक्खिनी०, पृ० २६७।

हिलूर(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० हिल्लोल] तरग। लहर। हिलोर। उ०—पुनि यहै अक्रूर नाँही ऊर प्रेम हिलूर बरषाशी।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० २४१।

हिलूसना—क्रि० अ० [सं० उल्लासन] उत्सुक या लालायित होना। दे० 'हुलसना'। उ०—आडा डूँगर दूरि घर, वरगइ न जाणइ भत्त। सज्जण सदइ कारणइ हियउ हिलूसइ नित्त।—ढोला०, दू० ६७।

हिलोर—संज्ञा पुं० [सं० हिल्लोल] १ हवा के झोके आदि से जल का उठना और गिरना। तरग। लहर। २ मौज। उ०—सोहै सितासित को मिलिबो, तुलसी हुलसै हियहेरि हिलोरे।—(शब्द०)।

क्रि० प्र०—उठना।

मुहा०—हिलोरे लेना = तरगित होना। लहराना।

हिलोरना—क्रि० स० [हिं० हिलोर + ना (प्रत्य०)] १ जल को क्षुब्ध और तरगित करना। पानी को इस प्रकार हिलाना कि लहरें उठे। २ लहराना। इधर उधर हिलाना डुलाना। ३ हिला डुलाकर बडी वस्तु ऊपर करना। ४ अत्यधिक द्रव्य उपार्जित करना।

हिलोरा—संज्ञा पुं० [सं० हिल्लोल] दे० 'हिलोर'।

हिलोल—संज्ञा पुं० [सं० हिल्लोल] दे० 'हिल्लोल', 'हिलोर'।

हिलौअल†—संज्ञा स्त्री० [हिं० हिलाना] हिलाने या आदोलित करने की क्रिया। उ०—किसी से गुडमार्निग और किसी मे हाथ हिलौअल होती।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १४८।

हिल्ल—संज्ञा पुं० [सं०] एक जलीय पक्षी [को०]।

हिल्ला¹—संज्ञा पुं० [अ० हीलह्] दे० 'हीला'।

हिल्ला[2]—संज्ञा पुं० [हिं० गीला या देशी] १ कीचड । कर्दम । २ बालू । सिकता ।

हिल्लूरी—संज्ञा स्त्री० [देशी] लहरी । तरंग ।

हिल्लोल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ हिलोरा । तरंग । लहर । २ आनंद की तरंग । मौज । ३ कामशास्त्र के अनुसार एक रतिबंध या आसन । ४ मौज । धुन । सनक । ५ एक राग का नाम । हिंडोल ।

हिल्लोल[2]—संज्ञा पुं० [हिं० हिलोर] दे० 'हिलोर' ।

हिल्लोलन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० हिल्लोलित] १ तरंग उठना । लहराना । २ दोलन । झूलना ।

हिल्वला—संज्ञा स्त्री० [सं०] इल्वला नामक पाँच छोटे तारों का समूह जिनकी स्थिति मृगशिरा नक्षत्र के शीर्ष भाग के ऊपर मानी गई है । इन्वका [को०] ।

हिवंचल(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हिम + अञ्चल] पाला । बर्फ । हिम । उ०—बरखा रुदन गरज अति कोहू । बिजुरी हँसी हिवंचल छोहू ।—जायसी (शब्द०) ।

हिवंचल(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हिमाचल] दे० 'हिमालय' । उ०—को ओहि लागि हिवंचल सीझा । का कहं लिखी ऐस को रीझा । —जायसी (शब्द०) ।

हिवँ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हिम] बर्फ । पाला ।

हिव[1]—अव्य० [देश०] अब । उ०—समुझै क्यों न अजूं समझाऊँ भूल मतो हिव माया ।—रघु० रू०, पृ० १६ ।

हिव(पु)[2]—संज्ञा पुं० [सं० हृत्, प्रा० हिअ] हृदय ।

हिवडा†—संज्ञा पुं० [सं० हृत्, प्रा० हिअ, अप० हिअड] हृदय । हिया । उ०—कबकी ठाढी मैं मग जोऊँ निस दिन बिरह सतावे । कहा कहूँ कछु कहत न आवे, हिवडो अति अकुलावे । पिय कब दरस दिखावे ।—संतबानी०, पृ० ७३ ।

हिवाँर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हिम + आलि] बर्फ । पाला । तुषार ।

मुहा०—हिवाँर होना = बहुत ठंढा होना । बहुत पाला होना । बहुत सर्द होना ।

हिवाँले(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हिमालय] दे० 'हिमालय' । उ०—ना मैं गलों हिवाँले माही । स्वर्ग लोक कों बछो नांही ।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० ३०५ ।

हिवार(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हिमालय] दे० 'हिवाँले' । उ०—छल बल करि कौरो सघारे । पडो भगत हिवारे गारे ।—पट०, पृ० २६० ।

हिस—संज्ञा पुं० [अ०] १ अनुभव । ज्ञान । बोध । २ संज्ञा । होश । चेतना । ३ चेष्टा । हरकत ।

मुहा०—बेहिस व हरकत = निश्चेष्ट और निःसंज्ञ । बेहोश और संज्ञाशून्य । अचेत और सुन्न ।

हिसका—संज्ञा पुं० [सं० ईर्ष्या, हिं० हीस] १ ईर्ष्या । डाह । २ स्पर्धा । देखादेखी किसी बात की इच्छा । ३ किसी की बराबरी करने की हवस ।

यौ०—हिसका हिसकी = परस्पर स्पर्धा का भाव । एक दूसरे के बराबर होने की धुन ।

हिसाब—संज्ञा पुं० [अ०] १ गिनती । गणित । लेखा । कोई संख्या, वस्तु परिमाण आदि में कितनी ठहरेगी, इसके निर्णय की प्रक्रिया । जैसे,—(क) अपने रुपए का हिसाब करो कितना होगा । (ख) यह हिसाब लगाओ कि वह चार घंटे में कितनी दूर जायगा ।

क्रि० प्र०—करना । —लगाना ।

यौ०—हिसाब किताब । हिसाब बही । हिसाब चोर ।

२ लेन देन या आमदनी, खर्च आदि का लिखा हुआ ब्योरा । लेखा । उचापत ।

मुहा०—हिसाब चलना = (१) लेन देन का लेखा रहना । (२) उधार लिया जाना । हिसाब चुकाना या चुकता करना = जो कुछ जिम्मे निकलता हो उसे दे देना । देना साफ करना । हिसाब जाँचना = लेखा देखना कि ठीक है या नहीं । हिसाब जोडना = अलग अलग कई रकमों की मीजान लगाना । कई अलग अलग अंकों का योगफल निकालना । हिसाब करना = जो जिम्मे आता हो उसे दे देना । तनखाह, दाम या मजदूरी के मद्दे जो कुछ रुपया निकलता हो उसे चुकाना । जैसे,—हमारा हिसाब कर दीजिए, अब हम नौकरी न करेंगे । हिसाब जौ जौ और बकसीस सौ सौ = देन लेन या क्रय विक्रय का हिसाब किताब निस्संकोच होकर पाई पाई का करे और इनाम बखशीश खुले दिल से दे । हिसाब किताब में जो भर भी फरक नहीं पड़ना चाहिए, वहाँ पैसे पैसे का हिसाब दुरुस्त होना चाहिए और किसी को बखशीश में सौ सौ रुपए दिए जा सकते हैं, उसमें हिचक नहीं करनी चाहिए । उ०—सुनौ भाई, हिसाब जौ जौ और बकसीस सौ, सौ ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ८० । हिसाब देना = लेखा समझाना । जमा खर्च का ब्योरा बताना । हिसाब पर चढ़ना = बही में लिखा जाना । लेखे में टँकना । हिसाब बराबर करना = (१) कुछ दे या लेकर लेना और देना बराबर करना । लेनदेन का हिसाब साफ करना । (२) अपना काम पूरा करना । हिसाब बेबाक करना = दे० 'हिसाब चुकाना' । हिसाब बंद करना = लेखा आगे न चलाना । लेनदेन बंद करना । हिसाब में जमा होना = (१) किसी से पाई हुई रकम का लिखा जाना । (२) लेनदेन के लेखे में पावने से ऊपर आई हुई रकम का अलग लिखा जाना । हिसाब में लगाना = उधार या लेनदेन में शामिल करना । हिसाब लेना = यह पूछना कि कितनी रकम कहाँ खर्च हुई । (किसी से) हिसाब समझना = (किसी से) आमदनी और खर्च का ब्योरा पूछना । हिसाब समझाना = आमदनी खर्च आदि का ब्योरा बताना । बेहिसाब = (१) बहुत अधिक । अत्यंत । इतना कि गिनती या नाप आदि न हो सके । हिसाब रखना = आमदनी, खर्च आदि का ब्योरा लिखकर रखना । आय व्यय आदि का लेखबद्ध विवरण रखना । हिसाब लड़ना या लगना = मेल मिलना ।

तवीयत मिलना। हिसाव वैठना=(१) ठीक ठीक जैसा जैसा चाहिए वैसा प्रवध हो जाना। इच्छानुसार सब वातो की व्यवस्था होना। (२) सुवीता होना। सुपास होना। आवश्यकता पूर्ण होना। जैसे,—इतने से हमारा हिसाव नही वैठेगा। हिसाव से=(१) अदाज से। सयम से। परिमित। जैसे,—हिसाव से खर्च किया करो। (२) लेखे के अनुसार। लिखे हुए व्यौरे के मुताविक। जैसे—हिसाव से तुम्हारा जितना निकले उतना लो। वेँडा या टेढा हिसाव=(१) कठिन कार्य। मुश्किल काम। (२) अव्यवस्था। गडवड व्यवहार या रीति। पक्का हिसाव=ठीक ठीक हिसाव। पूरा हिसाव। सूक्ष्म विवरण। कच्चा हिसाव=स्थूल विवरण। मोटा व्यौरा। ऐसा व्यौरा जो अधूरा हो। चलता हिसाव=लेनदेन का लेखा जो जारी हो। लेनदेन या उधार विक्री का जारी सिलसिला।

२ गणित विद्या। वह विद्या जिसके द्वारा सख्या, मान आदि निर्धारित हो। जैसे,—यह लडका हिसाव मे कमजोर है।

यौ०—हिसावदाँ।

३ गणित विद्या का प्रश्न। गणित की समस्या। जैसे,—चार मे से मैंने दो हिसाव किए हैं।

कि० प्र०—करना।—लगाना।

४ प्रत्येक वस्तु या निर्दिष्ट सख्या या परिमाण का मूल्य जिसके अनुसार कोई वस्तु वेची जाय। भाव। दर। रेट। जैसे,—नारगियाँ किस हिसाव से लाए हो।

मुहा०—हिसाव से=(१) परिमाण, क्रम या गति के अनुसार। अनुसार। मुताविक। जैसे,—जिस हिसाव से दर्द वढेगा उसी हिसाव से वुखार भी। (२) विचार से। ध्यान से। अपेक्षा से। जैसे,—कद के हिसाव से हाथी की आँखे छोटी होती है।

५ नियम। कायदा। व्यवस्था। वँधी हुई रीति या ढग। जैसे,—तुम्हारे जाने आने का कोई हिसाव भी है या यो ही जव चाहते हो चल देते हो। ६ निर्णय। निश्चय। धारणा। समझ। मत। विचार। राय। जैसे,—(क) हमारे हिसाव से तो दोनो वरावर हैं।

मुहा०—अपने हिसाव या अपने हिसाव से =अपनी समझ के अनुसार। अपनी जान मे। अपने विचार मे। लेखे मे। जैसे,—अपने हिसाव तो हम अच्छा ही करते है, तुम जैसा समझो।

७. हाल। दशा। अवस्था। स्थिति। जैसे,—उनका हिसाव न पूछो, खूव मनमानी कर रहे हैं। ८ चाल। व्यवहार। रहन। जैसे,—उनका वही हिसाव है, कुछ सुधर नही रहे हैं। ९ ढग। रीति। तरीका। जैसे,—(क) तुम्हें ऐसे हिसाव से चलना चाहिए कि कोई वुरा न कह सके। (ख) उनका हिसाव ही कुछ और है। १० किफायत। मितव्यय। जैसे,—वह वडे हिसाव से रहता है, तव रुपया वचाता है। ११ हृदय या प्रकृति की परस्पर अनुकूलता। मेल।

मुहा०—हिसाव वैठना=पटरी वैठना। मेल मिलना। प्रकृति की समानता होना।

हिसाव किताव—सज्ञा पुं० [अ०] आमदनी, खर्च आदि का व्यौरा जो लिखा हो। वस्तु या धन की सख्या, आय, व्यय, आदि का लेखवद्ध विवरण। लेखा। जैसे,—कही कुछ हिसाव भी रखते हो कि यो ही मनमाना खर्च करते हो। उ०—इसी कारण मनुष्य के देह ही से इसके कर्मों का भली प्रकार हिसाव किताव होता है। —कवीर सा०, पृ० ९८१।

मुहा०—हिसाव किताव देखना या जाँचना=लेखा जाँचना।

२. ढग। चाल। रीति। कायदा। जैसे,—उनका हिसाव किताव ही कुछ और है।

हिसावचोर—सज्ञा पुं० [अ० हिसाव + हिं० चोर] वह जो व्यवहार या लेखे मे कुछ रकम दवा लेता हो।

हिसावदाँ—वि० [फा०] जो गणित विद्या का जानकार हो [को०]।

हिसावदानी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ गणित विद्या का ज्ञाता होना। २ गणित करने की क्रिया या भाव। गणितज्ञता [को०]।

हिसाबदार—वि० [फा०] हिसाव किताव करने और उसे रखनेवाला व्यक्ति।

हिसाव वही—सज्ञा स्त्री० [अ० हिसाव + हिं० वही] वह पुस्तक जिसमे आय व्यय या लेन देन आदि का व्यौरा लिखा जाता हो।

हिसावी—वि० [अ० हिसाव + हिं० ई (प्रत्य०) १ हिसाव या गणित विद्या सवधी। २ हिसाव का ज्ञाता। गणितज्ञ [को०]।

हिसार[१]—संज्ञा पु० [फा०] फारसी सगीत की २४ शोभाओ मे से एक।

हिसार[२]—संज्ञा पुं० [अ०] १ घेरा। अहाता। २ चहारदीवारी।

क्रि० प्र०—करना।—वाँधना=घेरा वाँधना या डालना। ३ किला। उ०—खोलकर वदे कवा का मुल्के दिल गारत किया। क्या हिसारे कल्व ेदिलवर ने खुले वदो लिया। —कविता को०, भा० ४, पृ० ४७। ४ हरयाणा राज्य का एक जिला।

हिसिखा, हिसिषा(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० ईर्ष्या] १ दूसरे की देखादेखी कुछ करने की प्रवल इच्छा। स्पर्धा। वरावरी करने का भाव। होड। २ समता। तुल्यभावना। पटतर। उ०—जौं अस हिसिषा करहिं नर जड विवेक अभिमान। परहिं कलपु भरि नरक महुँ, जीव की ईस समान।—तुलसी (शब्द०)।

हिस्टरी—सज्ञा स्त्री० [अ०] इतिवृत्त। पुरावृत्त। इतिहास।

हिस्टीरिया—सज्ञा पुं० [अ०] आक्षेप या मूर्छा रोग।

विशेष—यह रोग प्रधानत स्त्रियो को होता है। इस रोग के प्रधान लक्षण ये हैं,—आक्षेप या मूर्छा के पहले ऐसा मालूम होना मानो पेट मे कोई गोला ऊपर को जा रहा है, रोना, चिल्लाना, वकना, हाथ पैर ठढे होना, वार वार प्यास लगना आदि।

हिस्ट्री—सज्ञा स्त्री० [अ०] इतिहास। दे० 'हिस्टरी'।

हिस्सा—सज्ञा पुं० [अ० हिस्सह] १ उतनी वस्तु जितनी कुछ अधिक वस्तु मे से अलग की जाय। भाग। अश। जैसे,—१००)

जैसे,—इसके चार हिस्से करो। (ख) जमीन चार हिस्सों में बँट गई।

क्रि० प्र०—करना।—होना।—लगाना।

२ टुकड़ा। खंड। जैसे,—इस गन्ने के चार हिस्से करो। ३ उतना अंश जितना प्रत्येक को विभाग करने पर मिले। अधिक में से उतनी वस्तु जितनी बँटे जाने पर किसी को प्राप्त हो। बखरा। जैसे,—तुम अपने हिस्से में से कुछ जमीन इसको दे दो।

यौ०—हिस्सा बखरा।

४ बाँटने की क्रिया या भाव। विभाग। तकसीम।

क्रि० प्र०—करना।—होना। लगाना।

५ किसी विस्तृत वस्तु (जैसे,—खेत, घर आदि) का विशेष अंश जो और अंशों से किसी प्रकार की सीमा द्वारा अलग हो। विभाग। खंड। जैसे,—(क) इस मकान के पिछले हिस्से में किराएदार हैं। (ख) कोठी का अच्छा हिस्सा उनके अधिकार में है।

६ किसी बड़ी या विस्तृत वस्तु के अंतर्गत कुछ वस्तु या अंश। अधिकार के भीतर का कोई खंड या टुकड़ा। जैसे,—यह पेड़ दुनिया के हर हिस्से में पाया जाता है। ७ अंग। अवयव। अंतर्भुक्त वस्तु। जैसे,—बदन के किस हिस्से में दर्द है? ८ किसी वस्तु के कुछ अंश के भोग का अधिकार। किसी व्यवसाय के हानि लाभ में योग। साझा। शिरकत। जैसे,—कंपनी में हिस्सा, दुकान में हिस्सा, मकान में हिस्सा।

हिस्सा बखरा—संज्ञा पुं० [अ० हिस्सह + फा० बख्रह् या बखरह्] बाँटे जाने पर प्राप्त या प्राप्य अंश। भाग [को०]।

हिस्साबाँट—संज्ञा पुं० [अ० हिस्सह् + हिं० बाँटना] भाग का विभाजन। हिस्से का बँटवारा। उ०—कोई कोइ ऋषि जायदात के हिस्साबाँट पर गृहस्थों की तरह झगड़े करते थे।—हिंदु० सभ्यता, पृ० १६२।

हिस्सेदार—संज्ञा पुं० [अ० हिस्सह् + फा० दार (प्रत्य०)] १ किसी वस्तु के किसी भाग पर अधिकार रखनेवाला। वह जिसे किसी वस्तु के कुछ अंश के भोग का अधिकार हो। वह जिसे कुछ हिस्सा मिला हो। जैसे,—इस मकान के चार हिस्सेदार हैं। २ किसी व्यवसाय के हानि लाभ में औरों के साथ सम्मिलित रहनेवाला। रोजगार में शरीक। साझेदार। जैसे,—कंपनी के हिस्सेदार, बैंक के हिस्सेदार। ३ भागी। शरीक।

हिस्सेदारी—संज्ञा स्त्री० [अ० हिस्सह + फा० दारी] भागीदार होना। भागीदारी। साझा।

हिहिनाना—क्रि० अ० [अनु० हिं हिं] घोड़ों का बोलना। हिनहिनाना। हीसना। उ०—देखि दखिन दिसि हय हिहिनाहीं। जनु बिनु पंख बिहग अकुलाहीं।—तुलसी (शब्द०)।

हींताल—संज्ञा पुं० [सं० हिन्ताल] दे० 'हिताल' [को०]।

हींदू—संज्ञा पुं० [सं० हिन्दु] दे० 'हिंदू'। उ०—हींदू तुरके मिलल बास।—कीर्ति०, पृ० ४८।

हीँग—संज्ञा स्त्री० [सं० हिङ्गु] १ एक छोटा पौधा जो अफगानिस्तान और फारस में आपसे आप और बहुत होता है। २ इस पौधे का जमाया हुआ दूध या गोंद जिसमें बड़ी तीक्ष्ण गंध होती है और जिसका व्यवहार दवा और नित्य के मसाले में बघार के लिये होता है।

विशेष—हीँग का पौधा दो ढाई हाथ ऊँचा होता है और इसकी पत्तियों का समूह एक गोल राशि के रूप में होता है। इसकी कई जातियाँ होती हैं। कुछ के पौधे तो साल ही दो साल रहते हैं और कुछ की पेड़ी बहुत दिनों तक रहती है, जिसमें समय समय पर नई नई टहनियाँ और पत्तियाँ निकला करती हैं। पिछले प्रकार के पौधों की हीँग घटिया होती है और 'हीँगड़ा' कहलाती है। हींग के पौधे अफगानिस्तान, फारस के पूर्वी हिस्से (खुरासान, यज्द) तथा तुर्किस्तान के दक्षिणी भाग में बहुतायत से होते हैं। पर भारत में जो हीँग आती है, वह कंधारी हीँग (अफगानिस्तान की) है। हीँग का व्यवहार बघार के अतिरिक्त औषध में भी होता है। यह शूलनाशक, वायुनाशक, कफ निकालनेवाली, कुछ रेचक और उत्तेजक होती है। पेट के दर्द, वायगोला और हिस्टीरिया (मूर्छा रोग) में यह बहुत उपकारी होती है। आयुर्वेद में इसके योग से कई पाचक चूर्ण और गोलियाँ बनती हैं। हीँग में व्यापारी अनेक प्रकार की मिलावट करते हैं। शुद्ध खालिस हीँग 'तलाव हीँग' कहलाती है।

हीँगड़†—संज्ञा पुं० [हिं० हींग] बनियों का एक गोत्र। उ०—व्है हेको जिए धींगड़े, हीँगड़ धींगड़ मल्ल।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० ७३।

हीँगड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० हीँग + ड़ा (प्रत्य०)] एक प्रकार की घटिया हीँग।

हीँछना(पु)—क्रि० स० [सं० इच्छा] किसी की कामना करना। चाहना। इच्छा करना।

हीँछा‡—संज्ञा स्त्री० [सं० इच्छा] दे० 'इच्छा'।

हीँठी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की जोंक।

हीँडना†—क्रि० स० [सं० या प्रा० हिडन] १ अस्त व्यस्त करना। तरल वस्तु को हिलाकर गंदा कर देना। घँघोलना। २ दे० 'ढूँढ़ना'।

हीँण †—संज्ञा पुं० [सं० हीन, प्रा० हीण] एक प्रकार का काव्यदोष। उ०—हीँण दोष सो हुवै, जात पित मुदो न जाहर।—रघु० रू०, पृ० १४।

हीँस—संज्ञा स्त्री० [सं० ह्रेष] घोड़े या गधे के बोलने का शब्द। रेंक या हिनहिनाहट।

हीँसना—क्रि० अ० [हिं० हीँस + ना (प्रत्य०)] १ घोड़े का बोलना। हिनहिनाना। उ०—(क) हींसत हय, बहु बारन गाजैं। जहँ तहँ दीरघ दुंदुभि बाजैं।—केशव (शब्द०)। (ख) हींस रहे थे उधर अश्व उद्ग्रीव हो, मानो उनका उड़ा जा रहा जीव हो।—साकेत, पृ० १२७। २ गदहे का बोलना। रेंकना।

हीँसा†—संज्ञा पुं० [अ० हिस्सह्] दे० 'हिस्सा'।

हीँहीँ—संज्ञा स्त्री० [अनु०] हँसने का शब्द ।

ही¹—अव्य० [सं० हि (निश्चयार्थक)] एक अव्यय जिसका व्यवहार जोर देने के लिये या निश्चय, अनन्यता, अल्पता, परिमिति तथा स्वीकृति आदि सूचित करने के लिये होता है । जैसे,—(क) आज हम रुपया ले ही लेंगे। (ख) वह गोपाल ही का काम है। (ग) मेरे पास दस ही रुपए हैं। (घ) अभी यह प्रयाग ही तक पहुँचा होगा। (च) अच्छा भाई हम न जायँगे, गोपाल ही जायँ। इसके अतिरिक्त और प्रकार के भी प्रयोग इस शब्द के प्राप्त होते है। कभी इस शब्द से यह ध्वनि निकलती है कि, 'औरों की बात जाने दीजिए'। जैसे,—तुम्ही बताओ इससे हमारा क्या दोष ?।

ही²—संज्ञा पुं० [सं० हृत्, प्रा०, अप० हिअ>ही] दे० 'हिय', 'हृदय'। उ०—(क) मन पछितैहै अवसर बीते। दुर्लभ देह पाइ हरिपद भजु करम वचन अरु ही ते।—तुलसी ग्रं०, पृ० ५५७। (ख) उघरहिं विमल बिलोचन ही के। मिटहिं दोष दुख भव रजनी के।—मानस १।१।

यौ०—हीतल।

ही(पु)³—क्रि० अ० [सं०√भू, प्रा० भव, हव, ह्विव, हो] व्रजभाषा के 'होनो' (=होना) क्रिया के भूतकाल 'हो' (=था) का स्त्रीलिंग गत रूप। थी। उ०—एक दिवस मेरे गृह आए, मैं ही मथति दही।—सूर (शब्द०)।

हीअ—संज्ञा पुं० [सं० हृदय, प्रा० हिअ] दे० 'हिअ'।

हीअर(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० हृदय] हिआव। साहस। हृदय। उ०—कहिसि कि धनि जननी धनि पीता। धनि हीअर जेहि यह रन जीता।—चित्रा०, पृ० १५१।

हीक—संज्ञा स्त्री० [सं० हिक्का] १ हिचकी।

क्रि० प्र०—आना।

२ हलकी अरुचिकर गंध। जैसे,—बकरी के दूध मे से एक प्रकार की हीक आती है।

क्रि० प्र०—आना।

मुहा०—हीक मारना=बसाना। रह रहकर दुर्गंध करना।

हीचना(पु)†—क्रि० अ० [अनु० हिच्] हिचकना। आगा पीछा करना। जल्दी प्रवृत्त न होना। उ०—कहत सारदहु कै मति हीचे। सागर सीप कि जाहि उलीचे।—तुलसी (शब्द०)।

हीछना†—क्रि० अ० [हिं० हीँछ+ना (प्रत्य०)] इच्छा करना। कामना करना। चाहना।

हीछा†—संज्ञा स्त्री० [सं० इच्छा] दे० 'इच्छा'।

हीज¹—वि० [फा० हीज] १ नपुंसक। पुंस्त्वविहीन। २ कायर। उ०—जन रज्जब गुरु बयण सुणि विलै होत वप वीज। यथा हाक हनुमत की सुनत होत नर हीज।—रज्जब०, पृ० ६।

हीज²—वि० [देश०] आलसी। मट्ठर। काहिल।

हीठना—क्रि० अ० [सं० उप० अधि+√स्था, अधिष्ठा, प्रा० अहिट्ठा] १ पास जाना। समीप होना। फटकना। जैसे—उसे अपने यहाँ हीठने न देना। उ०—(क) झा झा अरुझि अरुझि कित जाना। हीठत ढूँढत जाइ पराना।—कबीर (शब्द०)। (ख) बहुत दिवस मे हीठिया शून्य समाधि लगाय। करहा परिगा गाँड मे दूरि परे पछिताय।—कबीर (शब्द०)। २ जाना। पहुँचना। उ०—(क) जेहि वन सिंह न सचरे, पछी नहीं उड़ाय। सो वन कबिरा हीठिया, शून्य समाधि लगाय।—कबीर (शब्द०)। (ख) मन तो कहै कब जाइए, चित्त कहै कब जाउँ। छै मासे के हीठते आध कोस पर गाउँ।—कबीर (शब्द०)।

हीठा¹—क्रि० वि० [प्रा० हेट्ठ] पास। नीचे। उ०—नौ सौ करी ताहि के हीठा। गुरु प्रसाद सबै हम दीठा।—कबीर सा०, पृ० ५।

हीठा²—संज्ञा पुं० [सं० अधिष्ठा] वह स्थान जहाँ कोई बहुधा बैठता हो। अड्डा।

हीणमान(पु)—वि० [सं० ह्रीमान या हीनमान] हतवीर्य। बेइज्जत। लज्जायुक्त। शर्मिदा। उ०—राज राव अनै राण पिनाक पै धरे पाण। हिले होय हीणमान दई वाण दई वाण।—रघु० रू०, पृ० ७६।

हीत(पु)—वि० [सं० हित] हित करनेवाला। हितू। दे० 'हित' उ०—ऐसी विपति भई मोहि ऊपर कोई ना हीत हमारो।—धरम० श०, पृ० २१।

हीतल(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हृत्तल] हृदयस्थल। हृदय। उ०—दरस परस मे सुरूपवान सीतल है, हीतल मे जाइ—अनुभावी कहे होत तात।—अपनी०, पृ० १०५।

हीता—संज्ञा पुं० [अ० हीतह्] १ अहाता। घेरा। २ सीमा (को०)।

हीताई—संज्ञा स्त्री० [सं० हित+हिं० आई (प्रत्य०)] दे० 'हिताई'। उ०—पलटू पाँव न दीजिए खोटा यह संसार। हीताई करि मिलत है पेट महै तरवार।—पलटू०, पृ० ११२।

हीन¹—वि० [सं०] [स्त्री० हीना] १ परित्यक्त। छोड़ा हुआ। २. रहित। जिसमे न हो। शून्य। वंचित। खाली। विना। वगैर। जैसे,—शक्तिहीन, गुणहीन, धनहीन, बलहीन, श्रीहीन। २ निम्न कोटि का। नीचे दर्जे का। निकृष्ट। घटिया। जैसे—हीन जाति। ३ ओछा। नीच। बुरा। असत्। खराब। कुत्सित। जैसे,—हीन कर्म। उ०—चंपक कुसुम कहा सरि पावै। बरनी हीन वास वुरि आवै।—नंद० ग्रं०, पृ० १२२। ४ अनुपयुक्त। तुच्छ। नाचीज। जिसमे कुछ भी महत्व न हो। ५ सुख समृद्धि रहित। दीन। जैसे,—हीन दशा। ३ पथभ्रष्ट। भटका हुआ। साथ या रास्ते से अलग जा पड़ा हुआ। जैसे—पथहीन। ७ अल्प। कम। थोड़ा। ८ दीन। नम्र। उ०—रहै जो पिय कै आयसु औ बरतै होइ हीन। सोई चाँद अस निरमल जनम न होइ मलीन।—जायसी (शब्द०)। ९ (वाद मे) पराजित या हारा हुआ (को०)। १० दोषयुक्त। सदोष।

हीन²—संज्ञा पुं० १ प्रमाण के अयोग्य साक्षी। बुरा गवाह।

विशेष—स्मृतियों मे पाँच प्रकार के हीन साक्षी कहे गए हैं, अन्यवादी, क्रियाद्वेषी, नोपस्थायी, निरुत्तर और आहूतप्रपलायी। २ न होने की स्थिति। अभाव। कमी (को०)। ३ घटाना। बाकी। व्यवकलन (को०)। ४ अधम नायक। (साहित्य)।

यौ०—हीनकुष्ठ। हीनकोश। हीनक्रतु। हीनज। हीनजाति। हीननायक (नाटक)। हीनसेवा।

हीन[2]—संज्ञा पुं० [अ०] काल। समय।

हीनक—वि० [सं०] रहित। हीन [को०]।

हीनकर्मा—वि० [सं० हीनकर्मन्] १ यज्ञादि विधेय कर्म से रहित। अपना निर्दिष्ट कर्म या आचार न करनेवाला। जैसे,—हीनकर्मा ब्राह्मण। २ निकृष्ट कर्म करनेवाला। बुरा काम करनेवाला।

हीनकुल—वि० [सं०] बुरे या नीच कुल का। बुरे खानदान का।

हीनकुष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का कुष्ठ रोग।

हीनकोश—वि० [सं०] जिसका कोश रिक्त हो। जिसके खजाने मे धन संपत्ति न हो।

हीनक्रतु—संज्ञा पुं० यज्ञविरहित। यागादि से रहित।

हीनक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] काव्य मे एक दोष जो क्रमभंग होने पर माना जाता है।

विशेष—काव्य मे हीनक्रम दोष उस स्थान पर माना जाता है जहाँ जिस क्रम से गुण गिनाए गए हो, उसी क्रम से गुणी न गिनाए जायँ। जैसे,—जग की रचना कहि कौन करी। केइ राखन कीजिय पैजधरी। अति कोपि कै कौन सँहार करै। हरिजू, हर जू, विधि वुद्धि ररै। यहाँ प्रश्नो के क्रम से उत्तर इस प्रकार होना चाहिए था—विधि जू, हरि जू, हर वुद्धि ररै। पर वैसा न होकर क्रम का भंग कर दिया गया है।

हीनक्रिय—वि० [सं०] दे० 'हीनकर्मा'।

हीनचरित—वि० [सं०] जिसका आचरण बुरा हो।

हीनच्छिदिक—संज्ञा पुं० [सं० हीनच्छिन्दिक] कौटिल्य द्वारा वर्णित वह संघ या श्रेणी जो कुल, मान मर्यादा, शक्ति आदि मे वहुत घटकर हो।

हीनज—वि० [सं०] जो निम्न कुल मे उत्पन्न हो [को०]।

हीनजाति—वि० [सं०] १ जो जातिच्युत हो। २ जो निम्न जाति या वर्ण का हो [को०]।

हीनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अभाव। राहित्य। कमी। २ दोष या त्रुटियुक्त होना। सदोषता। उ०—गीध सिला सवरी की सुधि सब दिन किए होइगी न साई सो सनेह हित हीनता।—तुलसी ग्र०, पृ० ५८६। ३ क्षुद्रता। तुच्छता। ४ आछापन। ५ बुराई। निकृष्टता।

हीनत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हीनता'।

हीननायक—वि० [सं०] जिस काव्य या नाटक का नायक निकृष्ट या अधम हो [को०]।

हीनपक्ष[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ गिरा हुआ पक्ष। तर्क मे किसी की ऐसी बात जो प्रमाण द्वारा सिद्ध न हो सके। ऐसी बात जो दलीलो से साबित न हो सके। २ कमजोर मुकदमा।

हीनपक्ष[2]—वि० अरक्षित। पक्ष या सहायहीन [को०]।

हीनप्रतिज्ञ—वि० [सं०] जो अपनी प्रतिज्ञा से हीन हो। वचन का पालन न करनेवाला [को०]।

हीनबल—वि० [सं०] बलरहित या जिसका बल घट गया हो। शक्तिरहित। कमजोर।

हीनबाहु—संज्ञा पुं० [सं०] शिव के एक गण का नाम।

हीनबुद्धि—वि० [सं०] बुद्धिशून्य। दुर्बुद्धि। जड। मूर्ख।

हीनमति—वि० [सं०] बुद्धिशून्य। जट। मूर्ख। उ०—इक हौं दीन मलीन हीनमति विपति जाल अति घेरो। तापर सहि न जात करुनानिधि मन को दुसह दरेरो।—तुलसी ग्र०, पृ० ५३१।

हीनमूल्य[1]—संज्ञा पुं० [सं०] याज्ञवल्क्य स्मृति के अनुसार कम दाम। किसी वस्तु का कम मूल्य।

हीनमूल्य[2]—वि० जिसका दाम या मूल्य कम हो। कम दाम का।

हीनयान—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध सिद्धांत की आदि और प्राचीन शाखा जिसके ग्रंथ पाली भाषा मे हैं।

विशेष—इस शाखा का प्रचार एशिया के दक्षिण भागो मे, सिंहल, बरमा, और स्याम आदि देशो मे है, इसी से यह 'दक्षिण शाखा' के नाम से भी प्रसिद्ध है। 'यान' का अर्थ है निर्वाण या मोक्ष की ओर ले जानेवाला रथ। हीनयान के सिद्धांत सीधे सादे रूप मे अर्थात् उसी रूप मे हैं जिस रूप मे गौतम बुद्ध ने उनका उपदेश किया था। पीछे 'महायान' शाखा मे न्याय, योग, तंत्र आदि बहुत से विषयो के संमिलित होने से जटिलता आ गई। वैदिक धर्मानुयायी नैयायिको के साथ खंडन मंडन मे प्रवृत्त होनेवाले बौद्ध महायान शाखा के थे, जो क्षणिकवाद आदि सिद्धांतो पर बहुत जोर देते थे। हीनयान आराधना और उपासना का तत्व न रहने से जनसाधारण के लिये रूखा था क्योकि इस शाखा के अनुयायी बुद्धवचन को प्रमाण मानते हैं। इससे 'महायान शाखा' के बहुत अनुयायी हुए जो बुद्ध, बोधिसत्वो, बुद्ध की शक्तियो (जो तांत्रिको की महाविद्याएँ हैं) आदि के अनुग्रह के लिये पूजा और उपासना मे प्रवृत्त रहने लगे। इससे 'हीनयान' का यह अर्थ लिया गया कि उसमे बहुत कम लोगो के लिये जगह है।

हीनयोग[1]—वि० [सं०] योगभ्रष्ट।

हीनयोग[2]—संज्ञा पुं० आयुर्वेद के अनुसार उचित परिमाण से कम ओषधि मिलाना।

हीनयोनि—वि० [सं०] निम्न जाति का। जिसकी उत्पत्ति अच्छे कुल मे न हो।

हीनरस—संज्ञा पुं० [सं०] काव्य मे एक दोष जो किसी रस का वर्णन करते समय उस रस के विरुद्ध प्रसंग लाने से होता है।

विशेष—यह वास्तव मे रसविरोध ही है, जैसा केशव के इस उदाहरण से प्रकट होता है—'दै दधि, 'दीनो उधार हो केशव,' 'दान कहा जब मोल लै खैहैं' । 'दीने बिना तो गईहैं' जुगई' 'न गई, न गई घर ही फिरि जैहै' । 'गो हितु वैर कियो' 'कब हो हितु वैरु किए वरु नीकी ह्वै रैहैं' । 'वैरु के गोरस बेचहुगी' 'अहो वेच्यो न वेच्यो तौ ढारि न दैहैं' । इस प्रश्नोत्तर मे जो रोषभरी कहा-सुनी है, वह शृगार रस की पोषक नही हे ।

हीनरोमा—वि० [स० हीनरोमन्] केशहीन । खल्वाट । गजा [को०] ।

हीनलोमा—वि० [सं० हीनलोमन्] केशहीन । खल्वाट ।

हीनवर्ग—वि०, सज्ञा पु० [स०] दे० 'हीनवर्ण' ।

हीनवर्ण[1]—सज्ञा पुं० [स०] नीच जाति का वर्ण । शूद्र वर्ण ।

हीनवर्ण[2]—वि० १ हीन वर्ण या जाति का । २ निम्न श्रेणी का । निम्न वर्ग का ।

हीनवाद—सज्ञा पुं० [स०] १ मिथ्या तर्क । फजूल की वहस । २ कमजोर दलील । ३ मिथ्या साक्ष्य । झूठी गवाही जिसमे पूर्वापर विरोध हो ।

हीनवादी[1]—सज्ञा पुं० [स० हीनवादिन्] [स्त्री० हीनवादिनी] १ वह जिसका लाया हुआ अभियोग गिर गया हो । वह जिसका दावा खारिज हो गया हो । वह जो मुकदमा हार जाय । २ परस्पर विरोधी कथन करनेवाला साक्षी । खिलाफ वयान करनेवाला गवाह ।

हीनवादी[2]—वि० १. परस्पर विरोधी या असगत बातें कहनेवाला । २ दोषपूर्ण या असगत गवाही देनेवाला । ३ जो बोल न पाता हो । मूक । गूंगा । ४ जो वाद मे पराजित हो । वाद मे हारा हुआ [को०] ।

हीनवीर्य—सज्ञा पुं० [स०] हीनवल । कमजोर ।

हीनसख्य—वि० [स०] असामाजिक तत्वो या क्षुद्र लोगो से दोस्ती करनेवाला । जिसके मित्र निम्न कोटि के हो [को०] ।

हीनसधि—सज्ञा स्त्री० [स० हीनसन्धि] अपने से निम्न श्रेणी के या दुष्ट राजा के साथ किया गया समझौता [को०] ।

हीनसामत—सज्ञा पु० [सं० हीनसामन्त] सामतो से रहित अथवा अधिकारच्युत नरेश । वह राजा जो राज्याधिकार से च्युत कर दिया गया हो [को०] ।

हीनसेवा—सज्ञा स्त्री० [स०] अपने से निम्न कोटि के लोगो की चाकरी । नीचो की सेवा । टहल [को०] ।

हीनहयात[1]—सज्ञा पुं० [अ०] जीवनकाल । वह समय जिसमे कोई जीता रहा हो ।

मुहा०—हीनहयात मे = जीवनकाल मे । जिंदगी मे । जीते जी ।

हीनहयात[2]—अव्य० १ जब तक जीवन रहे तब तक । जब तक कोई जीता रहे तब तक । जिंदगी भर । जिंदगी भर तक के लिये । जैसे,—हीनहयात मुआफी ।

हीनहयाती—वि० [अ०] जीवन भर के लिये प्राप्त ।

यौ०—हीनहयाती काश्त = वह जमीन जिसपर जीवन भर किसी का अधिकार रहे । हीनहयाती काश्तकार = वह काश्तकार जिसका जीवन भर जमीन पर अधिकार मान्य हो ।

हीनाग—वि० [स० हीनाङ्ग] १ जिसका कोई अग न हो । खडित अगवाला । जैसे,—लूला, लँगडा इत्यादि । २ जो सर्वांगपूर्ण न हो । अधूरा । नामुकम्मल ।

हीनागी[1]—सज्ञा स्त्री० [स० हीनाङ्गी] १ वह स्त्री जिसका कोई अग हीन हो ।

विशेष—हीनागी और अधिकागी कन्या का वरण स्मृतिकारो ने दोषपूर्ण कहा है । इससे पति का विनाश और उसका शीलनाश होता हे ।

२ छोटी पिपीलिका । छोटी च्यूटी [को०] ।

हीनाशु—वि० [सं०] जो किरणो से रहित या हीन हो [को०] ।

हीना—सज्ञा स्त्री० [अ० हिना] मेहदी । दे० 'हिना' । उ०—लोनिये का लोन गिरा दूना हुआ । तेली का तेल गिरा हीना हुआ ।—दक्खिनी०, पृ० ४६६ ।

हीनापहीन—सज्ञा पु० [स०] जुरमाने के साथ हरजाना । अर्थदड सहित हानि की पूर्ति ।

विशेष—कौटिल्य के अनुसार ज्ञात होता है कि चद्रगुप्त के समय मे यदि राजकीय कारखाने मे जुलाहे कम सूत या कपडे वनाते थे तो उन्हे 'हीनापहीन' देना पडता था ।

हीनार्थ—वि० [स०] १ जिसका कार्य सिद्ध न हुआ हो । विफल । २ जिसे लाभ न हुआ हो ।

हीनित—वि० [स०] १ रहित । वचित । २ वियुक्त । विच्छिन्न । ३ कम किया हुआ । घटाया हुआ [को०] ।

हीनोपमा—सज्ञा स्त्री० [स०] काव्य मे वह उपमा जिसमे वडे उपमेय के लिये छोटा उपमान लाया जाय । वडे की छोटे से उपमा ।

हीमालइ(पु)†—सज्ञा पुं० [स० हिमालय] दे० 'हिमालय' । उ०—जे नर उलग ईण महूरत जाई । श्रावण का सांसा पडई । जाणि हिमालइ राजा गलीया हो जाई ।—वी० रासो०, पृ० ४८ ।

हीमिया— सज्ञा स्त्री० [अ०] इद्रजाल । माया । जादू [को०] ।

हीय(पु)—सज्ञा पु० [स० हृदय] दे० 'हिय' । उ०— कवि मतिराम ढिग वैठे मानभावनजू दुहून के हीय अरविंद मोद सरसै ।—मति० ग्र०, पृ० २८४ ।

हीयडा, हीयणा†—सज्ञा पुं० [सं० हृदय + अप० डा (प्रत्य०), अप० हिअड] दे० 'हियरा' । उ०—(क) राव कहइ सुणि राजकुमार । दूमनी काई हीयडइ वरनारि ।—वी० रासो, पृ० ३९ । (ख) चीर सभाल्या नुँ पीवइ नीर । जाँणे हीयणइ हरणी । हणी ।—वी० रासो, पृ० ६१ ।

हीयरा(पु)—सज्ञा पुं० [स० हृदय, अप० हिअड] दे० 'हियरा' ।

हीया(पु)—सज्ञा पु० [स० हृदय प्रा० हिअय, हिअ] दे० 'हिया' । उ०—(क) काँई कहैसी सासरइ । गाँव न उतरचो हीया थी एक । —वी० रासो, पृ० २४ । (ख) चुप रही ऊधो सिर काहे लेत तूदो अरे, हीयो दुख रूधो सूधो बूधो तेरे घर को ।— व्रज० ग्र०, पृ० १३१ ।

हीर१—संज्ञा पुं० [सं०] १ हीरा नामक रत्न। २ वज्र। विजली। ३ ३ सर्प। साँप। ४ सिंह। ५ मोती की माला। ६ शिव का नाम। ७ नैषधचरित महाकाव्य के रचयिता श्रीहर्ष के पिता का नाम (को०)। ८ छप्पय के ६२ वें भेद का नाम। ९ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे भगण, सगण, नगण, जगण, नगण और रगण होते ह। १० एक मात्रिक छद जिसमे ६–६ और ११ के विराम से २३ मात्राएँ होती है।

हीर२—संज्ञा पुं० [हिं० हीरा] १ किसी वस्तु के भीतर का सार भाग। गूदा या सत। सार। जैसे,—जौ का हीर, गेहूँ का हीर, सौंफ का हीर। २ लकडी के भीतर का सार भाग जो छाल के नीचे होता है। जैसे,—इसके हीर की लकडी मजबूत होती हे। ३ शरीर की सार वस्तु। धातु। वीर्य। जैसे,—उसकी देह का हीर तो निकल गया। ४ शक्ति। वल।

हीर३—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की लता।

विशेष—यह लता प्राय सारे भारत मे पाई जाती है और इसकी टहनियो और पत्तियो पर भूरे रग के रोएँ होते है। यह चैत वैशाख मे फूलती है। इसकी जड और पत्तियो का व्यवहार ओषधि रूप मे होता हे। इसके पके फलो के रस से वैगनी रग की स्याही वनती है जो वहुत टिकाऊ होती हे।

हीरक—संज्ञा पुं० [सं०] १ हीरा नामक रत्न। उ०—नव उज्ज्वल जलधार, हार हीरक सी सोहति।—भारतेंदु ग्र०, भा०१, पृ० २८२। २ हीर नामक एक छद। दे० 'हीर'।

हीरकजयंती—संज्ञा स्त्री० [सं० हीरक + जयन्ती] १ किसी शासन या किसी व्यक्ति के जीवन के साठवे वर्ष का उत्सव या समारोह। षष्ठिपूर्ति उत्सव। २ किसी सस्था, समाज या सभा की स्थापना के साठ वर्ष पर होनेवाला समारोह। डायमड जुविली।

हीरकहार—संज्ञा पुं० [सं०] हीरे की माला। हीरे का हार।

हीरद—संज्ञा पुं० [सं० हृदय, प्रा० हिअय, अप० हिअड] दे० 'हृदय'। उ०—हीरद कमल माँही तेरो ध्यान करती हूँ।—दक्खिनी०, पृ० १२६।

हीराग—संज्ञा स्त्री० [सं० हीराङ्ग] इद्र का वज्र (को०)।

हीरा१—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लक्ष्मी का एक नाम। २ तैलावुका। तिलचट्टा। ३ काश्मरी। गभारी। ४ पिपीलिका (को०)।

हीरा२—संज्ञा पुं० [सं० हीरक] १ एक रत्न या वहुमूल्य पत्थर जो अपनी चमक और कडाई के लिये प्रसिद्ध है। वज्रमणि। हीरक। हीर।

विशेष—आधुनिक रसायन शास्त्र के अनुसार हीरा कारवन या कोयले का ही विशेष रूप है जो प्राकृतिक दशा मे पाया जाता है। यह ससार के सब पदार्थो से कडा होता है, इसी से कवि कठोरता के उदाहरण के लिये इसका नाम लाया करते है जैसा कि तुलसीदास जी ने कहा है—'सिरिस सुमन किमि वेधै हीरा'। यह अधिकतर तो सफेद अर्थात् विना रग का होता है, पर पीले, हरे, नीले और कभी कभी काले हीरे भी मिल जाते है। यह रत्न सवसे वहुमूल्य माना जाता हे और भिन्न भिन्न रगो की आभा या छाया देता है। रत्नपरीक्षा की पुस्तको मे हीरे की पाँच छायाएँ कही गई है—लाल, पीली, काली, हरी और श्वेत। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्ण द्वारा भी इसका भेद किया गया है। श्वेत रग का विप्र, रक्तिम रग का क्षत्रिय, पीतवर्ण का वैश्य और असित अर्थात् नीला, हरा या काले रग का हीरा शूद्र वर्ण का माना गया है। व्यवहार के लिये हीरा कई रूपो मे काटा जाता ह जिससे प्रकाश छोडने के पहलो के वढ जाने से इसकी आभा वढ जाती है। इसके पहल काटने मे भी वडी तारीफ हे। वहुत अच्छे हीरे को 'पहले पानी' का हीरा कहते ह। रत्नपरीक्षा मे हीरे के पाँच गुण कहे गए ह—अठपहल छकोना होना, लघु, उज्वल और नुकीला होना। मुख्य दोष है—मलदोष। यदि वीच मे मल (मैल) दिखाई दे तो वह हीरा वहुत ही अशुभ कहा गया है। आजकल हीरा दक्षिण अफ्रिका मे वहुत पाया जाता है। भारतवर्ष की खानें अव प्राय खाली हो गई है। 'पन्ना' आदि कुछ स्थानो मे अव भी थोडा वहुत हीरा निकलता है। किसी समय दक्षिण भारत हीरे के लिये प्रसिद्ध था। जगत्प्रसिद्ध 'कोहेनूर' नाम का हीरा गोलकुडे की खान का कहा जाता हे।

यौ०—हीरा आदमी या व्यक्ति = स्वभाव, विचार और व्यवहार आदि की दृष्टि से वहुत ही अच्छा व्यक्ति। हीरा कट = (१) हीरे की तरह कटा हुआ। (२) कई पहलो का कटाव। डायमड कट। डवल काट। हीरा कसीस। हीरा दोषी। हीरानखी। हीरामन।

मुहा०—हीरा खाना या हीरे की कनी चाटना = हीरे का चूर खाकर आत्महत्या करना।

२ वहुत ही अच्छा आदमी। नररत्न। (लाक्षणिक)। जैसे—वह हीरा आदमी था। ३ वहुत उत्तम वस्तु। वहुत वढिया या चोखी चीज। (लाक्षणिक)। ४ दुवे भेडे की एक जाति। ५ रुद्राक्ष या इसी प्रकार का और कोई एक अकेला मनका जो प्राय साधु लोग गले मे पहनते हैं।

हीरा कसीस—संज्ञा पुं० [हिं० हीर + सं० कसीस]। लोहे का वह विकार जो गधक और आक्सिजन के रासायनिक योग से होता है और जो देखने मे कुछ हरापन लिए मटमैले रग का होता है।

विशेष—लोहे को गधक के तेजाव मे गलाने से हीरा कसीस निकल सकता है, पर इस क्रिया मे लागत अधिक पडती है। खान के मैले लोहे को हवा और सीड मे छोड देने से भी कसीस निकलता है। हवा और सीड के प्रभाव से इससे एक प्रकार का रस निकलता है जिसमे कसीस और गधक का तेजाव दोनो रहते हैं। इसमे लौहचूर का थोडा योग कर देने से सवका हीरा कसीस हो जाता है। इसका व्यवहार स्याही, रग आदि वनाने मे तथा औषध के लिये भी होता है।

हीरादोषी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हीरा + दोष] विजयसाल का गोद जो दवा के काम मे आता है।

हीरानखी--संज्ञा पुं० [हिं० हीरा + नख] एक प्रकार का बढिया धान जो अगहन मे तैयार होता है और जिसका चावल बहुत महीन तथा सफेद होता है।

हीराना‡--क्रि० स० [हिं० हिलाना (=घुसाना)] खाद के लिये खेत मे गायें, भेंड, बकरी आदि रखना।

हीरामन--संज्ञा पुं० [हिं० हीरा + सं० मणि या हिरण्मय] सूए या तोते की एक कल्पित जाति।

विशेष--इस कल्पित तोते का रग सोने का सा माना जाता है। इस प्रकार के तोते का वर्णन कहानियो मे और पृथ्वीराज रासो, पदमावत, प्रेमाख्यान आदि काव्यग्रथो मे बहुत आता है।

हील¹--संज्ञा पुं० [सं०] वीर्य। शुक्र।

हील²--संज्ञा पुं० [देश०] भारत के पश्चिमी किनारे पर और सिंहल मे पाया जानेवाला एक सदाबहार पेड।

विशेष--इस पेड से एक प्रकार का लसीला गोंद निकलता है। यह गोंद बाहर भेजा जाता है। इस पेड को 'अरदल' और 'गोरक' भी कहते है।

हील†³--संज्ञा स्त्री० [हिं० गीला] पनाले आदि का गदा कीचड़। गलीज।

हील†⁴--संज्ञा पुं० खौफ। भय। डर। उ०--धूत बजारी धरम री हिए न माने हील। मन चलाय खाँपडा महो काढै नफो कुचील।--बाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० ६७।

हील⁵--संज्ञा स्त्री० [फा०] छोटी इलायची। एला [को०]।

हील⁶--संज्ञा पुं० [अं०] १ पैर के पजे का पिछला भाग। ऍडी। पार्ष्णि। २ पशुओ का खुर [को०]।

हीलना¹--संज्ञा स्त्री० [सं०] क्षति। अपकृति। हानि [को०]।

हीलना(पु)²--क्रि० अ० [सं० हल्लन या देश०] दे० 'हिलना'।

हीला¹--संज्ञा पुं० [अ० हीलह्] १ किसी बात के लिये गढा हुआ कारण। बहाना। मिस।

क्रि० प्र०--करना।--ढूँढना।--होना।

यौ०--हीलागर, हीलाबाज, हीलासाज = चालबाज। बहानेबाज। धोखेबाज। हीलागरी, हीलाबाजी, हीलासाजी = चालबाजी। धोखेबाजी।

२ कामधधा। रोजगार। ३ किसी बात की सिद्धि के लिये निकाला हुआ मार्ग। निमित्त। द्वारा। वसीला। व्याज। जैसे,--इसी हीले से उसे चार पैसे मिल जायँगे। उ०--कोई चाहे हीला मिलने कतै। वजुज वास्ता मिलना कुछ खूब नई।--दक्खिनी० पृ० २१३।

मुहा०--हीला निकलना = रास्ता निकलना। ढग निकलना। हीला होना = (१) वसीला होना। जरिया होना। (२) कोई काम धधा मिलना।

हीला†²--संज्ञा पुं० [हिं० गीला] कीचड।

हीलाज--संज्ञा पुं० [अ०] जन्मकुडली। जन्मपत्री [को०]।

हीलुक--संज्ञा पुं० [सं०] इक्षुसार से निर्मित एक प्रकार का आसव [को०]।

हीस¹--संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की कँटीली लता।

विशेष--यह लता प्राय सारे भारत मे बहुत बडे बडे पेडो पर चढी हुई पाई जाती है। यह गरमी मे फूलती और बरसात मे फलती है। इसकी पत्तियाँ और टहनियाँ हाथी बडे चाव से खाते है।

हीस(पु)²--संज्ञा स्त्री० [अ० या सं० ईर्ष्या] १ दे० 'हिर्स'। २ ईर्ष्या। स्पर्धा। डाह। उ०--एक सीस का मानवा, करता बहुतक हीस। लकापति रावन गया, बीस भुजा दस सीस। कबीर सा०, पृ० ११।

हीसका†--संज्ञा स्त्री० [सं० ईर्ष्या] डाह। दे० 'हिसिष'।

ही ही--संज्ञा स्त्री० [अनु०] ही ही शब्द करके हँसने की क्रिया। तुच्छतापूर्वक हँसना।

यौ०--ही ही ठी ठी करना (१) व्यर्थ और तुच्छतापूर्वक हँसना। २ हँसी मजाक करना। उ०--चारो ओर झोंटा फैलाकर डाकना कूदना बद कर और उससे--उससे-समझी ? ही ही ठी ठी रोक।--शराबी, पृ० १२।

हु¹--अव्य० [सं० उप, प्रा० उव] एक अतिरेकबोधक शब्द। अपि। भी। दे० 'हूँ'¹।

हु²-- अव्य० [सं० हुम्] १ एक शब्द जो किसी बात को सुननेवाला यह सूचित करने के लिये बोलता है कि हम सुन रहे है। २ स्वीकृतिसूचक या स्मृतिसूचक शब्द। हाँ। ३ सदेह। शका (को०)। ४ आक्रोश। क्रोध (को०)। ५ विरक्ति। विरति (को०)। ६ भर्त्सना। व्यग्य (को०)। ७ मत्र, तत्र आदि के अत मे प्रयुक्त शब्द। जैसे--ॐ कवचाय हुम् आदि मे भी इस शब्द के प्रयोग मिलते है।

हुकना--क्रि० अ० [सं० हुङ्करण] दे० 'हुकारना'।

हुकरना--क्रि० अ० [सं० हुङ्करण] दे० 'हुकारना'।

हुकार--संज्ञा पुं० [सं० हुङ्कार] १ ललकार। दपट। डाँटने का शब्द। २ घोर शब्द। गर्जन। गरज। ३ चीत्कार। चिग्घाड। चिल्लाहट। ४ धनुष की प्रत्यचा के टकार की ध्वनि (को०)। ५ शूकर के गुर्राने का शब्द (को०)।

हुकारना--क्रि० अ० [सं० हुङ्कार + हिं० ना (प्रत्य०)] १ गर्व मे हु शब्द का उच्चारण करना। ललकारना। दपटना। डाँटना। २ घोर शब्द करना। गर्जन करना। गर्जना। गरजना। ३ चिग्घाडना। चिल्लाना।

हुकारनि(पु)--संज्ञा स्त्री० [सं० हुङ्कार] हुकारने का कार्य। हुङकना। उ०--अति गति पग डारनि हुकारनि। सीचति धरनि दूध की धारनि।--नद० ग्र०, पृ० २६६।

हुकृत--संज्ञा पुं० [सं० हुङ्कृत] १ गाय आदि के रँभाने का शब्द। २ बिजली की गडगडाहट। ३ जगली सूअर की गुर्राहट या गर्जन। ४ ललकार। दपट। हुकार [को०]।

हुकृति--संज्ञा स्त्री० [सं० हुङ्कृति] हुकार का शब्द। उ०--छू मत तू युद्ध गान, हुकृति, वह प्रलय तान। बज न उठें जजीरें, हथकडियाँ छू न प्राण।--हिम० त०, पृ० ६१।

हुंजिका—संज्ञा स्त्री० [सं० हुञ्जिका] संगीत में रागविशेष [को०]।

हुंड—संज्ञा पुं० [सं० हुण्ड] १ मेढा। मेष। २ बाघ। व्याघ्र। ३ सूअर। ग्राम सूकर। ४ जडबुद्धि। मूर्ख। ५ राक्षस। ६ अनाज की बाल। ७ महाभारत के अनुसार एक वर्बर जाति।

हुंडन—संज्ञा पुं० [सं० हुण्डन] १ काशीखंड में वर्णित शिव के एक गण का नाम। २ शून्य या स्तब्ध हो जाना। मारा जाना। (अंग का)।

हुंडनेश—संज्ञा पुं० [सं० हुण्डनेश] शिव का एक नाम [को०]।

हुंडा¹—संज्ञा पुं० [सं० हुण्डा] आग के दहकने का शब्द।

हुंडा†²—संज्ञा पुं० [सं०] कुल्हड। पुरवा। हडिकासुन।

हुंडा³—संज्ञा पुं० [हिं० हुंडी] १ वह रुपया जो किसी किसी जाति में वर पक्ष से कन्या के पिता को व्याह के लिये दिया जाता है। २ वह गल्ला जो खेत के स्वामी को खेती करनेवाला देता है।

हुंडाभाडा—संज्ञा पुं० [हिं० हुंडी + भाडा] महसूल, भाडा आदि सब कुछ देकर कहीं पर माल पहुँचाने का ठेका।

हुंडावन—संज्ञा स्त्री० [हिं० हुंडी] १ वह रकम जो हुंडी लिखने के समय दस्तूर की तरह पर काटी जाती है। २ हुंडी की दर।

हुंडि—संज्ञा स्त्री० [सं० हुण्डि] पके हुए चावल का पुंज। भात की ढेरी या पिंड [को०]।

हुंडिका—संज्ञा स्त्री० [सं० हुण्डिका] प्राचीन काल में सेना के निर्वाहार्थ दिया जानेवाला आज्ञापत्र। २ राजतरंगिणी के अनुसार निधिपत्र या हुंडी [को०]।

हुंडी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह पत्र या कागज जिसपर एक महाजन दूसरे महाजन को जिससे लेन देन का व्यवहार होता है, कुछ रुपया देने के लिये लिखकर किसी को रुपए के बदले में देता है। निधिपत्र। लोटपत्र। चेक।

क्रि० प्र०—बेचना।—लिखना।—लेना।

यौ०—हुंडी पुरजा। हुंडी बही।

मुहा०—(किसी पर) हुंडी करना = किसी के नाम हुंडी लिखना। हुंडी का व्यवहार = हुंडी के द्वारा लेनदेन का व्यवहार। हुंडी खडी रखना = किसी विशेष कारण से हुंडी का तुरत भुगतान न करना। हुंडी पटना = हुंडी के रुपए का चुकता होना। हुंडी भेजना = हुंडी के द्वारा कोई रकम अदा करना। हुंडी का न पटना = हुंडी के रुपए का चुकना न होना। हुंडी सकारना = हुंडी के रुपए का देना स्वीकार करना। हुंडी सिकारना † = दे० 'हुंडी सकारना'। उ०—उसने यह कहकर हुंडी सिकारने से इन्कार किया।—श्रीनिवास ग्रं०, पृ० ३६४। दर्शनी हुंडी = वह हुंडी जिसके रुपए को दिखाते ही चुकता कर देने का नियम हो। मियादी हुंडी = वह हुंडी जिसके रुपए को मिति के बाद देने का नियम हो।

२ उधार रुपया देने की एक रीति जिसके अनुसार लेनेवाले को साल भर में २०) का २५) या १५) का २०) देना पड़ता है।

हुंडी बही—संज्ञा स्त्री० [हिं० हुंडी + बही] १ वह किताब या बही जिसमें सब तरह की हुंडियों की नकल रहती है। २ वह बही जिसमें से हुंडी काटकर दी जाती है।

हुंडी बेंत—संज्ञा पुं० [देश० हुंडी + हिं० बेंत] एक प्रकार का बेंत जिसे मयूरी बेंत भी कहते हैं।

हुंडीवाल वि० [हिं० हुंडी + वाल (= वाला)] १ किसी के नाम हुंडी देनेवाला या उसे सकारनेवाला। २ हुंडी का कारबार करनेवाला। मूल में सूद जोडकर किस्त पर या एक बार निश्चित अवधि पर रुपया लेनेवाला। उ०—हकनाहक पकरे सकल जडिया कोठीवाल। हुंडीवाल सराफनर अरु जौहरी दलाल।—अर्ध०, पृ० ४३।

हुंता㉿—प्रत्य० [प्रा० हिंतो] अपादान विभक्ति या तृतीया विभक्ति। से या द्वारा। उ०—चीतारती चुगतियाँ कुंभी रोवहियाँह। दूरा हुंता तउ पलइ जऊ न मेल्ह हियाँह।—ढोला०, दू० २०३।

हुंती㉿¹—प्रत्य० [प्रा० हिंतो] दे० 'हुंता'। उ०—जउ रूँखाँ मारू हुई छवडउ पडियउ तास। तइ हुंती चदउ कियइ, तइ रचियउ आकास।—ढोला०, दू० ४३७।

हुंती²—वि० [सं० √भू, प्रा० √हु, हुअ, हुव] होनेवाली। जो आगे संभावित हो। उ०—दुरजण केरा बोलडा मत पातरजउ कोय। अणहुंती हुंती कहइ सकली साँच न होय।—ढोला०, दू० ४४६।

हुंवा—संज्ञा पुं० [देश०] समुद्र की चढनी लहर। ज्वार। (लश०)।

हुंभा—संज्ञा स्त्री० [सं० हुम्भा] गाय के रँभाने का शब्द। हंवारव [को०]।

हुंभी—संज्ञा स्त्री० [सं० हुम्भी] दे० 'हुंभा', 'हंवा'।

हुँ㉿¹—अव्य० [सं० उप, प्रा० उव] भी। दे० 'हूँ'¹। उ०—ऐसे हौं हुँ जानति भृंग। नाहिनै काहू लह्यो सुख प्रीति करि इक अंग।—तुलसी ग्रं०, पृ० ४४६।

हुँ²—अव्य० [सं० हुम्] १ एक शब्द जो किसी बात को सुननेवाला यह सूचित करने के लिये बोलता है कि हम सुन रहे हैं। २ स्वीकृतिसूचक शब्द। हाँ।

हुँकना—क्रि० अ० [सं० हुङ्कार] दे० 'हुंकारना'।

हुँकरना—क्रि० अ० [सं० हुङ्करण] दे० 'हुंकारना'।

हुँकारना—क्रि० अ० [सं० हुङ्करण] दे० 'हुंकारना'। उ०—तब जे जानकी लाए, ज्याए हरि करि कपि, हेरैं न हुँकारि भरै फल न रसाल।—तुलसी ग्रं०, पृ० ३६६।

हुँकारी¹—संज्ञा स्त्री० [अनु० हुँ हुँ + करना] १ 'हुँ' करने की क्रिया। वक्ता की बात सुनना सूचित करने का शब्द जो श्रोता बीच बीच में बोलता जाता है। २ स्वीकृतिसूचक शब्द। मानना या कबूल करना प्रकट करने का शब्द। हामी।

मुहा०—हुँकारी देना = (१) स्वीकृतिसूचक शब्द कहना। हामी भरना। उ०—पौढी लाल कथा इक कहिहौं अति मीठी स्रवननि कौं प्यारी। यह सुनि सूर श्याम मन हरषे पौढि गए हँसि देत हुँकारी।—सूर०, १०।६६७। (२) कोई कथा कहानी सुनते समय बीच बीच में 'हुँ' 'हुँ' शब्द कहना जिससे कहानी

कहनेवाला यह समझे कि श्रोता उसकी कहानी को सुन रहा है। उ०—सुनि सुत एक कथा कहौ प्यारी। कमलनैन मन आनँद उपज्यो, चतुर सिरोमनि देत हुँकारी।—सूर०, १०। १६८।

हुँकारी भरना = दे० 'हुँकारी देना'। उ०—कहत बात हरि कछू न समुझत झूठहि भरत हुँकारी। सूरदास प्रभु कँ गुन तुरतहि विसरि गई नँदनारी।—सूर०, १०।१६७।

हुँकारी²—संज्ञा स्त्री० [सं० हुण्डि (= राशि) + कारी] घुमाव के साथ झुकी लकीर जो अंक के आगे रुपया या रकम सूचित करने के लिये लगा दी जाती है। विकारी। जैसे,—१), ॥)।

विशेष—मुद्रा की दशमलव पद्धति अपनाने के कारण अब इसका प्रचलन कम हो गया है। अब इसकी जगह बिन्दु से काम लिया जाता है। जैसे—, ११) की जगह अब १.२५ लिखा जाता है।

हुँडार—संज्ञा पुं० [सं० हुण्ड (= भेड) + अरि (= शत्रु)] भेडिया। बीग।

हुँडावन—संज्ञा स्त्री० [हिं० हुडी] १ हुडी की दस्तूरी। २ हुडी की दर।

हुँत(पु)—प्रत्य० [प्रा० विभक्ति 'हिंतो'] १ पुरानी हिंदी की पचमी और तृतीया की विभक्ति। से। उ०—(क) तेहि बदि हुँत छुटै जो पावा।—जायसी (शब्द०)। (ख) जब हुँत कहिगा पखि सँदेसी।—जायसी (शब्द०)। (ग) तब हुँत तुम बिनु रहै न जीऊ।—जायसी (शब्द०)। २ लिये। निमित्त। वास्ते। खातिर। उ०—तुम हुँत मँडप गइउँ परदेसी।—जायसी (शब्द०)। ३ द्वारा। जरिये से। उ०—उन्ह हुँत देखैं पाएउँ दरस गोसाईं केर।—जायसी (शब्द)।

हुँति—प्रत्य [प्रा० हिंतो] लिये। निमित्त। वास्ते। खातिर। ओर से। उ०—सासु ससुर सन मोरि हुँति विनय करबि परि पायँ। मोर सोचु जनि करिअ कछु मैं बन सुखी सुभायँ।—मानस, २।६८।

हुँते—प्रत्य० [प्रा० हिंतो] दे० 'हुँत'।

हुँमस†¹—संज्ञा स्त्री० [सं० ऊष्म, हिं० उमस] हवा बद होने के कारण होनेवाली बरसात की गरमी। उ०—थी खूनी बरसात, प्राण भी घुटने लगे हुँमस मे। अंग्रेजी साम्राज्य फाँस मे बढा रहा बल कस मे।—हसमाला, पृ० ४०।

हुँमस†²—संज्ञा स्त्री० [अनु०] दे० 'हुसम'।

हुँमसना†—क्रि० अ० [अनु०] दे० 'हुमसना'।

हु(पु)†—अव्य [वैदिक सं० उप (= और आगे,) प्रा० उअ, हिं० ऊ] अतिरेक सूचक शब्द। कथित के अतिरिक्त और भी। जैसे,—रामहु = राम भी। हमहु = हम भी। उ०—हमहु कहब अब ठकुरसुहाती।—तुलसी (शब्द०)।

हुआँ¹—अव्य० [हिं० वहाँ, उहाँ] दे० 'वहाँ'।

हुआँ²—संज्ञा पुं० [अनु०] गीदडो के बोलने का शब्द।

हुआना(पु)†—क्रि०अ० [अनु० हुआँ] 'हुआँ हुआँ' करना। गीदडो का बोलना। उ०—जबुक निकर कटक्कट कट्टहि। खाहि, हुआहि, अघाहि दपट्टहि।—तुलसी (शब्द०)।

हुआसन†—संज्ञा पुं० [सं० हुताशन, प्रा० हुआसन] अग्नि। आग। उ०—तसु नदन भोगीसराअ बर भोग पुरदर। हुअ हुआसन जिते कति कुसुमा उहैं सुदर।—कीर्ति०, पृ० ३२।

हुक¹—संज्ञा पुं० [अं०] १ कँटिया। टेढी कील। २ दो वस्तुओं को एक मे जोडने का झुका हुआ काँटा। अँकुसी। अँकुडी। ३ नाव मे वह लकडी जिसमे डाँडे को ठहरा या फँसाकर चलाते है।

हुक²—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का दर्द जो प्राय पीठ मे किसी स्थान की नस पर होता है।

क्रि० प्र०—पडना।

हुकना¹—संज्ञा पुं० [देश०] एक पक्षी जो 'सोहन चिडिया' के नाम से प्रसिद्ध है।

हुकना²—क्रि० स० [देश०] भूल जाना। विस्मृत होना।

हुकना³—क्रि०स० वार या निशाना चूकना। लक्ष्य या निशाने से भ्रष्ट होना या चूकना। खाली जाना।

हुकना⁴—संज्ञा पुं० [अ० हुक्नह्] वत्ती या पिचकारी जो पाखाना आने के लिये दी जाती है। स्नेहवस्ति [को०]।

हुकम(पु)—संज्ञा पुं० [अ० हुक्म] आदेश। दे० 'हुक्म'। उ०—(क) तव भैरव भूवाल वीरवर। कीन हुकम कालीय उच कर।—पृ० रा०, ६।१६३। (ख) तब पातसाह ने वाही समैं यह हुकम कर्यो, जो वा वैरागी को मो पास अब ही लै आओ।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० ११६।

हुकम्म(पु)—संज्ञा पुं० [अ० हुक्म] आदेश। आज्ञा। हुक्म। उ०—कियौ तव मार हुकम्म सु हेरि। उठी सिसिरौ तव आयसु फेरि।—ह० रासो, पृ० २३।

हुकरना—क्रि० अ० [सं० हुङ्करण] दे० 'हुँकरना', 'हुँकारना'।

हुकर पुकर—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १ कलेजे की धडकन। दिल की कँपकँपी। हृत्कप। घबराहट। अधीरता।

मुहा०—कलेजा हुकर पुकर करना = (१) भय या आशका से हृदय मे कँपकँपी या अशाति होना। डर या घबराहट से दिल धडकना। (२) भय या घबराहट होना। चित्त अधीर होना।

२ किसी काम के करने मे आगा पीछा करना या हिचकना।

हुकहुक—संज्ञा स्त्री० [फा०] हिक्का। हिचकी [को०]।

हुकारना—क्रि० अ० [सं० हुङ्करण] दे० 'हुँकारना'।

हुकुम‡¹—संज्ञा पुं० [अ० हुक्म] दे० 'हुक्म'। उ०—पुदकारी हुकुम कहओ का अपनेओ जोए परा रिहा।—कीर्ति०, पृ० ४२।

हुकुर पुकुर†—संज्ञा स्त्री० [अनु०] दे० 'हुकर पुकर'।

हुकुर हुकुर—संज्ञा स्त्री० [अनु०] दुर्वलता, रोग आदि मे श्वास का स्पदन। जल्दी जल्दी साँस चलने की धडकन।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

हुकूक—संज्ञा पुं० [अ० हुकूक] 'हक' का बहुवचनात रूप।

यौ०—हकहुकूक।

हुकूमत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ अधीनता मे रखने की क्रिया या भाव। आज्ञा मे रखने का भाव। प्रभुत्व। शासन। आधिपत्य। अधिकार।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

मुहा०—हुकूमत चलना = प्रभुत्व माना जाना। अधिकार माना जाना। हुकूमत चलाना = प्रभुत्व या अधिकार से काम लेना। दूसरो को आज्ञा देना। जैसे,—उठो कुछ करो, बैठे बैठे हुकूमत चलाने से काम न होगा। हुकूमत जताना = अधिकार या बडप्पन प्रकट करना। प्रभुत्व प्रदर्शित करना। रोब दिखाना।

२ राज्य। शासन। राजनीतिक आधिपत्य। जैसे,—वहाँ भी अँगरेजो की हुकूमत है।

यौ०—हुकूमते जम्हूरी = जनता का शासन। जनतंत्र। लोकतंत्र।

हुक्का१—संज्ञा पुं० [अ० हुक्कह्] १ तवाकू का धूआँ खीचने के लिये विशेष रूप से बना हुआ एक नल यंत्र। गडगडा। फरशी।

विशेष—हुक्के मे दो नलियाँ होती है—एक पानी भरे पात्र के पेंदे (फरशी) से ऊपर की ओर खडी जाती है जिसपर तवाकू सुलगाने की चिलम बैठाई जाती और दूसरी उसी पात्र से बगल की ओर आडी या तिरछी जाती है जिसका छोर मुँह मे लगाकर पानी से होकर आता हुआ तवाकू का धूआँ खीचते हैं।

यौ०—हुक्का तमाखू = बिरादरी की राह रस्म। सामाजिक व्यवहार। हुक्का पानी।

मुहा०—हुक्का पीना = हुक्के की नली से तवाकू का धूआँ मुँह मे खीचना। हुक्का गुडगुडाना = हुक्का पीना। हुक्का ताजा करना = हुक्के का पानी बदलना। हुक्का भरना = चिलम पर आग तवाकू वगैरह रखकर हुक्का पीने के लिये तैयार करना।

२ दिशा जानने का यंत्र। कपास। (लश०)। ३ आभूषण या इत्र रखने का डिब्बा (क्व०)। ४ पिटारी। टोकरी (क्व०)।

यौ०—हुक्कावाज = (१) मदारी। खेलतमाशे दिखानेवाला। (२) छली। धूर्त। मक्कार। हुक्कावाजी = (१) मदारी का काम करनेवाला। (२) धूर्तता। मक्कारी। ठगी।

हुक्का२—संज्ञा स्त्री० [फा० हुक्कह्, तुल० सं० हिक्का] हिचकी। हुक्चा (क्व०)।

हुक्कापानी—संज्ञा पुं० [अ० हुक्कह् + हिं० पानी] एक दूसरे के हाथ से हुक्का तवाकू पीने और पानी पीने का व्यवहार। बिरादरी की राह रस्म। आने जाने और खाने पीने आदि का सामाजिक व्यवहार।

विशेष—जिस प्रकार एक दूसरे के साथ खाना पीना एक जाति या बिरादरी मे होने का चिह्न समझा जाता है, उसी प्रकार कुछ जातियो मे एक दूसरे के हाथ का हुक्का पीना भी। ऐसी जातियाँ जब किसी को समाज या बिरादरी से अलग करती है, तब उसके हाथ का पानी और हुक्का दोनो पीना बंद कर देती हैं।

मुहा०—हुक्कापानी देना या पिलाना = स्वागत सत्कार करना। हुक्का पानी बंद करना = बिरादरी से अलग करना। समाज से बाहर करना। (दंड स्वरूप) हुक्का पानी बंद होना = बिरादरी से अलग किया जाना। समाज से बाहर होना।

हुक्काबरदार—संज्ञा पुं० [अ० हुक्कह् + फा० बरदार (प्रत्य०)] किसी व्यक्ति का हुक्का लेकर चलनेवाला नौकर।

हुक्काम—संज्ञा पुं० [अ० 'हाकिम' का बहुवचन रूप] हाकिम लोग। अधिकारी वर्ग। बडे अफसर।

हुक्कासाज—वि० [अ० हुक्कह् + साज] हुक्का भरने मे हुनरमंदी जतानेवाला। उ०—कोई इल्मे महफिल के उस्ताद, कोई हुक्का-साज औ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ८७।

हुक्कू—संज्ञा पुं० [देश०] एक जाति का बंदर।

हुक्चा—संज्ञा स्त्री० [फा० हुक्चह्] हिचकी। हिक्का (क्व०)।

हुक्म—संज्ञा पुं० [अ०] १ बडे का वचन जिसका पालन कर्तव्य हो। कुछ करने के लिये अधिकार के साथ कहना। आज्ञा। आदेश।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

मुहा०—हुक्म उठाना = (१) हुक्म रद्द करना। आज्ञा फेरना। हुक्म जारी न रखना। (२) आज्ञा पालन करना। सेवा करना। अधीनता मे रहना। हुक्म उलटाना = आज्ञा का निराकरण करना। एक आज्ञा के विरुद्ध दूसरी आज्ञा प्राप्त करना। हुक्म की तामील = आज्ञा का पालन। हुक्म के मुताबिक कार्रवाई। हुक्म चलना = अधिकार होना। किसी की हुकूमत होना। हुक्म चलाना = (१) आज्ञा प्रचलित करना। (२) आज्ञा देना। अधिकारपूर्वक दूसरे को कुछ करने के लिये कहना। बडप्पन दिखाते हुए दूसरे को काम मे लगाना। जैसे,—बैठे बैठे हुक्म चलाते हो, खुद जाकर क्यो नही करते? हुक्म जारी करना = आज्ञा का प्रचार करना। हुक्म तोडना = आज्ञा भंग करना। आदेश के विरुद्ध कार्य करना। बडे के वचन का पालन न करना। हुक्म देना = आज्ञा करना। हुक्म बजाना या बजा लाना = (१) आज्ञा पालन करना। बडे के कहे अनुसार करना। (२) सेवा करना। हुक्म मानना = आज्ञा पालन करना। बडे के कहे अनुसार चलना। हुक्म मिलना = आज्ञा दिया जाना। आदेश होना। जैसे,—मुझे क्या हुक्म मिलता है? जो हुक्म = जो हुक्म होता है, उसे मैं करूँगा। (नौकर)।

२ कुछ करने की स्वीकृति। अनुमति। इजाजत। जैसे,—(क) सवारी निकालने का हुक्म हो गया। (ख) घर जाने का हुक्म मिल गया।

मुहा०—हुक्म लेना = आज्ञा प्राप्त करना। अनुमति लेना। जैसे,—तुम्हें हुक्म लेकर जाना चाहिए था।

३ अधिकार। प्रभुत्व। शासन। इख्तियार। जैसे,—हुक्म बना रहे। (आशीर्वाद)।

मुहा०—हुक्म मे होना = अधिकार मे होना। अधीन होना। शासन मे होना। जैसे,—(क) मैं तो हर घडी हुक्म मे हाजिर रहता हूँ। (ख) यह किसी के हुक्म मे नही है, मनमानी करता है।

४ किसी कानून या धर्मशास्त्र की आज्ञा। विधि। नियम। शिक्षा। उपदेश। ५ ताश का एक रंग जिसमे काले रंग का पान बना रहता है।

हुक्मचील—संज्ञा स्त्री० [?] खजूर का गोंद।

हुक्मनामा—संज्ञा पुं० [अ० हुक्म + फा० नामह्] वह कागज जिसपर कोई हुक्म लिखा गया हो। आज्ञापत्र।

क्रि० प्र०—देना।—लिखना।—भेजना।

हुक्मबरदार—संज्ञा पुं० [अ० हुक्म + फा० बरदार (प्रत्य०)] १ आज्ञानुवर्ती। आज्ञा के अनुसार चलनेवाला। आज्ञाकारी। २ सेवक। अधीन।

हुक्मबरदारी—संज्ञा स्त्री० [फा० हुक्मबरदारी] १ आज्ञापालन। आज्ञाकारिता। २ सेवा। नौकरी।

हुक्मराँ, हुक्मरान—वि० [अ० हुक्म + फा० राँ, रान] हाकिम। आदेश चलानेवाला। उ०—सरकार लाख जग मे हुए सदहा हुक्मराँ।—कबीर म०, पृ० ३२४।

हुक्मरानी—संज्ञा स्त्री० [फा० हुक्मरान] शासन चलाना। हुकूमत चलाना। उ०—जमी सारी पर हुक्मरानी हुई। बाहर कौम पर मेहरबानी हुई।—कबीर म० पृ० १३३।

हुक्मी—वि० [अ० हुक्म] १ दूसरे की आज्ञा के अनुसार ही काम करनेवाला। दूसरे के कहे मुताबिक चलनेवाला। पराधीन। जैसे,—मैं तो हुक्मी बदा हूँ, मेरा क्या कसूर ? २ न चूकनेवाला। जरूर असर करनेवाला। अचूक। अव्यर्थ। जैसे—हुक्मी दवा। ३. खाली न जानेवाला। अवश्य लक्ष्य पर पहुँचनेवाला। जैसे—वह हुक्मी तीर चलाता है। ४ अवश्य कर्तव्य। न टालने योग्य। लाजिमी। जरूरी।

हुचकी[1]—संज्ञा स्त्री० [फा हुक्चह्] दे० 'हिचकी'।

हुचकी[2]—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की सुदर लता या बेल जिसके फूल ललाई लिए सफेद और सुगधित होते है।

हुजूम—संज्ञा पुं० [अ०] भीड। जमावडा। उ०—(क) दरवाजे पर घोडे हाथी, पालकी, नालकी के हुजूम से रास्ता न मिलता था।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० २६०। (ख) बस हुजूमे नाउमेदी खाक मे मिल जायगी।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० ४७२।

हुजूर—संज्ञा पुं० [अ० हुजूर] १ किसी बडे का सामीप्य। नजर का सामना। समुख स्थिति। समक्षता।

मुहा०—(किसी के) हुजूर मे = (बडे के) सामने। आगे। जैसे—वह सब बादशाह के हुजूर मे लाए गए।

२ बादशाह या हाकिम का दरबार। कचहरी।

यौ०—हुजूर तहसील = सदर तहसील। वह तहसील जो जिले के प्रधान नगर मे हो। हुजूर महाल = वह महाल जिसकी मालगुजारी सीधे सरकार के यहाँ दाखिल हो, लगान के रूप मे किसी जमीदार को न दी जाती हो। वह जमीन जिसकी जमीदार सरकार हो।

३. बहुत बडे लोगो के प्रति सबोधन का शब्द। ४ एक शब्द जिसके द्वारा अधीन कर्मचारी अपने बडे अफसर को या नौकर अपने मालिक को सबोधन करते है।

हुजूरी[1]—संज्ञा स्त्री० [अ० हुजूर + हि० ई० (प्रत्य०)] १. बडे का सामीप्य या समक्षता। नजर का सामना। २. उपस्थिति। हाजिरी। मौजूदगी।

हुजूरी[2]—संज्ञा पुं० १ खास सेवा मे रहनेवाला नौकर। २ दरबारी। मुसाहब।

हुजूरी[3]—वि० हुजूर का। सरकारी।

हुजूरेवाला—संज्ञा पुं० [फा० हुजूरेवाला] श्रेष्ठ व्यक्ति के लिये प्रतिष्ठासूचक सबोधन (को०)।

हुज्जत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ व्यर्थ का तर्क। फजूल की दलील। २ प्रमाण। सबूत (को०)। ३ विवाद। झगडा। तकरार। कहासुनी। वाग्युद्ध। उ०—दुई दरोग हिर्स हुज्जत नाम नेकी नेस्त।—दादू०, पृ० १०८।

क्रि० प्र०—करना।—मचाना।—होना।

हुज्जती—वि० [अ० हुज्जत + ई (प्रत्य०)] बात बात मे लडनेवाला। हुज्जत करनेवाला। झगडालू।

हुड[1]—संज्ञा पु० [स० हुड] १ मेढा। २ एक प्रकार का अस्त्र। ३ बादल। मेघ (को०)। ४ प्राकार। परिखा। सेना का आश्रयस्थल। परकोटा (को०)। ५. लगुड। लौहदड (को०)। ६ प्रवेशमार्ग मे चोरो के निवारणार्थ धँसाया हुआ लोहे का तीखा काँटा अथवा लोहे के कँटीले टुकडे। विशेष दे० 'गोखरू'—२।

हुड[2]—संज्ञा पुं० [अ०] बग्घी, मोटर, रिक्शा आदि सवारियो के पीछे लगा हुआ वह कमानीदार आच्छादन जिसे आवश्यकता पडने पर आगे की ओर खीचकर फैलाया जा सकता है।

हुडकना—क्रि० अ० [देश०] बच्चे का रो रोकर उसके लिये अपनी व्याकुलता प्रकट करना जिससे वह बहुत हिला मिला हो। उत्साहित होना। हुमसना। उछलना कूदना। हुमकना। उ०—जहँ सूर सख बजावही। दिसि दिसनि दिग्गज दावही। धुनि घोर दुदुभि धुक्करै। सुनि वीर हुडकत हुक्करै।—पद्माकर ग्र०, पृ० ८।

हुडका[1]—संज्ञा पुं० [देश०] १ वह घोर मानसिक व्यथा (विशेषत बच्चो को होनेवाली मानसिक व्यथा) जो प्राय अचानक किसी प्रिय व्यक्ति का वियोग हो जाने पर उत्पन्न होती है।

क्रि० प्र०—पडना।

हुडका[2]—संज्ञा पुं० [सं० हुडक्क] हुडुक नाम का बाजा।

हुडकाना—क्रि० स० [हि० हुडक + आना (प्रत्य०)] १ बहुत अधिक भयभीत और दुखी करना। २ तरसाना। ललचाना।

हुडकार—संज्ञा पु० [अनु०] जोशीली ललकार। उ०—हुडकार। हकत नही सकत, भिडत रन हनुमत सो।—पद्माकर ग्र०, पृ० २०।

हुडदग—संज्ञा पुं० [अनु० हुड + दग] दे० 'हुडदगा'।

हुडदगा[1]—संज्ञा पुं० [अनु० हुड + हि० दगा] हल्ला गुल्ला और उछल कूद। धमाचौकडी। उपद्रव। उत्पात।

क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

हुडदगा†[2]—वि० उपद्रवी । उत्पाती ।

हुडदगी—वि० [हिं० हुडदगा + ई] धमाचौकडी मचानेवाला । उछल-कूद करनेवाला । शरारती । नटखट ।

हुडुव—सज्ञा पु० [स० हुडुम्ब] वह चिउडा या धान जो भूना हुआ हो । भूना हुआ धान का लावा [को०] ।

हुडु—सज्ञा पु० [स०] मेष । मेढा [को०] ।

हुडुक—सज्ञा पुं० [स० हुडुक्क] एक प्रकार का बहुत छोटा ढोल जिसे प्राय कहार या धीमर बजाते हैं ।

हुडुक्क—सज्ञा पुं० [स०] १ एक प्रकार का बहुत छोटा ढोल । हुडुक नाम का बाजा । २ दात्यूह पक्षी । डाहुक । ३ मतवाला आदमी । मदोन्मत्त पुरुष । ४ लोहे का साम जडा हुआ डडा । लोहबद । ५ अर्गल । बेंवडा ।

हुडुत्—सज्ञा पुं० [सं०] १ डराने, धमकाने का स्वर । धमकी । २ बैल या सांड के बोलने का शब्द । वृषभ की आवाज [को०] ।

हुढक्क(पु)†—सज्ञा पुं० [सं० हुडुक्क] दे० 'हुडुक', 'हुडुक्क' ।

हुण†—अव्य० [प०] अधुना । अब । आज । उ०—(क) हुण क्या कीजै लाडिले वेखन नहिं पावैं ।—घनानद, पृ० १८० । (ख) कद्दू वण्या ए मजेदार गोरिए, हुण लाणा चटाका कदुए नूं । —गुलेरीजी०, पृ० ४२ ।

हुत[1]—वि० [सं०] १ हवन किया हुआ । आहुति दिया हुआ । हवन करते समय अग्नि मे डाला हुआ । २ जिसके निमित्त आहुति दी गई हो (को०) ।

हुत[2]—सज्ञा पुं० १ हवन की वस्तु । हवन करने की सामग्री । २ शिव का एक नाम ।

हुत(पु)[3]—क्रि० अ० [सं० भूत, हु + त, प्रा० हुअ] 'होना' क्रिया का प्राचीन भूतकालिक रूप । था । उ०—हुत पहिलें औ अब है सोई ।—जायसी (शब्द०) ।

हुतजातवेद—वि० [सं० हुतजातवेदस्] जिसने अग्नि मे हवन किया हो । जो अग्नि मे आहुति प्रदान कर चुका हो [को०] ।

हुतभक्ष—सज्ञा पुं० [स०] अग्नि । आग ।

हुतभुक्—सज्ञा पु० [सं० हुतभुज्] १ अग्नि । आग । २ चित्रक वृक्ष । चीते का पेड । ३ शिव । महादेव (को०) । ४. विष्णु (को०) ।

हुतभुक्प्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] अग्नि की पत्नी—स्वाहा [को०] ।

हुतभुज्—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'हुतभुक्' ।

हुतभोक्ता—सज्ञा पुं० [सं० हुतभोक्तृ] अग्नि । हुतभक्ष [को०] ।

हुतभोजन—सज्ञा पु० [स०] अग्नि का एक नाम [को०] ।

हुतवह—सज्ञा पुं० [सं०] अग्नि । आग ।

हुतशिष्ट—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हुतशेष' ।

हुतशेष—सज्ञा पुं० [स०] हवन करने से बची हुई सामग्री ।

हुतहोम—सज्ञा पुं० [सं०] १. जलता हुआ साकल्य या आहुति । २. वह ब्राह्मण जो हवन कर चुका हो [को०] ।

हुता(पु)†—क्रि० अ० [हिं० हुत] 'होना' क्रिया का पुरानी अवधी हिंदी का भूतकालिक रूप । था । उ०—गगन हुता, नहिं महि हुती, हुते चद नहिं सूर ।—जायसी (शब्द०) ।

हुताग्नि[1]—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसने हवन किया हो । २ अग्निहोत्री । ३ यज्ञ या हवन की आग ।

हुताग्नि[2]—वि० अग्नि मे आहुति प्रदान करनेवाला । हवन करनेवाला [को०] ।

हुतात्मा—सज्ञा पुं० [स० हुतात्मन्] वह व्यक्ति जिसने किसी अच्छे कार्य मे अपने को हवन कर दिया हो या अपना प्राण दे दिया हो । (अ० मार्टायर) ।

हुतावशेष—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हुतशिष्ट', 'हुतशेष' ।

हुताश—सज्ञा पुं० [सं०] १ (आहुति खानेवाला) अग्नि । आग । २ तीन की सख्या । ३ चित्रक । चीते का पेड । ४. डर । त्रास । खौफ । भय (को०) ।

यौ०—हुताशवृत्ति = जिसकी आजीविका अग्नि पर निर्भर हो । हुताशशाला = अग्नि का स्थान । अग्निशाला ।

हुताशन—सज्ञा पुं० [सं०] १ अग्नि । आग । २ कृशानु । शिव का एक नाम (को०) । ३ चित्रक वृक्ष (को०) ।

यौ०—हुताशनसहाय = शिव का एक नाम ।

हुताशना—सज्ञा स्त्री० [सं०] योगिनी विशेष [को०] ।

हुताशनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] फाल्गुन मास की पूर्णिमा, जिस दिन होली जलती है [को०] ।

हुतास(पु)—सज्ञा पुं० [सं० हुताश] दे० 'हुताश' । उ०—विरचत आप समान न तो हिय सुन निहारत । तेरैं पास हुतास तासु ते तिनहैं जारत ।—दीन० ग्र०, पृ० १०० ।

हुतासन(पु)—सज्ञा पुं० [सं० हुताशन] अग्नि । दे० 'हुताशन' । उ०—न होतो मलग, अनग हुतासन ।—प्रेमघन०, पृ० २०६ ।

हुति(पु)[1]—अव्य, [प्रा० हिंतो] १ अपादान और करण कारक का चिह्न । से । द्वारा । २ ओर से । तरफ से । दे० 'हुंति' ।

हुति[2]—सज्ञा स्त्री० [सं०] हवन । यज्ञ ।

हुतियन—सज्ञा पुं० [देश०] सेमल का पेड ।

हुती—अ० क्रि० [हिं० 'होना' का भूत का० रूप] थी । उ०—लाज के साज मैं हुती ज्यौं द्रौपदी, बढ्यौ तन चीर नहि अत पायौ ।—सूर०, १।५ ।

हुते—अव्य० [प्रा० हिंतो] १ से । द्वारा । २ ओर से । तरफ से ।

हुतो(पु)—क्रि० अ० ['होना' क्रिया का ब्रजभाषा मे भूतकालिक रूप] था ।

हुत्कच—सज्ञा पुं० [सं०] एक दैत्य का नाम ।

हुदकना†—क्रि० अ० [सं० उत् (= ऊर्ध्व)] उछलना । कूदना । उमडना ।

हुदकाना(पु)†—क्रि० स० [सं० उत् (= ऊर्ध्व) या देश०] उसकाना । उभारना ।

हुदना(पु)†—क्रि० अ० [स० हुण्डन] स्तब्ध होना । रुकना ।

हुदहुद—संज्ञा पुं० [अ०] एक चिड़िया जो हिंदुस्तान और बरमा में प्राय सब जगह पाई जाती है। इसकी छाती और गरदन खैरे रंग की तथा चोटी और डैने काले और सफेद होते हैं। इसकी चोंच एक अंगुल लंबी होती है। उ०—पाम हुदहुद के अब्वल आया नजदीक। याद कर फिरदोश को रोया अदीक।—दक्खिनी०, पृ० १७६।

हुदारना—क्रि० स० [देश०] रस्सी पर लटकाना। टाँगना। (लश०)।

हुदूद—संज्ञा स्त्री० [अ०] 'हद' का बहुवचन। सीमाएँ [को०]।

हुद्दा[1]—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

हुद्दा‡[2]—संज्ञा पुं० [अ० ओहदा] ओहदा। पद।

हुन—संज्ञा पुं० [सं० हूण, हून (=सोने का एक सिक्का)] १ मोहर। अशरफी। स्वर्णमुद्रा। २ सोना। सुवर्ण।

मुहा०—हुन बरसना = धन की बहुत अधिकता होना। उ०—हुन बरसता था, अमन था, चैन था। था फला फूला निराला राज भी। वह समाँ हम हिंदुओं के ओज का। आँख में है घूम जाता आज भी।—चुभते०, पृ० २०। हुन बरसाना = बहुत अधिक धन लुटाना। उ०—बेगम साहब की नजर इनायत हो जाएगी तो हुन बरसा देंगी।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ३५।

हुनना—क्रि० स० [सं० हु, हुन् + हिं० ना (प्रत्य०)] १ अग्नि में डालना। आहुति देना। २ यज्ञ करना। हवन करना। उ०—सूर कवन रावन सरिस स्वकर काटि जेहि सीस। हुने अनल अति हरख बहु बार साखि गौरीस।—मानस, ६।२८।

हुनर—संज्ञा पुं० [फा०] १. कारीगरी। कला। फन। २ गुण। करतब। खूबी। ३ कौशल। युक्ति। चतुराई। ४ विद्या। इल्म (को०)। ५ दस्तकारी। शिल्प (को०)।

हुनरमद—वि० [फा०] हुनर जाननेवाला। कलाकुशल। निपुण।

हुनरमदी—संज्ञा स्त्री० [फा०] हुनरमद होने की क्रिया या भाव। कलाकुशलता। निपुणता।

हुनरा—वि० [फा० हुनर] वह बंदर या भालू जो नाचना और खेल दिखाना सीख गया हो। (कलंदर)।

हुनिया—संज्ञा स्त्री० [देश०] भेड़ों की एक जाति जिसका ऊन अच्छा होता है।

हुन्न—संज्ञा पुं० [सं० हूण] दे० 'हुन'।

हुन्नर—संज्ञा पुं० [फा० हुनर] दे० 'हुनर'। उ०—अजन कीया नैन मैं सबही रापै मोहि। सुदर हुन्नर बहुत हैं कोई न जानै तोहि।—सुदर० ग्र०, भा० २, पृ० ७६७।

हुन्ना(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हूण] दे० 'हुन'।

हुब—संज्ञा पुं० [अ०] १ अनुराग। प्रेम। २ श्रद्धा। ३ हौसला। उमग। उत्साह।

हुबाब—संज्ञा पुं० [अ०] १ पानी का बुलबुला। बुद्बुद। उ०—दौलत का जौक ऐसे ज्यो आब का हुबाब।—चरण० बानी, पृ० ११४। २ हाथ में पहना जानेवाला एक आभूषण। ३ शीशे के गोले जो मकानों की सजावट में लगाए जाते हैं अथवा जिनसे लड़के खेलते हैं।

हुब्ब—संज्ञा पुं० [अ०] दे० 'हुब'।

हुब्बुलवतन—संज्ञा पुं० [अ०] स्वदेशप्रेम। देशप्रेम [को०]।

हुब्बुलवतनी—संज्ञा स्त्री० [अ० हुब्बुलवतन] देशभक्ति। स्वदेशप्रेम। उ०—परम साहसी वज्र प्रहारी रास विहारी को, जो अब भी ऐसा सुनने में आता है, अन्य देश में, छद्म वेष में घूम घूमकर अलख जगाता है हुब्बुलवतनी का।—बगाल०, पृ० १५।

हुब्बेवतन—संज्ञा पुं० [अ०] देशप्रेम [को०]।

हुमक(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० उमग] उमग। उत्साह। मौज। उ०—हकत हय न हुमक बक तकि नवल तमकत।—पद्माकर ग्र०, २७८।

हुमकना(पु)—क्रि० अ० [हिं० उमग + ना] उत्साहयुक्त होना। उमग या जोश से भर जाना। उ०—महासान हस्फान के हैं हुमकैं। मनो पौन के गौन कों लेत हकैं।—पद्माकर ग्र०, पृ० २८०।

हुमकना—क्रि० अ० [अनु० हु (प्रयत्न का शब्द)] १ उछलना कूदना। २ जमे हुए पैर से ठेलना या धक्का पहुँचाना। पैरों से जोर लगाना। ३ पैरों को आघात के लिये जोर से उठाना। कसकर पैर तानना। उ०—हुमकि लात कूबर पर मारा।—तुलसी (शब्द०)। ४ चलने का प्रयत्न करना। चलने के लिये जोर लगाकर पैर रखना। ठुमकना। (बच्चों का)। ५ दबाने खीचने या इसी प्रकार का और कोई काम करने के लिये जोर लगाना। उ०—मारेसि साँग पेट महँ धँसी। काढेसि हुमकि आँति भुँई खसी।—जायसी (शब्द०)।

हुमगना—क्रि० अ० [अनु० हुँ] दे० 'हुमकना'।

हुमचना—क्रि० अ० [अनु०] किसी चीज पर चढ़कर उसे दबाने के लिये जोर लगाना या उसपर बार बार उछलना कूदना। दे० 'हुमकना'। उ०—उनकी पीठ पर हुमच रहे हैं।—गोदान, पृ० १३२।

हुमडना†—क्रि० अ० [हिं० उमडना] किसी द्रव पदार्थ का उमडकर बहना या ऊपर उठकर फैल जाना।

हुमसना—क्रि० अ० [अनु०] उल्लसित होना। उत्साह से भर जाना। उमसना। उ०—इतर जनों में भी प्राचीन भावना थी। अगर कहीं अँग्रेजी राज के कारण हुमसते थे तो उनका हाथ पकड़कर रास्ते पर ले चलनेवाला न था।—काले०, पृ० ६१।

हुमसाना—क्रि० स० [अनु०] १ किसी के मन में कोई इच्छा या विचार उत्तेजित करना। २ किसी को उल्लसित या उत्थापित करना।

हुमसावना(पु)—क्रि० स० [अनु०] दे० 'हुमसाना'।

हुमा—संज्ञा स्त्री० [फा०] उर्दू और फारसी साहित्य में एक कल्पित पक्षी जिसके सबध में प्रसिद्ध है कि वह हड्डियाँ ही खाता है और जिसके ऊपर उसकी छाया पड़ जाय वह बादशाह हो जाता है। उ०—आपके कबूतर किससे कम है वल्लाह, कबूतर नहीं परीजाद हैं, खिलौने हैं, तस्वीर हैं, हुमा पर साया पड़े तो उसे शहबाज बना दें।—भारतेंदु ग्र०, भा० ३, पृ० ८१४।

हुमाई—वि० [फा० हुमा + ई (प्रत्य०)] हुमा पक्षी सबधी।

हुमायूँ[1]—वि० [फा०] शुभ। मगलमय [को०]।

हुमायूँ[2]—संज्ञा पुं० मुगल सम्राट् अकबर का पिता जो बाबर का बेटा था।

हुमुकना—क्रि० अ० [अनु०] दे० 'हुमकना'। उ०—अंचल से मुँह निकाल निकालकर माता के स्नेह प्लावित मुख की ओर देखता है, हुमुकता है और मुसकिराता है।—रगभूमि, भा० २, पृ० ८५७।

हुमेल—संज्ञा स्त्री० [अ० हमायल] १ अशर्फियों या रुपयों को गूथकर बनी हुई एक प्रकार की माला जिसे स्त्रियाँ पहनती हैं। उ०—फूलन की दुलरी, हुमेल हार फूलन के, फूलन की चपमाल, फूलन गजरा री।—नंद० ग्रं०, पृ० ३८०। २ घोडों के गले का एक गहना।

हुम्मा—संज्ञा पुं० [हिं० उमग] लहरों का उठना। बान। (लश०)।

हुरक(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हुडुक] हुडुक नाम का एक वाद्य। उ०—ढाढी और ढाढिनि गावैं ठाढे हुरकैं बजावे, हरषि असीस देत मस्तक नव ई कै।—सूर०, १०।३१।

हुरकणी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [देश०] वेश्या। रंडी। उ०—सावल अणियाँ साँकही, चोरँग वणिया चेत। भणियाँ सू भेलप नही, हुरकणियाँ सूँ हेत।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० १।

हुरकिनी†—संज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'हुरकणी'।

हुरदंग—संज्ञा पुं० [अनु० हुड, हुर + हिं० दंग] दे० 'हुडदंग'।

हुरदंगई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० हुरदंग] हुरदंगी होने का भाव या क्रिया।

हुरदंगा—संज्ञा वि० पुं०, [अनु०] दे० 'हुडदंगा'।

हुरदंगी—वि० [हिं०,हुडदंगा] दे० 'हुडदंगी'।

हुरमत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ सतीत्व। अस्मत। २ आबरू। इज्जत। मान। मर्यादा। उ०—ऐसी होरी खेल, जामे हुरमत लाज रहो री। सील सिंगार करो मोर सजनी धीरज माँग भरो री।—कबीर श०, भा० ४, पृ० २१।

मुहा०—हुरमत उतारना = किसी की मान प्रतिष्ठा को समाप्त करना। बेइज्जत करना। हुरमत लेना = दे० 'हुरमत उतारना'।

हुरमति(पु)—संज्ञा स्त्री० [अ० हुरमत] दे० 'हुरमत'।

हुरसा—संज्ञा पुं० [देश०] वह गोलाकार पत्थर जिसपर चंदन रगडते हैं। दे० 'होरसा'। उ०—नाम तेरो आसन, नाम तेरो हुरसा, नाम तेरो केसर लै छिडका रे।—संत रवि०, पृ० १२६।

हुरहुर—संज्ञा पुं० [देश० ?] एक बरसाती पौधा। अर्कपुष्पिका। विशेष दे० 'हुलहुल'।

हुरहुरिया—संज्ञा स्त्री० [अनु० हुलहुली] एक प्रकार की चिडिया।

हुरिंजक—संज्ञा पुं० [सं० हुरिञ्जक] निषाद और कवरी स्त्री से उत्पन्न एक संकर जाति।

हुरिहाई(पु)—वि०, संज्ञा स्त्री० [हिं० होली + हाई] होरी खेलनेवाली। उ०—रूप अलबेली सु नवेली एरी तेरी आँखैं, ताकि छाकि मारैं हुरिहाई न कहूँ छिकैं।—घनानंद, पृ० ४५।

हुरिहार—वि०, संज्ञा पुं० [हिं० होली + हार (=वाला)] होली खेलनेवाला। उ०—(क) हाय इन नैनन तें निकरि हमारी लाज, कित धौं हेरानी हुरिहारन के बीच मे।—पद्माकर ग्रं०, पृ० ३१६। (ख) दोनों ही हुरिहार बड़े सुकुमार है।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० १८६।

हुरुट्टक—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी का अंकुश।

हुरुमयी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का नृत्य। उ०—उलथा, टेंकी, आलमस, पिंड। पलटि हुरुमयी निशक चिंड।—केशव (शब्द०)।

हुर्च्छन—संज्ञा पुं० [सं०] विश्वासघातकता। धोखेबाजी [को०]।

हुर्रा—संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार की हर्षध्वनि।

हुल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का दोधारा छुरा।

हुल[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० शूल] पीडा। वेदना। कसक। उ०—उर लीने अति चटपटी सुनि मुरली धुनि धाइ। हौं हुलसी निकसी सु तौ गौ हुल सी हिय लाइ।—पद्माकर ग्रं०, पृ० ७५।

हुल†[3]—संज्ञा स्त्री० [अनु० या ?] भीतर से बाहर की ओर आने का वेग।

हुलक—संज्ञा स्त्री० [अनुध्व०] वेग। गति। हूल। उ०—हुलक हुलक्का से सुलुक्का से तरारिन मे ललित ललाम जे लगाम लेत लक्का से।—पद्माकर ग्रं०, पृ० ३०८।

हुलकना—क्रि० अ० [अनु० हुलहुल] कै करना। वमन करना।

हुलकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हुलकना] १ कै। वमन। उलटी। २ हैजे की बीमारी।

हुलक्का(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० उल्का] आकाश से रात के समय तीव्र वेग से गिरनेवाला ज्योतिर्पिड। विशेष दे० 'उल्का'। उ०—हुलक हुलक्का से सुलक्का से तरारिन मे ललित ललाम जे लगाम लेत लक्का से।—पद्माकर ग्रं०, पृ० ३०६।

हुलना—क्रि० अ० [हिं० हूलना] लाठी, भाले आदि को जोर से ठेलना। रेलना। पेलना।

हुलमातृका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बडी दुधारी कटार [को०]।

हुलराना—क्रि० स० [अनु०] दे० 'हलराना'। उ०—यसोदा मइया लाल को झुलावे। आछे बार कान्ह को हुलरावे।—अकबरी०, पृ० ४८।

हुलसना[1]—क्रि० अ० [हिं० हुलास + ना (प्रत्य०)]। १ उल्लास मे होना। आनंद से फूलना। उमगना। खुशी से भरना। उ०—उर लीने अति चटपटी सुनि मुरली धुनि धाइ। हौं हुलसी निकसी सु तौ गौ हूल सी हिय लाइ।—पद्माकर ग्रं०, पृ० ७५। २ उभरना। उठना। ३ उमडना। बढना। उ०—संभु प्रसाद सुमति हिय हुलसी। रामचरितमानस कवि तुलसी।—तुलसी (शब्द०)। ४ शोभायमान होना। उल्लसित होना। सुशोभित होना। उ०—हिये हुलसै बनमाल सुहाई।

हुलसना(पु)[2]—क्रि० स० १ आनंदित करना। प्रफुल्लित करना। २ उभारना। उठाना। ३ अभिवर्धन करना। बढाना।

हुलसाना[1]—क्रि० स० [हिं० हुलसना] उल्लसित करना। आनंदपूर्ण करना। हर्ष की उमंग उत्पन्न करना। उ०—पवन

भुलावै, केकी कीर वतरावै देव, कोकिल हुलाइ हुलसावै कर तारी दै।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० १५७।

हुलसाना[2]—क्रि० अ० दे० 'हुलसना'। उ०—राम अनुज मन की गति जानी। भगतवछलता हिय हुलसानी।—तुलसी (शब्द०)।

हुलसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हुलसना] हुलास। उल्लास। आनंद की उमंग।—उ०—रामहिं प्रिय पावन तुलसी सी। तुलसिदास हित हिय हुलसी सो।—तुलसी (शब्द०)। २. किसी किसी के मत से तुलसीदास जी की माता का नाम।

हुलहुल—संज्ञा पुं० [?] एक छोटा बरसाती पौधा। अर्कपुष्पिका। सूरजवर्त।

विशेष—इस पौधे के कई भेद होते हैं। साधारण जाति के पौधे में सफेद फूल और मूँग सी लंबी फलियाँ लगती हैं। पीले, लाल और बैंगनी फूलवाले पौधे भी पाए जाते हैं। पत्तियाँ इसकी गोल और फाँकदार होती हैं जो दर्द दूर करने की दवा मानी जाती है। कान के दर्द में प्रायः इन पत्तियों का रस डाला जाता है। लोग इसकी पत्तियों का साग भी खाते हैं।

हुलहुला—संज्ञा पुं० [देश०] १ विलक्षण बात। अद्‌भुत बात। २ उपद्रव। उत्पात। ३ शोक। उमंग। ४ मिथ्या अभियोग।

हुलहुली—संज्ञा स्त्री० [सं०। तुल० बँ० हुलू (= शुभ कर्म के समय उपस्थित नर नारियों की शुभसूचक ध्वनि)] किसी मांगलिक अवसर पर स्त्रियों द्वारा उच्चरित अस्पष्ट शब्दावली [को०]।

हुला—संज्ञा पुं० [हिं० हूलना] लाठी का छोर या नोक।

हुलाग्रका—संज्ञा स्त्री० [सं०] अस्त्रविशेष [को०]।

हुलाना†[1]—क्रि० स० [हिं० हूलना] लाठी, भाले आदि को जोर से ठेलना। पेलना।

हुलाना(पु)[2]—क्रि० स० [सं० उल्लसन] प्रसन्न करना। उ०—पवन भुलावै, केकी कीर वतरावै देव, कोकिल हुलाइ हुलसावै कर तारी दै।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० १५७।

हुलारा†—संज्ञा पुं० [अनुध्व०] जोर लगाकर ऊपर उठाने का प्रयास। उ०—दूसरा भरा घड़ा उठा, हुलारा दे उसने सिर पर रख लिया।—सम्मावृत०, पृ० १२७।

हुलाल—संज्ञा स्त्री० [हिं० हुलसना] तरंग। लहर।

हुलास[1]—संज्ञा पुं० [सं० उल्लास] १ आनंद की उमंग। उल्लास। हर्ष की प्रेरणा। खुशी का उमड़ना। आह्लाद। उ०—तिनि लोगनि की गति दाननि की अति निरखि सचीपति भूलि रहे। ब्रजसोभ प्रकासहिं नंद निलासहिं 'दास' हुलासहिं कौन कहै।—भिखारी ग्र०, भा० १, पृ० २२६। २ उत्साह। हौसला। तबीयत का बढ़ना। उ०—सुनहिं राज, रामहि बनबासू। देहु लेहु सब सवति हुलासू।—तुलसी (शब्द०)। ३ उमगना। बढ़ना। ४ एक छंद जो चौपाई और त्रिभंगी के मेल से बनता है। दे० 'हुल्लास'।

हुलास[2]—संज्ञा स्त्री० सुंघनी। नासजरोशन।

हुलासदानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हुलास + दान] सुँघनीदानी।

हुलासिका(पु)—वि० स्त्री० [सं० उल्लासिका] आनंद देनेवाली। उत्साह देनेवाली। उ०—पुन्य प्रकासिका पाप विनासिका हीय हुलासिका सोहत लासिका।—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० २८१।

हुलासी—वि० [हिं० हुलास + ई(प्रत्य०)] १ आनंदयुक्त। उल्लसित। हुलास से युक्त। उ०—गिरिधरदास। विश्व कीरति बिलासी रमा हासी लौं उजासी जाकी जगत हुलासी है।—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० २८१। २ उत्साही। हौसलेवाला।

हुलिंग—संज्ञा पुं० [सं० हुलिङ्ग] मध्यदेश के अंतर्गत एक प्रदेश का नाम।

हुलिया—संज्ञा पुं० [अ० हुलियह] १ शकल। आकृति। रूपरंग। २ चेहरा। मुख। ३ किसी मनुष्य के रूपरंग आदि का विवरण। शकल सूरत और बदन पर के निशान वगैरह का ब्योरा।

मुहा०—हुलिया कराना या लिखाना = किसी भागे हुए, खोए हुए या लापता आदमी का पता लगाने के लिये उसकी शकल सूरत आदि पुलिस में दर्ज कराना। हुलिया तंग करना = किसी को अत्यंत परेशान करना। हुलिया तंग होना = झंझट में पड़ना। परेशानी में पड़ना। हुलिया बताना अथवा बयान करना = किसी के रूप, रंग, शकल, सूरत और शारीरिक चिह्न वगैरह का विवरण बताना। हुलिया बिगड़ना = किसी की बुरी हालत होना। किसी की गत बनना। हुलिया बिगाड़ देना या बिगाड़ना = ऐसा मारना कि चेहरा और चाल आदि पूर्ववत् न रह जाय।

यौ०—हुलियानामा = किसी मनुष्य के शकल सूरत और शरीर के विशेष निशान का विवरणपत्र।

हुलिहली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विवाह के अवसर पर स्त्रियों द्वारा गाया जानेवाला गीत। २ गर्जन। ३ भूँकना। भौंकना। हुआँ हुआँ करना [को०]।

हुलु—संज्ञा पुं० [सं०] मेढा।

हुलूक—संज्ञा पुं० [देश०] एक जाति का बंदर।

विशेष—इसकी लंबाई बीस इक्कीस इंच और रंग प्रायः सफेद होता है। यह आसाम के जंगलों में झुंड में रहता है और जल्दी पालतू हो जाता है।

हुलैया—संज्ञा स्त्री० [हिं० हूलना] डूबने के पहले नाव का डगमगाना।

हुल्ल—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का नृत्य।

हुल्लड़—संज्ञा पुं० [अनु० सं० हुलहुल] १ शोरगुल। हल्ला। कोलाहल। २ उपद्रव। ऊधम। धूम। ४ हलचल। आंदोलन। ५ दंगा बलवा।

क्रि० प्र०—करना।—होना।—मचना।—मचाना।

हुल्लास—संज्ञा पुं० [सं० उल्लास] १ चौपाई और त्रिभंगी के योग से बना हुआ एक छंद जिसके अंत के चारों चरणों में जगण का रखना वर्जित है। जैसे,—ठानो तिरभंगी छंद सुरंगी है बहुरंगी मनहि हरै। चंदनदिठ बना वनि सों आगे धरि दसु

चरनन कविता सुथरै । हुल्लास सुछदा आनँदकदा जस वर चदा रूप रजै । यों छद वखानैं सब मनमानै जाके वरनत सुकवि सजै ।
--छद ०, पृ० ६५। २ उल्लास । आह्लाद । उमग । उ०—औरै के गुन और को गुन पहिले उल्लास । दास सपूरन चद लखि सिंधु हियें हुल्लास ।—भिखारी० ग्र०, भा० २, पृ० १३३ ।

हुवेदा—वि० [फा० हुवैदा] जाहिर । स्पष्ट । उ०—हुवेदा इश्क केरा सूर कीता । दो जग तिस सूर सूं पुरनूर कीता ।—दक्खिनी०, पृ० १५४ ।

हुश—अव्य० [अनु०] दे० 'हुश्' ।

हुशकाई†—सज्ञा स्त्री० [अनु०] १ हुशकारने का भाव या कार्य । हुशकारने की क्रिया । २ हुशकारने की उजरत । उ०—धेले की बुलबुल हाथ न लगे और टका हुशकाई पड जाय, पुलिस की आँख मे गिर जाना है ।—चोटी०, पृ० १८ ।

हुशयार—वि० [फा०] दे० 'होशियार' ।

हुशवार—वि० [फा०] दे० 'होशियार' ।

हुशयारी—सज्ञा स्त्री० [फा०] दे० 'होशियारी' ।

हुशार(पु)—वि० [फा० होशयार, हुशयार] दे० 'होशियार' । उ०—हारे मुढे हुशार मुढे देख मुढे भाई । डोगी नजर देखते बावा नजीकई लाई ।—दक्खिनी०, पृ० १२३ ।

हुश्—अव्य० [अनु०] १ एक निषेधवाचक शब्द । अनुचित बात मुँह से निकालने पर रोकने का शब्द । २ पशुओ और पक्षियो आदि को अपनी ओर बुलाने या स्थान से हटाने के लिये प्रयुक्त शब्द ।

हुश्कार—सज्ञा स्त्री० [अनु० हुश्] हुश् हुश् करने की आवाज ।

हुश्कारना—क्रि० स० [हुश् से अनु०] हुश् हुश् शब्द करके कुत्ते को किसी ओर काटने आदि के लिये बढाना या पशु पक्षियो को किसी स्थान से हटाना ।

हुसियार(पु)†—वि० [फा० होशियार] दे० 'होशियार' । उ०—हम तो वचिगे साहब दया से शब्द डोर गहि उतरे पार । कहत कबीर सुनो भाई साधो इस ठगनी से रहो हुसियार ।—कविता कौ०, भा० १, पृ० ५१ ।

हुसियारी(पु)—सज्ञा स्त्री०[फा० होशियारी] दे० 'होशियारी' । देखरेख । चौकसी । उ०—अब गदडी की करु हुसियारी, दाग न लागै देखु विचारी ।—कबीर० रे०, पृ० १ ।

हुसूल—सज्ञा पुं० [अ०] १ लाभ । नफा । २ आय । आमदनी । ३ प्राप्ति । मिलना । ४ फल । परिणाम । नतीजा । उ०—सिजदा है य सर का मारना जिसमे कुछ भी हुसूल न हो ।—भारतेंदु ग्र०, भा०२, पृ० ५७० ।

हुसेन—सज्ञा पुं० [अ० हुसैन] दे० 'हुसैन' । उ०—एक दिवस जवरैल जु आए । हसन हुसेन को दुख सुनाए ।—हिंदी प्रेमा०, पृ० २३३ ।

हुसैन—सज्ञा पुं० [अ०] मुहम्मद साहब के दामाद अली के छोटे पुत्र का नाम ।

विशेष—इन्होने यजीद का शासन स्वीकार नही किया था और इसलिये करवला के मैदान मे अपने वड़े भाई हसन के साथ मारे गए थे । ये शीया मुसलमानो के पूज्य हैं । मुहर्रम इन्ही के शोक मे मनाया जाता है ।

हुसैनी—सज्ञा पुं० [अ० हुसैन] १ अगूर की एक जाति । २ फारसी सगीत के बारह मुकामो मे से एक ।

हुसैनी कान्हडा—सज्ञा पुं० [फा० हुसैनी + हिं० कान्हडा] सपूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं ।

हुस्न¹—सज्ञा पुं० [अ०] १ सौंदर्य । सुदरता । लावण्य । उ०—उजियाला हुस्न का है अदा खूब अज्ब गुल है । इस नाज बगीचे मे हम बुलबुलो का गुल है ।—ब्रज० ग्र०, पृ० ४२ ।

यौ०—हुस्न का आलम = सौंदर्य का काल । सुदरता का युग । हुस्नखेज । हुस्नपरस्त । हुस्नपसद । हुस्नफरोश ।

२ तारीफ की बात । खूबी । उत्कर्ष । जैसे,—हुस्नइतजाम । ३ अनूठापन । विचित्रता । जैसे—हुस्नइत्तफाक ।

हुस्न²—सज्ञा स्त्री० [अ०] सतीत्व [को०] ।

हुस्नआरा—वि० [फा०] सुदर । रूपवान । सुदरता को शृगारित करनेवाला [को०] ।

हुस्नइतजाम—सज्ञा पुं० [अ० हुस्ने इतिजाम] प्रवध की खूवी । अच्छा इतजाम । सुप्रवध ।

हुस्नइत्तफाक—सज्ञा पुं० [अ० हुस्ने इत्तिफाक] दैवयोग से या अचानक किसी काम का अच्छा होना ।

हुस्नखेज—वि० [अ० हुस्न + फा० खेज] जहाँ के लोग सुदर होते हों ।

हुस्नदान—सज्ञा पुं० [अ० हुस्न + हिं० दान] पानदान । खासदान ।

हुस्नपरस्त—सज्ञा पुं० [अ० हुस्न + फा० दान] सौंदर्योपासक । सुदर रूप का प्रेमी । रूप का लोभी ।

हुस्नपरस्ती—सज्ञा स्त्री० [अ० हुस्न + फा० परास्त] सौंदर्योपासना । सुदर रूप का प्रेम । रूप का लोभ ।

हुस्नपसद—वि० [अ० हुस्न + फा० पसद] सौंदर्यप्रेमी [को०] ।

हुस्नफरोश—सज्ञा स्त्री० [अ० हुस्न + फरोश] रूप का सौदा करनेवाली स्त्री । गणिका । तवायफ । वेश्या [को०] ।

हुस्नशिनास—वि० [अ०] सौंदर्यप्रेमी [को०] ।

हुस्ना—सज्ञा स्त्री० [अ०] अत्यत सुदर स्त्री । हसीन औरत [को०] ।

हुस्नेखुदादाद—सज्ञा पुं० [फा० हुस्नेखुदादाद] ईश्वरप्रदत्त सुदरता । प्रकृतिप्रदत्त लावण्य । प्राकृतिक सौंदर्य । सहज सुषमा ।

हुस्नेजन—सज्ञा पुं०[अ० हुस्नेजन]अच्छी भावना । सुदर धारणा [को०] ।

हुस्नेतलव—सज्ञा पुं० [अ०] किसी वस्तु को माँगने अथवा लेने का अच्छा ढग [को०] ।

हुस्नोइश्क—सज्ञा पुं० [अ०] १ सौंदर्य और प्रेम । सुदरता और स्नेह । २ नायिका और नायक [को०] ।

हुस्नोदमक—सज्ञा स्त्री० [अ० + फा० दम या दमक = अनु०] सौंदर्य और काति । लावण्य तथा शोभा । उ०—है हेच नमक हुस्नोदमक हूरो गिलेमाँ ।—कबीर म०, पृ० ४६६ ।

हुस्यार(पु)‡—वि० [फा० हुशयार] दे० 'होशियार'। उ०—नहिं काहु का पतियारा। मृग निशदिन रहै हुस्यारा।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० १४१।

हुस्यारपन(पु)—सज्ञा पुं० [फा०हुशयार+हिं० पन] होशियार होना। होशियारी। बुद्धिमत्ता। चातुर्य। चालाकी। उ०—ग्रायो सुनि कान्ह भूल्यो सकल हुस्यारपन, स्यारपन कस को न कहतु सिरातु है।—भिखारी० ग्र०, भा० २, पृ० ३३।

हुहव—सज्ञा पुं० [सं०] एक नरक का नाम।

हुहु—सज्ञा पुं० [स०] एक गधर्व का नाम। हूहू।

हुहू—सज्ञा पुं० [सं०] एक गधर्व [को०]।

हू—ग्रव्य० [सं० हूम्] क्रोध या वर्जन बोधक ग्रव्यय [को०]।

हूकार—सज्ञा पुं० [स० हूङ्कार] दे० 'हुकार'।

हूँ[१]—ग्रव्य० [ग्रनु०] १. किसी प्रश्न के उत्तर मे स्वीकारसूचक शब्द। २ समर्थनसूचक शब्द। ३ एक शब्द जिसके द्वारा सुननेवाला यह सूचित करता है कि मैं कही जाती हुई वात या प्रसग ध्यान से सुन रहा हूँ। दे० 'हू'।

हूँ[२]—ग्रव्य० [सं० उप, प्रा० उव, हिं० ऊ] दे० 'हू'। उ०—(क) ज्यो सव भाँति कुदेव कुठाकुर सेए वपु वचन हिये हूँ। त्यों न राम सुकृतज्ञ जे सकुचत सकृत प्रनाम किये हूँ।—तुलसी ग्र०, पृ० ५४४। (ख) स्याम वलराम विनु दूसरे देव को, स्वप्न हूँ माहिँ नहिँ हृदय ल्याऊँ।—सूर०, १।१६७।

हूँ[३]—क्रि० ग्र० वर्तमानकालिक क्रिया 'है' का उत्तम पुरुष, एकवचन का रूप। जैसे—'मैं हूँ'।

हूँ(पु)—सर्व० [स० ग्रहम्] ग्रस्मद् शब्द का उत्तम पुरुष एकवचन सर्वनाम। मैं। ग्रहम्। उ०—(क) हूँ कुँमलाणी कत विण जलह विहूँणी वेल।—ढोला०, दू० १६३। (ख) हूँ वलिहारी मज्जणाँ सज्जण मो वलिहार। हूँ सज्जण पगपानही सज्जण मो गलहार।—ढोला० दू०, १७६।

हूँकना—क्रि० ग्र० [ग्रनु०] १ गाय का वछडे की याद मे या ग्रौर कोई दु ख सूचित करने के लिये धीरे धीरे वोलना। हुँडकना। उ०—ऊधो! इतनी कहियो जाय। ग्रति कृशगात भई है तुम विनु वहुत दुखारी गाय। जल समूह वरसत ग्रँखियन तें हूँकति लीन्हे नावँ। जहाँ जहाँ गो दोहन करते ढूँढति सोइ सोइ ठावँ।—सूर (शब्द०)। २ हुकार शब्द करना। वीरो का ललकारना या दपटना। ३ सिसक कर रोना। कोई वात याद करके रोना।

हूँ(पु)[१]—सज्ञा स्त्री० [सं० ग्रहम्] ग्रहभाव। ग्रहता। निजत्व का ग्रभिमान। उ०—दादू हूँ की ठाहर है कहो, तन की ठाहर तू। री की ठाहर जी कहो, ज्ञान गुरु का यो।—दादू०, पृ० १८।

हूँछ(पु)[१]—सज्ञा स्त्री० [स० उञ्छ] सीला वीनना। दे० 'उछ'।

हूँछा[२]—सज्ञा स्त्री० [देश०] राजस्थान मे होनेवाली भुरट नाम की एक कँटीली घास का वीज। उ० — [illegible] कयर कँटाला रूँख। ग्राके फोगे छाँहडी हूँछाँ भाँजइ भूँख।—ढोला०, दू० ३६१।

हूँछवृत्ति(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० उञ्छवृत्ति] खेत मे गिरे हुए दानो को वीनकर जीवन निर्वाह करने का काम। उ०—हूँछ वृत्ति मन मानि सम दृष्टी इच्छा रहित। करत तपस्वी ध्यान कधा को ग्रासन किए।—व्रज० ग्र०, पृ० २३।

हूँठ—वि० [स० ग्रर्द्धचतुर्थ, प्रा० ग्रद्धुट्ठ (स० 'ग्रध्युष्ठ' कल्पित जान पडता है)] साढे तीन।

हूँठा[१]—सज्ञा पुं० [हिं० हूँठ] १ साढे तीन का पहाडा। २ साढे तीन उ०—वीस हिसो नर ग्रायु वखानी। हूँठा हाथ देही परमानी।—कवीर, सा०, पृ० २६२।

हूँठा†[२]—सज्ञा पु० [स० ग्रगुष्ठ] दे० 'ग्रँगूठा'।

हूँड—सज्ञा स्त्री० [हिं० होड] खेतो की सिंचाई मे किसानो की एक दूसरे को सहायता देने की रीति।

हूँण (पु)†—ग्रव्य० [प०] ग्रव। इस समय। दे० 'हुण'। उ०—हूँण तिसनौ कोई क्यो करि पावै जिसदे रूप न रेखै।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० २७५।

हूँत†—वि० [सं० ग्राहूत] वुलाया हुग्रा। ग्राहूत। उ०—ग्रत को माँ नै मुझै सोई जान फिर हूँत न कराया।—श्यामा०, पृ० ७१।

हूँमा—सज्ञा स्त्री० [फा० हुमा] एक पक्षी। दे० 'हुमा'। उ०—केवल हूँमा की हुँकारी की भाँई पर्वत के कदरो मे वोलती है।—श्यामा०, पृ० ७६।

हूँस[१]—सज्ञा स्त्री० [स० हिंस] १ दूसरे की वढती देखकर जलना। ईर्ष्या। डाह। २ दूसरे की कोई वस्तु देखकर उसे पाने के लिये दुखी रहना। ग्राँख गडाना। ३ वुरी नजर। टोक। जैसे,—वच्चे को हूँस लगी है।

क्रि० प्र०—लगना।

४ वुरा भला कहते रहने की क्रिया। कोसना। फटकार। जैसे,—दिन रात तुम्हारी हूँस कौन सहा करे ?

हूँस[२]—सज्ञा स्त्री० [ग्र० हवस] चाह। उ०—कल कदमूँ के लगर भारी कनक की हूँस।—रघु० रू०, पृ० २४०।

हूँसना[१]—क्रि० स० [हिं० हूँस] नजर लगाना।

हूँसना[२]—क्रि० ग्र० १ ईर्ष्या से जलना। २ किसी वस्तु पर ग्रँख गडाना। ललचाना। ४ भला वुरा कहना। कोसना। ५ रह रहकर चिढना।

हू(पु)†[१]—ग्रव्य० [वैदिक स० उप (=ग्रागे, ग्रौर), प्रा० उव, हिं० ऊ] एक ग्रतिरेकवोधक शब्द। उ०—(क) काल हू के काल महाभूतन के महाभूत, कर्म हू के करम निदान के निदान है।—तुलसी ग्र०, पृ० २२६। (ख) तुम हू कान्ह मनो भए ग्राजु कालि के दानि।—विहारी (शब्द०)।

हू[२]—सज्ञा पुं० गीदड के वोलने का शब्द।

यौ०—हूध्वनि, हूशब्द = हू, हू वोलनेवाला गीदड। स्यार। हूरव।

हूक—सज्ञा स्त्री० [सं० हिक्का] १ हृदय की पीडा। छाती या कलेजे का दर्द जो रह रहकर उठता है। साल।

क्रि० प्र०—उठना।—मारना।

२ दद। पीडा। कसक। उ०—हिए हूक भरि नैन जल विरह अनल अनि हूम।—माधवानल०, पृ० २०४। ३ मानसिक वेदना। सताप। दुख। उ०—व्यापै त्रिया यह जानि परी मनमोहन मीत सों मान किये तें। भूलिहूँ चूक परै जो कहूँ तिहि चूक की हूक न जाति हिये तें।—पद्माकर ग्र०, पृ० ११८। ४ धडक। आशका। खटका।

हूकना—क्रि० अ० [हिं० हूक+ना (प्रत्य०)] १ सालना। दुखना। दर्द करना। कसकना। २ पीडा से चौक उठना। उ०—(क) कुच तूंबी अब पीठि गडोऊँ। गहै जो हूकि गाढ रस धोऊँ।—जायसी (शब्द०)। (ख) त्यो पद्माकर पेखौ पलासन, पावक सी मनौ फूंकन लागी। वै ब्रजवारी वेचारी वधू बन बावरी लौ हिये हूकन लागी।—पद्माकर (शब्द०)।

हूका(पु)†—सज्ञा पुं० [अ० हुक्कह्] दे० 'हुक्का'। उ०—गादी कूँटि दावी वैठ हूका भी भराया।—शिखर०, पृ० ६०।

हूचक—सज्ञा पुं० [देश०] युद्ध। (डिं०)।

हूटना(पु)†—क्रि० अ० [सं० √हूड् (=चलना)] १ हटना। टलना। उ०—हथियारनि सूटैं नेकु न हूटैं खलदल कूटैं, लपटि लरैं। —पद्माकर ग्र०, पृ० २७। २ मुडना। पीठ फेरना। उ०—जुत्यन सों जूटैं नेकु न हूटैं, फिरि फिरि छूटैं फेरि लरैं।—पद्माकर ग्र०, पृ० २६।

हूठा—सज्ञा पुं० [हिं० अँगूठा] १ किसी को चाही वस्तु न देकर उसे चिढाने के लिये अँगूठा दिखाने की अशिष्ट मुद्रा। ठेंगा। उ०—प्यारे प्रीत वढाय लिया चित चोरि कै। हूठचौ दै इठलाय चल्या मुख मोर कै।—घनानद, पृ० १७५। २ अशिष्टो या गँवारो की वातचीत या विवाद मे ऐंठ दिखाते हुए हाथ मटकाने की मुद्रा। भद्दी या गँवारू चेष्टा।

मुहा०—हूठा देना=ठेंगा दिखाना। अशिष्टता से हाथ मटकाना। भद्दी चेष्टा करना। उ०—(क) नागरि विविध विलास तजि बसी गँवैलिन माहिं। मूढनि मे गनिवी कितौ हूठौ दै अठिलाहिं। —विहारी (शब्द०)। (ख) गदराने तन गोरटी, ऐपन आड लिलार। हूठ्यौ दै अठिलाय दृग, करै गँवारि सु मार। —विहारी (शब्द०)।

हूड—वि० [स० हूण (एक जाति)] १ हूड। उजड्ड। अनपढ। २ असावधान। वेखवर। ध्यान न रखनेवाला। ३ गावदी। अनाडी। ४ हठी। जिद्दी।

हूडा—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बाँस जो पच्छिमी घाट (मलय पर्वत) के पहाडो से लेकर कन्याकुमारी तक होता है।

हूढ(पु)†—वि० [स० हुण्ड (=ग्राम्य शूकर, मूर्ख राक्षस), प्रा० हुड (=वेढव अगवाला), देश०, हुड्ड (=भेडा)] दे० 'हूड'। उ०—राम नाम को छाडि कै और भजै ते मूढ। सुदर दुख पावै सदा जन्म जन्म वै हूढ।—सुदर० ग्र०, भा० २, पृ० ६७७।

हूण¹—सज्ञा पुं० [देश० या सं०] एक प्राचीन मगोल जाति जो पहले चीन की पूरबी सीमा पर लूट मार किया करती थी, पर पीछे अत्यत प्रवल होकर एशिया और योरप के सभ्य देशो पर आक्रमण करती हुई फैली।

विशेष—हूणो का इतना भारी दल चलता था कि उस समय के बडे बडे सभ्य साम्राज्य उनका अवरोध नही कर सकते थे। चीन की ओर से हटाए गए हूण लोग तुर्किस्तान पर अधिकार करके सन् ४०० ई० से पहले वक्षु नद (आक्सस नदी) के किनारे आ बसे। यहाँ से उनकी एक शाखा ने तो योरप के रोम साम्राज्य की जड हिलाई और शेष पारस साम्राज्य मे घुसकर लूटपाट करने लगे। पारसवाले इन्हे 'हेताल' कहते थे। कालिदास के समय मे हूण वक्षु के ही किनारे तक आए थे, भारतवर्ष के भीतर नही घुसे थे, क्योकि रघु के दिग्विजय के वर्णन मे कालिदास ने हूणो का उल्लेख वही पर किया है। कुछ आधुनिक प्रतियो मे 'वक्षु' के स्थान पर 'सिंधु' पाठ कर दिया गया है, पर वह ठीक नही। प्राचीन मिली हुई रघुवश की प्रतियो मे 'वक्षु' ही पाठ पाया जाता है। वक्षु नद के किनारे से जब हूण लोग फारस मे बहुत उपद्रव करने लगे, तब फारस के प्रसिद्ध बादशाह बहराम गोर ने सन् ४२५ ई० मे उन्हें पूर्ण रूप से परास्त करके वक्षु नद के उस पार भगा दिया। पर बहराम गोर के पौत्र फीरोज के समय मे हूणो का प्रभाव फारस मे वढा। वे धीरे धीरे फारसी सभ्यता ग्रहण कर चुके थे और अपने नाम आदि फारसी ढग के रखने लगे थे। फीरोज को हरानेवाले हूण बादशाह का नाम खुशनेवाज था। जब फारस मे हूण साम्राज्य स्थापित न हो सका, तब हूणो ने भारतवर्ष की ओर रुख किया। पहले उन्होने सीमात प्रदेश कपिशा और गाधार पर अधिकार किया, फिर मध्यदेश की ओर चढाई पर चढाई करने लगे। गुप्त सम्राट् कुमारगुप्त इन्ही चढाइयों मे मारा गया। इन चढाइयो से तत्कालीन गुप्त साम्राज्य निर्बल पडने लगा। कुमारगुप्त के पुत्र महाराज स्कदगुप्त बडी योग्यता और वीरता से जीवन भर हूणो से लडते रहे। सन् ४५७ ई० तक अतर्वेद, मगध आदि पर स्कदगुप्त का अधिकार बराबर पाया जाता है। सन् ४६५ के उपरात हूण प्रबल पडने लगे और अत मे स्कदगुप्त हूणो के साथ युद्ध करने मे मारे गए। सन् ४६६ ई० मे हूणो के प्रतापी राजा तुरमान शाह (सं० तोरमाण) ने गुप्त साम्राज्य के पश्चिमी भाग पर पूर्ण अधिकार कर लिया। इस प्रकार गाधार, काश्मीर, पजाब, राजपूताना, मालवा और काठियावाड उसके शासन मे आए। तुरमान शाह या तोरमाण का पुत्र मिहिरगुल (सं० मिहिरकुल) बडा ही अत्याचारी और निर्दय हुआ। पहले वह बौद्ध था, पर पीछे कट्टर शैव हुआ। गुप्तवशीय नरसिंहगुप्त और मालव के राजा यशोधर्मन् से उसन सन् ५३२ ई० मे गहरी हार खाई और अपना इधर का सारा राज्य छोडकर वह काश्मीर भाग गया। हूणो मे ये ही दो सम्राट् उल्लेख योग्य हुए। कहने की आवश्यकता नही कि हूण लोग कुछ और प्राचीन जातियो के समान धीरे धीरे भारतीय सभ्यता मे मिल गए। राजपूतो मे एक शाखा हूण भी है। कुछ लोग अनुमान करते है कि राजपूताने और गुजरात के कुनबी भी हूणो के वशज है।

२ एक स्वर्णमुद्रा। दे० 'हुन' (को०)। ३ बृहत्संहिता के अनुसार एक देश का नाम जहाँ हूण रहते थे।—बृहत्०, पृ० ८६।

हूत¹—वि० [सं०] १ पुकारा हुआ। जिसे आहूत किया गया हो। बुलाया हुआ। २ आमंत्रित (को०)।

हूत²—संज्ञा पुं० आह्वान करना। पुकारना। बुलाना (को०)।

हूत³—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मछली। मीन। २ बारहवीं राशि। मीन राशि (को०)।

हूतकार(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हूत + कार अथवा हुङ्कार] गर्जन। ललकार। हुंकार। उ०—गरज्जे गयंदौ ये जंजीर झारें। मनौ हैं हनूमंत की हूतकारें।—पद्माकर ग्रं०, पृ० २७९।

हूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बुलावा। आमंत्रण। २. आह्वान। ललकार। ३ आख्या। अभिधान। नाम (को०)।

हूतो(पु)—अव्य० [प्रा० हिंतो] दे० 'हुति'।

हूदा—संज्ञा पुं० [?] दे० 'हूल', 'हूला'।

हून¹—संज्ञा पुं० [अ०] तिरस्कार। अपमान (को०)।

हून²†—संज्ञा पुं० [सं०] हूण। स्वर्ण। सोना।

हूनना(पु)†—क्रि० स० [सं० हवन] हवन करना। अग्नि में भस्म करना। उ०—सूर कवन रावन सरिस स्वकर काटि जेहि सीस। हुने अनल अति हरष बहु बार साखि गौरीस।—मानस, ६। २८।

हूनर(पु)—संज्ञा पुं० [फ़ा० हुनर] दे० 'हुनर'। उ०—हद अवर हूनरदार हूनर भेट दें बहुभाव।—रघु० रू०, पृ० ७१।

हूनरदार(पु)—वि० [फ़ा० हुनर + दार] दे० 'हुनरमंद'। उ०—हद अवर हूनरदार हूनर भेट दे बहुभाव।—रघु० रू०, पृ० ७१।

हूनिया†—संज्ञा स्त्री० [सं० हूण (= देश)] एक प्रकार की भेंड़ जो तिब्बत के पश्चिम भाग में पाई जाती है।

हूब¹—संज्ञा स्त्री० [अ० हुब्ब] दे० 'हुब्ब'।

हूब²—संज्ञा पुं० [अ०] १ पाप। गुनाह। दोष। २. हत्या। हनन। वध (को०)।

हूबहू—वि० [अ०] ज्यों का त्यों। ठीक वैसा ही। बिल्कुल समान या सदृश। तुल्य।

हूम(पु)—संज्ञा पुं० [सं० होम] दे० 'होम²'। उ०—हिऐं हूक भरि नैंन जल, बिरह अनल अति हूम।—माधवानल०, पृ० २०४।

हूय—संज्ञा पुं० [सं०] आह्वान। आवाहन। जैसे,—देवहूय, पितृ हूय।

हूर¹—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मुसलमानों के स्वर्ग की अप्सरा। उ०—बिना उसके जल्वा दिखाती कोई परी या हूर नहीं। सिवा यार के, दूसरे का इस दुनियाँ में नूर नहीं।—भारतेंदु ग्रं०, भा० २, पृ० १९४। २ वह औरत जिसकी आँखें और बाल अत्यंत श्याम हों तथा शरीर अत्यंत गौर एवं दीप्त हो। अत्यंत खूबसूरत औरत। अप्सरा सी सुंदर स्त्री (को०)।

हूर²—संज्ञा पुं० [अ०] १ हत्या। हनन। कतल। वध २ नुकसान। हानि (को०)।

हूरना—क्रि० स० [हिं० हूल + ना (प्रत्य०)] १ दे० 'हूलना'। †२ ठूस ठूसकर खाना।

हूरव—संज्ञा पुं० [सं०] स्यार। गीदड़ (को०)।

हूरहूण—संज्ञा पुं० [सं०] हूणों की एक शाखा जिसने योरप में जाकर हलचल मचाई थी। श्वेतहूण।

हूरा—संज्ञा पुं० [हिं० हूलना] १ लाठी का निचला छोर। दे० 'हूला'। २ †घूँसा। मुक्का।

हूराहूरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक त्योहार या उत्सव जो दीवाली के तीसरे दिन होता है। †२ मुक्का मुक्की। घूसेबाजी। मुक्केबाजी।

हूर्छन—संज्ञा पुं० [सं०] टेढ़ी चाल। वक्र गति। धूर्तता (को०)।

हूर्छिता—वि० [सं० हूर्छितृ] १ वक्र गति से चलनेवाला। २ धूर्त। काइयाँ (को०)।

हूर्णि—संज्ञा स्त्री० [सं०] लघु प्रवाह। छोटी नहर या जलप्रणाली (को०)।

हूल¹—संज्ञा स्त्री० [सं० शूल] १ भाले, डंडे, छुरे, आदि की नोक या सिरे को जोर से ठेलने अथवा भोंकने की क्रिया। २ लासा लगाकर चिड़िया फँसाने का बाँस। ३ वमन करने की प्रवृत्ति। हुल्ल। ४ हूक। शूल। पीड़ा। (छाती या हृदय की)। उ०—कोकिल केकी कोलाहल हूल उठी उर में मति की गति लूली।—केशव (शब्द०)।

क्रि० प्र०—उठना।

हूल²—संज्ञा स्त्री० [अनु० सं० हुलहुल] १ कोलाहल। हल्ला। धूम। २ अस्तव्यस्तता। उलट पलट। परिवर्तन। ३ हर्षध्वनि। आनंद का शब्द। ४ युद्धाह्वान। ललकार। ५ खुशी। आनंद। प्रसन्नता।

यौ०—हूलफूल।

हूलना—क्रि० स० [हिं० हूल + ना (प्रत्य०)] १ लाठी, भाले, छुरे आदि की नोक या सिरे को जोर से ठेलना या घुसाना। सिरे या फल को जोर से ठेलना या धँसाना। गोदना। गड़ाना। उ०—हूलै इतै पर मैन महावत, लाज के आँदू परे गथि पायँन।—पद्माकर (शब्द०)। २ शूल उत्पन्न करना।

हूला—संज्ञा पुं० [हिं० हूलना] शस्त्र आदि हूलने की क्रिया या भाव।

हूश¹—वि० [हिं० हूड़ या फ़ा० हूश] १ असभ्य। जंगली। उजड्ड। २ अशिष्ट। असंस्कृत। बेहूदा।

हूश²—संज्ञा पुं० असंस्कृत या असभ्य जन। अशिष्ट व्यक्ति। जंगली आदमी। उ०—वे इसे हूशों की जबान बतलाते है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ६३।

हूस—संज्ञा पुं० [हिं० हूश] दे० 'हूश²'। उ०—नीति विरुद्ध सदैव दूत वध के अघ साने। रूस कुमति फँसि हूस आप सों आप नसाने।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० ७९४।

हूसड़—वि० [हिं० हूस + ड़ (प्रत्य०)] दे० 'हूश¹'।

हूहू—संज्ञा स्त्री० [अनु०] हुंकार। कोलाहल। युद्धनाद। उ०—(क)

चले हूह करि यूथप वदर ।—तुलसी (शब्द०)। (ख) जय जय जय रघुवस मनि धाए करि दइ हूह। —तुलसी (शब्द०) ।

क्रि० प्र०—करना ।—देना ।

हूहू[1]—सज्ञा पु० [अनु०] अग्नि के जलने का शब्द । लपट के उठने या लहराने का शब्द । धायँ धायँ । जैसे,—हूहू करके जलना ।

हूहू[2]—सज्ञा पु० [स०] एक गधर्व का नाम ।

हृच्छय[2]—वि० [स०] हृदय मे शयन या निवास करनेवाला ।

हृच्छय[1]—संज्ञा पुं० १ मनोभव । कामदेव । मनसिज । २ प्रीति । प्रेम । स्नेह । ३ आत्मा । आत्मचैतन्य [को०] ।

हृच्छयपीडित—वि० [स० हृच्छयपीडित] १ कामवासना से पीडित । २ प्रेमभाव के कारण दु खी । प्रेम मे व्याकुल ।

हृच्छयवर्धन—वि० [स०] १ कामवर्धक । कामोद्दीपक । २ प्रेमभाव की अभिवृद्धि करनेवाला । स्नेहवर्धक [को०] ।

हृच्छूल—सज्ञा पुं० [स०] १ मन की कसक । हृदय की पीडा । २ कलेजे का दर्द । हृदय मे होनेवाली वेदना या शूल जो एक रोग है ।

हृच्छोक—सज्ञा पुं० [स०] मनस्ताप । हृद्गत वेदना या परिताप [को०] ।

हृच्छोष—सज्ञा पुं० [सं०] हृदयशून्यता । असहृदयता ।

हृज्ज[1]—वि० [स० हृत् + ज] मन से उत्पन्न । जो हृदय से या हृदय मे जायमान हो ।

हृणि—सज्ञा पुं० [सं०] १ कोप । क्रोध । २ प्रज्वलित होना । जल उठना । प्रज्वलन [को०] ।

हृणिया, हृणीया—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ भर्त्सना । निंदा । विगर्हण । २ लाज । शर्म । हया । ३ कृपा । दया । अनुकपा [को०] ।

हृत्—वि० [सं०] १ ले जानेवाला । २ हर्ता । हरण करनेवाला । जैसे,—धनहृत् । ३ वहन करनेवाला । ४ मोहित या मुग्ध करनेवाला [को०] ।

हृत[1]—वि० [स०] १ जिसे ले गए हो । पहुँचाया हुआ । २ हरण किया हुआ । लिया हुआ । ३ वंचित (को०) । ४ स्वीकार किया हुआ । स्वीकृत (को०) । ५ मोहित । मुग्ध (को०) । ६ विभागयुक्त । विभाजित । विभक्त (को०) ।

हृत[2]—सज्ञा पुं० हिस्सा । विभाग । भाग [को०] ।

हृतचद्र—वि० [सं०] जो चद्रमा से वियुक्त या वचित हो । जैसे,—कमल [को०] ।

हृतज्ञान—वि० [सं०] ज्ञानरहित । अज्ञ [को०] ।

हृतदार—वि० [सं०] पत्नी से वियुक्त या वचित [को०] ।

हृतद्रव्य—वि० [स०] धन सपत्ति से रहित [को०] ।

हृतधन—वि० [सं०] जिसकी सपत्ति नष्ट हो गई हो [को०] ।

हृतप्रसाद—वि० [सं०] जो शाति मे वचित हो । शातिरहित । अशात [को०] ।

हृतमन—वि० [सं०] सज्ञा से हीन । बुद्धि या मस्तिष्क से विरहित [को०] ।

हृतराज्य—वि० [स०] जो राज्य से वचित किया गया हो [को०] ।

हृतवासा वि० [सं०] जिसका वस्त्र हरण कर लिया गया हो [को०] ।

हृतवित्त—वि० [स०] दे० 'हृतद्रव्य' [को०] ।

हृतशिष्ट—वि० [सं०] जो हरण करने से बच गया या शेष रह गया हो [को०] ।

हृतशेष—वि० [स०] दे० 'हृतशिष्ट' ।

हृतसर्वस्व—वि० [स०] जिसका सब कुछ हरण कर लिया गया हो । पूर्णत बरबाद [को०] ।

हृतसर्वस्वा—वि० स्त्री० [सं०] (वह स्त्री) जिसका सर्वस्व हरण किया गया हो । जिसका सब कुछ छीन लिया गया हो । उ०—हृदय को छीन लेनेवाली स्त्री के प्रति हृतसर्वस्वा रमणी पहाडी नदियों से भयानक, ज्वालामुखी के विस्फोट से वीभत्स और प्रलय की अनल शिखा से भी लहरदार होती है ।—स्कद०, पृ० ११६ ।

हृतसार—वि० [स०] जिसका सार भाग ले लिया गया हो । जिसका उत्कृष्ट अश या भाग ले लिया गया हो [को०] ।

हृताधिकार—वि० [सं०] जिसके अधिकार का हरण कर लिया गया हो । जो अधिकार या पद से च्युत कर दिया गया हो । अपदस्थ ।

हृति—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ ले जाना । हरण । २ ध्वस । नाश । विनाश । ३ लूटने की क्रिया । लूट ।

हृतोत्तर—वि० [सं०] बिना उत्तर के छोडा हुआ । अनुत्तरित । जिसका उत्तर न दिया गया हो या छोड दिया गया हो [को०] ।

हृतोत्तरीय—वि० [स०] जिसका उत्तरीय या उपवस्त्र हरण कर लिया गया हो [को०] ।

हृत्कप—सज्ञा पुं० [स० हृत्कम्प] १. हृदय की कँपकँपी । दिल की धडकन । २ जी का दहलना । अत्यत भय । दहशत ।

हृत्कमल—सज्ञा पुं० [सं०] १ हृदय के पास स्थित एक प्रकार का चक्र जो योग मे माने गए षट्चक्रो मे से एक है । २ दे० 'हृत्पकज' [को०] ।

हृत्तल—सज्ञा पुं० [स०] हृदय का तल । हृत्प्रदेश । अतस्तल । उ०—उसके हृत्तल पर विक्षोभ भी हुआ ।—सुनीता, पृ० ११६ ।

हृत्ताप—सज्ञा पुं० [सं०] हृदय की दाह या जलन । मनोवेदना [को०] ।

हृत्पकज—सज्ञा पुं० [स० हृत्पङ्कज] कमल की तरह हृदय । कमल-रूपी हृदय ।

हृत्पद्म—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'हृत्पकज' ।

हृत्पिंड—सज्ञा पुं० [सं० हृत्पिण्ड] हृदय का कोश या थैली । कलेजा । जिगर ।

हृत्पीडन—सज्ञा पुं० [स०] हृदय को पीडित करना । हृदय को दु ख देना । मन दुखाना [को०] ।

हृत्पीडा—सज्ञा स्त्री० [सं०] हृदय की वेदना । मन की वेदना ।

हृत्पुंडरीक—संज्ञा पुं० [सं० हृत्पुण्डरीक] हृत्कमल । हृत्पंकज ।

हृत्पुष्कर—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हृत्पंकज' ।

हृत्प्रिय—वि० [सं०] जो हृदय को प्रिय हो । जो मन को प्रिय लगता हो [को०] ।

हृत्सार—संज्ञा पुं० [सं०] साहस । हिम्मत । कलेजा [को०] ।

हृत्स्तंभ—संज्ञा पुं० [सं० हृत्स्तम्भ] हृदय का स्तंभयुक्त या निश्चेष्ट होना । हृदय का पक्षाघात [को०] ।

हृत्स्थ—वि० [सं०] हृदयस्थित । हृदयस्थ [को०] ।

हृत्स्थल—संज्ञा पुं० [सं० हृत् + स्थल] हृदयस्थल । हृदय । उ०—उनकी नेत्र ज्योति बिजली की तरह हृत्स्थल में लगती है ।—काया० पृ० ६७ ।

हृत्स्फोट—संज्ञा पुं० [सं०] हृदय फटना । हृदय का विदीर्ण या भग्न होना [को०] ।

हृद्—संज्ञा पुं० [सं०] १ हृदय । दिल । मन । २ छाती । वक्ष । सीना (को०) । ३ चैतन्य । आत्मा (को०) । ४ किसी वस्तु का सत् या सार भाग । वस्तु का भीतरी या मध्यवर्ती भाग । हीर (को०) ।

हृदनी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० ह्रदनी (= नदी), ह्राद (= अव्यक्त ध्वनि करना)] नदी । सरिता । उ०—सरिता धुनी तरंगिनी तटिनी हृदनी होइ ।—अनेकार्थ०, पृ० ४४ ।

हृदयगत—वि० [सं० हृदयङ्गत] जिसे समझा दिया गया हो या जिसका सम्यक् बोध हो गया हो । हृदय में बिठाया हुआ । हृदयस्थ । उ०—यदि किसी ने सचमुच उसके बारे में पहले हृदयगत करा दिया होता, तो मेरे जैसे कितने बच गए होते ।—किन्नर०, पृ० ३ ।

हृदयगम¹—वि० [सं० हृदयङ्गम] १. मन में आया हुआ । मन में बैठा हुआ । २ समझ में आया हुआ । जिसका सम्यक् बोध हो गया हो ।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

२ मर्मस्पर्शी । रोमांचकारी (को०) । ३ प्रिय । सुंदर । मनोहर । आनंददायक । (को०) ४ सुखद । आकर्षक । रुचिकर (को०) । ५ प्यारा । प्रिय । वल्लभ (को०) । ६ वांछित । इष्ट । ७ समुचित । योग्य । उपयुक्त (को०) । ८ हृदय से निकला हुआ (को०) ।

हृदयगम²—संज्ञा पुं० उचित कथन । उपयुक्त कथन । हृदय को स्पर्श करनेवाली बात या उक्ति [को०] ।

हृदय—संज्ञा पुं० [सं०] १ छाती के भीतर बाईं ओर स्थित मांसकोश या थैली के आकार का एक भीतरी अवयव जिसमें स्पंदन होता है और जिसमें से होकर शुद्ध लाल रक्त नाडियों के द्वारा सारे शरीर में संचार करता है । दिल । कलेजा । विशेष दे० 'कलेजा' ।

मुहा०—हृदय धडकना = (१) हृदय का स्पंदन करना या कूदना (२) भय या आशंका होना ।

२ छाती । वक्षस्थल ।

मुहा०—हृदय से लगाना = आलिंगन करना । भेंटना । हृदय विदीर्ण होना = अत्यंत शोक होना । विशेष दे० 'छाती' ।

३ अंतःकरण का रागात्मक अंग । प्रेम, हर्ष, शोक, करुणा, क्रोध आदि मनोविकारों का स्थान । जैसे,—उसे हृदय नहीं है, तभी ऐसा निष्ठुर कर्म करता है ।

मुहा०—हृदय उमडना = मन में प्रेम, शोक या करुणा का वेग उत्पन्न होना । हृदय भर आना = दे० 'हृदय उमडना' । विशेष दे० 'जी' और 'कलेजा' ।

४ अंतःकरण । मन । जैसे,—वह अपने हृदय की बात किसी से नहीं कहता ।

मुहा०—हृदय की गाँठ = (१) मन का दुर्भाव । (२) कपट । कुटिलता । विशेष दे० 'जी' और 'मन' ।

५ अंतरात्मा । आत्मा । ६ विवेकबुद्धि । जैसे,—हमारा हृदय गवाही नहीं देता । (७) किसी वस्तु का सार भाग । ८. तत्व । सारांश । ९ गुह्य बात । गूढ रहस्य । १० वेद (को०) । ११ अहंकार (को०) । १२ अत्यंत प्रिय व्यक्ति । प्राणाधार ।

हृदयकंप—संज्ञा पुं० [सं० हृदयकम्प] १ हृदय की कँपकँपी । दिल की धडकन । २ जी का दहलना । दहशत [को०] ।

हृदयकंपन—वि० [सं० हृदयकम्पन] मन को क्षुब्ध करनेवाला ।

हृदयक्लम—संज्ञा पुं० [सं०] मन की कमजोरी या शैथिल्य । हृदयदौर्बल्य [को०] ।

हृदयक्षोभ—संज्ञा पुं० [सं०] मन क्षुब्ध या अशांत होना [को०] ।

हृदयगत—वि० [सं०] दे० 'हृद्गत' ।

हृदयग्रंथि—संज्ञा स्त्री० [सं० हृदयग्रन्थि] मन की गाँठ । हृदय को कष्ट देनेवाली वस्तु । जैसे,—अविद्यारूप संसार का बंधन [को०] ।

हृदयग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] कलेजा पकडने का रोग । कलेजे का शूल या ऐंठन ।

हृदयग्राह—संज्ञा पुं० [सं०] हृदय की बात को जान लेना ।—भेद या रहस्य जान लेना [को०] ।

हृदयग्राहक—वि० [सं०] हृदय का ग्राहक । हृदय को ग्रहण करनेवाला । प्रतीति या विश्वास दिलानेवाला [को०] ।

हृदयग्राही—वि०, संज्ञा पुं० [सं० हृदयग्राहिन्] [स्त्री० हृदयग्राहिणी] १ मन को मोहित करनेवाला । २ रुचिकर । भानेवाला ।

हृदयचोर—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हृदयचौर' ।

हृदयचौर—संज्ञा पुं० [सं०] दिल चुरानेवाला । मन को मोहनेवाला ।

हृदयच्छिद्—वि० [सं०] हृदय को छेदनेवाला या पीडायुक्त करनेवाला [को०] ।

हृदयज—संज्ञा पुं० [सं०] आत्मज । पुत्र । बेटा [को०] ।

हृदयज्ञ—वि० [सं०] १ हृदय को जानने समझनेवाला । २ रहस्य या भेद को समझनेवाला [को०] ।

हृदयज्वर—संज्ञा पुं० [सं०] हृदय की जलन । मनोवेदना [को०] ।

हृदयदाह—संज्ञा पुं० [सं०] मन की वेदना । हृदयगत दाह या जलन [को०] ।

हृदयदाही—वि० [सं० हृदयदाहिन्] दिल को जलाने या पीडित करनेवाला [को०] ।

हृदयदीप, हृदयदीपक—संज्ञा पुं० [सं०] वोपदेव द्वारा रचित ओषध शास्त्र सबधी एक अभिधान ग्रंथ ।

हृदयदेश—संज्ञा पुं० [सं०] हृदय का स्थान या क्षेत्र । हृदय [को०] ।

हृदयदौर्बल्य—संज्ञा पुं० [सं०] हृदय की दुर्बलता । मन की कमजोरी । कायरता । भीरुता ।

हृदयद्रव—संज्ञा पुं० [सं०] हृदय का तीव्र गति से धडकना । तेजी से दिल की धडकन ।

हृदयनिकेत—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसका निवासस्थान हृदय है । मनसिज । कामदेव । उ०—सकल कला करि कोटि विधि हारेउ सेन समेत । चली न अचल समाधि सिव, कोपेउ हृदयनिकेत ।—तुलसी (शब्द०)

हृदयनिकेतन—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव [को०] ।

हृदयपीडा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मनोवेदना । हृत्पीडा [को०] ।

हृदयपुंडरीक—संज्ञा पुं० [सं० हृदयपुण्डरीक] पुंडरीक सदृश हृदय । कमल सदृश हृदय [को०] ।

हृदयपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] हृदय की धडकन या स्पदन ।

हृदयप्रमाथी—वि० [सं० हृदयप्रमाथिन्] [वि० स्त्री० हृदयप्रमाथिनी] १ मन को क्षुब्ध या चचल करनेवाला । २ मन मोहनेवाला ।

हृदयप्रस्तर—वि० [सं०] पत्थर सदृश हृदयवाला । कठोरहृदय । क्रूरहृदय । निष्ठुर । सगदिल [को०] ।

हृदयप्रिय—वि० [सं०] १ स्वादयुक्त । स्वादिष्ट । सुस्वादु । २ हृदय को प्रिय लगनेवाला । जो मन को प्रिय हो [को०] ।

हृदयबंधन—वि० [सं० हृदयबन्धन] हृदय को बाँधने या मुग्ध करनेवाला [को०] ।

हृदयमथन—संज्ञा पुं० [सं० हृदय + मन्थन] भावो का आलोडन विलोडन । भावो का पारस्परिक सघर्ष । उ०—पत जी का हृदयमथन एक नवीन आशावाद मे परिणत हो गया ।—युगात, पृ० (छ) ।

हृदयरज्जु—संज्ञा पुं० [सं०] वह रेखा जो देशातर निकालने के लिये कल्पित की जाती है । विशेष दे० 'मध्यरेखा' ।

हृदयरोग—संज्ञा पुं० [सं०] हृदयसबधी रोग । दे० 'हृद्रोग' [को०] ।

हृदयलेख—संज्ञा पुं० [सं०] १. औत्सुक्य । चिंता । व्यग्रता । २ बोध । ज्ञान [को०] ।

हृदयलेख्य—वि० [सं०] हर्ष या आनद देनेवाला [को०] ।

हृदयवल्लभ—संज्ञा पुं० [सं०] प्रेमपात्र । प्रियतम ।

हृदयवान्—वि० [सं० हृदयवत्] [वि० स्त्री० हृदयवती] १ जिसके मन मे प्रेम, करुणा आदि कोमल भाव उत्पन्न हो । सहृदय । २. भावुक । रसिक ।

हृदयविदारक—वि० [सं०] १ अत्यत शोक उत्पन्न करनेवाला । २ अत्यत करुणा या दया उत्पन्न करनेवाला । जैसे,—हृदयविदारक घटना ।

हृदयविध्—वि० [सं०] दे० 'हृदयवेधी' ।

हृदयविरोध—संज्ञा पुं० [सं०] हृदय की पीडा या उपप्लव [को०] ।

हृदयवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] हृदय की प्रकृति या प्रवृत्ति । मन की सद्भावना या साधुशीलता [को०] ।

हृदयवेधी—वि० [सं० हृदयवेधिन्] [वि० स्त्री० हृदयवेधिनी] १ मन का अत्यत मोहित करनेवाला । जैसे,—हृदयवेधी कटाक्ष । २ अत्यत शोक उत्पन्न करनेवाला । ३ बहुत अप्रिय या बुरा लगनेवाला । अत्यत कटु । जैसे,—हृदयवेधी वचन ।

हृदयव्यथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हृदय की पीडा । मन की व्यथा [को०] ।

हृदयव्याधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] हृदय का रोग [को०] ।

हृदयशल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ हृदय का शूल । मन का काँटा । २ हृत्प्रदेश का घाव, चोट या जख्म [को०] ।

हृदयशून्य—वि० [सं०] १ जो सहृदय न हो । अरसिक । २ क्रूर । निष्ठुर । हृदयहीन [को०] ।

हृदयशैथिल्य—संज्ञा पुं० [सं०] हृदय की शिथिलता या विषण्णता । हृदयदौर्बल्य [को०] ।

हृदयशोषण—वि० [सं०] हृदय या मन का शोषण करनेवाला [को०] ।

हृदयसंघट्ट—संज्ञा पुं० [सं० हृदयसङ्घट्ट] हृदय की गति का रुक जाना । हृदय की जडता या अत्यत शक्तिहीनता । दिल एकबारगी बेकाम हो जाना ।

हृदयसंसर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] मन का मिलना । हृदय का मेल [को०] ।

हृदयसमित—वि० [सं० हृदयसम्मित] १ वह जो मन को इष्ट या प्रिय हो । २ हृदय अर्थात् वक्ष के बराबर ऊँचा [को०] ।

हृदयस्थ—वि० [सं०] १ हृदय मे स्थित या रहनेवाला । उ०—कही कोई सौंदर्यप्रेमी एकात भाव से उस महाशोक के सौंदर्य को अपलक तृपित नेत्रो से हृदयस्थ किए जा रहे थे ।—ज्ञान०, पृ० १६७ । २ जो शरीर मे हो । शरीर मे स्थित । शरीरस्थ । जैसे,—कीटाणु (को०) ।

हृदयस्थली—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'हृदयस्थान' [को०] ।

हृदयस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] छाती । वक्ष स्थल [को०] ।

हृदयस्पृक्—वि० [सं०] मन को छूने या स्पर्श करनेवाला । दे० 'हृदयस्पर्शी' ।

हृदयस्पर्शी—वि० [सं० हृदयस्पर्शिन्] [वि० स्त्री० हृदयस्पर्शिणी] १ हृदय पर प्रभाव डालनेवाला । दिल पर असर करनेवाला । २ चित्त को द्रवीभूत करनेवाला । जिससे मन मे दया या करुणा हो ।

हृदयहारी—वि० [सं० हृदयहारिन्] [वि० स्त्री० हृदयहारिणी] मन मोहनेवाला । जी को लुभानेवाला ।

हृदयहीन—वि० [सं०] १ कठोर हृदयवाला। २ क्रूर। निष्ठुर। जो सहृदय न हो। अरसिक। उ०—हृदयहीन कह ले मलीन मैं मधु वारिधि का मुग्ध मीन। अपवर्ग व्यर्थ केवल निसर्ग, संगीत, सुरा, सुंदरी स्वर्ग।—मधु०, पृ० ३३।

हृदयाकाश—संज्ञा पुं० [सं० हृदय + आकाश] हृदय का विस्तारक्षेत्र। हृदयरूपी आकाश। संपूर्ण हृदय [को०]।

हृदयात्मा—संज्ञा पुं० [सं० हृदयात्मन्] कंक या क्रौंच नामक पक्षी [को०]।

हृदयाधिकारी—वि० [सं० हृदय + अधिकारिन्] हृदय पर शासन करनेवाला। प्रेमपात्र। अतिशय प्रिय। उ०—हृदयाधिकारी रघुकुलमणि रघुनाथ के।—अपरा, पृ० ८०।

हृदयानुग—वि० [सं०] संतोषकर। तुष्टिकारक [को०]।

हृदयामय—संज्ञा पुं० [सं०] हृदय का रोग। हृद्रोग [को०]।

हृदयारूढ—वि० [सं० हृदय + आरूढ] हृदय पर चढा हुआ। हृदयस्थ। उ०—सो याके व्रज को स्वरूप हृदयारूढ ह्वै रह्यो।—दो सौ बावन०, भा०१, पृ० २२६।

हृदयालंकार—संज्ञा पुं० [सं० हृदय + अलङ्कार] हृदय का आभूषण। हृदय की शोभा। उ०—यह तृष्णा ही कौस्तुभमणि बन मुझे दिखायेगी वह द्वारवन उसका हृदयालंकार।—वीणा, पृ० २९।

हृदयालु—वि० [सं०] १ सहृदय। रसिक। भावुक। २ अच्छे स्वभाव का। सुशील।

हृदयावर्जक—वि० [सं० हृदय + आवर्जक] हृदय को लुभानेवाला। मन को खींचनेवाला। आह्लादक [को०]।

हृदयाविध्—वि० [सं०] हृदयवेधक। मर्मंतुद [को०]।

हृदयासन—संज्ञा पुं० [सं० हृदय + आसन] हृदयरूपी या हृदय का आसन। उ०—बैठे हृदयासन स्वनतमन। क्रिया समाहित रूप विचिंतन।—अर्चना, पृ० ५।

हृदयिक—वि० [सं०] सहृदय। भावुक। हृदयालु [को०]।

हृदयी—वि०[सं० हृदयिनन्] १ हृदयवाला। सहृदय। २ सुशील [को०]।

हृदयेश—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० हृदयेशा] प्रेमपात्र। प्यारा। प्रियतम। २ पति। स्वामी। भर्ता।

हृदयेशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रियतमा। प्राणेश्वरी। २ पत्नी [को०]।

हृदयेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० हृदयेश्वरी] दे० 'हृदयेश'।

हृदयेश्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'हृदयेशा'।

हृदयोद्गार—संज्ञा पुं० [सं० हृदय + उद्गार] मनोभाव। कामना। इच्छा। उ०—सुख दुख की प्रियकथा स्वप्न, बंदी थे हृदयोद्गार। एक देश था सही एक था क्या वाणी व्यापार।—युग०, पृ० ९४।

हृदयोद्वेष्टन—संज्ञा पुं० [सं०] हृदय या मन का संकोच। हृदय का उद्वेष्टन या बंधन [को०]।

हृदयोन्मादकर—वि० [सं०] हृदय को उन्मत्त या उन्माद से युक्त करनेवाला [को०]।

हृदयोन्मादिनी[1]—वि० स्त्री० [सं०] १ हृदय को उन्मत्त या पागल करनेवाली। २ मन को मोहनेवाली।

हृदयोन्मादिनी[2]—संज्ञा स्त्री० संगीत में एक श्रुति।

हृदय्य—वि० [सं०] जो हृदय को अत्यंत प्रिय हो [को०]।

हृदा(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० हृदय, पु० हिं० हिरदा] दे० 'हृदय'। उ०—गुरगम मंत्र जाप करु अजपा हृदा पुस्तक कीजै।—रामानंद०, पृ० २७।

हृदामय—संज्ञा पुं० [सं०] हृदय का रोग। हृद्रोग [को०]।

हृदावर्त—संज्ञा पुं० [सं०] घोड़े की छाती पर की भौंरी जिसे घोड़े का बहुत बड़ा दोष या ऐब माना जाता है [को०]।

हृदि[1]—संज्ञा पुं० [सं० हृद् का अधिकरण रूप] हृदय में। उ०—द्वंद्व विपति भयफंद विभंजय। हृदि बसि राम काममद गंजय।—तुलसी (शब्द०)।

हृदि[2]—संज्ञा पुं० [सं०] एक यादवकुमार का नाम [को०]।

हृदिशय—वि० [सं०] हृदय में शयन करने अथवा रहनेवाला [को०]।

हृदिस्थ—वि० [सं०] दे० 'हृदयस्थ'।

हृदिस्पृक्—वि० [सं० हृदिस्पृश्] हृदय को स्पर्श करनेवाला। हृदयस्पर्शी। मनोहर [को०]।

हृदुत्क्लेद, हृदुत्क्लेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ हृदय का रोग। २ वमन। [को०]।

हृदै(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हृदय] दे० 'हृदय'। उ०—अनोखी तुही नई एक नारि। पावस रितु मैं मान करै कोउ लखि तो हृदै विचारि।—भारतेंदु ग्रं०, भा० २, पृ० ५११।

हृदौ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हृदय] दे० 'हृदय'। उ०—दुखी दीन प्राणी कही ब्रह्मवाणी। हृदौ प्रेम भीजै अभैदान दीजै।—सुंदर ग्रं०, भा० १, पृ० १२।

हृद्ग—वि० [सं०] हृदय तक पहुँचनेवाला। जो अंतस्तल तक पहुँचा हो। जैसे—आचमन का जल [को०]।

हृद्गत[1]—वि० [सं०] १ हृदय का। मन का। आंतरिक। भीतरी। जैसे,—हृद्गत भाव। २ मन में बैठा या जमा हुआ। समझ या ध्यान में आया हुआ।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

३ ईप्सित। मनचाहा। ४ प्रिय। रुचिकर। ५ हृदयसंबंधी। हृदय का [को०]।

हृद्गत[2]—संज्ञा पुं० अभिप्राय। मतलब। निष्कर्ष [को०]।

हृद्गद्—वि० [सं०] हृदय का रोग। हृद्रोग [को०]।

हृद्गम—वि० [सं०] हृदय में गमन या प्रवेश करनेवाला [को०]।

हृद्गोल—संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम।

हृद्ग्रंथ—संज्ञा पुं० [सं० हृद्ग्रन्थ] हृदय का ग्रंथ। हृदयव्रण [को०]।

हृद्ग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] हृदय की वेदना। कलेजे का ऐंठना [को०]।

हृद्घटन—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का हृदयरोग [को०]।

हृद्दाह—संज्ञा पुं० [सं०] हृदय का दाह। हृदय की जलन [को०]।

हृद्देश—संज्ञा पुं० [सं०] हृत्प्रदेश। हृदय का क्षेत्र। वक्षस्थल [को०]।

हृद्द्रव—संज्ञा पुं० [सं०] १ हृदय का द्रवीभूत होना। २ हृदय या कलेजे की धड़कन [को०]।

हृद्द्वार—संज्ञा पुं० [सं०] हृदयरूपी द्वार। हृदयरूपी दरवाजा [को०]।

हृद्धाम—संज्ञा पुं० [सं० हृद् + धामन्] हृदयरूपी घर। हृदय का स्थान। उ०—अंधकार का अलसित अचल अब द्रुत ओढ़ेगा ससार। दिखलाई देगा जग श्याम तृषित ले रहा मम हृद्धाम।—वीणा, पृ० २९।

हृद्य¹—वि० [सं०] १ हृदय का। हार्दिक। भीतरी। २ हृदय को रुचनेवाला। अच्छा लगनेवाला। ३ सुंदर। लुभावना। ४ हृदय को शीतल करनेवाला। हृदय को हितकारी। ५ खाने में अच्छा। सुस्वादु। स्वादिष्ट। जायकेदार। ६ अनुकूल (को०)। ७ प्रिय। प्यारा (को०)।

हृद्य²—संज्ञा पुं० १ कपित्थ। कैथ। २ शत्रु को वशीभूत करने का एक मंत्र। ३ सफेद जीरा। ४ दही। ५ मधु। महुए की शराब। ६ बिल्व वृक्ष (को०)। ७ अष्टवर्ग में गिनाई हुई वृद्धि नाम की ओषधि (को०)। ८ दालचीनी। दारचीनी (को०)।

हृद्यगंध¹—संज्ञा पुं० [सं० हृद्यगन्ध] १ बेल का पेड़ या फल। २ सोंचर नमक।

हृद्यगंध²—वि० सुगंधित। सुगंधयुक्त। खुशबूदार [को०]।

हृद्यगंधक—संज्ञा पुं० [सं० हृद्यगन्धक] सौवर्चल लवण [को०]।

हृद्यगंधा—संज्ञा पुं० [सं०] बड़े फूलों की जूही जिसकी सुगंध मोहक होती है [को०]।

हृद्यगंधि—संज्ञा स्त्री० [सं० हृद्यगन्धि] छोटा जीरा [को०]।

हृद्यत्व—संज्ञा स्त्री० [सं०] हृद्य अर्थात् रुचिकर, स्वीकरणीय या प्रिय होने का भाव। अनुकूलता। प्रियता।

हृद्यता—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हृद्यता' [को०]।

हृद्यांशु—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

हृद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अष्टवर्ग की वृद्धि नामक ओषधि या जड़ी। २ अजा। बकरी।

हृद्रुज्—संज्ञा पुं० [सं०] १ दे० 'हृद्रोग'। २ हृदय की व्याधि, शूल या पीड़ा [को०]।

हृद्रोग—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुंभ राशि। २ शोक। दुःख। संताप। ३ प्रेम। ४ हृदय की व्याधि। उ०—वात पित्त कफ युक्त हृद्रोग को त्रिदोष का हृद्रोग कहते हैं।—माधव०, पृ० १७०।

यौ०—हृद्रोगवैरी = अर्जुन नाम का वृक्ष।

हृद्वटक—संज्ञा पुं० [सं० हृद्वण्टक] जठर। कुक्षि [को०]।

हृद्वर्ती—वि० [सं० हृदवर्तिन्] हृदय में स्थित। हृदयवर्ती [को०]।

हृद्विंदु—संज्ञा पुं० [सं० हृद्विन्दु] केंद्रबिंदु। मध्यबिंदु। उ०—मानो सबका हृद्बिंदु वही है।—सुनीता, पृ० १८७।

हृद्व्यथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हृदय की पीड़ा। मनोव्यथा। २ हृदय का क्षोभ या व्यग्रता।

हृद्व्रण—संज्ञा पुं० [सं०] १ हृदय का घाव या जख्म। २ हृदय का काँटा या शूल।

हृल्लास—संज्ञा पुं० [सं०] १ हिक्का। हिचकी। २ हृदय का क्षोभ या शोक। मन की व्यग्रता [को०]।

हृल्लासक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हृल्लास'।

हृल्लेख—संज्ञा पुं० [सं०] १ चिंतन। तर्क। अनुशोचन। २ ज्ञान। बुद्धि [को०]।

हृल्लेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उत्सुकता। औत्सुक्य। उत्कंठा। २ दुःख। शोक। ३ एक बीजमंत्र। ह्रीम् [को०]।

हृषि¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हर्ष। आनंद। प्रसन्नता। २ कांति। चमक। दमक।

हृषि²—संज्ञा पुं० असत्यशील या झूठा आदमी।

हृषित—वि० [सं०] १ आनंदयुक्त। प्रसन्न। हर्षित। २ रोमांचयुक्त। जिसके शरीर के रोएँ खड़े हों। ३ वर्मयुक्त। वर्मित। ४ नूतन। ताजा। नवीन। ५ आश्चर्ययुक्त। चकित। विस्मित। ६ प्रतिहत। कुंठित। धारहीन। भोथरा। ७ नमित। प्रणत। ८ भग्नाश। हताश [को०]।

हृषी—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि और सोम [को०]।

हृषीक—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रिय।

यौ०—हृषीकेश।

हृषीकनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ हृषीकेश। विष्णु। २ श्रीकृष्ण।

हृषीकपति—संज्ञा पुं० [सं०] हृषीकनाथ। विष्णु [को०]।

हृषीकेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु का एक नाम। २ श्रीकृष्ण। ३ इंद्रियों का स्वामी। परमात्मा (को०)। ४ इंद्रियों का संचालनकर्ता। मन (को०)। ५ पूस का महीना। ६ हरिद्वार के पास एक तीर्थस्थान।

हृषीकेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो इंद्रियों का स्वामी हो। विष्णु या श्रीकृष्ण [को०]।

हृषु¹—वि० [सं०] १ हर्षित होनेवाला। प्रसन्न। २ झूठ बोलनेवाला।

हृषु²—संज्ञा पुं० १ अग्नि। २ सूर्य। ३ चंद्र।

हृष्ट—वि० [सं०] १ हृषित। अत्यंत प्रसन्न। आनंदयुक्त।

यौ०—हृष्टपुष्ट। हृष्टतुष्ट।

२ खड़ा। उठा हुआ (रोयाँ) ३ उकठा हुआ। कड़ा पड़ा हुआ। ४ आश्चर्यान्वित। आश्चर्ययुक्त। विस्मित (को०)। ५ प्रतिहत। कुंठित। भोथरा [को०]।

हृष्टचित्त, हृष्टचेतन—वि० [सं०] आनंदयुक्त। प्रसन्नहृदय [को०]।

हृष्टचेता—वि० [सं० हृष्टचेतस्] प्रसन्नहृदय। हृष्टचित्त [को०]।

हृष्टतनु—वि० [सं०] प्रसन्नवदन। हर्षित। रोमांचित [को०]।

हृष्टतनूरुह—वि० [सं०] रोमांचयुक्त। रोमांचित [को०]।

हृष्टतुष्ट—वि० [सं०] प्रसन्न और सतुष्ट । जो हर्षित और सतोषयुक्त हो [को०] ।

हृष्टपुष्ट—वि० [स०] मोटा ताजा । तैयार । तगडा ।

हृष्टमना—वि० [स० हृष्टमनस्] प्रसन्नचित्त । हर्षित [को०] ।

हृष्टमानस—वि० [स०] दे० 'हृष्टमना' [को०] ।

हृष्टरूप—वि० [स०] अत्यत उत्फुल्ल । विकसित वदन [को०] ।

हृष्टरोमा[1]—वि० [स० हृष्टरोमन्] रोमाचयुक्त । रोमाचित ।

हृष्टरोमा[2]—सज्ञा पुं० जो खडे और कडे रोम से युक्त हो । एक असुर का नाम [को०] ।

हृष्टवदन—वि० [स०] प्रसन्नवदन । जिसका मुख आनद के कारण चमक रहा हो [को०] ।

हृष्टवृक—सज्ञा पु० [सं०] गर्ग सहिता के अनुसार हिरण्याक्ष दैत्य के नौ पुत्रो मे से एक का नाम ।

हृष्टसकल्प—वि० [सं० हृष्टसङकल्प] प्रसन्न । खुश । सतुष्ट [को०] ।

हृष्टहृदय—वि० [स०] प्रसन्नहृदय । सतुष्ट । आनदमग्न । हर्षित [को०] ।

हृष्टि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ हर्ष । प्रसन्नता । उ०—मुझमे यह हार्द हृष्टि है, सुख की आँगन मे सुवृष्टि है ।—साकेत, पृ० ३२८ । २ इतराना । मान । गर्व । घमड से फूलना । ३ ज्ञान । जानकारी । समझ (को०) । ४ रोएँ खडे होना । रोमाच (को०) ।

हृष्टियोनि—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का नपुसक । नपुसक का एक भेद । ईर्ष्यक नपुसक ।

हृष्यका—सज्ञा स्त्री० [स०] सगीत मे एक मूर्छना जिसका स्वरग्राम इस प्रकार है—प ध नि स रे ग म । ध नि स रे ग म प ध नि स रे ग ।

हेँ—क्रि० अ० सत्तार्थक क्रिया 'होना' का वर्तमान रूप है का वहुवचन । दे० 'हैं' । उ०—चलै जु चपल नयन छवि वढे । चदनि मनहुँ मीन हेँ चढे ।—नद० ग्र०, पृ० २३४ ।

हेँ हेँ—सज्ञा पुं० [अनु०] १ धीरे से हँसने का शब्द । उ०—खीस वाकर केवल हेँ हेँ की हिनहिनाहट । —प्रेमघन०, भा० २, पृ० २६४ । २ दीनतासूचक शब्द । गिडगिडाने का शब्द ।

मुहा०—हेँ हेँ करना = (१) गिडगिडाना । दीनता दिखाना । (२) खुशामद करना । जी हुजूरी करना ।

हेँगा†—सज्ञा पु० [स० अभ्यङग (= पोतना)] जुते हुए खेत की मिट्टी बराबर करने का पाटा । मैंडा । पहटा ।

हेँगाना†[1]—क्रि० अ० [हिं० हेँगा + ना (प्रत्य०)] जुते हुए खेत की मिट्टी को पाटे से बराबर करना ।

हेँगाना†[2]—सज्ञा पुं० जुते हुए खेत की मिट्टी को बराबर करने का काम ।

हेँवर—सज्ञा पुं० [सं० हयवर] दे० 'हैवर' । उ०—फिरि राय आय हेँवर चढचौ पहरत मोजे पगटस्यौ । भवितव्य वात आघात गति इतनी कहि राजन हस्यौ ।—पृ० रा०, १।५०६ ।

हे[1]—अव्य० [सं०] सबोधन शब्द । पुकारने मे नाम लेने के पहले कहा जानेवाला शब्द ।

हे†[2]—क्रि० अ० ब्रज 'हो' (= था) का वहुवचन । थे । उ०—जहँ के सहज विनोद हे मोहन मन के ।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ३ ।

हेउँती—सज्ञा स्त्री० [देश०] देसावरी रूई । (धुनिया) ।

हेक†—वि० [स० एक] दे० 'एक' । उ०—हेक प्राण दुय देह, प्रीत 'अगरेह परसपर ।—रा० रू०, पृ० ३६ ।

हेकड—वि० [हिं० हिया + कडा] १ हृष्ट पुष्ट । मजवूत । कडे वदन का । मोटा ताजा । २ जवरदस्त । प्रवल । प्रचड । वली । ३ अक्खड । उजड्ड । ४ तौल मे पूरा । जो वजन मे दवता न हो । जैसे—उसकी तौल हेकड है ।

हेकडी—सज्ञा स्त्री० [हिं० हेकड] १ अधिकार या वल दिखाने की क्रिया या भाव । अक्खडपन । उग्रता । जैसे—हेकडी मत दिखाओ, सीधे से वात करो । २ हुडदगई । जवरदस्ती । वलात्कार । जैसे,—अपनी हेकडी से वह दूसरो की चीजे ले लेता है ।

मुहा०—हेकडी लेना = डीग हाँकना । वढ चढकर बातें करना । उ०—चुप रह । वडी हेकडी की लेता है । चल उधर हट ।—फिसाना०, भा० ३, पृ० २२४ ।

हेकमत†—वि० [स० एकमत] एक विचार अथवा एक मत का । उ०—तीनो ही देवा तने देवी आदर दीध । सरव सयाणाँ हेकमत कहवत साँचो कीध ।—बाँकी० ग्र०, भाग २, पृ० ११४ ।

हेकर†—सज्ञा स्त्री० [हिं० हेकडी] लडाई । उ०—चढइ तुरग होइ अनुरागी । कै अहेर कै हेकर लागी ।—चित्रा०, पृ० ६ ।

हेकली†—वि० [हिं० हेक] अकेली । उ०—अवही मेली हेकली करही करइ कलाप । कहिअउँ लोपाँ सामिकउ सुदरि लहाँ मराप ।—ढोला०, दू० ३२३ ।

हेक्का—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'हिक्का' [को०] ।

हेगल†—सज्ञा स्त्री० [अ० हैकल] एक आभूषण । हार । दे० 'हैकल' । उ०—दाउदी के तुर्रा और मुकुट हजारा की हेगल हमेल इश्कपेच मन भायो है ।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ४३१ ।

हेच—वि० [फा०] १ तुच्छ । नाचीज । किसी गिनती मे नहीं । उ०—नसा सुलफे का और सब हेच ।—भस्मावृत०, पृ० २२ । २ जिसमे कुछ तत्व न हो । नि सार । पोच । ३ निकम्मा । वेकार । फजूल । उ०—पावै नहीं अध्यानम पेच । मानै वाहिज किरिआ हेच ।—अर्ध०, पृ० ५४ ।

हेचकस—वि० [फा०] अधम । नीच । कमीना [को०] ।

हेचपोच[1]—वि० [फा०] १ अदना। तुच्छ मामूली। २ निकम्मा। वेकार। वेफायदा। व्यर्थ।

हेचपोच[2]—संज्ञा पुं० १ साधारण व्यक्ति। तुच्छ व्यक्ति। २ मामूली चीज। साधारण वस्तु [को०]।

हेचमदानी—संज्ञा स्त्री० [फा०] कुछ न जानना। अज्ञता। मूर्खता [को०]।

हेचमर्द—वि० [फा०] दीन। दुखी। (आदमी)।

हेजम—संज्ञा पुं० [फा०] द्वारपाल दरवान। प्रतिहार। उ०—हकि कविद हेजम वुल्लिय हँसि। कोन थान वर चलिय कोन दिसि। —पृ० रा०, ६१।४६६। (ख) सुनत हेत हेजम उडिग दिति चद वरदाइ।—पृ० रा०, ६१।४७८।

हेजैं†—संज्ञा पुं० [पुं० हिं० अजों, मि० गुज० हजु, कुमा० आजि (= अभी तक)] अभी तक। उ०—जियरा चेति रे, जनि जारैं, हेजैं हरि सौं प्रीति न कीन्ही।—दादू०, पृ० ४७७।

हेट(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सहेट] सकेतस्थल जहाँ नायक नायिका परस्पर मिलते हैं। सहेट स्थान। उ०—या विधि की अनेक विधि हेटैं। छली छैल को पेठें पेटैं।—घनानद०, पृ० २९२।

हेठ†[1]—वि० [स० अध स्थ, प्रा० अहट्ठ] १ नीचा। जो नीचे हो। २ घटकर। कम।

हेठ(पु)[2]—क्रि० वि० नीचे। उ०—(क) परे भूमि जिमि नभ ते भूधर। हेठ दावि कपि भालु निसाचर।—मानस, ६।७०। (ख) पर्वत हेठ अहा देवहरा। रहौ तहाँ निसि जौ एक सरा।—चित्रा०, पृ० २७।

हेठ[3]—संज्ञा पुं० [सं०] १ विघ्न। वाधा। २ क्षति। हानि। ३ आघात। चोट।

हेठा—वि० [हिं० हेठ] १ नीचा। जो नीचे हो। २ प्रतिष्ठा या वडाई मे घटकर। कम। ३ तुच्छ। नीच।

हेठाई—संज्ञा पुं० [हिं० हेठ] दे० 'हेठापन'। उ०—जिनकी समझ मे वाइसराय का हिंदुस्तानी तरह पर सलाम करना वडे हेठाई और लज्जा की वात थी।—भारतेंदु ग्र०, भा० ३, पृ० १९१।

हेठापन—संज्ञा पुं० [हिं० हेठ० + पन (प्रत्य०)] तुच्छता। नीचता। क्षुद्रता।

हेठी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हेठा] १ प्रतिष्ठा मे कमी। मानहानि। गौरव का नाश। हीनता। तौहीनी।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

२ जहाज मे पाल का पाया। (लश०)।

हेड[1]—संज्ञा पुं० [सं०] तिरस्कार। उपेक्षा। [को०]।

हेड[2]—संज्ञा पुं० [अं०] १ प्रमुख अधिकारी। ऊँचा अफसर। प्रधान या मुखिया। जैसे—हेडमास्टर। हेड कास्टेवुल। २ सिर। शीर्ष। ३ सिरनामा। खाता या मद।

यौ०—हेडटेल = सिर और दुम। किसी भी सिक्का या अन्य वस्तु का अगला और पिछला हिस्सा।

हेडआफिस—संज्ञा पुं० [अं०] प्रधान कार्यालय।

हेडक्वार्टर—संज्ञा पुं० [अं०] १ वह स्थान या मुकाम जहाँ सेना का या किसी विभाग का प्रधान अधिकारी और उसका कार्यालय रहता हो। जैसे—सेना का हेडक्वार्टर शिमला मे है। २ किसी सरकार या अधिकारी का प्रधान स्थान। जैसे—जाडे मे भारत सरकार का हेडक्वार्टर दिल्ली मे रहता है। ३ वह स्थान जहाँ कोई मुख्यत रहता या कारोवार करता हो। सदर। सदर मुकाम। केंद्र। जैसे,—वे अभी हेडक्वार्टर से लौटे नही है।

हेडज—संज्ञा पुं० [सं०] १ नाखुशी। नाराजी। अप्रसन्नता। २ कोप। क्रोध [को०]।

हेडमास्टर—संज्ञा पुं० [अं०] किसी विद्यालय का सवसे वडा अध्यापक। प्रधानाध्यापक।

हेडा—संज्ञा पुं० [देश०] मास। गोश्त।

हेडाउँ(पु)†—संज्ञा पुं० [देश० तुल० सं० हेडावुक्क (= घोडो का सौदागर)] भाडा। किराया। उ०—हेडाउँ का तुरीय ज्युँ। तुये दिन दिन हाथ फेरनइ सौ वार।—वी० रासो, पृ० ४६।

हेडाऊ(पु)†—संज्ञा पुं० [देश०] द्रव्य प्राप्त करके यात्रा पर जानेवाला व्यक्ति। दूत। उ०—चीरी लिखी धन आयणइ हाथ। जराह चलायो हेडाऊ के साथ।—वी० रासो, पृ० ७४।

हेडावुक्क, हेडावुवक—संज्ञा पुं० [सं०] अश्व का व्यापार करनेवाला व्यक्ति। घोडो का सौदागर [को०]।

हेडिंग—संज्ञा स्त्री० [अं०] वह शब्द या वाक्य जो विषय के परिचय के लिये किसी समाचार, लेख या प्रवध के ऊपर दिया जाय। शीर्षक। जैसे,—अखवारो मे महत्व के समाचार वडी वडी हेडिंग देकर छापे जाते हैं।

हेडी†[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० लेहँडी] चौपायो का समूह जिसे वनजारे विक्री के लिये लेकर चलते हैं।

हेडी[2]—संज्ञा पुं० [हिं० अहेरी] अहेर करनेवाला व्यक्ति। शिकारी। व्याध।

हेत(पु)[1]—संज्ञा पुं० [सं० हेतु] कारण। प्रयोजन। दे० 'हेतु'। उ०—कामिनि मुद्रा काम की सकल अर्थ कौ हेत। मूरख याको तजत है झूठे फल कौ हेत।—व्रज० ग्र०, पृ० ९६।

हेत(पु)[2]—संज्ञा पुं० [सं० हित] १ प्रेमसवध। अनुराग। प्रीति। प्रेम। उ०—(क) देखौ करनी कमल की (रे) कीन्हौं रवि सौं हेत। प्रान तज्यौ प्रेम न तज्यौ (रे) सूख्यौ सलिल समेत।—सूर०, १।३२५। (ख) इहिं विधि रहसत विलसत दपति हेत हियैं नहिं थोरे। सूर उमगि आनद सुधानिधि मनु वेला फल फोरे। सूर०, १०।७३२। २ श्रद्धाभाव। अनुराग। उ०—जज्ञभाग नहिं लियौ हेत सौं रिपिपति पतित विचारे। भिल्लिनि के फल खाए भाव सौं खाटे मीठे खारे।—सूर०, १।२५।

हेति[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वज्र। भाला। २ अस्त्र। ३ घाव। जखम। ४ आघात। चोट। ५ आग की लपट। लौ। ६ सूर्य की किरन। ७ धनुष की टकार। ८ औजार। यत्र। ९ ज्योति। प्रकाश। तेज। दीप्ति। १० अकुर। अँखुर्वा।

हेति¹—संज्ञा पुं० १ प्रथम राक्षस राजा जो मधुमास या चैत्र मे सूर्य के रथ पर रहता है। यह प्रहेति का भाई और विद्युत्केश का पिता कहा गया है। (वैदिक)। २ भागवत मे वर्णित एक असुर का नाम।

हेती—संज्ञा पुं० [हिं० हेत] १ वह जिससे प्रेम हो। प्रेमी। २ रिश्तेदार। सबधी।

हेतु¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह बात जिसे ध्यान मे रखकर कोई दूसरी बात की जाय। प्रेरक भाव। अभिप्राय। लक्ष्य। उद्देश्य। जैसे,—(क) उसके आने का हेतु क्या है ? (ख) तुम किस हेतु वहाँ जाते हो ? २ वह बात जिसके होने से ही कोई दूसरी बात हो। कारक या उत्पादक विषय। कारण। वजह। सबब। जैसे,—दूध बिगडने का हेतु यही है। उ०—(क) कौन हेतु वन बिचरहु स्वामी ? —तुलसी (शब्द०)। (ख) केहि हेतु रानि रिसानि परसत पानि पतिहि निवारई।—तुलसी (शब्द०)। ३ वह व्यक्ति या वस्तु जिसके होने से कोई बात हो। कारक व्यक्ति या वस्तु। उत्पन्न करनेवाला व्यक्ति या वस्तु। उ० —मही सकल अनरय कर हेतू।—तुलसी (शब्द०)। ४ वह बात जिसके होने से कोई दूसरी बात सिद्ध हो। प्रमाणित करनेवाली बात। ज्ञापक विषय। जैसे,—जो हेतु तुमने दिया, उससे यह सिद्ध नही होता।

विशेष—न्याय मे तर्क के पाँच अवयवो मे से 'हेतु' दूसरा अवयव है, जिसका लक्षण है—उदाहरण के साधर्म्य या वैधर्म्य से साध्य के धर्म का साधन। जैसे,—प्रतिज्ञा—यह पर्वत वह्निमान् है। हेतु—क्योंकि वह धूमवान् है। उ०—जो धूमवान् होता है, वह वह्निमान् होता है, जैसे,—रसोईघर।

५ तर्क। दलील।

यौ०—हेतुविद्या, हेतुशास्त्र, हेतुवाद।

६ मूल कारण। (बौद्ध)।

विशेष—बौद्ध दर्शन मे मूल कारण के 'हेतु' तथा अन्य कारणो को प्रत्यय कहते है।

७ बाह्य ससार और उसका विषय। बाह्य जगत् और चेतना (को०)। ८ मूल्य। दाम। अर्घ (को०)। ९ एक अर्थालकार जिसमे हेतु और हेतुमान् का अभेद से कथन होता है, अर्थात् कारण ही कार्य कह दिया जाता है। जैसे,—घृत ही बल है। उ०—मो सपति जदुपति सदा बिपति बिदारनहार। (शब्द०)।

विशेष—ऊपर दिया हुआ लक्षण रुद्रट का है, जिसे साहित्यदर्पणकार ने भी माना है। कुछ आचार्यो ने किसी चमत्कारपूर्ण हेतु के कथन को ही 'हेतु' अलकार माना है और किसी किसी ने उसको काव्यलिंग भी कहा है।

हेतु²—संज्ञा पुं० [सं० हित] १ लगाव। प्रेम सबध। २ प्रेम। प्रीति। अनुराग। उ०—पति हिय हेतु अधिक अनुमानी। बिहँसि उमा बोली प्रिय बानी।—तुलसी (शब्द०)।

हेतुक¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव का एक गण। २ एक बुद्ध। ३ कारण। हेतु। ४ तार्किक। तर्कशास्त्री (को०)।

हेतुक²—वि० जो कारणभूत हो। जो कारणरूप हो। कारणरूप होनेवाला या उत्पन्न करनेवाला।

हेतुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] कारण या हेतु होना। कारणत्व (को०)।

हेतुत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हेतुता'।

हेतुदुष्ट—वि० [सं०] जो तर्कसगत न हो। जो अयुक्त हो (को०)।

हेतुदृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] सदेह। कारण की परीक्षा। अविश्वास। अविश्वस्तता (को०)।

हेतुबलिक—वि० [सं०] जिसकी युक्ति या तर्क पुष्ट हो। जो तर्क प्रबल हो (को०)।

हेतुभेद—संज्ञा पुं० [सं०] बृहत्सहिता के अनुसार ज्योतिष मे ग्रहयुद्ध का एक भेद। उ०—मुनियो से आनेवाले क्रमयोग के हेतुभेद आदि चार प्रकार के ग्रहयुद्ध होते है।—बृहत्सहिता, पृ० ६७।

हेतुमात्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सिर्फ बहाना या हीला। हेतु मात्र होना। हेतु का पुष्ट न होना (को०)।

हेतुमान्¹—वि० [सं० हेतुमत्] [वि० स्त्री० हेतुमती] १ जिसका कुछ हेतु या कारण हो। २ जो तर्कयुक्त हो। तर्कसगत। ३ आधारयुक्त। जो निराधार न हो (को०)।

हेतुमान्²—संज्ञा पुं० वह जिसका कुछ कारण हो। कार्य।

हेतुमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] काव्य मे एक अलकार। दे० 'कारणमाला'—२। उ०—उत्तर उत्तर हेतु जहँ, पूरब पूरब काज। ढ्टी हेतुमाला कहत कविजन बुद्धि जहाज।—मति० ग्र०, पृ० ४१३।

हेतुयुक्त—वि० [सं०] जिसका कुछ कारण या आधार हो। हेतु से युक्त। सहेतुक। सकारण (को०)।

हेतुरहित—वि० [सं०] हेतु से रहित। बिना कारण के। अकारण। अहेतुक। उ०—हेतुरहित जग जुग उपकारी। तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी।—मानस, ७।४७।

हेतुरूपक—संज्ञा पुं० [सं०] रूपक अलकार का एक भेद जो हेतुयुक्त होता है।

हेतुलक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] हेतु का लक्षण। हेतु की विशेषता।

हेतुवचन—संज्ञा पुं० [सं०] वह वचन जो हेतु से युक्त हो। हेतुयुक्त बात। तर्कयुक्त कथन।

हेतुवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १. सब बातो का हेतु ढूँढना या सबके विषय मे तर्क करना। तर्कविद्या। २ कुतर्क। नास्तिकता। उ०—(क) आयु ही विचारिए निहारिए सभा की गति, वेद मरजाद मानौ हेतुवाद हई है।—तुलसी ग्र०, पृ० ३१३। (ख) राज समाज कुसाज कोटि कटु कल्पत कलुप कुचाल नई है। नीति प्रतीति प्रीति परिमिति पति हेतुवाद हठि हेरि हई है।—तुलसी (शब्द०)।

हेतुवादी—वि० [सं० हेतुवादिन्] [वि० स्त्री० हेतुवादिनी] १ तार्किक। दलील करनेवाला। २ कुतर्की। नास्तिक।

हेतुविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] तर्कशास्त्र।

हेतुविशेषोक्ति—संज्ञा पुं० [सं०] एक अलकार जिसमे तर्क द्वारा दो पदार्थों का अतर बताया जाय।

हेतुव्यत्यय—संज्ञा पुं० [सं०] कारण उलट देना। हेतु का परिवर्तन। उ०—किसी उक्ति के कारण को बदल देना हेतुव्यत्यय है। —सपूर्णानद अभि० ग्र०, पृ० २६३।

हेतुशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] तर्कशास्त्र। हेतुविद्या।

हेतुशून्य—वि० [सं०] अकारण। जो कारण या हेतु से रहित हो। अहेतुक।

हेतुहानि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह जिसमे या जिसका तर्क न दिया जाय। हेतु के कारण का न दिया जाना।

हेतुहिल—संज्ञा पुं० [सं०] एक बहुत बडी संख्या। (बौद्ध)।

हेतुहेतुमद्भाव—संज्ञा पुं० [सं०] कार्य-कारण-भाव। कारण और कार्य का संबंध।

हेतुहेतुमद्भूतकाल—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण मे क्रिया के भूतकाल का वह भेद जिसमे ऐसी दो बातों का होना सूचित होता है जिनमे दूसरी पहली पर निर्भर होती है। जैसे,—यदि तुम मुझसे माँगते तो मैं अवश्य देता।

हेतूत्प्रेक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अर्थालंकार मे उत्प्रेक्षा का एक भेद जिसमे जिस वस्तु का जो हेतु नही है उसको उस वस्तु का हेतु मानकर उत्प्रेक्षा करते हैं। विशेष दे० 'उत्प्रेक्षा'-२।

हेतूपक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] कारण को उपस्थित करना। तर्क प्रस्तुत करना [को०]।

हेतूपन्यास—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हेतूपक्षेप' [को०]।

हेतूपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमा जो तर्क या हेतु से युक्त हो। विशेष दे० 'उत्प्रेक्षा—२'।

हेत्वपदेश—संज्ञा पुं० [सं०] न्याय मे हेतु का अपदेश या निर्देश करना। तर्क मे हेतु का उल्लेख करना [को०]।

हेत्वपह्नुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अपह्नुति अलंकार जिसमे प्रकृति के निषेध का कुछ कारण भी दिया जाय। विशेष दे० 'अपह्नुति'।

हेत्ववधारण—संज्ञा पुं० [सं०] हेतु का अवधारण करना या तर्क कारण (नाटक)।

हेत्वाक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] काव्यगत एक अलंकार। वह आक्षेप जो कारण या हेतु के साथ किया जाय।

हेत्वाभास—संज्ञा पुं० [सं०] न्याय मे किसी बात को सिद्ध करने के लिये उपस्थित किया हुआ वह कारण जो कारण सा प्रतीत होता हुआ भी ठीक कारण न हो। असत्‌हेतु। उ०—जब जग हेत्वाभास मात्र है, तब फिर मेरा सपना। क्यो न रहे मेरे जीवन मे होकर मेरा अपना।—अपलक, पृ० ३६।

विशेष—सव्यभिचार, विरुद्ध, प्रकरणसम, साध्यसम और कालातीत भेद से हेत्वाभास पाँच प्रकार का कहा गया है—(१) जो हेतु और दूसरी बात भी उसी प्रकार सिद्ध करे अर्थात् ऐकांतिक न हो, वह 'सव्यभिचार' कहलाता है। जैसे,—शब्द नित्य है क्योंकि वह अमूर्त है, जैसे,—परमाणु। यहाँ अमूर्त होना जो भेद दिया गया है, वह बुद्धि का उदाहरण लेने से शब्द को अनित्य भी सिद्ध करता है। (२) जो हेतु प्रतिज्ञा के ही विरुद्ध पडे वह 'विरुद्ध' कहलाता है। जैसे,—घट उत्पत्ति धर्मवाला है, क्योंकि वह नित्य है। (३) जिस हेतु मे जिज्ञास्य विषय (प्रश्न) ज्यों का त्यों बना रहता है, वह 'प्रकरणसम' कहलाता है। जैसे,—शब्द अनित्य है, उसमे नित्यता नही है। (४) जिस हेतु को साध्य के समान ही सिद्ध करने की आवश्यकता हो, उसे 'साध्यसम' कहते हैं। जैसे,—छाया द्रव्य है क्योंकि उसमे गति है। यहा छाया मे स्वत गति है, इसे साबित करने की आवश्यकता है। (५) यदि हेतु ऐसा दिया जाय जो कालक्रम के विचार से साध्य पर न घटे, तो वह 'कालातीत' कहलाता है। जैसे,—शब्द नित्य है, क्योंकि उसकी अभिव्यक्ति संयोग से होती है। जैसे,—घट के रूप की। यहाँ घट का रूप दीपक के संयोग के पहले भी था, पर ढोल का शब्द लकडी के संयोग के पहले नही था।

हेना—संज्ञा पुं० [अ० हिना] मेहँदी। मेंधिका। हिनका [को०]।

हेमंत—संज्ञा पुं० [सं० हेमन्त] छह ऋतुओं मे से पाँचवी ऋतु जिसमे अगहन और पूस के महीने पडते हैं। जाडे का मौसिम। शीतकाल।

हेमंतकाल—संज्ञा पुं० [सं० हेमन्तकाल] हेमंत ऋतु। जाडे का मौसिम।

हेमंतनाथ—संज्ञा पुं० [सं० हेमन्तनाथ] कपित्थ। कैथ।

हेमंतमेघ—संज्ञा पुं० [सं० हेमन्तमेघ] हेमंत ऋतु के मेघ। जाडे का बादल [को०]।

हेमंतसमय—संज्ञा पुं० [सं० हेमन्तसमय] हेमंत ऋतु। शीतकाल।

हेम१—संज्ञा पुं० [सं० हेमन्] १ हिम। पाला। बर्फ। उ०—ऊधो अब यह समुझि भई। नँदनंदन के अंग अंग प्रति उपमा न्याय दई। आनन इंदु बरन संमुख तजि करषे ते न नई। निरमोही नहि नेह, कुमुदिनी अतहि हेम हई।—सूर (शब्द०)। २ स्वर्णखंड। सोने का टुकडा। ३ सोना। सुवर्ण। स्वर्ण। ४ कपित्थ। कैथ। ५ नागकेसर। ६ एक मासे की तौल। ७ बादामी रंग का घोडा। ८ जल। पानी। सलिल [को०]। ९ बुध ग्रह का एक नाम।

हेम२(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हेमन् (हिम = बर्फ)] दे० 'हिमालय'। उ०—हेम सेत औ गौर गाजन बंश तिलंग सब लेन। सातौ दीप नवौ खंड जुरे आइ एक खेत।—पदमावत, पृ० ५२४।

हेमकंदल—संज्ञा पुं० [सं० हेमकन्दल] मूँगा।

हेमक—संज्ञा पुं० [सं०] १ हिरण्य। २ सोने का टुकडा। हेमखंड। ३ इस नाम का एक राक्षस। ४ एक वन का नाम [को०]।

हेमकक्ष१—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्णनिर्मित मेखला।

हेमकक्ष२—वि० जिसकी भित्ति स्वर्णिम या स्वर्णयुक्त हो [को०]।

हेमकर१—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

हेमकर२—संज्ञा पुं० स्वर्णकार [को०]।

हेमकरक—संज्ञा पुं० [सं०] सोने का कमंडल या करवा। स्वर्णपात्र [को०]।

हेमकर्ता—संज्ञा पुं० [सं० हेमकर्तृ] सुनार। स्वर्णकार [को०]।

हेमकलश—संज्ञा पुं० [सं०] मंदिर या गुंबद पर लगाने का सोने का बना हुआ शिखर या कलश [को०]।

हेमकांति¹—संज्ञा स्त्री० [सं० हेमकान्ति] १ वनहलदी। २ आँबा हलदी।

हेमकांति²—वि० हेमप्रभ। सोने की तरह दीप्त।

हेमकार—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्णकार। सुनार [को०]।

हेमकारक—संज्ञा पुं० [सं०] सुनार।

हेमकारिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक क्षुप का नाम।

हेमकिंजल्क—संज्ञा पुं० [सं० हेमकिञ्जल्क] नागकेसर का पुष्प [को०]।

हेमकुट(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हेमकूट] हिमालय के उत्तर का पर्वत। हेमकूट। उ०—हेमकुट की आहै दूजा।—प्राण०, पृ० ४७।

हेमकुंभ—संज्ञा पुं० [सं० हेमकुम्भ] सोने का घड़ा। स्वर्णघट [को०]।

हेमकूट—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय के उत्तर का एक पर्वत जो पुराणानुसार किंपुरुष का वर्ष और भारत की सीमा पर स्थित है।

हेमकेतकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] केतक वृक्ष जिसके पुष्प पीतवर्ण के होते हैं। स्वर्णक्षीरी [को०]।

हेमकेलि—संज्ञा पुं० [सं०] १ चित्रक नाम का पौधा। २ अग्नि का एक नाम [को०]।

हेमकेश—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

हेमक्षीरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्णक्षीरी जिसका निर्यास या दुग्ध स्वर्ण के वर्ण का होता है [को०]।

हेमखेम†—संज्ञा पुं० [अनु० हेम + सं० क्षेम] १. कुशल प्रश्न। कुशल क्षेम। उ०—पढन लगे वाराणसी लिखी आठ दस पाँति। हेम-खेम ताके तले समाचार इस भाँति।—अर्ध०, पृ० ४३। २ परस्पर संबंध। लगाव। मैत्री।

हेमगंधिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० हेमगन्धिनी] रेणुका नामक गंधद्रव्य।

हेमगर्भ¹—संज्ञा पुं० [सं०] वाल्मीकि रामायण में वर्णित उत्तर दिशा का एक पर्वत।

हेमगर्भ²—वि० जिसके भीतर स्वर्ण हो। हिरण्यगर्भ [को०]।

हेमगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] सुमेरु नाम का एक पर्वत जो सोने का कहा गया है।

हेमगुह—संज्ञा पुं० [सं०] एक नागासुर का नाम (को०)।

हेमगौर—संज्ञा पुं० [सं०] १ किंकिरात वृक्ष। कटसरैया। २ अशोक का वृक्ष (को०)।

हेमगौरांग—वि० [सं० हेमगौराङ्ग] जिसका अंग हेम की दीप्ति से युक्त हो [को०]।

हेमघ्न—संज्ञा पुं० [सं०] सीसा धातु।

हेमघ्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] हलदी।

हेमचंद्र¹—संज्ञा पुं० [सं० हेमचन्द्र] १ इक्ष्वाकुवंशी एक राजा जो विशाल का पुत्र था। २ एक प्रसिद्ध जैन आचार्य।

विशेष—इनका समय ईसवी सन् १०८९ और ११७३ के बीच माना जाता है। ये देवचंद्र सूरि के शिष्य थे और गुजरात के राजा कुमारपाल के गुरु थे। इनका एक नाम हेम सूरि भी था। इन्होंने व्याकरण और कोश के कई ग्रंथ लिखे हैं। जैसे,—अनेकार्थकोश, अभिधानचिंतामणि, संस्कृत और प्राकृत का व्याकरण, देशी नाममाला, उणादिसूत्रवृत्ति इत्यादि।

हेमचंद्र²—वि० (रथ आदि) जो स्वर्णनिर्मित चंद्रमा से भूषित हो [को०]।

हेमचक्र—वि० [सं०] जिसका चक्का या पहिया सोने का हो [को०]।

हेमचूर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] सोने का चूरा। स्वर्णधूलि [को०]।

हेमचूली—वि० [सं० हेमचूलिन्] जिसका शिखर या चूड़ा स्वर्णनिर्मित हो। सोने के शिखरवाला [को०]।

हेमछन्न¹—वि० [सं०] हेम से ढका हुआ। स्वर्ण से आच्छादित। सोने के आच्छादनवाला।

हेमछन्न²—संज्ञा पुं० स्वर्णिम आच्छादन। सोने का आवरण [को०]।

हेमछरी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० हेम + हिं० छड़ी] स्वर्णछड़ी। कनक छड़ी। उ०—अँग अँग प्रेम उमँग अस सोहे। हेमछरी जराय जरि को हे।—नंद० ग्रं०, पृ० १३१।

हेमज—संज्ञा पुं० [सं०] राँगा।

हेमजट—संज्ञा पुं० [सं०] किरातों का एक वर्ग या जाति [को०]।

हेमजीवंती—संज्ञा स्त्री० [सं० हेमजीवन्ती] स्वर्ण जीवंती। पीतवर्ण की जीवंती [को०]।

हेमज्वाल—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसकी ज्वाला स्वर्ण की तरह दीप्त हो। अग्नि [को०]।

हेमतरु—संज्ञा पुं० [सं०] पीत वर्ण का धतूरा।

हेमतार—संज्ञा पुं० [सं०] नीला थोथा। तूतिया।

हेमताल—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तराखंड का एक पहाड़ी देश।

हेमतुला—संज्ञा स्त्री० [सं०] तौल में किसी के बराबर सोने का दान। सोने का तुलादान।

हेमदंत—वि० [सं० हेमदन्त] जिसके दाँत सोने से मढ़े हों।

हेमदंता—संज्ञा स्त्री० [सं० हेमदन्ता] हरिवंश पुराण के अनुसार एक अप्सरा।

हेमदीनार—संज्ञा पुं० [सं०] सोने का एक पुराना सिक्का जिसे दीनार कहते थे [को०]।

हेमदुग्ध—संज्ञा पुं० [सं०] गूलर। अमर।

हेमदुग्धक—संज्ञा पुं० [सं०] गूलर [को०]।

हेमदुग्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्णक्षीरी [को०]।

हेमदुग्धी¹—संज्ञा पुं० [सं० हेमदुग्धिन्] गूलर। उदुंबर [को०]।

हेमदुग्धी[2]—संज्ञा स्त्री० स्वर्णक्षीरी (को०) ।

हेमधन्वा—संज्ञा पुं० [सं० हेमधन्वन्] ११ वें मनु के एक पुत्र का नाम ।

हेमधान्य—संज्ञा पुं० [सं०] तिल (को०) ।

हेमधान्यक—संज्ञा पुं० [सं०] एक तौल जो डेढ़ माशे के बराबर होती थी (को०) ।

हेमधारण—संज्ञा पुं० [सं०] आठ पल के बराबर सोने की एक तौल (को०) ।

हेमनाभि—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोने की नाभि, पिंडिका या मध्यवर्ती भाग । २ वह जिसका मध्यवर्ती भाग, नाभि या पिंडिका सोने की हो (को०) ।

हेमनेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक यक्ष का नाम (को०) ।

हेमपर्वत—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुमेरु पर्वत जो सोने का माना जाता है । २ दान के लिये सोने की राशि ।

विशेष--यह महादानों में है ।

हेमपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोनजुही । २ गुड़हर । ३ अशोक का वृक्ष (को०) । ४ लोध्र का वृक्ष (को०) । ५ चंपा का वृक्ष या पुष्प । उ०—चंपक चंपक सुरभि पुनि हेमपुष्प सुकुमार ।—अने-कार्थ०, पृ० ३१ । ६ अशोक पुष्प (को०) । ७ नागकेसर (को०) ।

हेमपुष्पक—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंपा का वृक्ष या पुष्प । लोध्र का वृक्ष । दे० 'हेमपुष्प' (को०) ।

हेमपुष्पिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोनजुही । स्वर्णयूथिका (को०) ।

हेमपुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मजिष्ठा । मजीठ । २ मूसलीकंद । ३ कटकारी । ४ स्वर्णयूथिका । पीली जूही (को०) । ५ स्वर्णपुष्पा । स्वर्णली (को०) । ६ इंद्रवारुणी । इंद्रायण (को०) ।

हेमपृष्ठ—वि० [सं०] जो स्वर्ण से मंडित या रंजित हो । सोने का मुलम्मा किया हुआ (को०) ।

हेमप्रतिभ—वि० [सं०] स्वर्णदीप्त । हेमप्रभ ।

हेमप्रतिमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोने की प्रतिमा या मूर्ति ।

हेमप्रभ—वि० [सं०] जिसकी कांति या प्रभा सोने की तरह दीप्त हो ।

हेमफरद(५)—संज्ञा पुं० [सं० हेम + फा० फर्द] स्वर्णिम चादर अथवा स्वर्णिम कागज का एक टुकड़ा । उ०—कहैं पदमाकर त्यों किधौं काम कारीगर नुकता दियो है हेमफरद सुहाई में ।—पद्माकर ग्रं०, पृ० ३१३ ।

हेमफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का केला । स्वर्णकदली ।

हेमबल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हेमवल' (को०) ।

हेमभस्त्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोने की भस्त्रा अर्थात् थैली (को०) ।

हेममय—वि० [सं०] सुनहरा ।

हेममाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] यम की पत्नी का नाम ।

हेममाक्षिक—संज्ञा पुं० [सं०] एक खनिज द्रव्य । सोनामाखी । स्वर्णमाक्षिक, जिसका प्रयोग औषधि में भी होता है । इसे उपधातु माना गया है (वै०) ।

हेममालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोने की माला । सोने की सिकरी (डिं०) ।

हेममाली[1]—संज्ञा पुं० [सं० हेममालिन्] १ सूर्य । २ एक राक्षस जो खर का सभापति था ।

हेममाली[2]—वि० १ जो स्वर्णभूषण से अलंकृत हो । २ जो धारण किए हुए हो । सोने की माला पहननेवाला (डिं०) ।

हेममुद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोने का सिक्का (डिं०) ।

हेममृग—संज्ञा पुं० [सं०] सोने का मृग । सोने का हरिण । स्वर्णमृग ।

विशेष—वाल्मीकि रामायण में इसका वर्णन सीताहरण के प्रसंग में मिलता है । यह मायामृग कहा गया है जो मारीच नाम का राक्षस था ।

हेमयूथिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्णयूथिका । सोनजुही ।

हेमरागिणी, हेमरागिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] हरिद्रा । हल्दी ।

हेमरेणु—संज्ञा पुं० [सं०] त्रसरेणु ।

हेमलंब—संज्ञा पुं० [सं० हेमलम्ब] बृहस्पति के साठ संवत्सरों में से ३१वाँ संवत्सर । उ०—बृहस्पति की गति के चक्र के सप्तम (पितृ) युग का प्रथम वर्ष हेमलंब है ।—बृहत्०, पृ० ५२ ।

हेमलंबक—संज्ञा पुं० [सं० हेमलम्बक] दे० 'हेमलंब' ।

हेमल—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वर्णकार । सोनार । २ कषपट्टिका । कसौटी । ३ कृकलास । गिरगिट । ४ गृहगोधिका । छिपकली ।

हेमलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोने के रंग की लता । स्वर्णजीवंती (वै०) ।

हेमवत(५)—संज्ञा पुं० [सं० हेमन्त या हेम + वन्त < वत्] दे० 'हेमंत' । उ०—ससिर बास तप करहि सघन दमअद्ध सु बदन अनि । हेमवत सा दहिण दच्छि जन सुष्प नुप्प मिलि ।—पृ० रा०, २।३०७ ।

हेमवती—वि० [सं० हेमवत्] हेमाभ । स्वर्णिम । सुनहला । उ०—आलोकमयी स्मित चेतनता आई यह हेमवती छाया । तंद्रा के स्वप्न तिरोहित थे बिखरी केवल उजली माया ।—कामायनी, पृ० १६६ ।

हेमवत्—वि० [सं०] स्वर्णाभ । स्वर्णिम । सोने की तरह कांतियुक्त (को०) ।

हेमवर्ण[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक बुद्ध । २ गरुड़ के एक पुत्र का नाम (को०) ।

हेमवर्ण[2]—वि० सोने के सदृश रंगवाला । स्वर्णाभ । स्वर्णिम (को०) ।

हेमवल—संज्ञा पुं० [सं०] मोती । मुक्ता ।

विशेष—इस अर्थ में 'हिमवल' शब्द अधिक उपयुक्त है पर राजनिघंटु आदि में 'हेमवल' या 'हेमवल' ही मान्य है ।

हेमव्याकरण—संज्ञा पुं० [सं०] हेमचंद्र द्वारा निर्मित व्याकरण का ग्रंथ । विशेष दे० 'हेमचंद्र' ।

हेमशख—सज्ञा पुं० [सं० हेमशङख] विष्णु का एक नाम [को०]।

हेमशिखा—सज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्णक्षीरी का पौधा ।

हेमशीत—सज्ञा पुं० [स०] स्वर्णक्षीरी (को०) ।

हेमशृग—सज्ञा पुं० [स० हेमशृङ्ग] १ सोने का शृग या शिखर। सोने की सीग । २ सोने की चोटी से युक्त एक पर्वत । वह पर्वत जिसकी चोटी सोने की हो । सुमेरु या मेरु नाम का पर्वत [को०]।

हेमशैल—सज्ञा पुं० [स०] एक पर्वत का नाम । (सभवत मेरु पर्वत) [को०] ।

हेमसागर—सज्ञा पुं० [सं०] एक पौधा जो सुदरता और ओषधि के लिये बगीचो मे लगाया जाता है ।

विशेष—यह पौधा पजाव के पहाडो मे आपसे आप उगता है और बगीचो मे इसे लगाया भी जाता है । इसे 'जख्म हयात' भी कहते है ।

हेमसार—सज्ञा पुं० [सं०] नीलाथोथा । तूतिया ।

हेमसुता—सज्ञा स्त्री० [स०] हिमशैलसुता । पार्वती । दुर्गा ।

हेमसूत्र सज्ञा पुं० [सं०] सोने का सूत या तार । एक प्रकार का हार [को०] ।

हेमसूत्रक—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'हेमसूत्र' ।

हेमहस्तिरथ—सज्ञा पुं० [सं०] सोने का हस्तिरथ जो १६ महदानो मे विशेष माना गया है । सोने के हस्तिरथ का दान [को०]।

हेमाक—वि० [सं० हेमाङ्क] सोने से भूषित । दे० 'हेमाग' [को०] ।

हेमाग¹—सज्ञा पुं० [स० हेमाङ्ग] १ चपा जिसके फूल सुनहले होते हैं । २ सिंह । ३ मेरु पर्वत जो सोने का माना जाता है। ४. ब्रह्मा । ५ विष्णु । ६ गरुड।

हेमाग²- वि० स्वर्णिम । स्वर्णाभ । सुनहला [को०] ।

हेमागद—सज्ञा पुं० [स० हेमाङगद] १ सोने का विजायठ । २ वह जो सोने का विजायठ पहने हो। ३ वसुदेव के एक पुत्र का नाम । ४ एक गधर्व का नाम [को०] । ५ कलिंग देश के एक राजा का नाम ।

हेमागा—सज्ञा स्त्री० [स० हेमाङगा] एक लता । स्वर्णक्षीरी [को०]।

हेमाड—सज्ञा पुं० [सं० हेमाण्ड] १ पुराणवर्णित हेममय अड । २ ब्रह्माड [को०] ।

हेमाडक—सज्ञा पुं० [सं० हेमाण्डक] दे० 'हेमाड'।

हेमाबु—सज्ञा पुं० [सं० हेमाम्बु] द्रवीभूत स्वर्ण । सोने का तरल रूप । सोने का पानी [को०] ।

हेमाबुज—सज्ञा पुं० [स० हेमाम्बुज] दे० 'हेमाभोज' [को०] ।

हेमाभोज—सज्ञा पुं० [स० हेमाम्भोज] पीतकमल । स्वर्णाभ कमल पुष्प [को०] ।

हेमागिर(पु)†—सज्ञा पुं० [स० हेमगिरि] हिमालय । उ०—सखिए साहिब आविया, जाँह की हुँती चाइ। हियडउ हेमाँगिर भयउ तन पजरे न माइ।—ढोला०, दू० ५२९ ।

हेमा¹—सज्ञा स्त्री० [स०] १ माधवी लता । २ पृथ्वी । ३ सुदरी स्त्री । ४ एक अप्सरा का नाम जिससे मदोदरी उत्पन्न हुई थी ।

हेमा²—सज्ञा पुं० [स० हेमन्] बुध नामक ग्रह [को०] ।

हेमाचल—सज्ञा पुं० [स०] सुमेरु पर्वत । उ०—हेमाचल उपकठ एक वट वृच्छ उसग। सौ जोजन परिमान साप तस भजि मतग। —पृ० रा०, २७।५ ।

हेमाढ्य—वि० जो सोने से परिपूर्ण हो । स्वर्ण से पूर्ण ।

हेमाद्रि—सज्ञा पुं० [स०] १ सुमेरु पर्वत । २ एक प्रसिद्ध ग्रथकार ।

विशेष—यह ईसा की १३वी शताब्दी मे विद्यमान थे और इन्होने पाँच खडो मे, जिनके नाम क्रमश दान, व्रत, तीर्थ, मोक्ष और परिशेष हैं, चतुर्वर्गचितामणि नामक एक बडा ग्रथ लिखा है जो अपने विषय का प्रामाणिक ग्रथ माना जाता है ।

हेमाद्रिका—सज्ञा स्त्री० [पुं०] स्वर्णक्षीरी नाम का पौधा ।

हेमाद्रिजरण—सज्ञा स्त्री० [स०] स्वर्णक्षीरी । हेमाद्रिका [को०] ।

हेमाभ—वि० [स०] स्वर्णिम । सोने की कातिवाला । सुनहला । हेमवत् । उ०—उस लता कुज की झिलमिल से हेमाभ रश्मि थी खेल रही । कामायनी, पृ० ७८ ।

हेमाभा—सज्ञा स्त्री० [सं०] सुनहरा प्रकाश । स्वर्णिम दीप्ति । सुनहली प्रभा । उ०—उत्तरकूल उदयोन्मुख सूर्य की हेमाभा से रजित होकर सागर की लहरो मे प्रतिफलित हो रहा था। —प्रतिमा, पृ० ६।

हेमाल¹—सज्ञा पुं० [सं०] एक राग जो दीपक राग का पुत्र कहा जाता है।

हेमाल(पु)†²—सज्ञा पुं० [स० हिमालय] हिमालय पर्वत । उ०—ढोला सायधण माणने झीणी याँ सलियाँह । कइ लाभे हर पूजियाँ, हेमाले गलियाँह । —ढोला०, दू० ४७७ ।

हेमालय—सज्ञा पुं० [स० हेमालय] वह जो स्वर्ण की काति से युक्त हो। स्वर्ण का आलय । सोने का गृह । हेमाचल । हेमगिरि । उ०—अरुण अधखुली आँखें मलकर जब तुम उठते हो छविमय । रगरहित को रजित करते बना हिमालय हेमालय। —वीणा०, पृ० २०।

हेमाह्व—सज्ञा पुं० [स०] १ पीतवर्ण का धतूरा। कनक । धतूरा। २ वनचपा [को०]।

हेमाह्वा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पीतवर्ण की जीवती नाम की एक लता। २ स्वर्णक्षीरी । सत्यानाशी [को०] ।

हेमिया—सज्ञा स्त्री० [फा० हेमियह्] जलाने की लकडी । जलावन। ईंधन [को०]।

पड जाना। कातिहीन होना। उ०—आनन के ढिग होत सखी अरविदन की दुतिहू है हेरानी। ५ आत्मविस्मृत होना। अपनी सुध बुध भूलना। लीन होना। तन्मय होना। उ०—सासु को रोम मनैंवे की लाज लगी पग नूपुर पाटी बजावन। सो छवि हेरि हेराय रहे हरि, कौन को रूसिवो काको मनावन—अज्ञात (शब्द०)।

हेराना[2]—क्रि० स० [हिं० हेरना का प्रे०] खोजवाना। ढुंढवाना। तलाश कराना। उ०—हार गँवाइ सो ऐसै रोवा, हेरि हेराइ लेइ जौ खोवा।—जायसी (शब्द०)।

हेराफेरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० हेरना + फेरना] १ हेरफेर। अदल बदल। २ यहाँ की चीज वहाँ और वहाँ की चीज यहाँ होना। इधर का उधर होना या करना। जैसे,—चोर चोरी से गया तो क्या हेराफेरी से भी गया?

हेरिंव—सज्ञा पुं० [देशी] गणेश। दे० 'हेरंब' [को०]।

हेरिक—सज्ञा पुं० [सं०] भेद लेनेवाला दूत। गुप्तचर।

हेरिया†—वि० [हिं०] हेरनेवाला। खोजने या ढूँढनेवाला। तलाश करनेवाला।

हेरियाना—क्रि० अ० [देश०] जहाज के अगले पालो की रस्सियाँ तानकर बाँधना। हेरिया मारना। (लश०)।

हेरी(पु)†—सज्ञा स्त्री० [सबोधन हे + री] पुकार। टेर।

मुहा०—हेरी देना = चिल्लाकर नाम लेना। पुकारना। आवाज देना। टेरना। उ०—हेरी देत सखा सब आए चले चरावन गैयाँ।—सूर (शब्द०)।

हेरुक—सज्ञा पुं० [सं०] १ गणेश का एक नाम। २ महाकाल शिव का एक गण। ३ एक बोधिसत्व का नाम। चक्रसबर। ४ एक प्रकार के नास्तिक।

हेरू†—वि० [हिं० हेरना] हेरनेवाला। देखनेवाला। खोजनेवाला। उ०—प्रातःकाल सगवाले हेरू इकट्ठे हुए।—राम० धर्म०, पृ० २६२।

हेलचा—सज्ञा स्त्री० [सं० हेलञ्चा] दे० 'हिलमोचिका'।

हेलंची—सज्ञा स्त्री० [सं० हेलञ्ची] हिलमोचिका नाम का साग [को०]।

हेल[1]—सज्ञा पुं० [हिं० हिलना] घनिष्ठता। मेलजोल।

विशेष—यह शब्द अकेले नही आता, 'मेल' के साथ आता है।

यौ०—हेलमेल।

हेल[2]—सज्ञा पु० [हिं० हील] १ कीचड, गोवर इत्यादि। २ गोबर का खेप। जैसे,—दो हेल गोबर डाल जा। ३ मैला। गलीज। ४ घृणा। घिन।

हेलक—सज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल की एक तौल।

हेलन—सज्ञा पुं० [सं०] १ तुच्छ समझना। परवा न करना। तिरस्कार करना। अवज्ञा करना। २. क्रीडा करना। केलि करना। किलोल करना। ३ अपराध। कसूर। दोष।

हेलना(पु)[1]—क्रि० अ० [सं० हेलन] १ क्रीडा करना। केलि करना। २. विनोद करना। हँसी ठट्ठा करना। ठिठोली करना। उ०—मोहिं न भावत ऐसी हँसी 'द्विजदेव' सबै तुम नाहक हेलति। द्विजदेव (शब्द०)। ३ खेल समझना। परवा न करना। उ०—को तुम अस बन फिरहु अकेले, सुदर जुवा जीव पर हेले।—तुलसी (शब्द०)।

हेलना[2]—क्रि० स० १ तुच्छ समझना। अवज्ञा करना। तिरस्कार करना। २ ध्यान न देना। परवा न करना।

हेलना†[3]—क्रि० अ० [हिं० हिलना, हलना] १ प्रवेश करना। पैठना। घुसना। दाखिल होना। (विशेषत पानी मे)। २ तैरना।

हेलना—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'हेलन' [को०]।

हेलनीय—वि० [सं०] अवहेलना या हेला के योग्य [को०]।

हेलमेल—सज्ञा पुं० [हिं० हेलमेल] १ मिलने जुलने, आने जाने, साथ उठने बैठने आदि का सबध। घनिष्ठता। मित्रता। रब्त जब्त। जैसे,—दस बड आदमियो से उनका हेलमेल है। २ सग। साथ। सुहबत। ३ परिचय। जान पहचान।

क्रि० प्र०—करना।—बढाना।—होना।

हेलया—क्रि० वि० [सं०] १ खेल ही खेल मे। २ सहज मे। ३ अवमानना या तुच्छता के साथ।

हेला—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ तुच्छ समझना। अवज्ञा। तिरस्कार। २ ध्यान न देना। बेपरवाई। ३ खेल। खेलवाड। क्रीडा। ४. बहुत सहज बात। बहुत आसान काम। ५ शृगार-चेष्टा। प्रेम की क्रीडा। केलि। ६ साहित्य मे अनुभावातर्गत एक प्रकार का हाव अर्थात् सयोग समय मे स्त्रियो की मनोहर चेष्टा। नायक से मिलने के समय नायिका की विविध विलास या विनोदसूचक मुद्रा। उ०—छीनि पितबर कम्मर ते सु विदा दई मीडि कपोलन रोरी। नैन नचाय कही मुसुकाय 'लला फिर आइयो खेलन होरी।'—पद्माकर (शब्द०)।

विशेष—सस्कृत के आचार्यों ने 'हेला' को नायिका के अट्ठाइस सात्विक अलकारो मे गिना है और उसे अति स्फुटता से लक्षित सभोगाभिलाप का भाव कहा है।

७ स्त्रीसभोग की प्रबल आकाक्षा [को०]। ८ चाँदनी। चद्रिका [को०]। ९ सगीत मे एक मूर्छना या स्वरकपन [को०]।

हेला[2]—सज्ञा पुं० [हिं० हल्ला] १ पुकार। चिल्लाहट। हाँक। हल्ला। उ०—सज्जणियाँ बउलाइ कइ मदिर बइठी आइ। मदिर कालउ नाग जिमि हेलउ दे दे खाइ।—ढोला०, दू० ३७१।

क्रि० प्र०—मारना।—देना = आवाज देना। हल्ला मचाना। उ०—आठ पहर अमला रा मांता हेलौ देता डोलौ। आनँदघन झूम्याई आवौ कोई गाली देलौ।—घनानद, पृ० ४४५।

—पाडना† = दे० 'हेला देना'। उ०—इजत किए विध आए सो पूछूँ हेला पाड।—बाँकी० ग्र०, भा० ३, पृ० २६।

२ धावा। आक्रमण। चढाई।

हेला[४]—संज्ञा पुं० [हिं० रेलना (= ठेलना)] ठेलने की क्रिया या भाव। किसी भारी वस्तु को खिसकाने या हटाने के लिये लगाया हुआ जोर। धक्का।

क्रि० प्र०—मारना।—देना।

हेला[५]—संज्ञा पु० [हिं० हेल, हील (= गलीज)] [स्त्री० हेलिन] गलीज उठानेवाला। मैला साफ करनेवाला। हलालखोर। मेहतर। डोम। उ०—(क) बीछी साप आनि तहँ मेला। बाँका आइ छुवावहि हेला।—जायसी ग्र०, पृ० २६३। (ख) बाँका आनि छुवावहि हेले।—पदमावत, पृ० ६३१।

हेला[६]—संज्ञा पुं० [हिं० हेल (= खेप)] १ उतना बोझ जितना एक बार टोकरे या नाव, गाडी आदि मे ले जा सके। खेप। खेवा। २ बारी। पारी।

मुहा०—अब के हेले = इस बार। इस दफा।

हेला[७]—संज्ञा पुं० [फा० हलैलह् का लघुरूप हेलह्] हर्रे। हरीतकी। हड [को०]।

हेला[८]—संज्ञा स्त्री० [देशी] क्षिप्रता। शीघ्रता [को०]।

हेलान—संज्ञा पुं० [देश०] डाँडे को नाव पर रखना। (लश०)।

हेलाल—संज्ञा पुं० [अ० हिलाल] १ दूज का चाँद। २ बँधी हुई पगडी की वह उठी ऐंठन जो सामने माथे के ऊपर पडती है। बत्तीसी।

हेलावत्—वि० [सं०] प्रमत्त। प्रमादी। लापरवाह [को०]।

हेलावुक्क—संज्ञा पु० [सं०] घोडो का सौदागर [को०]।

हेलि[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जाती हुई बारात। २ विलासयुक्त क्रीडा। कामचेष्टा (को०)। ३ परिरंभन। आलिंगन [को०]।

हेलि[२]—संज्ञा पुं० दिनकर। सूर्य।

हेलिक—संज्ञा पु० [सं०] सूर्य। आदित्य। सविता [को०]।

हेलिन—संज्ञा स्त्री० [हिं० हेला] गलीज उठानेवाली। हलालखोरिन। मेहतरानी।

हेलिनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हेला + इनी (प्रत्य०)] दे० 'हेलिन'।

हेलिहिल—वि० [सं०] क्रीडाशील। कामुक प्रकृति का। विलासी [को०]।

हेली(पु)[१]—अव्य० [सं० हला, अप० हेल्लि, हिं० सबो० हे + अली] हे सखी। उ०—(क) अति ही अधीर भई पीर भीर घरि लई, हेली मनभावन अकेली मोहि कै चले।—घनानंद०, पृ० ५६। (ख) दीपक जोय कहा करूँ हेली पिय परदेस रहावे। सूनी सेज ज़हर ज्यूँ लागे सुसक सुसक जिय जावे।—संतवाणी०, पृ० ७३।

हेली[२]—संज्ञा स्त्री० सहेली। सखी। उ०—भार ही के डरन उतारि देत आभूषन हीरन के हार देति हेलिन हितै हितै।—पद्माकर ग्र०, पृ० १६१।

हेली मेली—संज्ञा पुं० [हिं० हिलना + मिलना] मित्र। दोस्त।

हेलुआ‡—संज्ञा पुं० [अ० हल्वह्] एक मीठा खाद्य पदार्थ। दे० 'हलवा'। उ०—हेलुआ जूती एक नाहि आवै दिलगीरी। रूखा सूखा खाउ मिलै जो गम का टूकडा।—पलटू०, पृ० ६८।

हेलुक्का—संज्ञा स्त्री० [देशी] छिक्का। छींक [को०]।

हेलुग—संज्ञा पुं० [सं०] एक बडी संख्या [को०]।

हेलुवा—संज्ञा पुं० [हिं० हेलना] पानी मे खडे होकर एक दूसरे के ऊपर पानी का हिलोरा या छींटा मारने का खेल।

हेल्थ—संज्ञा पु० [अ०] स्वास्थ्य। तदुरुस्ती। जैसे,—हेल्थ आफिसर। हेल्थ डिपार्टमेंट।

हेवत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हेमन्त] छह ऋतुओं मे एक। दे० 'हेमंत'। उ०—नहिं पावस ओहि देसरा नहिं हेवत बसत। ना कोकिल न पपीहरा जेहि सुनि आवै कंत।—जायसी ग्र०, पृ० १५८।

हेवँ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हिम या हेम] हिम। बर्फ। उ०—कीन्हेसि हेवँ, समुद्र अपारा। कीन्हेसि मेरु खिखिंद पहारा।—पदमावत, पृ० २।

हेवँत(पु)—संज्ञा पु० [सं० हेमन्त] एक ऋतु। दे० 'हेमंत'। उ०—रितु हेवँत सँग पीउ न पाला।—पदमावत, पृ० ३३६।

हेवं‡—वि० [देश०] दो की संख्या का वाचक। दो। उ०—हेवं दला अमगल हूवो। मुवो सेख मिरजो पण मूवो।—रा० रू०, पृ० २८६।

हेवज्र—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धो के एक देवता [को०]।

हेवर[१]—संज्ञा पुं० [सं०] एक बडी संख्या। [बौद्ध]।

हेवर(पु)[२]—संज्ञा पुं० [सं० हय + वर] दे० 'हैवर'। उ०—सुभ सिंघ हेवर लीन। अचलेश कारन दीन।—प० रासो, पृ० ५७।

हेवर(पु)†[३]—संज्ञा पुं० [सं० हृत्पट, हिं० हिय + वर] छाती। उ०—सौरत रोमावली सोहाई। हेवर जाय दरलिसी खाई।—चित्रा०, पृ० ७५।

हेवाँय†—संज्ञा पुं० [सं० हिमालि] हिम। बर्फ। पाला।

हेवाक़—संज्ञा पुं० [सं०] उत्कट इच्छा। तीव्र स्पृहा। अत्यंत प्रबल कामना। कामाचार [को०]।

विशेष—'लडभ' शब्द की तरह आधुनिक प्रयोग होने के करण आधुनिक कोशकार इसे अरबी या फारसी से गृहीत मानते हैं और संस्कृत के 'हेवाकस' शब्द से इसे अलग कहते है। मराठी के शब्द 'हेवा' से भी, जो लोभ, ईर्ष्या, डाह आदि का वाचक है, इसका यह रूप माना गया है। कल्हण, बिल्हण आदि के द्वारा इसका प्रयोग किया गया है।

हेवाकस—वि० [सं०] अत्यंत तीव्र। उत्कट। प्रचंड [को०]।

हेवाकी—वि० [सं० हेवाकिन्] जो अत्यंत इच्छुक हो। तीव्र लालसा से युक्त [को०]।

हेवान†[१]—संज्ञा पुं० [अ० हैवान] पशु। जानवर।

हेवान(पु)[२]—वि० जो पशु या जानवर के तुल्य हो। उ०—आएहु

कौल करि भूलेहु सुख माँ, काहे भयहु हेवान ।—जग०बानी, पृ० ४० ।

हेवै(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हयदल] अश्वरोही। घुड़सवार । हय दल । उ०—दस सहस्स सज्जी न्रप हेवै ।—पृ० रा० २५/१७० ।

हेप—संज्ञा पुं० [सं०] घोड़े की हिनहिनाहट [को०] ।

हेपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] घोड़े की हिनहिनाहट। उ०—ताल ताल पर नागों का वृंहण, अश्वों की हेपा भर भर ।—अपरा०, पृ० २११ ।

हेषित—संज्ञा पुं० [सं०] घोड़े की वाली । हिनहिनाहट [को०] ।

हेपी—संज्ञा पुं० [सं० हेषिन्] घोड़ा । अश्व [को०] ।

हेस(पु)—संज्ञा पुं० [सं० हेषिन्] अश्व । घोड़ा । उ०—चढन कहिय राजन सों हेस । उड्ड चलौ दक्षिण तुम देस । सुनत श्रवन चढ्यौ नृपराज । कहि कहि दूत दुजन सिरताज ।—पृ० रा०, १६६/२५ ।

हेसमा†, हेसमि(पु)‡—संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार की मिठाई जो गेहूँ के आँटे से तैयार होती है । यह आयताकार होती है। इसे 'नाकसेप' या 'हेसपा' भी कहते हैं । उ०—अरु हेसमि सरस सँवारी । अति स्वाद परम सुखकारी ।—सूर०,१०/८०१।

हैं[1]—अव्य० १ एक आश्चर्यसूचक शब्द । जैसे,—हैं ! यह क्या हुआ ? २ एक निषेध या असहमतिसूचक शब्द । जैसे,—हैं ! यह क्या करते हो ?

यौ०—हैं हैं ।

हैं[2]—क्रि० अ० सत्तार्थक क्रिया 'होना' के वर्तमान रूप 'है' का बहुवचन ।

हैंगर—संज्ञा पुं० [अं०] १ वह वस्तु जिसपर या जिसके सहारे कोई वस्तु लटकाई जाय । रस्सी, अरगनी, खूँटी आदि। २. विमानगृह । वायुयानधारक । वायुयानशाला [को०] ।

हैंगिंग—वि० [अं०] लटकने या झूलनेवाला ।

यौ०—हैंगिंग गार्डेन = झूला बाग या तल्लेदार बगीचा । हैंगिंग ब्रिज = झूलनेवाला पुल ।

हैंगिंग लैंप—संज्ञा पुं० [अं०] छत में लटकाने का लप ।

हैंगुल—वि० [सं० हैङ्गुल] १ हिंगुल संबंधी । ईंगुर का। २ हिंगुल या ईंगुर के सदृश रंगवाला [को०] ।

हैज्जम(पु)†—संज्ञा पुं० [देश० या अ० हुजूम] सेना का समूह । सैन्यदल । उ०—ले वनवास हराय महालछ कप हैज्जम अणपार कस ।—रघु० रू०, पृ० ९८ ।

हैंड—संज्ञा पुं० [अं०] हाथ । कर । हस्त।

हैंडबिल—संज्ञा पुं० [अं०] नोटिस । इश्तहार । पर्चा ।

हैंडबैग—संज्ञा पुं० [अं०] चमड़े का छोटा बक्स या लंबोतरा थैला जिसमें पढ़ने लिखने आदि के आवश्यक सामान रखते हैं या जिसमें अत्यावश्यक सामान रखकर सफर में अपने साथ लिए रहते हैं ।

हैंडिल—संज्ञा पुं० [अं०] मुठिया । दस्ता ।

हैंडो—वि० [अं०] जिसे हाथ में रखा या ले जाया जा सके ।

हैंस—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक छोटा पौधा जिसकी जड़ जहरीले फोड़ों पर जलाने के लिये घिसकर लगाई जाती है ।

है(पु)‡[1]—क्रि० अ० हिं० क्रि० 'होना' का वर्तमानकालिक एकवचन रूप ।

है(पु)‡[2]—संज्ञा पुं० [सं० हय] दे० 'हय' । उ०—दिप्प फौज सुरतान की बधव मोकलि भट्ट । तुम उप्पर गोरी सुवर हे गै सज्जे थट्ट । —पृ० रा०, ५८ । १९६ ।

यौ०—हैवर । हेकल । हैगल ।

हैंकड़†—वि० [देश० या हिं० हिया + कड़ा] दे० 'हेकड़' । उ०—मोटाई हैंकड़ भया थूला ।—पलटू०, ४८ ।

हैकल[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० हय + गल] एक गहना जो घोड़ों के गले में पहनाया जाता है। उ०—सारस पेसवद अरु पूजी । हीरन जटित हैकलैं दूजी ।—हम्मीर०, पृ० ३ ।

हैकल[2]—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ गोल, चौकोर या पान के से दानों की गले में पहनने की एक प्रकार की माला, जिसे हुमेल भी कहते हैं । २ बड़ी इमारत । प्रासाद । भवन (को०) । ३ कवच । तावीज [को०] ।

हैज—संज्ञा पुं० [अ० हैज] आर्तव । स्त्रियों का मासिक रज स्राव [को०] ।

हैजम—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ सेना की पंक्ति । सैन्यदल । २ तलवार । (डिं०) । ३ राजद्वार पर पहरा देनेवालों का सरदार । उ०—(क) पुच्छत चंद गयौ दरबारह । जहँ हैजम रघुवंश कुमारह । —पृ० रा०, पृ० ६१।४६४ । (ख) हैजम गय पहु पग दै स्वामि आय कवि चंद ।—पृ० रा०, ६१।४७९ ।

हैजा—संज्ञा पुं० [अ० हेजह्] दस्त और कै की बीमारी जो मरी या संक्रामक रूप में फैलती है । विशूचिका । २ समर । युद्ध । जंग । लड़ाई [को०] ।

हैट—संज्ञा पुं० [अं०] छज्जेदार अँगरेजी टोपी जिससे धूप का बचाव होता है ।

हैटा—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का अंगूर ।

हैडिंब—संज्ञा पुं० [सं० हैडिम्ब] १ हिडिंबा का पुत्र घटोत्कच । २ हिडिंब राक्षस संबंधी [को०] ।

हैडिंबि—संज्ञा पुं० [सं० हैडिम्बि] हिडिंबा का पुत्र घटोत्कच [को०]।

हैतुक[1]—वि० [सं०] १ जिसका कोई हेतु हो । जो किसी हेतु या उद्देश्य से किया जाय । सकारण । सहेतु । २ तर्क का विवेकमूलक । तर्क या विवेक संबंधी । ३ अवलंबित । निर्भर ।

हैतुक[2]—संज्ञा पुं० १. तार्किक । तर्क करनेवाला । हेतुवादी । २. कुतर्की । ३ संशयवादी । नास्तिक ४ मीमांसा का मत माननेवाला । मीमांसक । ५ एक बुद्ध का नाम (को०) । ६ वह व्यक्ति जो धार्मिक विषयों में उदार हो [को०] । ७ शिव के एक गण का नाम [को०] ।

हैदर—संज्ञा पुं० [अ०] सिंह । शेर [को०] ।

हैदर अली—संज्ञा पुं० [अ०] दक्षिण भारत का एक शासक जो टीपू सुलतान का पिता था।

हैन—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास। तकडी।

हैफ[1]—अव्य० [अ० हैफ] खेद या शोकसूचक शब्द। अफसोस। हाय। हा।

हैफ[2]—संज्ञा पुं० शोक। चिंता। खेद। अफसोस। उ०—हरी हरी रँग देखि कै भूलत है मन हैफ। नीम पतौवन मे मिलै कहूँ भाँग को कैफ। —स० सप्तक, पृ० २२३।

हैबत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ भय। त्रास। दहशत। उ०—किया उस उपर यक जलाली नजर। जो हैबत सूँ पानी हुआ सरबसर। —दक्खिनी०, पृ० ११७। २ आतंक। धाक। रोब (को०)। ३ एकबाल। प्रताप।

हैबतजदा—वि० [अ० हैबत + फा० जदह्] डरा हुआ। त्रस्त। भयभीत (को०)।

हैबतनाक—वि० [अ०] भयानक। डरावना।

हैबर(पु)—संज्ञा पु० [सं० हयवर] अच्छा घोडा। उ०—हैबर हरट्ट साजि गैवर गरट्ट सवै, पैदर के ठट्ट फौज जुरी तुरकाने की। —भूषण ग्र०, पृ० १०७।

हैमत[1]—वि० [सं० हैमन्त] १ हेमंत सबधी। २ जो हेमत ऋतु के उपयुक्त हो। हेमत ऋतु के उपयुक्त। ३ शीत ऋतु मे होनेवाला (को०)।

हैमत[2]—संज्ञा पुं० हेमत ऋतु (को०)।

हैमतिक[1]—संज्ञा पुं० [सं० हैमन्तिक] हेमत ऋतु मे होनेवाला धान। शालिधान्य। विशेष दे० 'जडहन', 'शालि' तथा 'शालिधान'।

हैमतिक[2]—वि० १ हेमत सबधी। शीतल। ठढा। २ हेमत ऋतु मे जात या उत्पन्न (को०)।

हैमँत(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० हय + मत्त] मतवाला घोडा। मत्त अश्व। उ०—जुध सूर धीर हैमँत जिसा, बोल सही मत बक्कियौ। ऊपडै वहै नह ऊगता, आलमसाह अटक्कियौ।—रा० रू० पृ० १५७।

हैम[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० हैमी] १ सोने का। स्वर्णमय। सोने का बना हुआ। २ सुनहरे रग का।

यौ०—हैममुद्रा। हैममुद्रिका।

हैम[2]—संज्ञा पुं० १ शिव का एक नाम। २ चिरायता।

हैम[3]—वि० [स०] हिम सबधी। पाले का। बर्फ का। २ जाड़े का। जाडे मे होनेवाला। ३ बर्फ मे होनेवाला।

हैम[4]—संज्ञा पुं० १ तुषार। पाला। २ ओस।

हैमन[1]—संज्ञा पुं० [स०] १ अगहन का महीना। मार्गशीर्ष मास। २ हेमत ऋतु। शीत ऋतु। ३ अगहनी धान (को०)।

हैमन[2]—वि० १ स्वर्णनिर्मित। २ शीत ऋतु सबधी। ३ शीत काल मे होनेवाला। ४ हेमत ऋतु के उपयुक्त (को०)।

हैमना[1]—वि० [स०] जाडे का। शीतकाल का।

हैमना[2]—संज्ञा पुं० १ पूस का महीना। २ गाठी धान।

हैममुद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोने का सिक्का। स्वर्णमुद्रा (को०)।

हैममुद्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सोने का सिक्का। २ स्वर्णनिर्मित अँगूठी (को०)।

हैमल—संज्ञा पुं० [सं०] हेमन ऋतु (को०)।

हैमवत[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० हैमवती] १ हिमालय का। हिमालय सबधी। २ हिमालय पर होनेवाला। हिमालय मे उत्पन्न। ३ हिम या बर्फ से युक्त। बर्फीला। हिम मे मग्न हुआ।

हैमवत[2]—संज्ञा पुं० १ वह जो हिमालय पर रहता हो। हिमालय का निवासी। २ एक प्रकार का विष। ३ एक राक्षस का नाम। ४ एक सप्रदाय का नाम। बौद्धों का एक भेद। ५ मुक्ता। मोती। ६ पुराणानुसार पृथ्वी के एक वर्ष या खड का नाम। भारतवर्ष।

हैमवतिक—संज्ञा पुं० [सं०] वे लोग जो हिमालय पर्वत पर रहते हो। हिमालय पर्वत के निवासीजन (को०)।

हैमवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ उमा। पार्वती। २ गगा। ३ सफेद फूल की वच। ४ हरीतकी। हड। ५ अतसी। तीसी। ६ रेणुका नामक गधद्रव्य। ७ स्वर्णक्षीरी। सत्यानासी (को०)। ८ कौशिक ऋषि की भार्या का नाम। ९ एक प्रकार का अगूर। कपिल वर्ण की द्राक्षा (को०)।

हैमा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सोनजुही। २ जर्दचमेली।

हैमा[2]—संज्ञा पु० [अ०] बिना पानी का जगल। बियाबान (को०)।

हैमी[1]—वि० स्त्री० [सं०] सोने की। सोने की बनी हुई।

हैमी[2]—संज्ञा स्त्री० १ केतकी। २ सोनजुही।

हैयगवीन—संज्ञा पुं० [सं० हैयङ्गवीन] १ एक दिन पहले के दूध के मक्खन से बनाया हुआ घी। ताजे मक्खन का घी। २ एक दिन पूर्व के दूध का बनाया हुआ मक्खन। ताजा मक्खन (को०)।

हैया[1]—संज्ञा पुं० [अनुध्व०] दे० 'हौआ'।

हैया[2]—संज्ञा पुं० [अ० हैयह्] अहि। सर्प। साँप (को०)।

हैरब[1]—वि० [स० हैरम्ब] १ गणेश सबधी। २ गणेश का।

हैरब[2]—संज्ञा पुं० गणेश का उपासक सप्रदाय। गाणपत्य।

हैरण्य—वि० [सं०] १ हिरण्य सबधी। २ सोने का बना हुआ। सोने का। ३ स्वर्ण वहन करनेवाला या सोना उत्पन्न करनेवाला। ४ सोना देनेवाला। स्वर्ण प्रदान करनेवाला।

यौ०—हैरण्यवास।

हैरण्यक—संज्ञा पुं० [स०] १ स्वर्णनिधि का निरीक्षण करनेवाला अधिकारी। २ सोनार। स्वर्णकार। ३ एक भूखड या वर्ष का नाम (को०)।

हैरण्यगर्भ—वि० [सं०] जो हिरण्यगर्भ सबधी हो (को०)।

हैरण्यवत—संज्ञा पुं० [स०] जैनो के अनुसार जबू द्वीप के छठे खड का नाम।

हैरण्यवासा—वि० [स०] जिसमे स्वर्णिम पख लगे हो। जिसका पख सुनहला हो। जैसे, बाण आदि (को०)।

हैरण्यिक—सज्ञा पुं० [सं०] स्वर्णकार। सुनार (को०)।

हैरत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ आश्चर्य। अचरज। अचभा। तअज्जुब। उ०—तो उसकी तेग को हम आह किस हैरत से तकते है।—भारतेंदु ग्र०, पृ० ८४७। २ एक मुकाम या फारसी राग का पुत्र।

हैरतअगेज—वि० [अ० हैरत + फा० अगेज] आश्चर्यजनक। अजीबोगरीब। अजूबा (को०)।

हैरतकदा—सज्ञा पुं० [अ० हैरत + फा० कदह] वह स्थान जहाँ हर बात आश्चर्यजनक हो (को०)।

हैरतजदा—वि० [अ० हैरत + फा० जदह] १ चकित। विस्मित। निस्तब्ध। २ हतबुद्धि। भौचक्का (को०)।

हैरतनाक वि० [अ० हैरत + फा० नाक] दे० 'हैरतअगेज'।

हैरती—वि० [अ०] आश्चर्य मे पडा हुआ। चकित। निस्तब्ध (को०)।

हैराँ वि० [अ० हैरान] दे० 'हैरान'। उ०—मिली कहाँ से अक्ल बशर को अक्ल सरका यह है हैराँ।—भारतेंदु ग्र०, भा० २ पृ० ५६६।

हैराज(पु)—सज्ञा पुं० [सं० हयराज] उत्तम अश्व। श्रेष्ठ घोडा। उ०—सत्त हेम हैराज इक दिय पातुर प्रतिदान।—पृ० रा०, ६०।६।

हैरान—वि० [अ०] १ आश्चर्य। स्तब्ध। चकित। दग। भौचक्का। जैसे,—(क) मैं उसे एकबारगी यहाँ देखकर हैरान हो गया। (ख) ताज की कारीगरी देख लाग हैरान हो जाते है। (२) श्रम, कष्ट या झझट से व्याकुल। विकल। ३ परेशान। व्यग्र। तग। जैसे,—तुमने मुझे नाहक धूप मे हैरान किया।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

हैरानी—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ विस्मय। हैरत। आश्चर्य। २ व्यग्रता। परेशानी (को०)।

हैरिक—सज्ञा पुं० [सं०] १ भेदिया। गूढचर। गुप्तचर। २ चोर। तस्कर (को०)।

हैल—सज्ञा स्त्री० [अ०] ताकत। जोर। बल। शक्ति (को०)।

हैली(पु)—अव्य० [सर्वो० हे + अली] दे० 'हेली'[1]। उ०—हैली तीरथ जाय बुलाए रे हरदम परबे नहाए।—कबीर म०, पृ० १७४।

हैवत—सज्ञा स्त्री० [अ० हैबत] दे० 'हैबत'। उ०—हैवत से तेरी चर्ख यह दौवार झूका।—कबीर म०, पृ० ४६८।

हैवर(पु)—सज्ञा पुं० [स० हय + वर] सुदर घोडा। उ०—कबीर गरबु न कीजिए चाम लपेटे हाड। हैवर ऊपर छत्र तर ते फुन धरनी गाड।—कबीर ग्र०, पृ० २५२।

हैवानात—सज्ञा पुं० [अ०] हैवान का बहुवचन। जानवरो का समूह। पशुओ का झुड (को०)।

हैवान—सज्ञा पुं० [अ०] १. पशु। जानवर। 'इसान' का उलटा। २ वनपशु। जगली जानवर (को०)। ३ प्राणयुक्त। जीवधारी। प्राणी (को०)। ४ जड मनुष्य। बेवकूफ या गँवार आदमी। उजड्ड आदमी। उ०—बुद्धिहीन सुद्धिहीन हौ अजान हैवान।—जग० बानी, पृ० ५।

हैवानियत—सज्ञा स्त्री० [अ० हैवानीयत] जडता। बेवकूफी। मूर्खता। पशुता। उ०—कुछ भी हिंद की हैवानियत अब हममे नही रही।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ८८।

हैवानी—वि० [अ० हैवान] १ पशु का। पशु सबधी। पशुतापूर्ण। उ०—गुस्सा हैवानी दूरि कर छाडि दे अभिमान। दुई दरोगाँ नाहिँ खुसियाँ दादू लेहु पिछान।—दादू०, पृ० ६००। २ पशु के करने योग्य। जैसे,—हैवानी काम।

हैस[1]—सज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'हैम'। उ०—बैर करबैंदे हैस सिहोर अनास।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ७५।

हैस[2]—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ कलह। युद्ध। लडाई। २ बुरे रास्ते लगना। कुमार्ग गति। बेराह (को०)।

हैस बैस—सज्ञा पुं० [अ०] १ बहस मुबाहिमा। विवाद। २ उधेडबुन। उलझन। उ०—इसी हैस बैस मे रात कट गई। रगभूमि, पृ० ४६८।

हैसियत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ योग्यता। सामर्थ्य। शक्ति। २ वित्त। धनबल। समाई। बिसात। आर्थिक दशा। जैसे,—उनकी हैसियत ऐसी नही है कि गाडी घोडा रख सके। ३ मूल्य। ४ श्रेणी। दरजा। जैसे,—इस मकान की हैसियत के हिसाब से ४,०००) दाम बहुत है। ५ मान मर्यादा। प्रतिष्ठा। ६ तौर। ढग। तरीका। ७ धन दौलत। जायदाद। जैसे,—उसने अच्छी हैसियत पैदा की है।

हैसियतदार—वि० [अ० हैसियत + फा० दार (प्रत्य०)] १ हैसियतवाला। प्रतिष्ठित। इज्जतदार। २ मालदार। धनवान। सपन्न (को०)।

हैसियतमद—वि० [अ० हैसियत + फा० मद] दे० 'हैसियतदार'।

हैहय—सज्ञा पुं० [सं०] १ एक क्षत्रिय वश जो यदु से उत्पन्न कहा गया है।

विशेष—पुराणो मे इस वश की पाँच शाखाएँ कही गई है—तालजघ, वीतिहोत्र, आवत्य तुडिकेर और जात। लिखा है कि हैहयो ने शको के साथ साथ भारत के अनेक देशो को जीता था। प्राचीन काल का इस वश का सबसे प्रसिद्ध राजा कार्तवीर्य सहस्रार्जुन हुआ था जिसे सहस्र भुजाएँ थी। इसने परशुराम के पिता जमदग्नि को मारकर उनकी गायो का हरण कर लिया जिससे क्रुद्ध हो परशुराम ने इसे मारा था।

इतिहास मे हैहय वश कलचुरि के नाम से प्रसिद्ध है। विक्रम सवत् ५५० और ७६० के बीच हैहयो का राज्य चेदि देश और गुजरात मे था। हैहयो ने एक सवत् भी चलाया था जो कलचुरि सवत् कहलाता था और विक्रम सवत् ३०६ से आरभ होकर १४ वी शताब्दी तक इधर उधर चलता रहा। हैहयो का शृखलाबद्ध इतिहास विक्रम सवत् ६२० के आसपास मिलता है, इसके पूर्व चालुक्यो आदि के प्रसग मे इधर उधर

हैहयों का उल्लेख मिलता है। कोकल्लदेव (वि० स० ६२०–६६०) मुग्धतुग, वालहर्ष, केयूरवर्ष (वि० स० ६६८ के लगभग), शकरगण युवराजदेव (वि० सं० १०५० के लगभग), गागेयदेव, कर्णदेव आदि वहुत से हैहय राजाओं के नाम शिलालेखों में मिलते है।

२ हैहयवशी कार्तवीर्य सहस्रार्जुन। ३ एक देश का नाम जहाँ हैहय जाति का निवास था।

४ बृहत्सहिता के अनुसार पश्चिम दिशा का एक पर्वत।

हैहयराज—सज्ञा पुं० [स०] हैहयवशी कार्तवीर्य सहस्रार्जुन। उ०—जब हन्यौ हैहयराज इन विनु छत्र छितिमडल करयो।—केशव (शब्द०)।

हैहयाधिराज—सज्ञा पुं० [सं०] सहस्रार्जुन। उ०—प्रचड हैहयाधिराज दडमान जानिये।—केशव (शब्द)।

हैहात—अव्य० [अ] हा हत। हाय। दे० 'है हैं' [को०]।

हैहेय—सज्ञा पुं० [स०] कार्तवीर्य सहस्रार्जुन [को०]।

है है—अव्य० [हा हा] शोक, खेद या दुःखसूचक शब्द। हाय। अफसोस। हा हत।

हों—क्रि० अ० [स० √भू, प्रा० हव] सत्तार्थक क्रिया 'होना' का वहुवचन सभाव्य काल का रूप। जैसे,—(क) शायद वे वहाँ हों। (ख) यदि वे वहाँ हों तो यह कह देना।

होंकारना पु—क्रि० स० [अनु० सं० हुङ्करण] वुलाना। आह्वान करना। उ०—जब साहव होंकारिया ले चल अपने धाम। मुक्ति सँदेश सुनाइहौं मैं आयों यहि काम।—कबीर ग्र०, पृ० ५६४।

होंठ—सज्ञा पुं० [स० ओष्ठ, प्रा० होट्ठ, पु० हिं० ओठ] प्राणियो के मुखविवर का उभरा हुआ किनारा जिससे दाँत ढँके रहते हैं। ओष्ठ। रदनच्छद।

मुहा०—होंठ काटना या चबाना = भीतरी क्रोध या क्षोभ प्रकट करना। होंठ चाटना = किसी वहुत स्वादिष्ट वस्तु को खाकर अतृप्ति प्रकट करते हुए और खाने की इच्छा या लालच करना। जैसे,—हलवा ऐसा वना था कि लोग होंठ चाटते रह गए। होंठ चिपकना = मीठी वस्तु का नाम सुनकर लालच होना। होंठ चूसना = होठों का चुंबन करना। होंठ मिलाना = चुंवन करना। दे० 'होठ चूसना'। होंठ सी लेना = किसी वात पर एकदम चुप हो जाना। कुछ भी न कहना। मौन हो जाना। होंठ हिलाना = बोलने के लिये मुँह खोलना। वोलना।

होंठल—वि० [हिं० होठ + ल (प्रत्य०)] जिसके ओष्ठ स्थूल हों। मोटे होंठोवाला।

होंठी—सज्ञा स्त्री० [हिं० होंठ] १ वारी। किनारा। ओंठ। २ छोटा टुकडा।

हो[1]—सज्ञा पुं० [सं०] पुकारने का शब्द या सबोधन।

हो[2]—क्रि० अ० [स० √भू, प्रा० हव, हो] १ सत्तार्थक क्रिया 'होना' के अन्य पुरुष सभाव्य काल तथा मध्यम पुरुष वहुवचन के वर्तमान काल का रूप। जैसे,—(क) शायद वह हो। (ख) तुम वहाँ हो। उ०—तू मेरो बालक हो नँदनदन तोहि विसभर राखैं।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० २३८।

हो(पु)†[3]—व्रज की वर्तमानकालिक क्रिया 'है' का सामान्य भूत का रूप। था। उ०—(क) पहिले हौंही हो तब एक। अमल, अकल, अज, भेद विवर्जित सुनि विधि विमल विवेक।—सूर०, २।३८। (ख) दोउ सींग बिच ह्वै हौं आयो जहाँ न कोऊ हो रखवैया।—सूर०, १०।३३५।

होई†—सज्ञा स्त्री० [हिं० होना] एक पूजन या त्योहार जो दीवाली के आठ दिन पहले होता है। दे० 'अहोई'[1]।

विशेष—इस पूजन को अहोई अष्टमी भी कहते हैं। यह सतानप्राप्ति की कामना से की जाती है। इसमें ऐसी दो स्त्रियो की कथा कही जाती है जिनमें एक को सतान होती ही नही थी तथा दूसरी की सतान होकर मर जाती थी।

होगला(पु)†—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का नरसल या नरकट।

होज—वि० [फा० होज़] १ चकित। हैरान। आश्चर्य मे पडा हुआ। २ त्रस्त। भयभीत। डरा हुआ [को०]।

होजन—सज्ञा पुं० [फा० होजाँ (= नरगिस का फूल)] एक प्रकार का हाशिया या किनारा जो कपडों मे वनाया जाता है।

होटल—सज्ञा पुं० [अ०] वह स्थान जहाँ मूल्य लेकर लोगों को भोजन कराने या भोजन और ठहरने दोनों का प्रवध रहता है।

होठ—सज्ञा पुं० [सं० ओष्ठ, प्रा०, होट्ठ] दे० 'होंठ'। उ०—भूपन उतारे साज मडन के दूर डारे ककन ही एक हाथ बाएँ राखि लीनी है। ताती ताती श्वासन विनास्यो रूप होठन कौ नीको लाल रग मारि फीको पारि दीनो है।—शकुतला, पृ० १०६।

होड[1]—सज्ञा स्त्री० [देशी हुड्ड, होड्ड, हिं० होड या स० हार (= लडाई, विवाद)] १ दूसरे के साथ ऐसी प्रतिज्ञा कि कोई वात यदि हमारे कथन के अनुसार न हो, तो हम हार मानें और कुछ दें। शर्त। वाजी।

क्रि० प्र०—वदना।—लगाना।

२ एक दूसरे से वढ जाने का प्रयत्न। किसी वात मे दूसरे से अधिक होने का प्रयास। स्पर्धा। ३ यह प्रयत्न कि जो दूसरा करता है, हम भी करेंगे। समान होने का प्रयास। बरावरी। उ०—होड सी परी है मानो घन घनश्याम जू सो दामिनी को कामिनी को दोऊ अक मे भरै।—तोप (शब्द)।

क्रि० प्र०—पडना।

४ हठ। अड। जिद।

होड[2]—सज्ञा पुं० [सं० होड] तरेंदा। नाव। वेडा।

होडा—सज्ञा पुं० [सं० होड] लुटेरा। चोर। डाकू [को०]।

होडा—सज्ञा पुं० [देशी० हुड्ड, होड्ड] दे० 'होड'[1]। उ०—प्राननाथ से होडा लागल ब्रह्म पदारथ पाई री।—गुलाल वा०, पृ० ६५।

होडावादी—सज्ञा स्त्री० [हिं० होड + वदना] होडा होडी।

होडाहोडी—सज्ञा स्त्री० [हिं० होड] १ दूसरे के वरावर होने या दूसरे से वढ़ जाने का प्रयत्न। लागडाँट। चढ़ाऊपरी। उ०—

अर तैं टरत न वर परे दई मरक मनु मैन। होडा होडी बढि चले चितु चतुराई नैन। —बिहारी र०, पृ० ४। २ शर्त। बाजी।

होढ[1]—वि० [सं०] चुराया हुआ। चोरी का।

होढ[2]—संज्ञा पुं० चुराई हुई वस्तु। चोरी का माल [को०]।

होत†—संज्ञा स्त्री० [हिं० होना या भूति] १ पास मे धन होने की दशा। आढचता। सपन्नता। उ०—(क) होत की जोत है। (ख) होत का बाप अनहोत की माँ। २ वित्त। सामर्थ्य। धन की योग्यता। मकदूर। समाई।

होतव(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० भवितव्य] वह जो होने को हो। होनेवाला। होनहार। उ०—कहाँ जैत कहँ सूर प्रथि, जिन गहे गौरी साह। होतव मिटै न जगत मैं, किज्जिय चिंता काह। —ह० रासो, पृ० ११६।

होतव्य—संज्ञा पुं० [सं० भवितव्य] दे० 'होतव'।

होतव्यता(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० भवितव्यता] होनेवाली बात। वह बात जिसका होना ध्रुव हो। होनहार। उ०— जैसी हो होतव्यता, वैसी उपजै बुद्धि।

होतर—वि० [सं० भवितव्य] होने लायक। होने के योग्य। उ०— ये रसवाद भले न भावते करियै वही होइ जो होतर। —आनंदघन प्रिय नई घमँड सो देत दरवरचो डोलत अजौं अजोनर। —घनानंद०, पृ० ३६०।

होतव्य—वि० [सं०] जो हवन करने योग्य हो। हवनीय [को०]।

होता—संज्ञा पुं० [सं० होतृ] [स्त्री० होत्री] यज्ञ मे आहुति देनेवाला। मत्र पढकर यज्ञकुड मे हवन की सामग्री डालनेवाला।

विशेष—यह चार प्रधान ऋत्विजो मे है जो ऋग्वेद के मत्र पढता और देवताओ का आह्वान करता है। इसके तीन पुरुष या सहायक मैत्रावरुण, अच्छावाक् और ग्रावस्तुत्।

२ यज्ञकर्ता। यज्ञ करनेवाला [को०]। ३ अग्नि का एक नाम (को०)। ४ शिव। शकर (को०)।

होतृक—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ मे होता की सहायता करनेवाला व्यक्ति। होता का सहायक।

होतृकर्म—संज्ञा पुं० [सं० होतृकर्मन्] यज्ञ मे होता का कार्य [को०]।

होतृचमस्—संज्ञा पुं० [सं०] स्रुवा आदि पात्र जिनका प्रयोग होता यज्ञ के समय करता है [को०]।

होतृप्रवर—संज्ञा पुं० [सं०] होता का वरण। होता का चुनाव [को०]।

होतृपदन—संज्ञा पुं० [सं०] होता का आसन। होता के बैठने का स्थान [को०]।

होतृसदन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'होतृपदन' [को०]।

होत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह वस्तु जो यज्ञ मे हवन करने के उपयुक्त हो। जैसे, घृतादि। २ होम की सामग्री। हवि। ३ यज्ञ। हवन [को०]।

होत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'होतृक' [को०]।

होत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्तवन। स्तुति। २ यज्ञ मे आहूत देवता। ३ यज्ञ। ४ आह्वान। पुकार। बुलाना। ५ होता के सहायक का स्थान [को०]।

यौ०—होत्राचामस् = दे० 'होतृचमस्'। होत्राशासी = होता का सहायक। होतृक।

होत्रिय[1]—संज्ञा पुं० [सं०] होता के सहायक का कार्य या स्थान। दे० 'होत्रीय' [को०]।

होत्रिय[2]—वि० दे० 'होत्रीय'[2]।

होत्री[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] यजमान रूप मे शिव की मूर्ति। शिव की आठ मूर्तियो मे एक। उ०—जिसको कर्ता ने सृष्टि के आदि मे रचा अर्थात् जल, और जो विधिपूर्वक दिए हव्य को लेता है अर्थात् अग्नि, और जो यज्ञ करता है अर्थात् होत्री ·· इन आठ मूर्तियो मे जो ईश प्रत्यक्ष है अर्थात् महादेव जी सोई रक्षा करे। —शकुंतला, पृ० ३।

होत्री[2]—संज्ञा पुं० [सं० होत्रिन्] हवन करनेवाला [को०]।

होत्रीय[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ होता जो हवन करता है। २ देवताओ के उद्देश्य से हवन करनेवाला ऋत्विक्। ३ यज्ञ स्थल। यज्ञ मडप [को०]।

होत्रीय[2]—वि० होता से सबध रखनेवाला। होता सबधी।

होत्वा—संज्ञा पुं० [सं० होत्वन्] यज्ञ करनेवाला व्यक्ति। यज्ञकर्त्ता [को०]।

होनहार[1]—वि० [हिं० होना + हारा (प्रत्य०)] १ जो होनेवाला है। जो अवश्य होगा। जो होने को है। भावी। २ जिसके बढने या श्रेष्ठ होने की आशा हो अच्छे लक्षणोवाला। जिसमे भावी उन्नति के चिह्न हो। जैसे,—होनहार लडका। उ०—होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

होनहार[2]—संज्ञा पुं०, स्त्री० वह बात जो होने की हो। वह बात जो अवश्य हो। वह बात जिसका होना दैवी विधान मे निश्चित हो। होनी। भवितव्यता। उ०—हमपर कीजत रोख कालगति जानि न जाई। होनहार ह्वै रहै मिटै मेटी न मिटाई। होनहार ह्वै रहै मोह मद सबको छूटै। होय तिनूका वज्र, वज्र तिनका ह्वै टूटै। —केशव (शब्द०)।

होना—क्रि० अ० [सं० √भू > भवन, प्रा० होण] १ प्रधान सत्तार्थक क्रिया। अस्तित्व रखना। कही विद्यमान रहना। उपस्थित या मौजूद रहना। जैसे,—उसका होना न होना बराबर है। (ख) ससार मे ऐसा कोई नही है। उ०—गगन हुता, नहिं महि हुती, हुते चद नही सूर। —जायसी (शब्द०)।

विशेष—शुद्ध सत्ता के अर्थ मे इस क्रिया का प्रयोग साधारण रूप 'होना' के अतिरिक्त केवल सामान्य कालो मे ही होता है। जैसे,—वह है, मैं था, वे होगे। और कालो मे प्रयुक्त होने पर यह क्रिया विकार, निर्माण, घटना, अनुष्ठान आदि का अर्थ देती है। हिंदी मे यह क्रिया बडे महत्व की है, क्योकि खडी बोली मे सब क्रियाओ के अधिकतर 'काल' इसी क्रिया की सहायता से बनते है। कालनिर्माण मे यह सहायक क्रिया का काम देती है।

९ असर देखने में आना। प्रभाव या गुण दिखाई पडना। जैसे,—इस दवा से कुछ न होगा। १० जनमना। जन्म लेना। उद्भव पाना। जैसे,—उस स्त्री को एक लडकी हुई है। ११ काम निकलना। प्रयोजन या कार्य सधना। जैसे,—१०) से क्या होगा ? और लाओ।

यौ०—होना जाना।

१२ काम बिगडना। हानि पहुँचना। क्षति आना ? जैसे,—नाराज होने से हमारा क्या हो जाएगा ?

यौ०—होना जाना।

होनिहार†[1]—संज्ञा पुं० [हिं० होना + हार] दे० 'होनहार'।

होनिहार(पु)[2]—वि० होनेवाला। होनहार भावी। उ०—(क) होनिहार का करतार को रखवार जग खरभरु परा। —मानस, १।८४। (ख) हम कहँ दुर्लभ दरस तुम्हारा। जानत हौं कछु भल होनिहारा।—मानस, १।१५६।

होनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० होना] १ उत्पत्ति। पैदाइश। २ वह बात जो हो गई हो। हाल। वृत्तात। ३ होनेवाली बात या घटना। वह बात जिसका होना ध्रुव हो। वह बात जिसका होना दैवी विधान मे निश्चित हो। भावी। भवितव्यता। उ०—ह्वै रहै होनी प्रयास बिना, अनहोनी न ह्वै सकै कोटि उपाई। —पद्माकर (शब्द०)। ४ हो सकनेवाली बात। वह बात जिसका होना सभव हो।

मुहा०—होनी होय सो होय = होनेवाली बात तो होगी ही, उसके लिये चिंता क्या ? उ०—पलटू बरिहौ नाम कौ होनी होय सो होय। लोक लाज नही मानिहौ तन मन लज्जा खोय। —पलटू०, पृ० ६१।

होवाव(पु)—संज्ञा पुं० [अ० हुबाब] पानी का बुलबुला। दे० 'बुदबुद'। उ०—यह तो एक होवाव है जी, साकिन दरियाव के बीच सदा।—कबीर० दे०, पृ० ३८।

होवार[1]—संज्ञा पुं० [देश०] सोहन चिडिया का एक भेद। तिल्लर।

होवार[2]—संज्ञा पुं० अश्व। घोडा। (डिं०)।

होम—संज्ञा पुं० [सं०] १ ब्राह्मणो द्वारा नित्य करणीय पचमहायज्ञो मे एक यज्ञ जिसे देवयज्ञ कहते है। २ देवताओ के उद्देश्य से अग्नि मे घृत, जौ आदि डालना। हवन। यज्ञ। आहुति देने का कर्म।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

मुहा०—होम करते हाथ जलना = सत्कार्य करने के फलस्वरूप कष्ट उठाना। अच्छा काम करते हुए बुरा बनना। होम कर देना। (१) जला डालना। भस्म कर देना। (२) नष्ट करना। बरबाद करना। (३) उत्सर्ग करना। छोड देना।

होमक—संज्ञा पुं० [सं०] १ यज्ञ मे आहुति देनेवाला। मत्र पढकर यज्ञकुड मे हवन की सामग्री डालनेवाला। विशेष दे० 'होता'। होता का सहायक। होतृक [कौ०]।

होमकर्म—संज्ञा पुं० [सं० होमकर्मन्] होम सबधी कार्य। हवन की विधियाँ। यज्ञकार्य [कौ०]।

होमकल्प—संज्ञा पुं० [सं०] हवन करने की विधि [कौ०]।

होमकाल—संज्ञा पुं० [सं०] हवन करने का निर्धारित समय [कौ०]।

होमकाष्ठी—संज्ञा स्त्री० [सं०] यज्ञ की अग्नि दहकाने की फुँकनी।

होमकुड—संज्ञा पुं० [सं० होमकुण्ड] हवन की अग्नि को स्थापित करने के लिये बना हुआ कुड। होम की अग्नि रखने का गड्ढा।

होम डिपार्टमेंट—संज्ञा पुं० [अ०] दे० 'स्वराष्ट्र विभाग'।

होमना—क्रि० स० [सं० होम + हिं० ना (प्रत्य०)] १ देवता के उद्देश्य से अग्नि मे डालना। हवन करना। आहुति देना।

सयो० क्रि० + देना।

२ उत्सर्ग करना। छोड देना। उ०—नदलाल के हेतु आपुनो सुख वै होमति। —सुकवि (शब्द०)। ३ नष्ट करना। बरबाद करना।

होम मिनिस्टर—संज्ञा पुं० [अ०] दे० 'स्वराष्ट्र मत्री'।

होम मेंबर—संज्ञा पुं० [अ०] दे० 'स्वराष्ट्र मत्री'।

होम सेक्रेटरी—संज्ञा पुं० [अ०] दे० 'स्वराष्ट्र मत्री'।

होमाग्नि—संज्ञा स्त्री० [सं०] हवनकुड की अग्नि [कौ०]।

होमार्जुनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] होमधेनु [कौ०]।

होमि—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्नि। २ चित्रक नाम का एक वृक्ष। चीते का पेड (को०)। ३ तपाया हुआ मक्खन का घी। घृत। ४ जल। पानी।

होमियोपैथिक—वि० [अ०] १ चिकित्सा की होमियोपैथी नामक पद्धति के अनुसार। २ होमियोपैथी के अनुसार चिकित्सा करनेवाला।

होमियोपैथी—संज्ञा स्त्री० [अ०] थोडे दिनो से निकला हुआ पाश्चात्य चिकित्सा का एक सिद्धात या विधान। वह चिकित्सापद्धति जिसे डाक्टर हैनिमैन ने जर्मनी मे आविष्कृत किया था। रोग के समान लक्षण उत्पन्न करनेवाले द्रव्यो द्वारा रोगनिवारण की पद्धति।

विशेष—इसका सिद्धात है कि जो वस्तु अधिक मात्रा मे कोई रोग उत्पन्न करती है वही वस्तु सूक्ष्ममात्रा मे उस रोग का विनाश भी करती है। इस सिद्धात के अनुसार कोई रोग उसी द्रव्य से दूर होता है जिसके खाने से स्वस्थ मनुष्य मे उस रोग के समान लक्षण प्रकट होते हैं। इस पद्धति मे रोग के लक्षण तथा रोगी की मानसिक अवस्था के अनुसार दवा दी जाती है। मुख्यत इस प्रणाली मे रोगी की मन स्थिति पर विचार करके दवा होती है। इसमे वैज्ञानिक विधि द्वारा विभिन्न ओषधियो और सखिया, कुचला आदि अनेक विषो को स्पिरिट मे डालकर उनकी मात्रा को निरतर हलकी करते जाते है और इस प्रकार विषो की अल्प से अल्प मात्रा द्वारा रोग दूर किए जाते हैं।

होमी—संज्ञा पुं० [सं० होमिन्] हवन करनेवाला या आहुति देनेवाला व्यक्ति [कौ०]।

होमीय—वि० [सं०] १ होम संबंधी। होम का। जैसे,—होमीय द्रव्य। २ हवन कार्य में उपयुक्त। हवन के योग्य।

यौ०—होमीय द्रव्य = होम के काम में उपयुक्त होनेवाले द्रव्य, जैसे, घी, साकल्य आदि।

होमेंधन—संज्ञा पुं० [सं० होमेन्धन] होम कार्य में प्रयुक्त इंधन। यज्ञकाष्ठ [को०]।

होम्य¹—वि० [सं०] होम संबंधी। होम का। होमीय।

होम्य²—संज्ञा पुं० १ घृत। घी। २ हवन में प्रयुक्त पदार्थ। होम द्रव्य (को०)।

होर¹—वि० [अनु०] ठहरा हुआ। चलने से रुका हुआ।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

होर²—संज्ञा पुं० [प०] ओर। मार्ग। राह। उ०—असाँनूँ चेटक लाइ गया की कराँ कुछ होर न सुझदा।—घनानंद०, पृ० ३४०।

होर³—संज्ञा पुं० [फा०] रवि। सूरज। सूर्य [को०]।

होरख्श—संज्ञा पुं० [फा० होरख्श] सूर्य।

होरमा—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की घास या चारा। सांवक।

होरमुज्द—संज्ञा पुं० [फा० होरमुज्द] एक ग्रह। बृहस्पति। मुश्तरी [को०]।

होरस—संज्ञा पुं० [यू०] यूनान के एक प्राचीन देवता का नाम। उ०—होरस देवता भी गृद्धमुख है।—प्रा० भा०, प०, पृ० ८३।

होरसा—संज्ञा पुं० [सं० घर्ष (= घिसना)] पत्थर की गोल छोटी चौकी जिसपर चंदन घिसते या रोटी बेलते हैं। चौका।

होरहा(पु)—संज्ञा पुं० [सं० होलक] १ चने का छोटा पौधा जो प्रायः जड़ से उखाड़कर बाजारों में बेचा जाता है और जिसमें से चने के ताजे दाने निकलते हैं। २ चना, यव आदि को जड़ से उखाड़कर अग्नि में भूने हुए ताजे दाने। उ०—होरहा कोऊ जलाय खात कच्चा रस पीवत।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ४४।

होरा¹—संज्ञा पुं० [सं० होला] दे० 'होला'।

होरा²—संज्ञा स्त्री० [सं० यूनानी भाषा से गृहीत] १ एक अहोरात्र का २४ वाँ भाग। घंटा। ढाई घड़ी का समय। २. एक राशि या लग्न का आधा भाग। ३. ज्योतिषशास्त्र में एक लग्न। ४ रेखा। चिह्न। लकीर [को०]। ५ जन्मकुंडली। ६ जन्मकुंडली के अनुसार फलाफल निर्णय की विद्या। जातक शास्त्र।

होराविद्—संज्ञा पुं० [सं०] जन्मकुंडली देखने में कुशल व्यक्ति। होराशास्त्र का ज्ञाता। ज्योतिषी [को०]।

होराशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] फलाफल निर्णय की विद्या। जातक शास्त्र। फलित ज्योतिष [को०]।

होरिल†—संज्ञा पुं० [देश०] नवजात बालक। नया पैदा लड़का। (गीत)।

होरिलवा, होरिला†—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'होरिल'।

होरिहार(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० होरी] होली खेलनेवाला। उ०—होन लग्यो व्रज गलिन में होरिहारन को घोप।—पद्माकर (शब्द०)।

होरी¹—संज्ञा स्त्री० [सं० होली] दे० 'होली'। उ०—अति रस बाढ्यो री बाढ्यो पिय प्यारी को होरी ठानत।—घनानंद०, पृ० ४४५।

होरी²—संज्ञा स्त्री० [हिं० होर (= ठहरा हुआ)] एक प्रकार की बड़ी नाव जो जहाजों पर का माल लादने और उतारने के काम में आती है।

होल—संज्ञा पुं० [देश०] पश्चिमी एशिया से आया हुआ एक पौधा जो घोड़ों और चौपायों के चारे के लिये लगाया जाता है।

होलक—संज्ञा पुं० [सं०] आग में भुनी हुई चने, मटर आदि की हरी फलियाँ। होला। होरा। होरहा।

होलडाल—संज्ञा पुं० [अ०] यात्रा में बिस्तर आदि बाँधकर रखने के काम आनेवाला लंबा चौड़ा एक प्रकार का थैला जो बिस्तर की तरह फैलाया जा सकता है। बिस्तरबंद। उ०—मैंने अपनी सभी छोटी मोटी चीजें और कपड़े लत्ते बक्स में सँभालकर रखे और बिस्तर होलडाल में बाँधा।—संन्यासी, पृ० १२३।

होला¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] होली का त्योहार।

यौ०—होला क्रीडन, होला खेलन = होली खेलना। फाग खेलना। होलाष्टक।

होला²—संज्ञा पुं० सिक्खों की होली जो होली के दूसरे दिन होती है।

होला³—संज्ञा पुं० [सं० होलक] १ आग में भुनी हुई हरे चने या मटर की फलियाँ। २ चने का हरा दाना। होरा। होरहा।

होलाक—संज्ञा पुं० [सं०] आग की गरमी पहुँचाकर पसीना लाने की आयुर्वेदोक्त एक क्रिया। एक प्रकार की स्वेदन विधि।

होलाका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वसंत ऋतु आने पर मनाया जानेवाला। एक उत्सव। होली का त्योहार। २ फाल्गुन मास की पूर्णिमा (को०)।

होलाष्टक—संज्ञा पुं० [सं०] होली के पहले के आठ दिन जिनमें विवाह कृत्य नहीं किया जाता। जरता बरता।

होलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ होली का त्योहार। २ लकड़ी, घास फूस आदि का वह ढेर जो होली के दिन जलाया जाता है। उ०—गोपद पयोधि करि होलिका ज्यों लाय लंक, निपट निसंक परपुर गलबल भो।—तुलसी ग्रं०, पृ० २४७।

यौ०—होलिकादहन, होलिकादाह = होली जलाना।

३ एक राक्षसी का नाम जो हिरण्यकशिपु की बहिन थी। विशेष दे० 'ढुंढा'¹।

होलिकानल—संज्ञा पुं० [सं० होलिका + अनल] होलिका की अग्नि। होली की आग। उ०—संसार का कूड़ा करकट समझ होलिकानल में झोंक देना।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २५२।

होली¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हिंदुओं का एक बड़ा त्योहार जो फाल्गुन के अंत में वसंत ऋतु के आरंभ पर चैत्र कृष्ण प्रतिपदा को मनाया जाता है और जिसमें लोग एक दूसरे पर रंग, अबीर आदि डालते तथा अनेक प्रकार के विनोद करते हैं। उ०—

लगे गुलशन पे अजबस गम के होल्याँ। हुए पुरखून कुल मेहदी के फूलाँ।—दक्खिनी०, पृ० १६१।

विशेष—प्राचीन काल मे जो मदनोत्सव या वसतोत्सव होता था, उसी की यह परपरा है। इसके साथ होलिका राक्षसी की शाति का कृत्य भी मिला हुआ है। वसत पचमी के दिन से लकडियो आदि का ढेर एक मैदान मे इकट्ठा किया जाता है जो वर्ष के अतिम दिन फाल्गुन की पूर्णिमा को जलाया जाता है। इसी को 'होली जलाना' या 'सवत् जलाना' कहते हे। बीते हुए वर्ष का अतिम दिन और आनेवाले वष का प्रथम दिन दोनो इस उत्सव मे ममिलित रहते हैं।

मुहा०—होली खेलना = होली का उत्सव मनाना। एक दूसरे पर रग, अबीर आदि डालना। उ०—थे कैयाँ होली खेलो भोरा कान्ह जी। औराँ काँ धोखा सू म्हारी आँख्याँ बूको मेलो।—घनानद०, पृ० ४४५। होली का भँडवा = बेढगा पुतला जो विनोद के लिये खडा किया जाता है।

२ लकडी, घास फूस आदि का ढर जो होली के दिन जलाया जाता है। उ०—त्रिविध सूल होलिय जरै खेलिय अस फागु। जो जिय चहसि परम सुख तो यहि मारग लागु।—तुलसी ग्र०, पृ० ५६१। ३ एक प्रकार का गीत जो होली के उत्सव मे गाया जाता हे।

होली२—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक कँटीला झाड या पौधा।

होलू(पु)—सज्ञा पुं० [हिं० होला] भुने या उबाले हुए चने। (खोचेवाला)।

होल्डर—सज्ञा पु० [अ०] १ अँगरेजी कलम का वह हिस्सा जो हाथ से पकडा जाता है और जिसमे लिखने की निब या जीभ खोंसी जाती है। २ किसी वस्तु को पकडने का साधन। ३ बिजली के लट्टू को लटकाने का साधन जो तार मे लगा रहता है।

होल्डाल—सज्ञा पुं० [अ०] दे० 'होलडाल'।

होल्दना†—क्रि० स० [देश०] धान के खेत मे घास पात दूर करने के लिये हल चलाना। (पजाब)।

होवनिहार—सज्ञा पुं० [हिं० होना + हार (प्रत्य०)] दे० 'होनहार'।

होवनिहारी(पु)—वि०, सज्ञा स्त्री० [हिं० होना] दे० 'होनहार'। उ०—दीखति हे कछु होवनिहारी। सो काहू पै जाति न टारी।—सूर०, ४।५।

होश—सज्ञा पु० [फा०] १ बोध या ज्ञान की वृत्ति। सज्ञा। चेतना। चेत। जैसे,—वह होश मे नही है।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

यौ०—होश व हवास, होशोहवास = चेतना और बुद्धि। सुध बुध।

मुहा०—होश उडना या जाता रहना = भय या आशका से चित्त व्याकुल होना। चित्त स्तब्ध होना। सुध बुध भूल जाना। तन मन की सँभाल न रहना। जैसे,— बदूक देखते ही उसके होश उड गये। होश करना = सचेत होना। बुद्धि ठीक करना। होश दग होना = चित्त चकित होना। आश्चर्य से स्तब्ध होना। मन मे अत्यत आश्चर्य उत्पन्न होना। होश पकडना = आपे मे होना। चेतना प्राप्त करना। होश सँभालना = अवस्था बढने पर सब बाते समझने बूझने लगना। सयाना होना। अनजान बालक न रहना। जैसे, मैंने तो जब से होश सँभाला, तब से इसे ऐसा ही देखता हूँ। होश मे आना = चेतना प्राप्त करना। बोध या ज्ञान की वृत्ति-फिर लाभ करना। बेसुध न रहना। मूर्छित या सज्ञाशून्य न रहना। होश की दवा करो = बुद्धि ठीक करो। समझ बूझकर बोलो। होश ठिकाने होना = (१) बुद्धि ठीक होना। भ्राति या मोह दूर होना। (२) चित्त स्वस्थ होना। थकावट, घबराहट, डर या व्याकुलता दूर होना। चित्त की अधीरता या व्याकुलता मिटना। (३) अहकार या गर्व मिटना। दड पाकर भूल का पछतावा होना। जैसे, वह मार खायगा तब उसके होश ठिकाने होगे। होश की दवा करना = समझदारी प्राप्त करना। उ०— अक्ल के नाखून लो। होश की दवा करो।—फिसाना, भा० ३, पृ० १३७। होश फाख्ता हो जाना = होश उड जाना। उ०—पहलवान के होश फाख्ता हो गए। झूठी जूडी चौगुनी बढी।—काले०, पृ० ५६। होश हवा होना या होश हिरन होना = दे० 'होश उडना'।

२ स्मरण। सुध। याद। स्मृति।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

मुहा०—होश आना = (१) दे० 'होश मे आना'। (२) स्मरण होना। याद आना। होश दिलाना = सुध कराना। स्मरण कराना। याद दिलाना।

३ बुद्धि। समझ। अक्ल।

यौ०—होशमद।

४ नशे के उतार की अवस्था (को०)।

होशमद—वि० [फा०] समझदार। बुद्धिमान्।

होशमदी—सज्ञा स्त्री० [फा०] समझदारी। अक्लमदी। होशियारी [को०]।

होशयार—वि० [फा०] दे० 'होशियार'। उ०—लाला ब्रजकिशोर बाते बनाने मे बडे होशयार है।—श्रीनिवास ग्र०, पृ० २०२।

होशियार—वि० [फा०] १ चतुर। समझदार। बुद्धिमान्। २ दक्ष। निपुण। कुशल। जैसे,—वह इस काम मे बडा होशियार हे। ३ सचेत। सावधान। खबरदार। जैसे,—इतना खोकर अब से होशियार हो जाओ।

मुहा०—होशियार रहना = चौकसी करते रहना। किसी अनिष्ट से बचने का बराबर ध्यान रखना।

४. जिसने होश सँभाला हो। जो अनजान बालक न हो। सयाना। ५ चालाक। धूर्त।

होशियारी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ समझदारी। बुद्धिमानी। चतुराई। २ दक्षता। निपुणता। ३ कौशल। युक्ति। सावधानी। जैसे,—इसे होशियारी से पकडना नही तो टूट जायगा।

होश्यार†—वि० [फा० होशयार, होशियार] दे० 'होशियार'। उ०—अछो होश्यार तुम सारे के अब तक। मेरा भी हे तुम्हारे सूँ सुखन यक। दक्खिनी०, पृ० १६७।

हौस(पु)†[1]—संज्ञा पुं० [फा० होश] दे० 'होश'।

हौस[2]—संज्ञा पुं० [अ० हवस] दे० 'हौस'।

हौसलेमद—वि० [अ० हौसलह् + फा० मद] दे० 'हौसलामद'। उ०—मिस्टर रसल नील का एक हौसलेमद सोदागर है।—श्रीनिवास ग्र०, पृ० १६४।

होसाजासी†—संज्ञा स्त्री० [हिं०] किसी कार्य का स्मरण रहने पर भी आजकल करते हुए रहना।

होसा होसी—संज्ञा स्त्री० [हिं०] लाग डांट। स्पर्धा। होडा होडी।

होसी(पु)—क्रि० अ० [राज०] 'होना' क्रिया का भविष्यत् काल का एकवचनात रूप। होगा। उ०—परा रहौ जी इसी कूंड छै थांसू होसी भेलौ।—घनानद०, पृ० ४४५।

होस्टल—संज्ञा पुं० [अ० होस्टेल] १ छात्रावास। २ निवासस्थान।

होस्टेल—संज्ञा पुं० [अ०] १ स्कूल या कालेज से सबद्ध छात्रों के रहने का स्थान। छात्रावास। २ रहने का स्थान।

होहल्ला—संज्ञा पुं० [हिं०] शोरगुल। चिल्लपो। हुल्लड।

हौं(पु)†[1]—सर्व० [स० अहम्] व्रजभाषा का उत्तम पुरुष एकवचन सर्वनाम। मैं। उ०—(क) हौं इक बात नई सुनि आई।—सूर०, १०।२०। (ख) हौं मारिहौं भूप द्वौ भाई।—मानस, ६।७८।

हौं[2]—क्रि० अ० 'होना' क्रिया का वर्तमानकालिक उत्तम पुरुष एकवचन रूप। हूँ।

हौंकना(पु)†—क्रि० अ० [हिं० हुकार] १ गरजना। हुकार करना। २ हाँफना।

हौंनी(पु)—वि० [हिं० होना] होनेवाली। उ०—नददास प्रभु बेगि चलौ किन, भई कहा औ आगैं हौंनी।—नद० ग्र०, पृ० ३७३।

हौंस—संज्ञा स्त्री० [अ० हवस] दे० 'हौस'।

हौ(पु)[1]—अव्य० [हिं० हाँ] स्वीकृतिसूचक शब्द। हाँ। (मध्यप्रदेश)।

हौ[2]—क्रि०अ० १ होना क्रिया का मध्यम पुरुष एकवचन का वर्तमानकालिक रूप। हो। २ होना का भूतकाल। था। दे० 'हो'।

हौआ[1]—संज्ञा पुं० [अनु० हौ, हाऊ] लडको को डराने के लिये एक कल्पित भयानक वस्तु का नाम। हाऊ। भकाऊँ।

हौआ[2]—संज्ञा स्त्री० [फा० हौवा] दे० 'हौवा'।

हौका—संज्ञा पुं० [अनु० हाव (= मुँह बाने का शब्द)] १ मरभुखापन। खाने का गहरा लालच। २ प्रबल लोभ। तृष्णा। ३ हडबडी या घबराहट। हौलदिली। उ०—रुस्तम अली की अम्मा अपने जी के हौके मे मरी जा रही थी।—शतरंज०, पृ० १६।

हौज[1]—संज्ञा पुं० [अ० हौज] १ पानी जमा रहने का चहबच्चा। कुड हौद। उ०—अठएँ लोक के पार भरा इक हौज है।—पलटू०, पृ० ६५। २ कटोरे के आकार का मिट्टी का बहुत बडा बरतन। नांद।

हौज[2]—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ अज्ञता। नासमझी। २ अधीरता। आतुरता [को०]।

हौजा[1]—संज्ञा पुं० [फा० हौजा] हाथी की अम्मारी। हौदा [को०]।

हौजा[2]—संज्ञा पुं० [अ० हौजह्] १ छोटा हौद। २ औरतों की मूत्रेंद्रिय। भग। ३ राज्य का केंद्रस्थान। राजधानी। ४ तट। किनारा [को०]।

हौड(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० होड] लागडाट। दे० 'होड'।

हौतभुज[1]—संज्ञा पुं० [सं०] कृत्तिका नामक तृतीय नक्षत्र [को०]।

हौतभुज[2]—वि० हुतभुज् या अग्निसबधी [को०]।

हौताशन—वि० [सं०] अग्नि सबधी। हुताशन सबधी।

हौताशनकोण—संज्ञा पुं० [सं०] पूर्व दक्षिण का कोना। अग्नि कोण। [को०]।

हौताशनलोक—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि का लोक [को०]।

हौताशनि—संज्ञा पुं० [सं०] १ कार्तिकेय। स्कद। २ रामायण मे वर्णित नील नाम का बदर [को०]।

हौतृक[1]—वि० [सं०] होता सबधी। होता से सबद्ध [को०]।

हौतृक[2]—संज्ञा पुं० होता का सहायक या सहयोगी।

हौत्र—वि० संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'हौतृक' [को०]।

हौत्रिक—वि० [सं०] होता के कार्य से सबध रखनेवाला। होता सबधी।

हौद—संज्ञा पुं० [अ० हौज़] १ बँधा हुआ बहुत छोटा जलाशय। कुड। उ०—(क) हौद भरा जहाँ प्रेम का, तहाँ लेत हिलोरा दास।—दरिया०, पृ० १४। (ख) कहर को क्रोध किधौं कालिका को कोलाहल हलाहल हौद लहरात लवालव को।—पद्माकर ग्र०, पृ० ३०५। २ कटोरे के आकार का मिट्टी का बहुत बडा बरतन जिसमे चौपाए खाते पीते है तथा रँगरेज, धोबी आदि कपडे डुबाते है। नाँद।

हौदा[1]—संज्ञा पुं० [फा० हौजह्] हाथी की पीठ पर कसा जानेवाला आसन जिसके चारो ओर रोक रहती है और पीठ टिकाने के लिये गद्दी रहती है। उ०—(क) हाथिन के हौदा उकसाने कुभ कुजर के, भौन को भजाने अलि छूटे लट केस के।—भूषण ग्र०, पृ० १२७। (ख) वह हौदन सो सब छन कस्यो नृप गजगन अवरेखिए।—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० २३३।

क्रि० प्र०—कसना।

हौदा[2]—संज्ञा पुं० [अ० हौज, हिं० हौद] [अल्पा० स्त्री० हौदी] कटोरे के आकार का मिट्टी, पत्थर आदि का बहुत बडा बरतन जिसमे चौपायो को चारा दिया जाता है। नाँद।

हौन(पु)†—संज्ञा पुं० [देश०] अपनत्व। आत्मीयता। अपनापन।

हौमीय—वि० [सं०] होम सबधी या हवन के उपयुक्त [को०]।

हौम्य—संज्ञा पुं० [सं०] घृत। घी। दे० 'होम्य' [को०]।

हौम्यधान्य—संज्ञा पुं० [सं०] हवन का अन्न। दे० 'होमधान्य' [को०]।

हौर‡—अव्य० [देश०] दे० 'और'। उ०—न माने प्यास हौर भूख नाले के सुख दुख।—दक्खिनी०, पृ० ५२।

हौरा†[1]—संज्ञा पुं० [अनु० हाव हाव] शोर गुल। हल्ला। कोलाहल। उ०—मुनि सर्वत्र सब हौरा किरना।—कबीर सा०, पृ० ४४०।

क्रि० प्र०—करना। —मचना।—होना।

हौरा[2]—संज्ञा स्त्री० [अ०] गौर वर्ण की वह स्त्री जिसके बाल और आँखें घने श्याम वर्ण की हो [को०]।

हौरा हौरा, हौरे हौरे†—क्रि० वि० [देश०] दे० 'हौले हौले'।

हौल—संज्ञा पुं० [अ०] डर। भय। दहशत। खौफ।

यौ०— हौलदिल। हौलनाक।

मुहा०—हौल पैठना या बैठना = जी में डर समाना। हृदय में भय उत्पन्न होना।

हौल अगेज—वि० [फा०] खौफनाक। भयदायक।

हौल खौल—संज्ञा स्त्री० [अनुध्व०] दे० 'हौल जौल'।

हौलजदा—वि० [फा० हौलजदह्] भयभीत। त्रस्त। डरा हुआ।

हौल जौल—संज्ञा स्त्री० [अ० हौल + जौल (अनु०)] १ जल्दी। शीघ्रता। २ जल्दी के कारण होनेवाली घबराहट।

क्रि० प्र०—करना।—मचाना।

हौलदिल[1]—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ कलेजा धड़कना। दिल की धड़कन। २ दिल धड़कने का रोग।

हौलदिल[2]—वि० १ जिसका दिल धड़कता हो। २ दहशत में पड़ा हुआ। डरा हुआ। ३. घबराया हुआ। व्याकुल। जिसका जी ठिकाने न हो।

हौलदिला—वि० [फा० हौलदिल] [वि० स्त्री० हौलदिली] डरपोक। बुजदिल।

हौलनाक—वि० [अ० हौल + फा० नाक] डरावना। भयानक। भयकर।

हौला जौली—संज्ञा स्त्री० [अ० हौल + अनु० जौल] दे० 'हौल जौल'।

हौली—संज्ञा स्त्री० [स० हाला (= मद्य)] वह स्थान जहाँ मद्य उतरता और बिकता है। आबकारी। कलवरिया।

हौली हौली—क्रि० वि० [हिं० हौले हौले] धीरे धीरे। उ०—हौली हौलीं बढ गई धेनु, चोली हमजोली की मसकी।—आराधना, पृ० २५।

हौलू Ⓟ—वि० [अ० हौल + हिं० ऊ (प्रत्य०) या हिं० हौल] जिसके मन में जल्दी हौल होता हो। शीघ्र भयभीत होने या घबरानेवाला।

हौले हौले—क्रि० वि० [हिं० हलुआ] १ धीरे धीरे। आहिस्ता। मद गति से। क्षिप्रता के साथ नहीं। जैसे,—हौले हौले चलना। २ हलके हाथ से। जोर से नहीं। जैसे,—हौले हौले मारना।

हौवा[1]—संज्ञा स्त्री० [फा०] पैगंबरी मतो के अनुसार सब से पहली स्त्री जो पृथ्वी पर आदम के साथ उत्पन्न की गई और जो मनुष्य जाति की आदि माता मानी जाती है। हव्वा।

हौवा[2]—संज्ञा पुं० [अनु० हौं] दे० 'हौआ[1]'।

हौश—संज्ञा पुं० [अ०, तुल० अ० हाउस] १ मकान। घर। गृह। भवन। २ स्थान। जगह [को०]।

हौस—संज्ञा स्त्री० [अ० हवस] १ चाह। प्रबल इच्छा। लालसा। कामना। उ०—(क) सजैं विभूषन बसन सब पिया मिलन की हौंस।—पद्माकर।—(शब्द०)। (ख) हौंस मरै मिगरी सजनी कबहूँ हरि सो हँसि बात कहौंगी।—केशव (शब्द०)। २ उमग। हर्षोत्कठा। उ०—रति विपरीत की पुनीत परिपाटी मनौ हौसन हिंडोरे की सुपाटी में पढति है।—पदमाकर (शब्द०)। ३ हौसला। उत्साह। साहसपूर्ण इच्छा।

हौसला—संज्ञा पुं० [अ० हौसलह्] १ किसी काम को करने की आनदपूर्ण इच्छा। उत्कठा। लालसा। जैसे,—उसे अपने बेटे का ब्याह देखने का हौसला है।

मुहा०—हौसला निकलना = इच्छा पूरी होना। अरमान निकलना।

२ उत्साह। आनदपूर्ण साहस। जोश और हिम्मत। जैसे,—फिर कभी मुझसे लड़ने का हौसला न करना।

मुहा०—हौसला पस्त होना = उत्साह न रह जाना। जोश ठढा पड़ना। हिम्मत न रहना। हौसलों के पुतले बनना = अत्यधिक उत्साही होना। उ०—हौसलों के बने रहें पुतले। हार हिम्मत कभी न हम हारें।—चुभते०, पृ० ५३।

३ प्रफुल्लता। उमग। बढी हुई तबीयत। जैसे,—उसने बड़े हौसले से बेटे का ब्याह किया है। ४ उद्दडता। गुस्ताखी। धृष्टता [को०]। ५ आवेग। जोश [को०]।

हौसलामद—वि० [फा०] १ लालसा रखनेवाला। २ बढी हुई तबीयत का। उमगवाला। ३ उत्साही। साहसी।

हौसु Ⓟ—संज्ञा स्त्री० [अ० हवस] दे० 'हौस'। उ०—दोस लगावत दीनदयालहिं हौसु हिये हरि भाँतिन स्यौ है।—ठाकुर०, पृ० १२।

हौसुर Ⓟ—क्रि० वि० [देश०] उच्च स्वर से। उ०—कठ लागि सो हौसुर रोई। अधिक मोह जो मिलै बिछोई।—पदमावत०, पृ० १६८।

ह्नव—संज्ञा पुं० [स०] गोपन। छिपाव।

ह्नवन—संज्ञा पुं० [सं०] गोपन। छिपाना [को०]।

ह्नुत—वि० [सं०] गोपन किया हुआ। छिपाया हुआ [को०]।

ह्नुति—संज्ञा स्त्री० [स०] छिपाव। गोपन। दुराव। २ प्रत्याख्यान। अस्वीकृति [को०]।

ह्य—अव्य० [सं० ह्यस्] गत कल। पिछला दिन [को०]।

ह्यस्कृत—वि० [सं०] जो कल किया गया हो। जो बीते हुए दिन अर्थात् कल को घटित हुआ हो [को०]।

ह्यस्तन—वि० [स०] गत कल सबधी [को०]।

यौ०—ह्यस्तनदिन, ह्यस्तनदिवस = गत दिन। बीता हुआ पिछला दिन।

ह्यस्त्य—वि० [सं०] जो एक दिन पहले का हो [को०]।

ह्याँ Ⓟ†—अव्य० [हिं० यहाँ > हियाँ†] दे० 'यहाँ'।

ह्यो Ⓟ‡—संज्ञा पुं० [हिं० हिय] दे० 'हियो', 'हिया'। उ०—(क) लक्ष्मण के पुरिखान कियो पुरुषारथ सो न कह्यो परई। वेष

बनाय कियो वनितान को देखत केशव ह्यो हरई ।—केशव (शब्द०) । (ख) कहै पदमाकर त्यों बाँधनू बसनवारी, वा ब्रज बसनवारी ह्यो हरनहारी है ।—पद्माकर (शब्द०) ।

ह्योभव—वि० [सं०] जो कल हुआ हो [को०] ।

ह्यौ(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० हिय] 'हियो', 'हिया' और 'हिय' ।

ह्रणिया, ह्रणीया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लज्जा । व्रीडा । २ कृपा । ३ निंदा [को०] ।

ह्रद—संज्ञा पुं० [सं०] १ बड़ा ताल । झील । २ सरोवर । तालाब । ३ नाद । ध्वनि । आवाज । ४ किरण । ५ मेढा । मेष ।

यौ०—ह्रदग्रह = नक्र । घड़ियाल । कुभीर ।

ह्रदिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नदी । २ बिजली । विद्युत् [को०] ।

ह्रद्रोग—संज्ञा पुं० [सं०] राशि-चक्र-गत ११वीं राशि । कुंभ राशि [को०] ।

विशेष—संस्कृत में यह शब्द ग्रीक भाषा से आगत एवं प्रयुक्त है ।

ह्रसित—वि० [सं०] १ छोटा किया हुआ । कम किया हुआ । घटा हुआ । जिसका ह्रास हुआ हो । २ जो ध्वनि के रूप में व्यक्त हो । जिसकी ध्वनि हुई हो । ध्वनित । शब्दित [को०] ।

ह्रसिमा—संज्ञा स्त्री० [सं० ह्रसिमन्] १ लघुता । छोटापन । २ कम होने का भाव । न्यूनता । स्वल्पता [को०] ।

ह्रसिष्ठा—वि० [सं०] अत्यंत लघु या न्यून । लघुतम [को०] ।

ह्रसीयस्—वि० [सं०] लघुतर । स्वल्पतर [को०] ।

ह्रस्व[1]—वि० [सं०] १ छोटा । जो बड़ा न हो । २ नाटा । छोटे आकार का । ३ कम । थोड़ा । ४ नीचा । जैसे,—ह्रस्व द्वार । ५ तुच्छ । नाचीज । ६ जो दीर्घ न हो । लघु । जैसे—स्वर ।

विशेष—वर्णमाला में दीर्घ की अपेक्षा कम खींचकर बोले जानेवाले स्वर अथवा स्वरयुक्त व्यंजन 'ह्रस्व' कहलाते हैं । जैसे अ, इ, क, कि, कु, ह्रस्व वर्ण हैं और आ, ई, ऊ, का, की, कू, दीर्घ ।

ह्रस्व[2]—संज्ञा पुं० १ वामन । बौना । २ दीर्घ की अपेक्षा कम खींचकर बोले जानेवाले स्वर । एक मात्रा का स्वर । जैसे,—अ, इ, उ । ३ एक प्रकार का कसीस । हीरा कसीस । पुष्पकसीस । विशेष दे० 'हीरा कसीस' । ४ यम का एक नाम [को०] ।

ह्रस्वक—वि० [सं०] अत्यंत छोटा या लघु । दे० 'ह्रस्व'[1] [को०] ।

ह्रस्वकर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] एक राक्षस का नाम [को०] ।

ह्रस्वकुश—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत कुश [को०] ।

ह्रस्वगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] कुश [को०] ।

ह्रस्वगवेधुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] नागबला । नागवल्ली । गागेरुकी [को०] ।

ह्रस्वजंबु—संज्ञा पुं० [सं० ह्रस्वजम्बु] छोटी जामुन । कठजामुन [को०] ।

ह्रस्वजात रोग—संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें दिन के समय वस्तुएँ बहुत छोटी दिखाई पड़ती हैं ।

ह्रस्वजात्य—वि० [सं०] छोटी जाति या किस्म का [को०] ।

ह्रस्वतंडुल—संज्ञा पुं० [सं० ह्रस्वतण्डुल] धान की एक किस्म । राजान्न [को०] ।

ह्रस्वता—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटाई । छोटापन । अल्पता । लघुता ।

ह्रस्वत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'ह्रस्वता' [को०] ।

ह्रस्वदर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेतकुश । ह्रस्व कुश [को०] ।

ह्रस्वदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शल्लकी । सल्लकी का वृक्ष । सलई [को०] ।

ह्रस्वनिर्वशक—संज्ञा पुं० [सं०] छोटी असि । छोटी तलवार [को०] ।

ह्रस्वपत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का महुआ । जंगली मधूक ।

ह्रस्वपत्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'अश्वत्थी' । छोटा पीपल [को०] ।

ह्रस्वपर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] पकड़ । पाकर का पेड़ ।

ह्रस्वप्रवासी—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के मतानुसार वह व्यक्ति जो कुछ काल के लिये परदेश गया हो । थोड़े समय के लिये बाहर गया हुआ मनुष्य ।—उ०—ह्रस्वप्रवासी शूद्र, वैश्य, क्षत्रिय, ब्राह्मणों की भार्यायें एक बरस काल तक प्रतीक्षा करें यदि उनको संतान न हुई हो, संतान हुई हो, तो बरस से अधिक ।—भा० इ० रू०, पृ० ५६१ ।

विशेष—ऐसे प्रवासियों की स्त्रियों के लिये कुछ अवधि नियत थी कि वे कितने दिनों तक पति की प्रतीक्षा करें । उस काल के पहले वे दूसरा विवाह नहीं कर सकती थीं ।

ह्रस्वप्लक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] पकड़ वृक्ष । ह्रस्वपर्ण [को०] ।

विशेष—राजनिघंटु के अनुसार यह शीतल है और मूर्छा भ्रम, प्रलाप रोग और रक्तदोष को दूर करनेवाला है ।

ह्रस्वफल—संज्ञा पुं० [सं०] खजूर या छुहारा ।

ह्रस्वफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटी जाति की जामुन जो नदियों के किनारे होती है । भूमिजंबु ।

ह्रस्वबाहु[1]—संज्ञा पुं० [सं०] निषधनरेश नल का एक नाम [को०] ।

ह्रस्वबाहु[2]—वि० जिसकी बाहें छोटी हों [को०] ।

ह्रस्वबाहुक—संज्ञा पुं० वि० [सं०] दे० 'ह्रस्वबाहु' [को०] ।

ह्रस्वमूर्ति—वि० [सं०] छोटे आकार या कद का । ठिंगना । नाटा [को०] ।

ह्रस्वमूल—संज्ञा पुं० [सं०] लाल गन्ना ।

ह्रस्वशाखाशिफ—संज्ञा पुं० [सं०] क्षुप । गुल्म । झाड़ी [को०] ।

ह्रस्वसभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटी और तंग कोठरी या दालान जहाँ कुछ ही लोग बैठ सकें [को०] ।

ह्रस्वांग[1]—वि० [सं०] नाटा । ठिगना । बौना ।

ह्रस्वांग[2]—संज्ञा पुं० जीवक नाम का पौधा ।

ह्रस्वाग्नि—संज्ञा पुं० [सं०] आक का पौधा । मदार । अर्क ।

ह्राद—संज्ञा पुं० [सं०] १ ध्वनि । शब्द । आवाज । २ बादल की गरज । मेघगर्जन । ३. शब्दस्फोट । ४ एक नाग का नाम । ५ हिरण्यकशिपु के एक पुत्र का नाम ।

ह्रादिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नदी । २ वाल्मीकि रामायण के अनुसार एक नदी का नाम जिसे 'ह्रादिनी' और 'दूरपारा' भी कहते थे । ३ शल्लकी वृक्ष । सलई का पेड (को०) । ४ बिजली । वज्र ।

ह्रादी—वि० [सं० ह्रादिन्] [वि० स्त्री० ह्रादिनी] शब्द करनेवाला । गर्जन करनेवाला ।

ह्रादुनि, ह्रादुनी—संज्ञा पुं० [सं०] एक नरक का नाम (को०) ।

ह्रास—संज्ञा पुं० [सं०] १ पहले से छोटा या कम हो जाने की क्रिया या भाव । कमी । घटती । घटाव । छीज । क्षीणता । अवनति । २ शक्ति, वैभव, गुण आदि की कमी । ३ छोटी संख्या (को०) । ४ ध्वनि । आवाज ।

ह्रासक—वि० [सं०] ह्रास करनेवाला (को०) ।

ह्रासन—संज्ञा पुं० [सं०] १ क्षय करना । क्षीण करना । २ कम करना । घटाना । ३ आठ दिग्गजो मे से एक का नाम (को०) ।

ह्रासनीय—वि० [सं०] कम करने योग्य । घटाने लायक (को०) ।

ह्रिणिया, ह्रिणीया—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'हृणिया', 'हृणिया' (को०) ।

ह्रित¹—वि० [सं०] १ शर्मिदा । लज्जित । २ ले आया हुआ । लाया हुआ । नीत । ३ अपहरण किया हुआ । छीना हुआ । दे० 'हृत' । विभक्त । विभाजित । अलग किया हुआ । (को०) ।

ह्रित²—संज्ञा पुं० विभाग । अश ।

ह्रिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] हरण । हृति (को०) ।

ह्री—संज्ञा पुं० [सं०] बीजमंत्र ।

ह्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लज्जा । व्रीडा । शर्म । हया । सकोच । २ लज्जायुक्त होने का भाव । शर्मिदगी (को०) । ३ दक्ष प्रजापति की कन्या जो धर्म की पत्नी मानी जाती है । ४ जैनो के अनुसार महापद्म नामक सरोवर की देवी का नाम ।

ह्रीक—संज्ञा पुं० [सं०] १ पिता । जनक । २ नेवला ।

ह्रीका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लज्जा । लज्जाशीलता । हया । २ भय । डर । भीरुता (को०) ।

ह्रीकु¹—वि० [सं०] १ लजीला । लज्जाशील । शर्मीला । २ भयभीत । भीरु (को०) ।

ह्रीकु²—संज्ञा पुं० १ बिल्ली । २ लाख । ३ राँगा ।

ह्रीजित—वि० [सं०] अत्यत लजीला । अत्यत लज्जाशील (को०) ।

ह्रीण—वि० [सं०] लज्जित । शरमिदा । जैसे,—ह्रीणमुख ।

ह्रीत—वि० [सं०] लज्जित । लजाया हुआ । जैसे,—ह्रीतमुख ।

ह्रीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] लज्जा । शर्म । हया । सकोच ।

ह्रीदेव—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धो के एक देवता (को०) ।

ह्रीधारी—वि० [सं० ह्रीधारिन्] [वि० स्त्री० ह्रीधारिणी] लजीला । सकोची (को०) ।

ह्रीनिरास—संज्ञा पुं० [सं०] निर्लज्जता । बेहयापन (को०) ।

ह्रीनिषेव—वि० [सं०] विनम्र । विनयी (को०) ।

ह्रीपद—संज्ञा पुं० [सं०] लज्जा या व्रीडा का कारण (को०) ।

ह्रीबल—वि० [सं०] अत्यत विनयी (को०) ।

ह्रीभय—संज्ञा पुं० [सं०] लज्जा का भय । लाज का डर (को०) ।

ह्रीमान्¹—वि० [सं० ह्रीमत्] [वि० स्त्री० ह्रीमती] लज्जाशील । हयादार । शर्मगार ।

ह्रीमान्²—संज्ञा पुं० विश्वेदेवा मे से एक ।

ह्रीमूढ—वि० [सं० ह्रीमूढ] लज्जा से घबराया हुआ । लज्जा के कारण निश्चेष्ट । लाज से दबा हुआ ।

ह्रीयत्रणा—संज्ञा स्त्री० [सं० ह्रीयन्त्रणा] लाज की पीडा (को०) ।

ह्रीवेर—संज्ञा पुं० [सं०] सुगधबाला ।

ह्रीवेल, ह्रीवेलक—संज्ञा पुं० [सं०] सुगधबाला । ह्रीवेर ।

ह्रेपण—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी को लज्जित करना । अतिक्रात या अतिशर्मित करना । २ व्याकुलता । व्यग्रता । सभ्रम (को०) ।

ह्रेपित—वि० [सं०] १ लज्जित । शरमिदा । २ अतिक्रमित । अतिक्रात (को०) ।

ह्रषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] घोडे की हिनहिनाहट (को०) ।

ह्रषित¹—वि० [सं०] हिनहिनाया हुआ (घोडा) या जो हीँस रहा हो (को०) ।

ह्रषित²—संज्ञा पुं० हिनहिनाहट । हीँसने की क्रिया (को०) ।

ह्रषी—वि० [सं० ह्रेषिन्] हीँसने या हिनहिनानेवाला (को०) ।

ह्रषुक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की कुदाल (को०) ।

ह्लत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] आह्लाद । खुशी । प्रसन्नता (को०) ।

ह्लन्न—वि० [सं०] आनदित । खुश । प्रसन्न (को०) ।

ह्लाद—संज्ञा पुं० [सं०] १ आनद । खुशी । प्रफुल्लता । २ नवता । ताजगी (को०) । ३ हिरण्यकशिपु के एक पुत्र का नाम ।

ह्लादक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'ह्लाद' ।

ह्लादन¹—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ह्लादनीय, ह्लादित] आनदित करना । खुश करना ।

ह्लादन²—वि० आनदित । खुश । प्रसन्न (को०) ।

ह्लादिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'ह्लाद' ।

ह्लादित—वि० [सं०] आनदित (को०) ।

ह्लादिनी¹—वि० स्त्री० [सं०] आनदित करनेवाली ।

ह्लादिनी²—संज्ञा स्त्री० १ बिजली । वज्र । २ धूप का पौधा । ३ एक शक्ति या देवी का नाम । ४ एक नदी का नाम । दे० 'ह्लादिनी' ।

ह्लादी—वि० [सं० ह्लादिन्] १ आनदयुक्त । आनदी । २ प्रसन्न करनेवाला । ३ निनाद करनेवाला (को०) ।

ह्लीका—संज्ञा स्त्री० [सं०] लज्जा । शर्म ।

ह्लीकु¹—वि० [सं०] १ लज्जाशील । २ भयभीत । भयालु ।

ह्लीकु²—संज्ञा पुं० दे० 'ह्रीकु²' (को०) ।

ह्वेपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'ह्वेषा' [को०]।

ह्वै (पु)†—अव्य० [हिं० वहाँ + ही] दे० 'वहीं'। उ०—जहाँ भूप जा ना हरि मरे, तिनके हाड ह्वै जा गिरते।—चरण०, पृ० २०८।

ह्वलन—संज्ञा पुं० [सं०] इधर उधर मुड़ना या गिरना पड़ना। लड़खड़ाना। थहराना।

ह्वलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विपथगामी होने की स्थिति। पथभ्रष्टता। विमार्गगामिता (को०)।

ह्वाँ†—अव्य० [हिं० वहाँ] दे० 'वहाँ'। उ०—ना इतते कोउ जाय न ह्वाँतें आवई। सुंदर विरहिनि दुःखन रैनि बिहावई।—सुंदर० ग्रं०, भा० १, पृ० ३६४।

ह्वा¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जिह्वा। २ तरुणी। ३ सरिता। नदी [को०]।

विशेष - सौभरिकृत 'द्व्यक्षर' नाममाला मे ये अर्थ प्राप्त होते हैं।

ह्वा²—संज्ञा पुं० अभिधान। नाम। आख्या। आह्वा।

ह्वातव्य—वि० [सं०] १ जिसे पुकारा जाय। जो पुकारा जाय। २ पुकारनेवाला [को०]।

ह्वान—संज्ञा पुं० [सं०] १ बुलाना। पुकारना। २ चिल्लाहट। शोर-गुल। ३ युद्ध के आह्वान। युद्धाह्वान। ललकार [को०]।

ह्वायक—वि० [सं०] पुकारनेवाला। आह्वान करनेवाला [को०]।

ह्वायि—वि० [सं० ह्वायिन्] १ पुकारनेवाला। बुलानेवाला। २ युद्धार्थ आह्वान करनेवाला। ललकारनेवाला [को०]।

ह्वार्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ सर्प। साँप। २ अश्व। घोडा [को०]।

ह्वाल(पु)†—संज्ञा पुं० [अ० हाल] दशा। अवस्था। दे० 'हवाल'। उ०—चौरन स्याय चगा माल। नाँईं बिना भूँडो ह्वाल।—राम०, धर्म०, पृ० ६६६।

ह्विप—संज्ञा पुं० [अं०] १ पार्लमेंट या व्यवस्थापिका सभा का वह सदस्य जो अपनी पार्टी या दल के सदस्यों को किसी महत्व के प्रश्न पर वोट या मत लिए जाने के समय सभा मे अधिकाधिक संख्या मे उपस्थित करता है। दलदूत। जैसे,—इस बार परिषद् मे स्वराजी दल के ह्विप के उद्योग से दल के समस्त सदस्य १२ ता० का अधिवेशन मे उपस्थित हुए थे।—(शब्द०)।

विशेष—ह्विप का काम है, अपने दल के प्रत्येक सदस्य को सूचित करना कि अमुक समय पर अमुक महत्व के विषय पर वोट या मत लिए जायँगे, और इस बात का ध्यान रखना कि वोट लिए जाने के पहले सभा से दल का कोई सदस्य बाहर न जाने पावे (अर्थात् उन सबको सभा मे रोक रखना), अपने दल के सदस्यों को बताना कि किस प्रकार वोट देना चाहिए, वोट लिए जाने के समय प्रत्येक दल के सदस्यो की गणना करना, अपने दल के सदस्यों से मिलते जुलते रहना और किसी विषय पर उनका क्या निश्चित मत है, यह अपने दल के नेता को विदित करना, जिसमे वह निश्चय कर सके कि कहाँ तक हमे इस विषय मे अपने दल का सहारा मिलेगा। साराश यह कि ह्विप का काम दल के स्वार्थ या हित को देखना है।

२ चाबुक। ३ सारथी। कोचवान।

ह्विस्की—संज्ञा स्त्री० [अं०] एक प्रकार की अँगरेजी शराब।

ह्वेल—संज्ञा पुं० [अं०] एक बहुत बडा समुद्री जतु जो आज कल पाए जानेवाले पृथ्वी पर के सब जीवो से बडा होता है।

विशेष—ह्वेल ८० या ९० फुट तक लबे होते हैं। इसकी खाल के नीचे चरबी की एक बडी मोटी तह होती है। आगे की ओर दो पर होते हैं, जिनसे यह पानी ठेलता और अपनी रक्षा करता है। किसी किसी जाति के ह्वेल की दुम के पास भी एक पर सा होता है। पूंछ के बल ये जतु पानी के बाहर कूदकर आते हैं। मछली के समान ह्वेल अडज जीव नही है, पिंडज है। मादा बच्चे देती है और अपने दो थनो से दूध पिलाती है। बहुत छोटे छोटे कान भी ह्वेल को होते है। यह जतु छोटी छोटी मछलियाँ खाकर रहता है। यह बहुत देर तक पानी मे डूबा नही रह सकता। फ्रेफडे या गलफडे के अतिरिक्त दो छेद इसके सिर मे होते हैं जिनसे यह साँस भी लेता है और पानी का फुहारा भी छोडता है। इसकी आँखें बहुत छोटी होती हैं। पृथ्वी के उत्तरी भाग के समुद्रो मे ह्वेल बहुत पाए जाते है और उनका शिकार होता है। ह्वेल की हड्डियो से हाथीदाँत की तरह अनेक प्रकार के सामान बनते हैं। इसकी अँतडियो मे एक प्रकार का सुगधित द्रव्य जमा हुआ मिलता है जो 'अबर' के नाम से प्रसिद्ध है और जो भारतवर्ष, अफ्रिका और दक्षिण अमेरिका के समुद्रतट पर बहता हुआ पाया जाता है। प्राणिविज्ञानवेत्ताओ का कहना है कि ह्वेल पूर्व कल्प मे स्थलचारी जतु था और पानी के किनारे दलदलो मे रहा करता था। क्रमश पृथ्वी पर ऐसी अवस्था आती गई जिससे उसका जमीन पर रहना कठिन होता गया और स्थितिपरिवर्तन के अनुसार इसके अवयवो मे फेरफार होता गया, यहाँ तक कि लाखो वर्ष अनतर ह्वेलो मे जल मे रहने के उपयुक्त अवयवो का विधान हो गया, जैसे, उनके अगले पैर मछली के डैने के रूप मे हो गए, यद्यपि उनमे हड्डियाँ वे ही बनी रही जो घोडे, गधे आदि के अगले पैरो मे होती हैं। हमारे यहाँ के प्राचीन ग्रथो मे 'तिमिंगिल' नामक एक बडे भारी मत्स्य या जलजतु का उल्लेख मिलता है जो सभव है, ह्वेल ही हो।